

जैनधर्मसिंधु.

यथामती संशोधन करके

ब्रह्मचर्याचार्य श्रीनरपतिचंद्र सूरेश्वर

जीकी आज्ञानुसार

रायबहादुर बाबु साहब बुधसिंघजीकी

सहायतासे

संग्रह और प्रकाशकर्त्ता.

यति मनसुखलाल नेमिचंद्रजीने

मुंबई नगरमें

निर्णयसागर प्रेसमें छापकर प्रसिद्ध किया.

वीर संवत् २४३४ विक्रम संवत् १९६४. समे १९०८.

सर्वे हक साधोन.

मिलनेका पत्ता.

मुंबई.

यतिज्ञानचंजजी. ठि. पायधोणी श्रीशांतिनाथजी जैन-
मंदिर जैनपत्र ऑफीस. ठि. कष्टमहालस रोम. मुंबई.

सेठ. कस्तुरचंद नानचंद ठि. त्रांबाकांटा.

अहमदनगर.

सेठ. वाडीखाखहाथीजाई. नवी कापरुमारकेट.

वाखापुर.

श्रीजिनमंरुखी ऑफीस. नवादेरासर.



रायबहादुर बुधसिंहजी दुधेरिया.

जैनधर्मसिंधुके आश्रयदाता.

अर्पण पत्रिका.

रायबहादूर बाबु साहेब श्रीयुत
बुधसिंघजी दुधेरिया.

जो कि अजी मुर्शिदाबादांतर्गत अजिमगंजमें रहते हैं. इनोके आश्रयसे यह पुस्तक प्रकाशित हुवा. इस लिए उक्त महोदयका संहिस जीवन वृत्तांत प्रकाशित करनेकी आवश्यकता देखते हैं.

बाबुसाहेबके पूर्व पुरुष हरजीमलजी दुधेरिया पहिले मारवारुशे मुर्शिदाबादमे व्यापारके लिए आय बसे थे. हरजीमलके पुत्र सवाईसिंघजी और तिनके कुलदीपक सुपुत्र हरखचंदजी जो की अपने आश्रय दाता महोदयके पिता थे उन महोदयने व्यापार और जागिरदारीके व्यापार में कितनाक न्यायोपार्जित अव्य उपार्जन किया.

बाबु साहेब हरखचंदजी सने १८६१ में स्वर्गस्थ हुवे. जब उनको सर्वलोग परिपूर्ण श्रीमंत कहते थे और वो अढी नामंदारी धारण करतेथे. वे महोदय अपने पीठानी रायबहादुर श्रीयुत बुधसिंघजी और श्रीयुत विसनसिंघजी दुधेरिया दो सुपुत्रें रख गए थे.

यह दोनो सुपुत्रें अपने पिताके मरण समय लघु (बाल्यांस्थामे) थे. उन समय अपने पिताकी लक्ष्मी और बमाजारी व्यापार उन दोनोके हाथमे आया. यह दोनों महोदयें ज्यों ज्यों बढ़ते गए त्यों त्यों ऐक्य और सलाह संपसे रहते अके द्वितीयाके चंद्रवत् अपना अज्युदयमें और बलबुद्धी पराक्रममें बढ़ते गए- राय बहादुर बुधसिंघजी विनयवान् धैर्यवान् विवेकी और मित्रनसार व उद्योगी हुवे.

रायबहादुर बाबु विसन्तसिंघजी बचपन सेंहि व्यापारी लाइनकी अद्भुत शक्ती धारक जिनोमें बुद्धी कला कुशलता, दृढता परिपूर्ण थी. सर्वजनोसे हाजिर जवाबी और विशेषकर बहुत परिणाम दर्शी थे.

उनोने धीरधारका धंधा बढ़ाया और कलकत्ता, सिराजगंज, माइमेनसींग, जंगीपोर, अजीमगंजमें बेङ्के खोली.

यह बेङ्केमें बेङ्केरोंके अथाग परिश्रमसे अथाग विश्वास आनेसे फतेहमंद रीतीसे कार्यवाही चलने लगी. रहते रहते जमीनदारों व जागीरदारोंको धनधीरनेका कार्य सिरु किया जिस्के परिणामसे दोनों महोदयें बने जागीरदार होगए.

मुर्शीदाबाद, माइमेनसींग, बीरजुम, नदीया, पनीकोट, पूरणीया, दिनाजपुर, राजसाई, मालदा, जागलपुर, कुमका विग-रह ग्रामोंकी जमीनके मालेक हुवे.

दोनों बंधु मात्र ड्रव्य संपादान करनेमेंहि प्रवर्त्ते थे ऐसा नही परं उनके साथ उनोंका पुण्यकर्ममेंजी प्रयत्न चालु था.

दीन दुःखी और हजारों गरब व लाचारोंके लिए अन्नक्षेत्र स्थापन कीये. जिस्की कारकीर्दी अचीजी ऊलाऊल ऊलकती हे.

(जैनमंदिरे, उपाश्रयें, धर्मस्थानेमें बहुत

धन व्यय कीया जिनकी विगत)

प्रथमतः अपनी जन्मजूमी मुर्शीदाबादमें श्रीचिंतामणजी, नेमिश्वरजी, श्रीशामलाजी, अष्टापदजी, दादाजीके मंदीरोंका जीर्णोद्धार कराया.

नेमिश्वरजीके मंदिरमें दो रत्नकी प्रतिमा है और सिद्धचक्रजीका गद्दा हैं सो जी उक्त महोदयने स्थापित किये है.

अजीमगंजसे ४ मील अंतरसे कासम बजारमे श्रीनेमिनाथजीका मंदिरकाजी जीर्णोद्धार कराया जिस्मे रत्नकी प्रतिमाजी विशेष दर्शनके लायक है.

रायबहादुरजीकी सखावत इकिले बंगालेमेंहीं नहीं है परं यत्र यत्र उनोको आवश्यकीय लगा उहां धर्म धन खर्चनेमेंजी पीठी पानी जरी नहीं.

सुरत पासके कतार गामके जीर्णोद्धारके वास्तेजी बहुत प्रशंसा पात्र मदद किई.

ह्नीयकुंरु और सुविधिनाथ जगवंतके चवन, जन्म, ज्ञान, कल्याणकवाले काकंदीनगरीके तीर्थमे शीखरबंधी मंदीर बनाये.

महावीर स्वामीकी निर्वाणजूसी पावापुरीमें और जहां वीस तीर्थकर मोक्ष पधारेथे ऐसे श्रीसमेत शिखरजी तीर्थमें जानेके स्टेसन गरेहीमेजी मंदिरजी बनाया.

जंगीपुरमेंजी नया मंदीर बनाया जाता है. और मारवारु, राजपुताना, अजीमगंज, शीखरजी, पावापुरी, काकंदी, राणी-गाम, आबुराज, उपरांत मुंबइमेजी जैन यात्रालुओंको आश्रय-दायी धर्मशालायें उक्त महोदयकी ऊलाऊल अचल कीर्ति स्थंज रूप सुशोजित है.

तीर्थाधिराज श्रीशत्रुंजय तीर्थकी तलहटीमें सदाव्रत दीया जाता है और सिद्धाचलजी, तलाजा, बला, प्रमुख कीतनेहि स्थानोंपर उक्त महोदयके नामकी जैनपाठशालायें स्थापित होके ज्ञानवृद्धीका उद्योगजी सिरु किया गया है.

तदुपरांत उक्त महोदयने श्रीसिद्धाचलजी, पावापुरी, समेत शिखरजी, अयोध्याजी विगेरह स्थानोपर तीर्थयात्रा लेजानेका श्रीसंघजी निकालके संघवी तिलकजी करायेथे.

उक्त महोदय ऐसे पुण्य प्रतापी है की जिनकी संपूर्ण प्रशंसा लिखनेमें कलमकी ताकत नहीं है.

उक्त महोदयने १९०४ में बनोदे वाली तीसरी जैन श्वेतांबर कौनफरन्सके प्रमुख होके समस्त जैनोमें एक अग्रेसरपद लियाआ.

उक्त महोदयके धार्मिक और सार्वजनीक हितकार्यकी उदार

वृत्तिकी प्रतिष्ठा विजलीकी माफक प्रकाशक होती रही जिनका प्रत्यक्ष दृष्टांत यहहे की सने १८८८ ता. ३ जानेवारीके रोज बंगालाके सरकारने अत्यंत प्रसन्न चित्त होके रायबहादुरका मानवंता खिताब समर्पित कीया और मुर्शीदाबाद लालबागकी कचेरीमें ओनररी मेजीस्ट्रेटका मानवंता होहा इनायत किया और अपनी वकतावर महुम श्रीमती महाराणीकी मायमरु जुबीलीकि यादगारीके प्रसंगमे ता. ३० मी जुन स. १८८९ के रोज बादशाही मानका “ खरीता ” दीया गया था. तैसेंहिं ता. १ ली जानेवारी स. १८९३ के रोज अपने नामदार शेहे-नशाह सातवे एम्वरने हिंदुस्थानकी बादशाही स्वीकारी जिस्की यादगारीमें देहली दरबारके जव्य समारंजके समय रायबहादुरकी उदारता और अपने लोकोपयोगी सार्वजनीक हितकार्यकी पीठानमे दुसरी बार “ खरीता ” दिया गया था. यह राजमान होदेकोजी अन्ही तोरसें दीपातेहैं.

इस दरम्यान सने १८९९ में दोनो जाइयोने सलाह संपसे अपना अपना व्यापार जिनजिन चलाता सिरु किया हे परं जमीन जागीरोंका हिस्सा ज्योंका त्यों रक्खा हे.

यद्यपि व्यापारादि कार्य जिनथे तथापि पारस्परिय सलाह संपसें अजिन्नता समानहिं प्रवर्तनथा.

सने १८८४ मे रायबहादुर बाबु बिसनचंदजी अपनी पीढे १४ वर्षकी उमरके राजा विजयसिंघजी नामक कुमारको ठोरुके यह फानी डुनियाको ठोरु गएथे.

श्रीयुत बाबु बिसनचंदजीके गएबाद अपने ठोटे जतीजे और उनकी बनी दोलत समावनेका और जोखमदारीका कार्य उक्त महोदयके सिरपर आय पमाथा.

कायदेकी रीतसेंजी मुर्शीदाबाद जिह्वे जजकी कोर्टसेंजीउक्त

महोदयही राजा विजयसिंघजी और उनकी दोलतके रक्षक निमाये गये.

उक्त महोदयने अपनी बहादुरी और चाखाकीसे उस काममें अपनी फर्ज बहुतहि अच्छी तरहसे बजायके उनकी रुझीमें अधिकता करी और राजा विजयसिंघजीकों इंग्लिश, बंगाली, जैनधर्म प्रमुखकी अच्छी केलवणी देके आगे बढ़ाये.

बाबु विजयसिंघजीकों सने १९०० मे ता. २२ मीसंबरके रोज लायक उमरघान होनेसे उनकी मिलकतका कबजा सूपरत कर दीया.

अच्छी जैसी आशाथी वेसेहि बाबु विजयसिंघजी एक युवक बुझीमान् पराक्रमी पुरुष हुए.

बाबु विजयसिंघजीका स्वभाव उनके पिताके माफक सद्गुणी व परोपकारी और धर्मकार्यमेची बहुत सतत प्रयत्नशील हुआ.

उपरोक्त दोनो महोदयोंने पुण्यानुबंधी प्राग्जार पुण्यके उदयसे जो जो आवश्यकीय कार्य किये है जिनका पूरेपूरा वर्णन करनेमें हमारी कलमको पूरे तोरके शब्दकोश देखनेका अवसर देखना पड़ता है.

हमारे लोके गङ्गके श्रीमंत श्रावक गणमे देशाणोंकवाले राय-बहादुर चांदमलजी ढढा, रीयावाले राय सेठजी चांदमलजी, अजमेरवाले रायबाहादुर सेठजी शोभागमलजी ढढा, जयपुरवाले राजमान्य सेठजी लक्ष्मीचंदजी व गुलाबचंदजी ढढा, एम. ए. रायबहादुर गणपतसिंघजी डुगरु, रायबहादुर महाराज बहादुर सिंघजी डुगरु, रायबहादुर नरपतसिंघजी डुगरु, राय लक्ष्मीपति सिंघजी ठत्रसिंघजी डुगरु, रायबहादुर शताबचंदजी नाहार विगरह विगरह पुण्यवंतोंने यद्यपि अनेकानेक धार्मिक व्यवहारीक कार्यों करके जैन धर्मकों अनेकवार दीपाया हे विशेषकर बाबु लक्ष्मीपति सिंघजीनेची अनेकानेक स्थानोंपर जिन मंदिर बन-

वाये और रायबहादुर श्रीधनपतसिंघजीने तो श्रीसिद्धाचलजीकी तखहट्टीपर तीर्थनायककी स्थापना समय अंजनशलाका करवा-
यके लोकेगल्लपर आय पमता अपूजैरोंका आक्षेप दूर कराय
दियाथा जिनसें इन महोदयोंका इस अवसरपर उपकार मानना
दुरस्त धारते है. उपर लिखे महाशयोने यद्यपि लोके गल्लकों
शोजाया परं रायबहादुर श्रीमंत महोदय श्रीबुधसिंघजी दुधे-
रियाने तो अनेक तीर्थस्थानोपर अपने पुण्यकर्मोपार्जित न्याय
लक्ष्मीकों सफल करनेमें अत्यंतहि अगवानी करी है. इतनाहिं
नहिं परं लोके गल्लवाले ढूढक हैं ऐसा जो आरोप था उनकों
परास्त कर जैन धर्मको अत्यंत दीप्यमान करश्रीसंघमें (तीसरी
कोन्फरन्समें) अग्रणीय पद धारण कीया इत्यादि इत्यादि
कौटिक गुणगण संपन्न प्राग्भार पुण्यवंत सेठजी रायबहादुर
श्रीबुधसिंघजी दुधेरियाकेहि हस्तकमलमे यह अनेकानेक जन-
मनानंद प्रद यह ग्रंथ समर्पण कर महोदयके अचल कीर्ति स्थं-
भेक साथ इनकोजी अचल कीर्तिवंत करते हैं जिनके वांचन
मनन श्रवण कर अनेकानेक जव्य सत्वोंकों अनंतानंद अक्षय
ज्ञानपदकी प्राप्ति हो यह हमारी अजीष्टार्थ सिद्धी है. तथास्तु.



प्रथमपरिच्छेदस्य विषयानुक्रमणिका.

नवकारमंत्र.					१
पंचिंदिश्च.					१
खमासमण.					१
सुगुरुको मुखशातापृच्छा.					२
इरियावहियं.....					२
तस्स उत्तरि.					२
अन्नश्च					३
लोगस्स.					३
करेमि जंते.					४
सामाइयवयजुत्तो.					४
जगच्चिंतामणि.					५
जंकिंचि.					६
नमुश्चुणं.					६
जावंति चेइयाइ.					७
जावंत केवी साहु.					७
उवसग्गहरं.					८
जय वियराय.					८
अरिहंत चेइयाणं.					९
कट्ठाणकंदं					९
स्नातस्या					१०
संसारदावानल.					११
पुरस्कर वरदीवहे.					१२
सिद्धाणं बुद्धाणं.					१३
वेयावच्च गराणं.					१३

जगवानादि वंदन					१३
सद्यस्सवि					१४
इच्छामि ञामि					१४
अतिचार आठ गाथा					१४
सुगुरु वांदणा.					१५
देवसिञ्चं आलोएमि.					१६
सातलाख.					१७
अठार पाप स्थान					१७
वंदिता सूत्र					१८
अष्टुच्छिर्					२३
आयरिय उवञ्जाय					२४
नमोस्तु वर्द्धमानाय.					२४
विशाख लोचन					२५
सुअदेवया					२५
खित्त देवया					२५
कमलदल					२६
पुवनदेवया					२६
ज्ञानादि गुणयुतानां.					२६
अट्ठाइजोसु.					२६
वरकनक.					२७
खघुशांति.					२७
चलक्कसाय.					२८
जरहेसर.					३०
मन्हजिणाणं.					३१
तीर्थवंदना.					३२
सकलार्हत्.					३४
अजियसंता.					३८

मोहोटी शांति.					४९
संतिकर.					४९
अतिचार.					५१
नवकारसहि पञ्चस्काण.					५२
पोरसी साढ पोरसी.					५३
एकसणा बीयासणा.					५३
आयंबिल पञ्चस्काण.					५४
तिबिहार उपवास.					५५
चजबिहार उपवास.					५५
पाणहार पञ्चस्काण.					५६
चजबिहार पञ्चस्काण.					५६
तिबिहार पञ्चस्काण-					५६
डुबिहार पञ्चस्काण.					५७
देसावगासी पञ्चस्काण.					५७
पोसह पञ्चस्काण.					५७
पोसहपारणगाथा.					५८
संधारा पोरसी.					५८
सीमंधर चैत्यवंदन.					८०
सिद्धाचलचैत्य. विमल केवल.					८१
सिद्धाचलचैत्य. शत्रुंजयसिद्धक्षेत्र.					८२
परमात्मा चैत्यवंदन-					८३
सीमंधर स्तवन. सुणोचंदाजी					८३
सिद्धाचलस्तवन. यात्रानवाणुं.					८४
सिद्धाचल स्तवन. शेरुंजो दीगोरे.....					८५
शंखेश्वरपासजी पुजीये.					८६
जीववारुं हुं मोरा वाळमा.					८७
श्रेणिकराय हुंरे अनाथी निग्रंथ.					८८

सामायिक खेवानो विधि-....				८९
सामायिक पारवानो विधि.				९१
पञ्चस्काण पारवानो विधि.				९१
परिलेहण विधि.				९२
देवसि प्रतिक्रमण विधि.....				९३
राइ प्रतिक्रमण विधि.				९९
परकी प्रतिक्रमणविधि-				१०२
चण्डम्मासी प्रतिक्रमण विधि.				१०६
संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि.				१०६
पोसह ग्रहण विधि.				१०७
पोसह पारण विधि.				११०
पोसह मंडला विधि.				११२
जय तिहुण चैत्यवंदन.				११३
जय महाजस.				११९
खरतर प्रातःसामायिक विधि.				११९
खरतर देवसी प्रतिक्रमण विधि.				१२१
खरतर राइ प्रतिक्रमण विधि.				१२४
खरतर परकी प्रतिक्रमणविधि.				१२७
अचल गच्छ प्रतिक्रमणविधि.				१२७
अचलगच्छ गमणागमण.				१३०
अचलगच्छ अव्यहेत्र कालजाव.				१३१
अचलगच्छ लघुअतिचार.				१३३
अचलगच्छ जयजय महाप्रजु चैत्यवं.				१४०
अचलगच्छ गुरुवंदणा.				१४२
अचलगच्छ सकाय.				१४४
अचलगच्छ सामायिक पारणागाथा.				१४६
अचलगच्छ राइप्रतिक्रमण विधि.....				१४८

लौकागच्छ सामायक विधि.			१५०
लौकागच्छ सामायक पारण विधि.			१५१
लौकेगच्छ प्रतिक्रमण विधि.			१५२
लौकेगच्छ लघुअतिचार.			१५३
लौकागच्छ राइप्रतिक्रमण विधि.			१६०
लौकेगच्छ पादिकप्रतिक्रमणविधि.			१६१
लौकेगच्छ चोमासी प्रतिक्रमणविधि.			१६२
लौकेगच्छ संवत्सरी प्रतिक्रमणविधि.			१६२
लौकेगच्छ तपश्चितवणी काठस्सग.			१६३
लौकेगच्छ नंदिका पाठ.			१६६
सागरगच्छ प्रतिक्रमणविधि.			१६७
आनंदसूरियगच्छ प्रतिक्रमणविधि.			१६७
वडगच्छ प्रतिक्रमणविधि.			१६७
राजसूरीयगच्छ प्रतिक्रमणविधि.			१६७
लडुमी पोसाल गच्छ प्रतिक्रमणविधि.			१६८
कमलकलसा गच्छ प्रतिक्रमणविधि.			१६८
कवलेगच्छ प्रतिक्रमणविधि.			१६८
विजयगच्छ प्रतिक्रमणविधि.			१६८
पायचंद्रगच्छ प्रतिक्रमणविधि.			१६८
विमलकेवल. सिद्धाचल. चैत्यवं.			१६९
सुरकीन्नरनागनरिंदनतं. २४ जिन चैत्यवं.			१६९
आजदेव अरिहंत. पंचतीर्थी चैत्यवं.			१७०
डुविध धर्म. बीज चैत्यवंदन.			१७१
त्रिगडे बेठा वीरजिन. पंचमी चैत्यवंदन.			१७१
महाशुदी आठम. अष्टमी चैत्यवंदन.			१७२
शासननायकवीरजी. एकादशी चैत्यवं.			१७३
विशस्थानक चैत्यवं. पहिले पद अरिहंत.			१७४

विशस्थानक चैत्यवं. चोवीस पनर.		 १७४
रोहिणी चैत्यवं. रोहिणीतपश्चारा.....		 १७५
तीर्थवंदनचैत्यवं० सीमंधर प्रमुखनमुं.		 १७५
तीर्थकरराशी चैत्यवं० शांतिनमी०		 १७६
अरिहंतनमो जगवनमो.चैत्यवं.		 १७६
जिनवर्ण चैत्यवं. प्रज्ञप्रज्ञने वासुपूज्य.		 १७७
जिनजवगणना चैत्यवं.प्रथम तीर्थकर.		 १७७
जिनगणधर चैत्यवं. गणधरचोराशी.		 १७७
परमेष्ठीगुण चैत्यवं. बारगुण अरिहंतदेव.		 १७८
सीमंधरस्तुति. श्रीसीमंधरजिनवर.....		 १७८
सीमंधरस्तुति. श्रीसीमंधर देवसुहंकर.		 १७८
बीजीतिथीस्तुति. दिन सकलमनोहर.		 १७९
पंचमीस्तुति. श्रावणसुदिनपंचमीए.		 १८०
अष्टमीस्तुति. मंगलआठकरीजस.....		 १८०
एकादशीस्तुति. एकादशीअतिरुअडी.		 १८१
शांतिजिनस्तुति शांतिजिनेसरसमरियें.		 १८१
आदिजिनस्तुति आदिजिनवरराया.		 १८२
सिद्धचक्रस्तुति. जिनशासनवंच्छित.		 १८२
पर्युषणस्तुति. सत्तरजेदि.		 १८३
पुण्यनुपोषण.		 १८३
सिद्धाचलस्तुति श्रीसिद्धाचलतीर्थसार.		 १८४
पार्श्वजिनस्तुति. संखेसरपासजी.....		 १८४
सिद्धाचलस्तुति पुंडरिगिरी महिमा.		 १८५
सिद्धचक्रस्तुति नितप्रतिहुंप्रणमुं.		 १८५
पार्श्वस्तुति. ढेंडेंकीधपमप.		 १८६
पर्युषणस्तुति. वलिवलिहुंध्याउं.		 १८६
तीर्थमाळाचैत्यवं. सद्धत्तया देवलोके.		 १८७

नवपदश्रोलीकरण विधि.				१९३
अर्हत्पद खमासमण				१९४
सिद्धपद खमासमण.				१९५
आचार्यपद खमासमण.				१९६
उपाध्यायपद. खमासमण.				१९७
साधुपद खमासमण.				२००
दर्शनपद खमासमण.				२०१
ज्ञानपद खमासमण.				२०५
चारित्रपद खमासमण.				२०७
तपपद खमासमण.				२११
तपग्रहण विधि.				२१४
उजमणा विधि.				२१४
विसस्थानक तप विधि.				२१५
विसस्थानक गुणणाकाउस्सग.				२१५
मोक्षकरंडक तपविधि.				२१९
स्वर्ग करंमक.	”			२२०
सौजाग्यसुंदर.	”			२२०
चौसठिया.	”			२२०
अष्टान्हिका.	”			२२०
उल्लुजिन.	”			२२०
अष्टमी.	”			२२०
अष्टापदपाहुडी.	”			२२१
अशोकवृक्ष.	”			२२१
चांजायण.	”			२२१
सूर्यायनतप.				२२१
वर्द्धमानतप.				२२२
कनकतप.				२२२

निगोदायुतप.....					२२२
कमलजली.	”				२२२
मेरुकट्याणक.	”				२२३
ठठतप.					२२३
पदकमीतप.					२२४
सिद्धवधुकंठाञ्जणतप.					२२४
आगम केवलीतप.					२२५
अंगविशुद्धीतप.					२२५
परतपाळीतप					२३१
त्रिपर्यंतघनतप.					२३१
वर्गतप.					२३१
श्रेणितप.					२३२
घनतप.					२३२
निर्वाणदीपकतप.					२३२
बन्नीसकट्याणकतप.					२३३
कर्मचक्रवास्तप.					”
शिवकुमारबेष्टातप.					”
कर्मसुडनतप					”
अखंडदशमीतप.					२३४
अमृताष्टमीतप.					”
सत्तरीसयजिनतप.					”
अद्भुतखडुःखिततप.					”
पंचमेरूतप.					२३५
बडासमवसरणतप.					”
मोहदंडतप.					२३६
दवयंतीतप.					”
ऊणोदरीतप.					”

निर्वाणतप.					२३७
केवलज्ञानतप.					”
जिनदीक्षातप.					२३८
जिनचवन जन्मकट्याणक तप.					”
गौतमपडघातप.					”
लघुपंचमीतप.					”
पंचमीतप.					२३९
पुंरुरीकतप.					”
गुणरत्नसंवत्सरतप.					”
आयंबिलवर्द्धमानतप.					२४०
अक्षयनिधितप.					”
चांझायणतप.					२४१
श्रावकदिनचर्या.					२४२
मंगलाष्टक.					२४५
अथ द्वितीय वर्ग.					२४९
अष्ट प्रकार पूजा विधि.					२५१
एकविसप्रकारी पुजाकिविधि.					२५४
पूजाकाफल.					२५४
अथ त्रितीयवर्ग.					२५८
अथ चतुर्थवर्ग.					२६५
अथ पंचमवर्ग.					२६८
अथ षष्ठमवर्ग.					२७३
वार्षिकचर्या.					२७७
आजन्मकृत्य.					२७८
सीमंधरजिन स्तवन.					२८१
युगमंधरजिन स्तवन.					२८२
बीजनुं स्तवन.					२८३

पंचमीनुंलघु स्तवन.					१०४
ज्ञानपंचमीनुं स्तवन.					१०५
अष्टमीनुं स्तवन.					१०६
एकादशी स्तवन.					१०७
आराधनानुं स्तवन.					१०८
सिद्धचक्रजीनुं स्तवन समरीसारदमाय.					१०९
नवपदजीनुं स्तवन, नवपदध्यान.					११०
मङ्गलमुरतपाशकी.					१११
आजमहोद्वरंगरखीरी.....					११
मङ्गलराजेगिरनार.					११
गावोमङ्गलचार.					११४
कीजेमंगलाचार.					११
आजकीरेणसोहाई					११५
पोढोपोढोजीरुषत्रप्यारे.					११
राखोनाथवडाइ.					११
आवोगांवोवधाईमोरीसाथनीयां.					११
आजतोबधाई राजानाजिकेदरबार.					११६
मंगलरेगावत सकलसुरनार.					११
आजकीरेणसोहानि					११७
प्रभुकोनामअमोलहे					११
बलिहारीमरूदेविनन्दकी.					११
जगदीठातुमेराप्रभु					११८
आजप्रभुतेरेचरणलाग.....					११
नेमजिनंदसुंआंखरुली					११
दृगनजररीदेखनदेमुखचंद.					११
मेरीखागीलगन.					११९
रातगई अबप्रातहोनत्रयो.					११

आदीजिनंद.....					११
नवरीया मोरी कोन उतारे बेडापार.					३२०
जरलावेकटोराकेसरका.....					११
ह्यारोमुनेंकबमिलस्यैमनमेलु					११
ईन्द्राणीप्रजुकेवेगीआंज्यो कजरा-					११
नयनापीहरवागयेनयनावदल-					३२१
सखीरीह्यारोनेमगयोगिरनार.					११
मंतोदासीतुमारीविनादामकी.					३२२
वस्तुगतवस्तुनोदहण.					११
वसोजीमेरेनेननमेमहाराज.					३२३
दिनकेनाथदयालसवनकी.					११
प्रजुजीमोसेकवनबहानेबोदो.					११
जविकनरसेवोशांतिजिनन्द.					११
मेरेजाईजुईगुलावरी.					३२४
कुणवनवीरसमोसर्या.					११
आदिनाथजिनप्याराहो.					३२५
समऊपरीमोहेसमऊपरी.					११
चितमेधरोप्यारो.					११
दोनं दसतोमे अंगीया रचावो.					३२६
मेरोमनलागीरह्योमहावीरचरणमे.....					११
प्रजुमेरीविनतडीउरधारो.					३२७
नाथजयेवैरागीहमारे					११
तारियेमोहेशीतलस्वामी					११
क्योंकरजक्तिकरूप्रजुतेरी					३२८
संसारनांमजिस्का.					३२८
मेअरजकरूसुनोमाहाराज.					३२९
सुमतीजिनंदाप्रजुआजजुहारो.					३२९

नेमिजिनतुमरो दरसनलागेप्यासोरे.			”
सूरतएसीसावरी.			३३०
सुमतीजिनमुजरोहमारोप्रचुलीजेजी			”
हजुरतुमसैकहुमेंदिलकीवेजार.			३३०
साहिवतेरीवंदगीमैंछुलतानही.			३३१
दीखेनादानकुंसमजायाचायके.			३३२
आवोनेमरहजावोसदन.			३३२
कधीप्रचुपदमेमनलायातोहोता.			३३३
शांतीवदनकजदेखनैनमधुकरमनलीनोरे.			३३३
दिवानातेरेदरसकायारमैहुं.			३३३
ध्यानमेंजिनकेसदाखयलीनहोनाचाहीये.			३३४
आदीनाथजीदेखदरस, ...			३३४
जीनंदकीमेवारीठबीप्यारी.			३३५
एहालअपनाकहुमैंकांसे.			३३५
पंचतीर्थजिनस्तुति.			३३३
आदिनाथनुंस्तवन.			३३६
संजवनाथजिनस्तवन.			३३७
अजिननन्दनजिनस्तवन.			३३८
सुमतिनाथजिनस्तवन.			”
पदमप्रचुजिनस्तवन.			३३९
सुपार्श्वनाथनुंस्तवन.			”
चंडप्रचुजीनुंस्तवन.			३४०
सुविधिनाथस्तवन.			”
शीतलनाथस्तवन			३४१
श्रैयांसजिनस्तवन.			”
वासुपुज्यस्वामीनुंस्तवन.			३४२
बिमलनाथस्तवन.			३४२

वैरागीपद.				३४३
अनन्तनाथजिनुंस्तवन.				३४३
धर्मनाथनुंस्तवन.				३४४
शांतिनाथजिनस्तवन.				३४५
कुंथुनाथजिनस्तवन.				”
अरनाथजिनुंस्तवन.				”
मङ्गीनाथजिनुंस्तवन-				३४६
मुनीसुव्रतजिनुंस्तवन.				३४६
नमीनाथजिनस्तवन.				३४७
नेमनाथजीनुंस्तवन.				३४७
पार्श्वनाथजीनुंस्तवन.				”
महावीरस्वामीनुंस्तवन.				३४८
मुंढालामहावीरस्तवन.				३५०
तोबिनाश्रौरनजाचुंजिनंदराय.				३५१
साचुंठेजिनंदनामश्रवरनेनराचुं.				”
धनयुवतीपरमनललचाणुं.				”
अकलस्वरूपीघटघटव्यापी.				३५२
दीलधरमनकरजिनवरपूजन करवाजईयेंआज.				३५२
प्रभुतारहवेमारुंअहींसुंथसेरे.				”
श्रीचराचरविश्ववरा.				३५३
निहारयार सारतुं विचार दारहे.				३५३
देखानही कबुसार जगतमे.				३५४
दरीसन बिनअखियातरसरही.				३५४
जबलगविषयघटान घटी.				३५५
जयजय नवपदा आपसंपदा				३५५
प्रभुदीजेदरस बडी बेरजइ.				३५६
प्रभुमेरो ज्ञानकी ज्योती.				३५६

गोडी गाड़्यें मनरंग.	 ३५६
सकल कर्म मलहय करके सुगत पुरगए गएरे.	 ३५७
कहाकीनो नर जव पाके.	 ३५७
अजिहोकहो ज्ञानी.	 ३५८
जिनरायाना दरिसन पाथारे.	 ३५८
तुज्यं नमस्ते स्वामी शांति जिनंदाजी.	 ३५९
वीरप्रभुतेरी दोस्तिमे.	 ३५९
तुमतोजले विराजोजी.	 ३६०
नाथकेसे जंबुको मेरु कंपायो.	 ३६०
सामरियाजैसे बने तेसैं तारो.	 ३६१
आंगीनी रचनाढे बहु सारी.	 ३६२
सामरो सुख दाई.	 ३६२
सामकहियो विनती मोरी.	 ३६३
पावापुरजिनगीतं अखीया मेरी.	 ३६३
जिनराज नाम तेरा.	 ३६४
अबतो उधार्यो मोहे चाहिये.	 ३६४
गुण अनंत अपार प्रभु तेरे.	 ३६५
माई मेरो मन तेरो नंद हरे.	 ३६५
इंज्राणी सब ठमक ठमक जन्म मोझव.	 ३६५
घननननन घनननन घंट सुघोषा.	 ३६६
कहुं कहांछों वारुं नणदलवीर.	 ३६६
होजी आद्री जाने मनैथारी चाहघणी ठे.	 ३६६
रुषज जिणंद आनंद कंद कंदा.	 ३६६
प्रभु नेमकुमरजी आप विराजो गीरनार मे.	 ३६७
किसविध किये कर्म चकचूर.	 ३६८
जनक सुताहुं नाम धरावुं सीता सझाय.	 ३६९
नरजव नयर सोहामणुं वणजारारे.....	 ३७०

सुणसोदागर बे दिखंकी बात हमेरी.			३७१
आप स्वजावमारें अबधु सदा भगन.			३७१
सहजानंदीरे आतमा.			३७२
सांजल सयणा साची सुणावुं.			३७४
प्राणी रात्रिजोजन वारो.			३७५
जोवनियानी मोजां फोजां.			३७६
निंदा मकरशो कोइ पारकीरे.			३७७
सुणकंतारे शीख शोहामणी.			३७८
नारी सीखामणी.			३८०
धोबीनानी सद्याय			३८३
जरत चक्रीनी सद्याय.			३८४
वैराग्य सद्याय.			३८४
बाहुबलजीनी सद्याय.			३८५
ढंढणरुषिजीनी सद्याय.			३८५
अईमंताजीनी सद्याय.			३८६
करकंडू प्रत्येक बुधजीनी सद्याय.			३८७
मनोरमा सतीनी सद्याय.			३८८
क्रोधनी सद्याय.			३८९
माननी सद्याय.			३८९
मायानी सद्याय.			३८९
आचारंगसूत्रनी सद्याय.			३९०
कलियुगनी सद्याय.			३९१
शियल स्वाध्याय.			३९२
निजडीनी सद्याय.			३९३
आत्मबोध सद्याय.			३९४
पांचमा आरानो सद्याय.			३९५
अमल वर्जन स्वाध्याय.....			३९७

काया उपर सद्वाय.			 ३९९
तेरकाठीयानी सद्वाय.			 ४००
मोहोटीहोंस नकरवाआश्रयी सद्वाय.			 ४०१
मधुबिंदुकादृष्टांत सद्वाय.			 ४०२
वैराग्य सद्वाय.			 ४०३
स्त्रीवर्जन शिखामण सद्वाय.			 ४०४
परस्त्री वर्जन सद्वाय.			 ४०५
जीवने समता विशेषे शिखामण.			 ४०७
दान शिख तप जाव स्वाध्याय.			 ४०७
सामायिक द्वाज सद्वाय.			 ४०८
ठीक विचार सद्वाय.			 ४०९
वैराग्योपदेशक सद्वाय.			 ४१०
जाव स्वाध्याय.			 ४११
विशस्थानकना तपनो सद्वाय.			 ४१२
शियलविषे शिखामणनो सद्वाय.			 ४१२
प्रजाते बाणलांगावानो सद्वाय.			 ४१४
काउ काज न आवेरे.			 ४१६
चैतन्यशिक्षाज्ञास आपविचारजोरे.			 ४१६
किसको सबदिन सरखे न होय.			 ४१७
निज्ञानी सद्वाय बैटीमोहनरींदकी.			 ४१८
कायामायाकारमी.			 ४१९
सारबोखनी सद्वाय.			 ४२०
सामायिकनावत्रीशदोष सद्वाय.			 ४२१
अइमंताजीनी सद्वाय.			 ४२२
समकेतनी चोपड़.			 ४२३
आत्मशिक्षा सद्वाय.			 ४२६

माया सद्याय.					४३७
शीलविशे सद्याय.					४३८
कर्मनी सद्याय.					४३८
सुमति विद्याप सद्याय.					४३९
मेघरथ राजानी सद्याय.					४३८
पंदर तिथिनी पंदर सद्याय.					४३३
प्रतिपदानी सद्याय.					४३४
द्वितीयानी सद्याय.					४३५
तृतीयानी सद्याय.					४३६
चतुर्थीनी सद्याय.					४३६
पंचमीनी सद्याय.					४३७
षष्ठीनी सद्याय.					४३८
सप्तमीनी सद्याय.					४३९
अष्टमीनी सद्याय.					४४१
नवमीनी सद्याय.					४४२
दशमीनी सद्याय.					४४३
एकादशीनी सद्याय.					४४४
द्वादशीनी सद्याय.					४४५
त्रयोदशीनी सद्याय.					४४६
चतुर्दशीनी सद्याय.					४४७
पूर्णिमानी सद्याय.					४४८
उपदेशी पद.					४५०
जाग जाग रेन गई.					४५१
मे परदेसी डुरका.					४५१
मन खोजी तेरो कुन पतियारो.					४५१
रेमन क्युंजिन नाम विसार्यो.					४५२
जगामे नही तेरा कोई.					४५२

जुठी जगतकी माया.	४५३
मान कहा अब मेरा.	४५३
जुह्योजमत कहारे.	४५४
जागरे बटाछ.	४५४
बिणसत वार न लागे.	४५४
जुठी जगमाया नर केरी.	४५५
मेरे घट ज्ञान ज्ञान जयो..	४५५
थापुदगलका क्या विश्वासा.	४५६
गौतमाष्टक ठंद.	४५७
तिजयपहुत.	४५८
नमिजणनामक स्मरण.	४५९
जक्तामर स्मरण.	४६१
कट्याण मंदिर स्तोत्रम्.	४६७
बृद्ध गोतम स्वामीनो रास.	४७३
महावीरजिन ठंद.	४८१
नवकारनो ठंद.	४८३
शोलसतिनो ठंद.	४८६
नवकार लघु ठंद.	४८७
जिनपंजर स्तोत्र.	४८९
ग्रहशान्तिस्तोत्रम्.	४९१
मंत्राधिराज स्तोत्रम्.	४९२
लघुजिनसहस्रनाम.	४९५
पार्श्वजिन स्तुति.	४९८
शंखेश्वर जिनस्तव.	४९९
पार्श्वजिन स्तोत्रम्.	५००
परमात्मा स्तोत्रम्.	५०२
नमस्कार स्तोत्रम्.	५०३

ऋषिमंरुल स्तोत्रम्.	५०४
गौरीपार्श्वजिन वृद्ध स्तवन वाणीब्रह्मा.	५०९
ज्रीडजंजन पार्श्वनाथ ठंद.	५१४
सरस्वती अष्टक.	५१७
क्रोध मान माया लोचनो ठंद.	५१९
मणिज्जजिनो ठंद.	५२२
मणिज्जजिनी आरती.....	५२३
ज्वर (ताव) ठंद.	५२४
यंत्र महिमा वर्णन ठंद.	५२६
मंगलच्यार.	६२७
ज्रीडजंजन पार्श्वनाथनो ठंद.	५३०
गौतम गुरु प्रज्ञात ठंद.	५३१
पार्श्वनाथ ठंद.	५३२
गौरी पार्श्वनाथनो ठंद.	५३२
चोत्रीस अतिसयनो ठंद.	५३३
शिखामणनो ठंद.	५३५
अंतरिक पार्श्वनाथ ठंद.	५३७
शांतिजिन विनतिरूप ठंद.	५३९
पार्श्वनाथनो ठंद.	५४०
शनीश्वरनो ठंद.	५४४
गौतम प्रज्ञाति स्तवनं.	५४७
दोधक बावनी.	५४७
साधुसाध्वी योग्य आवश्यक कियाके सूत्रें.	५५३
करमि जंतें.	५५३
इष्टमि ठामि.	५५३
देवसिक अतिचार.	५५४
रात्रिक अतिचार.	५५४

श्रीश्रमण सूत्र पगामसञ्ज्ञाय.				१११
पाक्षिक अतिचार.				१६१
पाक्षिक सूत्र.				१६६
पाक्षिक खामणा.				१८७
प्रातः पन्निसेहणकी विधि.				१८९
संध्या पन्निसेहण विधि.				१९०
पोरसी विधि.				१९१
पच्चखाण पारणेकि विधि.				१९१
गोचरीआलोयण विधि.				१९४
स्थंडिलशुद्धिका विधि.				१९५
संआरापोरसिकी विधि.				१९६
पाक्षिक प्रतिक्रमण ढींकनी थुई.				१९६
ठमासि काउसग करनेकि विधि.				१९७
अंतिम देव वंदनकि विधि.				१९८
सोल संस्कार नाम.				६०१
संस्कार करानेयोग्य गुरु.				६०१
गर्जाधान संस्कार विधि.				६०२
शांतिदेवीमंत्र.				६०४
शांतिदेवीस्तोत्र.				६०५
अंश्रियोजनमंत्र.				६०६
अंश्रिवियोजनमंत्र.				६०८
जैनवेदमंत्रोत्पत्ति.				६०८
पुंसवनसंस्कारविधि.				६१०
जन्मसंस्कारविधि.				६१३
जलमंत्र.				६१४
रक्षामंत्र.				६१५
चंद्रसूर्यदर्शनसंस्कारविधि.				६१६

सूर्यमंत्र.	६१६
चंद्रमंत्र.	६१७
ह्रीं राशनसंस्कारविधि.	६१९
षष्ठीसंस्कारविधि.	६२०
मातृकापूजन.	६२१
सूचिकर्मसंस्कारविधि.	६२४
नामकरणसंस्कारविधि.	६२६
अन्नप्राशनसंस्कारविधि.	६२९
कर्णवेधसंस्कारविधि.	६३२
द्वौरकरणसंस्कारविधि.	३३४
उपनयनसंस्कारविधि.	६३६
चारोंवर्णकी ज्ञिता.	६४१
जिनोपवीतस्वरूप.	६४१
उपनयनार्थ.	६४२
उपनयनआरंभ.	६४५
मेखलामंत्र.	६४७
कोपीनमंत्र.	६४९
उपनयनधारणमंत्र.	६४९
व्रतबंधनविधि. (नमस्कारमहिमा)	६५१
व्रतादेशविधि.	६५२
ब्राह्मणव्रतादेश.	६५५
क्षत्रियव्रतादेश.	६५८
वैश्यव्रतादेश.	६६०
चातुर्वर्ण्यव्रतादेश.	६६१
व्रतविसर्गविधि.	६६६
गोदानविधि.....	६६९
दानग्रहणमंत्र.	६७२

शूद्रको उत्तरीय.				६७३
बटु करण विधि.				६७६
विद्यारंज संस्कार विधि.				६८१
विवाहसंस्कारविधि.				६८३
ब्राह्मविवाहप्रकार.				६८५
प्राजापत्यविवाहप्रकार.				६८६
आर्षविवाहप्रकार.				६८६
दैवतविवाहप्रकार.				६८६
कन्यादानविधि.				६८७
कुलकरस्थापना.				६९१
हस्तबंधनमंत्र.				६९७
वेदिप्रतिष्ठा.				६९८
तोरणप्रतिष्ठा.				६९९
अग्निस्थापनमंत्र.				६९९
हवनमंत्र.				७००
मधुपर्कादिविधि.				७०१
प्रथमलाजाकर्म (प्रथम प्रदक्षिणा)				७०२
द्वितीयलाजाकर्म (द्वितीय प्रदक्षिणा)				७०४
तृतीयलाजाकर्म (तृतीय प्रदक्षिणा)				७०५
चतुर्थलाजाकर्म (चतुर्थ प्रदक्षिणा)				७०६
करमोचन.				७०८
वरबधूविसर्जन.				७०९
कुलकरविसर्जन.				७१०
व्रतारोपसंस्कारविधि.	...			७११
गुरुलक्षण.				७१२
गुरु त्रिसगुण.				७१३
श्रावक इक्कीसगुण.				७१४

सम्यक्कारोहण.				७१५
देववंदन.				७१६
अर्हणादिस्तोत्र (स्तवन)				७२२
सम्यक्तदंरुक.				७२६
नियमप्रदान.				७२७
देवतत्वस्वरूप.				७३१
मिथ्यात्वस्वरूप.				७३३
अदेवलक्षण.				७३७
गुरुलक्षण.				७३७
अगुरुलक्षण.				७४०
धर्मलक्षण.				७४१
अधर्मलक्षण.				७४१
देशविरतीसामायिकारोपण.				७४४
छादशत्रतारोपणविधि.				७४५
प्रतिमावहनविधि.				७५५
उपधानविधि.				७५७
नवकारउपधान.				७६०
इरियावहीउपधान.				१६२
शक्रस्तव (नमुबुणं) उपधान.				७६४
चैत्यस्तव (अरिहंतचेइआणं) उपधान.				७६६
लोगस्सउपधान.				७६६
पुरकरवरदीउपधान.				७६७
सिद्धाणंबुद्धाणंउपधान.				७६७
माक्षारोपणविधि.				७७१
श्रावकदिनचर्या.				७७०
कटपोक्तजिनपूजनविधि.				७७०
अंत्यसंस्कारविधि.				७७५

बृहत्साराधनाविधि.				 ८०६
ह्यामणाविधि.		...		 ८१५
व्युत्सर्गविधि.				 ८१६
अनशनविधि.				 ८२०
अग्निसंस्कारविधि.	...			 ८२१
कालज्ञानस्वरूपं.				 ८२१
समाप्तिमंगल.				 ८२४

जाहिर खबर

हमारा तर्फसे "जैन विवेक प्रकाश" मासिक पुस्तक प्रत्येक मास प्रसिद्ध होता है. जिसमें बालबोध लिपी, हिंदी जाषामें धार्मिक, व्यावहारिक, नैतिक, सामाजिक विविध विषयें प्रत्येक मास प्रगट होते हैं वार्षिक खवाजम टपालसह एक रुपया तीन आना.

- (१) पंच प्रतिक्रण सूत्र. किमत एकरुपया.
 (२) जैन संस्कार विधि. किमत एकरुपया.
 (३) चंपक चंद्रावती, गुजराती. किमत बारे आना.
 (४) जैन गर्बावली. किमत तीन आना.
 (५) बालमित्रस्तवनावली जागपहिला. ,, दो आना.
 (६) ,, ... जाग दुसरा. ,, चार आना.
 (७) ,, ... जाग तिसरा ,, चार आना.
 (८) प्राप्तव्य मार्थिक. गुजरातीवार्ता. ,, एक आना.
 (९) प्रश्नोत्तररत्नमाला, व, मूर्खशतक. हिंदी टीका. एक आना.
 (१०) मूर्त्ती पूजा मंडन हिंदी जाषा. किमत एक आना.
 (११) विदेशी खांडकी नृष्टता. ,, एक आना.

मिलनेका पत्ता. मुंबई पायधोणी श्री शांतिनाथजी मंदिर.

यतिज्ञानचंद्र.

॥ जैनधर्मसिंधु. ॥

॥ श्रीश्रावकस्य पंचप्रतिक्रमणादि सूत्राणि ॥

॥ १ ॥ प्रथमनवकार पंचमंगलरूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥
नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवआयाणं ॥ ४ ॥
नमो लोए सबसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमु
कारो ॥ ६ ॥ सबपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंग
लाणं च सबेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं
॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ २ ॥ अथ पंचिदिअ ॥

॥ पंचिदिअ संवरणो ॥ तह नवविह बंजचेर
गुत्ति धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को ॥ इअ अ
छारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महवय जुत्तो ॥
पंचविहायार पावणसमढो ॥ पंच समिज ति
गुत्तो ॥ ठत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ अथ खमासमण ॥

॥ इहामि खमासमणो वंदिउं ॥ जावणिजाए
निसीहिआए ॥ मढएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥४॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा ॥

॥ इत्तकारि सुहराइ सुहदेवसी ॥ सुख तप
शरीर निराबाध ॥ सुख संजम यात्रा निर्वहो
गेजी ॥ स्वामी शाता गेजी ॥ ज्ञात पाणीनो
लाज देजो जी ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इत्ताकारेण संदिसह जगवन् ॥ इरियाव
हियंपम्किमामि ॥ इत्तं इत्तामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥
इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणाग
मणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥
जंसा उत्तिंग पाणग दग मट्टी मक्कमा संताणा
संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥
एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचि
दिया ॥ ६ ॥ अज्जिहया वत्तिया लेसिया संघा
इया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उह
विया ठाणाउठाणं संकामिया जीवियाउ ववरो
विया ॥ तस्स मित्तामि डक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायत्तिक्ककरणेणं ॥
विसोहीकरणेणं ॥ विसट्ठीकरणेणं ॥ पावाणं

कम्माणं ॥ निग्घायणछाए ॥ ठामि काउस्सग्गं
॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ अथ अन्नञ्ज उससिएणं ॥

॥ अन्नञ्ज उससिएणं नीससिएणं खासिए
णं गीएणं जंजाइएणं उडुएणं वायनिसग्गेणं
जमल्लिए पित्तमुत्ताए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचा
लेहिं ॥ सुहुमेहिं खेत्तसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठ्ठि
संचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अ
जग्गो अविराहिज्ज ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥
जाव अरिहंताणं जगवंताणं नमुक्कारेण न पा
रेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं
अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिब्बयरेजि
णे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली
॥ १ ॥ उसज्ज मज्झिअं च वंदे ॥ संजव मज्झिणं
दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं
च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सी
अल्ल सिज्जांस वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंतं च
जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं

च मद्धि वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदा
 मि रिठ्ठनेमि ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं
 मए अज्झिथुआ ॥ विट्ठय रयमत्ता पहीण जर
 मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिब्बयरामे प
 सीयंतु ॥ ५ ॥ कित्ति य वंदिय महिया ॥ जेए
 लोगस्सजत्तमासिद्धा ॥ आरुग्ग बोद्धिज्जात्तं ॥
 समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मल-
 यरा ॥ आइचेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर
 वर गंजीरा ॥ सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ६ ॥
 सबलोए ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ९ ॥ अथ सामायिकनुं पच्चस्काण ॥

॥ करेमि जंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्च
 स्कामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ डविहं ति
 विहेणं मणेणं वायाए काएणं ॥ न करेमि, न
 कारवेमि तस्स जंते पक्कमामि निंदामि गरि
 हामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ १० ॥ अथ सामायिक पारवानुं ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो ॥ जाव मणे होइ निय
 म संजुत्तो ॥ बिन्नइ असुहं कम्मं ॥ सामाइअ
 जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइअंमि उ कए ॥ स

मणो इव सावर्ज हवइ जम्हा ॥ एएण कारणे
 णं ॥ बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ १ ॥ सामायि
 क विधिं लीधुं विधिं पारिजं ॥ विधि करतां जे
 कोइ अविधि हुजं होय ते सवि हुं मन वचन
 कायाये करी ॥ मिहामि डक्कडं ॥ इति ॥१॥

॥११॥अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इहाकारेण संदिसह जगवन् ॥ चैत्यवंद
 न करुं ॥ इहं ॥ जगचिंतामणि जगनाह ॥ जग
 गुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसहवाह ॥ जग
 ज्ञाव विअक्खण ॥ अछावय संठविअ ॥ रुव
 कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर ॥ जयं
 तु अप्पडिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मजूमिहिं क
 म्मजूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्त
 रिसय ॥ जिणवराण विहरंत वज्झइ ॥ नव को
 डिहिं केवलिण ॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्म
 इ ॥ संपइ जिणवरवीसमुणि ॥ बिहुं कोडिहिं
 वरणाण ॥ समणह कोडि सहस डअ ॥ थुणि जि
 अनिच्च विहाणि ॥ १ ॥ जयउ सामी जयउ सामी ॥
 रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जित पडु नेमिजिण ॥ जयउ
 वीर सच्चउरि मंरुण ॥ जरुअहहिं मुणिसुव्वय ॥

मुहरिपास डह डरिअखंमाणे ॥ अवर विदेहिं
 तिब्बयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥ ती
 अणागय संपइअ ॥ वंडं जिण सवेवि ॥ ३ ॥
 सत्ताणवइ सहस्सा ॥ लस्का ठप्पन्न अठकोडि
 उ ॥ वत्तीस बासिआइं ॥ तिअलोए चेइए वंदे
 ॥ ४ ॥ पनरस कोमि सयाइं ॥ कोमी बायाल
 लस्क अमवन्ना ॥ वत्तीस सहस असिआइं ॥
 सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिब्बं ॥ सग्गे पायालि मा
 णुसे लोए ॥ जाइं जिण बिंबाइं ॥ ताइं सवा
 इं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ अथ नमुहुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुहुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥
 आइगराणं, तिब्बयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥
 पुरिसोत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंमरी
 आणं, पुरिसवरगंधहवीणं ॥ ३ ॥ लोगोत्तमा
 णं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपई
 वाणं, लोगपज्जो अगराणं ॥ ४ ॥ अज्जयदया
 णं, चकुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं,

बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिया
 णं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर
 चाजरंतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहयवर
 नाणदंसणधराणं, विअट्ठ ठउमाणं ॥ ७ ॥
 जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं
 बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सब्बूणं
 सब्बदरिसिणं, सिव मयत्त मरुअ मणंत मस्क
 य मग्धावाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नाम
 धेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ न
 याणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआ जेअ सिद्धा ॥ जेअ
 नवि स्संति णागए काले ॥ संपइअ वट्ठमाणा ॥
 सब्बे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरि
 अलोएअ ॥ सब्बाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तह
 संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय माहाविदे
 हे अ ॥ सब्बेसिं तेसिं पणज ॥ तिविहेण तिदं
 ड विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥

॥१६॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥नमोऽर्हत्सि-क्षार्थोपाध्यायसर्वसाधुज्यः॥
इति ॥ १६ ॥

॥१७॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म
घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलक
द्वाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥
कंठे धारेइ जो सया मणुजं ॥ तस्स गहरोगमा
री डुठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे
मंतो ॥ तुअ पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर ति
रिएसुवि जीवा ॥ पावंती न डुक्क दोहग्गं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्तेल्ल-धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवअहिण
॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं
॥ ४ ॥ इअ संयुजं महायस ॥ जत्तिअरनिअिरे
णहिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं जवे जवे
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥१८॥ अथ जयवीअराय

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुह
पजावजं जयवं ॥ जवनिवेजं मग्गा ॥ णु सारि
आ ठइ फलसिद्धि ॥ १ ॥ लोगविरुद्धञ्चाउ ॥

गुरुजणपूआ परञ्चकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो
तवयण ॥ सेवणा आचव मखंडा ॥ २ ॥ वारि
जइ जइवि निआण ॥ बंधणं वीअराय तुह
समए ॥ तहवि मम हुज्ज सेवा ॥ जवे जवे तुम्ह
चलणाणं ॥ ३ ॥ डुक्कस्कुजं कम्मस्कुजं ॥ स
माहि मरणं च बोहिल्लाजो अ ॥ संपज्जउ मह
एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व
मंगलमांगल्यं ॥ सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं
सर्वधर्माणां ॥ जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ १८ ॥

॥ १९ ॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं
॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥
सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहि
ल्लाज वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ २ ॥
सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥
वद्धमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ अन्नञ्ज ० इति

॥ २० ॥ अथ कद्धाणकंदं स्तुति ॥

॥ कद्धाणकंदं पढमं जिणंदं ॥ संतिं तओ
नेमिजिणं सुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिकठाणं
॥ जत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार सं

सारसमुद्गपारं ॥ पत्ता सिवं दिंतु सुश्कसारं ॥
 सवे जिणंदा सुरविंदवंदा ॥ कद्धाणवद्धीणवि
 सालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वर जाणकप्पं॥
 पणासिया सेस कुवाइदप्पं ॥ मयं जिणाणं स
 रणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं तिजग प्पहाणं॥३॥
 कुंदिङ्गोस्कीरतुसारवन्ना ॥ सरोजद्वडा कमळे
 निसन्ना ॥ वाएसिरी पुढयवग्गद्वडा ॥ सुहाय
 साअह्म सया पसन्ना ॥ ४ ॥

॥ २१ ॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति ॥

॥ स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्यावि
 ज्ञोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मयाहतरस,त्रांत्या
 त्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रज्ञाधवलितं, क्षीरो
 दकाशंकया ॥ वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति,
 श्रीवर्धमानो जिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहत पद्मरे
 णुकपिशक्षीराणवांजोभृतैः ॥ कुंजैरप्सरसां प
 योधरत्नरप्रस्पर्धिभिः कांचनैः ॥ येषांमंदररत्न
 शैलशिखरे जन्माग्निषेकः कृतः ॥ सर्वैः सर्वसु
 रासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥ अ
 र्द्धकप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं,
 चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धि

मङ्गिः ॥ मोक्षाग्रद्वारज्ञतं व्रतचरणफलं हे
यज्ञावप्रदीपं, ज्ञत्तया नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहम
खिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योम
नीलद्युतिमलसदृशं बालचञ्जामदंष्ट्रं, मत्तं घं
टारवेण प्रसृतमदजलं पूरयन्तं समन्तात् ॥ आ
रूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः काम
रूपी, यद्दः सर्वानुज्जृतिर्दिशतु मम सदा सर्व
कार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरजि
नचतुर्दशीस्तुतिः ॥ ११ ॥

॥ अथ संसारदावानी स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं ॥ संमोहधूली
हरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीरं ॥
नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञावावनाम
सुरदानवमानवेन ॥ चूलाविलोलकमलावलि
मालितानि ॥ संपूरिताग्निनतलोकसमीहि
तानि ॥ कामं नमामि जिनराजपदानि तानि
॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूरान्जिरामं ॥
जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चू
लावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं ॥ सारं वी
रागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आम्

लालोखधूलीबहुलपस्मितालीढलोखालिमाता॥
 ऊंकारारावसारामलदलकमलागारजूमिनिवासे॥
 बायासंजारसारे वरकमलकरे तारहाराजिरा
 मे ॥ वाणीसंदोहदेहे नवविरहवरं देहि मे देवि
 सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥२३॥ अथ पुष्करवरदी ॥

॥ पुष्करवरदीवद्धे ॥ धायइसंमे अ जंबुदी
 वे अ ॥ नरहे रवय विदेहे ॥ धम्माइगरे नमं
 सामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपम्बविधंसण,
 स्स ॥ सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधर
 स्स वंदे ॥ पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥
 जाई जरामरणसोगपणासणस्स ॥ कट्ठाण
 पुक्कलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवन
 रिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार सुवलज्ज
 करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेजोपयउं णमो जिणम
 ए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न कि
 न्नर गण, स्सञ्जुअ जावच्चिए ॥ लोगो जह पइ
 ठिउं जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं ॥ धम्मो वद्धउं
 सासवउं, विजयउं, धम्मुत्तरं वद्धउं ॥ ४ ॥ सुअस्स
 जगवउं केरमि काउस्सगं वंदणवत्तिआए ॥

॥१४॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं, बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगया
णं ॥ लोअग्रग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसि
द्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली
नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे म
हावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवस
हस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराजं तारेइ
नरंव नारिंवा ॥३॥ उज्जित सेव सिहरे, दिस्का
नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्क वट्ठिं, अ
रिठ्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दसदो
य, वंदिया जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठि
अठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति१४

॥१५॥ अथ वेयावच्चं गराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्महिठि
समाहि गराणं ॥ इति ॥ १५ ॥ करेमि काउ
स्सग्गं ॥ अन्नत्तं ॥

॥१६॥ अथ जगवानादि वंदन ॥

॥ जगवान् हं ॥ आचार्य हं ॥ उपाध्याय
हं ॥ सर्वसाधु हं ॥ इति ॥ १६ ॥

॥२७॥ अथ देवसिञ्च पडिक्कमणे ठाउं ॥

॥ इञ्जाकारेण संदिसह जगवन् ॥ देवसिञ्च पडिक्कमणे ठाउं ॥ इहं सबस्सवि देवसिञ्च उ च्चिंतिञ्च ॥ उज्जासिञ्च उच्चिठिञ्च ॥ तस्स मि ञ्जामि उक्कडं ॥ इति ॥ २७ ॥

॥२८॥ अथ इञ्जामि ठामि ॥

॥ इञ्जामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देव सिउं अइआरो कउं ॥ काइउं वाइउं माणसिउं उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो उ व्वाउं ॥ उच्चिचिंतिउं अणायारो ॥ अणिठिञ्च वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणेत्तह दंसणे चरित्ता चरित्ते ॥ सुए समाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गुण वयाणं ॥ चउन्हं सिस्कावयाणं ॥ बारसवि हस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिञ्चं जं विरा हिञ्चं ॥ तस्स मिञ्जामि उक्कडं ॥ इति ॥ २८ ॥

॥२९॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमित हय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिउं ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे

उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अह तडुज
 ए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकि
 अ निक्कंखिअ, निव्वितिगिह्हा अमूढ दिठीअ॥
 उववूह ङिरीकरणे, वल्ल पज्जावणे अट्ठ ॥ ३ ॥
 पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिं समिईहिं तीहिं
 गुत्तीहिं ॥ एस चारित्तायारो, अठविहो होइ ना
 यवो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे, सञ्चितरबा
 हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अण्णाजीवी, ना
 यवो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअरि
 या, वित्ती संखेवणं रसच्चाउं ॥ कायकिळेसो
 संखी, ए याय बवो तवो होई ॥ ६ ॥ पाय
 ङित्तं विणउं, वेयावच्चं तहेव सच्चाउं ॥ ऊणं उ
 स्सग्गो विय, अञ्चितरउं तवो होई ॥ ७ ॥ अण
 गूहिअ बल विरिउं, पडिक्कमइ जो जुहुत्त मा
 उत्तो ॥ जुंजइअ जहाय्यामं, नायवो वीरिआया
 रो ॥ ८ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ ३० ॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्चामि खमासमणो वंदिउं, जावणि
 ज्ञाए निसीहिआए ॥ अणुज्जाणह मे मि उग्ग
 हं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खम

णिज्जो जे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुजे
 ण जे, दिवसो वइकंतो जत्ता जे ॥ जवणिज्जं
 च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिआए वइक्क
 मं आवसिआए, पन्निक्कमामि खमासमणाणं ॥
 देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए
 जं किंचि मिहाए, मण्डुकमाए वयड्कडए ॥
 कायड्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोप्पा
 ए, सव्वकालिआए ॥ सव्व मिहोवयाराए, सव्वध
 म्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआ
 रो कउं, तस्स खमासमणो पन्निक्कमामि ॥ निं
 दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ बी
 जीवारने वांदणे आवसिआए ए पद न कहेवुं
 अने रात्रियें राइउं वइकंतो, तथा चउमासीयें
 चउमासी वइकंतो, पस्कीयें पस्को वइकंतो सं
 वत्तरीयें संवत्तरो वइकंतो ॥ एवी रीतें पाठ क
 हेवो ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥ अथ देवणिअं अलोउं ॥

॥ इहाकारेणसंदिसह जगवन् देवसिअं आ
 लोउं इहं ॥ आलोएमि जोमे ॥ इति ॥ ३१ ॥

॥३१॥ अथ सातलाख ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख
अप्पकाय ॥ सात लाख तेजकाय ॥ सात लाख
वाजकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥
चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ बे लाख
बेइंजिया॥बे लाख तेंजिय ॥ बे लाख चौरिंजिया॥
चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार
लाख तिर्यंच पंचेंजिय ॥ चौद लाख मनुष्य ॥
एवं कारे चौराशीलाख जीवायोनिमांदि, माहारे
जीवें जे कोइजीव हण्यो होय, हणव्यो होय, ह
णता प्रत्ये अनुमोच्यो होय, ते सबेहुं मनेवचने
कायायें करीतस्स मिहामि डक्कमं ॥इति॥ ३१ ॥

॥३३॥ अथ अठार पापस्थानक ॥

॥ पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद त्री
जें अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह
ठेठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे
लोभ, दशमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कल
ह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमें पैशुन्य, पन्नरमे
रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया
मृषावाद, अठारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अठार पा

पस्थानमाहे, म्हारे जीवें जे कोइ पाप सेव्युं
 होय, सेंवराव्युं होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं
 होय, ते सबे हुं मनैं, वचनैं, कायायें करी तस्स
 मिळामि डक्कनं ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥३४॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ डच्चित्तिअ, डप्पासी
 अ डच्चिठ्ठिअ ॥ इत्ताकारेण संदिसह जगवन्
 इत्तं ॥ तस्स मिळामि डक्कडं ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥३५॥ अथ श्रावकवंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सब सिधे, धम्मायरिएअ सब
 साहूअ ॥ इत्तामि पन्निक्कमिजं, सावगधम्माइ
 आरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह
 दंसणे चरित्तेअ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निं
 दे तं च गरिहामि ॥२॥ डुविहेपरिग्गहंम्मि, सा
 वजे बहुविहेअ आरंजे ॥ कारावणेअ करणे, प
 डिकमे देसिअं सबं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं,
 चउहिं कसाएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसे
 ण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे
 निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाजोगे ॥ अज्जि
 उगेअ निउगे, पडिकमे ॥ ५ ॥ संका कंख वि

गिह्वा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्त
 स्स इअरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ ठक्कायसमारंजे,
 पयणे अ पयावणेय जे दोसा ॥ अत्तछाय पर
 छा, उन्नयछा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव
 याणं, गुणवयाणं च तिष्ठ मइयारे ॥ सिस्का
 णं च चउएह, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयं
 मि, थूलग पाणाइवाय विरईउं ॥ आयरिअ
 मप्पसंहे, इह पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंध
 ठविहेए, अइ जारे जत्त पाण बुहेए ॥ पढम व
 यस्स इअरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव
 यंमि, परिथूलगअलिवयणविरईउं ॥ आ
 यरिअमप्पसंहे, इह पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
 सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे
 अ ॥ बीय वयस्स इअरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥
 तइए अणुवयंमि, थूलग परदवहरणविरईउं ॥
 आयरिअ मप्पस्संहे, इह पमायप्पसंगेणं ॥
 ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरूढ ग
 मणे अ ॥ कूमतूल कूममाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥
 चउहे अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउं
 ॥ आयरिअ मप्पस्संहे, इह पमायप्पसंगेणं

॥ १५ ॥ अपरिगृहित्रा इत्तर, अणंग वीवाह
 तिष अणुरागे ॥ चउत्त वयस्स इत्तारे, पडिक्क
 मे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुवए पंचमंमि आयरि
 अ मप्पसहंमि ॥ परिमाण परित्तेए, इत्त पमाय
 प्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्तू, रुप्प सु
 वत्ते अ कुविअ परिमाणे ॥ डुपए चउप्पयंमि, प
 डिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परिमाणे, दिसा
 सु उहं अहेअ तिरिअं च ॥ बुद्धिसइअंतरक्षा,
 पढमंमि गुणवए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसं
 मिअ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्लेअ ॥ उवज्जोगे
 परिज्जोगे, बीयंमि गुणवए निंदे ॥ २० ॥ सच्चि
 ते पन्निबुद्धे, अप्पोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥
 तुहोसंहि जस्सकणया, पन्निक्कमे० ॥ २१ ॥ इं
 गाळी वणसाडी, जाडी फोमी सुवज्जाए कम्मं ॥
 वाणिज्जं चेवय दंत, लस्स रस केस विसविस
 यं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिह्वाण, कम्मं निह्वंठ
 णं च दवदाणं ॥ सरदह तलाय सोसं, असई
 पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सव्वग्गि मुसल जंत
 ग, तणकठे मंत मूल जेसजे ॥ दिन्ने दवाविए
 वा, पन्निक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणूवट्ठण वन्नग, वि

लेवणे सहस्ररूप रस गंधे ॥ वञ्चासणआज्जर
 णे, पम्किमे ० ॥ १५ ॥ कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि
 अहिगरण जोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अण्ठाए,
 तइअंमि गुणवए निंदे ॥ १६ ॥ तिविहे डुप्पणि
 हाणे, अणवठाणे तहा सइविहूणे ॥ सामाइअ
 वितह कए, पढमे सिस्कावए निंदे ॥ १७ ॥
 आणवणे पेसवणे, सहे रूपे अ पुग्गलस्केवे ॥
 देसावगासिअंमि, बीए सिस्कावए निंदे ॥ १८ ॥
 संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव ज्ञोयणा
 ज्ञोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिस्काव
 ए निंदे ॥ १९ ॥ सच्चित्ते निस्किवणे, पिहिणे
 ववएस मळरे चेव ॥ कालाइक्कमदाणे, चउठे
 सिस्कावए निंदे ॥ २० ॥ सुहिए सुअ ड्हिए
 सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव
 दोसेणव, तं निंदे तंच गरिहामि ॥ २१ ॥ साहू
 सु संविज्जागो, न कउं तव चरणकरणजुत्तेसु ॥
 संते फासु अ दाणे, तं निंदे तंच गरिहामि
 ॥ २२ ॥ इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ
 आसंसपज्जे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मऊ
 हुज्ज मरणंते ॥ २३ ॥ काएण काइणस्स, पम्कि

क्रमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअ
 स्स, सबस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय
 सिक्कागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्ती
 सुअ समिईसुअ, जो अइआरो अ तं निंदे
 ॥ ३५ ॥ सम्महिठी जीवो, जइ विहु पावं समा
 यरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निं
 धसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपन्निक्कमाणं, सप्प
 रिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ वाहि
 व सुसिक्किउं विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठ
 गयं, मंत मूल विसरया ॥ विज्जा हणंति मंते
 हिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अछविहं
 कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोअंतो अ
 निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावजं ॥ ३९ ॥ कय
 पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निदिअ गुरुस
 गासे ॥ होइ अइरेग लहुजं, उहरिअ चरुव
 चारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावजं
 जइवि बहुरजं होइ ॥ डस्काण मंत किरिअं,
 काही अचिरेण काळेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा
 बहुविहा, नयसंजरिआ पन्निक्कमाणकाळे ॥ मूल
 गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥

तस्स धम्मस केवल्लि पन्नत्तस्स ॥ अश्रुच्छिज्जमि
 आरा, हणाए विरज्जमि विराहणाए ॥ तिविहेण
 पम्भिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावं
 ति चेइआइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू ॥
 ४५ ॥ चिरसंचिय पाव पणासणीइ, जवसय
 सहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय
 कदाइं, वोळंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल
 मरिहंता सिद्धा साहू सुअं च धम्मो आसम्म
 द्विठी देवा, दिंतु समांहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ प
 णिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पम्भिकम
 णं ॥ असद्वहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए
 अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सब जीवे, सबे जीवा खमं
 तु मे ॥ मित्ती मे सबजूएसु, वेरं मज्झं न केणइ
 ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहि
 अ डुगंठिअं सम्मं ॥ तिविहेण पम्भिकंतो, वंदा
 मि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥ अथ अश्रुच्छिज्ज ॥

॥ इच्छाकरेण संदिसह जगवन, अश्रुच्छि
 ज्जमि, अश्रितर देवसिअंखामेजं ॥ इहं खामेमि
 देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं ॥ ज

ते पाणे विणए वेआवच्चे, आलावे संलावे उ
च्चासणे ॥ समासणे अंतरजासाए, उवरिजासा
ए जं किंचि ॥ मज्झ विणय परीहिणं, सुहुमं
वा बायरं वा ॥ तुप्पेजाणह, अहं न याणामि ॥
तस्स मिढामि डक्कमं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवद्याए ॥

॥ आयरिअ उवद्याए, सीसे साहम्मिए
कुलगाणेअ ॥ जे मे केइ कसाया, सब्बेतिविहेण
खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, जगव
उ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता,
खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीव
रासिस्स, जावउ धम्मो निहिअ निअचित्तो ॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्सअहयंपि ॥ ३ ॥

॥ ३७ ॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ इढामो अणुसठिं, नमो खमासमणाणं ॥
नमोर्हत् ॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय
कम्मणा ॥ तज्जायावाप्तमोद्दाय, परोद्दाय कुती
थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः
क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं
प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेजाः

॥ ९ ॥ कषायतापादितजंतुनिवृत्तिं, करोति
यो जैनमुखांबुदोज्जतः ॥ सशुक्रमासोद्भववृष्टि
सन्निजो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरौ गिराम् ॥३॥

॥३९॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्वंताशुकेशरम् ॥
प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥
येषामन्निषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात् सुखं
सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः
संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ ९ ॥ कलंकनिर्मुक्त
ममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अ
पूर्वचंद्रं जिनचंद्रजाषितं, दिनागमे नौमि बुधै
र्नमस्कृतम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥४०॥ अथ सूत्रदेवक्षेत्रदेव स्तुतिः ॥

॥ सुअदेवयाए करेमि काजस्सग्गं ॥ सुअ
देवया जगवई, नाणा वरणीअ कम्म संघायं ॥
तेसिं खवेज सययं, जेसिं सुअसायरे जत्ती ॥१॥

॥४१॥ अथ खित्तदेवयाए करेमि ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण
सहिएहिं ॥ साहंति मुक्कमग्गं, सा देवी हरज
डरिआई ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥४२॥ अथ कमलदलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी क
मलगर्जसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगवती,
ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ ॥१॥ इति ॥ ४२॥

॥४३॥ अथ जुवणदेवयादिस्तुति ॥

॥ जुवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं ॥
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुजिः साध्यते क्रि
याः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, जूयान्नः सुखदा
यिनी ॥ १ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥४४॥ अथ ज्ञानादिगुणयुतानां ॥

॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय संय
मरतानां ॥ विदधातु जुवनदेवी, शिवं सदा स
र्वसाधूनाम् ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥४५॥ अथ अह्वाइजेसु मुनिवंदन ॥

॥ अह्वाइजेसु दीव मुसद्देसु, पन्नरसु कम्म
जूमिसु ॥ जावंत केविसाहू, रयहरण गुह पडि
ग्गह धारा ॥ पंचमहद्वयधारा, अठारस सहस्स
सीलंगधारा ॥ अस्कयायारचरित्ता, ते सब्बे सि
रसा मणसा मन्नएण वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥ अथ वरकनक ॥

॥ वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निभं वि
गतमोहम् ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपू
जितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ ४७ ॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिं निशांतं, शांतं शांता शिवं
नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदै
शांतये स्तौमि ॥ ३ ॥ उमिति निश्चितवचसे,
नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय
जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥
सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या
य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नमः शांतिदे
वाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिक सं
पूजिताय निजिताय ॥ जुवनजनपालनोद्यत,
तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वङ्गरितौ
घनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट
ग्रहभूतपिशा, च शाकिनीनां प्रमथनाय ॥
॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयो
गकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च
नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते ज

गवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपरा
 जिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥
 सर्वस्यापि च संघस्य, जडकल्याणमंगलप्रददे
 ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे
 जीयाः ॥ ८ ॥ जव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृत्ति
 निर्वाणजननि सत्त्वानाम् ॥ अजयप्रदाननिर
 ते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥ ९ ॥ जक्तानां
 जंतूनां शुचावहे नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग्
 दृष्टीनां धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥
 जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जग
 ति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्तियशो, वर्धनि
 जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सखिलानलविष
 विषधर, छष्टग्रहराजरोगरणजयतः ॥ राक्ष
 सरिपुगणमारी, चौरैतिश्वापदादिज्यः ॥ १२ ॥
 अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु
 कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्व
 स्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जगवति गुणवति
 शिवशां, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जना
 नाम् ॥ ॐ मिति नमो नमो ह्रीं, ह्रीं ह्रूं ह्रः ॥
 यः ह्रः ह्रीं फुट फुट स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्ना

माक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवि ॥ कुरुते
 शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥
 इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्शितः स्तवः
 शांतेः ॥ सलिलादित्रयविनाशी, शांत्यादिक
 रश्च ऋक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा
 शृणोति ज्ञावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शां
 तिपदं यायात्, सूरिश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उ
 पसर्गाः क्षयं यांति, विद्यंते विघ्नवद्वयः ॥ मनः
 प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ स
 र्वमंगलमांगल्याम्, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधा
 नं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥
 ॥ इति श्री लघुशांतिस्तवः ॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥ अथ श्री चण्डिकाय ॥

॥ चण्डिकाय पडिमल्लूरणु, उज्जय मयण
 बाणु मुसुमूरण ॥ सरस पिञ्चंगु वन्नुगयगामि
 उ, जयउ पासु जुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु
 तणु कांति कडप्पसिणि-इउ, सोहइ फणि मणि
 किरणालि-इउ ॥ नं नव जलहर तन्निद्वय लंठि
 उ, सो जिणु पासु पयञ्जउ वंठिउ ॥ २ ॥ इति
 चण्डिकाय ॥ ४८ ॥

॥ ४९ ॥ अथ श्री ज़रहेसरनी सखाय ॥

॥ ज़रहेसर बाहुबली, अजयकुमारो अ ढं
 ढण कुमारो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो
 नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिज्जदो, वयर
 रिसी नंदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नो अ सुको
 सल, पुंरुखिं केसि करकंरू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल
 सुदंसण, साल महासाल सालिज्जदो अ ॥ ज
 हो दसन्नज्जदो, पसन्नचंदो अ जसज्जदो ॥ ३ ॥
 जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकु
 मालो ॥ धनोइलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो आ बाहु
 मुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरस्किअ, अज्जसु
 हळी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, प
 ज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पज्जवो विन्हुकुमारो
 अहकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिज्जंस कुरगरू अ
 सिज्जंजव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा स
 त्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥ जेसिं नाम
 ग्गहणे पावपबंधा विलयंजंति ॥ ७ ॥ सुलसा
 चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ न
 मयासुंदरी सीया, नंदा ज्जहा सुज्जहा य ॥ ८ ॥
 राइमई रिसिदत्ता, पज्जमावइ अंजणा सिरि दे

वी ॥ जिष्ठ सुजिष्ठ मिगावइ, पन्नावई चिह्मणा
 देवी ॥ ९ ॥ बंजी सुंदरी रुपिणि, रेवई कुंती
 सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धारिणी, कलाव
 ई पुष्पचूला य ॥ १० ॥ पन्मावई य गोरी, गं
 धारी लस्कमणा सुसीमा य ॥ जंवूवइ सच्चना
 मा, रुपिणि कन्हठ महिसीज ॥ ११ ॥ जस्का
 य जस्कदिन्ना, जूआ तह चेवजूअदिन्ना य ॥
 सेणा वेणा रेणा, जयणीजं थूलिचहस्स ॥ १२ ॥
 इच्चाइ महासइजं, जयंति अकलंकसीलकलि
 आजं ॥ अज्जवि वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहु
 अणे सयले ॥ १३ ॥ ॥ इति सता सतीयोनी
 सद्याय ॥ ४९ ॥

॥ ५० ॥ अथ श्री मन्हजिणाणं सद्याय ॥

॥ मन्हजिणाणं आणं, मिहं परिहरह धर
 सम्मतं ॥ षड्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ
 पइ दिवसं ॥ १ ॥ पवेसु पोसहवयं, दाणं सीलं
 तवो अ जावो अ ॥ सजाय नमुकारो, परोवया
 रो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिनथूणि
 णं, गुरुथुअ साहम्मिआणा वड्हं ॥ ववहार
 स्स य सुधी, रहजुत्ता तिहजुत्ता य ॥ ३ ॥ उव

सम विवेक संवर, प्रासासमिई ठजीव करुणा
 य ॥ धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरिण
 परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहु मानो, पुब्बय
 लिहणं पजावणा तिहे ॥ सट्ठाण किच्च मेअं नि
 चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ अथ श्री तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंडु करजोड्य, जिनवरना
 मे मंगल कोड्य ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश,
 जिनवर चैत्य नमुं निशदीस ॥ १ ॥ बीजे ला
 ख अठाविश कह्यां, त्रीजे बार लाख सर्दह्यां ॥
 चोथे स्वर्गे अरु लाख धार, पांचमे वंडु लाख
 ज चार, ॥ २ ॥ ठठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे
 चाविश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे ठ ह
 जार, नव दसमे वंडु शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार
 बारमे त्रणशे सार, नवग्रैवेयके त्रणशे अढा
 र ॥ पांच अणुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी
 अधिकां वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेविश सा
 र, जिनवर जुवन तणो अधिकार ॥ लांबां शो
 जोजन विस्तार, पचास जंचां बोहोंतेर धार ॥
 ॥ ५ ॥ एकशो एंशी बिंब परिमाण, सजासहि

त एक चैत्ये जाण ॥ शो कोरु वावन कोरु स
 जाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥ सा
 तशें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमु
 त्रण काल ॥ सात कोरु ने बोहोतेर लाख ॥
 जुवनपतिमां देवल ज्ञांख ॥ ७ ॥ एकशो एं
 शी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण
 ॥ तेरशे कोरु नेव्याशी कोरु, साठ लाख वंदूं
 कर जोरु ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने उंगणसाठ, ति
 ठलोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं
 हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥
 व्यंतर जोतिषिमां वली जेह शाश्वता जिनवर
 वंडुं तेह ॥ रुषज चंडानन वारिखेण, वर्द्धमान
 नामे गुणश्रेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदूं जि
 न वीश, अष्टापद वंडुं चोवीश ॥ विमलाचल
 ने गढ गिरनार, आबु ऊपर जिनवर जुहारा
 ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्री
 अजित जुहार ॥ अंतरीक वरकाणो पास, जीरा
 वलो ने थंजण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पा
 टण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहर
 मान वंडुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशि

दीस ॥ १ ३ ॥ अढीद्रीपमां जे अणगार, अ
 ढार सहस सिलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सु
 मिती सार, पाळे पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥
 बाह्य अङ्गितर तप उजमाल, ते मुनि वंडं गु
 णमणि माला ॥ नित नित ऊठी कीर्त्ति करूं, जीव
 कहे जवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥ अथ श्री सकलार्हत् ॥

॥ सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानं शिवश्रियः
 ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान, मार्हत्यं प्रणिदध्म
 हे ॥ १ ॥ नामाकृतिप्रव्यज्रवैः, पुनतस्त्रिजगज्ज
 नं ॥ क्षेत्रे काले च सर्वस्मि, ब्रह्मतः समुपास्महे
 ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं निःपरि
 ग्रहम् ॥ आदिमं तीर्थनाथं च, रुषज्रस्वामिनं
 स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हतमजितं विश्व, कमलाकर
 ज्ञास्करम् ॥ अम्लानकेवलादर्श, संक्रांतजगतं
 स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वज्रव्यजनाराम, कुल्यातुल्या
 जयंतु ताः ॥ देशनासमये वाचः, श्रीसंजवज
 गत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांतमतांजोधि, समुद्धास
 नचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, जगवानजिनंद
 नः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणायो, तेजितांज्जिन

खावलिः ॥ जगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वज्जिम
तानि वः ॥ ७ ॥ पद्मप्रज्ञप्रज्ञोर्देह, ज्ञासः पु
ण्णंतु वः श्रियम् ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटो
पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय, महें
द्रमहितांश्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघगगनाज्ञो
गज्ञास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रज्ञप्रज्ञोश्चंद्र, मरीचि
निचयोज्ज्वला ॥ मूर्त्तिर्मूर्त्तिसितध्यान, निर्मितेव
श्रियेऽस्तु वः ॥ १० ॥ करामलकवद्दिश्वं, कल
यन् केवलश्रिया ॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिः सुवि
धिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ सत्त्वानां परमानंद,
कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादादमृतनिस्यंदी, शीत
लः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ ज्वरोगार्त्तजंतुना,
मगदंकारदर्शनः ॥ निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रे
यांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी
ज्ञूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो,
वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो
वाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंति त्रिजगच्चे
तो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमण
स्पर्धि, करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंतां वः,
प्रयत्नतु सुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्माण,

मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ॥ चतुर्धा धर्मदेष्टारं, ध
 र्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्यो
 त्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः
 शान्त्यै, शांतिनाथजिनोऽस्तु वः ॥ १८ ॥ श्री
 कुंथुनाथो जगवान्, सनाथोतिशयार्द्धिनिः ॥ सु
 रासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥ १९ ॥
 अरनाथस्तु भगवां, श्रुतुर्थारनजोरविः ॥ चतु
 र्थपुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ॥ २० ॥
 सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदम् ॥ कर्मजूनू
 लनेहस्ति, मद्धं मद्धिमजिष्ठुमः ॥ २१ ॥ जग
 न्महामोहनिजा, प्रत्यूषसमयोपमम् ॥ सुनिसुव्र
 तनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ बुधंतो
 नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणम् ॥ वारिप्ल
 वाइव नमैः, पांतु पादनखांशवः ॥ २३ ॥ यड्वंश
 समुदेंडः कर्मकद्दुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्ज
 गवान्, जूयादोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धर
 णींजे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रजुस्तुल्यम
 नोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥ श्री
 मते वीरनाथाय, सनाथायाङ्गुतश्रिया ॥ महानं
 दसरोराज, मराळायाहते नमः ॥ २६ ॥ कृता

पराधेपि जने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्धाष्पार्द
योर्जडं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयति वि
जितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ॥
विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिजुवनचुमामणिर्जगवा
न् ॥ २८ ॥ वीरः सर्वसुरासुरेज्जमहितो वीरं
बुधाः संश्रिताः, वीरेणाजिहतः स्वकर्मनि
चयो वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्र
वृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे श्रीधृति
कीर्त्तिकांतिनिचयः श्रीवीरजडं दिश ॥ २९ ॥
अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरजुवन
गतानां दिव्यवैमानिकानाम् ॥ इह मनुजकृतानां
देवराजार्चितानां, जिनवरजुवनानां जावतोहं
नमामि ॥ ३० ॥ सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं
परमेष्ठितम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिद
ध्महे ॥ ३१ ॥ देवोऽनेकज्वार्जितोर्जितमहा
पापप्रदीपानलो, देवः सिद्धिबधू विशाल हृदया
ऽलंकारहारोपमः ॥ देवोऽष्टादशदोषसिंधुरघटानि
र्जेदपंचाननो, ज्ञानां विदधातु वाञ्छितफलं
श्रीवीतरागो जिनः ॥ ३२ ॥ ख्यातोऽष्टापदप
र्वतो गजपदः सम्मेतशैलान्निधः, श्रीमान् रैव

तकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंरुपः ॥ वैज्जारः
कनकाचलोऽर्बुदिगिरिः श्रीचित्रकूटादय, स्तत्र
श्रीरुषजादयोजिनवराः कुर्वंतु वोमंगलम् ॥ ३३ ॥

॥ ५३ ॥ अथ श्री अजितशांतिस्तवन ॥

॥ अजिअं जिअसवन्नयं, संतिं च पसंत
सवगयपावं ॥ जयगुरु संति गुणकरे, दोविजि
णवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाढा ॥ ववगय मंगुल
जावे, तेहिं विजल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम
महप्पजावे, ओसामि सुदिठ सज्जावे ॥ २ ॥
गाढा ॥ सबडुक्कप्पसंतीणं, सब पावप्पसं
तिणं ॥ सया अजियसंतीणं, नमो अजिअसं
तिणं ॥ ३ ॥ सिद्धोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पव
त्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तहय धिइ
मइ प्पवत्तणं, तवय जणुत्तम संतिकित्तणं
॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म
किलेसविमुक्कयरं, अजिअं निचिअं च गु
णेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य सं
ति महामुणिणोवि अ संतिअरं, संयय मम नि
बुइ कारणयंचनमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥
पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विमग्गह सु

स्तकारणं ॥ अजिञ्चं संतिं च ज्ञावत्, अज्ज
 यकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिञ्चा ॥ अ
 रइ रइतिमिर विरहिञ्च मुवरय जरमरणं, सुर
 असुर गरुड जुञ्चगवइ पयय पणिवइञ्चं ॥
 अजिञ्च महमविञ्च सुनय नय निउण मज्जय
 करं, सरण मुवसरिञ्च जुवि दिविजमहिञ्चं
 सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंच जिणुत्तम
 मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव महव खंतिविमु
 त्ति समाहि निहिं ॥ संतिञ्चरं पणमामि दमुत्तम
 तिञ्चयरं, संति मुणी मम संतिसमाहिवरं दिसज्ज
 ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्तिपुव्वपत्तिवं च वरहत्ति
 मञ्चय पसत्त विञ्चिन्न संथिञ्चं, थिर सरिञ्च वत्तं
 मयगल लीलायमान वर गंध हत्ति पत्ताण प
 त्तिं संथवारिहं ॥ हत्तिहत्त बाहुं धंतकणग रुञ्च
 ग निरुवहय पिंजरं, पवर लक्खणो वचिञ्च सो
 मचारु रूवं, सुइ सुहमणाजिराम परम रमणि
 ज्ज वरदेव उंउहि निनाय महुरयरय सुहगिरं
 ॥ ९ ॥ वेट्ठुत्तं ॥ अजिञ्चं जिञ्चारिगणं, जिञ्च स
 वज्जयं ज्वो हरिउत्तं ॥ पणमामि अहं पयत्तं, पावं
 पसमेत्त मे जयवं ॥ १० ॥ रासात्तुञ्चत्तं ॥ कुरु

जणवयहण्णिणउर, नरीसरो पढमं तउ महाच
 क्ववट्टिजोए महप्पजावो, जोवावत्तरि पुरवर सह
 स्स वर णगर निगम जणवय वई, बत्तीसा राय
 वर सहस्साणुजाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण
 नव महानिहि चऊसठि सहस्स पवर ऊवइण
 सुंदरवइ, चुलसी हय गय रह सय सहस्स
 सामी, उन्नवइ गाम कोडि सामी आसिऊो जा
 रहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेट्ठुउ ॥ तं संतिं संतिअरं
 संतिं सव्व जया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं
 विहेउमे ॥ १२ ॥ रासानंदिअयं ॥ इख्खाग वि
 देहनरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय
 ससि सकळाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अ
 जियउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिअवळा
 विऊलकुळा ॥ पणमामि ते जवजय मूरण, जग
 सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दा
 णविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ
 रूव धंत रुप पट्ट सेअ सुइ निइ धवल ॥ दं
 तपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर,
 दित्त तेअ विंदधेअ सवल्लोअ जाविअप्पजाव
 णे अ पईअसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥

विमल ससिकलादरेऽस्य सोमं, वितिमिर सूर क
लादरेऽस्य तेऽस्यं ॥ तिऽस्यसवइ गणादरेऽस्य रूवं,
धरणीधर प्पवरादरेऽस्य सारं ॥ १५ ॥ कुसुम
लया ॥ सत्तेऽस्य सया अजिऽस्यं, सारीरे अबले
अजिऽस्यं ॥ तव संजमेऽस्य अजिऽस्यं, एस थु
णामि जिणमजिऽस्यं ॥ १६ ॥ जुऽस्यंगपरिरिंणि
अस्यं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, ते
अस्य गुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणे
हिं पावइ न तं तिहसगणवइ, सारगुणेहिं
पावइ न तं धरणिधरवइ, ॥ १७ ॥ खिज्जिऽस्यं ॥
तिहवर पवत्तयं तमयरहिऽस्यं धीरजण थु
अस्यं च्चिऽस्यं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं
तिगरण पयउं, संतिमहं महामुणिं सरण मुवण
मे ॥ १८ ॥ लल्लिऽस्यं ॥ विणउणय सिरिरय
अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहा
हिव धणवइ नरवइ, थुअमहिअच्चिअं बहु
सो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ,
सप्पजंतवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ
चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमा
ला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरगन

मंसियं ॥ देवकोमिसयसंशुचं, समणसंघपरि
 वंदियं ॥ १० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं
 अरुयं अजिअं अजिअं पयउं पणमे ॥ ११ ॥
 विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण, दिव्व
 कणग रह तुरय पदकर सइहिं हुलिअं ॥
 ससंजमो रयण खुज्जिअ, बुलिअ चल कुंम
 लं गय तिरीड सोहंत मज्झिमात्ता ॥ १२ ॥
 वेट्ठउं ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा वेर विउत्ता ज
 त्ति सुज्जुत्ता, आयर जूसिअ संजमपिंमिअ सुहु
 सुविह्मिअ सबबलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण प
 रूविअ, जासुर जूसण जासुरिअंगा ॥ गाय स
 मोणय जत्तिवसा गय, पंजलिपेसियसीस पणा
 मा ॥ १३ ॥ रयणमात्ता ॥ वंदिऊण थोऊण तो
 जिणं, तिगुणमेवय पुणो पयाहिणं ॥ पणमिऊ
 णय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सज्जवणाइंतो ग
 या ॥ १४ ॥ खित्तयं ॥ तं महासुणि महंपि पंजलि,
 राग दोस जय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिं
 द वंदिअं, संतिमुत्तम महातवं नमे ॥ १५ ॥
 खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणियाहिं, ललिअ
 हंस बहुगामिणियाहिं ॥ पीण सोणत्थण सा

क्षिणियाहिं, सकल कमलदल लोअणिआ
 हिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर अणजरविण
 मिय गायलयाहिं, मणि कंचण पसिढिलमेह
 ल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिंखिणि नेउर
 सतिलय वलय विजूसणियाहिं, रइकर चउर
 मणोहर सुंदर दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तरक
 रा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदियाहिं, वंदिआय ज
 स्स ते सुविक्रमाक्कमा अप्पणो निलामएहिं मं
 णोडुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिल
 य पत्तलेह नामएहिं चिद्धएहिं संगयं गयाहिं
 जत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिया
 पुणो पुणो ॥२८॥ नारायण ॥ तमहं जिणचंदं,
 अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसवक्किलेसं पयउं पण
 मामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ शुअवंदिअस्सा
 रिसीगण देवगणेहिं, तो देव वहुहिं पयउं पण
 मिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, जत्ति
 वसागयपिंडिअयाहिं ॥ देव वरवरसाबहुआ
 हिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥३०॥ जासुर
 यं ॥ वंस सह तंति तालमेले तिउस्कराजिराम
 सह मीसए कए अ, सुइसमाणेअ सुइ स

ज्ञ गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला
 कलावनेउराजिराम सह मीसए कए अ देवन
 टिआहिं ॥ हावजाव विभ्रमप्पगारएहिं न
 च्चिउण अंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुवि
 क्रमाक्रमा ॥ तयंतिलोअ सब सत्त संतिकारयं
 पसंत सब पाव दोस मेस हं नमामि संतिमुत्त
 मं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउं ॥ ठत्त चामर पमाग
 जूअ जव मंडिआ, ऊयवर मगर तुरय सि
 रिवठ सुलंढणा ॥ दीवसमुद्द मंदिरदिसाग
 यसोदिया, सच्चिअवसहसीहणासिरिवठसुलंढ
 णा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलछा समप्पइछा,
 अदोस इछा गुणेहिं जिछा ॥ पसायसिछा तवे
 ण पुछा, सिरीइ इछा रिसीहिं जुछा ॥ ३३ ॥ वा
 णवासिआ ॥ ते तवेण धुअसबपावया, सब
 लोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअसंति
 पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥
 अपरांतिका ॥ एवं तव बल विजलं, थुअं
 मए अजिअ संति जिणजुअलं ॥ ववगय
 कम्म रयमलं, गयं गयं सासयं विमलं ॥ ३५ ॥
 गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्क सुहेण परमे

ए ऋविसायं ॥ नासेज मेविसायं, कुणज अ प
रिसाविअ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएजअ
नंदिं, पावेज अ नंदिंसेणमजिनंदिं ॥ परिसा
विय सुहनंदिं, मम य दिसज संजमे नंदिं ॥३७॥
गाहा ॥ पस्किअ चाजमासे, संवडरिए अव
स्स जणिअवो ॥ सोअवो सवेहिं, उवसग्ग नि
वारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअ निसुण
इ, उज्ज कालंपि अजिअसंतिथुयं ॥ न हु हुंति
तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइइ
बह परम पयं, अहवा किंती सुविज्झा जुवणे ॥
तातेबुक्कुहरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥

॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं ॥ ५३ ॥

॥ ५४ ॥ अथ श्री मोहोटी शांति ॥

॥ जो जो ज्व्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व
मेतत्, ये यात्रायां त्रिजुवनगुरोराहतां जक्तिजा
जः ॥ तेषां शांतिर्जवतु जवतामर्हदादिप्रजावा
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरीक्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥
जो जो ज्व्यलोका इहहि जरतैरावतविदेहसं
जवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकं पानं
तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा

घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरैर्जैः सहसमागत्य
 सविनयमर्हद्भ्रष्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृं
 गे विहितजन्माग्निषेकः शांतिमुद्घोषयति
 ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः
 संपत्त्याः इति न व्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे
 स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामितत्पूजायात्रास्ना
 त्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निश
 म्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं
 प्रीयंतां प्रीयंतां जगवतोर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शि
 नस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रि
 लोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ॥ ॐ १ श्री रुषभ, २
 अजित, ३ संभव, ४ अजिनंदन, ५ सुमति, ६
 पद्मप्रभ, ७ सुपार्श्व, ८ चंद्रप्रभ, ९ सुविधि, १०
 शीतल, ११ श्रेयांस, १२ वासुपूज्य, १३ विमल,
 १४ अनंत, १५ धर्म, १६ शांति, १७ कुंथु, १८
 अर, १९ मल्लि, २० मुनिसुव्रत, २१ नमि, २२
 नेमिपार्श्व, २३ वर्द्धमानांताः २४ जिनाः शांताः शां
 तिकरा भवंतु स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपु
 विजयधूर्जिह्वाकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं
 स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्री धृति, मति, कीर्ति, कांति,

बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या साधन, प्रवेश निवश
 नेषु ॥ सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ
 रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रांशुखला, वज्रांकुशी, अ
 प्रतिचक्रा पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गोरी,
 गांधारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरुद्ध्या,
 अह्वृता, मानसी, महामानसी, एता षोडश
 विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आ
 चार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य ॥ श्रीश्रमणसं
 घस्य ॥ शांतिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥
 ॐ ग्रहाश्विंशसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्च
 रराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुण
 कुबेर वासवादित्यस्कंद विनायकोपेताः येचा
 न्येपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्तेसर्वे प्रीयंतांप्री
 यंताम् ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारानर पतयश्च
 भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र, मित्र, ज्ञातृ, कलत्र,
 सुहृद्, स्वजन, संबंधि, बंधुवर्ग, सहिताः
 नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु अस्मिंश्च
 जूमंडलायतननिवासीनां साधु साध्वी श्रावक
 श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्निदो
 र्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि पु

ष्टि रुद्धि, वृद्धि, मांगल्योत्सवाः ॥ सदा प्राङ्
 र्भूतानि पापानि शम्यंतु डरितानि ॥ शत्रवः
 पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शांतिना
 थाय, नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामरा
 धीश, मुकुटाञ्च्यर्चिताह्वये ॥ १ ॥ शांतिः शांति
 करः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव
 सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्ट
 रिष्ट डष्ट, ग्रहगति डःस्वप्न डर्निमित्तादि ॥
 संपादितहित संप, नामग्रहणं जयति शांतेः
 ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराजसन्नि
 वेशानाम् ॥ गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याह
 रेणांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु ॥
 श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु श्रीजनपदानां शां
 तिर्भवतु ॥ श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु ॥ श्री
 राजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीगोष्ठिकानां
 शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरमुख्यानां शांतिर्भवतु ॥
 श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ ॐ स्वाहा ॐ
 स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा
 शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्नात्राद्यवसानेषु ॥ शांतिक
 लशं गृहीत्वा, कुंकुम चंदन कर्पूरागरु धूप वास

कुसुमांजलिसमेतः ॥ स्नात्रचतुष्पिकाया श्री
संघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाज
रणालंकृतः, पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमु
द्घोषयित्वा ॥ शांतिपानीयं मस्तके दातव्य
मिति ॥ नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायं
ति च मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति
मंत्रान्, कल्याणजाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥
शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भू
तगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीभव
न्तु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तिष्ठयरमाया शिवादेवी
तुम्हन्नयन निवासिनी ॥ अम्हशिवं तुम्ह शिवं
अशिवोपशमंशिवं भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपस
र्गाः ह्ययं यांति, विद्यंते विघ्नवद्भयः ॥ मनः
प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व
मंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं
सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति
श्री बृहद्वाति स्तवः संपूर्णः ॥ ५४ ॥

॥५५॥ अथ श्री संतिकरस्तवनं ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरी
इ दायारं ॥ समरामि जत्त पालग, निवाणी ग

रुडकय सेवं ॥ १ ॥ ॐ सनमो विप्पोसहि पत्ता
 णं संति सामिपायाणं, जौं स्वाहा मंतेणं, सवा
 सिवडुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐ संति नमुक्कारो,
 खेलोसहि माइ लहि पत्ताणं ॥ सौं झी नमोस
 वो सहि, पत्ताणं च देइसिरीं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअ
 ण सामिणि, सिरि देवी जस्करायगणिपिडगा ॥
 गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रस्कंतु जिणअ
 ते ॥ ४ ॥ रस्कंतु मम रोहिणी, पन्नतीवज्जसिंख
 ला सया ॥ वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि
 महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी महजाला
 माणवीअ वइरुद्धा ॥ अबुत्ता माणसिया, महा
 माणसियाउं देवीउं ॥ ६ ॥ जस्का गोमुह मह
 जस्का, तिमुहजस्केस तुंवरू कुसुमो ॥ मायंगो वि
 जयाजिय, बंज्रो मणुउं सुरकुमारो ॥ ७ ॥
 ठम्मुह पयाल किन्नर, गरुलो गंधव तहय ज
 स्किंदो ॥ कुबेर वरुणो जिउडी, गोमेहो पासमा
 यंगो ॥ ८ ॥ देवीउं चक्केसरि, अजिआ डुरिआ
 री कालि महाकाली ॥ अच्चुअ संता जाला, सु
 तारयासोय सिरिवन्ना ॥ ९ ॥ चंडा विजयंकुसि
 प, न्नइति निवाणि अच्चुआ धरणी ॥ वइरुद्ध वुत्त

गंधा, रिञ्चं पञ्मावईसिञ्चा ॥१०॥ इञ्च तिञ्च
रक्काण रया, अन्नेवि सुरासुरी चण्हावि ॥ वंतर
जोइणी पमुहा, कुणंतु रक्कंसया अम्हं ॥११॥ ए
वं सुद्धिठि सुरण, सहिउं संघस्स संति जिण
चंदो ॥ मऊवि करेउ रक्कं, मुणिसुंदर सूरियुञ्च
महिमा ॥ १२ ॥ इञ्च संतिनाह सम्म, द्विठि र
क्कं सरइ ति काळं जो ॥ सवोवद्दवरहिउं, स ल
हइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगण्ठगयणदि
णयर, जुगवर सिरिसोमसुंदरगुरुणं ॥ सुपसा
य लङ्गणहर, विद्यासिद्धिज्जणइसीसो ॥१४॥
इति श्रीसंतिकरस्तवनम् ॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥ अथ पादिकादि अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि त
हय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इय एसो
पंचहा जणिउं ॥ १ ॥ ज्ञानाचार दर्शनाचार,
चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार ॥ ए पंचविध
आचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द
दिवसमांहि सूद्धम, वादर, जाणतां अजाणतां
हुउं होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायाये क
रीतस्स मिहामिड्ढकमं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारें आठ अतिचार ॥ कालेवि
 णए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंज
 ण अह तड्जए अठविहोनाण मायारो ॥ १ ॥
 ज्ञान काल वेलाये जण्यो गुण्यो नहिं अकाले
 जण्यो, विनयहीन, बहुमानहीन, योगउपधान
 हीन, अनेरा कन्हें जणी अनेरो गुरु कह्यो, देव
 गुरु वांदणे, पडिक्कमाणे, सद्याय करतां जणतां,
 गुणतां, कूमो अद्धर कानेमात्रायें अधिको उंगो
 जण्यो, सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तड्ज
 य कूडां कहां, जणीने विसाखां, साधु तणे धर्म
 काजें काजो अण्ण उरयां दांडो अणपमिलेहे,
 वसति अणशोधे, अणपवेसे, असजाइ, अणो
 जाइमाहे श्री दशवैकालिकप्रमुख सिद्धांत
 जण्यो गुण्यो, श्रावकतणे धर्मे थिविरावलि, प
 डिक्कमाणां, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत जण्यो
 गुण्यो, काल वेला काजो अण्णउरस्ये पढियो
 ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली,
 नोकरवाली, सापमा सापमी, दस्तरी, वही,
 उलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूंक
 लाग्युं, थूंके करी अद्धर मांज्यो, उशीसैं

धस्यो, कने ठतां आहार निहार कीधो, ज्ञानज
व्य जक्षतां उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधे विणसतो
विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो, ठती शक्तिये
सार संज्ञाल न कीधी, ज्ञानवंतप्रत्ये द्वेष, मत्स
र, चिंतव्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोइ
प्रत्ये ज्ञाता गणतां अंतराय कीधो, आपणा
जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो, मतिज्ञान, श्रुत
ज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवल
ज्ञान ए पंच ज्ञान तणी असद्वहणा कीधी-
कोइ तोतलो बोवडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा
प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचार व्रत विषइउं अ
नेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय
निक्रंखिय, निव्वितिगिळा अभूढदिठीअ ॥ उववू
ह थिरीकरणे, वडल प्पजावणे अठ ॥ १ ॥ देव
गुरू धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं तथा ए
कांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधीया फल तणे
विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. साधु साधवीना
मल मलिन गात्र देखी डुगंग निपजावी. कुचा
रित्रीया देखी चारित्रीयानुपर अजाव हुउं. मि

थ्यात्वी तणी पूजा प्रजावना देखी मूढदृष्टिपणुं
 कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा
 कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अ
 जक्ति निपजावी, अबहुमान कीधुं तथा देवज
 व्य, गुरुज्व्य, ज्ञानज्व्य, साधारणज्व्य, जह्नि
 त उपेक्षित प्रज्ञापराधें विणाश्यो, विणसतो उ
 वेख्यो. ठती शक्तिये सार संज्ञाल न कीधी
 तथा साधार्मिक साथें कलह कर्मबंध कीधो. अ
 धोती, अष्टपद्म मुखकोश, पांखें देव पूजा कीधी
 बिंबप्रत्यें वासकूपी, धूपधाणुं कलशतणो ठ
 वको लाग्यो. बिंब हाथथकी पाड्युं. उसास
 निःसास लाग्यो, देहरे, उपासरे, मलश्लेष्मा
 दिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि,
 कुतूहल, आहार निहार कीधां, पान, सोपारी,
 निवेदीयां खाधां. ठवणहारी हाथथकी पा
 डी, पमिलेहवुं विसाखुं, जिनजुवने चोराशी
 आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्यें तेत्रीश आशात
 ना कीधी होय, गुरुवचन तहत्ति करी पमिव
 ज्युंनही ॥ दर्शनाचारव्रत विषश्यो अनेरो जे
 कोइ अतिचार पद्द दिवस ० ॥ ९ ॥

चारित्राचारें आठ अतिचार ॥ पणिहाण
जोगजुतो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥
एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ १॥
ईयां समिति ते अणजोए हिंङ्या, जाषासमि
ति ते सावद्य वचन बोल्या, एषणा समिति
ते तृण, मगल, अन्न, पाणी, असूऊतुं लीधुं,
आदानजंडमत्तनिस्केवणा समिति ते अश
न शयन, उपकरण मातरुं प्रमुख अणपूंजी
जीवाकुलजूमिकाये मूक्युं लीधुं, परिष्ठापनि
कासमिति ते मल, मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजि
जीवाकुल जूमिकायें परठव्युं मनोगुप्ति, मन
मां आर्त्त रौडध्यान ध्यायां, वचनगुप्ति, साव
द्य वचन बोड्युं, कायगुप्ति ते शरीर अणपनि
लेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा, ए अष्टप्रवचन
माता ते, सदैव साधुतणे धर्मे अने श्रावकतणे
धर्मे, सामायिक पौसह लीधे, रूमीपरे पाल्या
नहीं, खंडणा विराधना हुइ ॥ चारित्राचार व्रत
विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पद दिवस
मांही सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुउं होय,
ते सवि हुं मने, वचने, कायाये करी तस्समिजामि

विशेषतः श्राकतणे धर्मे श्रीसम्यक्त्व मूल बारव्रत, सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ शंका कंखविगिह्वा ० ॥ शंका श्रीअरिहंत तणा बल, अतिशय, ज्ञानलहमी, गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयानां चारित्र, श्रीजिनवचन तणो संदेह कीधो ॥ आकांक्षा ! ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी जूजूआ देव, देहरां ना प्रज्ञाव देखी रोग आतंककष्ट आवे इह लो कपरलोकार्थे पूज्या मान्या, सिद्ध विनायक जी राजलाने मान्युं, इच्छुं, बौद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, ज़रडा, जगत, लिंगिया, जोगीया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी परमार्थ जाण्याविना जूलाव्या, मोहिया. कुशास्त्र शीख्यां, सांजट्यां. श्राद्ध, संवहरी, होली, बलेव, माहिपूनम, अजापम्वा, प्रेतबीज, गौरीबीज, विनायकचोथ, नागपांचमी, झूलणावठ, शीलसातमी, ध्रुवआठमी,

नौमी नौमी, अहवा दशमी, व्रतअग्यारशी, वज्रवारशी, धनतेरशी, अनंतचउदशी, अमा वास्या, आदित्यवार, उत्तरायण नैवेद्य कीधां, नवोदक, याग, जोग, उतारणां कीधां, कराव्यां अनुमोद्यां, पिपले पाणी घाट्यां, घलाव्यां; घ खादिर क्षेत्र; खले, कूवे, तलावे, नदीये, जहे वाविये, समुजे, कुंम, पुण्यहेतुस्नान कीधां, कराव्यां अनुमोद्यां, दान कीधां, ग्रहण, शनिश्वर माहमामे नवरात्रि, नाहायां, अजाणना थाप्यां अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधां; कराव्यां ॥ विति गिठा धर्म संबंधीयां फलतणे विषे संदेह की धो जिन अरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुणजणी न मान्या, न पूज्या, महासती, माहात्माना इह लोक परलोक संबंधी या जोग वांछित, पूजा की धी, रोग, आतंक कष्ट आवे खीण वचन जोग मान्या, माहात्मानां ज्ञात, पाणी, मल शोचा तणी निंदा कीधी, कुचारित्रिया देखी, चारित्रि या उपर कुजाव हुज, मिथ्यात्वी तणी पूजा प्र जावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी, दा

द्विण्य लगें तेहनो धर्म मान्यो, कीधो ॥ श्रीस
म्यकृत्वव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार
पद दिवसमांहि ० ॥ १ ॥

पहेले स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रते पांच
अतिचार ॥ वहबंधवविच्छेए ॥ द्विपद चतुष्प
द प्रत्ये रीषवशे गाढो घाव घाढ्यो, गाढे बंध
ने बांध्यां, अधिक चार घाढ्यो, निर्लांठन कर्म
कीधां, चारापाणीतणी वेलाये सार संजाल न
कीधी, लेहणे देणे किणहिं प्रत्ये लंघाव्यो, तेणे
जुखे आपण जम्या, कन्हे रही मराव्यो, बंधी
खाने घलाव्यो, शल्यां धान्य तावने नाख्यां,
दलाव्यां, जरमाव्यां. शोधी न वावख्यां इंधण
गणां, अणशोध्यां वाल्यो तेमांहि साप, विं
ठी, खजूरा, सरवलां, मांकरु, जूआ, गिंगो
डा, साहतां मुआ, डहव्या, रूडे स्थानके न
मूक्या. कीमी मंकोडीनां इंडां विगोह्यां. लीख
फोडी. उदेही, कीडी, मंकोमी, घीमेल, कातरां,
चूडेल, पतंगियां, देडकां, अलसीयां, इअल,
कुंता, मांस, मसा, बगतरा, माखी, तीरु प्रमुख
जीव विणठा. माला हलावतां चलावतां पंखी,

चरकलां, काग, तणां इंडां फोड्या, अनेरा एकें
जियादिक जीव विणास्या, चांप्या, डहव्या, कांइ
हलावतां, चलावतां, पाणी बांटतां, अनेरा कां
इस्काम काज करतां, विरुंधसपणुं कीधुं. जीवर
हारुमी न कीधी, संखारो सूकाव्यो, रूडुं गलण
न कीधुं, आणगल पाणी वावसुं. रूडी जयणा
न कीधी. अणगल पाणीयें जील्या, लुगमां धो
यां, खाटला तावमे नाख्या, जाटक्या, जीवाकु
लजूमि लींपी, वाशीगार राखी, दलणें, खांडणें,
लींपणें, रूमी जयणा न कीधी. आठम चउद
शना नियम जांग्या. धूणी करावी ॥ पहेले स्थू
लप्राणातिपात विरमण व्रत विषइउ अनेरोंजे
कोइ अतिचार पद दिवसमांहि ० ॥ १ ॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अ
तिचार ॥ सहसारहस्सदारे ० ॥ सहसात्कारे
कुणहींप्रत्ये अजुगतुं आल अज्याख्यान दीधुं.
स्वादारामंत्र जेद कीधो. अनेरा कुणहनो मंत्र,
आलोच मर्म प्रकाश्यो. किणहीनें अनर्थ पाड
वा कूमी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो. कूमी
साख जरी. थापणमोसो कीधो. कन्या, गौ, ढो

र, जूमिसंबंधी लेहणे देणे व्यवसायें वाद वढ वारु करतां मोटकुं जूतुं बोल्या. हाथ पग तणी गाल दीधी. करडका मोड्या. मर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइ उं अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द० ॥ ९ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पयोगे० ॥ घर बाहिर खेत्र, खळे, पराइ वस्तु अणमोकळी लीधी. वावरी, चोराइ वस्तु मोललीधी, चोर धाडप्रत्यें संकेत कीधो. तेहनें संवल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्धराज्यातिक्रम कीधो नवां, पुराणा, सरस विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना जेल सं जेल कीधा. कूमे काटले, तोले, माने, मापे, व होख्यां. दाणचोरी कीधी, किणहीने लेखे वरां स्यो. साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो. परवंचना कीधी. पाशंग कूमां कीधां. मांमी चढावी. लहके ब्रह्मके कूमा का टळा मान, मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची किणहीने दीधुं. जूदी गांठ कीधी, थापण उंलवी. किणहीने लेखे पलेखें

मूलव्युं. पनी वस्तु जलवीलीधी ॥ त्रीजे स्थूल
अदत्तादान विरमणव्रत विषयिज अनेरो जे
कोइ अतिचार पद दिवस० ॥ ८ ॥

चोथे स्वदारासंतोष. परस्त्री गमन विरमण
व्रते पांच अतिचार ॥ अपरिगृहीया इतर०॥
अपरिगृहीतागमन इत्वर ॥ अपरिगृहीता गम
न कीधुं. विधवा, वेश्या परस्त्री, कुलांगना, स्वदा
राशोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कधो. सराग
वचन बोल्यां. आठम, चउदश, अनेराइ पर्व
तिथें नियम लइ जांग्या. घरघरेणां कीधां करा
व्यां. वर वहू वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. अ
नंग क्रीमा कीधी, स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां.
पराया विवाह जोड्या. ढिंगला ढिंगली परणा
व्यां. कामजोगतणे विषे तीव्र अजिलाष कीधो.
अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार,
सुदणे स्वप्नांतरें हुआ. कुस्वप्न लाधां. नट,
विट, पुरुषांशु हांसुं कीधुं॥चोथा स्वदारासंतोषव्र
तविषयिज अनेरा जे कोइ अतिचार पद०॥४॥

पांचमे स्थूल परिग्रह परिमणव्रते पांच अ
तिचार ॥ धण धन खित्तवहू०॥धन, धान्य, खेत्र

वस्तु, रूप, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्त्तालगें संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधुं नहीं, लेइने पढिउं नहीं. पढिउं विसाखुं. अ लीधुं मेढ्युं. नियम विसख्या ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अति चार पद दिवसमांहि ॥ ५ ॥

ठे दिगपरिमाणव्रते पांच अतिचार ॥ गम एस्सय परिमाणे ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशियें जावा आववातणा निमम लेइ जांग्या. अनाजोगे विस्मृत लगे अधिक जुमि गया. पाठवणी आघी पाठी मोकली. वहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकालें गामतरु कीधुं, जुमिका एकगमा संखेपी, बीजीगमा वधारी ॥ ठे दिगपरिमाणव्रतविषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पद दिवसमांहि ॥ ६ ॥

सातमें जोगोपजोग विरमण व्रतें जोजन आश्री पांच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अतिचार एवं बीश अतिचार ॥ सच्चित्तेपडिबधे ॥

सचित्त नियम लीधे, अधिक सचित्त लीधुं ॥
 अपक्काहार, उपक्काहार, तुब्बोषधि तणुं चक्रण
 कीधुं. जंला, जंबी, पोंक, पापनी कीधां ॥ सच्चि
 त्त दव्वविगइ, पाणह तंबोल वव्व कुसुमेसु ॥
 वाहण सयण विलेवण, बंजदिसि न्हाण चत्तेसु
 ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनगतरात्रिगत लीधा
 नहीं. लेइने चांग्या. बावीश अज्जदय, वत्रीश
 अनंतकायमांहि आइं, मूला, गाजर, पिंम,
 पिंमादू, कचुरो, मूरण, कुलि आंबली, गलो,
 वाधरमां खाधां. वाशी, कठोल, पोली, रोट,
 लीत्रण दिवसतुं जंदन लीधु. मधु, महुडा,
 माखण, माटी, वेंगण, पीडु, पीचु, पंपोटा, विष,
 हिम, करहा, घोलवमां, अजाण्यां फल, टिंबरु,
 गुंदां, महोर अथाणुं, आमणबोर, काचुं मीतुं,
 तिल, खसखस, काचा कोठिंबडां खाधां. रात्रि
 जोजन कीधो. लगजग वेलायें व्यालुं कीधुं. दि
 वस विणजगे शीराव्या. तथा कर्मतः पंदरक
 मादान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे, सामिकम्मे,
 जामिकम्मे, फोमिकम्मे, ए पांचकर्म ॥ दंतवा
 णिज्जे, लस्कवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे,

विसवाणिजे, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिद्वण
 कम्मे, निद्वंणकम्मे, दवग्गि दावणया, सर
 दह तलाय सोसणया, असइ पोसणया, ए
 पांच सामान्य, ॥ ए पांच कर्म, पांचवाणिज्य
 पांच सामान्य, एवं पंदर कर्मादान बहुसावद्य,
 महारंज, रांगण, लीहाला, कराव्या. इंट, नि
 जामा पचाव्या. धाणी, चणा पक्कान्न करी वेच्या
 वाशी मांखण तपाव्या. तिलवहोस्या फागण
 मास उपरांत राख्या. दलीदो कीधो. अंगीठा
 कराव्या. श्वान, विद्व्वाडा, शूडा, सालहि, पोश्या.
 अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खरकर्मादिक समा
 चस्या. वाशीगार राखी. लीपणें, घुंपणें, माहा
 रंज कीधो. अणशोच्या चूला संधूक्या. घीतेल,
 गोख, ठाश तणांजाजन उघामां मूक्यां. तेमांहि
 माखी, कुंति, उंदर, गिरोली पमी. कीडी, चढी
 तेनी, जयणा न कीधी ॥ सातमे जोगोपजोग
 विरमणव्रतविषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार
 पद्द दिवसमांदि ॥ ७ ॥

आठमे अनर्थदंरु विरमणव्रतें पांच अति
 चार ॥ कंदप्पे कुक्कुए ॥ कंदर्पलगे विटचेष्टा,

हास्य, खेल, कूतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव
 जाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राज
 कथा, प्रक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी.
 पराङ् वात कीधी. तथा पैशुन्यपणुं कीधुं, आर्त्त
 रौडध्यान ध्यायां. खांमां, कटार, कोश, कुहामा,
 रथ जखल, मुशल, अग्नि, घरटी, निसाह, दा-
 तरमां, प्रमुख अधिकरण मेढी दाक्षिण लगें
 माग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधो. अष्टमी चतु
 र्दशीये खांमवा दलवा तणानियम चांग्या.
 मूरखपणा लगें असंबद्ध वाक्य बोल्या. प्रमा
 दाचरण सेव्या. अंधोले नाहणे, दातणे, पग
 धोअणे, खेलपाणि, तेल अकिध ठांट्यां. जील-
 णे जील्या. जूवटें रम्या, हिंचोले हिंच्या, नाटक
 प्रेक्षणक जोयां, कण कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां.
 कर्कश वचन बोल्यां, आक्रोश कीधा, अबोला
 लीधा. करकमा मोड्या. मन्हर धर्यो. संजेडा
 लगाड्या. सराप दीधा. जेंसा, शांढ, हुमु, कू
 कमा, श्वानादिक जुळाव्या, जूळतां जोयां.
 खादिलगें अदेखाइ चिंतवी, माटी, मीतुं. कण,
 कपाशीया, काजविण चांप्या. तेजपर वेठा.

आली वनस्पति खुंदी, सुइ शस्त्रादिक निपजा
व्या. घणी निजा कीधी. राग द्वेष लगे एकने
रुद्धि परिवार वांढी. एकने मृत्यु हानी वांढी ॥
आठमे अनर्थ दंभविरमणव्रत विषयिउं अने
रो जे कोइ अतिचार पढ़ दिवसमांदि ॥ ८ ॥

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिवि
हे छप्पणिहाणे ० ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट,
दोहट्ट, चिंतव्युं. सावच्च वचन बोल्या. शरीर
अणपमिलेहुं हलाव्युं. बती वेलाये सामा
यिक न लीधुं. सामायिक लेइ उघामे मुखे
बोल्यां. उंघ आवी, वात विकथाघरतणी चिंता
कीधी. बीज दीवा तणी उज्जेहि हुइ, कण कपा
शीया, माटी, मीठु, खमी, धावमी, अरणेटो पा
षाण प्रमुख चांप्या, पाणी, नील, फुल, सेवाल
हरीयकाय, बीयकाय, इत्यादिक आज्ञायां,
स्त्री तिर्यच्च तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ,
मुहुपत्तियो संघट्टि, सामायिक अणपूग्युं पाख्युं,
पारवुं विसाख्युं ॥ नवमे सामायिकव्रत विषयिउं
अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ दिवस ० ॥ ९ ॥

दशमे देशावगाशिकव्रतें पांच अतिचार ॥

आणवणे पेसवणे ०॥ आणवणप्पजगे, पेसवण
प्पजगे, सदाणुवाई रूवाणुवाई, बहिया, पुग्गल
पस्केवे ॥ नियमित जूमिकामांहे बाहेरथी कांई
अणाव्युं. आपण कन्हेथकी बाहेर कांई मोक
व्युं. अथवा रूप देखामी, कांकरो नाखी, साद
करीआपपणुं वतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावगा
शिक व्रत विषयिउं अनेरो जे कोई अतिचार
पद्द दिवसमांहि ० ॥ १० ॥

इग्यारमे पोषधोपवासव्रते पांच अतिचार ॥
संथारुच्चारुविहि ० ॥ अप्पडि लेहिय डप्पमि
लेहिय सज्जासंथारण ॥ अप्पडिलेहिय डप्पडि
लेहिय उच्चार पासवण जूमि ॥ पोसह लीधे सं
थारा तणी जूमि न पूंजी. बाहिरला लहुडां
वमां स्थंडिल दिवसें शोध्यां नही. पडीलेह्यां
नही. मातरुं अणपूंज्युं हलाव्युं. अणपूंजी जू
मिकाये परठव्युं. परठवतां "अणुजाणहजस्स
ग्गो" न कह्यो. परठव्या पूठें वारत्रण "वोसिरे
वोसिरे" न कह्यो. पोसह सालामांही पेसतां
"निसिही" निसरतां "आवस्सहि" वार त्रण
जणी नही. पुढवी, अप्प, तेज, वाज, वनस्पति,

त्रसकाय तणा संघट्टपरिताप, उपज्व, हुआ.
 संथारा पोरिसी तणो विधि जणवो विसार्यो.
 पोरिसीमांहे उंध्या. अविधे संथारोपाथर्यो. पा
 रणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलाये देव न
 वांच्या. पन्निक्कमणुं न कीधुं. पोसह असूरो ली
 धो. सवेरो पाखो. पर्वतिथे पोसह लीधो नही ॥
 इग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषयिउं अनेरो जे
 कोई अतिचार पद ० ॥ ११ ॥

बारमेअतिथिसंविजाग व्रते पांच अति
 चार ॥ सच्चित्ते निस्खिवणे ० ॥ सचित्त वस्तु हेठे
 उपरबतां महात्मा महासती प्रत्ये असूऊतुं
 दान दीधुं. देवानी बुद्धे असूऊतुं फेडी सूऊतुं
 कीधुं, देवानी बुद्धे परायुं फेडी आपणुं कीधुं,
 अणदेवानी बुद्धे सूऊतुं फेमी असूऊतुं कीधुं, अ
 णदेवानी बुद्धे आपणुं फेडी परायुं कीधुं, वहो
 रवा वेला टली रह्यां, असूरो करी महात्मा तेज्या
 मन्नर धरी दान दीधुं, गुणवंत आवे जक्ति न
 साचवी, बती शक्ते साहम्मी वात्सल्य न कीधुं
 अनेराई धर्मक्षेत्र सीदाता बती शक्तिये उद्धर्यां
 नही, दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपादान न दीधुं ॥

बारमे अतिथिसंविज्ञाव्रत विषयिष्ठ अनेरो जे कोई अतिचार पढ़ दिवसमांहि० ॥ १२ ॥

संक्षेपणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पज्जे, परलोगासंसप्पज्जे, जीवियासंसप्पज्जे, मरणासंसप्पज्जे कामजोगासंसप्पज्जे ॥ इहलोके धर्मना प्रजा वल्लगें राजशुद्धि, सुख,सौभाग्य,परिवार, वांढ्यां परलोकें देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्ति तणी पदवी वांढी, सुख आवे जीवितव्य वांढ्युं, दुःख आवे मरण वांढ्युं, कामजोग तणीवांढ कीधी ॥ संक्षेपणाव्रत विषयिष्ठ अनेरो जे कोई अतिचार पढ़ दिवसमांहि० ॥ १३ ॥

तपाचार बार जेद ठ बाह्य, ठ अन्तर ॥ अणसण मूणोयरिआ० ॥ अणसण जणीउपवास विशेष पर्वतियें बती शक्तियें कीधो नहीं, ऊणोदरीव्रत ते कोलिया पांच सात ऊणारह्या नहीं, वृत्तिसंक्षेप ते अव्य जणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग तथा विगयत्याग न कीधो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट कस्या नही, संलीनता अंगोपांग संकोची राख्या नहीं-

पञ्चस्काण जांग्यां, पाटलो मगमगतो फेड्यो नहीं,
 गंठसी, पोरसी, साढपोरिसि, पुरिमढ्ठ, एकास
 णुं, बेअसणुं नीवि, आंबिल प्रमुख पञ्चस्का
 ण पारबुं विसाखुं, बेसतां नवकार न जणयो,
 उठता पञ्चस्काण करबुं विसाखुं, गंठसीजं जा
 ग्युं, नीवी, आंबिल, उपवासादिक, तप करी
 काचुं पाणी पीधुं, वमन हुजं, बाह्य तप विषयि
 जं अनेरो जे कोई अतिचार पद्द० ॥ १४ ॥

अच्यंतरतप ॥ पायवित्तं विणजं० ॥ मन
 शुद्धं गुरु कन्दे आलोअणालीधी नहीं, गुरु
 दत्त प्रायश्चित्त तप लेखा शुद्धं पढुंचाड्यो नहीं,
 देव, गुरु, संघ, साहम्मी प्रत्ये विनय साचव्यो
 नहीं, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वै
 यावच्च न कीधुं, वांचना; पृच्छना, परावर्त्तना,
 अनुप्रेक्षा, धर्मकथावद्गण पंचविध स्वाध्याय
 न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याया, आ
 र्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां, कर्म द्वय निमित्तं
 लोगस्स दशवीशनो काउस्सग्ग न कीधो ॥
 अच्यंतर तप विषयीजं अनेरो जे कोई अति
 चार पद्द दिवसमांहि० ॥ १५ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणगूहिअ
बलविरजं ॥ पढवे, गुणवे, विनय वैयावच्च,
देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप,
जावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, काया
तणुं ठतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूमा पंचांग खमा
समण न दीधां, वांदणा तणा आवर्त्तविधिसाच
व्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणें बेठा, उताव
लुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार वि
षयियो अनेरो जे कोइ अतिचार पढ ॥ १६ ॥

नाणाइअठ पइवय, समसंवेहणु पण पनरक
म्मेसु वारस तव विरिअतिगं, चउव्वीसंसय अइ
यारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं करणे ॥ जिन प्रतिषेध
अज्जदय, अनंतकाय, बहुबीजज्जदण, महारंज
परिग्रहादिक कीधां, जीवाजीवादिक सूद्धम वि
चार सद्व्या नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र
प्ररूपणा कीधी, तथा प्राणातिपात, मृषावाद,
अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया,
लोभ, राग, द्वेष, कलह, अज्ञ्याख्यान पैशु,
न्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद,
मिथ्यात्वशब्द, ए अठार पापस्थानक कीधां,

कराव्यां, अनुमोद्यां होय, दिनकृत्यप्रतिक्रमण, विनय, वैयावच न कीधा, अनेरु जे कांइ वीतरागनी आझा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय ॥ ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पद दिवसमांहि सूद्धम, बादर, जाणतां, अजाणतां हुज होय ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी तस्स मिळामि डक्कडं ॥१८॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री समकित मूल बारवत, एकसो चोवीस अतिचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पद दिवस मांहि सूद्धम, बादर, जाणतां अजाणतां हुज होय ते सवि हुं मने वचने कायायें करी तस्स मिळामि डक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकपस्की, चोमासी, संवत्तरी अतिचार समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ अथ प्रज्ञातना पञ्चस्काण ॥

॥५७॥ प्रथम नमुक्कार सहि मुठसहिनुं ॥

॥ उग्गय सुरे, नमुक्कार सहिअं, मुठिसहिअं पञ्चस्काइं ॥ चउव्विहंपि आहारं, असणं पाणं खाइमं, साइमं ॥ अन्नञ्जणाजोगेणं, सहसागारेणं, महत्त रागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥६७॥

॥५८॥ बीजुं पोरिसि, साडूपोरिसीनुं ॥

उग्गए सूरै, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, सा
डूपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चस्काइ ॥ उग्गए सूरै,
चउविहंपि, आहारं असणं, पाणं, खाइमं, सा
इमं ॥ अन्नञ्जणा जोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्च
न्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरा
गारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥५८॥

॥५९॥ त्रीजुं बीयासणा एकासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरै, नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, मु
ठिसहिअं पच्चस्काइ ॥ उग्गए सूरै, चउविहं
पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥
अन्नञ्जणाजोगेणं, सहसागारेणं, पच्चन्नकालेणं
दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं,
सब समाहिवत्तियागारेणं ॥ विगइउ पच्चस्काइ
॥ अन्नञ्जणाजोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं,
गिहउसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमस्कि
एणं पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब
समाहिवत्तियागारेणं बियासणं, पच्चस्काइ ति
विहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्न
ञ्जणाजोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं,

आउट्टणं पसारेणं, गुरु अञ्जुठाणेणं, पारिष्ठा
वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब समाहिव
त्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा अलेवेणवा
अत्तेण वा, बहुलेवेण वा, ससिन्हेणवा, अ
सिन्हेणवा, वोसिरे ॥ जो एकासणानुं पच्चस्काण
करवुं होय तो, बियासणंने ठेकाणे एकासणं
नो पाठ केद्वो ॥ इति बियासणा एकासणानुं
पच्चस्काण समाप्त ॥ ५९ ॥

॥६०॥ चोथुं आयंबिलनुं पच्चस्काण ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं पोरिसिं, सा
ढपोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चस्काइ ॥ उग्गए सूरे
चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, सा
इमं, अन्नञ्जणाजोगेणं, सहसागारेणं, पन्नका
लेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरागारेणं,
सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ आयंबिलं पच्चस्काइ
॥ अन्नञ्जणाजोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं
गिहसंसठेणं, उक्कित्तविवेगेणं, पारिष्ठावणिया
गारेणं, महत्तरागारेणं सब समाहिवत्तिगारे
णं ॥ एगासणं पच्चस्काइ ॥ तिविहंपि आहारं
असणं, खाइमं साइमं ॥ अन्नञ्जणाजोगेणं

सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण प
सारेणं, गुरुअप्पुठाणेणं, पारिठवणियागारेणं,
महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पा
णस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अत्ते एवा, बहु
लेवेणवा, ससिन्हेण वा, असिन्हे एवा ॥ वोसिरे
॥ इति आयंबिल्लनुं पच्चस्काण ॥ ६० ॥

॥६१॥ पांचमुं तिविहार उपवासनुं ॥

॥उग्गए सूरे,अप्पत्तठं पच्चस्काइ ॥ तिविहंपि
आहारं, असणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नञ्जणा
जोगेणं, सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं,
महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पा
णहार पोरिसिं, साढ पोरिसिं, मुठिसहिअं,
पच्चस्काइ ॥ अन्नञ्जणाजोगेणं, सहसागारेणं
पन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं मह
तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स
लेवेण वा, अलेवेणवा, अत्तेण वा, बहुलेवेण
वा, ससिन्हेण वा असिन्हेण वा वोसिरे ॥ इति
तिविहार उपवासनुं पच्चस्काण ॥ ६१ ॥

॥६२॥ ठहुं चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अप्पत्तठं पच्चस्काइ ॥ चउवि

हंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न
 णा जोगेणं, सहसागारेणं, पारिष्ठावणियागा
 रेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं
 वोसिरे ॥ इति चउविहारउपवासनुं ॥ ६२ ॥

॥ अथ सांऊनां पच्चस्काण ॥

तहां प्रथम बीयासणं, एकासणं, आयं
 बिल, तिविहार उपवास, अने ठठ जे करे तो
 तेणे पाणहारनुं पच्चस्काण करवुं ते आवी रीतेः—
 ॥६३॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चस्काइ ॥ अन्न
 णा जोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सब
 समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥६४॥ बीजुं चउविहारनुं पच्चस्काण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चस्काइ ॥ चउविहंपि आ
 हारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्न
 णा जोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सबस
 माहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥६५॥ त्रीजुं तिविहारनुं पच्चस्काण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चस्काइ ॥ तिविहंपि आहा
 रं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्न
 णा जोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्ति

यागारेणं, वोसिरे ॥ इति तिविहारनुं ॥ ६५ ॥

॥ ६६ ॥ चोथुं डुविहारनुं पञ्चस्काण ॥

॥ दिवस चरिमं पञ्चस्काइ ॥ डुविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, अन्नञ्जणाजोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सब समादिवत्तियागागारेणं वोसिरे इति ॥ ६६ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगासियनुं पञ्चस्काण करवुं तेनो पाठ कहे ठे ॥

॥ ६७ ॥ देसावगासिअं उवजोगं परिजोगं पञ्चस्काइ ॥ अन्नञ्जणाजोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सब समादिवत्तियागागारेणं वोसिरे ६७

॥ ६८ ॥ ठुं पोसहनुं पञ्चस्काण ॥

॥ करेमि जंते पोसहं, आहारपोसहं देसउं सबउं, सरीर सक्कार, पोसहं सबउं, बंजचेर पोसहं सबउं, अद्वावारपोसहं सबउं, चउविहे पोसहं ठामि ॥ जाव दिवसं अहोरतं पज्जुवा सामि ॥ डुविहं तिविहेणं ॥ मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स जंते पडि कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति पञ्चखाणानि संपूर्णानि ॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥ अथ पोसह पारतां गाथा ॥

॥ सागरचंदो कामो, चंदवडिसो सुदंसणो
धन्नो ॥ जेसिं पोसह पन्निमा, अखंमिआ जी
विअं तेवि ॥ १ ॥ धन्ना सत्ताहणिजा, सुलसा
आणंद कामदेवाय ॥ जेसिं पसंसइ जयवं, ह
ढवयं तं महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधे लीधनं
विधे पारीनं विधि करतां जे कोइ अविधि हुं
होइ, ते सवि हुं मने वचने कायायें करी मि
ठामि डक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ६९ ॥

॥ ७० ॥ अथ संथारापोरिसी ॥

॥ निसिही निसिही निसिही ॥ नमो खमास
मणाणं, गोयमाइणं ॥ महामुणीणं ॥ ए पाठ त
था नवकार तथा करेमि जंते समाइअं ॥ एट
ला सर्व पाठ त्रण वार कहीने ॥ अणुजाणहजि
ठिजा ॥ अणुजाणह परमगुरू, गरुगुणरय
णेहिं मंनियसरीरा ॥ बहुपन्निपुन्नापोरिसि, रा
इय संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं
बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुकुम्पिपायपसा
रण अंतरंत पमज्जए जूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ
संभासा, उवडंते अ काय पन्निवेहा ॥ दवइ उ

वर्जगं. उसास निरुञ्जणा लोए ॥ ३ ॥ जइ मे
हुज्ज पमाउं. इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥
आहार मुवहि देहं, सबं तिविहेणं वोसिरिअं
॥ ४ ॥ चत्तारि मंगलं ॥ अरिहंता मंगलं ॥ सि
द्धा मंगलं ॥ साहु मंगलं ॥ केवल्लिपन्नत्तो ध
म्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा ॥ अ
रिहंता लोगुत्तमा ॥ सिद्धा लोगुत्तमा ॥ साहु
लोगुत्तमा ॥ केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो
॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंते स
रणं पवज्जामि ॥ सिद्धे सरणं पवज्जामि ॥ साहु
सरणं पवज्जामि ॥ केवल्लिपन्नत्तं धम्मं सरणं
पवज्जामि ॥ ७ ॥ पाणाइवाय मल्लिअं, चोरिक्कं
महुणं दविण सुव्वं ॥ कोहं माणं मायं, लोचं
पिज्जं नहा दोसं ॥ ८ ॥ कलहं अन्नस्काणं पेसु
न्न रई अरई समाउत्तं ॥ परपरिवायं माया,
मोमं मिठत्तमद्वं च ॥ ९ ॥ वोसिरिसु इमाइं
मुक्क मग्ग संसग्ग विग्घञ्जुआई ॥ डुग्गइ नि
बंधणाई अठारस पावठाणाई ॥ १० ॥ एगोहं
नत्ति मे कोइ. नाह मन्नस्स कस्सई ॥ एवं अ
दीण मण्णमां, अप्पाण वणुसासई ॥ ११ ॥ ए

गोमे सासजं अप्पा, नाण दंसण संजुजं॥सेसा
 मे बाहिरा मावा, सब्बे संजोगल्लस्सण ॥ १२ ॥
 संजोगमूला जीवेण, पत्ता झुक्कपरंपरा ॥ तम्हा
 संजोग संबंधं, सब्बं तिविहेण वोसिरिञ्चं॥१३॥
 अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सु साहुणो गुरु
 णो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहि
 ञ्चं ॥ १४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ
 सब्बह जीव निकाय ॥ सिअह साख आलोयण
 ह, सुअह वइर न जाव ॥ १५ ॥ सब्बे जीवा क
 म्म वस्स चउदह राज जमंत ॥ ते मे सब्ब ख
 माविआ, सुअवि तेह खमंत ॥ १६ ॥ जं जं म
 णेण वअं, जं जं वाएण मासिअं पावं ॥ जं जं
 काएण कयं, मिअमि झुक्कं तस्स ॥ १७ ॥

॥ इति संथारा पोरिसी ॥ ७० ॥

॥ अथ चैत्यवंदन

॥ तत्र प्रथमं सीमंधरजिनचैत्यवंदनं ॥

॥ सीमंधर परमात्मा, शिव सुखना दाता ॥
 पुस्कल वइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता
 ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंनरीगिणी, नयरीये शोहे॥
 श्री श्रेयांस राजा तिहां, जविअणनां मन मो

हे ॥१॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकी रा
णी मात ॥ कुथुं अर जिन अंतरे, श्री सीमंधर
जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रभु जनमीया, वली
यौवन पावे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमिणी
परणावे ॥ ४ ॥ जोगवी सुख संसारनां, संजम
मन लावे ॥ मुनिसुव्रत नमी अंतरे, दीक्षा प्र
भु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो ह्य करी, पाम्या
केवल नाण ॥ खिन्न लंढने शोभता, सर्व जा
वना जाण ॥ ६ ॥ चौरासी जस गणधरा, मुनि
वर एक शो कोरु ॥ त्रण भुवनमां जोयतां, न
हीं कोइ एहनी जोरु ॥ ७ ॥ दस लाख कह्या
केवली, प्रभुजीनो परिवार ॥ एक समय त्रण
कावना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढाल
जिनांतरे ए, आशे जिनवर सिद्ध ॥ जश विज
य गुरु प्रणमतां, शुभ वांछित फल लीध ॥ ९ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुंचैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवल ज्ञानकमला, कलित त्रिभु
वन हितकरम् ॥ सुरराजसंस्तुतचरणपंकज,
नमो आदिजिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर
शृंगमंडण, प्रवरगुणगणभूधरम् ॥ सुर असुर

किन्नर कोडि सवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करती ना
 टक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरम् ॥
 निर्जरावली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंरु
 रिक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि म
 नहरम् ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो०
 ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडि
 नंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥ न
 मो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही, विमल
 गिरिवरतोपरम् ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपात
 कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शि
 खर मंडण, दुःख विहंडण ध्याइये ॥ निज शुद्ध
 सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइये ॥ ७ ॥
 जित मोह कोह विगोह निजा, परमपद स्थित
 जयकरम् ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मवि
 जय सुहित करम् ॥ ८ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथ सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्ध क्षेत्र, दीठे डुर्गति वारे ॥
 जाव धरीने जे चढे, तेने जवपार उतारे ॥ १ ॥
 अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनोराय ॥
 पूर्व नवाणुं रुखजदेव, ज्यां ठविआ प्रचुपाय

॥ ७ ॥ सूरज कुंरु सोहामणो, कविड जह्नु अ
जिराम ॥ नाजिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं
प्रणाम ॥ ३ ॥ इति चैत्य० ॥ ७४ ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मानुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥
अचल अकल अविकार सार, करुणा रससिं
धु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु
॥७॥ गुण अनंत प्रभु ताहारा ए, किमही क
ह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदा
नंद सुख धाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ७५ ॥

अथ सीमंधर जिनस्तवनं ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे
जावजो ॥ मुज विनतमी, प्रेमधरीने एणि परे
तुमें संजलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण्यचुव
ननो नायक ठे ॥ जस चोसठ इंडे पायक ठे ॥
नाण दरिसण जेहनें खायक ठे ॥ सुणो०॥१॥
जेनी कंचन वरणी काया ठे ॥ जस धोरीखंबन
पाया ठे ॥ पुंडरीगिणि नगरीनो राया ठे ॥ सु
णो० ॥ ७ ॥ बार पर्षदामिहिं बिराजे ठे ॥ जस

ચોત્રીશ અતિશય ઘાજે છે ॥ ગુણ પાંત્રીશ વા
 ણીએ ગાજે છે ॥ સુણો ૦ ॥ ૩ ॥ જવિજનને તે પ
 ડિબોદે છે ॥ તુમ અધિક શિતલ ગુણ શોદે છે ॥
 રૂપ દેખી જવિજન મોદે છે ॥ સુણો ૦ ॥ ૪ ॥
 તુમ સેવા કરવા રસીયો હું ॥ પણ જરતમાં હરે
 વસીયો હું ॥ મહામોહ રાય કર ફસીયો હું ॥
 સુણો ૦ ॥ ૫ ॥ પણ સાહિબચિત્તમાં ધરીયો છે ॥
 તુમ આણા સ્વદ્ધ કર ગ્રહીયો છે ॥ પણ કાંઈક
 મુજથી મરીયો છે ॥ સુણો ૦ ॥ ૬ ॥ જિન ઉત્તમ
 પુંઠેં હુવે પૂરો ॥ કહે પદ્મવિજય થાઉં શૂરો ॥ તો
 વાધે મુજ મન અતિ નૂરો ॥ સુ ૦ ॥ ૭ ॥ ઇતિ ॥

॥ અથ શ્રીસિદ્ધાચલસ્તવનં ॥

॥ જશોદા માવડી ॥ એ દેશી ॥

॥ જાત્રા નવાણું કરીયે વિમલગિરી ॥ જાત્રા
 નવાણું કરિયે ॥ એ આંકણી ॥ પૂરવ નવાણું વા
 ર શેત્રુંજગિરિ, રૂઘવ જિણંદ સમોસરીયે ॥
 વિ ૦ ॥ ૧ ॥ કોમિ સહસ જવ પાતક ત્રૂટે ॥ શેત્રું
 જ સાહામો મગ જરીયે ॥ વિ ૦ ॥ ૨ ॥ સાત બઠ
 દોય અઠમ તપસ્યા, કરી ચઢીયે ગિરિવરીયે ॥
 વિ ૦ ॥ ૩ ॥ પુંડરીક પદ જપીયે હરસ્વે, અધ્ય

वमाय शुभ धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अन्न
व्या न नजर देखे, हिंसक पण उधरीये ॥ वि० ॥
॥ ४ ॥ जुडं मंथारो ने नारी तणो संग, दूरथकी
पण्ढिरीये ॥ वि० ॥ ६ ॥ सचित्त परिहारीने एकल
आहारी, गुप्त भाथे पद चरीये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पम्नि
क्रमणा दोय विधिशुं करीये, पाप पम्न विखहरी
ये ॥ वि० ॥ ८ ॥ कलिकाले एतीरथमोटुं, प्रवह
ण जिम जव दरीए ॥ वि० ॥ ९ ॥ उत्तम ए गिरि
वर संवता पदकहे जव तरीये ॥ विमल० ॥ १० ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ आंखडीये रे में आज, शत्रुंजो दीठोरे ॥
मवा लाग्व टकानो दहामो रे, लागे मुने मी
ठो रे ॥ १ ॥ आंकणी ॥ सफल अयो मारा मननो
कुमाटो ॥ वाला मारा ॥ जवनो संशय जांग्यो
रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभु
जीने लाग्यो रे ॥ शत्रुं० ॥ १ ॥ मानवजवनो
लाहो लीधो ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीधी रे ॥
सोना रूपाने फलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षीणा
दीधी रे ॥ शत्रुं० ॥ ७ ॥ डधडे पखालीने केशर
वाली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वरपूज्यारे ॥ श्रीसि,

श्वाचल नयणें जोतां, पापमेवासि धुज्यारे ॥ श
 त्रुं०॥३॥ स्वयमुखसुधर्मा सुरपति आगे ॥ वा०॥
 वीरजिणंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ
 मोढुं, नहिं कोइ शत्रुंजा तोले रे ॥ शत्रुं०॥४॥
 इंद्र सरीखा ए तीरथनी ॥ वा०॥ चाकरी चित्त
 मां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरज
 कुंडमां नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे
 श्रीसिद्ध खेत्रे ॥ वा०॥ साधु अनंता सीधा रे ॥
 ते माटे ए तीरथ मोढुं, उद्धार अनंता कीधारे
 ॥ शत्रुं०॥६॥ नाजिराया सुत नयणे जोतां ॥ वा०॥
 मेह अमीरस वूढ्यारे ॥ उदयरतन कहे आज
 मारे पोते, श्रीआदीश्वर तूढ्यारे ॥ शत्रुं०॥७॥
 इति स्तवनं ॥ ८० ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजियें, नरजवनो ला
 हो लीजियें ॥ मन वंछित पूरण सुततरु, जय वा
 मासुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अति
 जला, दोय धोला जिनवर गुणनिदा ॥ दोय
 लीला दोय सामल कहा, शोले जिन कंचन व
 र्ण लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवरें जाखीयो, ग

एधर ते हीयमे राखीयो॥ तेहनो रस जेणे चाखी
यो, ते हुजं शिव सुख साखीयो ॥ ३ ॥ धरणी
धर राय पद्मावती, प्रज्जु पार्श्व तणा गुण गाव
ती ॥ सहु संघना संकट चूरती, नयविमलना
वंछित पूरती ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥ ८५ ॥

॥ अथ शिखामण सळाय ॥

॥ जीव वारुं वुं मोरा वालमां, परनारीथी
प्रीति म जोरु ॥ परनारीनी संगत नहीं नली,
तारा कुलमां लागशे खोड ॥ जीव० ॥ १ ॥ जी
व आ संसार ठे कारमो, दीसे ठे आल पंपाल॥
जीव एहवुं जाणी चेतजो, आगल माढीमे ना
खी ठे जाल ॥ जी० ॥ २ ॥ जीव मात पिता
आइ बेनमी, सहु कुटुंब तणो परिवार ॥ जीव
वेती वारे सहु सगुं, पठें लांवा कीधा जुहार ॥
जीव० ॥ ३ ॥ देहली लगें सगो आंगणो, शे
रीअ लगें सगीमाय ॥ जीव सीम लगें साजन
नलो, पठें हंस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥
जीव जातां थकां नवि जाणीयुं, नवि जाण्यो
वार कुवार ॥ जीव गाडुं नरीयुं ईंधणे, वली खो
खरी हांडलीसार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठ

म पाखि न जलखी, जीव बहुला कीधा पाप
जीव सुमतिविजय मुनि एम ज्ञणे, जीव आ
वागमण निवार ॥ जीव० ॥ ६ ॥ इति ॥ ८७ ॥

॥ अथ श्री अनार्थी मुनिनी सत्वाय ॥

॥ श्रेणिक रयवामी चढ्यो, पेखीयो मुनि ए
कंतावररूप कांतें मोहीउं, राय पूठे ए कहोनें
विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिक राय हुंरे अनार्थी नि
ग्रंथ ॥ तिणे में लीधोरे साधुजीनो पंथ ॥ श्रेणि
क० ॥ ए आंकणी ॥ इणें कोसंबी नयरी वसे,
मुळ पिता परिगलधन्न ॥ परिवार पूरें परिवस्यो,
हुं हुं तेहनो रे पुत्ररतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक
दिवस मुळ वेदना, ऊपनी में न खमाय ॥ मात
पिता सहु झूरी रह्या, पण समाधि किणे नवि
थाय, ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मणिउरमी,
चोरमी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही,
कोणे न कीधी मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु
राज्य वैद्य बोलाविया, कीधला कोडि उपाय
॥ बावना चंदन चरचिया, तोहिपण रे समाधि
न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ जगमांदि को केहनो न
हीं, ते जणी हुं रे अनार्थ ॥ वीतरागना धरमसा

खिखो, नहीं कोइबीजो रे मुक्तिनो साथ ॥ श्रे० ॥
 ॥ ६ ॥ वेदना जो मुक्त उपशमे, तो लेउं संजम जार ॥
 इम चिंतवतां वेदन गई, ब्रत लीधुं में हर्ष
 अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोमी राय गुण स्त
 वे, धन धन ए अणगार ॥ श्रेणिक समकित
 पामीयो, बांदी पोहोतो रे नगर मजार ॥ श्रे० ॥
 ॥ ८ ॥ मुनि अनाथी गावतां तूटे कर्मनीकोड
 गणि समय सुंदर तेहना, पाय वंदे रे बे कर
 जोड ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति अनाथीनी सखाय ॥ ८८ ॥

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तक प्रमुख मूकी
 श्रावक श्राविका कटासणुं, मुहपत्ती, चरवल्लो
 लेइ, शुद्ध वस्त्र, जग्या पूंजी, कटासणा उपरबे
 सी, मुहपत्ती डाबा हाथमां मुख पासें राखी,
 जमाणो हाथ आपनाजी सन्मुख राखी, एक न
 वकार गणी, पंचिदिअ कहीयें; अने जो आ
 गलथी ते स्थानकें आचार्यप्रमुखनी स्थापना क
 रेखी होय, तो तिहां पंचिदिय न कहेवुं, पढी इ
 ञामि खमासमाण देइ, इरियावहिया ० तथा त
 रस उत्तरी ० अने अन्नढ उससीएणं कही, एक

लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, “इत्ताकारेण संदिसह जगवन् सामायि क मुहपत्ती पडिलेहुं ॥ इत्तं” ॥ एम कही मुहपत्ति तथा अंगनी पण्डिलेहणना पच्चास बोल कही, मुहपत्ती पडिलेहीयें, पढी खमासमण देइ, “इत्ताकारेण संदिसह जगवन् सामायिक, संदिसाहुं ॥ इत्तं ॥ कही खमा० इत्ता० ॥ सामायिक ठाउं, इत्तं” एम कही, बेहाथ जोडी, एक नवकार गणी, इत्ताकार जगवन् पसाय करी, सामायिक दंडक उच्चरावो जी. तेवारें व डिल, करेमि जंतें कहे, पढी खमासमण देइ इत्ता० ॥ बेसणें संदिसाहुं ॥ इत्तं ॥ खमा० ॥ इत्तं ॥ बेसणें ठाउं ॥ इत्तं ॥ खमा० ॥ इत्ता० ॥ सज्जाय संदिसाहुं ॥ इत्तं ॥ खमा० ॥ इत्ता० ॥ सज्जाय

(खमा० होय, त्यां खमासमण देवुं. इच्छा० होय, त्यां इच्छा कारेण संदिसह जगवन् कहेवुं, तथा ए सर्व विधि जे लख्यो छे, ते स्थापनाजी संनमुख क्रिया करवा आश्रयी समजवो, परंतु साक्षात् गुरु विराजमान होय तो इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सज्जाय संदिसाहुं, एम शिष्य कहे तेवारें गुरु कहे “संदिसह” तथा इरियावहि पडिकमवाना आदेशमां गुरु “पणिकमेह” कहे, एम सर्व स्थानकें समजी लेवुं.)

करुं ॥ इहं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा॥
पठी वे घमी सज्जायधर्मध्यानकरवुं॥इति॥ए६॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ ॥ इरियावहिपम्किमवाथी
यावत्तुलोगस्स सुधी कही ॥ खमा० ॥ इडा० ॥
मुहपत्ती पडीलेहुं एम कहीमुहपत्ती पम्किमेही,
खमासमण देइ ॥ इडा० ॥ सामायिक पारुं ॥
यथाशक्ति ॥ वली खमा० इडा० ॥ सामायिक
पाखुं ॥तदत्ति॥ कही पठी जमणो हाथ चरवला
उपर अथवा कटासणाउपर थापी एक नवका
र गणी “ सामाश्यवयजुत्तो ” कहियें ॥ पठी
जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने ए
क नवकार गणी उठवुं ॥ इति सामायिक पार
वानो विधि समाप्त ॥ ए७ ॥

॥ अथ पाञ्चस्काण परवानो विधि ॥

॥ प्रथम “इरियावहियाए” पडिक्की याव
त् “जगचिंतामणि” तुं चैत्यवंदन “जयवीय
राय” सुधी करवुं ॥ पठी “मन्हजिणाणं” नीस
ज्जाय कही मुहपत्ति पडिलेहवी ॥ पठी खमास
मण देइ इडाकारेण संदिसह जगवन् पञ्च

स्काण पारुं यथाशक्ति “ इहामि० इहामि०
पञ्चस्काण पारुं “ तद्वत्ति ” एम कही जमणो
हाथ कटासणां अथवा चरवला उपर थापी,
एक “ नवकार ” गणी, पञ्चस्काण कसुं होय
तेनुं नाम कहीने पारवुं. ते लखीये ठैयें:-
उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साम्पोरिसिं,
गंठिसहिअं, मुठिसहिअं, पञ्चस्काण कसुं; चउवि
हार, आंबिल, निवी, एकासणुं, वे आसणुं कसुं,
तिविहार पञ्चस्काण, फासिअं, पालिअं, सोहि
अं, तीरिअं, कट्टिअं, आराहिअं, जं च न आ
राहिअं, तस्स मिहामि डक्कमं, एम कही एक
नवकार गणवो ॥ इति ॥ ९८ ॥

॥ अथ पण्डितेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिअं कही, इरियावहियाए
कहेवुं, थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न
कहेवो. पढी तस्स उत्तरी कही एक लोगस्स अ
थवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट
लोगस्स कही, उजे पगें बेसी मुहपत्ती, चरवलो
कटासणुं, उत्तरासणुं, धोतीयुं, कंदोरो आदि
नुं पण्डितेहण करवुं, पढी काजो काहामी, जीव

कलेवर सचित्त आदि जोबुं, पठी काजो काहा
द्वनार आपनाजी सामो ऊजो रही. इरियावहि
पम्किमी, काजो परठववा जग्या शोधी, त्रण
वार अणुजाणह जस्सग्गो कही, काजो परठवी
ने पठी त्रणवार “वोसिरे” कहे ॥ इति ॥ ९९॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम सामायिकलीजें, पठी पाणी वाव
खुं होय तो. मुहपत्ति पम्क्लेहवी, अने आहार
वावखो होय तो, वांदणां वे देवां, त्यां बीजा
वांदणामां “आवसियाए” ए पाठ न कहेवो ॥
पठी यथाशक्ति पञ्चस्काण करवुं ॥ पठी खमा
ममण देई इठाकारेण संदिसह जगवन् चै
त्यवंदन करु “इठं” एम कही, वमेरायें अथवा
पोतें चैत्यवंदन कहेवुं ॥ पठी जंकिंचि कही
नमुत्तुणं कहेवुं ॥ पठी ऊजा अईने अरिहंत
चेइयाणं० अन्नत्वं० कही एक नवकारनो काऊ
स्सग्ग करी, पारीने, जेने वमेरा हुकम आपे
ते धणीयें “नमोऽर्हत्” कहीने प्रथम थोय क
हेवी ॥ पठी प्रगट लोगस्स कही, सबलोए अ
रिहंतचेइयाणं कही, एक नवकारनो काऊस्सग्ग

पारी बीजी थोय कहेवी ॥ पढी पुस्करवरदी
 कही, “सुअस्स जगवउ करेमि काउस्सग्गं वंद
 णवत्तिआए” कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग
 करी, त्रीजी थोय कहेवी ॥ पढी सिद्धाणं बुद्धा
 णं० वेयावच्चगराणं० करेमिकाउस्सग्गं अन्न
 णं० नो पाठ कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग
 करी पारी “नमोऽर्हत्” कही, चोथी थोय क
 हेवी ॥ पढी बेशी हाथ जोडीने “नमुवुणं” कही
 खमासमण देइ, “जगवानहं” कहेवुं. वली बीजुं
 खमासमण देइ, “आचार्यहं” कहेवुं, वली त्रीजुं
 खमासमण देइ, “उपाध्यायहं” कहेवुं वली
 चोथुं खमासमण देइ, सर्व साधुज्योऽहं ” क
 हेवुं, ए रीतें चार खमासमण देवापूर्वक जग
 वानादि चारने थोज वंदन करीयें ॥ पढी खमा
 समण आपी इडाकारेण संदिसह जगवनू “दे
 वसिप्रतिक्रमणें ठाउं” एम कही जमणो हाथ
 चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने, इहं
 सबस्सवि देवसिअं० नो पाठ कही ऊजा थई,
 करेमि जंतें० इडामि ठामि काउस्सग्गं जो मे दे
 वसिउं० तस्स उत्तरि० कही अतिचारनीआठ

गाथानो काउस्सग्ग करवो, जो आठ गाथा
न आवमती होय तो आठ नवकारनो काउ
स्सग्ग करवो, ते पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो॥
पठी वेशीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडि
लेहीने वांदणां वे देवां ॥ पठी ऊजा थईने
इठाकारेण संदिसह जगवन् देवसिअं आलोउं
इहं आलोएमि कही जो मे देवसिउं कहेवुं,
पठी सात लाख० कही, अठार पापस्थानक
आलोइने, “सव्वस्सवि देवसियं” कहेवुं ॥ पठी
नीचं वेमी जमणो ढींचण ऊजो राखी,
एक नवकार गणी, करेमिजंते० इठामि पडिक्क
मिउं० कही वंदितासूत्र संपूर्ण कहीने वांदणां वे
देवां ॥ पठी खमासमण देई इठाकारेण संदि
सह जगवन् अञ्जुठिउंहं अञ्जितर देवसियंखा
मेउं एम कही, अञ्जुठिउं खामीने वांदणां वेवार
देवां ॥ पठी ऊजा थई “आयरिय उवज्जाय”
कही करेमि जंते इठामि ठामि काउस्सग्गं जो
मे देवसिउं० कह “तस्स उत्तरी” कही वे लो
गस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग
करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पठी सव्व

लोए अरिहंतचेइआणं कही, एक लोगस्स
अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी पठी
पुस्करवरदी, सुअस्स जगवज्ज, करेमि काउस्सग्गं
वंदण० अन्नत्त० कही, एक लोगस्स अथवा
चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने पठी सिद्धाणं
बुद्धाणं कही, सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं
अन्नत्त० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी,
“नमोऽर्हत्” कही, पुरुषे “सुअदेवया” नी
पहेली थोय अने स्त्रीये “कमलदल” नी पहेली
थोय कहेवी ॥ पठी खित्तदेवयाए करेमि काउ
स्सग्गं० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी
“नमोऽर्हत्” कही खित्तदेवयानी बीजी थोय
स्त्रीये तथा पुरुषे कहेवी ॥ पठी प्रगट एक नव
कार गणी, बेशीने ठछा आवश्यकनी मुहपत्ति
पडिलेही वांदणां बे देईने, इत्ताकारेण संदिसह
जगवन् सामायिक, चउविसत्तो, वंदनक, पणि
क्रमणुं, काउस्सग्ग, पच्चस्काण, कखुं ठे जी, ए
रीते ठ आवश्यक, संज्जारवां ॥ पठी “इत्तामो
अणुसंघि” “नमोखमासमणाणं०” “नमोऽर्ह
त्” कही, पुरुष, नमोस्तु वर्धमानाय कहे अ

ने स्त्री संसारदावानी त्रण थोयो कहे ॥ पठी न
 मन्त्राणं कही. खमासमण आपी इठाकारेण सं
 दिस्सह जगवन् स्तवन जणुं. एम कही नमोऽर्ह
 न० कही स्तवन कहेवुं ॥ पठी वरकनक० कही
 पूर्वली गीते चार खमासमणपूर्वक जगवान्
 आचार्य. उपाध्याय. सर्वसाधु. ए चारने वांदी
 जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी अट्टाइजेसु०
 मुनिवंदन कहेवुं ॥ पठी खमासमण आपी इठा
 कांण संदिस्सह जगवन् देवसिय पायवित्तवि
 मोदणत्वं काउस्सग्ग करुं. इत्वं देवसिय पाय
 वित्त विमोदणत्वं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्तस
 सिण्णां० कही चार लोगस्स अथवा शोल नव
 कारना काउस्सग्ग करवो. ते पारी प्रगट लोग्ग
 स्स कहीने नीचे वेशी खमासमण देइ इठा
 कांण संदिस्सह जगवन् सज्जाय संदिसाहुं. इ
 वं कही वल्ली बीजुं खमासमण देइ इठाकारेण
 संदिस्सह जगवन् सज्जाय जणुं एम सज्जायनो
 आदेश मागी एक नवकार गणी सज्जाय कहेवी
 ॥ पठी एक नवकार गणी, खमासमण देइ इ
 ठाकांण संदिसह जगवन् डुक्कक्कउं कम्मक्क

उं निमित्तं काउस्सग्ग करुं, इहं डुक्कखउं क
 म्मखउं निमित्तं करेमि काउस्सग्गं “अन्नहं”
 कही “संपूर्ण चार लोगस्स अथवा शोल न
 वकार” नो काउस्सग्ग करवो, ते जेने लघु शां
 ति कहेवी होय एवो एक वडेरो, अथवा पोते
 शांति कहेवावालो होय तो पोतेज पारीने
 “नमोऽर्हत्” कही लघुशांति कहीने प्रगट
 लोगस्स कहे ॥ पढी इरियावही अने तस्स उ
 त्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकार
 नो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहेवो ॥
 पढी चउक्कसाय कही, नमुत्थुणं कही, जावंति
 चेइआइं कही खमासमण देइ जावंति केवि
 साहु कही उवसग्गहरं कही हाथ जोडी मस्तकें
 राखी जयवीयराय कही खमासमण देइ मुहप
 ति पन्निवेहवी ॥ पढी खमासमण देइ इडाका
 रेण संदिसह जगवन् सामायिक पारुं. आ
 स्थानकें जो साक्षात्गुरु बिराजमान होय तो
 ते कहे के “पुणोवि कायवं” तेवारें शिष्य”यथाश
 क्ति” कही फरी खमासमण देइ इडाकारेण संदि
 सह जगवन् सामायिक पाखुं. तेवारें गुरु कहे

“ आयरं न मुत्तवं ” ते सांजली शिष्य तद्वत्ति
कहे ॥ पढी जमणो हाथ चवत्ता अथवा कटा
सणा ऊपर थापी एक नवकार गणी ” सामाइ
यवयजुत्तो०’ कहीने थापेली आपना होय तो
तेनी सामो जमणो हाथ राखी एक नवकार ग
णी ऊठे ॥ ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि सा
मान्य पणे कह्यो, बाकी अंतर्विधि वनेराथी स
मजवो ॥ इति ॥ १०१ ॥

॥ अथ राइप्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवुं तेज्यां
सुधी त्रण नवकार गणीयें तिहां सुधी सर्व वि
धि जाणवो ॥ पढी खमासमण देई इच्छाकारेण
संदिसह जगवन् कुसुमिण डसुमिण राइजवट्ट
णि पायडित्तविसोदणहं काउस्सग्ग करुं. इहं
करेमि काउस्सग्ग ”अन्नह उससिएणं० „
कही चार लोगस्स अथवा शोखनवकारनो
काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स क
हेवो ॥ पढी खमासमण देई इच्छाकारेण सं
दिसह जगवन् चैत्यवंदन जयवीरराय सुधी,
कहवुं ॥ पढी पूर्वोक्त देवसीनी रीतें जगवान्

आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु, ए चारेने प्रत्येके एकेकुं खमासमण देइ वांदवा ॥ पढी बे खमासमण देवापूर्वक सज्जायनो आदेश मागी एक नवकार गणी जरहेसरनी सज्जाय कही फरी एक नवकार गणी इहाकार सुहराई० कही इहाकारेण संदिसह जगवन राईप्रतिक्रमाणे ठाउं एम कही जमाणो हाथ उपधि ऊपर थापी इहं सबस्सवि राइय डुच्चितिय० कहीये पढी नमोत्तुणं,० करेमि जंते० इहामि ठामि का उस्सग्गं, जोमे राइउं०, तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहीने सबलोए अरि हंतचेइयाणं कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो ॥ पढी पुस्करवर दी०, सुअस्स०, वंदण०, कही, अतिचारनी आठ गाथा (अथवा) गाथा न आवमे तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी सिद्धाणं बुद्धाणं कही बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पढि लेही वांदणां बे देवां ॥ पढी ऊजायई इहाकारेण संदिसह जगवन् राइयं आलोउं इहं आ

लोएमि जो मे राइज अइआरो कउं० कही
 “ सातलाख ” नो पाठ कही, अठार पापस्था
 नक आलोई सबस्सवि राइयंनो पाठ कहेवो ॥
 पढी बेशीने जमणो ढींचण ऊजोराखी एक न
 वकार गणी करेमि जंते० इहामि पम्किमिउं० क
 हीवंदितासूत्र संपूर्ण कही बे वार वांदणां देवा.
 वली अझूठिउंहं अझितर राइयं खामीने फरी
 बे वार वांदणां देवा ॥ पढी ऊजा थईने आय
 रियउवज्जाए करेमि जंते० इहामि ठामि काउस्स
 गगं जोमे राईज० कही तस्सउत्तरी० कही तप चिं
 तामणि करतां न आवमे तो चार लोगस्स अ
 थवा शोल नवकरनो काउस्सगग करी प्रगट
 लोगस्स कही ठछा आवश्यकनी मुहपत्ति पडि
 लेहीने वांदणां बे वार देवां ॥ पढी सकल तीर्थ
 वंदन करीने यथाशक्तियें पञ्चस्काण करवुं ॥ प
 ढी इहाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक, चउ
 विसठो, वंदनक, पम्किमण, काउस्सगग, पञ्च
 स्काण कखुं ठेजी एम ठ आवश्यक संजारवां ॥
 पढी पञ्चस्काण कखुं होय तो कखुं ठे जी, धाखुं
 होय तो धाखुं ठे जी, कहेवुं ॥ पढी इहामोअण

सठि नमो गमासमणाणं कही नमोऽर्हत० कही
 यें॥ पढी विशाललोचन, ० नमुहुणं, ० अरिहंत चे
 इयाणं, ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी
 नमोऽर्हत० कही कल्लाणकंदनी प्रथम थोय क
 हेवी पढी लोगस्स ० पुस्करवरदी, ० सिद्धाणं बु
 द्धाणं, ० कही अनुक्रमें चार थोयो कहीयें ठैयें,
 तिहां सुधी सर्व कहेवुं ॥ पढी नमुहुणं ० कही ज
 गवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा ॥
 पढी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी "अट्ठाइ
 जेसु" कहेवुं ॥ पढी ईशान खुणानी सन्मुख
 श्रीसीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवी
 यराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें, तिहां
 सुधी सर्व करवुं ॥ पढी खमासमण देई श्रीसि
 द्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय,
 काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें ठैयें, तिहां सुधी
 सर्व करवुं ॥ पढी सामायिक पारवाना विधिनी
 रीतें सामायिक पारवा सुधीनो सर्व विधि करवो ॥
 इति राइप्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥ १ ० १॥

॥ अथ पस्कि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम दैवसिकप्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही

रहियें तिहां सुधी सर्व कहेवुं, पण चैत्यवंदनस
 कलाऽर्हतनुं कहेवुं, अने थोयो स्नातस्यानीक
 हेवी. पढी खमासमण देईनें इडाकारेण संदि
 सह जगवन् देवसिअं आलोइअ पम्किंता इ
 डाकारेण० पस्की मुहपत्ति पडिलेहुं. एम क
 ही मुहपत्ति पडिलेहियें पढी वांदणां बे दीजें,
 पढी इडाकार० संबुद्धा खामणेणं अश्रुठिउहुं
 अश्रितर पस्किअं खामेउं इहं खामेमि पस्किअं
 पनरस दिवसाणं, पनरस राइआणं, जंकिंचि
 अपत्तियं० ॥ कही इडाकारेणसं० ॥ पस्किअं
 आलोएमि इहं आलोएमि जो मे पस्किउं अ
 इआरो कउं० कही इडाकारेण सं० ॥ पस्कीअ
 तिचार आलोउं एम कही अतिचार कहियें. प
 ढी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकित मूल बा
 रव्रत, एकशो चोवीश अतिचारमांहे जे कोइ
 अतिचार पद्ददिवसमांहे सूद्धम, बादर, जाणतां
 अजाणता हुउं होय, ते सवे हुं मनैं, वचनें,
 कायायें करी मिळामि डक्कडं॥सवसवि पस्किअ
 डुचिंत्तिअं, डुप्पासिय, डुच्चिठिअ, इडाकारेण
 संदिस्सह जगवन् तस्स मिळामि डक्कडं॥इडाका

रि जगवन् पसाज करि पस्कि तपप्रसाद करो
 जी. एम उच्चार करीने आवी रीते कहिये:-च
 उच्चेणं एक उपवास, बेआंबिल, त्रण नीवि,
 चार एकासणां, आठ बे आसणां, बे हजारस
 जाय, यथाशक्ति तप करी (प्रवेश) कस्यो होय तो
 पइठी कहिये, अने करवो होय तो तहत्ति कही
 ये, तथा न करवो होय तो अणबोल्या रहिये.
 पढी वांदणां बे दीजे. पढी इच्छाका० ॥ पत्तेअ
 खामणेणं अश्रुष्ठिउहं अश्रितर पस्किअं खामे
 उं इहं खामेमि पस्किअं पनरस दिवसाणं पन
 रस राइआणं जंकिंचि अपत्तियं० पढी वांदणां
 बे दीजे. पढी देवसिअं आलोइअ पम्किंताइ
 छाका० ॥ जगवन्० पस्किअं पम्किमुं समपडि
 कमामि इहं एम कही करेमि जंते सामाइयं०॥
 कही इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पस्किउं० कहे
 वुं. पढी खमासमण देइ इच्छाकारेणसंदि०॥ प
 स्किसूत्र पढुं. एम कही त्रण नवकारगणी सा
 धु होय तो पस्किसूत्र कहे अने साधु न होय
 तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदितुं कहे
 पढी सुअदेवयानी थोय केहेवी. पढी हेठा बेसी

जमणो ढिंचण उज्जो राखी एक नवकार गणी
करेमि जंते० ॥ इत्तामि पडि० ॥ कही वंदित्तुं
कहेवुं. पढी करेमि जंते० इत्तामि ठामि काज
स्सग्गं जोमे पस्किउं० ॥ तस्सजत्तरी० ॥ अ
न्नत्त० ॥ कहीने बार लोगस्सनो काजस्सग्ग
करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी क
हेवा. अथवा अडतालीश नवकारनो काजस्स
ग्ग करी पारवो. पारीने प्रगट लोगस्स कही सु
हपत्ति पडिलेहिने वांदणां बे दीजें, पढी इत्ता
का०॥समाप्त खामणेणं अज्जुठिज्जहं अज्जितर०
॥ पस्किअं० ॥ खामेउं इत्तं खामेमि पस्किअं
एक पस्काणं पनरस दिवसाणं पनरस राइया
णं जंकिंचि अपत्तिअं कही पढी खमासमाण दे
इने इत्ताका० ॥ पस्कि खापणां खामुं. एम कही
एक खमासण देई तीन तीन नवकार गुणी
एम खामणां चार खामवां. पढी देवसि प्रतिक्र
माणामां वंदित्तुं कहा. पढी बे वांदणां देइने ति
हांथी ते सामायिक पारीयें तिहां सुधी सर्व देव
सीनी पेठे जाणवुं, पण सुअदेवयानी थोयोने
ठेकाणे “ज्ञानादि”नीथोयो कहेवी.स्तवनअजि

ય શાંતિનું કહેવું. સઘાયને ઠેકાણે ઝવસગ્ગહરં તથા સંસારદાવાની ઓયો ચાર કહેવી. અને લઘુશાંતિને ઠેકાણે મહોટી શાંતિ કહેવી ॥
 इति पस्किप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ अथ चउम्मासीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ એ ઉપર કહ્યા મુજબ પસ્કીના વિધિ પ્રમાણે કરવું, પણ એટલું વિશેષ જે બાર લોગસ્સના કાઝસ્સગ્ગને ઠેકાણે વીશ લોગસ્સનો કાઝસ્સ ગ્ગ કરવો, અને પસ્કીના આગારને ઠેકાણે ચઉ માસીના કેહવા તથા તપને ઠેકાણે ઘઠેણં બે ઉપવાસ, ચાર આંબિલ, ઠ નીવિ, આઠ એકાસણાં શોલ બે આસણાં, ચાર હજાર સઘાય, એ રીતે કહીયે ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ એ પણ ઉપર લખ્યા મુજબ પસ્કીના વિધિ પ્રમાણે કરવું, પણ બાર લોગસ્સના કાઝસ્સગ્ગને ઠેકાણે ચાલીસ લોગસ્સનો કાઝસગ્ગ તપને ઠેકાણે અઠમ ઞત્તં એટલે ત્રણ ઉપવાસ, ઠ આંબિલ નવ નીવિ, બાર એકાસણાં, ચોવીસ બે આસણાં, અને ઠ હજાર સઘાય એ રીતે કહેવું” ને

पस्कीना आगारने ठेकाणे संवत्सरीना आगार
कहेवा ॥ इति संवत्सरीप्रतिक्र० सं० ॥

पोसह लेवानी विधि.

प्रथम खमासमण दइ, प्रगट लोगस्स कहे
वा पर्यंत इरियावहि पडिक्की, इच्छाकारेण सं
दिसह जगवान् पोसह मुहपत्ती पडिलेहु! एम
बोली, गुरु आदेश आपे एटले 'इच्छं' कहीने
मुहपत्ति पडी लेहवी. पढी खमा० इच्छा० पोसह
संदिसाहु? इच्छं खमा० इच्छा० पोसह ठाउं? पढी
इच्छं कही बे हाथ जोमी नवकार गणी, इच्छकारी
जगवन् पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी.
कहेवुं एटले गुरु पोसहनी करेमिजंते उच्चरावे.

पढी खमासमण दइ इच्छा० सामायिक मुह
पत्ति पडि लेहुं? इच्छं कही, मुहपत्ति पडीलेहीने,

१ खमा० खमासमण देवुं.

२ इच्छा० इच्छाकारेण संदिसह जगवन् कहेवुं.

३ करेमि जंतेमां चार पहोरनो दिवसनो करनारने माटे "जाव
दिवस" कहेवुं, आठ पहोरनो करनारने माटे 'जाव अहोरत्त'
कहेवुं रात्रीना चार पहोरवाळाने 'जाव शेष दिवसं रत' कहेवुं अने
दिवसनो चार पहोरनो करनारज रात्रिनो चार पहोरनो पण करे
तो कोटीसहित ठे माटे 'जाव अहोरत्त' कहेवुं.

ખમા૦ ઇઢા૦ સામાયિક સંદિસાહું? ઇઢં. ય
મા૦ ઇઢા૦ સામાયિક ઠાઝં? ઇઢં કહી બે હાથ
જોડી નવકાર ગણી ઇઢાકારી ઝગવન્ પસાય
કરી સામાયિક દંડક ઝઘારાવોજી, ગુરુ 'કરેમિ
ઝંતે સામાય્યં' નો પાઠ કહે. તેમાં ંટલું વિશે
ષ જે જાવનિયમં ને ઠેકાણે જાવપોસહં કહેવું.
પઠી યમા૦ ઇઢા૦ બેસણે સંદિસાહું? ઇઢં ય
મા૦ ઇઢા૦ બેસણે ઠાઝં? ઇઢા. યમા૦ ઇઢા૦
સઝાય સંદિસાહું? ઇઢં. યમા૦ ઇઢા૦ સઘાય
કરું? ઇઢં કહી, ઝણ નવકાર ગણવા. પઠી યમા૦
ઇઢા૦ બહુવેલ સંદિસાહું? ઇઢા૦ બહુવેલ ઇઢં.
યમા૦ ઇઢા૦ બહુવેલ કરશું. ઇઢં યમા૦ ઇઢા૦
પઢિલેહણ કરું? ઇઢં કહીને મુહપત્તિ વિગેરે પાં
ચવાના પઢિલેહવા. 'મુહપત્તિ ૫૦ બોલથી, ચર
વલો ૧૦ બોલથી, કટાસણું ૨૫ બોલથી. 'સુત્ર
નો કંદોરો ૧૦ બોલથી અને ધોતીયું ૨૫ બોલ

૧ મુહપત્તિના ૫૦ બોલ પાઠલ લખ્યા ઢે. ઝંગ બોલ હોય
ત્યાં તે ૫૦ માંહેના પ્રથમના ગ્રહણ કરવા.

૨ પોસહમાં આઝૂણ પહેરવા ન જોઈયે કંદોરો સુત્રનો જોઈ
યે. તે ઝોમી, પઢિલેહી, પાઝો બાંધીને તે સંબંધના ઇરિયાવહીતેજ
વચત પઢિકમવા (બંને ટંકની પઢિલેહણામાં સમજવું.

थी पन्निहवुं. पढी खमासमाण दइ, इन्नाकारी
 जगवन् पसाय करी पन्निहवणा पन्निहवोजी.
 एम कही वडीलनुं अण पडिलेहुं एक वस्त्र उ
 त्तरासन पन्निहवुं. पढी खमा० इन्ना० उपधि
 मुहपत्ति पन्निहवुं? इन्ना कही मुहपत्ति पन्निहवुं
 पढी खमा० इन्ना० उपधि संदिसाहुं? इन्ना खमा०
 इन्ना० उपधि पन्निहवुं? इन्ना कहीने पूर्वे पन्निह
 वतां बाकी रहेल उत्तरासण, मात्रुं करवा जवानुं
 वस्त्र अने रात्री पोसह करवो होय तो कामली
 विगेरे १५ पचीस बोलथी पन्निहववा. पढी एक
 जणे डंडास ए जाची लेवुं तेने पडिलेही, इरि
 यावही पडिकमीने काजो लेवो. काजो शुद्ध एटले
 तपासीत्यांज स्थापनाचार्यनी सन्मुख उज्जडक
 बेसीने इरियावही पडिकमवा. पढी काजो यथा
 योग्य स्थानके अणुजाणह जस्सग्गो कहीने
 परठववो. परठव्या पढी त्रणवार वोसिरे क
 हेवुं. पढी मूल स्थानके आवीने सौ साथे देव
 वांटे अने सजाय करे.

१ काजामां सचित्त एकेंद्री नीकले तो गुरु पासे आलोयण
 लेवी. तस जीव नीकले तो यतना करवी.

॥ પોસહ પાર્શ્વાની વિધિ ॥

સ્વમા ૦ દઈ શરિયાવહી પન્નિક્કમી, ચત્તકસા
યથી જયવિયરાય પર્યંત કહીને, સ્વમા ૦ ઇચ્છા ૦
મુહપત્તિ પમીલેહું ? ઇચ્છં કહી મુહપત્તિ પમીલે
હવી. પઠી સ્વમા ૦ ઇચ્છા ૦ પોસહ પારું ? યથાશ
ક્તિ સ્વમા ૦ ઇચ્છા ૦ પોસહ પાર્યો. તહત્તિ કહી
નવકાર ગણી ચરવલા ઉપર જમણો હાથ સ્થા
પીને સાગરચંદો ૦ કહે ॥

પઠી સ્વમા ૦ ઇચ્છા ૦ મુહપત્તિ પમીહું ? ઇચ્છં કહી
મુહપત્તિ પડિલેહીને સ્વમા ૦ ઇચ્છા સામાયિકપારું ?
યથાશક્તિ. સ્વમા ૦ ઇચ્છા ૦ સામાયિક પાર્યું.
તહત્તિ કહી, ચરવલા ઉપર હાત સ્થાપી નવકાર
ગણીને સામાયિક વયજુત્તો કહે. પઠી વિધિ
કરતાં જે કાઈ અવિધિ થઈ હોય તસ્સમિચ્છામી
હુક્કમં કહે. ઇતિ

હવે જેણે સવારે આઠ પહોરનોજ પોસહલી
ધો હોય તે સાંજના દેવ વાંઘ્યા પઠી કુંમલ લી
ધા ન હોય તો લઈને તથા મંત્રાસણ અને રાત્રી

૧ કુડંલ-રૂના પુંજમા. તે બે કાનમાં રાખે. જો ગુમાવેતો
આલોચણ આવે.

ने माटे अचित्त पाणी चुनो नाखेलुं जाची रा
खीने पठी खमा० दइ इरियावही पम्किर्मीने
खमा० इगा० स्थडिल पडिलेहुं ? इहं कही
चोवीश मांडला करे ते आ प्रमाणे—

आ मांमला वडी नीति लघु नीति विगेरे प
रठववा योग्य जग्या प्रतिलेखण निमित्ते कर
वाना ठे तेमां प्रथम संधारापासेनी जग्याए ठ
मांडला करवा—

- १ आघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे
- २ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे,
- ३ आघामे मजे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
- ४ आघाडे मजे पासवणे अणहियासे.
- ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे,
- ६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे,
- १ आघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे,
- २ आघामे आसन्ने पासवणे अहियासे,
- ३ आघाडे मजे उच्चारे पासवणे अहियासे,
- ४ आघामे मजे पासवणे अहियासे,
- ५ आघामे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे
- ६ आघामे दूरे पासवणे अहियासे,

- १ अघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे आणाघाडे,
- २ आघामे आसन्ने पासवणे आणाघामे,
- ३ आघाडे मज्जे उच्चारे पासवणे आणाघामे,
- ४ आघाडे मज्जे पासवणे आणाघामे,
- ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे आणाघामे,
- ६ आगामे दूरे पासवणे आणाघामे,

बीजा ठ उपाश्रयना बारणानी मांहेनी तर फना मांमला उपर प्रमाणेज कहेवा.

त्रीजा ठ मांमला उपाश्रयना बारणा बहार नजीक रहीने करवाना तथा चोथा ठ मांमला उपाश्रयथी सो हाथने आशरे दूर रहीने करवाना तेमां पण त्रीजा ठ मांमला प्रमाणे अणाघामे शब्द कहेवो बाकीना शब्दो उपरना त्रण मांडला प्रमाणे

ए प्रमाणे २४ मांमला कस्या पढी इरियाव ही पम्किमीने चैत्यवंदन पूर्वक प्रतिक्रमण पूर्ववत् करे. इति श्रीतपगढ प्रतिक्रमणविधि॥

॥ अथखरतरगञ्जप्रति०

॥ अथ जयतिहुअण विख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धम्मं
तरि, जय तिहुअण कद्धाणकोस डुरिअकरिके
सरि ॥ तिहुअण जण अविदंघियाण चुवणत्त
य सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेसपास थंजणय
पुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत व्हंति झत्तिवर पु
त्त कलत्तहि, धम्म सुवन्न हिरम्म पुम्म जणचुंजहि
रज्जहि ॥ पिक्कहि मुक्क असंखसुक्क तुह पासप
साइण, इयतिहुअण वरकप्परुरक्क सुरकहि कुण
महजिण ॥ २ ॥ जरजजार परिजुम्म कणुणहु
ठ सुकुठिण, चरकुरकीणखणणखुडुनरसद्धिअ
सूदिण ॥ तुह जिण सरणरसायणेण वहु हुंतिपु
णस्सव, जय धम्मंतरिपास महवि तुहुं रोगहरो
जव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिद्धिउ अपय
त्तिण, चुवणञ्चुअ अठविह सिद्धि सिद्धइ तुह
नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउंवि जण होइ
पवित्तउ, तं तिहुअण कद्धाणकोस तुह पास
निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुह पवत्तइ मंत तंत जंताइं वि
सुत्तइ, चरथिरगरल्ल गहुग्गखग्ग रिउवग्गवि

गंजइ, डुब्बियसत्त अणत्त घत्त नित्तारइ दय
 करि, डुरिअइं हरत्त सुपासदेव डुरिअकरिके
 सरि ॥५॥ तुह आणाथंजेइ जीमदप्पु ऋर सुरव
 र, रक्कस जक्क फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥
 जलथलचारिउदखुद पसुजोइणि जोइअ, इय
 तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ
 ॥ ६ ॥ पत्तिअ अत्त अणत्तहिन्नत्तिअरनिअर,
 रोमं चंचिअचारुकाय किस्सरनरसुरवर ॥ जसु
 सेवहि कमकमलजुअल परकालिअकलिमलु,
 सो जुवणत्तयसामि पास महमदत्त रिजबलु ॥७॥
 जय जोइअ मणकमलजसल जय पंजरकुंजर,
 तिहुअणजणआणंदचंदजुवणत्तयदिणयर ॥ ज
 य मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंज
 णयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु
 विदवसुअवसु सुसु वप्पिउ ठप्पसहि, मुरकधम्म
 कामत्तकाम नर नियनिय सत्त हि ॥ जं जायइ
 बहु दरिसणत्त बहु नाम पसिअत्त, सो जोइ अ
 मण कमलजसलसुह पास पवअत्त ॥ ९ ॥ जय
 विअल रणऊणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर
 लिअ नयणविससुसुगगिरगिरकरुणय ॥ तइं

सहसत्तिसरंति हुंतिनरनासिञ्च गुरुदर, महवि
 ज्जविसज्जसइपास जय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं
 पासविविञ्चसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाह
 पवूढरूढ उहदाहसुपुलइय ॥ मल्लहिमल्लसज्ज
 पुल्लअप्पाणं सुरनर, इयतिहुअण आणंदचंदज
 य पास जिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंट
 टंकारव पिद्धिञ्च, वल्लरमल्ल महल्लज्जत्ति सुरवर
 गंजुद्धिञ्च ॥ हल्लुप्फलिञ्च पवत्तयंति जवणेहि
 महूसव, इय तिहुअण आणंदचंद जयपाससुहु
 ज्जव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहु
 रिञ्च तमपहयर, दंसिञ्च सयलपयल्लसल्लविन्नरि
 अ पहाजर ॥ कलिकल्लुसिञ्च जण घूअलोयलो
 यणहअगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह जुव
 णत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससि
 त्त माणव मइ मेइणि, अवरारवरसुहुमल्लबोह कं
 दलदल रेइणि ॥ जायइ फलजरजरिय हरिय उ
 हदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि
 पास मइ मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणव
 ल्लिउल्लूरियउहवणुं, दाविञ्चसग्गपवग्गमग्ग उ
 ग्गइग्गमवारणुं ॥ जयजंतुहजणएणतुल्लजंजणि

यहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जं
 तुपिआमहु ॥ १५ ॥ जुवणारणनिवासदरिअ
 परदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुदा
 सुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसेंठुल
 चिठहिं, इय तिहुअण वणसींह पास पावाइ प
 णासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण करं
 जिअनहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निद्ध
 प्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग
 अगंजिअ, जय पच्चकजिणेस पास थंजणयपुर
 ठिअ ॥ १७ ॥ महमाणुतरलपमाणेय वायावि
 विसंठुल, नियतणुरवि अविणयसहाव आल
 सविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पमाणदेव कारुण
 पवत्तज, इयमहमाअवहीरपासपालहिविलवं
 तज ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिणयकलुणकिंकिंवनजं
 पिज, किं वनचिठिउकिठदेवदीणय मविलंबिज
 ॥ कासुनकियनिप्पल्लल्लुअहेहिंइहत्तइं, तह
 विनपत्तजताण किंपि पइं पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तु
 हुं सामिहुतुहुंमायवप्पतुहुंमित्तपियंकरु, तुहुं ग
 इतुहुं मइतुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु ॥ इहं इ
 हजरजारिअवराज राजलनिअग्गज, लीणज तुह

कमकमल सरणजिणपालहि चंगु ॥ २० ॥ प
 इंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि
 विमइं मंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि
 वि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवल्लिअ भूअल,
 मइं अवहीरहि केणपाससरणागयवडल ॥ २१ ॥
 पञ्चुवयारनिरीहनाहनिप्पसपयोअण, तुहुं जिण
 पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम
 चित्तवित्तिनयनिंदिअसममण, माअवहीरिअजु
 ग्गउंविमइं पासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउं बहुविहइ
 हतत्तगत्तुहुं इहनासणपरु, हउं सुयणहकरुणि
 क्कण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउं जिणपासअ
 सामिसादुतुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि
 मइं ऊखंतइय पासनसोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग
 विजागनाहनहुजोअणतुहसमजवणुवयारसहा
 वजाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघण
 नएइ जुविदाहुसमंतउ, इय इहबंधवपासनाह
 मइं पाल्लथुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुए
 विअससविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउ
 वयारसमुज्जय ॥ दीणहदीणनिदीणजेणतुहनाह
 णचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चं

गउ ॥२५॥ अहअस्सविजुग्गयविसेसकिविमस्स
 हि दीणह, जं पास विउवयारुकरइ तुहनाहसम
 ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कद्धाणुजेण जिण तुम्ह प
 सीयह, किं अस्सुण तंचेव देव मामइअवहीरह
 ॥ २६ ॥ तुह पब्बण नहु होइ विदल जिणजाण
 उ किं पुण, हउं डुक्किउ निरुसत्तचत्तडुक्कउ उस्सु
 यमण ॥ तं मस्सउ निमिसेण एण एउविज्जाइ ल
 अइ, सच्चं जं जुक्खियवसेण किं उंवरु पच्चइ ॥
 ॥ २७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप
 यासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमाणुंवहुजंपि
 उ ॥ अस्सु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिस्सदयास
 उ, जइ अवगिस्ससि तुंहिजअदहकिंहोइसदया
 सउ ॥ २८॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवे
 लविउ, तउजाणुंजिणपासतुह्मदउंअंगीकरिअ
 उ ॥ इयमदइच्चिअ जं न होइ सातुहउहावण,
 रक्कंतह नियकित्तिणेयज्जुज्जइअवहीरण ॥ २९॥
 एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमद्दसउ, जं अण
 द्विय गुणगदण तुह्म मुणिजणअणिसिद्धउ ॥
 इय मइं पसियसुपासनादथंजणयपुरठिअ, इय
 मुणिवरसिरि अज्जयदेव विस्सवइ अणिदिअ ॥

॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंजनक तीर्थराज श्रीपार्श्व
नाथस्तवनम् ॥

॥ पीठें जय महायस कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाजा
ग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समञ्च परम
ह जाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय ड
हत्त सत्ताण ताणय, थंजणयठिय पासजिण ॥
जवियह जीम जवुहु, जव अवणंता णंत गुण
तुळ तिसंऊ नमोहु ॥ १ ॥ इति ॥

अथ सदाकालका अवश्य कर्तव्य सामायक

पडिक्रमणा शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥

॥ प्रणम्य श्री जिनाधीशं सद्गुरुं च विशे-
षत श्राद्धाहोरात्रकृत्यानि लिख्यन्ते लोक
त्राषया ॥ १ ॥

॥ श्रावक दोय घडी रात्र रह्या पोशह शा
लाये (अथवा) गुरुकने अथवा घरने एक प्र
देशे (आवी) प्रथम दिवस संध्याये पन्दि
ह्या वस्त्र पहिरी (जो) गुरुनो जोग न हुवे (तो)
आप प्रमार्जित थानकै खमासमाणपूर्वक तीन

नवकार गुणी थापनाजी थापै (पठै) खमासमण
 देई कहे इच्छाकारेण संदिस्सह जगवनसामाय
 कमुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पण्डिलेह) पठे
 इत्थं कही, दूजीखमासमण देई मुहपत्ती पडिले
 है उजो होय खमा० कहै ॥ इच्छा० सं ॥ ज०
 सामायक संदिस्साजं (गुरु कहै संदिस्सावैह)
 पठै इत्थं कही, वलेख० देने कहें इच्छाका० सं
 ज० ॥ सामायिक ठाजं (गुरु कहै ठाएह) इत्थं
 कही खमासमण देई अर्धवनतकाय उजो रही
 तीन नवकार गुणी कहै इच्छाकार जगवन पसा
 व करी सामायक दंड उच्चरावोजी (गुरु कहै
 उचरावे मो) पठै करेमि जंतेसामाश्यं (इत्यादि)
 सामायक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञाषण करतो
 थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छा०
 सं० ज० इरियावहियं पडिक्कमामि (गुरु कहै
 पण्डिक्कम है) पठै इत्थं कही ॥ इच्छामि पडिक्क
 मिजं इरियावहियाए (इत्यादि पाठ कहे) इ
 रियावही पडिक्कमि ॥ एक लोगस्सनो काउसग्ग
 करी एमो अरिहताणं कही काउसग्ग पारीमुखे
 प्रगट लोगस्स कही खमा० देई ॥ इच्छा० सं०

ॐ वेसणो संदिस्साजं (गुरु कहै संदिस्सावेह)
 पवै इहं कही खमा० देई इह्मा० सं० ॐ वे
 सणोठाजं (गुरु कहै ठाए है) पवै इहं कही
 खमासमण देई ॥ इह्मा० सं० ॐ सिझाय सं
 दिस्साजं (गुरु कहे संदिस्सावेह) पवै इहं
 कही ॥ पांगरणोपनिग्धाजं (गुरु कहै पडिग्धा
 एह) पवै ॥ इहं ॥ कही ॥ वस्त्र ग्रहण करै.
 इति प्रज्ञातसामायक ग्रहणविधि ॥

॥ अथ देवसी प्रतिक्रमण ॥

॥ प्रथम चैत्यवंदन ॥ जयतिहुणनी पांच
 गाथा पहलार्थी और दोय गाथा ठडानी कही
 जय महाशय १ कहीने सक्रस्तव आदि चारे
 थोऊ देववंदन करीनीचा वैसीने नमोठणं० कहे
 पवे वांदणापूर्वक श्री आचर्यमिश्र १ श्रीउपा
 ध्यायजी मिश्र २ श्री वर्तमानचट्टारक श्री पूज्य
 जीनो नाम लेइ वांदीये ३ सर्व साधु साध्वी
 वांडं ॥ पवे सबसवि राईय देवशिय० करेमि
 जंते० इहामि ठामि० तस्सुतरी० अन्नबू०
 आठ नवकारनो काउसग्गकरे मुंहडे लोगस्स
 कहे पवे तीजे आवश्य करी मुहपत्ती पन्निळे

हवी ॥ दोय वांदणा देवे देवसियं आलोएमि०
 पढे ठाणेकमणे० पढे चौपुरा दिवसना लघु
 अतिचार ॥ अठार पापस्थानक आलोई सब
 सविदेवसिय० पढे तीन नवकार तीन करेमि०
 पढे वंदेतूसूत्र कहे पढे वांदणा दोय देवे ॥ पढे
 अष्टुठिजमि कही फेर ९ वांदणां देई ॥ आय
 रिज जवझाए० करेमि० तस्सुतरी० अन्नबू०
 दोय लोगस्सनो काजसग करे मुंहमे लोगस्स
 कहे ॥ वंदण० अन्नबू० पढे एक लोगस्सनो काज
 सग ॥ मुंहडे पुष्करवरदी बढे० वंदण० अन्न०
 एक लोगस्सनो काजसग मुंहडे सिद्धाणं बुद्ध
 णं० पढे सुहदेवीयाए करेमि काजसग ॥ अन्न० १
 नवकारनो काजसग करे ॥ सुवर्णसाक्षिनीदे
 यात्० एक गाथा कहे पढे क्षेत्रदेवीयाए करेमि
 काजसग अन्न० १ नवकारनो काजसग करे
 पढे यासांपित्रगतासंति गाथा १ कहे १ नव
 कारगुणी बढे आवश्य करी मुहपत्ती पडिलेहे
 दोय वार वांदणा देवे ॥ इत्थामो अणुसठियं
 नमोखमासमणाणं ॥ नमोस्तुवर्धमानाय० तीन
 गाथा कहे ॥ नमोऽन्नं कही नमोतवन कहे,

पठे श्री आचार्यजी मिश्र १ श्रीउपाध्यायमिश्र
 ९ सर्वसाधु साध्वी वांछं अह्वा इजे सु० कह
 ना फेर खमासमाण देइ ॥ पठे देवसीप्रायश्चित्त
 विसोधवानिमित्तं करेमि काउसगं अन्न० ४ लो
 गस्सनो काउस्सग करे पठेमुंहमे लोगस्स कहे
 पठे ऋषोपज्व उद्धाहनिमित्तं करेमि काउसगं
 अन्न० ४ लोगस्सनो काउस्सग करे मुंहडे लो
 गस्स कहे ॥ पठे सिद्धायं संदिस्साएमि सिद्धाय
 करेमि ॥ पठे श्रीसेट्ठी कहे ॥ पठे नमोबुणं० कही
 गोटो तवन कहे पठे जयवीराय कहे पठे सिरथं
 ज्ञणछियपाससामिणो० कहै पठे श्रीथंजना पा
 र्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्स
 ग वंदण० अन्न० ४ लोगस्सनो काउसग
 करे पठे श्रीखरतरगहृणगारहारजंयमयुगप्र
 धानजट्टारक दादाजी श्रीजिन दत्तसूरिजी महा
 राज चारित्र चूडामणी आराधवानिमित्तं करेमि
 काउसगं अन्न० १ लोगस्सनो काउसग करे ॥
 इणीहीतरे दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिनो १ लो
 गस्सनो काउसग पारी एक नवकार गुणी चै
 त्यवंदन करे चउक्कसाय० कहै ॥ नमोबुणं जय

वीरायसूधी पठै लघु शांति कहै पठे सामायक पारै

॥ हवे राईप्रतिक्रमण विधि ॥

॥ एक खमासमण देई ॥ इच्छा० सं० ज० ॥ चै
त्यवंदन करुं (गुरुं कहै करेह) इच्छं ॥ कही जय
उसामी १ रिसहसेत्रुंज उजित पहुनेमि जिण
जयउ वीरसच्चरमंरुण नरुअबहिमुणिसुबयम
हुरिपास डहडुरियखंडण अवरविदेहिंतिबयर
चिहुं दिशिविदिशि जंकेवि तीआणागयसं पयं
वंडंजिणसवेवि कम्मजुमिहिं १ पढमसंघयण
उक्कोसउ सत्तरिस उजिणवराणविहरंत लज्जई
नवकोमिकेवल्लिण कोडिसहसनव साहू संपय सं
पइ जिणवरवीसमुणिडयको निवरनाण समणा
कोमिसहसडयथुणिजयणिच्च विहाण सत्ताण
वइ सहस्सा लस्का उपन्न अठकोडिउ चउसय
बयासिया तिल्लुके चेइये वंदे वंदेनवकोडिसयं
पणवीसं कोडि लस्क तेपन्ना अठावीस सहस्सा
चउसय अठासिया पन्निमा ॥ जं किचि इत्यादि
जयवीरायसूधी चैत्यवंदन करै ॥ पठै खमा०
देई ॥ इच्छाकरेण संदिस्सहै ज० कुसुमिण ड
स्समिणराई प्रायचित्त विसोदण्णं करेमि काउ

सग्नं (गुरु कहें करेह) अन्न० ॥च्यार०॥४॥
लोगस्सनो काउस्सग करी पारी प्रगट लो
गस्स कहै ॥ पम्किमणो ठाववानो अवसर
हूवां १ खमासमण देई ॥ (श्री आचार्यजीमिश्र)
कही वांदियेफेर खमासमण देई॥(श्रीउपाध्याय
जी मिश्र)पठै वांदणा दई(जंगमयुग प्रधानज
ट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम कही वांदिये ॥ बले
खमासमण देई साधूजी वांदीये ॥ इम च्यार
खमासमणें पम्किमण ठावी॥इडकारसमस्त श्रा
वको वाटूं(कही)गोमा लिये वेसी मस्तक नमावी
दोय हाथे मुहपती मुखे देई सबसविराईय (इ
त्यादि कहै) पिण इडकारेण संदिस्सह(इसो
न कहै) पठै सकस्तव कही ॥ ऊनो थई करे
मि० इडामि ठाउं काउस्सगं० (इत्यादि पाठ
कही) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० चारित्र शुद्ध नि
मित्तें १ लोगस्सनो काउसग्न करी (पारी)
दर्शन शुद्धि निमिते लोगस्स कही सबलोए अ
रिहंत चेइआणं ॥ करमि काउसग्नं इत्यादि
कही १ लोगस्सनो काउसग्न करी (पारी)
ज्ञानातिचारनिमित्ते पुक्खरवरदी वट्टे (कही)

सुयस्स जगवजं करेमि का० वंदणवतीयाए (इ
 त्यादि कही) काउस्सग्ग करे काउस्सग्गमाहे
 चौपुहरी रात्रि मांहे सातलाख इत्यादि आलोय
 णचिंतवे(अथवा) आठ नवकार चिंतवे (पढी)
 काउसग्ग पारी ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं कही संडा
 साप्रमार्जनपूर्वक वैसी मुहपत्ती पडिलेह
 पढेदो वांदणा देई अञ्जुठिउमि खामि
 वांदणा वेदीजै तेविधि देवसीनी परे जा
 णवुं पढे सव्वसवि० ॥ इत्ता० ज० ए पद क
 हवे करी आलोया अतीचारनो प्रायश्चित्त मांगे
 पढे इत्तं तस्समिहामि डुकमं ॥ पढे जीमणो
 गोडो उंचो करी तीन नवकार तीन करेमि०
 इहामि पम्भिमिउं जोमेराईयो इत्यादि कही
 वंदितूसूत्र तंनिंदे तंच गरिहामि सूधी कहै ॥
 पढे वांदणां देवै । पेढे अञ्जुठि० कही फर वां
 दणां वेदेवा पढे० आयरिउंउ वज्जाए० करेमिजं
 ते० इत्ता मिठामि काउसग्गं । तस्सुतरी० अन्न
 बु० ६ लोगस्सनो काउसग्ग अथवा चौवी न
 वकारनो काउसग्ग करै । पढे मुंहमै लोगस्स क
 है पढे मुहपत्ती पम्भिलहै वांदणां देवै सग

ला तीर्थानें याद करै पठै पञ्चस्काण करै पठै
 इच्छामो अणुसठिं (इसोपद कहै,) पठै नमोख
 मा समणाणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व
 सा धुज्यः पठै संसारदावा० (अथवा) परसमय
 तिमिरतरणं तीनगाथा कहै नमोबुणं० अरि
 हंतचे ईयाणं करेमिकाउसग्गं वंदण० अन्न
 हू० १ नवकारनो काउसग्गकरे पठै थूईरी १
 गाथा कहै पठै लोगस्स कही वंदण० अन्नबु
 १ नवकारनो काउसग्ग पठै थूईरीडुजी गाथा
 कहै पठै पुष्करवरदी वढे० वंदण० अन्नहू० १ न
 वकारनो काउसग्ग थुईरी तीजी गाथा कहै पठै
 सिचाणं बुद्धाणं कहै पठै १ नवकारनोकाउस
 ग्ग करी पठै थूईरी चौथी गाथा कहै पठै श्री
 आचार्यजी मिअ १ श्रीउपाध्यायजी मिश्र० स
 र्वसाधूवांडं ॥ इतिराई प्रतिक्रमण॥ पठै श्रीसीमं
 धर चैत्पवंदन करवो पठै सिद्धगिरीनौचैत्पवंद
 न करी सामायकपारवा ॥

॥ हवे पाखी पडिक्कमणो लि०॥ तिहां प्रथम वं
 दिउ सूत्र पर्यंत देवसी पम्किमी पठेइच्छाकारेण
 संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोईयं पडिकंतं

परकी मुहपती पडिलेह पढे दो वांदणा देवै ॥
 पाखी पडिक्रमणो हुवे तो पाखीरो नाम लेवे
 अथवा चोमाशी वा संवत्सरी, होय तो सोही
 नाम लेवे परकोवइ कंतो कहणो ॥ पढे वांदणा
 दिया पढे पुन्यवंतो ठीक जयणा करज्यो मधुर
 श्वरे पडिक्रमज्यो ॥ खासे सुविवरा करी खासज्यो
 मांमल मांहे सावचेतसावधान रहिज्यो देवसीरे
 (थानके) पाखी चोमासी ढमढरी जणज्यो ॥
 पढे इडाकारेण संदिस्सह जगवन संबुद्धाखाम
 णेणं ॥ अञ्जुठिउंमि अञ्जितर पखीयं खामेमि
 इडं खामेमि ॥ पखियं पन्नरसदिवसाणं पनरस
 राईणं (चोमासी) मांहे चउन्हं मासाणं अठन्हं
 पखाणं एकसोवीसरायं दियाणं (संवत्सरी) पणि
 क्रमणो हुवे तो ड्वाल्सन्नमासाणं चोवीसन्ने
 पषाणं तीनसे साठ रायं दियाणं जंकिंचिपतियं
 सर्वकहणो पढे इडाकारेण संदिस्सह जगवन
 पखियं (३) आलोउं जोमे पखिउं अथारोकउं०
 सर्वकहणो पढे नाणंमिदंसणंमिअ० वृ५ अ
 तिचार आलोयणा कहणा सब सवि पखिय ३
 सर्व कहणो पढे वांदणा वे देवे पढे इडाकारेण

संदिस्सह जगवन् देवसिय आलोइयं पम्किंतं
 पत्तेय खामणेणं अञ्जुठिंउमि अञ्जितरपखियं
 लारेकह्यो जिण रीतें सगलोकहणो पढे वांदणा
 देवे पढे (पाखी) सूत्र कहे श्रावक श्राविका वंदेत्
 कहे पम्किमे देवसियं के ठिकाणे पखीयं ३
 इसो कहणो तीन नवकार तीन करेमि जंते
 कहीने वंदेतु कहे मूलगुण उत्तरगुण अतीचार
 विशुद्धनिमित्तं करेमि काउसगं इहामि ठा
 मि काउसगं जोम० पढे तस्सुतरी० अ
 न्न० पढे पाखी पडिक्कमणे १२ चोमासे २०
 संवत्सरी ४० लोगस्सनो काउसग करे पढे
 प्रगट लोगस्स कहे पढे मुहपत्ती पम्खेह दोय
 वांदणा देवे पढे इहकारेण ङंदिस्सह जगवन्
 समाप्त खामणेणं अञ्जुठिंउमि अञ्जितर पखीयं
 ३ लारे कह्यो जिणतरे कहे पढे इहामि० ज० खाम
 णाखामुं पुन्यवंतो एकखमासमण देईतीन तीन
 नवकार गुणी चार वार पाखीसमाप्त खामणाषा
 मो पढे खामणा खामी पढे पुन्यवंतोपाखीने लेषे
 एक उपवास अथवा दोय आंबिल तीन नीवी
 (अथवा) चार एकासणा (अथवा) दोय हजा

र सिद्धाय करी पाखीनी पेठ पूरज्यो पाषीने
 स्थानके देवसी जणज्यो इम डणाडण चोमासि
 (अने) त्रिगुण संवत्सरीये सर्व कहवो पठे दे
 वसी प्रतिक्रमण ठोड्यो ज्यांथी वांदणा अन्न
 छिज्मि फेर वांदणा इत्यादि सर्व करणो देवसी
 कीरीते समऊणो ॥ इति खरतरगह्वसामायिक
 (तथा) पंच प्रतीक्रमण वीधी समाप्त

॥ अथ आंचलगह्व प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ प्रथम नवकार कही एक ख० देई इहकार
 सुहराई सुह देवसी कही गुरुनेसुखसाता
 पूढी इरिया वही० तस्सोत्तरी० अन्नह्व० कही
 एक लोगस्सनो उसगग करी(प्रगट)लोगस्सक
 है (पढी) इहका० सं० जग० गमणागमण
 आलोउं तेकहै वै

॥ गमणा गमण ॥

मारगनेविषे जातां आव तां पृथ्वी काय अप
 काय तेजकाय वाजकाय वनस्पतिकाय, त्रसकाय,
 नील, फूलमाटी, पाणी, कण, कपाशिया, स्त्रीआदी
 तणो संघट्ट हुवो होय ते सविहुमन वचन
 कायायें करी तस्स मिहामिड्कमं ॥

॥ ઇઢાકારેણ સદિસસહ જગવન્ સામાયિકઠા
વા ત્રણ નવકાર ગણુજી એમ કહી નીચા વૈસી
ત્રીન નવકાર કહૈ પઠી ઝજા થઈ ઇઢા ૦ જ ૦
જીવરાશી સ્વમાઝં પઠે સાત લાસ્ર કહી અઢાર
પાપ સ્થાનક આલોવૈ પઠી ઇઢા ૦ જ ૦ ગુરુ
સ્થાપનાક રંજી એમ કહી પચેંદિય કહૈ ઇતિ (પ્ર
થમ)સ્વમાસમણ ॥ સ્વમાસમણ પૂર્વક નીચે વૈસી
ને ઇઢા ૦ જ ૦ ડવ્ય, ક્ષેત્ર કાલ જાવ ધારંજી ૧

॥ અથ ડવ્ય ક્ષેત્ર કાલ જાવ ॥

॥ ડવ્ય થકી લૂગમાં,લત્તા, ઘરેણાં,ગાંઠાં પા
થરણુંનોકરવાલી,ધાસ્ર્યા પ્રમાણે મોકલાં ઠે. ક્ષેત્ર
થકી ડપાશરાના બારણાની માંહેલી કોરેં કાલ
થકી સમાયિક,નિપજે,તિહાંસુધી,જાવથકી યથા
શક્તિને રાગ દ્રેષેં રહિત વ્રતીસંઘાતેં બોલવું
ગુર્વા દિક સંઘાતેં બોલવાનો આગાર ઠે. અવ્રતી
સંઘાતેં બોલવાનું પચ્ચરકાણ ઠે. એ રીતેં ઠે કોટિયેં
કરી સામાયિક કરું. સામાયિક વ્રત ડચ્ચાર કરવા
(એક)નવકારનો કાઝસગ્ગકરંજી. એમ કહી ઝજા
થઈનેએક નવકાર ગણીયેં. ॥ પઠી ઇઢાકારેણ
સંદિસહ જગવન્!સામા યિક વ્રત ડચ્ચાર કરાવો

जी. पढी गुरु (तथा) वडेरो करेमि जंते कहै ॥
 पढी इहामि खमासमण पूर्वक इहामाकारेण
 संदिसह जगवन् बीजा आवश्यक जणी इरि
 यावहियं पम्किमुं जी. एम कही इरियावहि प
 डिकमी, पढी तसजत्तरी०कहेवी. पढी एक लो
 गस्सनो काजस्सग्ग करी, लोगस्स प्रगट कहे
 लोगस्स कहेतां दर्शनाचार निर्मल आय ए बी
 जुं आवश्यक अने त्रीजुं खमसमण थयुं, पढी इ
 हामि खमासमण पूर्वक हेठा बेसीने इहामाकारेण
 संदिस्सह जगवन् ठेमानुं पम्खिहण करुं जी
 एम कही उत्तरासंगना ठेमानुं पडिखेहण करवुं.
 पढीइहामि खमासमण पूर्वक इहामाकारेण संदि
 सह जगवन् त्रीजा आवश्यक जणी आवश्यक
 वांदणां करुं जी. पढे वांदणां देवै एम गुरु समी
 पे वांदणां बे वार दीजे, त्यां बीजी वारने वांदणे
 आवस्सिआए, ए पद न कहेवुं; अने राइपडि
 कमणे; राइउ वइकंतो कहेवुं (परकीयें) परिकउं
 वइकंतो कहेवुं (चउमासियें) चउमासिउ वइकं
 तोकहेवुं. (संवत्सरियें) संवत्तरोवइकंतो कहेवुं
 ए वांदणां देतां ज्ञानादि त्रण निर्मल आय. ए

त्रीजुं आवश्यक अनेचोथुं खमासणथयुं. इहा
पोंताने सुखें, संध्या होय तो चउविहार अने
सवार होय तो नवकारसी प्रमुखनुं पञ्चरकाण
मनने जावें धारे, तेथी तपाचार निर्मल थाय ॥
पढी एक जण उजोथइने इहामि खमास
मण पूर्वक इहामा० सं० जगवन् ! चोथा
आवश्यक जणी लघु अतिचार आलोउं जी. ॥

॥ अथ लघु अतिचार ॥

॥ प्रथम नवकार कहीने, इहं अरिहंतदेव,
सुसाधु गुरु, जिनप्रणीतधर्म, जावतो समकित
प्रतिपाळुं; अव्यतो लौकिक लोकोत्तर देवगत,
गुरुगत, पर्वगत मिथ्यात्वविषे जयणा करुं. ए
श्रीसमकित तणा पांच अतिचार शोधुं. शंका,
कंखा, वितिगिह्वा, परपाखंमीपरसंसा, परपाखं
डी संथुउं. ए पांच अतिचार मांहे जे कोई
अतिचार हुउं होय, ते सवि हुं, मने, वचनें
कायायै करी मिहामि डक्कं. ॥

१ ए बार व्रतमांहे पहेळुं प्राणातिपात विर
मण व्रतस्थूल बेंडियादिक व्रस जीव निरपराध
उपेतकरण संकटपी करी हणवा नियम, आरं

त्रे जयणा, ए पहेला प्राणातिपातविरमणव्रत
तणा पांच अतिचार शोधुं.॥ बंधे, वहे, ठविहेए,
अइजारे, उत्तपाणवुहे ए ॥ ए पांच अतिचा
रमाहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सविहुं
मन, वचने, कायायें करी मिळामि डक्कडं. ॥ १ ॥

२ बीजुं स्थूलमृषावादविरमणव्रत पंचवि
ध, कन्नालीए, गोवालीए, जूमालीए, नासाव
हारे, कूडसरिकजे. ए पांच मोटकां कूमां आप
णने काजें, स्वजनने काजें धर्मने काजें मूकी, प
रकाजें कूमुं बोदवा नियम, सूद्धम अलिक तणी
जयणा करुं ॥ ए बीजा स्थूलमृषावादविरमण
व्रततणा पांच अतिचार शोधुं. सहस्साज्रस्का
णे, रहस्साज्रस्काणे, सदारामंतत्रेए, मोसोवए
से, कूमलेहकरणे ॥ ए पांच अतिचारमाहे जे
कोइ अतिचार हुउं होय, ते सविहु मने,
वचने, कायायें करी मिळामि डक्कडं. ॥ २ ॥

३ त्रीजुं स्थूल अदत्तादानविरमणव्रत. स
चित्त, अचित्त, राजनिग्रह कारीजं. पियारुं अ
णदीधुं लेवा नियम. सूद्धम तण, इंधण, पथि
पतित ववहार नियोगे, दाणचोरी जयणा ॥ ए

त्रीजा स्थूलअदत्तादान व्रत तणा पांच अति
चार शोधुं. तेनाहमे, तकरप्पजगे, विरुद्धरज्जाइ
कमे, कूरु तुल्लकूडमाणे, तप्पमिरूअगववहारे ॥
ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुजं
होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मि
हामि डक्कं ॥ ३ ॥

४ चोथुं शीलव्रत. यथाशक्तं स्वदारासंतोष,
परदाराविवर्जनारूप. ए चोथा शीलव्रत तणा
पांच अतिचार शोधुं ॥ इत्तरपरिग्गहियागम
णे, अपरपरिग्गहियागमणे, अनंगक्रीमा, पर
विवाहकरणे, कामजोगतिव्याप्तिदासे ॥ ए पांच
अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुजं होय, ते
सवि हुं, मने वचने, कायायें करी मिहामि डक्कंडं.

५ पांचमुं परिग्रहपरिमाणव्रत नवविध. खि
त्त, घर, दह, वाडिय, कुविय, धण, धन्न, हिर
ण, सुवण, अइपरिमाण डुप्पय, चउप्पयमिय.
नवविह परिग्गह वयंतो ॥ ए पांचमा परिग्रह
परिमाणव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. खित्त
वहुप्पमाणाइकमे, हिरणसुवणपमाणाइकमे,
धणधन्नप्पमाणाइकमे, डुप्पय चउप्पयप्पमा

णाइकमे, कुवियप्पमाणाइकमे ॥ ए पांच अति
चारमांहेजे कोइ अतिहार हुज होय, ते सवि
हुं मने, वचने कायायें करी मिळामि डुकडं ॥

६ बडुं दिशिब्रत त्रिविधें जाणवुं. उट्टुदिसि
वए, अहोदिसिवए, तिरियदिसिवए ॥ ए बछा
दिशिब्रततणा पांच अतिचार शोधुं ॥ उट्टुदि
सिप्पमाणाइकमे, अहोदिसिप्पमाणाइकमे, ति
रियदिसिप्पमाणाइकमे, खित्तबुद्धि, सयंतरश्श ॥
ए पांचअति चार मांहे जे कोइ अतिचार हु
वो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी
मिळामि डुकडं ॥ ६ ॥

७ सातमुं जोगोपजोगव्रत द्विविध. जोजन
तः कर्मतश्च. तत्र जोजनतः “सच्चित्तद्व विग
इ, उवाण तंबोद चीर कुसुमेसु ॥ वाहण सय
ण विदेवण, बंज दिसिन्हाण जत्तेसु ॥ १ ॥ ए
सातमा जोगोपजोग व्रत तणा पांच अतिचार
शोधुं ॥ सचित्त आहारे, सचित्त पडिबद्धआ
हारे, अप्पोसहि जस्केणया डप्पोसहि जस्केण
या तुब्बो सहिजस्केणया ॥ ए पांच अतिचार मा

हैं जे कोइ अतिचार हुउ होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मित्रामि डक्कडं. ॥ ७ ॥

॥ कर्मतो पन्नरे कर्मादान. इंगालकम्मे, वण कम्मे, सामी कम्मे, जामी कम्मे, फोडीकम्मे, दंत वाणिजे, लस्क वाणिजे, रस वाणिजे, विस वाणिजे, केस वाणिजे, जंतपीलण, कम्मे निद्धंण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाय सो सणया, असई पोसणया. ए पन्नर कर्मादांन स्थूल नियम, सूक्ष्म तणी जयणा ॥ ए पन्नर कर्मादांनमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, तेस वि हुं मने, वचने, कायायें करी मित्रामि डक्कडं.

८ आठमुं अनर्थदंरुविरमणव्रत, चतुर्विध. अवज्जाणायरिए, प्पमायायरिए, हिंसप्पणयाणे, पावकम्मोवएसे ॥ ए आठमा अनर्थ दंरुविरमण व्रततणा पांच अतिचार शोधुं ॥ कंदप्पे कुकुई ए, मुहरिए, संजुत्ताअहिगरणे, जवज्जोगपरिजोग, अइरेगे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मित्रामि डक्कडं ॥ ८ ॥

ए नवमुं सामायिकव्रत. सामइय नाम साव

द्यजोगपरिवज्जाणं, निरवज्जजोग आसेवणं चा॥ ए
नवमा सामायिकव्रततणा पांच अतिचार शोधुं
मण डुप्पणिहाणे, वयडुप्पणिहाणे कायडुप्पणि
हाणे, सामाइयस्स अकरणया, सामाइयस्स अ
णवुठ्ठिअस्स करणया ॥ ए पांच अतिचारमांहे
जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं
मने, वचने, कायायें करी मिळामि डुक्कमं. ॥ ९ ॥

१० दशमुं देशावगाशिकव्रत ॥ दिसिवयग-
हियस्स, दिसापणिमाणस्स पइदिणं परिमाणक-
रणं ॥ ए दशमा देशावकाशिकव्रत तणा पांच
अतिचार शोधुं ॥ आणवणप्पजगे पेसवणप्प-
जगे सदाणुवाइ, रूवाणुवाइ बहियापुग्गलपर-
स्केवे ॥ ए पांच अतिचार मांहे जे कोइ अ-
तिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, का-
यायें करी मिळामि डुक्कमं. ॥ १० ॥

११ इग्यारमुं पौषधव्रत, चिहुं जेदे जाणवुं
आहारपोसहे, सरीर सकरपोसहे, बंजचेरपो
सहे, अबार पोसहे ॥ ए इग्यारमापौषध व्रत
तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ अप्पमिलेहिय
डुप्पमिलेहियसिज्जासंथारे, अप्पमज्जिय डुप्पम

ज्जिय सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय डप्पमिलेहि
यउच्चारपासवणञ्जुमि, अप्पमज्जिअ डप्पमज्जि
अउच्चारपावसण ञ्जूमि, पोसहोववासस्स सम्मं
अस्सुपावणया ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे
कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने,
वचने, कायायें करी मिळामि डक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारमुं अतिथिसंविजागव्रत, अतिथि
संविजागोनाम. नाया गयाणं, कप्पणिज्जाणं,
अन्न पाणाइणं, दब्बाणं, देस, काल, सद्दास
क्कार कम्मजोए पराइ ञ्जत्तीए आयाणुग्गह बु
द्धिए संजयाणं दाणं ॥ ए बारमा अतिथि संवि
जाग व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ स
चित्त निरकेवणया, सचित्त पिहणया, काला
इक्कमदाणे परोवएसे, मळरया ॥ ए पांचअ
तिजारमांहे जे कोइ अतिजार हुवो होय तेसवि
हुं मने वचने कायायें करी मिळामि डक्कडं १२

॥ संदेषणा तणा पांच अतिचार शोधुं. इ
ह लोगासंसप्पज्जे, परलोगासंसप्पज्जे, जि
विआसंसप्पज्जे, मरणासंसप्पज्जे कामजोगा

संसप्पज्जे ॥ ए पांच अतिचारमाहे जे को
इ अतिचार हुवो होय ते सवि हुं मने, वचने,
कायायें करी मिळामि डुकमं.

॥ एवंकारे श्री समकित मूल बार व्रतविषे
पंच्याशी अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार,
अनाचर, अतिक्रम, व्यतिक्रम, हुज होय त
था जाणते, अजाणते, सूक्ष्म, बादर, कानो, मा
त्रा, मिमी पद, अक्षर, उंगो, अधिको, हलवो,
जारी, आगल, पाठल, कह्यो कहेवाणो होय ते
सविहुं मने वचने, कायायें करी मिळामि डुकडं॥

॥ देसावगासिअं उवजोग परिजोग पच्च
स्कामि अन्नजणानोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरा
गारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ॥
इति लघु अतिचारःसंपूर्णम् ॥

॥ ए पडिक्रमणनामैं चोथुं आवश्यक, अने
पांचमुं खमासमाण थयुं. पढी इळामि खमास
माण पूर्वक हेठा बेसीने इळाकारे० संदिस्सह
जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ इहं ॥ जय जय महाप्रभु, देवाधिदेव, स

वैष्ण, श्रीवीतराग देव ॥ मुह दीतुं परमेसर, सुं
 दर सोम सहाव ॥ जूरि ज्वंतर संचिउं, नठो
 सो सवि पाव ॥ जे में पाप किया बालपणे, अ
 हवा अन्नाणे ॥ अणज्वंतर सो सोखंडज
 यो परमेसर तुह मुंह दिठं सिरि पास जिणेसर
 ॥ पास पसी पसाउ करी वीनतमी अवधार ॥
 संसारडो बीहामणो स्वामीआवा गमणनिवारा॥
 दडडाते सुलस्कणा जेजिनवर पूजंत॥ एके पुसे
 बाहिरा सो परघर काम करंत कवणेवामीवाविया
 कवणे गुंथ्यां फूल ॥ कवणे जिनवर चाढिया
 जाव सरीसां मुल ॥ वामी वेढो महोरीयो सोवन
 कुंपलीए ॥ पास जिणेसर पूजिये पंचेअंगु
 लीए ॥ दो धोला दो सामला दो रत्तोपल वन्न
 मरगय वन्ना मुन्नि जिण सोलस कंचनवन्न ॥
 नियनिय मान करावियां, जरहेस रनयणानंद ॥
 ते में जावें वंदिया, ए चोवीसे जिणंद ॥

॥ वहु ॥ कम्मजूमिहिं, कम्म जुमीहिं, पढम
 संघयणि, उक्कोसयसत्तरिसय, जिणवराण विह
 रंत लप्पइ, नवकोमीहिं केवलीए ॥ कोमीसहस्स
 नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि;

बिहुं कोडीहिं वरनाण, समणह कोमी सहस्स
 डअ, थुणिसुं निच्च विहाण ॥ जयउ सामीशरि
 सह सिरि सित्तुंजी उज्जंतपहु नेमिजिण; जयउ
 वीर सच्चउरिमंडण ॥ ञरुअब्बेहिं सुणिसुव्वय सु
 हरि पास डह डरिय खंण, अवरविदेहिं तिब्ब
 यरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि, तीअणागय
 संपइय, वंदूं जिण सव्वेवि ॥ सत्तावणइ सहस्सा,
 लस्का ठपन्न अठकोडीउ ॥ पंचसयं चउत्तीसा,
 तियलोए चेइए वंदे ॥ इति चैत्यवंदन ॥

इहां चार स्तवन अथवा अष्टोत्तरी कहेवी
 पढीउजा थइने उवसग्गहरं कहेवुं. पढी, वेसीनें
 जंकिंचि नाम तिब्बंसग्गे पायालि माणुसे लोए॥
 जाइं जिणविंवाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ पढी
 नमुब्बणं (नमो जिणाणं) सुधी कहेवुं,

(ए ठहुं खमासमण.) पढी इब्बामि खमासमण
 पूर्वक इब्बाकारेण संदिसह ञगवन् ! गुरुवंदना
 करुं जी. एम कही गुरुवंदना कहीयें. ॥ ॥

॥ अथ गुरुवंदना ॥

॥ अट्ठाज्जेइसु दीव समुद्देसु, पनरससु कम्म
 ञूमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण गुब्ब पडि

गगह धारा ॥ १ ॥ पंचमहद्वय धारा, अठार स
हस्स सीलंग धारा, अखयायारचरित्ता, ते सवे
सिरसा मणसा मन्त्रण वंदामि ॥ २ ॥ पुज्ज सि
रिअज्जरस्सिय, गुरुणो तप्पड्डिय पुज्जजयसिंहा
॥ सूरिसिरि धम्मघोसा, महिंद सिंहा तज्ज गुरु
णो ॥ ३ ॥ तप्पयसिरिसिंहपहा, तेसिं पइअ
जियसिंह वरगुरुणो ॥ देविंदसिंहगुरुणो तप्पय
सिरिधम्मपह सूरि ॥ ४ ॥ सिरिसिंहतिलसूरी,
तप्पइ सिरिमहिंदपह गुरुणो ॥ सिरिमेरुतुंग
गुरुणो, तप्पय जयकित्तिगुरुराज ॥ ५ ॥ सिरि
जयकेसरिसूरी, तप्पइ सिधंत सायरो सुगुरु ॥
सिरिजावसायर गुरु, तप्पय सूरि गुण निहाणो
॥ ६ ॥ सिरिधम्ममुत्तिसूरी, तप्पइ कद्धाण सा
यर मुणिंदो ॥ सिरि अमर सार गुरु, कद्धाण
कुणउ संघस्स ॥ ७ ॥ तप्पड्डि पुव्व पुव्वय जाणु
विज्जाय सायरं सूरि ॥ सिरिउदय सायर सूरि,
तप्पय गुणमणि रुहाणं ॥ ८ ॥ श्रीकीर्तिसागर
सूरि, श्री पुण्यसागरसूरि, श्रीराजेंद्रसागरसूरि
श्री मुक्तिसागर सूरियं वंदे, विहरमान श्री वि
वेकसागर सूरियं वंदे, अचल गच्छनायकं वंदे.

विधिपद्मगङ्गनायकं वंदे. पहेले पाटें सुधर्मास्वामी, बीजे पाटें जंबूस्वामी, त्रीजे पाटें प्रज्जवस्वामी, चोथे पाटें सिज्जंनवसूरि, पांचमे पाटें यशो ज्जसुरि, षठे पाटें संचूतिविजय सुरि, सातमे पाटे ज्जबाहु स्वामी, आठमे पाटें श्रुतिज्ज स्वामी, एवा पाटानु पाट ठेला श्री डुप्पसहना मा आचार्य आशे, तेने महारी एकशे ने आठ वार त्रिकाल वंदना होजो ॥ इति विधिपद्मगुरु वंदन ॥ ए सातमुं (खमासमण.)

पढी इज्जामि खमासमण पूर्वक इज्जाकारेण संदिसह जगवन् सञ्जाय कहुं, सञ्जाय सांजखुं जी. अहीं नवकार कहीने सञ्जाय कहेवी, ॥

॥ अथ सञ्जाय ॥

॥ अरिहंता मंगल मुज्ज, अरिहंता मुज्ज देवाव ॥ अरिहंता कित्तिं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिधाय मंगलं मुज्ज सिधायमुज्ज देवया ॥ सिधाय कित्तिं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मुज्ज आयरियामुज्ज देवया ॥ आयरिया कित्तिं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्जाया मंगलं

मुज्जा, उवज्जाया मुज्जा देवया ॥ उवज्जाया
 कित्तिं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥
 साहु मंगलं मुञ्ज, साहु मुञ्ज देवया ॥ साहु कि
 त्तिं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ ए पंचे
 मंगलं मुञ्ज, ए पंचे मुञ्ज देवया ॥ ए पंचे कि
 त्तिं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ६ ॥ एसो
 पंच एमुक्कारो, सब्ब पावप्पणासणो ॥ मंगलाणं
 च सब्बेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥ ७ ॥ इति स
 ज्ञाय ॥ ए आठमुं खमासमण ॥ ॥

पठीइत्तामि खमा० इत्ताकारेण संदिसह
 जगवन् पांचमा आवश्यक जणी दैवसिक प्रा
 यश्चित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सगं. अन्न०
 इत्यादिककहीने चंदेसुनिम्मत्तयरा सुधी
 चार लोगस्सनो काउस्सगग करवो. पठी
 नमो अरिहंताणं, कहीने काउसगग पारी
 पठी प्रगट लोगस्स कहीये. ए (नवमुं) ख
 मासमण. फरी इत्तामि खमासमण पूर्वक इत्ता
 कारेण संदिसह जगवन् अज्जिजव काउस्सगग
 ठाउं. (इत्तं) अज्जिजव अशेष डक्ककय
 कम्मकय निमित्तं करेमि काउस्सगगं अन्न०

इत्यादिक कहिने “ सिद्धा सिद्धिं ममदिसतुं ”
पर्यंत (पांच) लोगस्सनो काउस्सग्ग
करवों. पढी नमो अरिहंताणं ए पद कहिने
काउस्सग्ग पारवो, पढी प्रगट लोगस्स कहेवो.
ए (दशमुं) खमासमण (अने) पांचमुं आव
श्यक पूरुं थयुं, एणें करी पक्किमणामांजे अ
शुद्ध आचार रह्या ते आचार ए पांचे लोगस्स
ना कउस्सग्गथी शुद्ध थाय ठे. ॥

पढी खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह
जगवन् ! बद्धा आवश्यकजणीपच्चरकाण वां
दक्षां करुं जी. एम कहि बे वार वांदणं दीजे
पढीगुरु मुखें पच्चरकाण करवुं. ए अगीयारमुं
खमासमण अने ठहुं आवश्यक पूरुं थयु

पढी खमासमणपूर्वक हेठा बेशी ने इच्छा
कारेण संदिसह जगवन् ! सामायिकीपारवा
त्रण नवकार मनमां गणवा. पढी नमो अरिहं
ताणं ए एक पद प्रगट कहिने इच्छाकारेण सं
दिसह जगवन्(सामायिक पारवा गाथा जणुंजी

॥ अथ सामायिक पारवानी ॥

॥ जं जं मणेण बद्धं, जं जं वायाय जासियं

पावं ॥ काएण वि डुठकयं, मिळामि डुकमं त
 स्स ॥ १ ॥ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह रज्जा ज
 मंत ॥ ते में सव्व खमाविया, मुझवि तेह खमं
 त ॥ २ ॥ खमी खमावी मेंखमी, उट्ठिह जीव
 निकाय ॥ शुद्ध मनं आलोवतां, सुत्त मन वेरन
 थाय ॥ ३ ॥ दिवसें दिवसें लरकं, देइ सुव्वन्नस्स
 खंमियंएगो एगोपुत्तसामाइयकरेइन पुहुप्यएत
 स्स ॥ ४ ॥ कुणे पमाए बोलीजं, हुई विरुइबुद्धि ॥
 जिण सासण में बोलजं, मिळा मुक्कड सुद्धि ॥ ५ ॥
 ॥ सामायिक व्रत फासिअं, पात्तिअं, पूरिअं,
 तीरिअं, कित्तिअं, आराहिअं, विधे, लीधु, विधेकी,
 धुं, विधे पाट्युं, विधे करतां कीसी अविधि, अशा
 तना हुइ होय, ते सवि हूं मनं, चनवें कायायें
 करी मिळामि डुकडं ॥ १ ॥ पाटी, पोथी, कवली,
 उवणी, नोकरवली कागलें पग लगाड्यो, होय
 गुरुने आसने, बेसने, उपगरने पग लगाड्यो, होय
 ज्ञान डव्यतणी आशातना थइ होय. ते सवि
 हूं मनं, वचनें कायायें करी मिळामि डुकडं. अ
 ढी ढीपने विषे साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका,

जे कोइ प्रजु श्री वीतराग देवनी आझा पाळे.
 पलावे, जणे जणावे, अनुमोदे, तेहने महारी
 त्रीकाल वंदना होजो. सीमंधर प्रमुख वीश
 विहरमांन जिनने महारी त्रिकाल वंदना होजो,
 अतीत चोवीशी, अनागत चोवीशी, वर्तमान
 चोवीशीने महारी त्रिकाल वंदना होजो. रुष
 जानन, चंजानन, वर्द्धमान, वारीषेण, ऐ चार
 शाश्वता जिनने महारी त्रिकाल वंदना होजो,
 दश मनना, दश वचनना बार कायाना ए बत्री
 श दोषमांहेलो सामायिकव्रतमांहे जे कोइ
 दोष लाग्यो होय, ते सविहुं, मनैं, वचनैं कायायें
 करी मिळामि छकमं, साचानी सहहणा, जूठाना
 मिळामि छकडं. पढी त्रण नवकार मनमां गणी
 त्रण खमासमण देइजयणावर्पूक उठवुं ए
 (बारमुं) खमासमण ॥ इति देवसीप्रतिक्रमण

॥ अथ राइपडिक्रमणः ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण आपी इडाका
 र० कहीने इरियावही० पडिक्रमी पढी तस्स
 उत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउस्सग करी

प्रगट लोगस्स कही गमणागमण आलोववुं
 एटले मार्गनेविषे जातां आवतां० ॥ ए कही
 पढी सामायिक ठावा त्रण नवकार गुणीयें.
 पढी जीवराशि खमावी अठार पाप स्थानक आ
 लोइ पढी गुरुस्थापना निमित्त पंचिंदिय कही
 डव्य, क्षेत्र, काल, जाव धारवा. पढी एक नवकार
 गुणी सामायिक व्रत उच्चार करीयें. पढी फरी
 बीजा आवश्यक जणी इरियावही० ॥ तस्स
 उत्तरी० ॥ कही पढी एक लोगस्सनो काउस्स
 गग करी लोगस्स प्रगट कही पढी बीजा आव
 श्यक जणी इहं अज्जिजव अशेष डुरकरकय
 कम्मरकय निमित्त(पांच)लोगस्स नो काउस्सगग
 करवो. पढी लोगस्स एक प्रगट कही, पढी
 कुसुमिण डसुमिण उदामि निमित्तं करेमि का
 उस्सगगं. एम कही(४) लोगस्स नो काउस्सगग
 करवो. पढी एक लोगस्स प्रगट कही पढी उत्तरा
 संगनोठेहमो पडिलेही पढी चोथा आवश्यक जणी
 बेवार वांदणां देइने पढी एकजण उजोरही पां
 चमा आवश्यक जणी लघु अतिचार कहे. पढी
 चैत्यवंदन कही (चार) स्तवन कहेवां. पढी

जवस गगहरं० नमुत्तुणं० कही गुरु वंदन करी
सज्जाय कहीयें, पढी ठठा आवश्यक जणी वां
दणां वे वार देइने पञ्चरकाण करीये. पढी सा
मायिक पारवा त्रण नवकार गणीयें. पढी 'जंजं
मणेण वरुं' इत्यादिक गाथा कही प्रतिक्रमण
समाप्त करीयें ॥ इति विधिपद्ध प्रतिक्रमणः स०

॥ अथ लोकागच्छ प्रतिक्रमण विधिः ॥

सामायिक लेवानी विधिः

प्रथम पोंढाणानां सर्व वस्त्र पम्पलेहवां त
था यत्नायें आसनियुं पाथरवुं, ते पढी गुरुने
इत्तामि खमासमणो० ॥ इत्यादिक त्रण वां
दणां देवां, पढी श्रीमंधरजीनें त्रणवांदणदेई
पढी नीचे बेसीने नवकार गणवो, पढी पचें
दिअनो पाठ कहेवो. पढी इरियावहि० तस्स
उत्तरी० कही (एक) लोग्गस्स (अथवा) चार
नवकारनो काउस्सग्ग करवो, पढी नमो अ
रिहं ताणं कही काउस्सग्ग पारवो प्रगट लो
ग्गस्स कही गुरुनी पासे सामायिकनी आझा
मागवी. (कदापि) गुरु न होय तो सीमंधर
स्वामी पासेथी आझा मागीने करेमी जंते

नो पाठ कहेवो. पढी डावो ढींचण उंचो राखी
ने नमोबुणंकहेवुं. ॥ इति सामायिक विधि.

॥ अथ सामायिक पारवान विधिः ॥

प्रथम नककार गणी, इरियावहि० तस्स
उत्तरी०कही, एक लोगस्स (अथवा)
चार नवकारनो काउस्सग्ग करी नमो अरिहंता
णं पूर्वक काउस्सग्ग पारी प्रगट लोग्गस्स क
हीने मावो ढींचण उंचो करी नमोबुणंनो पाठ
कहेवो. पढी सामाइय वयजुत्तो कही, दश म
नना, दश वचनना, बार कायाना, इत्यादि पाठ
कहेवा ॥ इति सामायिक पारवाविधि॥

॥ अथ दैवसिक प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम गुरु पासे आझा मागीये बैये,
तेवी रीते आझा मागीने पढी नवकार ग
णी, लोगस्स कही, डावो ढींचण उंचो करी,
नमोबुणंनो पाठ कही बे खामणां देवां, तिहां
बीजे खामणे आवसिआए ए पाठ न कहेवो
पढी पम्किमण ठाववुं तेमां आवस्सइत्ताकारेण
ए पाठ जणवो. पढी उच्चा थइ(नवकार गणवो.)
पढी करेजीजंते कहीने इत्तामिठामि० पढी तस्स

उत्तरी० कही आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो.
पढी नमोअरि हंताणं कही काउस्सग्ग पारी
प्रगट लोगस्सकही वली बे खामणां देवां,
देइने पढी अतिचारनां बे स्थुल तेमां
एक तो श्री ज्ञानने विषे अने बीजो दर्शन (ए
टले)सम्यकत्व रत्नने विषे ऐ बे पाठ गुरु पासे
कहेवराववा,(अने गुरु न होय)तो पोते कहेवा,
ते पढी श्रावकना अतिचार कहेवा.

अथ अतीचार लिख्यते

श्री ज्ञानने विषे जे अतिचार लगा होय ते
आलोउं. जं वाइइं वच्या मेलिअं, हिणस्करं
अच्चस्करं पयहीणं जोगहीणं घोसहीणं, सुहु
दिन्नं उहु पडिच्चियं अकाले, कउं सञ्जाउं काले
न कउं सञ्जाउं, असञ्जाएँ सञ्जायं सञ्जाएन स
ञ्जायं, जे कोइ ज्ञानना चउद अतिचारने विषे,
दिवस संबंधि दोष लागो होय. तस्स मिह्वा
प्पि उक्कडं. ॥ १ ॥

दर्शन श्री समकेत रत्नने विषे जे, अतिचार
लागो होय, ते आलोउं, श्री जिन वचन समां
सईह्यां न होय, प्रतीत्या न होय, रोचव्वां न

होय, परदर्शनीनी आकांक्षा कीधी होय, फल प्रत्ये संदेह आयो होय, पर पाखंमीनी प्रशंसा कीधी होय, परपाखंडीनो संस्तव, परिचय कीधो होय परपाखंमी संघाते आलाप संलाप कीधा होय, जे कांइ समकितरत्नने विषे आठ प्रकारें, जाणतां अजाणतां दिवस संबंधि, दोष लगा-
ड्यो होय तस्स मिळामि डुकमं ॥ २ ॥

पहेलुं स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतने विषे जे अतिचार लागो होय, ते आलोउं. री शवशें गाढो घाव घाल्यो होय, गाढे बंधनें बां ध्यो होय, अवयवनो ठेद कीधो होय अतिजार जख्यो होय, जात पाणीनो विच्छेद कीधो होय, जे कांइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्स मिळामि डुकमं. ॥ ३ ॥

बीजुं स्थूल मृषावाद विरमण व्रतनेविषे, जे अतिचार दोष लागो होय, ते आलोउं तुं. सहसात्कारें कोइ प्रत्ये कूमां आल दीधां होय, रहस्य बानी वात प्रगट कीधी होय, स्त्रीपुरुषना मर्म प्रकाश्यां होय, कोइने अपाय पाडवा जणी मृषा उपदेश दीधो होय कूडा लेख लख्या

होय कूमी सांख पूरी होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय तस्स मिठामि डक्कं ॥

त्रीजुं स्थूल अदत्तादान विरमणव्रतने विषे जे अतिचार ला० चोराइ वस्तु लीधी होय, चोरने सहाय दीधुं होय, राज्य विरुद्ध कीधुं होय कूडां तोला, कूमां मापकीधां होय, वस्तुमां जेल संजेल कीधा होय, सखरी देखाडी नखरी आपी होय जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय, तस्स मिठामि डक्कंड ॥

चोथुं स्थूल स्वदारा संतोष परदारा गमन विरमण व्रतने विषे जे अतिचार ला० इत्तर थोडा कालनी राखीशुं गमन कीधां होय अपर ग्रहीतनां गमन कीधा होय, अनंग क्रीमा कीधी होय, परायां विवाह नातरां जोमया होय, काम जोग तीव्र अज्जिलाषे सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्या होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तसस्स मि०

पांचमां ईडापरिग्रह परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागो होय, ते आलोउं. धन धान्यनुं, खित्तवथ्युनुं, रूपा सोनानुं, डप्पद चउ

पदकु विधातनुं परिमाण अति क्रम्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधी दोष लागो होय तस्स मिढामि डकमं ॥ ७ ॥

ठठा दिशि परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागो होय, ते आलोउं, उंची, नीची, त्रीठी, दशे दिशिनुं परिमाण, अतिक्रम्यु होय, व्यतिक्रम्यु होय एक दिशि वधारी होय, एक दिशि घटाडी होय पंथने संदेहे मर्यादा लोपी आघो चाल्यो होय, जे कोइ दिवस संबंधी दोष लागो होय, तस्समि ० ॥ ८ ॥

सातमुं उपजोग परिजोग परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागो होय, ते आलोउं. पञ्च खाण उपरांत सचित्तनो आहार कीधो होय, सचित्त पडिबद्धनो आहार कीधो होय, अपक्क उपक्कनो आहार कीधो होय, तुल्लोषधिना ज्ञाण कीधां होय जे कोइ दिवस संबंधी दोष लागो होय, त ० ॥ ९ ॥

पन्नरे कर्मादान श्रावकने जाणवां. पण स माचरवा नहीं, इंगालकम्मे वणकम्मे सकट कम्मे साडिकम्मे जामीकम्मे फोडीकम्मे, दंतवाणिजे

लस्रवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे केसवाणिज्जे एवंखुजंत पिद्धणकम्मं निद्धंण कम्मं, द वनुं देवुं सरदह तलाय सोसंच, असयंती जन नां जरण, पोषण कीधां होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय, त० ॥ १० ॥

आठमां अनर्थ दंरु विरमण व्रतने विषे जे अतिचार लागी होय, ते आलोउं बुं. कंदर्पनी कथा कीधी होय, जामकुचेष्टा कीधी होय, मुखरी वचन बोदयां होय, पापनां अधिकरण जोमी मूक्यां होय जवजोग परिजोग अधिकां वधास्यां होय जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ ११ ॥

नवमां श्री सामायिक व्रतने विषे जे अतिचार दोष लागी होय, ते आलोउं बुं. मन, वचन, कायाना जोग पामुवे ध्याने प्रवर्ताव्या होय, सामायिक मांहे समतान कीधी होय अणपूग्युं पाखुं होय, पारतां वीसाखुं होय जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागी होय, तस्स मिच्चा० १२

दसमां देसावगासिक व्रतने विषे जे अ० नीमि जुमिका बाहेरथी वस्तु अणावी होय तथा मोकलावी होय, शब्द करी रूप देखामी पु

दूगल नाखी आपणपुं ठतुं जणाव्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय त०॥१३॥

अगीआरमुं पोषध व्रतने विषे जे अ० ला० सञ्जा संथारो अप्रति लेख्यो होय, डःप्रति लेख्यो होय, अप्रमाज्यो डःप्रमाज्यो होय, उच्चार पासवण जुमिका अप्रति लेखी होय, डःप्रति लेखी होय, अप्रमार्जि होय, डःप्रमार्जि होय, पोसह मांहे वात विकथा निजा प्रमादे करी काल निर्गम्यो होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ १४ ॥

बारमां अतिथिसंविज्ञाग व्रतने विषे जे अ० सूजती वस्तु सचित्त उपर मूकी होय, सचित्त करी ढांकी होय, काल अतिक्रम्यो होय, आपणी वस्तु परायी कीधी होय, मन्त्र सहित दान दीधुं होय, जाणे बेठां साधु, साधवीनी चिंतवणा न कीधी होय, नवकार नमो श्युणं जण्या गण्या विना व्रत पञ्चस्काण पाखुं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्समिहामि डुक्कडं ॥

संक्षेपणा व्रतना पांच अतिचार लागो इह

લોગા સંસપ્પઓગે પરલોગા સંસપ્પઓગે જીવિ
આ સંસપ્પઓગે મરણીયા સંસપ્પઓગે કામ
જોગની વાંગ કીધી હોય, જે કોઈ દિવસ સંબં
ધિ દોષ લાગો હોય, તસ્સ ॥ ૧૬ ॥

અઢારે પાપસ્થાનક લાગાં હોય, તે આલોઝ
પહેલું પ્રાણાતિપાત ॥ ૧ ॥ વીજું મૃષાવાદ ॥૨॥
ત્રીજું અદત્તા દાન ॥ ૩ ॥ ચોથું મૈથુન ॥ ૪ ॥
પાંચમું પરિગ્રહ ॥૫॥ ષઠું ક્રોધ ॥૬॥ માન ॥૭॥
માયા ॥ ૮ ॥ લોઞ ॥૯॥ રાગ ॥૧૦॥ દ્વેષ ॥૧૧॥
કલહ ॥ ૧૨ ॥ અજ્યાચાર્યાન ॥ ૧૩ ॥ પૈશુન્ય
॥ ૧૪ ॥ પરપરિવાદ ॥ ૧૪ ॥ રતિઅરતિ ॥ ૧૬ ॥
માયા મોસો ॥ ૧૭ ॥ મિથ્યા દરસણ શૈલ્ય ॥ ૧૮ ॥ એ
અઢારે પાપસ્થાનક સેવ્યાં હોય, સેવરાવ્યાં હોય
સેવતાં પ્રત્યે અનુમોદ્યાં હોય જે કોઈ દિવસ સં
બંધિ દોષ લાગો હોય તસ્સ મિઠ્ઠામિ હુ ॥ ૧૭ ॥

અતિક્રમ. વ્યતિક્રમ, અતિચાર, અનાચાર
મૂલગુણ ઉત્તર ગુણને વિષે જે કોઈ દિવસ સંબં
ધિ દોષ લાગો હોય, તસ્સ મિઠ્ઠા ॥ ૧૮ ॥

ઈઠં આલોએમિ જોમે દેવસિઓ અઈઆરો
કઓકાઈઓ વાઈઓ માણસિઓ ઝસ્સુતો ઝ

म्मग्गो इत्यादि यावत् जंखंमियं जं विराहिअं
तस्स मिठामि डक्कं ॥ १९ ॥

सव्वस्सवि दिवसिअ डच्चिंतिअ डम्भासिय
डच्चिट्ठिअ तस्समि० सूत्रजणेमि सूत्र सांजलेमि
सूत्रनो आदेस. ॥ इति अतिचार ॥

पढी नवकारकही करेमि जंते कहेवुं. पढी इत्ता
मिठामि कहेवुं. पढी वंदितुं सूत्र कहेवुं ते कही
रह्या पढी पूर्वोक्त रीते बे खामणां देवां. पढी अ
जुठिउमि० कहीने खमाववुं. पढी सात लाख क
हेवा. पढी आयरिय उवञ्चाए कहेवुं पढी आ
वस्सइत्ताकारेण संदिसह जगवन् देवसियं प्रा
यञ्चित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ए पाठ
कही(१)नवकार गणी करेमिजंते कहेवुंपढी इत्ता
मिठामि० तस्सउत्तरी० कही (चार)
लोगस्स (अथवा) शोढ नवकारनो काउसग्ग
करी नमो अरिहताणं कही काउस्सग्ग पारी
प्रगट लोगस्स कहीने वली पूर्वोक्त रीते बेखा
मणां देवा. पढी चउविहारनुं पच्चस्काण लेवुं.
पढी सामायिक, चउविसडो, वांदणां पडिकम
णुं काउस्सग्ग, अने पच्चस्काण, ए ठ आवश्य

कने विषे जे कोई दोषलागो होय ते सविमन
वचनकायायें करी तस्समिञ्चामि डक्कनं ए पाठ
कही, मावो ढींचण उंचो करी नमुथुणं कहेवुं,
पढी नवकार गणी स्तवन कहेवुं. तेवार पढी क
र्मद्वय निमित्त करेमि काउस्सग्गं अनत्त एम क
हीने चारलोगस्सनो काउसग्ग करवो पारी प्रगट
लोगस्स कही पढी नवकार गणीने सञ्जाय कहे
वी. पढी नंदि कहेवी॥ इति देवसीप्र०

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि ॥

प्रथम गुरु पासे आइा मागी सामायिक क
रवो पढी नवकार गणी राइ कर्मद्वय निमिते
करेमि काउस्सग्गं कही बे लोगस्सनो काउस्स
ग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही नीचे बेसी नवका
र कही, चउव्वीसहो कहिये, पढी वांदणां तथा
खामणां लीजे, पढी उज्जा यइने राइ पायञ्चित्त
विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं कही, एक नवका
र गणी, करेमिजंतं, इञ्चामि ठामि. काउस्सग्गं
जोमे राइउं अइआरो कउं इत्यादिक कही,
तस्सउत्तरीनो पाठ कहेवो. पढी चार लोगस्स
नो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पढी

तरत उजा थइने आवस्स ईडाकारेण संदिस
हजगवन् राइ पन्निक्कमणें ठाएमिं राईज्ञान दर्श
न चारित्र तप, वीर्य अतिचार चिंतवनार्थ करेमि
काउस्सग्गं, एम कहि एक नवकारगणी, करेमि
जंते ० इच्छामि ठामि ० तस्स उत्तरी ० कही पढी
नाणंमिनो काउस्सग्ग करीये. पढी देवसिनी पेठे
सर्व पाठ कहिये. परंतु ज्यां चारलोगस्सनो का-
उस्सग्ग आवे, ते स्थानके वरसी तपनो काउ-
स्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, पढी वे वादणां
आपीने यथाशक्ति पच्चख्खाण लीजे. तेवार पढी
स्तवन, सद्यायो, प्रजातनां केहेवाता होयते
केहेवा. त्यार पढी नंदि केहेवी. ॥ इति ॥

अथ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम तो देवसिनी पेठे वंदिता सुधी सर्व
कहेवुं, आलोअंतो निदंतो, देवसियं आलो
एमि, पख्खि जणेमि, ए रीते कहेवुं, पढी त्यार्थी
पाठुं वली वे खामणार्थी मांणीने चार लोग्गस्स
ना काउस्सग्ग पर्यंत कहेवुं, पण चार लोग्ग-
स्सने ठेकाणे अहीं बार लोग्गस्सनो काउस्सग्ग
करवो, अने ठठो पच्चख्खाण आवश्यक आवे

तेवारे चउविहारने स्थानके धारणा प्रमाणे प-
च्चस्वखाण लेवुं, त्यांथी पाठो आलोअंतो निं-
दंतो पस्खिअं आलोएमि देवसिअं जणेमि
कहिने तेवार पढीतो वंदिता सूत्र कही रह्या
पढी जे बे खामणां आपीये ठैये, त्यांथी सर्वदे-
वसि पडिक्कमणानी पेठे चलाववुं. ॥ इति ॥

अथ चोमासी प्रतिक्रमण विधि.

परखीनी पेठे चोमासी प्रतिक्रमणनो सर्व
विधि जाणवो, परंतु जे ठेकाणे बार लोगस्सनो
काउस्सग्ग आवे ठे, ते ठेकाणे वीश लोगस्स-
नो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके प-
स्कीयं पाठ आवे ते ते स्थानके चउम्मासियं
पाठ कहेवो. ॥ इति ॥

अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि.

पाखीनी पेठे संवत्सरी पडिक्कमणानो पण सर्व
विधि जाणवो. परंतु एटवुं विशेष के जे ठे-
काणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे ठे, ते
ठेकाणे अहीं चाळीश लोगस्सनो काउस्सग्ग
करवो, तथा जे जे स्थानके पस्कीयं पाठ
आवे, ते स्थानके संवत्सरियं पाठ कहेवो ॥ इति ॥

अथ वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ ॥

अणसण मूणोअरिया, वत्ति संकेवणं रस-
च्चाउं ॥ कायकिल्लेसो संली, ए आय बद्धो तवो
होइ ॥ १ ॥ पायञ्चित्तं विणउं, वेआवच्चं तद्देव
सच्चाउं ॥ आणं उस्सग्गोविय, अङ्घ्रितरउं
तवो होइ ॥ २ ॥ धन्य श्री रुषज्जदेव स्वामीने
जेणे वरसी तप कखुं, धन्य श्री महावीरस्वा-
मीने जेणे ठम्मासी तप कखुं, एमज जे पंच-
मासी तप करे, तेने धन्य, जे चार मासी तप
करे, तेने धन्य, जे त्रीमासि तप करे, तेने धन्य,
जे बे मासी तप करे, तेने धन्य, जे पच्चावन उ-
पवास करे, तेने धन्य, जे पच्चास उपवास करे,
तेने धन्य, जे पिस्तालीश आगमना पीस्तालीश
उपवास करे, तेने धन्य, जे चालीश उपवास
करे, तेने धन्य, जे पांत्रीश वाणी रूप सत्य व-
चनना पांत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे चो-
त्रीश अतिशयना चोत्रीश उपवास करे, तेने
धन्य, जे तेत्रीश आशातना टाळवा निमित्त ते-
त्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे बत्रीश योग
संग्रहना बत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे ए-

कत्रीश सिद्धना गुण पामवाने एकत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे त्रीश प्रकारें महा मोहनीय कर्म टालवाना त्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे उगणत्रीश पापशास्त्र टालवाना उगणत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुनी अष्टावीस लब्धिना अष्टावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुना सत्तावीश गुणना सत्तावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे षष्ठीश दशा कल्पना षष्ठीश उपवास करे, तेने धन्य, जे पञ्चीश क्रिया टालवाना पञ्चीश उपवास करे तेने धन्य, जे चोवीश तीर्थकरना नामना चोवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूर्य गडांगना त्रेवीश अध्ययनना त्रेवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे बावीश परिसह जीतवाना बावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे एकवीश सबल दोष टालवाने एकवीश उपवास करे तेने धन्य, जे वीश असमाधिना स्थानक टालवाने वीश उपवास करे तेने धन्य, जे श्री ज्ञाता सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना उगणीश अध्ययनना उगणीश उपवास करे, तेने धन्य, जे अठार पा-

पस्थानक टालवाना अठार उपवास करे, तेने धन्य, जे सत्तर प्रकारे संयम पालवाना सत्तर उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूर्य गडांगना प्रथम श्रुतस्कंधना शोल अध्यनना शोल उपवास करे, तेने धन्य, जे पंदर परमाधामिना कर्म निवारवाना पंदर उपवास करे, तेने धन्य, जे चौद प्रकारना जीवनी दया पालवाना चौद उपवास करे, तेने धन्य, जे तेर काठीआ निवारवाना तेर उपवास करे, तेने धन्य, जे ज्री-स्कुनी बार पडिमाना बार उपवास करे, तेने धन्य, जे श्रावकनी अगीआर पडिमाना अगीआर उपवास करे, तेने धन्य, जे दशविध यति धर्म पामवाना दश उपवास करे, तेने धन्य, जे नव प्रकारे ब्रह्मचर्य पालवाना नव उपवास करे, तेने धन्य, जे आठ कर्म टालवाना आठ उपवास करे, तेने धन्य, जे सात व्यसन निवारवाना सात उपवास करे तेने धन्य, जे षट्कायनी रक्षाना ष उपवास करे, तेने धन्य, जे पांच प्रमाद टालवाना पांच उपवास करे, तेने धन्य, जे चार कषाय टालवाना चार उप-

વાસ કરે, તેને ધન્ય, જે ત્રણ દંડ ટાલવાના ત્રણ ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે રાગ દ્વેષ ટાલવાના બે ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે એક ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, આયંબિલ કરે, તેને ધન્ય, એકાસણું કરે, તેને ધન્ય, જે એક ટાણું કરે, તેને ધન્ય, જે પૂરિમાર્દ કરે, તેને ધન્ય, જે પોરસિ કરે, તેને ધન્ય, જે નવકારસિ કરે, તેને ધન્ય, જે ગંઠસીઝં મુઠ સીઝં કરે, જે કોઈ શ્રી જિનાજ્ઞા પ્રમાણે ચાલે તે જીવને ધન્ય છે, ધન્ય ધન્ય ધન્ય ધન્ય નમો અરિહંતાણં ॥ इति वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ संपूर्ण ॥

अथ नंदीनो पाठ.

જયઈ જગજીવ જોણી, વિઆણઉં જગ ગુરુ જગાણંદો, જગનાહો જગબંધૂ, જયઈ જગપ્પિયા મહો જયવં ॥ ૧ ॥ જયઈ સુઆણં પ્પજ્જવો તિહ્યરાણં અપહ્મિમો જયઈ, જયઈ ગુરુલોગાણં જયઈ મહપ્પા મહા વીરો ॥ ૨ ॥ જહં સવ્વ જગુજ્જો, યગસ્સ જહં જિણસ્સ વીરસ્સ, જહં સુરા સુર નમં, સિયસ્સ જહં ધૂયરયસ્સ ॥ ૩ ॥ ગુણ જવણ ગદ્દણ સુયરયણ, જરિય દંસણ વિસુહ

रत्नागा, संघ नयर जदंते, अखंड चरित्त
पागारा ॥ ४ ॥ संजम तवं तु बारस्स, नमो स-
म्मत्त पारियद्धस्स ॥ अप्पडिचक्क सज्जं. होउ
सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥ जदं सील पडा गुसि
यस्स, तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ संघरहस्स
जगवज्जं, सज्जडाय सुनंदि घोसस्स ॥ ६ ॥ नंदि
आनंदि सदा संघने जय जय कारणी. आनंद
कारणी, कल्याण कारणी, श्री जिनेंज देव श्री-
गुरुदेवने त्रिकाल वंदना. ॥

सागर गह्व प्रतिक्रमण विधि.

सागरगह्व प्रतिक्रमण विधि तपे गह्व समान
जाणना परं विशेष मात्र इतनादे की प्रतिक्रम-
णपारनेकी समय इर्यावही न प्रतिक्रमतेहें.

आनंद सूरीयगह्व प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगह्व प्रतिक्रमण समान जा-
णना विशेष मात्र सागरगह्व प्रमाण जाणना.

वडगह्व प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगह्वके प्रतिक्रमण विधि स-
मान जाणना बिलकुल फरकनही.

राजसूरीय गह्व प्रतिक्रमण विधि.
 समग्र विधि तपेगह्व समान जाणना.
 लहुडी पोसाल गह्व प्रतिक्रमण विधि.
 समग्रविधि तपेगह्व प्रतिक्रमण समानजाणना.
 कमल कलसा गह्व प्रतिक्रमण विधि.
 समग्रविधि तपेगह्वके प्रतिक्रमणके विधि
 समान जाणना.

कवलागह्व प्रतिक्रमणविधि.
 समग्रविधि तपेगह्वके प्रतिक्रमणविधि स-
 मान जाणना.

विजयगह्व प्रतिक्रमण विधि.
 समग्रविधि तपेगह्वके प्रतिक्रमण समान जा
 णनाविशेषमात्र इतना हे की कर्मक्षय निमित्त
 काउसगके पश्चात् शांतिलोगस्स कहके कहते.

पायचंडगह्व प्रतिक्रमण.
 तमामविधि तपगह्व समान जाणना परं वि-
 शेष मात्र यहहे की प्रथम देव वंदनके समय
 पुस्करवरदीवहे प्रमुख न कहते चारों थुइ मात्र
 एक साथ कहदेतेंहे. और कितनीक संकलना-
 मात्र चिन्न हे.

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदनप्रारंभः ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिभुवन,
हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपंकज नमो आदि
जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृंगमण्डण, प्रव-
रगुण गणजूधरं ॥ सुर असुर किन्नर, कोमिसेवित ॥
नमो ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय
जिनगुण मनहरं ॥ निर्झरा वली नमे अहोनिश ॥
नमो ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधि, कौमि
पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमलगिरिवर शृंग सिद्धा
॥ नमो ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर,
कोडीनंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगें ॥
नमो ॥ ५ ॥ पाताल नर सुर लोकमांहि, विमलगि-
रिवर तोपरं ॥ नहि अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥
नमो ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंरुण,
दुखविहंडण ध्याइये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधना-
र्थ, परम ज्योति निपाइये ॥ जितमोह कोह
विठोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरम् ॥ गिरि-
राज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ७ ॥
इति चैत्यवंदनं समाप्तं ॥

॥ अथ चोवीसजीननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सुर किन्नरनागनरिंदनतं, प्रणमामि युगादिम
जिनमजितं ॥ संजवमजिनंदनमथ सुमतिं, पद्मप्रज-

मुज्ज्वलधीरमतिं ॥ १ ॥ वंदे च सुपार्श्व जिनेन्द्र महं,
चंद्रप्रजमष्टकुर्मदहं ॥ सुविधिप्रभुशीतल जिनयुग
लं, श्रेयांसमसंशयमतुलबलम् ॥ २ ॥ प्रभुमर्चय नृपव
सुपूज्यसुतं, जिनविमलमनंतमज्झिनतम् ॥ नम धर्म
मधर्मेनिवारिगुणं, श्रीशांतिमनुत्तरकांतिगुणम् ॥ ३ ॥
कुंथू श्रीश्वर मल्लीशजिनान्, मुनिसुव्रतनमिनेमिस्तम-
सिदिनान् ॥ श्रीपार्श्वजिनेन्द्रमिजेन्द्रसमं, वंदे जिन-
वीरमजीरुतमं ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इति नागकिन्नर, नरपुंदर, वंदितक्रम, पंकजा
॥ निर्जितमहारिपु, मोहमत्सर, मानमदमकरध्वजाः ॥
विलसंति सततं, सकलमंगल, केलिकानन, सन्निजाः,
सर्वे जिनामे, हृदयकमले, राजहंस, समप्रजाः ॥ ५ ॥
इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथपंचतीर्थी चैत्यवंदन ॥

आजदेवश्रीहंतनमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां
ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥
शत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे
श्री अजित नाथ, आबू रिखज जुहार ॥ २ ॥ अ
ष्टापदगिरि ऊपरें, जिन चोवीशी जोथ ॥ मणिमय
मूरति मानशुं, जरतें जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशि
खर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिनपाय ॥ वैज्जारगिरि
ऊपरें, श्री वीरजिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांरुवगढनो

राजीयो नामें देव सुपास ॥ रिखज कहे जिन सम
रतों, पहाँचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति ॥ ० ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ डुविध धर्म जिणें उपदिश्यो, चोथा अजिनं-
दन ॥ बीजे जन्म्या ते प्रभु, जवडुःखनिकंदन ॥ १ ॥
डुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥
एम प्रकाश्युं सुमति जिनें, तेचविया बीज दिन ॥ २ ॥
दोय बंधन राग द्वेष, तेहनें जवि तजीयें ॥ मुजपरें
शीतल जिन कहे, बीजदिन शिव जजीयें ॥ ३ ॥
जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दि-
नें वासु पूज्य परें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय
नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीयें ॥ अर जिन
बीज दिनें चवी, एम जिन आगल कहीयें ॥ ५ ॥
वर्तमान चोवीशीयें, एम जिन कळ्याण ॥ बीज
दिनें केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम
अनंत चोवीशीयें ए, हुआं बहु कळ्याण ॥ जिन
उत्तम पद पद्धनें; नमतां. होय सुखखाण ॥ ७ ॥

॥ अथ पंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे बेठा वीरजिन, जाखे जविजन आगें ॥
त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागें ॥ १ ॥
आराहो जलि जातसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान
आराधन कारणें, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान
विना पशु सारिखा, जाणो एणें संसार ॥ ज्ञान

आराधनशी लह्यं, शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान
रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोकालो
क प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सा
सोढ्यासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोमी वरसां
लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया
कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा
घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु
पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मास
नी, पंचमी करो शुजदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो
ए, काउस्सगग लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो जाव
शुं, टाळे जवफेरो ॥ ८ ॥ एणी पेरे पंचमी आराहीये
ए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें,
रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमीचैत्यवंदन ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा शुदि आठमने दिनें, विजया सुत जायो
॥ तेम फागुण शुदि आठमे, संजव चवि आयो ॥ १ ॥
चइतर वदनी आठमें, जन्म्या कृषज जिणंद ॥ दी
हा पण ए दिन लही, दुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
माधवशुदि आठमदिनें, आठ कर्म कस्यां डुर ॥
अजिनंदन चोथा प्रजु, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥
एहिज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिणंद ॥
आठ जाति कलशें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥
जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी ॥ नेम

आषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
 श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्मया जगन्नाण ॥
 तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥ ६ ॥
 ज्ञाद्रवा वदि आठमदिने, चविथा स्वामी सुपास ॥
 जिन उत्तम पदपद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥
 संघ चतुर्विध थापवा, महसेनवन आयो ॥ १ ॥ मा
 धव सीत एकादशी, सोमल छीज यह ॥ इन्द्रज
 तिआदें मल्ल्या, एकादश विह ॥ २ ॥ एकादशसें
 चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे,
 मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय
 हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें आप्या वंदीयें,
 जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि
 पास, वरचरण विलासी ॥ रुक्म अजित सुमति न
 मि, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज शिव
 वास पास, जवजवना तोडी ॥ एकादशी दिन आ
 पणी, रुद्रि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं
 कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी,
 आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें,
 एकादश पाठां ॥ पूंजणी ठवणी बिंटाणी, मशी का
 गल काठां ॥ ८ ॥ अगीयार अत्रत ठांरुवां ए, वहो

पडिमा अगियार ॥ खिमाविजय जिन शासनें, सफ
ल्ल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीविशस्थानकनुं चैत्यवंदन ॥

॥ पहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥
त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ न
मोथेराणं पांचमे, पाठक गुण ठेठे ॥ नमो लोए स
वसाहुणं, जे ठे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स
आठमे, दर्शन मन जावो ॥ विनय करो गुणवंतनो,
चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंज वयधारीणं, तेर
मे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो
जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सने ए, नमो
तिष्ठस्स जाणी ॥ जिन उत्तमपद पन्नने, नमता हो
ये सुखखाणी ॥ ५ ॥

॥ अथ विशस्थानकना काउस्सगनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पंदर पिसतालीशनो, ठत्रीशनो करी
यें ॥ दश पंचवीश सत्तावीशनो, काउस्सग मन ध
रें ॥ १ ॥ पंच सडसठने दश वली, सीत्तेर नव पणवी
श ॥ बार अडवीश लोगस्स तणो, काउस्सग धरो
गुणीश ॥ २ ॥ विश सत्तर इगवन, द्वादश ने पंच ॥
एणी परें काउस्सग जो करे, तो जाये जव संच
॥ ३ ॥ अनुक्रमें काउस्सग मन धरो, गुणी लेजो
वीश ॥ विश यानक एम जाणीयें, संक्षेपची वेश
॥ ४ ॥ जाव धरी मनमां घणो ए, जो एक पद

आराधे ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमी निज का
रज साधे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री रोहिणीतपचैत्यवंदन ॥

॥ रोहिणी तप आराधीये, श्रीश्री वासुपूज्य ॥
डुख दोहग दूरें टले, पूजक होये पूज्य ॥ १ ॥ पहे
ला कीजें वासक्षेप, ग्रह उठीने प्रेम ॥ मध्यान्हें क
री धोतीयां, मन बच काया खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रका
रनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ जावें जावना जा
वीयें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहुं कालें लेइ धूप
दीप, प्रभु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी जक्तिशुं,
अविचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्त
वन, जिननो कीजे जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइये,
जिम नावे संताप ॥ ५ ॥ कोड कोड गुण फल दीयें,
उत्तर उत्तर भेद ॥ मान कहे ए विधि करो, जुं
होये जवनो भेद ॥ ६ ॥

॥ अथ तीर्थवंदनं चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन बीश ॥
रिखजादिक बली वंदीयें, संपइ जिन चोबीश ॥ १ ॥
सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद बलि सार ॥ स
मेतशिखर ए पंचतीर्थ, पंचमी गति दातार ॥ २ ॥
ऊर्ध्व लोके जिनहर नमुं, ते चोराशी लाख ॥ सह
स सत्ताणुं ऊपरें, त्रेविश जिनवर जांख ॥ ३ ॥ एक
शो बावन कोफि बली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस

चुम्माही सातशें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥
 अधोलोके जिनजवन नमुं, सात कोमि बोहोतेर
 लाख ॥ तेरशें कोमि नेव्याशी कोमी शाठ लाख
 चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषीमां वली ए, जि
 न जवन अपार ॥ ते जवि नित्य वंदन करो, जेम
 पामो जवपार ॥ ६ ॥ तिर्हा लोके शाश्वतां, श्रीजि
 नजवनविशाल ॥ बत्रीशशें ने उगणशाठ, वंडुं थइ
 उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणुं सहस, त्रणशें
 विश मनोहार ॥ जिनपद्मिमा ए शाश्वती, नित्य नि
 त्य करुं जुहार ॥ ८ ॥ त्रण जुवनमांहे वली ए, नामा
 दिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय प
 द दातार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश तिर्थकरनी राशिनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष ठे, कुंथु अजित वृषजा
 ति ॥ संजव अजिनंदन मिथुन, धर्म करक सिंह
 सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रज नेम वीर, पास सुपा
 स तुला ए ॥ शशि वृश्चिक धन ऋषजदेव, सुविधि
 शीतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने ए,
 बारमा घट मीन लील ॥ विमल अनंत अर नामथी,
 सुखीया श्री शुजवीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहंत नमो, जगवंत नमो, परमेसर जिन

राज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सिद्धां
सधलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत
परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥
अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जल-
धिमयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुअण जविगण
जण मण वंठिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि
ललि पायनमुं हुं जालें, कर जोमीनें त्रिकाल नमो
॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तूं जग जन सज्जन, नय
नानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर वर नायक,
सारे अहो निश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तूं तीर्थ
कर सुखकर साहिब, तूं निःकारण बंधु नमो ॥ शर
णागत जविने हितवत्सल, तूंही कृपारसासंधु नमो
अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोकस्व
जाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण दु-
रित उपद्रवजाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंताम
णि जगगुरु जगहित, कारक जगजननाथ नमो ॥
घोर अपार जवो दधितारण, तूं शिवपुरनो साथ
नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण, शरण नीराग निरंजन,
निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीउ अनुपम
दाने सर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीचोवीश जिननावर्णनु चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रज्ञ ने वासुपूज्य दोय राता कहीयें ॥
चंद्रप्रज्ञ ने सुविधिनाथ, दो उज्ज्वल लहीयें ॥१॥

मद्विनाथ, ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरुद्धा ॥ मुनि
सुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥१॥ शोले जिन
कंचनसमा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीरविमल पं-
डित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चोविश जिन समकितजव गण ॥
तीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा, जव तेर कही जे
॥ शांतितणा जव बार सार, नव जव नेम लहीजे
॥ १ ॥ दश जव पासजिणंदने, सत्तावीश श्रीवीर ॥
शेष तीर्थंकर त्रिहुं जवें, पाम्या जवजल तीर ॥२॥
ज्यांथी समकित फरसीयुं, त्यांथी गणीएं तेह ॥
धीरविमल पंडित तणो, ज्ञानविमल गुण गेह ॥३॥ इति ॥

॥ अथ चउदशें बावन गणधरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पंचाणुं ठेक ॥
दोय अधिक इग सय गणा, शोल अधिक शत एक
॥ १ ॥ शत सुमतिने गणधरा, एक सय अधिका
सात ॥ पंचाणु त्राणु तथा, अडसी इगसी वाता ॥२॥
ढोहोतेर ठासठ सगवन, पंचास तेंतादीस ॥ ठत्तिस
पणतिस कुंथने, अर गणधर तेत्रीश ॥ ३ ॥ अडवी
स अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश
दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिख
जादिक चोविशना, एक सहस्स सय चार ॥ अधि
केरा बावन कह्या, सर्व मली गणधार ॥ ५ ॥ अद्दय

पद वरिया सवे, सादि अनंत निवास ॥ करीयें शु
ज चित्त वंदना, जब लग घटमां शास ॥६॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपंच परमेष्ठि चैत्यवंदन ॥

॥ बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजें जावें ॥
सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १ ॥
आचारज गुण ठत्रीस, पंचवीश उवजाय ॥ सत्ता
वीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टो
त्तर सय गुण मल्ली ए, एम समरो नवकार ॥ धीर
विमल पंडित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥३॥इति॥

॥ अथ श्री सीमंधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहेब देव ॥
अरिहंत सकलनी, जाव धरी करुं सेव ॥ सकल
आगम पारग, गणधर जाखित वाणी ॥ जयवंती
आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (ए थोय चार
वखत पण कहेवाय ठे)

॥ अथ श्री सीमंधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हं
साजी ॥ कुंथु अर जिन अंतर जनम्या तिहुअण
जश परशंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरदीक्षा,
शिद्धा जगत निरासेंजी ॥ उदय पेढाल जिनांतर
मां प्रभु, जाशे शिव बहु पासेंजी ॥ १ ॥ बत्रीश च
उसठी चउसठी मलिया, इम सय सठि उक्किठा
जी ॥ चउ अरु अरु मल्ली मध्यम कालें, विश जि

नेश्वर जिह्वाजी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जंबु,
 धायइ पुस्कर मोजारेंजी ॥ पूजो प्रणमो आचारां
 गें, प्रवचन सार उछारेंजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर के
 वल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थ नि
 देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतेंजी ॥ छा
 दश अंग पूरवयुत रचियां, गणधर लब्धि विकसि
 यां जी ॥ अप्पज्जवसिय जिनागम बंदो, अक्षरपद
 ना रसियां जी ॥ ३ ॥ आणारंगी समकितसंगी, वि
 विध जंग व्रतधारीजी ॥ चउविह संघ तीरथ रख-
 वाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सूरि
 शासन देवी, देती तस जस रुद्धिजी ॥ श्रीगुजवी
 र कहे शिव साधन, कार्य सकलमां सिद्धिजी ॥ ४ ॥

॥ अथ बीजतिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥
 राय राणा प्रणमे, चंद्र तणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्र
 विमाने, शाश्वता जिनवर जेह, हुं बीज तणे दिन,
 प्रणमुं, आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन चंदन, शीत
 लशीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमतिजिन, वासुपूज्य
 शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान नि
 र्वाण ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण
 ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजें, दुविध धर्म जगवंत ॥ जेम
 विमल कमल दोय, विउल नयन विकसंत ॥ आगम
 अति अनुपम, जिहांनिश्चय व्यवहार ॥ बीजें सवि

कीजें, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी का-
मिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्रेसरी केसरी, सर
स सुगंध शरीर ॥ कर जोनी बीजें हुं प्रणमुं तस
पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ४
॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए, जन्म्या नेम
जिणंद तो ॥ श्यामवरण तन शोजतुं ए, मुख शार
दको चंद तो ॥ सहस्र वरस प्रजु आयुखुं ए, ब्रह्म
चारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेळें हणी ए, पढो
ता मुक्ति महंत तो ॥ १ ॥ अष्टापदपर आदि जिन
ए, पढोता मुक्ति मोजार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए
नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी मांहे वलि ए
श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत शिखर विश सिद्ध
हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमना
थज्ञानी हुवा ए, जांखे सार वचन तो ॥ जीवदया गु
ण वेलमी ए, कीजे तास जतन तो ॥ मृषा न बो
लो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत ती
र्थकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ३ ॥ गो
मेद नामे यक्ष जलो ए, देवी श्री अंबिका नाम
तो ॥ शासन सान्निध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां
काम तो ॥ तपगह नायक गुण निलो ए, श्रीविज
यसैन्य सूरिराय तो ॥ रिखजदास पाय सेवतां ए,
सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सु
रराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे
जिनराज जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्सव, कर
तां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अम
घर, मंगल कमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वय
री गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमे
आठ स्वरूप विचारी, मद आठे तस गलीया जी ॥
अष्टमी गति पढोता जे जिनवर, फरस आठ नहिं
थंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य नि
त्य वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ बिराजे
समवसरण जिन राजे जी ॥ आठमे आठशो आग
म जांखी, जवि मन संशय जांजे जी ॥ आठे जे प्रव
चननी माता, पाले निरतिचारो जी ॥ आठमने दि
न अष्टप्रकारें, जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट
प्रकारी पूजा करीने, मानव जवफल दीजें जी ॥
सिद्धाष्ट देवी जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजें
जी ॥ आठमनुं तप करता दीजें, निर्मल केवल झा
नजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी
कोनि कढयाण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ एकादशी अति रूअमी, गोविंद पूठे नेम ॥
कोण कारण ए पर्व महोदुं, कहो मुऊशुं तेम ॥ जि

नवर कट्याणक अति घणां, एकशोने पंचास ॥ ते
 णें कारण ए पर्व महोदुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥
 अगियार श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर दे
 व ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिम
 रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरत
 रु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनशुं
 रंग ॥ २ ॥ अगीआर अंग लखावियें, अगीयार पा
 ठां सार ॥ अगिआर कवली वींटणां, ठवणी पूंजणी
 सार ॥ चावली चंगी विविध रंगी, शास्त्र तणे अनु
 सार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामियें जवपार
 ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुको
 मलकाय ॥ जुजदंड चंरु अखंड जेहने, समरतां सुख
 थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंक्ति
 शिस ॥ शासन देवी विघन निवारो, संघ तणां निशदीस
 ॥ अथ शांतिजिन स्तुति ॥

॥ शांति जिणेंसर समरियें, जेहनी अचिरा माय ॥
 विश्वसेन कुल उपना मृग लंठन पाय ॥ गजपुर
 नयरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष चालिस
 जस देहमी, वरस लाखनुं आय ॥ १ ॥ शांति जिने-
 सर सोलमा, चक्री पंचम जाणुं ॥ कुंथुनाथ चक्री
 ठठा, अर नाथ वखाणुं ॥ एत्रिणे चक्री सही, देखी
 आणंदू ॥ संयम लइ मुतें गया, नित्य उठीने वंदू
 ॥ २ ॥ शांति जिनेसर केवली, वेठा धर्म प्रकाशे ॥

दान शील तय जावना, जर सोहें अज्यासे ॥ एह
वचन जिनजी तणा, जेणे हियडे धरियां ॥ सुणतां
शिवगती निर्मली, दिसे केवल वरियां ॥ ३ ॥ समेत
शिखर गिरि उपरे, जइने अण सण कीधुं ॥ काउ-
सग मुद्रायें रह्या, तिणे मुक्तीज दीधुं ॥ गरुडयक्ष
सेवुं सदा, देवी निरवाणी ॥ जविक जीव तुमें
सांजलो, कृपजदासनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया ॥ मरु-
देवी जस माया, धोरी लंठन पाया ॥ जगत स्थिति
निपाया, शुद्ध चारित्र पाया ॥ केवल सिरि राया,
मोक्ष नगरे सधाया ॥ १ ॥ सविजन सुखकारी, मोह-
मिथ्या निवारी ॥ दुरगति दुःख नारी, शोकसंताप
वारी ॥ श्रेणि कृपक सुधारी, केवलानंतधारी ॥
नमिये नरनारी जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समव
सरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा ॥ करे गणप
पइठा, इंद्र चंडादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरीछा
गुंथता टाळे रीछा ॥ जविजन होय हिछा, देखी
पुण्ये गरीछा ॥ ३ ॥ गुर समकितवंता, जेहकळें
महंता ॥ जेह सुजन संता, टाळिये मुजचिंता ॥ जिनवर
सेवंतां, विघ्नवारे दुरंता ॥ जिनउत्तम शुणंतां, पद्मने
सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति

अथ सिद्धचक्रजीनी स्तुति ॥

जिनशासन वंछित पुरणदेव रसाल ॥ जावे ज-
वि जजिये, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुं काले एहनी
पुजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमरपद सुख
पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्धवंदो, आचा-
रज उवझाय ॥ मुनिदरसण नाण चरण तप ए स
मुदाय ॥ ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुख दाय ॥
ए ध्याने जविनां, जव कोटी दुःखजाय ॥ २ ॥ आ
शो चैत्रीमां शुद्ध सातमथी सार ॥ पुनम लगी कीजे,
नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेंबुं, पद
सम साढाचार ॥ एकाशी आंबिल तप आगम अ-
नुसार ॥ ३ ॥ श्रीसिद्धचक्र सेवक, श्रीविमलेश्वर-
देव ॥ श्रीपालतणीपरे सुख पूरे स्वयमेव ॥ दुःख
दोहग नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्रीसुमती सु-
गुरुनो राम कहे नितमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथपर्युषण स्तुति ॥

सत्तर जेदी जिन पूजा रचीने. स्नात्र महोत्सव
कीजेजी ॥ ढोल ददामां जेरी नफेरी, ऊल्लरी नाद
सुणीजेजी ॥ वीरजिन आगे जावना जावी, मानव
जव फल लीजेंजी ॥ पर्व पजूसण पुरव पुण्यें, आ-
व्यां एम जाणीजे जी ॥ १ ॥ मास पास वली द-
सम दुवालस, चत्तारी अठ कीजेंजी ॥ उपर वली

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेंजी ॥ वक्रा
 कलपनो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पड-
 वेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी
 ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमारी पलावी, अछमनुं
 तप करियें ॥ नागकेतु नी परें केवल लहियें, जो
 शुभ जावें रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याण-
 क गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अंतर
 त्रीजें, कृष्ण चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ बारसैं सूत्रने
 सामाचारी, संवहरी पडिकमियेजी ॥ चैत्य प्रवानी
 विधिसुं कीजे, सयल जंतु खामीयेंजी ॥ पारणाने
 दिन स्वामी वढल, कीजे अधिक वक्राइजी ॥ मान
 विजय कहे सकल मनोरथ, पुरो देवी सिद्धाइजी ॥४॥

॥ अथ पर्युषण स्तुति ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोषण, पर्व पजूसण पा-
 मीजी ॥ कटप घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शि-
 र नामीजी ॥ कुंवर गयवर स्कंध चक्रावी, ढोल नि-
 साण वजडावोजी ॥ सदगुरु संगे चढते रंगे, वीर
 चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम बखाण धरम सार
 श्री पद, बीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पा-
 ठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे
 दीक्षा ठठे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आ-
 ठमे स्थविरावली संजलावी, पिउडा पुरो जगीश-
 जी ॥ २ ॥ ठठ अछम अछाई कीजें, जिनवर चैत्य

नमीजेंजी ॥ वरसी पम्किमणुं मुनिवंदन, संघसयल
खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रजावना,
दान सुपात्रें दीजेजी ॥ जडबाहु गुरु वयण सूणीने,
ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल
गिरिमां; मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवरमांहिं जि-
नवर मोहोटा, पर्व पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी
स्वामी बल्ल, बहु पकवान वमार्ईजी ॥ खिमा वि-
जय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधा-
ईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचल तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु
उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमाहें नवकारज
जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधरमांहें जल
जाणुं ॥ पंखीमांहें जेम उत्तम हंस, कुलमांहें जिम
ऋषजनो वंश, नाजि तणो जे अस ॥ द्दमावंतमाहे
जिम अरिहंता, तप सूरु मुनिवर महंता, शत्रुंजय
गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषज अजितसंजव अजिनंदा,
सुमतीनाथ मुख पुनमचंदा, पद्मप्रज सुखकंदा ॥ श्रीसु-
पार्श्व चंद्रप्रज सुविधि, शितल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धि,
वासु पूज्य मती शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म
ए शांति, कुंथु अर महि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत
शुद्ध पंथी ॥ नमी पासने वीर चोवीस, नेम विना
ए जिन त्रेवीस, सिद्धगिरि आव्याईश ॥ २ ॥ ज-

रतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुंजय कुण तोले,
 जिननुं वचन अमोले ॥ ऋषज कहे सुणो जरतरा-
 य, ठहरी पादंता जे नर जाय, पातक चूको थाय॥
 पशुपंखी जे इण गिरि आवे; जव त्रीजे ते सिद्धज
 थाय, अजरामरपद पावे ॥ जिनमतमें शत्रुंजो व-
 खाण्यो, तेमें आगम दिलमाहें आण्यो, सुणतां सुख
 उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति जरत नरेसर आवे,
 सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरती ठावे ॥
 नाजिराया मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेन विख्या
 ता, मूर्ति नवाणु ज्ञाता ॥ गोमुखने चक्रेसरी देवी,
 शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगह उपर हेवी ॥
 श्रीविजयसेन सूरेश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरि प्र-
 णमी पाया, ऋषजदास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंखेश्वर जिन स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजियें ॥ नर जवनो लाहो
 लीजियें ॥ मन बंठित पूरण सुरतरू ॥ जय वामा-
 सुत अलवेसरू ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अतिज-
 द्वा ॥ दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला
 दोय सामल कह्या ॥ शोले जिन कंचन वर्ण लह्या
 ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर जांखियो ॥ गणधरें ते
 हियडे राखियो॥तेहनो रस जेणेंचाखियो॥ते हुं शि
 व सुख साखियो ॥ ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती ॥

प्रभु पार्श्व तणा गुण गावती ॥ सद्गु संघना संकट
चूरती ॥ नयविमलना वंछित पूरती ॥ ४ ॥ इति॥

॥ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

पुंरु गिरि महिमां आगममां प्रसिद्ध ॥
विमलाचल जेटी लहिये अविचल रुद्धि ॥
पंचमी गती पोहोता मुनिवर कोडा कोड ॥
क्षण तीर्थे आबी कर्म विपातिक ठोड ॥ १ ॥
(आ स्तुति चार वार पण कहेवाय ठे)

॥ अथ नवपद शुद्धि ॥

॥ नित प्रति हुं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज जाव ।
हिवकारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुज नाम
पसायें अरति व्याधि पुलाय । इग तुज अनुग्रहथी
सुख संपति मुज थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमिये
सिद्ध सूरि उवजाय । मुनिवर त्रिण करणें दंसण
नांण सुहाय । दुगविधि चारित्तें बुधविध तप मन
जाय । ये नवपद ध्यातां निरुपम शिव सुख थाय
॥ २ ॥ बिद्या प्रवादें जाणो ए अधिकार ॥ श्रीगुरु उ
पदेशें सिद्धचक्र उद्धार । प्रवचन अनुसारें जाण्यो
एह विचार; जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजं-
कार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्रे सरि सुखका-
र । सेवकनें आपैं सुख संपति परिवार । हिव निद्धि
उदयकरि चारित्र नंदी मन जाय । जिनचंद सूरि
सर खरतर पति सुपसाय ॥ इति ॥ नवपदस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्व जिनस्तुतिः ॥

डेंडेंकि धपमप धुधुमि धांधों धसकि धरधप धौ
 रवं । दोंदोंकि दोंदों दागिडदि दागिरुदिकि डमकि-
 डणरण डेणवं । ऊजिऊँकि ऊँऊँ ऊणणरणरण निज-
 कि निज जन रंजनं । सुरशैलशिखरे जवति सुखदं
 पार्श्व जिनपति मज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगि थोंगिनि
 किटति गिगरुदां धुधुकि धुटनटपाटवं । गुणगणण
 गुणगण रणकि ऐंऐं गुणणगुण गण गौरवं । ऊजिऊँकि
 ऊँऊँ ऊणण रणरण निजकि निज जन सज्जना । कल-
 यंति कमला कलितकलमल मुकलमीस महेजिनाः
 ॥ २ ॥ वूकि वूँकि वूँवूँ छिठछिक ठछिपट्टा ताड्यते ।
 तललोंकि लोंलों त्रैषित्रैषिनि मँषिमँषिनि वाद्यति ।
 उँउँ किउँउँ थुंगि थुं गिनिधोंगि धों गिनि कलरवे ।
 जिन मतमनंतं महिमतनुतानमतिसुरनर मुह्वे ॥ ३ ॥
 पुंदांकि पुषुदां पुषुरुदि पुंदां पुषुडदि दोंदों अंबरे,
 चाचपट चच पटरणकि ऐं ऐं ऋणण मँमँ मंबरे । तिहां-
 सरगमपधुनि निधपमगरस सस ससस सुरसेवता ।
 जिननाटयरंगें कुशल मनिशं दिसतु शासन देवता
 ॥ ४ ॥ इति ॥

वलि वलिहुं ध्यावुं गाऊं जिणवरवीर । जिण पर
 वपजूसण दाख्याधरमनी सीर । आसाढचोमासे हुं
 तीदिनपंचास । पडिक्कमणोसंवह्वरी करियेंत्रिणउप
 वास ॥ १ ॥ चोवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार ।

करियें जलजावें जरिये पुण्यजंडार । बलिचैत्यप्रवामें
फिरतां लाजअनंत । इह परबपजूसण सहुमें महि
मावंत ॥ १ ॥ पुस्तकपूजावी नव वाचनायें वचाय ।
श्रीकदपसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन
परजावन धूपअगर उखेवो । इम जवियण प्राणी
परबपजूसणसेवो ॥ ३ ॥ बलिसामी बच्छल करिये वारं
वार । केइ जावनाजावे केइ तपसी सीलधार । अड
दीहपजूसण इमसेवत आणंद । सुयदेवी सानिध
कहे जिनलाज सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपर्जु बणा
पर्व स्तुतिः ॥

अथ तीर्थ माला चैत्यवंदन.

सद्भक्त्यादेवलोके रविशशिशुवने व्यंतराणां नि
काये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तार काणां वि
माने, पाताले पन्नगेंडे स्फुटमणिकिरणध्वस्तसांड्रा
धकारे, श्रीम तीर्थकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चै
त्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढये मेरुशृंगे रुचकगिरेवरे कुंरु
ले हस्तिदंते, वक्षारे स्फूटनंदी श्वर कनक गिरे नै
षधे नीलवंते, चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्र
वाले हिमाद्रौ, श्रीम तीर्थकराणां ॥ २ ॥ श्रीशैले
व्यंध्यशृंगे विमलगिरिवरे अर्बुदे पावके वा, संमेते
तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले, सय्याद्रौ
चौंज्जयंते विपुलगिरिवरे गूर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीम
तीर्थकराणां ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमु

कुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटें विटपि घन
तटे देवकूटे विराटे, कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे
चक्रकोटे च जोटे, श्रीम तीर्थकराणां० ॥४॥ श्रीमाले
मालवे वा मलयनि निखिले मेखले पिहले वा, नेपाले
नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले मेहले वा, माहाले
कौशले वा विगलित सलिले जंगले वा तमाले, श्रीम
तीर्थकराणां० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे मगधजन-
पदे सप्रयागेतिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे
उडियाने च पुंड्रे, आद्रे मुद्रे पुलिंड्रे द्रविलकुवलये
कन्यकुब्जे सुराष्ट्रे श्रीम तीर्थकराणां० ॥ ६ ॥ चंपायां
चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चोंज्जयिन्यां, कौशाव्यां
कौशलायां कनकपुरवरे देवगिर्याचकाश्यां, नाशक्ये
राजगेहे दशपुरनगरे जहले तामलिह्यां, श्रीम तीर्थ-
कराणां० ॥ ७ ॥ स्वर्गेमर्त्येतरिक्षे गिरिशिखरहृदि
स्वर्नदीनीरतीरे शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलिने
भूरुहाणां निकुंजे, ग्रामेरण्ये वने वा स्थल जल विषमे
दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं, श्रीम तीर्थकराणां० ॥ ८ ॥ इत्थं
श्रीजैनचैत्य स्तव मिद मऽनिशं नक्तिजाजा स्त्रिसंध्यं,
प्रोद्य त्कदयाणहेतुः कलिमलहरणं ये पठंती ह नित्यं,
तेषां श्रीतीर्थयात्राफल मऽतिविपुलं जायते मानवानां,
कार्यं सिद्धं तथोच्चैः प्रजवति सततं चित्त मानंदका-
रि ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपदउत्ती करण विधिलिख्यते ॥

(प्रथम) आसोज शुदि ९ (अथवा) चैत्रसु-
दि ९ से उत्ती सुरू करें । (कदास) तिथि घटी
हुवे तो (६) से बढी होय तो आठिम से सुरू
करै । (पिण) आंबिल (ए) पूनिमताई करै । (तिहां)
प्रथम जूमि शुद्ध करके । मांरुणादिक से चित्रित
करै । पीठे बाजोट ऊपरि सिद्धचक्र थापे. त्रिकाल
पुजा करें । (सोलिखते हैं) प्रजात समय राई
पडिकमणो करिके । पीठै वस्त्र पडिलेहै । (जहां)
सिद्ध चक्र स्थापना हे (तहां) आयके पांच शक्र
स्तवे देव बाँदै । पीठै नव चैत्ये । (अथवा) नव
प्रतिमा आगे । नव चैत्यवंदण करै । वास क्षेप पूजा
करै । पीठे केसर चंदनसें पूजा करै । पीठे मध्याह्न
समय पांच शक्र स्तवे देव बाँदै । पीठे गुरु पास
आयके । राई आलोवे । अब्जुद्धिउमि खमायके
आंबिलनो पञ्चस्काण करै । प्रथम अरिहंत पदके
वरण सपेद है । (इससें) आंबिल में चावल (और)
गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं । औसो आंबिल
पचखके । पीठै अरिहंत पदके बारे गुण है सो चिं
तवि के बारै नमस्कार करै । सो लिखते हैं (प्रथम
सब ठिकाणें) इष्टामि खमासमणो । वं० इत्यादि
कहि के नमस्कार करै ॥

- १ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः।
- २ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ४ चामरयुग प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्यसंयुताय श्री० अरि० ।
- ६ जामंरुल प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ७ डुंडुजिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ८ षट्त्रय प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि० ।
- १० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरि ० ।
- ११ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि ० ।
- १२ अपायापगमातिशयसंयुताय श्रीअरि० ।

॥ इति द्वादश अरिहंतगुणाः ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करिके । अन्नत्थू ससियेणं ।
 (कहिके) (१२) वारे लोगस्सनो काजसगग करै । एकलो
 गस्स प्रगट कहै । पीठेस्वस्थानक जाके । चैत्यवंदन करै
 पचरकाण पारिकेआंबिल करै । पहले जल पीवे (जब)
 चैत्यवंदन करिके पीवे । पीठेफेर चैत्यवंदन करिके तिवि
 हार पचरकाण करै गुणणो(१०००)उँ ह्रीं एमो अरि
 हंताणं । इस पदको करै । श्रीपालका चरित्र नवपद
 महिमा सुणें । पूण पहिर दिन रहणेसैं (तीसरीवेर)
 पांच शक्रस्तवे देव वादै।सामायिक लेके दिन ठतेपम्कि
 मणो करै । आरतीके समय दीप धूप कुसम पूजा करै ।

(अथवा) पहिले आरती प्रमुख करिके । पीठे पङ्क्ति मणो करै । (सोणैके समय) इरिया बही पङ्क्तिमके चैत्यबंदन करिके राई संथारा गाथागुणके सोवै । निद्रा न आवे जहांतक नवपदका गुण स्मरण करै ॥ इति प्रथम दिवसविधिः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधिलि० ॥

॥ अब इसीतरे दूसरे दिन प्रजाति करणी सब करिके सिद्धपदको लालवर्ण है । (इसीसें) गहुंकी रोटीको अंबिल करै ॐ ह्रीं एमो सिद्धाणं (इसपदको) गुणणो दो हजार करै । सिद्धपदके आठगुण । सो (८) गुणों को गुरु नमस्कार करावे (सो लिखते हैं) ।

१ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः० ।

२ अनन्तदर्शन संयुताय श्रीसि० ।

३ अव्याबाध गुणसंयुताय श्रीसि० ।

४ अनन्तसम्यक्त चारित्रगुण संयुताय श्रीसि० ।

५ अक्षयस्थितिगुण संयुताय श्रीसि० ।

६ अरूपी निरंजनगुण संयुताय श्रीसि० ।

७ अगुरुलघु गुणसंयुताय श्रीसि० ।

८ अनन्तवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ।

॥ इतिसिद्धोंके अष्टौ गुणाः ॥

॥ यह आठे नमस्कार करिके । अन्नत्थूससि० आठलोगस्सनो काउसग्न करै । एकलोगस्स कहिके

पारै पीढे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसैं करै ॥ इति
द्वितीय दिवसविधिः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय दिवसविधि लि० ॥

॥ पूर्वोक्त विधिसैं प्रक्षतकर्त्तव्य करै आचार्यपद
पीढे वर्ण है (इसीसैं) चिणाकी दालका आंबिल
करै । (जैङ्गी हीं एमो आयरियाणं) इस पदको गु.
एणो दोहजार करै । आचार्य पदके (३६) गुण
याद करके ठत्तीस नमस्कार करै ।

॥ अथ आचार्य पदके (३६) गुण लि० ॥

- १ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- २ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ४ मधुरवाक्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ५ गांर्त्तार्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
- ७ उपदेश गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ८ अपरिश्रावी गुणसंयुताय श्रीआचा० ।
- ९ सौम्यप्रकृति गुणसंयुताय श्रीआ० ।
- १० शीलगुणसंयुताय श्री० ।
- ११ अविग्रह गुणसंयुताय श्री० ।
- १२ अविकथक गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- १३ अचपल गुणसंयुताय श्रीआ० ।
- १४ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ० ।

- १५ कृमागुण संयुताय श्रीआ० ।
- १६ कृजुगुण संयुताय श्रीआ० ।
- १७ मृडुगुण संयुताय श्रीआ० ।
- १८ सर्व संगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ।
- १९ द्वादश विधतपगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २० सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २३ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ० ;
- २४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २५ अनित्य जावना जावकाय श्रीआ० ।
- २६ असरण जावना जावकाय श्रीआ० ।
- २७ संसार स्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ।
- २८ एकत्व स्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ।
- २९ अन्यत्व जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३० अशुचि जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३१ आश्रव जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३२ संवर जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३३ निर्जरा जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३४ लोकस्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३५ बोधिदुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३६ धर्म दुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० । इति.

॥ इति षड्विंशदाचार्य गुणाः ॥

यह ठत्तीस नमस्कार करिके । अन्नन्नउससिएणं
(इत्यादि कहिके) ठत्तीस (३६) लोगस्सनो का
उसग्न करै । पारिके एक लोगस्स ऊंचै स्वरसैं
कहि यथोक्त करणी । अनुक्रमसैं करै । इति तृतीय
दिवस विधि ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीणमो उवझायाणं) इस पदको (१)
हजार गुणणो करै । हस्या मूंगकी दाक्ष प्रमुखनो
आंबिल करै । उपाध्याय पदके (१५) गुण याद
करि के । नमस्कार करै ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ उपाध्याय पदके १५ गुणलि० ॥

- १ आचारांगसूत्र पठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याये ज्योनम
- २ सुयगमांगसूत्र पठन गुणयुक्ताय श्रीउपाध्या०
- ३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुणयुक्ताय श्रीउ० ।
- ४ श्रीसमवायांगसूत्र पठगुण युक्ताय० ।
- ५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
- ६ श्रीज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय० ।
- ७ श्रीउपासकदशासूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
- ८ श्रीअन्तगडदशासूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
- ९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
- १० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठन यु० ।
- ११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण यु० ।

- १२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ।
- १३ आग्रायणी पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- १४ वीर्यप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- १५ अस्तिप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ताय० ।
- १६ ज्ञानप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ता० ।
- १७ सत्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
- १८ आत्मप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- १९ कर्म प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- २० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- २१ विद्याप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- २२ अबिध्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
- २३ प्राणायामप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
- २४ क्रियाविसाल पूर्व पठनगुण यु० ।
- २५ लोकविंदुसार पूर्व पठनगुण यु० ।

॥ इति पंचविंशति उपाध्याय गुणाः ॥

इस रीतसे पचवीस नमस्कार करे (खमाहोके)
अन्नत्थूस० इत्यादि कहिके पचवीस लोगस्सका का
उत्सग करे । पारके एक लोगस्स कहके । (पीठे)
पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति चतुर्थ दिवस विधिः ॥

अथ पंचमदिवस विधि.

॥ (उँ छी णमो लो ए सबसाहूणं) इस पदका
(१) हज्जार गुणना करे । साधुपद काले वर्णहे इस
से उडदका आंबल करे । सर्व साधुपदके सत्ताईस
गुण चिंतवके नमस्कार करे ॥ ॥ ॥

॥ अथ साधुपदके (३९) गुणलि० ॥

- १ प्राणातिपात विरमणव्रत गुण युक्ताय श्रीसाधवेनमः
- २ मृषावाद विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ३ अदत्तादान विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ४ मैथुन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ५ परिग्रह विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ६ रात्रिन्नोजन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- ८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- ९ तेजकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- १० वाजकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- ११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- १२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- १३ एकेंद्री जीवरक्षकाय श्रीसा० ।
- १४ बेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १६ चौरिंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १७ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १८ लोचनिग्रहकारकाय श्रीसा० ।
- १९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ।
- २० शुभ्रजावना जावकाय श्रीसा० ।
- २१ प्रतिद्वेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ।
- २२ संयम योगयुक्ताय श्रीसा० ।

२३ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।

२४ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।

२५ कायगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।

२६ सीतादि द्वाविंशति परीसहसहण तत्पराय० ।

२७ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ।

॥ इति सप्तविंशति साधु गुणाः ॥ ५ ॥

इस रीतसें सतावीस नमस्कार करै । (खडा हो के अन्नब्रू स० (इत्यादि कहिके) सातवीस लोग स्सकाकाउस्सग करै । पारके एक लोगस्स कहके (पीठे) पूर्वोक्तकरणी करै । (यह पंच परमेष्टि पदके सब गुण मिलाएँ सें (१०८) होय (इसीसें) मालाके दाणे (१०८) होते हैं । इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधिलि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स) इस पदको (१) हज्जार गुणनो करै । दर्शनपद सपेदवर्णहे (इससें) तंडुलका आंबिल करै । सम्यक्तके समुत्तिगुण चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके समुत्ति जेदलि० ॥

१ परमार्थ संस्तवरूप श्री सदृशनाय नमः ।

२ परमार्थ ज्ञातृसेवनरूप सदृशनाय नमः ।

३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप सदृशनाय नमः ।

४ कुदर्शन वर्जनरूप सदृशनाय नमः ।

- ५ शुश्रषारूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ६ धर्मरागरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ७ वैयावृत्तरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ८ अर्हद्विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ९ सिद्धविनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १० चैत्यविनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ११ श्रुतविनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १२ धर्मविनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १३ साधुवर्ग विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १४ आचार्य विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १५ उपाध्याय विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १६ प्रवचन विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १७ दर्शन विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १८ संसारे जिनमतसार मिति चिंतनरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १९ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतन० ।
- २० संसारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति० ।
- २१ शंका दूषण रहिताय सद्वर्शनाय नमः ।
- २२ कांक्षा दूषण रहिताय सद्वर्शनाय नमः ।
- २३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय० ।
- २४ कुदृष्टि प्रसंसा दूषणरहिताय० ।
- २५ तत्परिचय दूषण रहिताय० ।
- २६ प्रवचन प्रज्ञावकरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- २७ धर्मकथा प्रज्ञावकरूप सद्वर्शनाय नमः ।

- २० वादी प्रज्ञावक० स० ।
- २१ नैमित्तिक प्रज्ञावक० स० ।
- २२ तपस्वी प्रज्ञावक० स० ।
- २३ प्रज्ञायादि विद्या ज्ञातृप्रज्ञावक० स० ।
- २४ चूर्णा जनादि सिद्धप्रज्ञावक० स० ।
- २५ कविप्रज्ञावकरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- २६ जिनशासने कौसल्यता जूषण० स० ।
- २७ प्रज्ञावना जूषणरूप स० ।
- २८ तीर्थसेवा जूषण० स० ।
- २९ स्थैर्यता जूषणरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ३० जिनशासने जक्ति जूषण० ।
- ३१ उपशम गुणरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ३२ संवेग गुणरूप श्रीस०
- ३३ निर्वेद गुणरूप श्रीसद्वर्शनाय नमः ।
- ३४ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ।
- ३५ आस्तिक्यता गुणरूप श्रीस० ।
- ३६ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ।
- ३७ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जन० श्रीस०
- ३८ परतीर्थकादि आलाप वर्जन० ।
- ३९ परतीर्थकादि संलाप वर्जन० ।
- ४० परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन० श्रीस० ।
- ४१ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि श्रेष्ठ वर्जन० श्रीस० ।
- ४२ राजाजियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।

- ५१ गणान्नियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
 ५२ बलान्नियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
 ५३ सुरान्नियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
 ५४ कांतारवृत्त्याकार युक्ताय श्री० ।
 ५५ गुरु निग्रहाकार युक्ताय श्रीस० ।
 ५६ सम्यक्त चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतन० श्री० ।
 ५७ चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमितिचिंतन० श्रीस० ।
 ५८ चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन० श्रीस० ।
 ५९ चारित्र धर्मस्याधारमिति चिंतन श्रीस० ।
 ६० चारित्र धर्मस्य त्राजनमिति चिंतन० श्री० ।
 ६१ चारित्र धर्मस्य निधिसन्निभमिति चिं० श्रीस०
 ६२ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान यु० श्रीस० ।
 ६३ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ।
 ६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान यु० ।
 ६५ सचजीव कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्था० ।
 ६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान यु० ।
 ६७ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धानस्थान यु० श्री० ।

॥ इति सप्तषष्टि दर्शनस्य गुणाः ॥

॥ इस रीतिसें समस्त नमस्कार करै । (खना-
 होके) अन्नत्थू ससि एणं० (इत्यादि कहिके) (६७)
 लोगस्स (अथवा) उ लोगस्स नो काउस्सग्ग करै ।
 एक लोगस्स कहके । (पीठे) पूर्वोक्त करणी
 करै ॥ इति षष्ठ दिवस विधिः ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं नमो नाणस्स) इस पदको (१) ह
गुणनो करै । ज्ञानपद उज्ज्वल वर्ण । तंडुलका
आंबिल करै । इक्कावन जेद ग्यानपदके चितवके
नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके (५१) जेदलि० ॥

- १ स्पर्शनेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- २ रसनेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ३ घ्राणेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ४ श्रोत्रेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ५ स्पर्शनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ६ रसनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ७ घ्राणेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ८ चक्षुरिंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ९ श्रोत्रेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- १० मनःस्थानावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ११ स्पर्शनेंद्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १२ रसनेंद्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १३ घ्राणेंद्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १४ चक्षुरिंद्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १५ श्रोत्रेंद्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १६ मनः करी ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १७ स्पर्शनेंद्रीय अपाय मतिज्ञानाय नमः ।

- १८ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 १९ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
 २० चक्षुरिंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 २१ श्रोत्रेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 २२ मनेकरी अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 २३ स्पर्शनेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
 २४ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 २५ घ्राणेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
 २६ चक्षुरिंद्री धारणा मति० ।
 २७ श्रोत्रेंद्रीधारणा मति० ।
 २८ मनो धारणामति ज्ञानाय नमः ।
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३२ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३३ सम्यक् श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३४ मिथ्या श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३७ सपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३८ अपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३९ गमिक श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ४० अगमिक श्रुतज्ञानाय नमः ।

४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ।

४२ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ।

४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ।

४४ अननुगामि अवधिज्ञानाय नमः ।

४५ वर्द्धमान अवधि० ।

४६ ह्रियमान अवधि० ।

४७ प्रतिपाती अवधि० ।

४८ अप्रतिपाती अवधि० ।

४९ रुजुमति मनः पर्यवज्ञाय नमः ।

५० विपुलमति मनः पर्यवज्ञानाय नमः ।

५१ लोकालोक प्रकाशक श्री केवलज्ञानाय नमः ।

॥ इति एकपंचासत ज्ञानभेदाः ॥

इस रीतसें (५१) नमस्कार करै । (खरूा होके)
अन्नतथ उससिएण० (इत्यादि कहै) (५१) लोग
स्सके काउ सगग करिके । प्रगट लोगस्स कहै । पीठे
सब पूर्वोक्त करणी करै । इतिसत्तम दिवस विधिः ॥७॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं एमो चारित्तस्स) इस पदको (१)
हजार गुणनो करै । चारित्रपदका उज्ज्वल वर्णहे । (इ-
सीसें) तंडुलका आंबिल करै । सित्तर भेद चारि-
त्रपदके । चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ चारित्रपदके (७०) भेदलि० ॥

१ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्राय नमः ।

- १ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ।
- २ अदत्तादान विरमणरूप चारित्राय नमः ।
- ३ मैथुनविरमणरूप चारित्राय० ।
- ४ परिग्रह विरमणरूप चारित्राय० ।
- ५ क्षमा धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- ६ आर्यव धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- ७ मृदुता धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- ८ मुक्ति धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- ९ तपो धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- १० संयमधर्मरूप चारित्रेज्यो नमः ।
- ११ सत्यधर्म रूप चारि० ।
- १२ सौच धर्मरूप चारि० ।
- १३ अकिंचनधर्मरूप चारि० ।
- १४ ब्रह्मचर्यधर्मरूप चारि० ।
- १५ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेज्यो नमः ।
- १६ उदग रक्षासंयम चारि० ।
- १७ तेज रक्षा संयम चारि० ।
- १८ वाज रक्षासंयम चारि० ।
- १९ वनस्पति रक्षासंयम चारि० ।
- २० बेइं ड्री रक्षासंयम चारि० ।
- २१ तेइं ड्री रक्षासंयम चारि० ।
- २२ चौरिं ड्रीरक्षा संयम चारि० ।
- २३ पंचेन्द्री रक्षासंयम चारि० ।

- २५ अजीव रक्षासंयम चारि० ।
 २६ प्रेक्षासंयम चारि० ।
 २७ उत्प्रेक्षासंयम चारि० ।
 २८ अतिरिक्तवस्त्रजक्तादिपरठणत्यागरूपसंय चारि० ।
 २९ प्रमार्जन रूप संय चारि० ।
 ३० मनसंयम चारि० ।
 ३१ वाक्संयम चारि० ।
 ३२ कायासंयम चारि० ।
 ३३ आचार्य वैयावृत्त्यरूप संयम चारि० ।
 ३४ उपाध्याय वैयावृत्त्यरूप संयम चारि० ।
 ३५ तपस्वी वैयावृत्त्य रूप चारि० ।
 ३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्त्य रूपचारि० ।
 ३७ गिलाणसाधु वैयावृत्त्यरूप चा० ।
 ३८ साधु वैयावृत्त्यरूप चारि० ।
 ३९ श्रमणोपासक वैयावृत्त्यरूप चा० ।
 ४० संघ वैयावृत्त्यरूप चारि० ।
 ४१ कुल वैयावृत्त्यरूप चारित्रे० ।
 ४२ गण वैयावृत्त्य रूप चारि० ।
 ४३ पशुपंरुगादि रहित वशति वसण ब्रह्मगुप्तचारि० ।
 ४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
 ४५ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
 ४६ स्त्रीश्रंगोपांग निरीक्षणवर्जन ब्रह्म० ।
 ४७ कुड्यंतर सहित स्त्रीहाव जावश्रवण वर्जन ब्रह्म० ।

- ४० पूर्वस्त्रीसंज्ञोग चिंतनवर्जन ब्रह्म० ।
 ४१ अति सरसआहार वर्जन ब्रह्म० ।
 ५० अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ।
 ५१ अंग विज्रूषावर्जन ब्रह्म० ।
 ५२ अणसण तपोरूप चा० ।
 ५३ ऊणोदरी तपो रूप चा० ।
 ५४ वृत्तिसंक्षेप तपोरूप चा० ।
 ५५ रसत्याग तपो रूप चा० ।
 ५६ कायकिल्बेस तपोरूप चा० ।
 ५७ संक्षेखणा तपोरूप चा० ।
 ५८ प्रायश्चित्ततपो रूपचा० ।
 ५९ विनय तपोरूप चा० ।
 ६० वेयावच्चतपो रूप चा० ।
 ६१ स्वाध्यायतपो रूप चा० ।
 ६२ ध्यानतपो रूप चा० ।
 ६३ उपसर्ग तपो रूप चा० ।
 ६४ अनंत दान संयुक्त चा० ।
 ६५ अनंत दर्शन संयुक्त चा० ।
 ६६ अनंत चारित्र संयुक्त चा० ।
 ६७ क्रोधनिग्रह करण चा० ।
 ६८ माननिग्रह करण चा० ।
 ६९ मायानिग्रह करण चा० ।
 ७० लोभनिग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः ।

॥ इति सित्तर चारित्र जेदाः ॥

॥ इस रीतसें (७०) नमस्कार करै । (खडा हो के) अन्नथू ससि एणं० (इत्यादि कहै) (७०) लोगस्सका काउसग्ग करिके । एक लोगस्स कहै । (पीठे) पूर्वोक्त करणी सब करै । इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधिलि० ॥

॥ (उँ ऊँ एमो तवस्स) इस पदको (१) ह्-
ज्जार गुणनो करै । तपपदके उज्जन वर्ण (इसीसें)
तंडुलका आंबिल करै । पच्चास जेद तपपदके चिंत
वके नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपदके (५०) जेदलि० ॥

- १ यावत कथिक तपसे नमः ।
- २ इत्वर तपजेद तपसे नमः ।
- ३ बाह्यज्जणोदरी तपजेद तपसे नमः ।
- ४ अन्त्यंतर ज्जणोदरी तपजेद तपसे नमः ।
- ५ अव्यतप वृत्तिसंदेप तपजेद तपसे नमः ।
- ६ क्षेत्रतप वृत्तिसंदेप तपजेद तपसे नमः ।
- ७ कालतप वृत्तिसंदेप तपजेद तपसे नमः ।
- ८ जावतप वृत्तिसंदेप तपजेद तपसे नमः ।
- ९ कायक्केस तपजेद तपसे नमः ।
- १० रसत्याग तपजेद तपसे नमः ।
- ११ इंद्री कषाय जोग विषयक संलोणता तपसे नमः ॥

- १२ स्त्रीपशुपंडकादि वर्जितस्थान अवस्थित संखी० ।
 १३ आलोयण प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
 १४ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
 १५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
 १६ विवेक प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
 १७ उपसर्ग प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
 १८ तप प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
 १९ जेद प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
 २० मूल प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
 २१ अणवस्थित प्रायश्चित्त उपसे नमः ।
 २२ पारंक्षिय प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
 २३ ज्ञान विनयरूप तपसे नमः ।
 २४ दर्शन विनयरूप तपसे नमः ।
 २५ चारित्र विनयरूप तपसे नमः ।
 २६ गुर्वादिक मनविनयरूप तपसे नमः ।
 २७ वचनविनयरूप तपसे नमः ।
 २८ काय विनयरूप तपसे नमः ।
 २९ उपचारिक विनयरूप तपसे नमः ।
 ३० आचार्यवेयावच्च तपसे नमः ।
 ३१ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः ।
 ३२ साधु वेयावच्च तपसे नमः ।
 ३३ तपस्वी वियावच्च तपसे नमः ।
 ३४ लघुसिष्यादि वेयावच्च तपसे नमः ।

- ३५ ग्लान साधु वेयावच्च तपसे नमः ।
 ३६ श्रमणोपासक वेमावच्च तपसे नमः ।
 ३७ संघ वेयावच्च तपसे नमः ।
 ३८ कुल वेयावच्च तपसे नमः ।
 ३९ गण वेयावच्च तपसे नमः ।
 ४० वायणा तपसे नमः ।
 ४१ प्रवृत्ता तपसे नमः ।
 ४२ परावर्त्तना तपसे नमः ।
 ४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ।
 ४४ धर्म कथा तपसे नमः ।
 ४५ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नमः ।
 ४६ रोद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः ।
 ४७ धर्मध्यान चिंतन तपसे नमः ।
 ४८ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः ।
 ४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ।
 ५० अज्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ।

॥ इति पंचासत् तपज्ञेदाः ॥

॥ इस रीतसे (५०) नमस्कार करै । (खना होके) अन्न उतसि एणं (इत्यादि कहै) (५०) खोगस्सके काउस्सग्ग करिके । एक खोगस्स कहै । (पीठे) पूर्वोक्त करणी करे । इति नवम दिवस विधि ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणें कों गुरुके पास
जाणेंकी विधि लि० ॥

॥ प्रथम शुच दिन शुच घडी देखके । अष्टा
वस्त्र आचूषण पहरे । ब्रह्मारुमे तिलक करे । दोव ।
सरखुं । मस्तकमें धारण करे । हाथके मोली बांधके ।
अक्षत । सुपारी । श्रीफल । नेवेद्य । यथाशक्ति रोक
नाणो लेके । नवकार गुणतो थको । गुरुके पास जा-
वे । द्वादशावर्त बांदणा करके । ज्ञान पूजा करे पीठे
बहुत प्रमोदवंत होके । गुरुके मुखसे तप ग्रहण करे.

॥ अथ संक्षेप ऊजमणाविधि लि० ॥

॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रका मंडल करै ।
सिद्धचक्रजी के चौतरफ तीन गढ चूरीके आकार
बनावै पहिलै गढमांहे । अष्टदल कमलके आकार
नव पद स्थापन करै । पद पद के वर्ण गुण प्रमा
णै । रक्तादिक चढावे । (और) पंचवर्णके धान्य ।
नवनालेर प्रमुखके गोटा रंगके । जिसपदके जैसे
वर्णके होइ (तैसे ही) रंगका गोला चढावै । पंच
वर्णी (ए) धजा चढावै । दूसरै बलयमें । सोले श्री
फल (अथवा) पूंगी फल चढावै । तीसरै बलयमें
(४०) बुहारा खारक चढावै । नव निधानके ठिकाणें (ए)
नव बडा फल चढावै दश दिग्पाल । नवग्रहकों ।
पक्वान्न प्रमुख चढावै । इत्यादिक विधिसंयुक्त । सिद्ध
चक्र स्थापना । घर देहरासर आगे करै । और जि

नमंदिर मांहे । बाह्य मंरूपै ५ ॥ ७ हाथ प्रमणें मंडल रचना करै । विस्तारसैं सब विधि गुरुके वचन सैं करके । नव पदजी की पूजा पढायके कलस ढालै । धवल मंगल गीतगान गावे । वाजिल वजावे । (इसी तरे) महामोहव्रत । उदारचित्तसैं करे । मंगल दीप आरती प्रमुख करे । दुसरे दिन विसर्जन करे । इति संक्षेप सिद्धचक्र मंरूप विधिः ।

उद्यापनमें ज्ञान जक्तिके कारण । ९ पूठा । ९ । बीटांगणा । ९ पुस्तक ९ लेखण । ९ ठवणी । नव तोरण । ९ रुमाल । ९ दोरा । ९ कटासणा । ९ आपना ९ चंद्रआ । ९ पूठिआ । ९ आरती ९ । कलश ९ जापमाला । ९ मंदर । ९ प्रतिमा । ९ तिलक । ९ मुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज बणावे । शक्ति न होय तो यथाक्तै रोकनाणो चढावै । देव पदको देवद्रव्यमें देवे । गुरु पदको गुरु कों देवे । ग्यानपद को ग्यानखाते लगावे । इत्यादिकयथाजोग्य शुभ क्षेत्रें खरच करे । इति सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापनविधिः ॥

॥ अथ बीस स्थानक तपकरण विधि लि० ॥

॥ तिहां प्रथम सुज महूर्त्तके दिन । नंदी स्थापना पूर्वक । सुविहित गुरुके समीप । बीस स्थानक तप । विधि पूर्वक उच्चरे । उंली दो माससैं लेके (या वत्) ठम्मामें पूरी करे । (कदाचित्) ठम्मामें मध्ये

पूरी न कर सके (तो) वा उल्टी गिणती में । न हों । और नवी करणी पडे । एक उल्टीके वीस पद हे (तिहां) कोई वीस दिनसें । वीसों पद जूदा २ गिणें । कोई वीसों दिन में एकज पद गिणें । दूसरे वीसों दिनमें दूसरो पद । (ऐसें) वीसों पदकी वीस उल्टी करे । तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत । अष्ठम तप करिकें आराधे । वीस अष्ठमें एक उल्टी होय । ऐसें वीसउल्टी (४००) अष्ठमें आराधे । और तिसमें हीनशक्ति ठठ तप करके आराधें । तिससें हीनशक्ति चौविहार उपवास करके आराधे । तिससें हीन शक्ति त्रिविहार उपवास करके आराधे । हीन शक्ति आंबिल (तथा) त्रिविहार एकासण करके आराधे । तिहां शक्तिवान प्राणी । सब तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे । (हीन शक्ति) दिन पोसह करे । वीसों पद पोसह सेती आराधे (जो) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो (तो) आचार्य पदे १ उपाध्याय पदे २ शिवर पदे ३ साधू पदे ४ चारित्र पदे ५ गौतम पदे ६ तीर्थ पदे ७ यह सात थानक तो पोसहज करके आराधे । तथापि शक्ति नही (तो) तिस दिन देसावगासिक करे । सावद्य व्यापार त्यजे । सो पिण न होइ (तो) यथाशक्ति तप करी आराधे । अपणी हीनताजावे (तथा) मृतक जातक का सूतकमें उ

पवासादि तप गिणै न जावे । स्त्रीयां पिण ऋतु समय का तप न गिणै (तथा) तपके दिन पोसह सहित करे (तो) बहोत श्रेयकारी हे । सो नहीं होसके (तो) तपके दिन उन्नय टंक पक्कमणा करे । तीन टंक देव बंदन करे । दो सहस्र (१०००) एक पदका जप करे । ब्रह्मचर्य पाळे । जूमि शयन करे । तपके दिन अतिसावय्य आरंज व्यापार न करे । असत्य न बोळे । सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहे । (तथा) तपके दिन पोसह करे । (तो) पारणै के दिन जिन जक्ति करके पारणो करे । करावे । जावना जावे । (तथा) तपकै दिन पदके गुण जेद प्रमाण संख्याइं काउसग्न करे । (ता वन्मात्र) तिणकेगुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वं दनाकरे । उस पदका महिमा गुण याद करके उदात्त खरे स्तवना करे । हर्षित रहे ॥

॥ अब बीस स्थानक गुणनो और काउसग्नका प्रमाण लिखते है ॥

॥ (एमो अरिहंताणं) (१०००) गुणनो । लोगस्स ११ काउसग्न ॥ १ ॥ (एमो सिद्धाणं) (१०००) गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्न ॥ २ ॥ (एमो पवय णस्स) (१०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ७ काउसग्न ॥ ३ ॥ (एमो आचरियाणं) (१०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ काउसग्न ॥ ४ ॥

(एमो थेराणं) (१०००) दो हज़ार गुणनो ।
 लोगस्स १५५ काउसग्ग ॥ ५ ॥ (एमोउवज्जायाणं)
 दो हज़ार गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ ६ ॥
 (एमो लोए सव्वसाहूणं) (१०००) गुणनो । लो
 गस्स १७ काउसग्ग ॥ ७ ॥ (एमो नाणस्स) १०००
 गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ ८ ॥ (एमो दंस
 णस्स) (१०००) गुणनो । लोगस्स ६७ काउसग्ग
 ॥ ९ ॥ (नमो विनयसंपन्नाणं) (१०००) गुण
 नो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥ (एमो चारित्रिस्स)
 (१०००) गुणनो । लोगस्स ६ काउसग्ग ॥ ११ ॥
 (एमो बंजवयधारीणं) (१०००) गुणनो । लोग
 स्स ९ काउसग्ग ॥ १२ ॥ (एमो किरियाणं)
 (१०००) गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ १३ ॥
 (एमो तवस्सीणं) १००० गुणनो । लोगस्स १२
 काउसग्ग ॥ १४ ॥ (एमो गोयमस्स) १००० गुण
 नो । लोगस्स १८ काउसग्ग ॥ १५ ॥ (एमो जि
 णाणं) १००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥ १६ ॥
 (एमो चरणस्स) दो हज़ार गुणनो । लोगस्स
 १२ काउसग्ग ॥ १७ ॥ (एमो नांणस्स १००० गुण
 नो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ १८ ॥ (एमो सुअना
 णस्स) १००० गुणनो लोगस्स १० काउसग्ग ॥ १९ ॥
 (एमो तित्थस्स) १००० गुणनो । लोगस्स ५ का
 उसग्ग करे ॥ २० ॥ इतिवीस स्थानिक गुणनो संपूर्ण ॥

इत्यादि विधिसंयुक्त बीसों उलीमें सब पदके उन्नव महोन्नव प्रज्ञावना ऊजमणा पूर्वक करे । जिन साशनके उन्नति के कारण करे । इतनी शक्ति न हो (तो) एक उली (तो) विशेष उन्नवादि सहित करणी चाहिये ॥ इहां विधि प्रपाक ग्रंथसे बीस स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्र लिखी है (जो) गुरुको संयोग हय । तबतो बिस्तारसे बीसों पदकी जूदी विधि । गुरुके मुखसे समझके करे जो गुरुका जोग न हो (तो) विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके बीस स्थानक तप सेवन करे । बीस स्थानक तवन पढे (वा) सुणें । बीस स्थानकजी की पूजा करावे । अपनी शक्ति माफक बीस बीस ज्ञानोपगरण करावे । देव पदको देव खाते लगावे । ज्ञान पदको ज्ञान खाते लगावे । गुरु पदको गुरु महाराजको देवे । सब तीर्थों की यात्रा करे । साहमी बहल करे. ॥ इति बीसस्थानक तप विधि समाप्ता ॥

॥ मोक्ष करंडक तप ॥ उपवास, आयं बिल, नीवी, एकाशना, पुरिमहु ए एक उली हुइ ऐसे पांच बार उली करनेसे पच्चीस दिनसे यह तप पुरा करना. इसमे नमो सिद्धाणं पदकी बीस नवकारवाली गुणनी. उद्यापनमे एक रुब्बेमें नैवेद्य जरके जिनमंदिरमें ढोकना पूजा पढानी. ॥

स्वर्ग करंरुक तप ॥ प्रथम बारे एकाशना, नव नी-
वी, पांच आयंबिल्ल, एक उपवास, ऐसे २७ दिनसे यह
तप पुरा होता हे. सिद्धाणं पदका गुणणा गुनना ॥

॥ सौजाग्य सुंदर तप ॥ एक उपवास और एक
आयंबिल्लकी एक उल्ली. ऐसे सोढे उल्ली करनी अ-
र्थात् बत्तीस दिनसे यह तप पूरा करना ॥ सिद्ध
पद गुणना ॥ उद्यापन उपर प्रमाणे करना.

॥ चोसठिया तप ॥ एकासना आयंबिल्लकी एक
उल्ली एसी बत्तीस उल्ली करनेसे तप पूरा होय ॥
इस्मे सिद्धाणं पद गुणणा ॥

॥ अष्टाहिका तप ॥ एकेक जिनवरके पांच पां-
च कढ्याणक के एकासने करनेसे चोवीस जिनके
ए६० एकासने करने ॥ जिस तीर्थकरका कढ्याणक
होवे उसी जिनके नामकी नवकारवाली बीस गु-
णनी । यह कढ्याणक तप जेसा तप हे. परं अनु-
क्रम जिन हे ॥ उद्यापनमे चोवीश प्रकारके पकान्न
चोवीश तिलक, प्रभुजिके सन्मुख रखना ॥ संघ
पूजा करनी ॥

॥ ठन्नुजिन तप ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान मी
लके तीन चोवीशी तथा सीमंधरादिक बीश विहर
मान जिन और चार शाखते जिन मील ठन्नु जिन
आश्रयि एकेक उपवास करना और तिस तिस जि
नके नामकी नवकार वाली गुणनी. ठन्नु दिनसे यह

तप पूरा होता है. उद्यापनमे ठन्नवे मोदक मंदिरमें ढोकना गुरु जक्ति करना.

॥ अष्टमी तप ॥ अष्टमी अष्टमीके दिन उपवास अथवा आयंबिल करके आराधना करनी. उद्यापनमे दूधसे जरा हुवा कलसके उपर श्वेत वस्त्र ढांकके तिसके उपर सकरके आठ मोदक रखके और झानोपकरण सहित कर्म क्षय निमित्त प्रतिमा वा पुस्तककी पास रखनेसे उद्यापन होताहै. इसमे तपके दिन चंद्रप्रज्ञ जिनाय नमः ए गुणना गुणना॥

॥ अष्टापद पाहुडी तप ॥ आशोज अष्टमीसे पूर्णिमा तक आठ दिन एकाशना करना ॥ अष्टापद तीर्थायनमः ए पद गुणना उद्यायनमें जिन पूजा पढावी और नैवेद्यादिक ढोकन करना ॥

॥ अशोक वृद्ध तप ॥ आशोजके मासमें एक उपवास एक एकासणा एसे तीस दिनका यह तप है. सिद्धपदको गुणना. उद्यापनमे अशोक वृद्ध चांदिका बनाके मंदीरमे स्थापनकर पूजा पढानी.

॥ चांद्रायण तप ॥ सुदि प्रतिपदासे एक उपवास एक आयंबिल एसे पनरादिनका यह तपहै. सिद्धपद गुणना. उद्यापनमे पनरे लामु और चांदीकी चंद्र मूर्ति मंदरमे रखे और पूजा पढावे ॥

॥ सूरायन तप ॥ कृष्ण पक्षके प्रतिपदासे उपवास आयंबिल पनरेदिन तक करे. सिद्धाणं पद गूणे.

उद्यापनमें पनर लाख और सोना अथवा चांदीकी सूर्य मूर्ति रखके पूजा पढावे ॥

॥ तीर्थकर वर्द्धमान तप ॥ यह तप आयंबिल अथवा नीवीसे किया जाताहै. प्रथम तीर्थकरका एक आयंबिल, दुसरे के दो, तीसरेके तीन चोथेके चार चोवीसमे के चोवीस करने. फिर चोवीसमेका एक, तेवीसमे के दो, बाईसमें के तीन यों पहिले जगवानके चोवीस आयंबिल करे. जो जो जगवानकी उल्टी होय उसके नामकी नवकारवा ली गुणे और पूजा करे. उद्यापनमे नैवेद्य चढावे । संघ पूजा करे देवगुरु जक्ति करे.

॥ जैन जनक तप ॥ निरंतर बत्तीस आयंबिल करनेसें यह तप पूरा होता है । उद्यायनमे बडे ठा उमाष्ठसे जिन पूजा करनी ॥

॥ निगोदायुद्दय तप ॥ एक उपवास एकासणा दो उपवास एकासना. तीनउपवास एकासना. दो उपवास एकासना० एक उवववास एकासना. सिद्ध पद गुणना । उद्यानमें. चौंदा मोदक वाटने और चौदा मोदक मंदरजीमे चढाने और पूजा करानी ॥

॥ कमल उल्टीतप ॥ एकांतर आठ उपवासकी एक उल्टी करनी एसी नव उल्टी एकहि वर्षमे कर नी चहीये. सिद्धपद गुणणा और उद्यापनमे सोना चांदीके नव नव कमल ढोकना गुरुजक्ति करनी.

॥ मेरु कल्याणक तप ॥ एक तेला एक बिआसणा एक तेला एक बिआसणा ऐसे तीन तेले करने. पीठे एकांतर ठे उपवास करना. पारणोके दिन बिआसना करना० जो पहिले तीन तेला न कर शके तो पहिले दों तेले करके बीचमे ठ उपवास कके ठेला एक तेला कर देवें. परं यहसब एकहि वर्षमें करना. इसमे यह नियमहेकी मेरु त्रयोदशीके दिन ठेला तप होना चाहिये. इसमे श्रीकृषदेव पारंगताय नमः ए पद गुणना चाहिये. यथाशक्ती उद्यापन अवश्य करना चाहिये.

॥ ठठ तप ॥ इसमे ११९ बेला करना और पारणामे बिआसणा करणा. सब मील इसके ४५८ उपवास गिने जाते हे. सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे ४५८ मोदक ढोकना.

॥ पद कर्मी तप ॥ पहिले एक उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा. ॥ प्रथम जंझी ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा. ॥ दुसरी जंझी ॥ एक उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. तीन उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा. ॥ तीसरी जंझी ॥ एक उपवास पारणा. दो उपवास पारणा तीन उपवास पारणा. चार उपवास पारणा. तीन उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास

पारणा. सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे मोति और
प्रवाल चढावना । पुजा पढाना गुरुभक्ति करना ॥

सिद्धि वधू कंठाक्षरण तप ॥ प्रथम दो. उपवास
(बेला) पारणा. एक उपवास पारणा. तीन उपवास
पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा
एसे नव उपवास करनेसे तप पूरा होता हे. सि,
रूपद गुणना गुरु ज्ञान भक्ति करना ॥

॥ रत्नारोहण तप ॥ एकाशन एक, नीवी एक.
आयंबिल एक उपवास एक ॥ प्रथमावली ॥ नीवी,
आयंबिल, उपवास, एकासन. ॥ द्वितीयावली ॥ आ
यंबिल, उपवास, एकाशन, नीवि. तृतीयावली ॥ उ,
पवास, एकासन, नीवी, आयंबिल ॥ चतुर्थावली ॥
एक उपवास विगई, निविता रहित नीवी, आयंबि-
ल ॥ पंचमावली ॥ इसतरे पांच आवलीसे रत्नारोह
ण तप होता हे. सिद्धपद गुणना. उद्यापनमें रत्नम-
य नवकारवाली पांच, रत्नमय स्थापनाचार्य पांच,
रत्नमय जिन बिंब पांच, मोदक बीस, इतनी वस्तु
पुस्तकके पास ढोकना. तप के दिन ब्रह्मचर्य पाल
ना. ज्ञान दर्शन चारित्रिका आराधन करना. पार-
णाके दिन गुरु भक्ति करनी. अष्ट प्रकारी पूजा क-
रनी. इस तपसे संतान प्राप्ती होती हे. गर्जश्राव
होना बंध होता हे. आशोज सुदिपंचमीसे ए तप
सरु करना.

॥ आगमोक्त केवली तप ॥ आयंबिल निरंतर दश, उपर एक उपवास, सिद्धपद गुणणा. उद्यापन में इग्यारे मोदक, इग्यारे श्रीफल, पुस्तकके पास ढोकना. अष्टप्रकारी पूजा पढानी गुरु जक्ति करनी॥

॥ अंगविशुद्धी तप ॥ आयंबिल तीन, नीवी ती न, एकासणा तीन, एक उपवास अंतमे करना. सिद्धपद गुणणा. उद्यापनमे तेरे तेरे वस्तु पुस्तक के आगे ढोकना पूजा पढानी गुरु जक्ति करनी.

॥ पद्मोत्तरतप॥नव पांखडीके कमलकों पद्मकह-तेहे. इस्मे नव उली करनी चहिये. एकेक उली के निरंतर अथवा एकांतर आठ आठ उपवास करना. एसी नव उली करनी. सिद्धपदगुणणा. उद्यापनमें अष्ट दल कमल सुवर्णका अथवा चांदी-का नया बनाकर बिचमे गौतमस्वामीकी प्रतिमा-का आकार करके स्थापन करना और अष्ट प्रकारी पूजा करना. श्रीसंघ औरगुरुजक्तिकरे. ॥

॥ गणधरतप॥वर्धमान स्वामीके इग्यारे गणधरके इग्यारह उपवास अथवा आयंबिल करना. उनके नामकी नवकार वाली गुणना. उद्यापनमे गुरुको इग्यारह वेश (चारित्र्योपकरण) बेहेराना. संघ-जक्ति गुरुजक्ति और पूजा पढानी.

॥ माणिक्य प्रस्तारिका तप ॥ आशोज सुदी इ-ग्यारसको उपवास. बारसकों एकासणा. तेरसकी

नीवी. चौदशका आयंबिल. पुनमका उपवास-
करना. पाठांतरमे दुसरी रीती यहहे की आशोसुदी
बारसका आयंबिल. तेरसकी नीवी. चौदशका ए-
कासणा. पुनमका उपवास. पुनमके उपवासके दिन
उद्यापन करना सो यहरीतसे की पुनमके दिन
सूर्योदय पहिले पवित्रहोके अपनी पसलीमे
आचूषण श्रीफल, अक्षत लेके वाजित्रादि महोत्सव
पूर्वक जिनप्रसादमे जाना. प्रथम प्रदक्षिणा करके
उपरोक्त वस्तु ढोकना. दुसरी प्रदक्षिणामें विजोरा
ढोकनां. तीसरी प्रदक्षिणामे तांबूलपत्र सहित सुपारी
ढोकनी. चतुर्थ प्रदक्षिणामे ठकमो (डव्य) ढोकना.
सात जातिके धान ढोकनां. लवण. कापर. कसुंब. क-
पास. पुरी १०८ तांबे पीतलका बेहेमा ढोकनां. ए-
कसो सोखे दीपक करने. एक दीपकमे चांदीकी
दीवट सुवर्णका कोडिया ढोकना. गुरुजक्तिसं-
घजक्ति करना.

॥ श्रुत देवता तप ॥ सुदपक्षकी एकादशीका
उपवासकरना और मौनरहना. एसी इग्यारह एका-
दशी करनी. श्रुतदेवताकी पूजा करनी. उद्यानमे
अपने घर सरस्वतीकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठाकराय के
पधरावनी. और ठाठमाठसे पूजा पढानी ज्ञान
ज्ञानीकी और संघकीजक्ति करनी.

॥ अंबिकातप ॥ कृष्ण पंचमीके दिन श्रीनेम

नाथजीकी पूजा पूर्वक अंबिका देवीकी स्थापना करके एकाशन तप करके पूजा करनी. नैवेद्यफल ढोकना. ऐसे पांचवार करना. उद्यापनमें साधुजीको वस्त्र, अन्न, पान, बेहेराना. अंबिकाकी मुर्ति दोपुत्रसहित आम्र वृद्धकेनीचे होय ऐसे देखा वकी करानी.

॥ मुकुट सप्तमी तप ॥ आषाढवदि सप्तमीके दिन उपवास करके श्रीविमल नाथजीकी पूजा करनी. कार्तिकवदि सप्तमी के दिन उपवास करके श्रीआदिनाथजी की पुजा करनी. मिगसर वदि सप्तमीके दिने उपवास करके श्रीमहावीर स्वामीकी पूजा करना. पोषवदि सप्तमीका उपवास करके श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी पूजा करनी. उद्यापनमे लोक नालकी स्थापना करके मुकुट स्थानमे रहि जिना बलिको रत्न जम्ति मुकुट चढाना. ठाठसें पुजा पढाना एकेक जिनको सात सात वस्तु चढाना. ज्ञान गुरु संघकी जक्ति करना.

॥ स्वर्गस्वस्तिक तप ॥ चार एकासणा निरंतर करके उपर एक उपवास करना. उद्यापनमे पांच जातिके एकएकमण धानके स्वस्तिक जिन मंदिरमे करा के पूजा पढावी. ज्ञान गुरु संघजक्ति करना.

॥ शत्रुंजयमोदक तप ॥ पुरीमढ, एकासणा, नीवी. आयंबिल, उपवास निरंतर पांच दिन तक करना,

शत्रुंजय नाम गुणना. उद्यापनमें पांचशेरगोधुमका एक लारु ऐसे पांच लारु चढावना ज्ञानगुरु संघ चत्तिकरना.

॥ सात सौख्य तप ॥ निरंतर सात एकासणा करके उपर एक उपवासकरना. उद्यापनमें सात मोदक ढोकना. आठमा मोदक चतुर्गुण बरनाकरना । सोलजातिके पकवान चढाना. ज्ञानगुरु चत्तिकरना.

॥ क्षीर समुद्र तप ॥ श्रावणमासमे करना । निरंतर आठ एकासणा करके उपर एक उपवास करना. उद्यापनमे क्षीर खांड और घृतसे जरा हुवा थाल प्रजुकों ढोकना. ज्ञानगुरु संघ चत्तिकरनी.

॥ ठमासी तप ॥ एकाशनांतरित यथाशक्ति १८० उपवास करना. उद्यापनमे एकसो अस्सी मोदक मंदरमे चढाना. ज्ञान गुरु चत्ति करना महावीर स्वामीके नामकी नवकार वाली तपके दिन गुणनी.

॥ संवत्सरी तप ॥ एकाशनां तरीत ३६० उपवास करना ॥ कृष्ण देवजीके नामकी नवकारवाली गुणनी. उद्यापनमें चांदीका घट सेलडीके रससें जरके मंदीरमे चढाना. अक्षयतृतीयाके दिनपारणा आवे तेसें तप आदरना । ज्ञानगुरु संघकी चत्ति करनी ॥

॥ अष्ट मासिक तप ॥ मध्यम बावीस तिर्थकर आश्रयिक एकांतरित १४० उपवास करना. । जिस जिस जिन कातप आवे उन उनके नामकी नव-

कार वाली गुणना. उद्यापनमे १४० मोदक चढाना ज्ञान गुरु जक्ति करे.

॥ चतुर्विध श्री संघ तप ॥ प्रथम दो उपवास (बेला) करके एकांतरीत साठ उपवास करने । उद्यापनमे चतुर्विध श्री संघकी और ज्ञान गुरु जक्ति करनी.

॥ अष्ट कर्मोत्तर प्रकृति तप ॥ ज्ञानावरणीनी उत्तर प्रकृति ५, दर्शना वर्णीनी नव, वेदनीकी दो, मोहिनी कर्मकी अष्टाश्रस, आयुर्कर्मकी चार, नाम कर्मकी एकशोतीन, गोत्र कर्मकी दो, अंतरायकर्मकी पांच, सब मील १५० प्रकृतिके १५० उपवास एकाशनांतरित करना. ऐसे करनेसे एक उल्ली हुइ. ऐसी आठउल्ली करनेसे यह तप पुरा होताहे सिद्ध पद गुणणा. उद्यापनमे १५० मोदक जिनमंदिरमे चढावणा. ज्ञानपूजा गुरुपूजा संघपूजा करनी. पूजा पढावणी ॥

॥ द्वार तप ॥ प्रथम दो उपवास करके एकाशनांतरित सात उपवास करना. पीठे उपवास तीन (तेला) करके एकाशनांतरित सात उपवास करना. अंतमे बेला करना. एवं तपो दिन एक बीस और पारणा सत्तर होय. सिद्ध पद गुणना. उद्यापनमें सुवर्ण, माणक, मोति, विष्णुम, रजत, पदक काहलीका सहित द्वार बनाके वर्द्धमान स्वामीको

चढाना. अथवा सुवर्ण हार बनाकै कंठारोपित करना । ज्ञानजक्ति गुरुजक्ति संघजक्ति करना.

॥ अहव दशमी तप ॥ प्रत्येक वर्षकी जाडवा सुद दशमीके दिन यथा शक्ति उपवासादि तप करके अंबिकादेवी के पास संगीतादिक करके रात्रि जागरण करना. मोदक फल पुष्पादिक ढोकना. धूप दीपादिक करना. अगले दिन स्वामी वत्सलकरके मुनिको दान देके पारणा करना. रेशमी चुनरी चढानी. ऐसे दशवर्ष करना. दूसरे वर्ष फल्गादिक दुगुने चढाने. तीसरे वर्ष तीगुने चोथेवर्ष चोगुने चढाने. ज्ञान गुरु संघजक्ति करना

॥ लघु संसार तारण तप ॥ निरंतर तीन आर्य बिल करके एक उपवास करणा. सिद्धपद गुणना. ऐसे तीन उंली करते बारे दिनसे तप पुराहोय.

॥ वृद्धसंसार तारण तप ॥ निरंतर तीन उपवास (तेला) करके एक आर्यबिल करना. सिद्धपद गुणना. एसी तीन उंली करनी. इस्मे नव उपवास तीन आर्यबिलसे तप पूरा होय. उद्यापनमे चांदी का जाहाज बनाके एक थालीमे दुधजरके दुधमे जहाज तिराना. जहाजमे मोतिमुंगा रखना. स्वामीवठल ज्ञानगुरु जक्ति करना. पूजा पढाना ॥

लाखी परुवा तप ॥ कार्तिक सुदि प्रतिपदाकेदिन गौतमस्वामीके नामका उपवास करना. गौतम स्वामी-

के नामकी नवकार वाली गुणनी ॥ एक वर्षकी बा
रे सुद पडवाको इसीतरें तपकरना । द्वितीयाको
दुध चावलसे पारणा करना. समाप्तीके उद्यानमे
पांच पांचसेर सबजातिके धान मंदिरजीमे ढोकना
पूजा पढानी. ज्ञान गुरु संघजक्ति यथा शक्ति महो
त्सव करना यह तप करनेसे सौजाग्यकी प्राप्ति होय
अष्टावीस लब्धीकी प्राप्ति होती है ॥

॥ परतपाली तप ॥ पंचवर्ष यावत् श्रीवीर नि-
र्वाणसे प्रारंज कर तीन उपवास करना पीठे बत्री
स नीवी करनी समाप्तिमे तीन उपवास करना. प्र-
तिवर्ष पांचसेरकी लापसी सुगंधीदार बनाके स्थाल
मे जरके महोत्सव पूर्वक ढोकना. ज्ञान गुरु संघज
क्ति प्रजावना करना. वीरनामगुणना ॥

॥ त्रिपर्यंत घन तप ॥ १. २. ३. ए प्रथमउंली.
२. १. ३. ए द्वितीयाउंली. ३. २. १. ए त्रतीया उं-
ली. १. ३. २. ए चतुर्था उंली. २. ३. १ ए पंचमी
उंली. ३. १. २. ए षष्ठी उंली. १. २. ३. ए सा-
तमी उंली. ३. २. १. अष्टमी उंली. २. ३. १. नवमी
उंली. सबमील तपोदिन ५४ पारणे दिन २७ सर्व
दिन ८१ उद्यापनमें ज्ञानगुरु साधर्मिक जक्ति०

॥ वर्ग तप ॥ १. २. २. १. २. १. १. २. ए उप
वाससे प्रथमउंली. २. १. १. २. १. २. २. १. दूसरी
उंली. २. १. १. २. १. २. २. १. तीसरी उंली. १. २.

१. १. २. १. १. २. चौथी उंली. २. १. १. २. १. २.
 २. १. पंचम उंली- १. २. २. १. २. १. १. २. ठठी
 उंली. १. २. २. १. २. १. १. २. सातमी उंली. २.
 १. १. २. १. २. २. १. अष्टमी उंली. सिद्धपद गुण
 ना. तपोदिन ६६ पारणा ६४ पांचमास दश दिनको
 यह तप पुरा होता है. उद्यापनमे जिन पूजा. गुरु
 जक्ति साधर्मिक वात्सल्य करना.

॥ श्रेणितप ॥ १. २. प्रथम पंक्ति. १. २. ३. दु-
 सरी पंक्ति. १. २. ३. ४. तिसरी पंक्ति. १. २. ३. ४.
 ५. चतुर्थ पंक्ति. १. २. ३. ४. ५. ६. पंचम पंक्ति. १.
 २. ३. ४. ५. ६. ७. ठठी पंक्ति. ठश्रेणिमे उपवास
 ७३ आवे. पारणा २७ सबमील ११० दिवसे तप पु-
 रोहोय. उद्यापनमें सात कोणिका धवल गृह करना,
 सुवर्णमय निसरणी करणी. जिनमंदिरमे ढोकना.
 उद्यापनमेंज्ञानगुरु साधर्मिक जक्ति करना.

॥ घन तप ॥ १. २., १. २., २. १., १. २. ऐसे
 बारे उपवास और आठ पारणासे बीस दिनमे यह
 तप पुरा होय. सिद्धपद गुणे. उद्यापनमे २० मोदक
 चढावे. ज्ञानगुरु साधर्मिक जक्ति करे.

॥ निर्वाणदीपक तप ॥ तीनवर्षतक । दीपमाहि
 काकी चौदश अमासका उपवासकरे. अहोरात्री अखं
 रुदीपक रखे. रात्रिजागरणकरे। वीर प्रजुके नामकी
 नवकारवाली गुणे. उद्यापनमे ज्ञान गुरु जगति करे.

॥ वत्तीस कव्यानक तप ॥ प्रथम एक अष्ठम करके पीठे वत्तीस एकांतर उपवास करना और अंतमे एक अष्ठम करना. इस तपमे आरुतीस उपवास और चोत्तीस पारणे होते हे. दोमास बारे दिनसे तप पूरा होताहे. सिद्ध पदगुणना. उद्यापनमे जिनग्रहमे वत्तीस वत्तीस वस्तु ढोकनी. ज्ञान गुरु संघ जक्ति करनी. यह तप वसुदेवहिंडीमें लिखाहे.

॥ कर्म चक्रवाल तव ॥ प्रथम एक अष्ठम करके एकांतर एक शष्ठ उपवास करने और अंतमे एक अष्ठमकरना. ६१ उपवास और ६३ पारणेशें चारमास दशदिनकों तप पूरा होताहे. सिद्धपदगुणणा. उद्यापनमे आठ आठ वस्तुजिन मंदिरमें ढोकना. ज्ञान गुरु संघ जक्ति करना.

॥ शिव कुमार बेला तप ॥ इसमे बारे बेला (ढष्ठ) निरंतर अथवा सांतर करना. सिद्धपदगुणना. पारणेशे यथा शक्ति आयंबिल करना. उद्यापनमें बारबारे वस्तुजिन मंदिरमे ढोकना. ज्ञान गुरु संघकीजक्ति करना.

॥ कर्म चूरन तप ॥ प्रथम एक अष्ठम करके सात एकांतर उपवास करना और अंतमें एक अष्ठम करना. ६६ उपवास और ६१ पारणा चारमास आठ दिनको यह तप पूरा होताहे. उद्यापनमें आठशाखा सहित चांदीके वृक्षको सुवर्ण कुलामी-

सैं ठेदन करना. सिरूपदगुणना. ज्ञान गुरु संघ
 चक्ति करना.

॥ अखंड दशमी तप ॥ सुक्ल पक्षकी दशमीके
 दिन एकाशनादि तपकरनां सिरूपदगुणना. एसी
 दश एकादशी करनी तपके दिन अखंड अन्नका
 नोजन करना. उद्यापनमें दश जातिके धान्य फल
 पकवान जिनमंदिरमें ढोकन करना. शुद्ध वस्त्र च-
 ढाना. ज्ञान गुरु चक्ति करना. यह तपके करनेसैं
 विधवा न होय एसा महिमा हे.

॥ अमृताष्टमी तप ॥ सुक्ल पक्षकी अष्टमीके
 दिन आयंबिल करनां एसी आठ अष्टमी करना.
 सिरूपदगुणना. देवपूजा करनी. उद्यापनमे दूधसे जरा
 कलस एक, कंचुकी नवीन एक, मोदक एक, जल
 घट एक, जिन मंदिरमे चढाना. ज्ञान गुरु संघ
 चक्ति करना.

॥ सत्तरी सय जिन तप ॥ सित्तेरसय जिन आ-
 श्रयि एकसो सित्तर एकांतर उपवास वा एकासना
 करना । गुणणा गुरु मुखसे धारके जपना. उद्याप-
 नमें एकसो सितर श्राविकाको जिमाना ज्ञान गुरु
 चक्ति करना.

॥ अडुःख डुःखित तप ॥ सुद पक्षकी प्रतिप-
 दाको पहिला उपवास, सुद डुजका डुसरा, सुद
 तीजका तीसरा उपवास, यह प्रथम उली. एसी

पांच उंछी करनी. सिद्धपद गुणना. तपके दिन
 रुषजदेवकी मूर्तिको अखंरु पुष्प माला चढानी.
 नवीन नवीन नैवेद्य ढोकना. उद्यापनमे एक चां-
 दीका वृक्ष बनाके उसकी शाखामे सोनेका पारणा
 छटकावै. रेसमकी पाटसे रेसमी तलाइ रखके उस-
 मे सुवर्ण मय पुतली रखके जिन मंदीरमे ढोकना.
 रुषदेवकी पूजा करना. ज्ञान गुरु संघजक्ति करना.

॥ पंचमेरु तप ॥ एक मेरुके एकांतर पांच उप-
 वास करना. सुदर्शन मेरुका नाम गुणना. दुसरे बख-
 त पांच उपवासमे विजय मेरु गीणना. तीसरे पांच
 उपवासमे अचल मेरु गिणना । चौथी वारके पांच
 उपवासमे मंदिर मेरु नाम गिणना. पांचमी वार
 पांच उपवासमें विद्युन्माली मेरु नाम गिणना. इसमे
 निरंतर करेतो १५ उपवास और १५ पारणा मिल-
 के पचास दिनमे तप पूरा होय. उद्यापनमे सुवर्ण
 मय मेरु बनाके मंदीरमे रखना. १५. १५. वस्तु
 ढोकना. ज्ञान गुरु संघ जक्ति करना.

॥ बडा समवसरण तप ॥ प्रथम चार उपवास
 करके पारणे एकासणा न बनेतो बियासणा करणा.
 एसी चार उंछी करते पञ्चमीकी पंचमीके दिन पा-
 रणा आवे तेसैं तप करणा. एसे चार वर्ष करनेसे
 ए तप पुरा होताहे. उद्यापनमे यथा शक्ति ज्ञान
 गुरु संघजक्ति करे.

॥ मोक्ष दंडक तप ॥ गुरुके हाथमे रखनेका दंडक अपने हाथमें लेके अपनी मुठ्ठीसे जरना जितनी मुठ्ठी होय उत्तना एकांतर उपवास करना. अथवा दूसरी विधि यह हे की एकासणा बार, नीवी नव, आयंबिल पांच, उपवास एक, एवं सत्तावीस दीन तप करना. सिद्ध पद गुणना. उद्यापनमें ठेठ्ठे उपवासके दिन एक थालमे चावल जर श्रीफल रोकन द्रव्य रखके वाजित्र सहित गीतगाते गुरुके पास जाके दंडकी पूजा करके थाल जेट करना. वस्त्रादिक बेराना. ज्ञानकी संघकी चक्ति करनी.

॥ दवयंती तप ॥ एकेक जिन आश्रयी बीस आयंबिल करना. एसी चोवीस उल्ली करना. यह वना तप होनेसे एक पच्चीसमी उल्ली शासन देवीके नामकी करनी और गुणणा अनुक्रमसे जिस जिस जिनकी उल्ली होय तिस्का नाम गुणणा और शासना देवीकी उल्लीमे शासना देवीका नाम गुणणा. इसमें पांचसे आयंबिल और चोवीस पारणा होतेहे. उद्यापनमें चोवीस जिनकी पूजापढानी. चोवीस तिलकचढाने. पांचसे मोदक चढाने. और यथाशक्ती ज्ञान गुरु साधर्मिकचक्ति अवश्यकरना.

॥ ऊणोदरी तप ॥ पुरुषको बत्तीस और स्त्रीको. अष्टावीस कवलका आहार होताहे तिस्मेसें यथा शक्ती न्यून करना उसकों लोक प्रवाहमें उनोदरी

तप कहतें हे. प्रथमदिन आठ दूसरे दिन बारें तीसरे दिन शोले, चौथे दिन चोवीस, पांचमे दिन एकत्रीस, कवलका आहार करणा और एकासणा का पचखान करना. सिद्ध पद गुणणा. सब मिल-के पुरुषको ८१ स्त्रीको ८७ कवल आहार पांच दिन-में लेणा. उद्यापनमे कवलकी संख्या प्रमाण मोदक चढाना. ज्ञान गुरु संघजक्ति करना.

॥ निर्वाण तप ॥ आदि नाथजीके निर्वाणके ठ उपवास करना. वीर प्रभुके निर्वाण पर उपवास दो करने. शेष तीर्थ करके निर्वाणके एकांतर उप-वास तीस तीस करने. जिन जिन तीर्थ करके निर्वाणका तप, चलता होय तब उन उन तीर्थ करके नाम की नोकार वाली गुणनी. उद्यापनमे चोवीस तीलक, चोवी पकान, चोवीस फल, चोवीस संख्या-मे सर्व वस्तुयें ढोकनी. ज्ञान गुरु श्री संघकी जक्ति करनी.

॥ केवल ज्ञान तप ॥ श्रीआदिनाथजी, मल्लीनाथजी, पार्श्वनाथजी, नेमनाथजी ए चार तीर्थकरोके केवलज्ञान कढ्याणक के तीन तीन उपवास करने. वासुपूज्यज्यस्वामीका एक उपवास और सब उन्नीस तीर्थकरोके दोदो उपवास करने. सबमील ५१ उप-वास करने. उद्यापनमें ५२ मोदक फल, फूल, नैवेद्य, ढोकना गुरुजक्ति करना

॥ जिन दीक्षा तप ॥ बीस तिर्थकरोने दीक्षा समय ठठ कीये तिसके बेले करने. वासुपूज्यका एक उपवास. मल्लीनाथ पार्श्वनाथजीके तीन तिन उपवास करना. सुमतिनाथ स्वामीके नामका एका शना करना. सबमिल ४७ उपवास एक एकाशणा होताहे. उद्यापनमे ४८ मोदकादिक चढा वने अष्ट प्रकारी पूजा ज्ञान गुरु ज्ञत्तिकरना.

॥ जिन चवन जन्म कढ्याणकतप ॥ एके के जिनके चवन कढ्याणक के उपवास करणा. जिनजिन तीर्थरका तप होय तिसदिन तिनके नामकी नव-कारवाली गुणे. उद्यापनमें चोवीस चोवीस चीजे चढावे ज्ञानगुरु ज्ञत्ति करे.

॥ गौतमपरुघातप ॥ पंदरे पूर्णिमां पर्यंत एकाश-नादितप करना. गौतमस्वामिकी प्रतिमाके पास हीरका पात्र जरके ढोकना अष्टप्रकारी पूजा करनी. गौतमस्वामीकी प्रतिमाके अजावे महावीर स्वामी की पूजाकरनी. उद्यापनमें चांदीका परुघा (पात्रें) हीरजर के गौतमस्वामी अथवा महावीरस्वामिके पास ढोकनां गुरुजीको जोली पात्रे प्रमुख देनां.

॥ लघुपंचमी तप ॥ सुदी और वदीकी पंचमीका उपवास करना नमोनाणस्स गुणणा. एक वर्षके चोवीस और एक उपर उपवास करके २५ उपवाससे यह तप पूराकरना. यथाशक्ति उद्यापन करना।

यह तप पौष अथवा चैत मासमे सरु नहि करना.

पंचमी तप ॥ पांच वर्ष और पांच मास तक सु-
दि पांचमीका चोवी द्वार उपवासकरना. नमोनाण
स्स पद गुणना. यथाशक्ति उद्यापन करना. यह तप
कार्तिक मिंगसर, माघ, फाल्गुन, वैशाख, जेष्ठ, आ-
षाढ, ए सात मासमेंसे हरेक माससें सरु कीया
जाता हे । अखंड करना उद्यापन करना.

॥ पुंरुरीक तप ॥ चैत्री पुनमके दिन उपवास
करके पुंरुरीक गण धरके नामकी नवकार वाली गु
णे और पुजा करें ऐसे सात वर्ष करे. उद्यापनमे
अगणित श्रावकोंको जिमावे अथवा प्रजावना करे
अगणित द्रव्यसे ज्ञान जक्ति करे अगणित अन्न पान
मुनिको बेरावे । जो चिज दीजावे सो गिणनानहि
योंहि पसली जरके बेरावे । और प्रजावनाजि पस
ली जरके देवेपरंगिनेनही.

॥ गुणरत्न संवत्सर तप ॥ यह तप के सेवन क-
रने वालोंको दिवसमें उकरु आसनमे रहना और
रात्रिकों वीरासनसें रहना चाहिये (वस्त्र रहित रह
ना.) यह तप शोक्षेमासतक करना. तिस्मे प्रथम मा
समे एकांतर उपवास करनां दुसरे मासमें दो दो
उपवास पारणा करनां. तीसरे मासें तीन तीन
उपवास पारणा करना. चोथा मासें चार चार उप-
वास उपर पारणा करना. ऐसें एकेक मासें एकेक

दिन तपका बढ़ाते जानां. ऐसे शोल मास तप करनां. शोले मासमे सब मिल ४८७ दिन उपवास आवेगे. सब मिलके ७३ पारणा होतेहे. सिद्ध पद गुणणां उद्यापन यथाशक्ती ॥

आयंबिलवर्द्ध मान तप ॥ प्रथम एक आयंबिल करके एक उपवास, दो आयंबिल करके एक उपवास, तीन आयंबिल करके एक उपवास, चार आयंबिल करके एक उपवास ऐसे एकेक आयंबिल बढ़ाते जानां यावत् एकसो आयंबिल पर्यंत बढ़ानां. सो आयंबिल उपर एक उपवास करें यह तपमे सब मिल एकसो उपवास आवें और पांचहजार पचास आयंबिल होतेहे. ए महा तपका सेवन चौदेवर्ष, तीनमास और बीस दिनसें पूरा होताहे. उद्यापन यथा शक्ती करे.

॥ अक्षयनिधि तप ॥ घर देरासरमे अथवा उपाश्रयादि उत्तम स्थानमे विचित्र चित्रित घटस्थापन करें तीस्मे प्रतिदिन मुठीजरके चावल और यथाशक्ति द्रव्य कालतें जाय. यथाशक्ति एकाशनादिक तपकरे. पजुसणके पनरे दिन पहिलें एतप सरुकरे पजुसणमे तप समाप्ति होय तेंसे आदर करें. पजुसणमे घटपूर्ण जर जाय और तपजि पूर्ण होय. पूर्ण होनेसें ऊपर श्रीफल वस्त्र मौली बांधके वाजित्रादि महोत्सव पूर्वक मंदिरमें लाकें रखें और स्नात्रादि

पूजा पढावें. ज्ञान पूजा गुरु पूजा करे. ऐसे चारवर्ष पर्यंत करे. उद्यापनमे त्रिपक्षिणी करके देव आगे ढोकना. यथाशक्ती महोत्सव करना ॥

चांद्रायण तप ॥ चंद्रमाजेसें सुक्लपक्षमे एकमके दिनसे बढता हैं तेसें पुरुवाके दिन एक कवल, दुजके दिन दो कवल, तीजके दिन तीन कवल, चोथके दिन चार कवल ऐसे एकैक कवल पुनमतक बढावे. पुनमके दिन पनरे कवल आहार करे. कृष्णपक्षके चंद्रमाकी रीतिसे एके क कवल घटाते यावत् अमावास्याकों एककवल आहार करे ऐसे यवमध्य प्रतिमां तपत्री इस्को कहतें हे. यह चांद्रायण, यवमध्य तप एक मासकाहे. उद्यापनमें चांदीका चंद्र और सोनाके बत्तीस यव बनाके मंदिरमे चढावे और ज्ञान पुजा गुरु पूजा संघ पूजाकरे । अष्टप्रकारी पूजा पढावे.



तृतीय परिच्छेद प्रारंभः ।

अथ श्रावकोंकी दिन चर्या कहते हैं.

॥ चिदानंद स्वरूप, रूपसे रहित, रक्षक और परम ज्योतिरूप, ऐसे सिद्ध परमात्माकों मेरा नमस्कार हो. मनः शुद्धिकों धरने वाले योगीश्वरों, ध्यान रूपी दृष्टि करके जिसका स्वरूपकों देखतेहैं; ऐसे परमेश्वरकी मैं स्तवना करताहुं. प्राणिगण सुख समूहकों चाहतेहैं. और सर्व सुख समूह मोक्षमेंहे. वो मोक्षपदकी प्राप्ति ध्यानसें होतीहे. और ध्यान मनकी शुद्धीसें होताहे मनोशुद्धी कषायोके जयसें-होतीहे कषायोंका जय इंद्रियोंके विजयसें होताहे. इंद्रियोंका विजय सदाचारसें होताहे. गुणोंका निबंधन करानेवाला सदाचार सद्गुणपदेशसें प्राप्त होताहे. सद्गुणपदेशोंसें समृद्धिकी प्राप्ति होतीहे समृद्धि प्राप्त होनेसें सर्वत्र गुण प्राप्त होनेका उदय होताहे. सद्गुणोंके उदयकी प्राप्तिके लिए आचारोंपदेश नामक ग्रंथकी रचना करी जातिहे. सदाचारके विचारोका निरूपण करनेमें रुचिकारक, विचक्षण पुरुषोको मनन करने योग्य, देवानु प्रियोंकों अत्यानंदकारी, यह ग्रंथ; पुण्यवंत प्राणियोंको, विशेष श्रवण करने लायकहै.

अनंत पुद्गल परावर्तों करके पुनः दुष्प्राप्य यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके विवेकी प्राणिकों धर्म

उपर अवश्य आदरवंत होना चाहिये. क्योंकी सुन-
नेसे, देखनेसे, करनेसे, दूसरोंसे करानेसे, अनुमो-
दनेसे यह धर्म सातों कुलकों निश्चय पवित्र करताहे.
धर्म, अर्थ, काम, यह तीन वर्गके साधन विना यह
मनुष्य जन्म पशुवत् निष्फलहे. तीन वर्गके साधन-
मेंत्री धर्म वर्गकों अधिक साधन करना क्योंकी धर्म-
वर्ग विना अर्थ और काम न प्राप्त होशक्तेहे. मनुष्य-
जव, आर्यदेश, उत्तमजाति, सर्व इंद्रियोंकी सुदृढता,
परिपूर्ण दीर्घायुष, इतनी चिजें विना पुण्य प्राप्त न
होशक्तीहे. कदापि पुण्ययोगसे उपरोक्त मील शक्तेहें.
तथापि वीतरागके वचन पर श्रद्धा होनी दुर्लभहे.
कदापि श्रद्धा होतीहे तथापि सुगुरुका योग सुपुण्य
विना मिल शक्ता नहीहे.

न्यायसे राजा, सुगंधसे पुष्प, उत्तम पदार्थसे,
जोजन ज्यों शोजनीक होताहे त्यों उपरोक्त वस्तु
त्री सदाचारसेहि शोजनीक होतीहे. सदाचार
तत्पर पुरुष शास्त्रोक्त विधिसे परस्पर अविरोध क-
रके तीनों वर्गका खुसीसे साधन कर शक्ताहे.

पंक्ति पुरुष रात्रिके चतुर्थ प्रहरसे वा पीठली
दो घड़ी रात्रिसे उठे. निद्राकों त्याग कर पंच-
परमेष्ठी मंत्र पढे. दक्षिण अथवा वाम दोनोमेंसे जो
नाशिका बहती होय उस तरफका पग शय्यासे
उठती बरत प्रथम धरती पर धरे. शय्याकों और
शयनके वस्त्रोंका त्याग करके दूसरे शुद्ध वस्त्र

पहिन सुस्थान पर बैठके पंचपरमेंष्टीका ध्यान करे. पूर्व अथवा उत्तर दिशा सन्मुख बैठके शरीर और स्थानकी शुद्धि करके मन समाधिसे जाप करे.

पवित्र हो किंवा अपवित्र हो. सुस्थित हो वा दुःस्थित हो परं पंचपरमेष्टी नवकारमंत्रके जपनेसे प्राणि सर्व पापसे रहित होता है. अंगुलीके अग्र जागसें, मेरुकों उद्ध्वंघन करके, संख्यारहित, जो जाप करे सो प्रायः अल्प फल कारक होता है.

उत्कृष्ट, मध्यम, अधम ए तीन प्रकारके जाप कहे जातेंहैं. उसमें कमलादिक विधिसे जाप किया जायसो उत्कृष्टहै. जपमालासे जाप किया जाय सो मध्यमहै. विना मौन, विना संख्या, विना चित्त स्थिर रखवे, विना अचल आसन, विना ध्यान जो जाप किया जाय सो अधम जाप कहा जाताहै. पीठे गुरुके पास जाके अथवा अपने घरमें अपने पापकी शुद्धीके वास्ते आवश्यक (प्रतिक्रमण) करे.

रात्रिके पापकी शुद्धीके वास्ते राई, दिनके पापकी शुद्धीके वास्ते दैवसिक, पनरे दिनकी शुद्धीके वास्ते पाह्नीक, चारमासके पाप. शुद्धीके वास्ते चोमासी, बारमासके पापकी शुद्धीके वास्ते सां वत्सरीक; एसें पांच प्रतिक्रमण कहेहैं. प्रतिक्रमण करके, कुल क्रमकों याद करके, हर्षित चित्त होके मंगल स्तुतिका पाठकों याद करे.

मंगलाष्टक.

मंगलं जगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः ॥
 मंगलं शूलिजद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥ १ ॥
 नाग्नेयाद्याः जिनाः सर्वे, जरताद्याश्च चक्रिणः ॥
 कुर्वंतु मंगलं सर्वे, विष्णवः प्रति विष्णवः ॥ २ ॥
 नाजि सिद्धार्थं जूपाद्या, जिनानां पितरः स मे ॥
 पाक्षिताखंरु साम्रज्या, जनयंतु जयं मम ॥ ३ ॥
 मरुदेवी त्रिशलाद्या, विख्याता जिन मातरः ।
 त्रिजगज्जनितानंदा, मङ्गलाय जवंतु मे ॥ ४ ॥
 श्रीपुंरुरीकेंद्रजूति, प्रमुखा गण धारिणः ।
 श्रुत केवलिनो पीह, मंगलानि दिशंतु मे ॥ ५ ॥
 ब्राह्मी चंदन बालाद्या, महासत्यो महत्तरा ।
 अखंरु शील लीलाद्या, यजंतु मम मंगलं ॥ ६ ॥
 चक्रेश्वरी सिद्धायिका, मुख्य शासन देवताः ।
 सम्यगूढशां विघ्नहरा, रचयंतु जयस्त्रियं ॥ ७ ॥
 कपर्दी मातंग मुख्या, यद्वा विख्यात विक्रमाः ।
 जैन विघ्नहरा नित्यं, दिशंतु मंगलानि मे ॥ ८ ॥
 यो मंगलाष्टक मिदं पठुधी रधीते,
 प्रातर्नरः सुकृत जावित चित्त वृत्तिः ॥
 सौजाग्य जाग्य कलिता धुत सर्वविघ्नो,
 नित्यं स मंगल मलं लज्जते जगत्याम् ॥ ९ ॥

पीठें मंदिरजीमे जाके निःसही कहके सर्व आ-
 शातनाका त्याग करके तीन प्रदक्षिणा देवे. विद्याश,

हास्य, थुंक (बलगम) का गिराना, निद्रा, कलह, विकथा, चार प्रकारका आहार, जिनमंदिरमे नहि करना. “हे जगन्नाथ तुमकों नमस्कार हो” इत्यादि स्तुतिका पाठ बोलके फल, अक्षत, सुपारी, जिन. राजके सन्मुख रखे. राजा, देव, गुरु, निमित्त शास्त्र वेत्ता इनके पास खाली हाथसें नहि जाना क्योंकी फलसें फल मीलताहे. जगवंतके दक्षिण जागमे पुरुष, दहिने जागमे स्त्री नव अथवा साठ हाथ दूर रहकर वंदना करे. पीठे उत्तरासण लगाके, योगमुद्रासें बैठके, मधुर ध्वनीसे चैत्य वंदन करे. पेटके उपर दो हाथकी कोणी रखकर, कमल डोडाके आकार दोहाथकी दश अंगुलीयों संयोजित करे उनको योगमुद्रा कहतेहे. पीठे अपने घर जाके प्रातः क्रिया करे (नोजन, वस्त्र, घरके परिवारकी यथायोग्य व्यवस्था करे.) बांधव, नोकरों प्रमुखोंकों अपने अपने कार्योंमें नियोजित करके बुद्धिके आठ गुण धारक पौषध शालामें जावें. शुश्रूषा (गुरुकी सेवा) श्रवण (उपदेशका सुनना) ग्रहण (स्वीकार करना) धारणा (याद रखना) उहा (तर्क करना) अपोह (शमाधान करना) अर्थ (अज्ञिप्राय समजना) तत्त्वज्ञान (तत्त्वसमजना) यह बुद्धीके आठ गुण हे. धर्मका जाणकार होना, दुर्बुद्धिका त्याग करना, ज्ञानको प्राप्त होना और

वैराग आना ए सब सुननेसे प्राप्त होतेहैं. आचार्य और साधुओंको पंचांग नमस्कार करके आशातना त्याग करके गुरुके सन्मुख बैठना. दों ढीचण, और दो हाथ लगाया हुवा मस्तक, धरतीपर टिकायके नमस्कार करनेको पंचांग नमस्कार कहतेंहैं.

पलांठी बांधके, लंबे पग पसारके, पग उपर पग चढाके, दो कांख दिखाते, अगामी, पीढाडी, बरोबर दोनुं तर्फ, गुरुके पास बैठना नहीं. अपनेसे पूर्व आए हुवेकी बातें पूर्ण हुवे बिना गुरुको बुलाना नहीं. आशयका समजदार गुरुके मुख सामने दृष्टि रखकर चित्तकी एकाग्रतासे धर्म शास्त्र सुने. वाख्यान पूर्ण हुवे पीछें अपनी शंकाका समाधान करे (पुछे) और देव गुरुके गुण गाने वाले (जाट जोजक) को यथोचित दान देवे. जिस्ने प्रातः प्रतिक्रमण न किया होय सो वांदणा देके गुरुको वांदे। धर्मप्रिय श्रावक नवकारसहीत प्रमुख यथाशक्ती पञ्चस्काण करे. दान देनेवालेजी जोव्रत पञ्चस्काण न करेतो तिर्यच योनीमें उत्पन्न होतेहैं. हाथी घोडा प्रमुखमे उत्पन्न हो केजी बंधनमें परतेंहैं. जो दाताहै सो नरकमें न जाय. जो व्रत पञ्चस्काण करता है सो तिर्यच न होय. जो दयावंत होय सो हीन आयुष्य न होय. सत्यवादी होय सो दुस्तर (दुष्ट अवाजवाला)

न होय. तपश्चर्या हे सो सर्व इंद्रियों रूप मृगको वश्यकरनेमे जाल (फांसा) समान हे और कषाय रूप तापको मिटानेके लिये द्राक्षासमान ह फिर कर्म रूप अजीर्णकों मिटानेके लिए जातिवंत उत्तम हरडे समान हे. जो दूरहे, दुराराध्य (दुःखसे मिलने लायक) हे, देवताओंकोजी जो दुर्लभहे, सो सब तपसें मिल शक्ताहे. क्यों कि तपकों कोई उल्लंघन करने समर्थ नहीं. पीछे. बजारमें जाके अपने अपने कुलके उचित द्रव्यो पार्जनका उद्यम करे. मित्रोंके उपकारके वास्ते, बांधवोंके उदयके वास्ते, न्यायवंत न्याय लक्ष्मीका उपार्जन करे. क्योंकि केवल अपना पेट कोन नहीं जर शक्ता हे ?

नीच जनोचित व्यापार करना नहीं और दूसरोंसे जी कराना नहीं. क्योंकि संपदा पुण्यकर्मसे बढ़तीहे परं पापसे बढ़ती नहि. कदापि पाप व्यापारसे लक्ष्मी बढे परं उसका परिणाम अन्ना नहींहे. जिस व्यापारमे बहुत आरंजहोय, महापापहोय, लोकमे निंदाहोवे एसा होय, इह लोक परलोकसे विरुद्ध होय एसे व्यापार (काम) नहीं करने. लोहार, चमार, मदिराकार, तेली, प्रमुख नीच जनो से अधिक लाज होय तोजी व्यवहार नहीं रखना.

एवं चरन् प्रथम याम विधिं समग्रं ।

श्राद्धो विशुद्ध विनयो नय राजमानः ॥

विज्ञान मान जन रंजन सावधानो ।

जन्म द्यं विरचये त्सकलं स्वकीयम् ॥ १ ॥

इति दिनचर्यायां प्रथम वर्गः समाप्तः ॥

॥ अथद्वितीय वर्गः । प्रारभ्यते ॥

दूसरा प्रहरदिन चढते अपने घर आयके विच-
क्षण जन जहां जीवाकुल भूमी नहोय ऐसे स्थान
पर पूर्वदिशा सन्मुख बैठके स्नान करे. स्नान करनेके
लिए चार पगवाला, जिस्मे नल लगाया होय ऐसा,
एक बाजोट (पट्टा) बनावे. जिस्का पाणी दुसरे
बासणमे लेके निर्जीव स्थानमे डाला जाता होय तो
जीवकी ठीक यत्ना होशकतीहे. रजस्वला अथवा
नीच जातिका स्पर्श हुवा होय, अथवा सूतक आ-
या होय, घरमे कोइका मरण हुवा होय तो मस्त-
कसे सर्वांग स्नान करना. उपरोक्त कारण सीवाय
देव पूजाके वास्ते बुद्धिवंत मस्तकवर्जित उष्ण
जलसे स्नान करे. योगी पुरुष कहतेंहैं की चंद्र,
सूर्यके किरणोंके स्पर्शसे समग्र जगत शुरू होजा-
ताहे तों मस्तकजी उनके किरणोंसे स्पर्शित होनेसें
सदा पवित्र गिना जाताहे.

हर रोज शिर जीजोनेसें जीवघात होताहे. इस-
लिए नहीं जिजोना. दया एहि हे सार जिस्मे ऐसे

सदाचार हैं सो सब धर्मके हेतुहे. अर्थात् कृपा धर्मका परिपालनके लिए सदाचार पालाजाताहे. निर्मल तेजका धारण करने वाला आत्मा सदा मस्तकमे रहताहे इस लिए और सदा वस्त्रसे वेष्टित रहनेसे मस्तक कच्ची अपवित्र होता नही. अज्ञ जन स्नानके लिए जास्ति पाणी ढोलतेहे और उससे बहुत जीवकी विराधना करतेंहैं; ऐसा स्नान करके शरीरकों पवित्र और आत्माकों मलीन करतेंहैं. स्नान करनेमें जीजोया वस्त्र दूरकरके दूसरा वस्त्र पहिनके जहां तक पेर जीने रहे तहां तक अर्हत्का स्मरण करता उहांहि खरा रहे. जो खरा न रहैतो पगमें मेल लगेगा और पग अपवित्र होवेंगें. फिर कितनेक जीवोके घातकाजी संजव होवेगा. इससे पापका जागीजी होवेगा. गृहमंदिर (घरदेरासर) में जाके प्रथमसे प्रमार्जना करके पूजा करने लायक वस्त्र पहिनके अष्टपट मुखकोश बांधे. मन, वचन, काया, वस्त्र, भूमि. पूजाके उपकरण, स्थिति (स्थिरता) यह सात प्रकारकी शुद्धी पूजाके समय करनी. स्त्रीका पहिना हुवा वस्त्र पुरुष पूजा समय नहि पहिरे और पुरुषका पहिना हुवा वस्त्र स्त्री नहि पहिरे क्योंकि उससे कामरागकी वृद्धि होतीहै. उत्तम कलसमे जरा जलसे जगतकों जलका अन्निषेक करे और पीठे उत्तम वस्त्रसे अंग धुंठन करके चंदना-

दिकसें पूजा करे. केशर चंदन चढाते नीचे लिखित काव्य उच्चार करके चढावे.

सच्चंदनेन घनसार विमिश्रितेन,
कस्तूरिका द्रव युतेन मनोहरेण ।
रागादि दोष रहितं महितं सुरैर्द्वै,
श्रीमङ्गिनं त्रिजगतः पतिं मर्चयामि ॥

पुष्प चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

जाति जपा बकुल चंपक पाटलाद्यै,
मंदार कुंद शत पत्र वरारविंदैः ।
संसार नाश करणं करुणा प्रधानं,
पुष्पैः परैरपि जिनेन्द्र महं यजामि ॥

धूप करने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

कृष्णागुरु प्रचुरिता सितया समेतं,
कर्पूर पूरमहितं विहितं सुयत्नात् ।
धूपं जिनेन्द्र पुरतो गुरुतोष पोषं,
जक्तयोत्क्षिपामि निज दुष्कृत नाशनाय ॥

अर्घ्य चढानेके समय नीचे लिखित श्लोक बोले.

ज्ञानंच दर्शनं मथो चरणं विचिंत्य,
पुंज त्रयंच पुरतः प्रविधाय जक्त्या ।
चोदादृतैः कण्ठगणैः रपरै रपीड्,
श्रीमंतमादि पुरुषं जिनं मर्चयामि ॥

फल चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

सन्नालिकेर पनसामल बीजपूर,

जंबीर पूग सहकार मुखैः फलैस्तैः ।

स्वर्गाद्यनल्प फलदं प्रमदा प्रमोदं,

देवाधिदेव मधुना प्रशमं महामि ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके नैवेद्य चढावे.

सन्मोदकैर्वटकमंरुकशालिदालि,

मुख्यैरसंख्यरसशालिजिरत्नजोज्यैः ।

क्षुत्त्रटव्यथाविरहितं स्वहिताय नित्यं,

तीर्थाधिराजमहमादरतो यजामि ॥

नीचे लिखा काव्य बोलके दीपक चढावे.

विध्वस्तपापपटलस्य सदोदितस्य,

विश्वावलोकनकलाकलितस्य ज्वत्स्या ।

उद्योतयामि पुरतो जिननायकस्य,

दीपंतमः प्रशमनाय शमांबुराशेः ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके जल चढावे.

तीर्थोदकैर्धृतमलैरमलस्वजावं,

शश्वन्नदीहृदसरोवरसागरोष्ठैः ।

पुर्वारमारमदमोहमहाहितादर्थ्यं,

संसारतापशमनं जिनमर्चयामि ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके हाथ जोड नमस्कार करे.

पूजाष्टकस्तुतिमिमामसमामधीत्य,

योनेन चारुविधिनावितनोति पूजां ।

क्षुत्का नरामरसुखान्यविखंभितानि,

धन्यः सुवासमचिराद्भजते शिवेपि ॥

नया मंदिर बनाना चाहे तो अपने घरमें प्रवेश करते कायें हाथपर जमीनसें देढ हाथ उंचे शक्य रहित पवित्र स्थानपर मंदिर बनावे. पूजा करने-वाला पूर्व अथवा उत्तर दिशाके सन्मुख बैठे परं विदिशामें न बैठे और दक्षिण दिशातो सर्व कार्यमें वर्जितहे.

पूर्व दिशा सामने बैठके पुजा करनेसें लक्ष्मीका लाज होय. अग्नि दिशामें बैठेतो संताप उपजावे. दक्षिण दिशामे मृत्यु कारक. नैरुतमें बैठेतो उपद्रव करे. पश्चिम और वायव्य दिशामें बैठेतो संतानकी हानी करे. दो पांव, दो ढीचण, दोहाथ, दो स्कंध (खजा) एक मस्तक यह नव स्थान पर अनुक्रमसें जगवंतकी प्रथम पूजा करे. उत्तम चंदन और केशर विना पूजा न करनी. ललाट, मस्तक कंठ, हृदय, पेट, इतने स्थानपर अपने तिलक करना.

प्रजातें शुद्ध वाससें, मध्यान्हें पुष्पादिकसे संध्या समय धूप दीपसें जगवंतकी पूजा करनी. एक पुष्पके दो विजाग नहि करना. कलिको छेदनानहि. पत्र, पांखरि, कलिकों छेदन करनेसें हिंसा जेसा पाप लगताहे. हस्तसें गिरा, पेरकोलगा, जमीन पर पड़ा, शीर पर धरा एसे पुष्पोंसें कहि पूजा न करनी. गंध रहित, तीव्र सुगंध वाला, नीच जातिजन फर्शित, कीटक दंशित, मलीन वस्त्रसे वेष्टित, एसे पुष्पसें पूजा कर-

नी नही. जगवंतके वामांगमें धूप रखना. जल पात्र सन्मुख रखना. पान अथवा फल हस्तमें रखना. उपरोक्त अष्ट प्रकारी पूजा हररोज करनी और नीचे लिखि एक बीस प्रकारी कोइ पर्व तिथीमें अथवा तीर्थ स्थानोंपर अवश्य करनी

एकीस प्रकारी पूजाके नाम.

स्नात्र, चंदन, दीप, धूप, पुष्प, नैवेद्य, जल, ध्वजा, वासद्धेप, अक्षत, सुपारी, तांबुल, जंकारवृद्धि, फल, वाजित्र, गीत, नाटक, स्तुति, ठत्र, चामर, आचूषण.

विशेष लाजार्थी श्रावक शुद्ध वस्त्रसे सुशोजित होके अशुचि मार्गको छोडके अच्छे मार्गसे ग्रामचैत्य (पंचायतीमंदिर) दर्शनके लिए जाय.

पूजाका फल विषे.

मंदिरमें दर्शनके लिए जाउंगा ऐसा विचार करनेसे एक उपवासका, जानेंकों उठेंतो दो उपवासका, मंदिरके मार्गमें चलेतो तीन उपवासका, मंदिरको देखनेसे चार उपवासका, मंदिरके दरवाजेपर आनेसे ठउपवासका, मंदिरके अंदर जाके दर्शन करनेसे पंदरे उपवासका, जिन पूजा करनेसे एक मासके उपवासका फल मिले. तीन बार “निःसीही” शब्दकों उच्चारके मंदिरमें प्रवेश करना. मंदिरकी प्रथम सारसंज्ञाल (देखरेख)करके पीठे पूजा करना.

मूलनायककी प्रथम पूजा करके पीछे अंदर बाहार सब जिनबिंबकी पूजा करना. अवग्रहसँ बाहिर नीकलके पीछे जक्ति सहित वंदना करे. फिर सामने बैठके चैत्य वंदना करे. एक नमुथ्युणंका पाछसँ जघन्य, दो नमुथ्युणंसे मध्यम, पांच नमुथ्युणंसे उत्तम चैत्य वंदना जाणनी. फिरजी दुसरी प्रकारसँजी तीन प्रकारकी चैत्य वंदना होतीहे. स्तुति पाछ बोलते योग मुद्रा, वंदना करते जिनमुद्रा, प्रणिधानके समय मुक्ताशुक्ति मुद्रा, करनी. (नमुथ्युणंका पाछ उच्चरते योग मुद्रा, जावंति चेइयाइं यहपाछ बखत जिनमुद्रा, जयवियराय उच्चरते मुक्ताशुक्ति मुद्रा करी जातीहे.) (यह परंपरागत आम्नायहे) पेटके उपर दो हाथकी कुणी स्थापन करके, कमल डोमके अकार दोहाथकों एकिछे संयोजित करके परस्पर अंगुलियोकों योजित करने कों “योग मुद्रा” कहते हे. (यह चैत्यवंदन करने के बखत होती हे) चार आंगुली आगे, और तीन आंगुली पीछें, पिहुलि (पोहोली) रखे, फिर दोहाथ अपने घुटणके पास टटार रखके, नीची दृष्टीसँ खम्हा रहनेको “जिनमुद्रा” कहतें हैं. (यह कायोत्सर्ग समय होतीहे) दो घोटणके बिचमें रहे हुवे, मोति पकनेकी दो ठीपके समान दोनुं हाथ परस्पर जुडे हुवे होय; एसे आकारवाले दो हाथोंकों अप

नी ललाट (कपाल) पर लगाना उसकों “मुक्ता शुक्ती” मुद्रा कहतें हे (यह मुद्रा जय वीयराय कहती बरुत करी जाती हे)

जगवंतकों नमस्कार करके मंदिजीसे बहार निकल ती बरुत “आवस्सही” एशा उच्चार करके निकले. फिर घर जायके अपने जाइ मित्रोंको साथ लेके जह्य अजह्यका (विचारवाला) जोजन करे . (११

पग धोया सिवाय, क्रोधांध होके, दुर्वचन बोल ता दक्षिण दिशाके सन्मुख बेठके जोजन करेसो रा दस जोजन कहा जाताहे.

पवित्र वस्त्र और शरीरसें अठे स्थानपर बेठके स्थि रतासें देव गुरुको याद करके, जोजन किया जाय सो मानुष्य जोजन गिना जाताहे. स्नानादिकसें श रीर शुद्ध करके, जिनपूजाकरके पूज्य जनो (माता पिता) कों प्रसन्न करके, मुनिजनोंकों और सत्पात्रों कों दानादिक देके पीठे जोजन किया जाय. सो उत्तम जोजन गिना जाताहे.

जोजन, मैथुन, वमन(कय उलटी) दातण, लघु नीति, बडीनीति (कामा पेसाव) करनेके समय बु ङ्गिमानोंकों मौन रहना चाहिये. क्यों की ज्ञान आ शातना होतीहे. अग्नि कोंन, नैरुत कोंन, और दक्षि ण दिशि यह तीन दिशा जोजनके वास्ते वर्जित हे सूर्यके उदय और अस्त समय, चंद्रसूर्यके ग्रहण

मय अपने बिरादरोंका शव (मुरदा) पडा होय,,
तहां तक, चोजन नहीं करना.

संपदा ठते चोजन में लोज रखे सो बमा मूर्ख
हैं. मानों वो पुरुष अन्य जनोंके लिए धन कमाताहे.

अशुद्ध और अज्ञात जाजनमें, जाति बाहिरके
घरका वा उनके हाथका, अज्ञात और निषिद्ध
अन्न पान फलादिक खाना नहीं.

बाल, स्त्री, गर्जपात, गो, ए चार हत्याके करने
वालेकी, आचार ब्रष्टो की, कुलमर्यादाका उलंघन
करनेवालोकी पंक्ति में बैठ के जाणकार होके चो-
जन करना नहीं.

मदिरा, मांस, सेहेत, अक्षण (लुंणी मसका)
बड पीपल उंबर वृक्षादि पांच जाति के फल, अनं-
तकाय, अज्ञात फल, फूल, साक, पत्र, रात्रि चोज-
न, कच्चे गोरससें मीला हुवा विदल, फूग लगाहुवा
अन्न, दोदिन उपरांत का दहि, बिगमा हुवा अन्न,
जिस्में जीव पडे होय ऐसे फल, पत्र, पुष्प, औरजी
जिस्मे जीव उत्पन्न होनेका संज्ञव होय ऐसे अचा-
रादिक सब अजक्यों कों धर्मवंत प्राणी वर्जित करे.
चोजन उर वडीनीतिमे विशेष देरलगाना नहि. पा-
णी पीनेमें और खान करनेमें उतावल करना नहि.

पानी पीना चोजनकी आदिमे विष समान. अं-
तमें शिद्धासमान और मध्यमे अमृत समान जाणना

अजीर्ण हुवा होय तहां तक जोजन नही करना. पूर्ण कुशाकालमे अरने कों रूचे सो जोजन करना. जोजन किये पीठे मुख शुद्धि जल सुपारी तां बूझादिकसे करनी.

विवेकी जन रस्तेमें चलते तांबूल न खाय. सुपारी प्रमुख अक्षत फल दांतोंसें जांगना नही. क्यों की उससें जीव घात होता हे.

जोजन कीये पीठे उष्णकाल सिवाय सोना नही क्यों की सोनेसे शरीरमें व्याधिका संभव होता हे. इति दिनचर्या द्वितीयः वर्गः समाप्तः

॥ अथ तृतीय वर्ग प्रारंभः ॥

जोजन किये पीठे अपने घरकी शोभा देखता, विचक्षणोंसें वार्त्तालाप करता, पुत्रादिकोंको शिखा वन देता थका सुखसें दो घडी वार विवेकी जन अपने घरमें ठहरे.

गुणकी प्राप्तिकरनी यह अपने स्वाधीन हे. धनादिकका सुख दैवाधीन हे. एसे तत्त्ववेत्तोओंको कजी गुणकी हानी नहि होती हे.

कुल हीन पुरुषजी अपने गुणसें उच्च दशाको प्राप्त कर शक्ताहे देखिये किचरुसें उत्पन्न होने वाला पंकज (कमल) कों सब अपने शिरपर धारण करतेंहे और पंक (कादा किचरु) पेरसें घिसा जाता हे.

गुण उत्पन्न होनेके लिए कोइ कुल वा खांण न-
ही हे परं उत्तम प्राणि अपने गुण करके प्रख्यात
और उच्चदशा प्राप्त होता हे. जेसें सत्वादि गुण
युक्त प्राणी राज्य योग्य हो जातेंहैं तेसें एक विंश
शक्ति गुण युक्त होनेसें प्राणिगण धर्म योग्यहो शक्ते हे.

(१) जिस्का हृदय क्रुद्र (तुठ) नहो, (२) सौम्य
होय, (३) रूपवंत हो (४) जन वद्वज्ज हो (५) क्रुर
न हो, (६) जवज्जीरु (संसारसें जन्म जरामरणादि-
कसे मरताहो)(७) मूर्ख न हो (८) दाक्षिणतावाला
हो (९) लज्जावंत हो (१०) दया सहित हो (११)
मध्यस्थ हो (१२) सौम्यदृष्टि हो (१३) गुणरागी हो
(१४) सद्गुता हो (१५) सुपरिवारयुक्त हो (१६)
दीर्घदृष्टी हो (१७) कुल परंपराकों माननेवाला हो.
(१८) विनीत हों. (१९) गुणकों झूलनेवाला न हो-
(२०) परहित हितार्थी हो (२१) सब बातोंका सम
जदार हो. यह इक्किस गुण युक्त प्राणी धर्म रत्नके
योग्य हो शक्ताहे.

पंडित पुरुषोंने बहुत करके राज कथा, देशक
था, स्त्री कथा, जक्त कथा नही करनी क्यों की
एसी विकथा करनेसें कुल धाज तो होता नही परं
अनर्थका तो बरोबर संजव हे.

धर्म कथाजी अपने सुमित्रो और बंधवोंसें कर-

नी. धर्मशास्त्रके रहस्य के जाणकारोंके साथ धर्म (तात्वीक) विचार जरूर करना चाहिये.

जिससे पाप (अधर्म) बुझिकी वृद्धि होय ऐसे लोगोंमें मित्रता और सहवासजी नहि रखना. को इसका कोप, वचन सहन करना परं अपने न्याय-को न ठोकना.

अवर्णवाद तो कोशकाजी विचक्षणने बोलना नहीं. और पिता गुरु, स्वामी, राजादिकका तो अवर्णवाद जरूर बोलनाहि नहीं.

मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलीनजातिवाला, धर्म-निंदक, कुशीलिया, लोचि, चोर, इतनेकी संगती कजी नहि करनी.

“अज्ञात जनकी प्रसंशा करनी, अज्ञातको अपने घरमें स्थान (उत्तरा) देना, अज्ञात कुलसे सादी करना, अज्ञातकों नोकर रखना, अपनेसे बड़े लोगोंसे कोप वा विरोध करना, गुणिजनसे तकरार करनी, अपनेसे अधिक दरज्जेवालेको नोकर रखना, करजा करके धर्ममे धन लगाना, अपनी दुःखी अवस्थामेंजी अपना धन पराये हाथमें होयसों नहीं याचना, अपने बिरादरोमें विरोध करना, स्वजनों को ठोडकर अन्यजनोंसे मैत्री करना, शक्ति ठते धर्ममे उद्यम नहीं करना, नोकरोका दंड करके उस धनसे अपने मजा उरानी, दुःखी अवस्थामें अप-

ने बांधवोंका साहाय याचना, अपने मुखसे अपने गुणका वर्णन करना, अपने बोलते बोलते हंसना, जिस तिसका खाना," यह सब कार्य लोक विरुद्धहे और मुखताके चिन्हहैं सो त्याग करना. न्यायसे धन उपार्जन करना. अपनी रीत रीवाजोंमें देश, कालके विरुद्धका त्याग करना. राज विरोधियोंका संग और महाजनसे विरोध न करना. कुल, शील, आचारमे अपने समान जनसे और जिन गोत्रवालेसे व्यावसा-दी करना. अपनी जातिवालोंके पडोसमें अपना निवास रखना. जहां उपद्रव होवे ऐसे स्थानका त्याग करना. अपनी पेदासीके प्रमाणमे खर्चरखना लोकमे निंदा न होय ऐसा अपनी संपदानुसार वेष रखना. अपने देशका आचारको और अपने धर्मको न ठोकना.

जो अपना आश्रय चाहे उनके हितमें रहना. अपना बलाबलका विचार रखना. अपने हित अ-हितका विशेष विचार रखके कार्यमे प्रवर्तना. अपनी इंद्रियोंको वश रखना. देव व गुरुमें बड़ा जक्ति जाव रखना. स्वजन, दीन हीन दुःखी, अतिथी की यथायोग्य आगता स्वागता करनी. यह विचार चा-तुर्यताको अपने चित्तमें रखना. विचक्षणोंसे शास्त्रसु-नता, वा सीखता थाका विचक्षण कितनाक समय को व्यतीत करे. नसीब पर विश्वास रखकर निरू-

यम बेठा न रहे परं धन उपार्जनका उपाय करे
 क्यो की उद्यम विना नसीब कच्ची फल देता नहीं
 है. कूरा तोल, कूडा माप, कूमाखेख प्रमुख अनर्थ
 कार्योंको त्याग करके शुद्ध व्यवहारसे व्यापारमे स
 दा प्रवर्त्ते. अंगारकर्म, वनकर्म, शकटकर्म, जाटक
 कर्म, स्फोटककर्म, दंतवाणिज्य, लाक्षावाणिज्य, रस
 वाणिज्य, केशवाणिज्य, विषवाणिज्य, यंत्रपीकन, नि
 लाह्नन, (बेलके कर्ण नाक अंड नख रोम ठेदना)
 असतीजन पोष (कुत्ते बिह्वे तोते प्रमुख जानवरोसे
 आजीविका करनी) दवदान (दव लगाना) सर ड
 ह तलाव शोषण करना. यह पंदरे कर्मादानका व्या
 पार श्रावक न करे.

लोखंरु, महुडाके पुष्प, मदिरा, सेहेत (मधु)
 कंद, मूल, पान, फल, प्रमुख वस्तुका आजीविका
 निमित्त श्रावक व्यापार न करे.

उष्ण कालमें बहुत जीव विराधना होनेके जय
 सैं विचक्षण श्रावक फाद्युण माससैं उपरांत तिल,
 गुड, टोपरा, डाक्षा प्रमुख मेवा प्रमुखका व्या
 पार न करे.

चातुर्मासमें श्रावक गादीमे घोडे बेलोंकों जोरे
 नहीं. बहुत आरंज प्रवर्त्तक कृषि कर्म श्रावक करे
 करावे नहीं.

योग्य मोल मिलता होय तो लेण देण करना. बहु-

त लाजके लिए अधिक लोभ न करना क्यों की अधिक लाजके लोभसें कोइ समय मूल धनकाजी नाश हो जाता हे. विशेष लाज होता होय तथा पि उद्धार कोइको न देना. दगिने ररेके सिवाय धनके लोभसें कोइको व्याजसें धन न देना.

चौरीका माल निश्चय हुवे पीठे थोडे मोलसे मिलता होय तो जी न लेना. सरस निरस वस्तुका जेल सेल न करना चोर, चंमाल, मलीन परिणाम वाला, धर्मजृष्ट, इनोके साथ इह लोक परलोकके सुख बांढकोने व्यवहार न करना.

विवेकी जन विक्रय समय असत्य न बोले. और लेनेके समय अपने वचनकी कबुलातको लोपनही करे.

अदृष्ट वस्तुका सट्टा नहि करना. सोना, चांदी हीरा मणि प्रमुख पदार्थोंकी सत्यसत्य परिक्षा कीये विना लेना नही.

राज बल सिवाय अनर्थ और विपत्तीका निवारण होशक्ता नही इसके लिए राज्यमें मैत्रता, परिचय, रखनी चाहिये परं राज्यमे पराधीन न होना (स्वाधीन रहना योग्य हे.)

तपस्वी, कवि, वैद्य, मर्मका जानकार, रसोइ करनेवाला, मंत्रवादी, अपने पूज्य (माता पिता धर्म गुरु विद्यागुरु) इनपर क्रोध न करना. अव्यर्थी पुरु

षकों अतिक्लेश, धर्मका उल्लंघन, नीचकी नोकरी, विश्वास घात, न करना.

लेण देणके कार्यमें अपने वचनका लोप करना नहि क्यों की अपने वचन पालनेवालोंकी बन्नी प्रतिष्ठा होती है.

विचक्षणोंको अपना धन मालका नुखसान होते ठते जी अपने वचन पालनेकी बन्नी जरूरत है. स्वल्प लाजके वास्ते अपने वचनका लोप करनेवाले वसुराजाके न्याय दुःखी होते हैं.

एसे एसे व्यवहारमे तत्पर पुरुषो तीसरा और चौथा प्रहर दिन बितावे. और संध्या समय व्याख्य करनेको अपने घरजावे. एकाशनादिक तप जिसने किया होय उनोने संध्या समय प्रतिक्रमणके वास्ते अपने गुरुके पास जाना.

दिवसके अष्टम जागमे (चार घन्टी दिन ठते) व्याख्य करना. सूर्यास्त समय और रात्रिकों विवेकी ने जोजन करना नही. आहार, मैथुन, निद्रा, स्वाध्याय (पठन पाठन) यह चार कृत्य संध्या समय प्राणिगणको विशेषकरके त्यागने चाहिये.

क्यों की सूर्यास्त समय जोजन करनेसे व्याधि होती है. मैथुन करे तो दुष्ट गर्ज होता है. निद्रा करे तो जूतादिकोंका उपद्रव होता है. पठन पाठनसे निर्बुद्धी होता है.

व्यालु किये पश्चात् अवश्य दिवस ठते चोवीहा रका पञ्चस्काण करना. कदापि नहीं बन शके तो डु विहार तेविहार तो अवश्यमेव करनाहि चाहियें क्यों की रात्रिजोजन त्यागनें से दररोज एकाशन करने जितना लाज मिल शक्ता हे.

जो प्राणी रात्रि जोजनमें दोष जाणके सबेर और सांजकों दो दो घन्टी आहारको आगेसें त्याग करतेंहे सो प्राणी पुण्यशाली जाणना. जो प्राणी यावज्जीव रात्रि जोजनकों त्याग करतेंहे. सो अवश्य अपने समग्र आयुष्यका अर्धजाग के उपवासका फलको सहज मात्रमें प्राप्त कर शक्ता हे. और वो धन्य बादके योग्य होता हे. दिवस, रात्रिकों जो प्राणि मरजीमें आवे तब खाया करे और व्रत पञ्चस्काणसे विमुख हे सो प्राणि अवश्य शृंग पुढ विनाका पशु समजनां.

रात्रिजोजन करनेवाले पुरुष घूअडे, काक, बिल्व मांजार, गीध, सांबर, सूअर, सर्प, विबु, घीरोली, के अवतार प्राप्त करते हे. रात्रिकों हवन, श्राद्ध देवपूजा, दान, स्नान, और जोजन तो विशेष कर के नहींज करना ऐसा अन्य शास्त्रोमेंनि लिखाहे.

इति दिनचर्यायां तृतीय वर्गः समाप्तः ॥

स्वल्प जलसें हाथ पग और मुखकों प्रक्षालित करके धन्य धन्य मानता बडे हर्षसे संध्या समय धूप दीपादिकसें पुनः जिनपूजा करे.

सक्तिया सहित ज्ञान मोक्ष साधक होता है
 ऐसा जाणके संध्या समय पुनः आवश्यक करे.

क्रियाहे सोहि फल दायक होतीहे परं एकिला
 ज्ञान फल दायक नहीं हो शक्ता है. देखिये स्त्रीकों
 जोगे बिना और जोजनकों खाए बिना एकिले उ
 स्के सुखके जाननेसे सुख न होता है.

गुरुका योग न होय तो अपने घरमें स्थापनाचा
 र्य अथवा नवकारवाली प्रमुख की स्थापना करके
 उसके पास अवश्य प्रतिक्रमण करना.

धर्मसेहि सर्व कार्य सिद्ध होतेहे ऐसा हृदयमें
 जाणके सर्वकाल तद्गत चित्त रहना. और धर्म सम
 यकों न उल्लंघन करना. कारणकी धर्मका साधनके
 समय गए पीठे अथवा समय न हुवे पहिले जोज
 प तपादिक धर्म क्रिया किइ जाय सो अनवसरपर
 उखर क्षेत्रमे बोए बीजके न्याय निष्फल हो जाताहे.

पंडित पुरुष जो धर्म क्रिया करताहे उसमे सम्य-
 क् विधि करताहे. क्यों कि न्यूनाधिक विधि करनेसे
 मंत्रजापके न्याय न्यूनाधिक करनेसे लाजके बदले
 अधिक दोष लगताहे. अर्थात् न्युनाधिक क्रिया क
 रनी नहि. औषधीजी लेनेकी विधिमे चूक कीइ
 जाय तो अनेक अनर्थको उपजा शक्तीहे तेसे धर्म
 क्रियाजी अविधिसें सेवनकीइ जायतो अनेक अन
 र्थ उपजाती है. वास्ते विधिमे बिलकुल चूक करना

हि नहीं. वैयावच्च (गुरुसेवा, पगचंपी) करनेसें अक्षय सुख, मंगल, श्रेयकी प्राप्ति होतीहे. इसलिये प्रतिक्रमण समाप्ति पीछे विवेकी गुरुकी विश्रामणा करे. गुरुकी विश्रामणा समय मुखपर वस्त्र लपेटनां, गुरुकों अपने पगका स्पर्श न होने देना. ऐसें गुरुके सर्व शारीरीक खेदको मीटावे. उपाश्रयसें निकलके रस्तेमें जो जो जिनमंदिर आवे उनमें दर्शन करता थका अपने घर जाय. तिहां पग धोयके पंचपरमेष्ठी मंत्रका जाप करे.

मेरेको अरिहंतका, श्रीसिद्धजी महाराजका, केवली ज्ञापित धर्मका, साधुजी महाराजका शरण हो.

मंगलके करनेवाले, दुःखगणसें दूर रखनेवाले, शीलसन्नाह (बकतर) को पेहेनकें काम कंदर्पकों जितनेवाले श्रुतीज्ज्ञ मुनि कों नमस्कार हो.

गृहस्थ ठतेजी जिसकी बड़ी शील लीलाथी और सम्यक्त के प्रज्ञावसे जिसकी विशेष शोभाथी ऐसे सुदर्शन सेठकों नमस्कार हो.

कामकंदर्पकों जितनेवाले, आजम्रपर्यंत. अति चार रहित ब्रह्मचर्यकों परिपालन करनेवाले ऐसे मुनियोंको धन्य, कृत पुण्यसे नमस्कार हो.

एसे पंच परमेष्ठीका स्मरण करके कामोदयके लिए नीचे प्रमाणे विचार करे. जिस्ने अपनी इंद्रियोका जय कियाहि नहि एसे बहुल कर्मी, निःसत्त्व, जीव,

एक दिन मात्रजी शील पावनेको समर्थ नहो शक्तें हे. हे संसार समुद्र. मदिराजेसेमदयुक्त नेत्रोंवाली स्त्रीरूप दुस्तर पहाड बिचमें न होते तो तेरा पार कों प्राप्त करना कुछ दूर नथा. मुक्ति पदकों अंतराय करनेवाली स्त्रीये प्राणिगणकों अवश्यमेव एक शि ह्वारूपहि गिणनी चाहिये. असत्य, साहस (उतावल) माया (कपट) मूर्खता, लोभकी अधिकता, अपवित्रता, दया रहितता, इतने दोष स्त्रीयोंमें स्वभावसेंहि होते हैं.

जो स्त्री (मुक्ति) रागी उपरजी वैरागी होती हे ऐसी स्त्रीकों कोन जोगवेगा ? जो पंक्ति होगा सोहि जोगवेगा. क्यों कि मुक्ति रूपिणी स्त्री वैरागी उपर बरोबर रागी हे परं रागी उपर रागी नहीहे. समझसा स्त्रीयोंके विषयमें असारता विचारता थका समाधिमें कितनाक काल निद्रा करे. परंतु पर्वति श्री प्रमुख उत्तम दिनोमें उत्तम श्रावक स्त्रीयोंसे विषय जोग करे नही.

विवेकीगण बहुत काल निद्रामें व्यतीत न करे. क्यों की विशेष निद्रा करनेसे धर्म अर्थ और सुख ए तीनोंका नाश होता हे.

जो प्राणी स्वद्वप (थोड़ी) निद्रा करे, स्वद्वप आहार लेवे, स्वद्वप आरंज करे, स्वद्वप परिग्रही, स्वद्वप क्रोध करनेवाला होय ऐसे लक्षणवालोंको अवश्यमेव स्वद्वप संसार होता हे.

निद्रा, आहार, जय, स्नेह, लज्जा, काम, कलि (लडाइ) क्रोध. यह चिजें ज्यों ज्यों अधिक कीये जाय त्यों त्यों अधिक बढ़ती जाती है.

विघ्न रूप वल्लिका समुदायकों छेदनेमें साक्षात् कुहाडा समान श्री नेमिनाथ जगवंतकों याद कर के सयन करें तिनकों अवश्यमेव दुष्ट स्वप्नोंका पराजय न हो शक्ता है.

अश्वसेन राजा और वामादेवी राणीके पुत्र, श्रीपार्श्वनाथजीका नाम स्मरण करके सोवे तो अवश्य मेव अनर्थ कारक दुष्ट स्वप्न न देखें. महसेन राजा और लक्ष्मणा नाम राणीके पुत्र श्री चंद्रप्रज्ञा स्वामीका स्मरण करनेसे सुखसे निद्रा आती है. सर्व विघ्नरूपी सर्पके दूर करनेमें साक्षात् गरुड समान, परम सर्व सिद्धिके प्रदायक, श्री शांतिनाथ स्वामीका जो ध्यान करता है उनको बिलकुल जय न हो शक्ता है.

॥ इति दिनचर्यायां चतुर्थ वर्गः ॥

सर्व जवोंमें उत्तममें उत्तम यह मनुष्य जन्मकों प्राप्त होके प्राणि गणने उसे सुकृत करके सकल सफल करना. निरंतर धर्मके सेवनसे सुखजी तदनुसार अचल मिल शक्ता है. वास्ते दान, विद्याध्ययन, शुद्धध्यान. जप तपादिक सुकृत्योंमें अपने दिन अवध्य (अखंड) करना.

आयुषके तीसरे जागमे अथवा अंत्य समयमे

जीव आगंतुक जवका शुजाशुज आयुष्य बांधताहे-
आयुष्य बंधका तीसरा जाग बहुत करके पंच पर्वी
की तिथीयोके दिन आताहे इसलिए पंच पर्वणीमे
आरंज त्यागादिक सुकृत्यों कीये जांय तो अवश्य
शुज आयुष्य बंध होय. वास्ते पंच पर्वणीमे अवश्य
विशेष धर्म कृत्य करना उचित हे.

प्राणी द्वितीया तिथीके आराधनसें रागद्वेषकों
जय करके आगंतुक जवमें साधु श्रावक यह दो प्र
कारके धर्मकी प्राप्ति कर शक्ताहे.

पंचमीके आराधनसे पंच ज्ञानकों प्राप्त करके
फिर पंच विध प्रमादका त्याग होनेसें शुद्ध चारित्र
धर्मकों प्राप्त हो शक्ता हे.

दुष्ट अष्ट कर्मोंके नाश करनेके लिए और अष्ट
मदका जय करनेके लिए पुनः अष्ट प्रवचन माता
का परिपालनके लिए अष्टमी तिथीकी आराधना
करना ठीक हे.

एकादशीके आराधनसें ग्यारह अंगके ज्ञानकी
प्राप्ति होतीहे और ग्यारह श्रावककी प्रतिमाकों व
हनेकी योग्यता प्राप्त होती हे.

चतुर्दशीके आराधनसें प्राणी चउद पूर्वके ज्ञान
योग्य होके चउदे राजके उपर सिद्धत्वावस्थाकों
प्राप्त होता हे.

यह पंच पर्वणीका महिमां याद करके पंच पर्व

णीमे जो धर्माराधन करेतो अवश्य शुच फलकों प्राप्त कर शक्ता हे.

अतएव पंच पर्वणीमे विशेष धर्माराधन तप जपा दिक करना और उत्तर गुणकी वृद्धिके लिए स्नान, मैथुनादिकका अवश्य त्याग करना. पर्वणीमे अवश्य पौषध करना. न बन शके तोत्री प्रतिक्रमण सा मायक जप तपादि अवश्य करना.

पर्वणीमे कल्याणकादि तप करना. उपवास एका शणा, आयंबिल, बियाशणा, नीवी प्रमुख तपसे विं शति स्थानक तप आराधना.

जो विधि पूर्वक यह तप आराधन किया जाय तो परम सुखके प्रदायक, सर्वोत्कृष्ट तीर्थकर गोत्र उपार्जन हो शक्ता हे.

पंचम्यादि तपका उद्यापन करनेसे प्रणिधानकी पूर्णाहुती होतीहे और विशिष्ट फलकी प्राप्ति हो शक्ती है वास्ते उद्यापन अवश्य सब तपके करना. उपवास करके जो प्राणी पाक्षिक प्रतिक्रमण कर ताहे सो अवश्य पंदरे दिनके पापकी शुद्धी करता हे और उनके उजय पक्ष शुद्ध होशक्ते हैं. तीन चोमासीमें (आषाढ, फाट्गुण, कार्तिक की चउद सीमें) अवश्य षष्ठ (बेला) करना चाहियें.

आष्ठम चउदश पंचमीकेदिन उपवास, प्रतिक्रमण, आरंजवर्जन, अवश्य करना. जादोंकी श्रीपर्यु

षण्पर्वणीमें अवश्य कट्पसूत्र सुनना. और यथा शक्ती विशेष धर्म कर्म करना. श्रावक धर्म कर्ममें संतोष न करे परं आरंजादिकमें संतोष करके अवश्यत्याग करे. उत्तम श्रावक एकवीस बार जो कट्प सूत्रकों सुनेतो अवश्य आद्यजवमें सिद्धि पदको प्राप्त हो शक्ता है. निरंतर सम्यक्तके और ब्रह्मचर्यके पालनेसें जो लाज होताहै उससें अधिक कट्प सूत्र सुननेसें होशक्ता है. दान देनेसें विचित्र तप करनेसें, सत्तीर्थके सेवन करनेसें, जो प्राणिगणके पाप क्षय होते है सो सब शास्त्र श्रवण का महिमा है. मुक्तिसें कोई अधिक तप, शत्रुंजय से अधिक कोई तीर्थ, सम्यक्तसे कोई तत्त्व, कट्प सूत्रसें अधिक महिमावंत कोई सूत्र नहीं है. दीवालीकी अमावास्याकी रात्रिको जगवंत महावीर स्वामी मोक्ष गए और उसी प्रतिपदाके प्रातः काल श्री गौतम स्वामीजी केवल ज्ञान पाये है इसलिए यह दोदीन अतीव पवित्र है वास्ते उपरोक्त महा पुरुषोंका उसदिन ध्यान स्मरण करना. दीवालीमें दोउ पवास, करके धूप, दीप, करके अखंड चावलसे गौतम स्वामीके नामका वा मंत्रका जाप करे तो इह लोक परलोकमें महोदय सुख पायें. अपने घरमें वा ग्राम चेत्यमें विधि पूर्वक पूजा करके आरती मंगल दीपक करके अपने घर जायके अपने ज्ञाई मित्र

पुत्रादिक कों साथ लेके जोजन करनां. जगवंतके पंचकल्याणकों के दिनमे यथाशक्ती सत्पात्रोंकों और याचकों को दानदेना.

॥ इति दिन चर्यायां पंचम वर्गः ॥

उत्तम श्रावक धर्म कर्ममे प्रवृत्ति रखता थका पूर्ण निवृत्तिको प्राप्त कर शक्ताहे इसलिये अतृप्त मनसे निरंतर धर्म कर्म अवश्यमेव करना.

जिस धर्मसे यह संपदाको प्राप्त हुवा हे तो अवश्य उस अपने उपकारीकों सेवन किये बिना कोन रहेगा. ऐसा कोन मूर्ख होय की जिससे आगामी कालमें लाज होने वालाहे ऐसे स्वामी (धर्म) को सेवन करनेमें प्रमाद रखके आप स्वामी झोहीका पातकी बने?

दान, शील, तप, जाव यह चतुर्विध धर्मकों धीर पुरुष आराधके (पुण्यानुबंधिपुण्य) और मोक्ष सुखक्यों प्राप्त करलेता हे. थोमामेंसेंजी थोमा दानदेना परं बहुत मिलनेकी अपेक्षा न रखनी, क्योंकी इष्टानुं सारी लक्ष्मी क्या मालम कब मिलेगी?

ज्ञानदानसे ज्ञानवान् होता हे. अन्नदानसें निर्जय होता हे. अन्नदानसें सुखी होता हे. औषध दानसें प्राणि अवश्य निरोगी होता हे.

पुण्यकर्मसे कीर्ति होतीहे. दान हे सो मात्र कीर्तिके लिए नहीं हे परं मोक्ष सुखके वास्ते दिया

जाता है. मात्र कीर्तिके लिए जो प्राणी दान देते हैं सो दान धर्म नहीं है परंतु वो व्यसन है. (विनोद मात्र है ऐसा जानना.) व्याजमे धन दुगुणा होता है. व्यापारसें चोगुणा लाभ होता है. क्षेत्रसें सो गुणा लाभ होता है. परं पात्रदानमें अनंतगुण लाभ हो शक्ता है.

साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, प्रतिमाजी, मंदिरजी, ज्ञान यह सात क्षेत्रमे धनका बोना बीजके न्याय विशेष लाभ दायक होता है. जो प्राणि ज्ञाति जावसे जिन मंदिर नया बनाता है उसमे बहुत लाभ है. क्यों की नये बनाये मंदिरके जितने परमाणु (रजकण) की संख्या होती है तितने पद्मोपम प्रमाण देव सुख जोगता हैं.

औरजी यह है कि जितने दिन नया मंदिर रहता है तितने हजार वर्ष मंदिर बलानेवाला देवायु जोक्ता होसक्ता है.

सोना, चांदी, पाषाण, रत्न, मृत्तिका प्रमुखकी याशक्ति जो प्राणी नयी प्रतिमां जरावे तो जरानेवाला प्राणी तीर्थकर पद पामता है. कममे कम एक अंगुष्ठमात्रकीजी जो प्राणी नयी प्रतिमा जरावे सो प्राणी अवश्य देवादि सुख जोगके परमानंद पद प्राप्त होता है. मोक्षफलका देनेवाला धर्मरूप वृद्ध का मूल समान यह जैनागमको जो प्राणी लिखा

ताहे वांचताहे और जावसे सुनताहे तो उनको अत्यंत जावकी (सम्यक्तकी) विशुद्धी होती हे.

जो प्राणि जैनागम लिखाके गुणिजनोंको वांचने के लिए समर्पण कताहे उनकों उस शास्त्रके वर्ण मात्र अक्षरकी संख्या जितने वर्ष देवलोक गति प्राप्त होती हैं ।

जो ज्ञानकी जक्ति करी जातीहे वो ज्ञान विज्ञानसे शोजनीक होताहे. ज्ञान विज्ञानकी प्राप्तिकरने वाला अन्नदानहे इसलिए उत्तमजन हर वर्ष यथा शक्ती एकैक स्वामीवृत्त करे. बांधव कुटुम्बको जि माना यह संसार हेतुहे परं उस्मेजी साधर्मीक वृत्त ल किया जायतो अवश्यमेव विशेष लाभ प्रद होता हे. अर्थात् जवसंसारसे तारकता गुणनिष्पादक हो सकता हे.

हर वर्ष सर्व प्राणीने अपने अपने तरफसे अवश्यमेव एक वार तो स्वामी वृत्त करना हि चाहिये. विवेक वान् श्रावक हर वर्ष एक वार तो अवश्यमेव श्रीसंघपूजा (प्रजावना) यथाशक्ति करे. योग्य आहार वस्त्र प्रमुख श्रीगुरुकों जलीजक्ति जावसे देवे. यद्यपि अपनी विशेष शक्ति न होय तथापि यथाशक्ती सत्पात्रोंकों असन, पान, खादिम स्वादिम, वस्त्र, पात्र, औषध प्रमुख अवश्य मेव देवे.

कूवा, आराम, बगीचा, वृक्ष, तलाव, गौ प्रमुख जो दान करते हैं तथापि उनका जल प्रमुखको हानी नहीं आती है प्रत्युत उनकी वृद्धि होती है तेसैं सत्पात्रमें दान देनेसैं धन जाता नहीं हैं परं प्रत्युत उनकी वृद्धि करता है ऐसा समजना चाहिये.

प्रत्यक्ष देखियें की दान देने में और शुक्तजो गी होनेमें कितना बड़ा अंतर(फरक) देखाजाता है. शुक्त जोग (खायापीया) दुसरे दिनहि विष्टारूप होजाता है. और दान दिया अक्षत होता है (वृद्धि पामता है) वास्तव में विचार किजीयें की देनेमें अधिक लाज हुवा कीखाय खरचाय बेठनेमें अधिक लाज होता है? सो विचारवंत आपहि समज सक्ते हैं.

शतसः प्रयाश करके प्राप्त किया और प्राणसैजी अधिक बह्वज, यह धन है. उनकी गती (कार्य) मात्र एकदानहि है. अन्य गतिजो देखिजाती है सो मात्र विपत्ती समजीजाती है. न्यायमार्गसे उपार्जित कि ये धनको जो विवेकी जन सप्त क्षेत्रमें नियोजित करते हैं सो श्रावक अपने धन और जीवितकों स फल कर सक्ते हैं.

॥ इति दिनचर्यायां षष्ठः वर्गः समाप्तः ॥

इति चारित्रसुंदर गणि विरचितः आचार ग्रंथः
समाप्तः

अथ वार्षिकचर्या माह

जैनोंको वर्षदिनमे अवश्य ग्यारह कृत्य करने चाहिये सो बताते हे. प्रथम संघपूजा करनी सो यथाशक्ती नवकारवालीसैं लेके सौनामोहोर प्रमुख सब श्रावकोंमे अथवा अपने अपने गहमे बाटनी. अर्जी वर्तमानकालमे जिस्कों (पहिरावनी) कहते हैं सो यथाशक्ती वर्षमे एक दो चार वार अवश्य करना चाहिये (इससैं महावाज होता हे)

दूसरा कृत्य साधर्मीक वात्सल्य दरवर्षमे एकवारतो अवश्यमेव करना. दुःखी जैनोंका यथायोग्य यथाशक्ती समुद्धरण करना. गुप्त दान करना. श्रावकोंको आमंत्रण करके अंतरंग जक्तिजावसे जिमाना. और तांबुल पुष्पादिक देके प्रणाम करके सबका सत्कार करना. इससैं तीर्थकर गोत्र बंध होता हे.

तीसरा कृत्यमे अष्टाहिक यात्रा सो अष्टान्हिका महोत्सव मंदरजीमें करना. नही बनेतो एक वर्षमे एक वार पूजा तो अवश्य पढानी. ॥ चोथा कृत्यमें रथयात्रा सो एक वर्षमे एक वार अवश्य रथ निका लना. एकिलेसे नबनेतो कितनेक समुदाय मिलके-र्जी अवश्य करना. ॥ पांचमां कृत्यमे तीर्थयात्रा सो पंचतीर्थी वा हर कोइर्जी तीर्थकी समुदायसहित यथाशक्ती हरएकवर्ष एक यात्रा तो अवश्यकरनी.

ठठे कृत्यमें देवद्रव्य वृद्धि करना. यथाशक्ती यथायोग्य एकवार तो जंडार ढोकना. चमावा बोलना.

सातमे कृत्यमे स्नात्रादि पूजा पढाना. पुण्यवान प्राणी नित्य स्नात्र पढातेहे यदि न बनेतोत्री पर्वणी प्रमुखमे पढानी और एकवर्षमे जघन्यसे एकवारता अवश्यमेव स्नात्रपूजा पढानीइससेंजी अधिक स्नात्रहे.

आठमें कृत्यमे हरवर्ष एकवारतो अवश्य विशेष विधिसे श्रुत ज्ञान पूजा करना. यद्यपि ज्ञान पूजा हरहमेशका कर्तव्य हे तथापि ज्ञान पंचमी प्रमुख सब पंचमीके दिन यथाशक्ती वासक्षेप धूप दीप नैवेद्य रोकनाणा वस्त्रादिकसे ज्ञानपूजा अवश्य करनी.

॥ नवमें कृत्यमे हरवर्ष एक उद्यापन करना. इसमें यह विचारहे की हरेक प्राणीकों हरवर्ष एकेक तपतो नया जघन्यसे करनाहि चाहिये. जो तप करना उस्का उद्यापन अवश्य करना. यद्यपि सब तपके उद्यापन नहि बन शके तो एक तपका तो जरूर करना.

॥ दशमे कृत्यमे तीर्थ प्रज्ञावना करना. इसमे रथ नीकालना. गुर्वादीकोका नगर प्रवेश मोठव करना ग्यारमें कृत्यमे हरवर्ष पापकी शुद्धीकेलिए गुरुके पास वार्षिक पापकी आलोचना लेणी. वर्ष दिवसमे अपने जाणतां अणजाता जो कुठ पाप हुवे होय सो गुरुकों कहना और उन पापकी शुद्धीकेवास्ते जो

प्रायश्चित्त (तप) करना कहेसो स्विकार करना ॥

इति दिनचर्यायां वार्षिक कृत्यानि ॥

॥ अथ आजन्म कृत्यान्याह ॥

त्रिवर्ग सिद्धिके लिए सर्व प्राणिमात्रने अपने जन्मसे जीवित पर्यंत अठारह कृत्य करना सो कहते हैं.

प्रथम कृत्य यहहे की जैनोने धर्म, अर्थ, काम यह तीन वर्ग यथायोग्य साधन हो शके ऐसे स्थान पर निवास करना क्योंकि जहां जिनमंदिर, अपने स्वजातीयजन, अपने गुरुकी जोगवाई, खान पान शुद्धी न होय ऐसे स्थानपर रहनेसे सुख न हो सकेगा.

दुसरा कृत्य यहहे की त्रिवर्गसिद्धिके लिए यथायोग्य विद्याअ्यास करणा क्यों की संपूर्ण विद्या न होय तो सर्व प्रकारसे हानी प्राप्त होवेगी. त्रिवर्ग संसिद्धि न हो सकेगी.

तीसरा कृत्य उत्तम स्त्रीसे लग्न करना क्यों की स्त्री बिना त्रिवर्गका सुख साधन न हो सक्ता हे.

चोथा कृत्यमे सन्मित्रोंसे मित्रता रखणी क्यों की सन्मित्रोंके सहवाससे कइकइ बातोंका लाभ मिल शक्ता हे नहिबणे तोजी एक दो धर्ममित्रतो अवश्य रखना चाहिये.

पंचम कृत्य यहहे की उत्तम प्राणीने यथाशक्ती एक जिन मंदिर अवश्य करना क्यों की इससे लक्ष्मी की साफल्यता और जन्म सफल होता हे.

ठठे कृत्यमें अपने न्यायो पार्जित वित्तसे बहुत नहितो एक दो चारजी प्रतिमा जरावणी.

सातमे कृत्यमें यथाशक्ती प्रतिष्ठा अंजन शलाकाके महोत्सव करने.

आठमे कृत्यमें पुत्रादिकोंको धर्मयोग्य करने.

नवमें पदस्थोके पद महोत्सव यथाशक्ती करना.

दशमें कृत्यमे नीति, व्यवहारीक, धार्मीक शास्त्रें वांचनेका, संग्रह करनेका सोख रखणा.

ग्यारहमें कृत्यमें पौषधशाला, विद्याशाला, धर्मशाला, औषधशाला, पांगुलाशाला यथाशक्ती करना.

बारहमें कृत्यमे धर्मशुद्धिके लिए प्रतिमा वहना.

तेरहमे कृत्यमें जीवित पर्यंत सम्यक्त पालना-

चवदमे कृत्यमें जीवित पर्यंत यथाशक्ती व्रत पञ्च स्काणकों निरतिचार परिपालन करना.

पंदरेमे कृत्यमें शक्ती होय तो दीक्षा लेना.

सोलहमे कृत्यमें वृद्धावस्थामें आरंज परिग्रह और अधिक खटपटोंका त्याग करना.

सत्तरामे कृत्यमे वृद्धावस्थामे शीलपरिपालन करना.

अठारहमें कृत्यमें अपना शमाधि मरण होय एसे साधन न रखने (सत्संगती प्रमुख रखके दुर्गती से बचनां. और मनुष्य जवकों सफल करना ॥

॥ इति आजन्म कृत्यानि समाप्तानि ॥

॥ अथ चतुर्थ परिच्छेद प्रारंभः ॥

॥ अथश्री सीमंधरजिन स्तवन ॥ रासडाना राग
मां ॥ रूपैयो ते आलुं रोकनो. महारा
वालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनकुं ते महारुं मोकले, महारावालाजीरे ॥
ससिहर साथें संदेश ॥ जइने कहेजो महारावाला
जी रे ॥ ए आंकणी ॥ जरतना जक्तने तारवा ॥
मा० ॥ एक वार आवोने आदेश ॥ जइ० ॥ १ ॥
प्रभुजी वसो पुष्करावती ॥ मा० महाविदेह खेत्र
मजार ॥ जइ० ॥ पुरी राजें पुंडरिगिणी ॥
मा० ॥ जिहां प्रभुनो अवतार ॥ जइ० ॥ २ ॥ श्री
सीमंधर साहेबा ॥ मा० ॥ विचरंता बीतराग ॥
जइ० ॥ पन्निबोहो बहु प्राणीने ॥ मा० ॥ तेहनो पामे
कुण ताग ॥ जइ० ॥ ३ ॥ मन जाणे ऊर्मी महुं
॥ मा० ॥ पण पोतें नहीं पांख ॥ जइ० ॥ जगवंत
तुम जोवा जणी ॥ मा० ॥ अलजो धरे ठे ए आंख
॥ जइ० ॥ ४ ॥ दुर्गम महोटा रुंगरा ॥ मा० ॥ नदी
नाखानो नहीं पार ॥ जइ० ॥ घाटीनी आंटी घणी ॥
मा० ॥ अटवीपंथ अपार ॥ जइ० ॥ ५ ॥ कोरी
सोनैये कासीदी ॥ करनारो नहीं कोय ॥ जइ० ॥
कागलीयो केम मोकलुं ॥ मा० ॥ होंश तो नित्य
नवली होय ॥ जइ० ॥ ६ ॥ लखुं जे जे
लेखमां ॥ मा० ॥ लाख गमे अजिलाष ॥ जइ० ॥

तमें लेजामां ते लहो ॥ मा० ॥ मुऊ मन पूरे ठे
 सांख ॥ ज६० ॥ ७ ॥ लोका लोक सरूपना ॥ मा०
 ॥ जगमां तुमें ठो जाण ॥ ज६० ॥ जाण आगें शुं
 जणावीये ॥ मा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ ज६० ॥
 ॥ ८ ॥ वाचक उदयनी विनति ॥ मा० ॥ ससिहर
 कहा संदेश ॥ ज६० ॥ मानी लेजो महारी ॥ मा० ॥
 वस्ति दूर विदेश ॥ ज६० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥

इहा आव एक ^{पद्माक्षी, श्रीश्री} ~~दीक्षा, श्रीश्री~~ फल पातक मारार ॥
 श्रीयु० ॥ १ ॥ दुखम समयमां एणे जरतें, अति-
 शय नाणी नवि वरते ॥ कहीये कहो कोण सांजल
 तेरे ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें,
 नयणां दरिसणनवि पामे, एतो ऊगरानो ठामेंरे ॥
 श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकरु
 लीनी परें दुःख सहेवुं, प्रभु विना कोण आगल
 शय नाणी नवि वरते ॥ कहीये कहो कोण सांजल
 तेरे ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें,
 नयणां दरिसणनवि पामे, एतो ऊगरानो ठामेंरे ॥
 श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकरु
 लीनी परें दुःख सहेवुं, प्रभु विना कोण आगल
 कहेवुं रे ॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ महोटा मेहेल करी
 आपे, बेहुने तोल करी थापे, सज्जन जस जगमां
 व्यापे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ बेहुनो एक मतो थावे,

केवल नाण जुगल पावे, तो सविवात बनी आवे
रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥ गजद्वन्द्वन गजगतिगामी, वि
चरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी
रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुतारायें जायो, सुदृढ
नरपति कुल आयो, पंकित जिनविजयें गायो रे ॥
श्रीयुग० ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतुं स्तवन ॥ फतमल पाणीमाने जाय,
॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहं करूं
जी ॥ बीज तिथि गुणगेह, आदरो जवियण सुंदरू
जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहूं ते
सुणो जी ॥ माहा शुदि बीजें जाण, जन्म अजिनं
दन तणो जी ॥ २ ॥ आवण शुदिनी हो बीज, सु
मति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण जवोदधि तेह,
तस पद सेवे सुरथोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर
शुजठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र व
दिनी हो बीज, वर्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥
फाट्गुन पासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी
जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तव पास
नी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि बीजें वासु
पूज्यनोजी ॥ एहिज दिन केवल नाण ॥ शरण
करो जीनराजनोजी ॥ ६ ॥ करणी रूप करो खेत, सम
कित बीज रोपो तिहां जी ॥ खातर किरियाहो

जाण, खेड शमता करी जिहाजी ॥ ७ ॥ उपशम
 तजुप नीर, समकित ठोरु प्रगट होवे जी ॥ संतोष
 केरी हों वारु, पच्चस्काण व्रत चोकी सोहे जी ॥ ८ ॥
 नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृद्ध फढ्यो तिहां-
 जी ॥ मांजर अनुजव रूप, उतरे चारित्र फल जि-
 हां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारस वारी, पान करी सुख
 लीजीयें जी ॥ तंबोल सम द्यो स्वाद, जीवने संतो
 ष रस किजीयें जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश
 उत्कृष्टी बावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास
 पाळियें शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दो
 य वार, पम्हिलेहण दोय लीजीयें जी ॥ देववंदन
 त्रण काल, मन वच कायायें कीजीयें जी ॥ १२ ॥
 ऊजमाण शुभ चित्त, करी धरीयें संयोगशी जी ॥
 जिन वाणी रस एम, पीजीयें श्रुत उपयोगशी जी
 ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो. बीज, रागने छेष दूरें
 करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट
 धरी जी ॥ १४ ॥ जिन पूजा गुरु नक्ति, विनय करी
 सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, नक्ति पामे सुख
 संपदा जी ॥ १५ ॥ इति श्री बीज तिथिनुं स्तवन ॥

॥ अथ श्री पंचमीनुं लघुस्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो नि
 र्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पढी क्रिया, नहिं को
 इ ज्ञानसमान रे ॥ पंचमी ० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञा

न वखाएयुं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अ
वधि ने मनःपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी०
॥ १ ॥ मति अठावीश श्रुत चउदह विह, अवधि
असंख्य प्रकार रे ॥ दोय जेदें मनः पर्यव दाख्युं, के
वल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह
नक्षत्र तारा, जेहवो तेज आकाश ॥ केवलज्ञान स
मुं नहिं कोइ, लोकालो प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥
पारसनाथ प्रसाद करीने, ह्यारी पूरो उमेद रे ॥ स
मयसुंदर कहे हुं पण पासुं, ज्ञाननो पांचमो जेद रे
॥ पंचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ज्ञानपंचमी स्तवनं

॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ एदे शी ॥ सुत सिद्धारथ
जूपनोरे ॥ सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परषदा
आगलें रे ॥ जाषें श्रीवर्द्धमानोरे ॥ १ ॥ जवियण
चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे ॥ ज्ञान
जक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम
तणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज
वसुंरे ॥ जिणथी दंसण होयरे ॥ २ ॥ ज० ॥ ज्ञाने
चारित्र गुण वधेरे, ज्ञान उद्योत सहाय ॥ ज्ञानें
स्थिविरपाणुं लहेरे, आचारज उवझायरे ॥ ३ ॥
ज० ॥ ज्ञानी श्वासो श्वासमांरे, कठिण करम करे
नाश ॥ बन्हि जिम इंधण दहे रे, क्षणमां ज्योति प्र-
काशो रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ प्रथम ज्ञान पठें दया

रे, संवर मोह विनाश ॥ गुण ठाणंग पग आलीयें
 रे, जेम चढे मोह आवासो रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ मइ
 सुअ उहि मणपज्जावा रे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ
 मुंगा श्रुत एक ठे रे, स्वपर प्रकाश निदान रे ॥ ६ ॥
 ज० ॥ तेहनां साधन जे कहां रे, पाटी पुस्तक आ-
 दि ॥ लखे लखावे सांचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो
 रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, ज
 णतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोवडा रे, मुंगा
 पांगुला थायरे ॥ ८ ॥ ज० ॥ जणतां गुणतां न आ
 वडे रे, न मळे वल्लज चीज ॥ गुण मंजरी वरदत्त
 परेरे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ९ ॥ ज० ॥ प्रेमें पूठे
 परखदा रे, प्रणमी जग गुरु पाय ॥ गुणमंजरी वर
 दत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति उजलोरे

ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपना जरतमां रे, नयर पदम पुरखास ॥
 अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे
 ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्ति नि
 दान रे ॥ प्राणी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर ते
 हनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरे जणवा मूकि
 जेरे, आठ वरस जब हुंत रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पंकि
 त यल करे घणो रे. ठात्र जणावण हेत ॥ अक्षर
 एक न आवडे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥

कोठें व्यापी देहमी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी
 तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥
 कपूरतिलका गेहिनी रे, शीले शोजित अंग ॥ गुण
 मंजरी तस बेटडी रे, मुंगी रोगें व्यंग रे ॥ ५ ॥
 प्रा० ॥ शोल वरषनी सा थइ रे, पामी यौवन वेश ॥
 दुर्जग पण परणे नहीं रे, मात पिता धरे खेद रे
 ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणें अवसरे उद्यानमां रे, विजयसे
 न गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरू रे, चरण करण
 व्रतधार रें ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक जूपावने रे,
 दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन
 जावे ताम रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सांजले रे,
 पुरजन सहित नरेश ॥ विकसित नयन वदन मुदा
 रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ ९ ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन
 परजवे रे, मूरख परआधीन ॥ रोगे पीड्या टलवले
 रे, दीसे दुःखीया दीन रे, ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान
 सार संसारमां रे, ज्ञान परमसुखहेत ॥ ज्ञान विना
 जग जीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ ११ ॥ प्रा० ॥
 श्रेष्ठी पूढे मुणींदने रे, जांखो करुणावंत ॥ गुण
 मंजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥
 १२ ॥ प्रा० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीमां ॥

॥ धातकी खंडना जरतमां, खेटक नयर सुठाम ॥
 व्यवहारी जिन देव ठे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥

अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंक्ति
 पासैं शीखवा, तातें मुक्या कुमार ॥ १ ॥ बालस्वजा
 वें रामत, करतां दहामा जाय ॥ पंक्ति मारे त्यारें,
 मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी शी
 खवे, जणवानुं नहीं काम ॥ पंड्यो आवे तेमवा, तो
 तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खनिया देखण,
 बाली कीधां राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम क
 रहानें डाख ॥ ५ ॥ पाकापरें महोटा थया, कन्या
 न दीये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज कर
 णी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी जांखे जामिनी ॥ बेटा बाप
 ना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे ठे सहु कोय
 ॥ ७ ॥ रे रे पापिणी सापिणी, सामा बोल म बोल ॥
 रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥
 शेठें मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटी
 उपनी, ज्ञानविराधन हेव ॥ ९ ॥ मूर्ठागत गुणमंज
 री, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गु
 रुने कहे शिरनामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी,
 केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो
 वंठित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वस पंचमी सेवो, पंच व
 रस पंच मास ॥ “नमो नाणस्स” गणणुं गुणो, चो
 विहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मुख, ज
 पियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य
 फलादिउदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवट तणो, सा

थियो मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शके, तेणवि
धि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौजाग्य पंचमी, उ
ज्वल कार्तिकमास ॥ जावज्जीव लगें सेवीयें, उजम
णा विधि खास ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमां ॥

॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥
चावखी दोरा रे, पाटी पांटला वतरणां ॥ म
सी कागल रें, कांबी खमीआ लेखणी ॥ कवली डा
बली रे, चंद्रआ ऊरमर पुंजणी ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ प्रा
साद प्रतिमा तास जुषण, केसर चंदन मावली ॥
वासकूपि वालाकूंची, अंग लूहणां ठावमी ॥ कलश
थाली मंगलदीवो, आरतीने धूपणां ॥ चरवला मुह
पत्ती साहमीवढल, नोकरवाली थापना ॥ २ ॥
ढाल ॥ ज्ञान दरिसण रे, चरणनां साधन जे
कह्यां ॥ तप संयुत रे, गुणमंजरीयें सदह्यां ॥ नृप
पूठे रे, वरदत्त कुंवरनें अंग रे ॥ रोग उपनो रे, क
वण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ मुनिराज जा
से जंबु छीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी
वसु तास नंदन, वसु सार वसुदेव नाम ए ॥ वन
मांहे रमतां दोय बंधव, पुण्य योगें गुरु मढ्या ॥ वे
राग्य पामी जोग वामी, धर्मधामी संवर्या ॥ ४ ॥
ढाल ॥ लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहे ॥ प
णसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिष्ट ॥ कर्म

योगे रे, अशुज उदय धयो अन्यदा ॥ संशारे रे
 पोरिसी जणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ त्रूटक ॥ सर्वघा
 निंद व्यापी, साधु मागे वायणां ॥ उंघमां अंतराय
 यातां, सूरि दुआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर छेप
 जाग्यो, लाग्यो मिथ्या जूतको ॥ पुण्य अमृत
 ढोली नारुं, जस्यो पाप तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥
 मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥ श्रुत
 अज्यास्यो रे, तो एवढो संताप रे ॥ मुजबांध
 वरे जोयण सयण सुखें करे ॥ मूरखना रे,
 आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ बार वासर
 कोइ मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥ अशुज ध्यानें
 आयु पूरी, जूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञानविराधन
 मूढ जरुपणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्धबांधव मान
 सरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥ ढाल ॥ वरद-
 त्तने रे, जातिस्मरण उपनुं ॥ जव दीठो रे, गुरु प्र-
 णमी कहे शुजमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञानजगत्रय
 दीवको ॥ गुण अवगुण रे, जासन जे जग परवडो
 ॥ ९ ॥ त्रू० ॥ ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो
 केम आवडे ॥ गुरु कहे तपत्री पाप नासे, टाढ जेम
 घन तावके ॥ जूप पजणें पुत्रने प्रजु, तपनी शक्ति
 न एवकी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा
 द्यो बेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ सजरुवयण सुधारसैं रे, जेदी साते धात ॥ त
पशुं रंग नागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नागो रो
गमिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो
रे, पसस्यो महीयल मांही ॥ त० ॥ कन्यासहस सयं
वरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ जूपें
कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि जूप ॥ त० ॥ जी
म कांत गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त०
॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, जोगवे जोग अ
खंड ॥ त० ॥ वरसैं वरसैं उजवे रे, पंचमी तेज
प्रचंरु ॥ त० ॥ ४ ॥ जुक्तजोगी थयो संयमी रे, पा
ले व्रत खट काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रनेरे,
परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ
साधवी रे, वैजयंतें दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण
ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमर
सेन राजा घरें रे, गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्ष्म
ण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो जेट ॥ त० ॥ ७ ॥
शूरसेन राजा थयो रे, शो कन्या जरतार ॥ त० ॥
सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥
त० ॥ तिहां पण ते तप आदखुं रे, लोक सहित,
जूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले रा
ज्य उदार ॥ त० ॥ ८ ॥ चार महाव्रत चौपशुं रे
श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्तें गयो

रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी वि
जय शुजापुरी रे, जंबु विदेह मजार ॥ त० ॥ अम
रसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥
११ ॥ वैजयंतथकी चवी रे, गुणमंजरीनो जीव ॥
त० ॥ मान सरस जेम हंसलो रे, नाम धखुं सुग्रीव
॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसें राजवि रे, सहस चोरा
शी पुत्र ॥ त० ॥ छाख पुरव समता धरे रे, केवल
ज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमीतप महिमाविषे
रे, जांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें जेहथी सु
ख लखुं रे, तेहने तस उपकार ॥ १४ ॥ त० ॥ इति ॥

॥ ढाल ठठी ॥ करकंठुने करु वंदना ॥ ए देशी ॥

॥ चोवीश दंरुक वारवा ॥ हुं वारी लाल ॥ चो
वीशमो जिनचंदरे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राण
त स्वर्गथी ॥ हुं ॥ त्रिशला उर सुखकंदरे ॥ हुं
॥ १ ॥ महावीरने करु वंदना ॥ हुं ॥ ए आंकणी ॥
पंचमी गतिने साधवा ॥ हुं ॥ पंचम नाण विद्यास
रे ॥ हुं ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं ॥ पंच
मी तप प्रकाश रे ॥ हुं ॥ २ ॥ अपराधी पण उरु
ख्यो ॥ हुं ॥ चंरु कोशियो साप रे ॥ हुं ॥ यज्ञ
करता ब्रामणो ॥ हुं ॥ सरखा कीधा आपरे ॥ हुं
॥ ६ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हुं ॥ रिखजदत्त वली
विप्ररे ॥ हुं ॥ व्याशी दिवस संबंधथी ॥ हुं ॥
कामित पूख्यो क्षिप्र रे ॥ हुं ॥ ४ ॥ कर्म रोगने

टाखवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे ॥ हुं० ॥
 आदख्यो में आशा धरी ॥ हुं० ॥ मुज उपर हित
 आणिरे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्रीविजयसिंह सूरेशनो ॥
 हुं० ॥ सत्यविजय पन्यासरे ॥ हुं० ॥ शिष्यकपूरवि
 जय कवि ॥ हुं० ॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ हुं०
 ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्यें ॥ हुं० ॥ खिमावि-
 जय गुरु नाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ ह
 जो ॥ हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥
 कलश ॥ इय वीर नायक, विश्वनायक, सिद्धि दाय
 क, संस्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोकर, गुंथी
 निज कंठें ठव्यो ॥ पुण्य पाटण, क्षेत्रमांहे, सत्तर त्रा
 णुं संवत्सरें ॥ श्रीपार्श्व जन्म, कल्याण दिवसे, सक
 ल जवि, मंगल करे ॥ ७ ॥ इति श्रीपंचमीस्तवनम् ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनु स्तवन लिख्यते ॥

॥ हारि मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश
 जो ॥ दीपे रे त्यां देश मगध सहुमां शिरें रेखो ॥
 हारि मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो ॥
 राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परें रे खो ॥ १ ॥ हारि
 मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो ॥ विच
 रंतां तिहा आवी वीर समोसखारे खो ॥ हां० ॥ चउद
 सहस्स मुनिवरना साथें साथ जो ॥ सुधारे तप
 संयम शियले अलंकखारे खो ॥ २ ॥ हां० ॥ फूल्या
 रस जर कूल्या अंब कदंब जो ॥ जाणुं रे गुणशील

वन हसि रोमंचीयो रे लो ॥ हां० ॥ वाया वाय
 सुवाय तिहा अविळंब जो ॥ वासें रे परि मल चिहुं
 पासें संचियो रे लो ॥ ३॥ हां० ॥ देव चतुर्विध आवे
 कोमा कोड जो ॥ त्रिगडुंरे मणि हेम रजतनुं ते
 रचे रे लो ॥ हां० ॥ चोशठ सुरपति सेवे होमाहोम
 जो ॥ आगें रे रस लागे, इंद्राणी नचे रे लो ॥ ४॥
 हां० ॥ मणिमय हेम सिंहासन बेठा आप जो ॥
 ढाळे रे सुर चामर मणि रत्ने जड्यां रे लो ॥ हां० ॥
 सुणतां डुंडुजि नाद टळे सवि ताप जो ॥ वरसे रे
 सुर फूल सरस जानू अड्यां रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥
 ताजे तेजे गाजें घन जेम लुंब जो ॥ राजे रे जिन
 राज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी
 आवे जनमन लुंब जो ॥ पोषे रे रस न पडे
 धोंखे जर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणि
 जिननों श्रेणिक रायजो ॥ आव्योरे परवरियो
 हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० ॥ दइ प्रदक्षिणा
 वंदी बेठो ठाय जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मोटे
 जायगें रे लो ॥ ७॥ हां० ॥ त्रिभुवन नायक लायक तव
 जगवंत जो ॥ आणीरे जन करुणा धर्मकथा कहे
 रे लो ॥ हां० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जंत
 जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मनमां गह गहेरे लो
 ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ बालम बहेलारे
आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिनवर एम उपदिशे, सांजलो चतुर सु
जाण रे ॥ मोहनी निंदमां कां पको, उलखो धर्मनां
ठाण रे ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ ए
आंकणी ॥ परिहरो विषय कषाय रे, बापका पंच
परमादर्थी ॥ कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥ वि० ॥ १॥
करी सको धर्मकरणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥
सर्वकाले करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेषरे
॥ वि० ॥ ३ ॥ जू जूआ पर्व षट्नां कक्षां, फल घणां
आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारें आराधतां, सर्वथा
सिद्धिफल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवनें आयु परज
व तणुं, तिथिदिने बंध होय प्रायरे ॥ तेह जणि
एह आराधतां, प्राणिउं सज्जति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥
तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूठे गौतम स्वामरे ॥ ज
विक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रजु तामरे ॥
वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, संपदा
आठनी बुद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एह
थी आठ गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाज होय
आठ पडिहारनो, अठ पवयण फल होयरे ॥ नाश
अरु कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥
वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजि-
तनो जन्म कळ्याण रे ॥ च्यवन संजव तणो एह

तिथें, अग्निनंदन निर्वाण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ सुमति सु
 व्रत नमि जनमीया, नेमनों मुक्तिदिन जाणरे ॥
 पास जिन एह तिथे सिद्धला, सातमा जिनच्यवन
 माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउं,
 दंडवीरज लह्यो मुक्तिरे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी,
 कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ ११ ॥ अतीत अनागत का
 लना, जिन तणां केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें
 वली घणा संयमी, पामशे पद निर्वाणरे ॥ वि०
 ॥ १ ॥ धर्मवासित पशु पंखिआ, एह तिथे करे
 उपवास रे ॥ व्रत धारि जीव पोसों करे, जेहने धर्म
 अज्यास रे वि० ॥ १३ ॥ जांखियो वीरे आठम
 तणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें
 उच्चरी प्राणिया, पामशे जव तणो पार रे ॥ वि० ॥
 ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोरु
 रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति करजोरु
 रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ कलश ॥ एम त्रिजग जासन, अ
 चल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरु ॥ बुध प्रेमगुरु,
 सुपसाय पामी, संश्रूण्यो अल्ल वेसरु ॥ जिन गुण
 प्रसंगें, जण्यो रंगे, स्तवन ए, आठमी तणो ॥ जे ज
 विक जावे, सुणे गावे, कांति सुख, पावे घणो ॥ १॥
 इति अष्टमी स्तवनं समाप्तं ॥

॥ अथ श्री एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी
समोसख्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव
कोरुशुं परिवख्या ॥ १ ॥ जगपति द्वीगुण फूल अमू
ल, जक्तिगुणे माला रची ॥ जगपति पूजी पूठे कृं
ष्ण, द्वायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति
चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगप
ति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे
॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे
गुणनिखो ॥ जगपति कोय उपाय बताव, जेमकरे
शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वलमागशिर मास
आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशोनेपचाश, कढ्या
णक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रण
काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां
कढ्याण, विवरी कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति
अर दीक्षा नमि नाण, महिजन्म व्रत केवली ॥
नरपति वर्तमान चोवीशी, मांहे कढ्याणक आवली
॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढशो जप मा
ला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सू
णो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंरु,
पश्चिम दिशि इच्छुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण
अजिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ९ ॥ नरपति
नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नर

पति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी
 ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार जूषण ची
 वर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन
 स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र,
 सामायिक पोषध बरे ॥ नरपति देववंदन आवश्य
 क, काल बेलायें अनुसरे ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत सा
 धु तणा री ॥ विनयें विनवे शेठ, मुनिवर करी क-
 रुणा री ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन एक, थोको पुण्य
 कीयो री ॥ वाधे जिम वरु बीज, शुज अनुबंधी थ
 यो री ॥ २ ॥ मुनि जासे महाजाग्य, पावन पर्व
 घणां री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री
 ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगें री ॥
 अथवा वरस इग्यार, उजवी तपशुं वगे री ॥ ४ ॥
 सांजलि सद्गुरु वेण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥
 तप सेवी उजविय, आरण स्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥
 एकविश सागर आय, पाली पुण्य वसें री ॥ सांजल
 केशवराय, आगल जेह थशे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां
 शेठ, समुद्रदत्त वडो री ॥ प्रीतिमति प्रिया तास,
 पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूंखें अवतार, सू
 चित शुज स्वपनें री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम
 ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ नालनिक्षेप निधान, जूमिथी
 प्रगट हवो री ॥ गर्जदोहद अनुजाव, सुव्रत नाम

ठव्यो री ॥ ९ ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अ
नेक जण्यो री ॥ यौवनवय अगीयार, रूपवती स्त्री
परण्यो री ॥ १० ॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत प-
ञ्चस्काण धरे री ॥ अगीयार कंचन कोरु, नायक
पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अ
धिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रत शेठ, जाति स्मरण
लहे री ॥ १२ ॥ निजप्रत्यय मुनि शाख, जत्ते तप
उच्चरे री ॥ एकादशी दिन आठ, पहोरो पोसो धरे
री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुतें पोसह लीधो, सु-
व्रत शेठें अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आ
व्या, घरमां धन लुंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासन जत्ते
देवि शक्ते, थंजाणा ते बापमा जी ॥ कोलाहल सुणि
कोटवाल आव्यो, झूप आगल धर्या रांकडा जी
॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ जेटणो
जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठें कीधो पार-
णों जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सो-
रीपुरमां आकरो जी ॥ शेठजी पोसह समरस बेठा,
लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट व.
खारो शेठनी, उगरी सह प्रशंसा करे जी ॥ हरखें
शेठजी तपउजणुं, प्रेमदा साथें आदरे जी ॥ ५ ॥
पुत्रने घरनो चार जलावी, संवेगी शिर सेहरोजी ॥
चउनाणी विजयशेखर सूरि, पासें तपव्रत आदरे जी

॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चौमासी, दोसय ठठ सो अठम करे जी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपाजित कर्म उदेरी, अंगें वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्में नडीयो पापें जमीयो, सुर कहे जाउं औषध जणीजी ॥ साधु न जाये रोष जराये, पाटु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जिन पद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामने जी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयंपे नेमने ए, धन्य धन्य यादव वंश ॥ जिहां प्रभु अवतस्या ए ॥ मुज मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवा देवी मावनी ए, समुद्रविजय धन्य तात ॥ सुजात जगतगुरु ए, रत्नत्रयी अवदात ॥ जयो० ॥ २ ॥ चरण विराधीउपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गढ्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ जयो० ॥ तो पण हुं न करी शकुं ए दुष्ट कर्मना जेय ॥ जयो० ॥ ४ ॥ पण सरणो बलियातणो ए, कीजें सीजे काज ॥ जयो० ॥ एहवा वचनने सांजली ए ॥ बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आरा

ध ॥ जयो०॥ आईश जिनवर बारमो ए, जावि चो
वीशियें लाध ॥ जयो० ॥ ६ ॥ कलश ॥ इय नेमि
जिनवर, नित्य पुरंदर, रेवताचल, मंडणो ॥ बाण
नंदमुनि, चंद वरसें राजनगरें, संशुण्यो ॥ संवेग
रंग, तरंग जलनिधि, सत्यविजय, गुरु, अनुसरी ॥
कपूरविजय कवि, क्षमा विजय गणि, जिन विजय
जय, सिरि वरी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे
जिनराय ॥ सहगुरु सामिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं
पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण
गंजीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वरुवी
र ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि पर-
णाम ॥ जविक जीवना हित जणी, पूढे गौतम स्वा
मि ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें अ
रिहंत ॥ सुधां सरस तव वचन रस, जांखे श्री जग
वंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइयें, व्रत धरीयें गुरु शा
ख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख
॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिरावियें, पाप स्थान अढा
र ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो डुरित आ-
चार ॥ ६ ॥ शुभकरणी अनुमोदियें, जाव जलो मन
आण ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सु-
जाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधन तणा, ए ठे दश

अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जेम पामो
वज्र पार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए ठिंकि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसन चारित्र तप वीरज, ए पांचे
आचार ॥ एह तणा इह जव परजवना, आलोश्यें
अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी ॥
वीरवदे एम वाणी रे प्राण ॥ ज्ञाण ॥ ए आंकणी
गुरु उलवियें नहिं गुरु विनयें, काळें धरी बहुमान ॥
सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधां, जणीयें वही उपधा
न रे ॥ २ ॥ प्राण ॥ ज्ञाण ॥ ज्ञानोपकरण पाटी
पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आ
शातना, ज्ञान जक्ति न संजाळी रे ॥ ३ ॥ प्राण ॥
इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ
जव परजव वलिय जवोजवे, मिठाडुकरु तेह रे ॥
॥ ४ ॥ प्राणी समकित ल्यो शुरू जाणी ॥
ए आंकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि कीजे, नवि पर
मत अजिवाख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फ
लसंदेह म राख रे ॥ ५ ॥ प्राण ॥ सण ॥ मूढपणुं
ठंमो परसंसा गुणवंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्मे
करी थिरता, जक्ति प्रजावना करीयें रे ॥ ६ ॥ प्राण ॥
॥ सण ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद म
न लेख्यो ॥ द्रव्य देवको जेविणसाड्यो, विणसंतां

उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० स० ॥ इत्यादिक विपरीत
 पणाथी, समकित खंड्युं जेह ॥ आचव० ॥ मिष्ठा०
 ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ चारित्र्यो चित्त आणी ॥ ए आंक
 णी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवच
 न माय ॥ साधुतणे धर्मे परमादे, अशुद्ध वचनमन
 काय रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामा
 यिक, पोसहमां मन वाढी ॥ जे जयणा पूर्वक जे
 आवे, प्रवचन माय न पाळी रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ चा० ॥
 इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोढ्युं जेह ॥
 आचव० ॥ मिष्ठा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारें
 जेदे तप नवि कीधुं, ठते योंगें निज शक्ते ॥ धर्मे
 मनवचन काया वीरज, नवि फेरवियो जगतें रे ॥
 ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणी परें
 विविध विराध्या जेह ॥ आचव० ॥ मिष्ठा० ॥ १३ ॥
 प्रा० ॥ चा० ॥ वलीय विशेषें चारित्र केरा,
 अतिचार आलोश्यें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने,
 पाप मयल सवि धोश्यें रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥
 ॥ ढाल बीजी ॥ पामी सुगुरूपसाय रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ पृथिवी पाणी तेज रे, वाउ वनस्पति ॥ एपांचे
 थावर कहां ए ॥ करि करसण आरंज, खेत्र जे
 खेमीयां ॥ कूवा तलाव खणावीयां ए ॥ १ ॥ घर
 आरंज अनेक, टांकां जोंयरां ॥ मेढी माल चणावी
 याए ॥ लिंपण घूंपण काज, एणी परें परपरें ॥ पृथि

वी काय विराधीया ए ॥१॥ धोयण नाहण पाणी, जील
 ण अपकाय ॥ ठोतीधोती करी दूहव्यां ए ॥ जाठी
 गर कुंजार, लोह सोवनगरा ॥ चामुंजा लिहाला
 गरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काजें, वस्त्र निखारण
 ॥ रंगण रांधण रसवतीए ॥ एणी परे कर्मादान, परे
 परिं केलवी ॥ तेज वाज विराधीया ए ॥४॥ वाडीवन
 आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चुंटीयां
 ए ॥ पोंहक पापरी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ हुंद्यां
 ठेद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ आलसीनें एरंरु, घांणी
 घालीने ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली
 कोळुं मांहि, पीली सेलरी ॥ कंद मूल फल वेचीयां
 ए ॥ ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्या हणाविया ॥
 हणतां जें अनु मोदीया ए ॥ आ जव परजव जेह,
 वलिय, जवोजवें ॥ ते मुऊ मिळामि डुक्कमं ॥ ७ ॥
 क्रमी सरमीयां कीना, गारु गंमोला ॥ श्यल पूरा अ
 लसीयां ए ॥ वाला जलो चुडेल, विचलित रसत
 णा ॥ वली अथाणां प्रमुखनां ए ॥ ७ ॥ एम बे इं
 द्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ ॥ उदेही जूं
 लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कुंथुआ ए
 ॥८॥ गदहीयां घीमेल, कान खजूरडा ॥ गींगोमांधनेमी
 यां ए ॥ एम तेइंद्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मु
 ऊ ॥ १० ॥ माखी मत्सर कांस; मसा पतंगीया ॥
 कंसारी कोलियावडाए ॥ ठीकणवीडु तीड, जमरा

जमरीयो ॥ कोंता बग खरुमांकनी ए ॥ ११ ॥ एम
चौरिंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ ॥ जलमां
नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमा मृग संतापी
या ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पानी पासमां ॥
पोपट घाव्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव, जे में
डूहव्या ॥ ते मुऊ ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे जवे जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोच जय हास्यशी जी, बोढ्यां वचन
असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अ
दत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछाडुकड आज, तुज
साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारुंकाज रे ॥
जिनजी ॥ मि ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज ति-
र्यचना जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयरस लंपटपणे
जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि ॥ २ ॥ मि ॥ प-
रिग्रहनी ममता करी जी, जव जव मेळी आ
थ ॥ जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आ-
वी साथ रे ॥ जि ॥ ३ ॥ मि ॥ रयणी जोजन
जे कख्यां जी, कीधा जदय अजदय ॥ रसना रसनी
लासचें जी, पाप कख्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि ॥ ४ ॥ मि ॥
व्रत लेई विसारीयां जी, वली जांग्यां पच्चस्काण ॥ क
पटहेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥
जि ॥ ५ ॥ अण ढाल आवे डूहे जी, आलोया

अतिचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलनीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलनी रे ॥ अथ-
 वा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥
 सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां सं-
 जारीयें ॥ सा० ॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिव
 गति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार-
 साहम्मी संघ खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनो अप्रीति
 शी लाख तो ॥ मन शुद्ध करा खामणा ॥ सा० ॥
 कोइशुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिं-
 तवों ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष
 एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजें जन्म पवित्रतो ॥ ४ ॥
 साहम्मी संघ खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति
 तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जि
 नशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमियें ने खमावियें ॥
 सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराध-
 नतणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृ
 षावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्नतो ॥
 क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशुन्य
 तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीयें ॥ सा० ॥ कूडां
 न दीजें आल तो ॥ रति अरतिमिथ्या तजो ॥ सा० ॥
 माया मोह जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वो-

सिरावियें ॥ सा० ॥ पापस्थान आढार तो ॥ शिव
गति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए॥
ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए एदेशी

॥ जनम जरा मरणें करीए, ए संसार असार तो
॥ कस्यां कर्म सहु अनुजवे ए, कोइ न राखणहार
तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध ज
गवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गु
णवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरी ए, चार
शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए
ए पांचमां अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ जव परजव जे
कस्यां ए, पापकर्म केई लाख तो ॥ आत्मसाखें
ते निंदीयें ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मि
थ्यामति वर्त्तावियां ए, जे जांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कु
मति कदाग्रहने वशें ए, बली आप्यां उत्सूत्र तो ॥
५ ॥ घड्यां घमाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथी
यार तो ॥ जव जव मेली मूकीयां ए, करता जीव
संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषिया ए, जनम ज
नम परिवार तो ॥ जनमांतर प्होता पढी ए, कोइ
न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ जव परजव जे कस्यां
ए, एम अधिकरण अनेकतो ॥ त्रिविध त्रिविध वो
सिरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुष्क
त निंदा एम करी ए, पाप कस्यां परिहार ॥ शिवग
ति आराधन तणो ए, ए ठठो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ आदर तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥
 दान शीयल तप आचरी, टाळ्यां दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥
 शत्रुंजयादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिन
 वर पूजीया, वली पोंख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक
 ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्वि
 ध सांचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पम्किमणां
 सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवजायनें
 दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदि
 यें, एम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सा
 तमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ जाव जलो मन आ
 णीयें, चित्तआणी ठाम ॥ समता जावें जावीयें, ए
 आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने,
 कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचस्यां, जो
 गवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे,
 प्राणी पुण्यनां काम ॥ ठारउपर ते लीपणुं, जांखर
 चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ जाव जली परें जावीयें, ए ध
 र्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आठमो
 अधिकार ॥ ध० ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संक्षेपण सार ॥ अ
 णसण आदरीयें, पच्चस्की चार आहार ॥ ललुता स
 वि मूकी, ठांडी ममता ग ॥ संए आतम खेले, स-

मता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार
 अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाभ्यो, जीव लाल
 चीयो रंक ॥ दुलहो ए वली वली, अणसणनो प
 रिणाम ॥ एथी पामीजे, जिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥
 धनधन्नाशालि नद्र, खंधोंमेघकुमार ॥ अणसण आ
 राधी, पाभ्या जवनोपार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी
 एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार
 ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी
 नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जा
 ये, दुर्गति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चउद पू
 रवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जातां, जो पामे नवका
 र ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव
 पद सरिखो, मंत्र न को संसार ॥ इह जवने परजवे, सु
 ख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुठ जीवने जीवकी रा
 जा राणी थाय ॥ नव पद महिमाथी, राजसिंह म
 हाराय ॥ राणी रतनवती बेहु, पाभ्या ठे सुरजोग ॥
 एक जवथी वेशे, सिद्धि वधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीम
 ती ने ए वली, मंत्र फढ्यो तत्काल ॥ फणिधर फी
 टीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी, सोव
 नपुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सि
 ङ्ग ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेंसर जांख्यो ॥
 आराधन केरो, विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे

पाप पखाली, जव जय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय
करंतां, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो जवि जावशु ए ॥ ए देशी ॥

सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशळामात मढ्हा
र तो ॥ अवनीतले तुमे अवतल्या ए करवा अम उ
पगार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥
में अपराध कल्या वणा ए, कहेतां न लहुं पार तो ॥
तुम चरणे आव्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥
ज० ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे माहा
राज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो केम रदेशे
लाज ॥ ३ ॥ ज ॥ कर्म अबुजण आकरां ए, जन्म
मरण जंजाल तो ॥ हुं हुं एहथी उजग्यो ए, ठोडा
वो देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फ
ट्या ए, नाठां दुःख दंदोल तो ॥ तूठो जिन चोवी
शमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ जव
जव विनय तुमारमो ए, जाव जक्ति तुम पाय तो ॥
देव दया करी दीजिये ए, बोध बीज सुपसाय ॥
६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, दुः
खनिवारण, जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण थु
णतां, अधिक मन, उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजय
देव, सुरींद पटधर, तीरथ जंगम, इणि जगे ॥ तप
गढपति श्रीविजयप्रज सूरि, सूरितेजे, जगमगे ॥ २ ॥

श्रीहीरविजय सूरि, शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय, सु
रगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक, विनयविजये, शु
ण्यो, जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ इस सत्तर संवत्, उग
ण त्रीशे, रही रांदेर चौमास ए ॥ विजय दशमी,
विजय कारण, किउ गुण अज्यास ए ॥ ४ ॥ नरज
व आराधन, सिद्धि साधन, सुकृत लील, विलास
ए ॥ निर्जरा हेतें स्तवन रचियुं, नामे पुण्य, प्रका
शए ॥ ५ ॥ इति श्रीपुण्यप्रकाशस्तवनं समाप्तं ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरुपाय ॥
आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्ध
चक्र आधार, जवि उत्तरे जवपार ॥ आ० ॥ ते जणी
नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्ध चक्र गुणगेह, जस
गुण अनंत अठेह ॥ आ० ॥ समयी संकट उपश
मेजी ॥ लहियें बंठित जोग, पामी सवि संजोग ॥
॥ आ० ॥ सुरनर आवी बहु नमेजी ॥ २ ॥ कष्ट
निवारे एह, रोग रहित करे देह ॥ आ० ॥ मय
णासुंदरी श्रीपालनेजी ॥ ए सिद्ध चक्र पसाय, आ
पदा दूरें जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगल मालने जी ॥
॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय
॥ आ० ॥ मन वच काया वश करीजी ॥ नव आं
बिल तप सार, पद्धिमणु दोय वार ॥ आ० ॥ देव

वंदन त्रण टंकना जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रणवार, ग
 णणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल
 पणेंजी ॥ आराधे सिद्ध चक्र, सान्निध्य करें तेनी
 शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगें जणे जी ॥ ५ ॥
 ए सेवो निशिदीस, कहीयें वीशवा वीश ॥ आ० ॥
 आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणी
 रत्न, एहना कीजें यत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नही एह
 उपरें जी ॥ ६ ॥ श्रीविमलेश्वर यक्ष, हो जो मुक्त
 परतक्ष ॥ आ० ॥ हुं किंकर बुं ताहरो जी ॥ पाम्यो
 तुंहिज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस
 वढ्यो हवे माहरोजी ॥ ७ ॥ विनति करुं बुं एह,
 धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहियें वली
 वली जी ॥ श्रीलक्ष्मी विजय गुरुराय, शिष्य केसर
 गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुक्त लली ललीजी ॥ ८ ॥

॥ नवपदजीनुं स्तवन ॥

नवपद ध्यान सदाजयकारी ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत
 सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी
 ॥ नवपद ॥ १ ॥ दरशन ज्ञान चारित्रहे उत्तम, तप
 दोअजेदे हृदयविचारी ॥ नवपद ॥ २ ॥ मंत्रजडी उर
 तंत्र घणोरा, उन सबकुं हमदूर विसारी ॥ नवपद ॥ ३ ॥
 बहुत जीव जवजलसे तारे, गुण गावत हे बहु नरना
 री ॥ नवपद ॥ ४ ॥ श्रीजीन जक्त मोहन मुनी वंदत,
 दिनदिन चरुते हरख अपारी ॥ नव ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ मङ्गल ॥

रागिणी कालेंगरा

मङ्गल मूरत पाशकी या ॥ मङ्ग० ॥ दारुण पङ्क
सकल दुखहारी, दायकहै सुखरासकी या ॥ मङ्ग० १ ॥
सेवन ईन्द्र चन्द्र रवी सुरगुरु, चाहत हैं नित जा-
सकी या ॥ मङ्ग० २ ॥ निरखत नैन सफल जई
आस्या, करण चरणके दासकी या ॥ मङ्ग० ३ ॥ इति ॥

रागिणी बाहार

आज महोदध रंग रलीरी, जायो सुत त्रिसलादे
राणी, कामित पूरण काम कलिरी ॥ आ० ॥ सजि सिन-
गार सकल सूर बनिता, आपन आपन मेल चलिरी ॥
आवत सिद्धारथके आङ्गण, पूरत मोतीयन चोक
मीलिरी ॥ आ० १ ॥ ईन्द्र हुकुम करी धनद पठायो
सब बसुधा धन धान्य जरिरी ॥ कनकरत्नमणि पंच
वरणके, कुसुम विखेरत गलीय गलीरी ॥ आ० २ ॥
इन्द्राणी मिल मङ्गलगावे, नाचत नाटक सूर कुम-
रीरी ॥ बाजत गहर शबद कर दुन्दुजी, वीणा
वेणु मृदङ्ग जलीरी ॥ आ० ३ ॥ जय जय कार जयो
तिहुं जगमे, व्याधि व्यथा सब दूर टलीरी ॥
हरखचंद जनमें प्रजु मेरे, मनकी आस्या सफल
फलिरी आ० ४ ॥ इति ॥

चैतावरकी चाल

मङ्गल राजे गिरनार, नेमपद मङ्गल है ॥ देवा० ॥

राजमती पद पङ्कज, मंगल रहै नेमी राय ॥ ने० १॥
 मंगल धन धन्या मुनिनाथक, सब तपसि बिच सार
 ने० २ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक मंगल सब
 अनगार ॥ ने० ३ ॥ जयजय श्रेयस कुशल गुरु,
 आनन्द घन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

रागिणी काफि

गावो मङ्गलचार, सखीरी बीर प्रभुको जन्म
 जयो है । अबधी ज्ञान कर ईन्द्र हूकमदीयो, करहुं
 महोन्नव सार ॥ स० ॥ १ ॥ मेरुशिखर पर देव सकल
 मिल, करत सुजक्ति अपार ॥ स० २ ॥ वसु विधि
 पूज रचत प्रभुजीकि, सफल करत अवतार ॥ स० ३ ॥
 जय जय शब्द करत सूर नर वर, जय जय जगदा-
 धार ॥ स० ४ ॥ अजर अमर पद दायक प्रभुजी,
 सेवो शिव सुखकार ॥ स० ५ ॥ इति ॥

रागिणी ईमन कढ्यान

कीजे मङ्गलचार, आज घर नाथ पधारे ॥ की० ॥
 पहले मङ्गल जीनजीकी पूजा, घस केशर घन सार ॥
 आ० १ ॥ हुजे मङ्गल धुप जो खेजं, और चढाजं
 पुष्प हार ॥ आ० २ ॥ तिजे मङ्गल घण्टा बजाजं,
 जांजनकी ऊङ्गार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मङ्गल आरती
 ऊतारूं, नांचुं थैई थैई तार ॥ आ० ४ ॥ रूप चन्द कहे
 कहां लग वरणुं, शिव लहिये जव पार ॥ आ०
 की० ५ ॥ इति ॥

रागिणी सोहिनी-ताल यत

आज की रेण सोहाई, दरस मोहनकी में पाई ॥
 आ० ॥ पद पङ्कज तेरो मन मधुकर मेरो, सदा रहत
 लपटाई ॥ द० १ ॥ नवपद ध्यान सदा में चाहुं,
 अवर नही दील जाई द० ॥ २ ॥ अजर अमर पद
 चाहत तुमसे, आनन्द मङ्गल वधाई ॥ द० ॥ ३ ॥ इति
 रागिणी काफ़ी

पोढो पोढोजी कृषज पीयारे, निद्रा बस नयन
 तिहारे ॥ पोढो० ॥ प्रभु आलस अती ललसानी,
 पुढे मरुदेव्या माई ॥ पोढो० ॥ १ ॥ प्रभु सुनन्द
 सुमङ्गला राणी, जिनरुच रुच सेज सवारी ॥
 पोढो० ॥ २ ॥ प्रभु नवल साजन्य सनेही, तुंतो मन
 बंठित फल देही ॥ पोढो ॥ ३ ॥ इति ॥

रागिणी जैरवी

राखो नाथ बडाई, हमारी ॥ रा० सेवा चोर
 सदा मोहे जानो, दरसन देवोनें गुसाई हमारे ॥
 रा० १ ॥ अनाथनके नाथ जगत जन वञ्चल, सुन्दर
 वदन सुहाई हमारे ॥ रा० २ ॥ जानु चन्द प्रभु जल
 थल अम्बर, जहां देखो तहां सहाई हमारे ॥ ३ ॥ इति
 रागिणी कालेंगरा ॥

आवो गावो वधाई मोरी साथनीयां ॥ आवो० ॥
 नृप सुमित्रके पदमा देवी, सुत जायो सुखदाईरी ॥
 आवो० १ ॥ जन्म कल्याणक करीये जाको, मुनि

सुव्रत जिन राईरी ॥ आबो० १ ॥ तीन लोकके हित
कर प्रगट्यो, नाना ऋषि हरषाईरी ॥ आबो० ३॥ इति॥

रागिणी जैरवी-ताल धिमे तेताला

आजतो बधाई राजा नाजिके दरबाररे ॥ आ० ॥
मरु देवाजीने बेटो जायो, नाम ऋषज कुमाररे ॥ आ०
१ अयोध्यामे उठव होवे, मुख बोले जयजयकाररे ॥
घनन १ घण्टा बाजै, देव करे थैथै कररे ॥ आ०
२ ॥ इन्द्राणी सब मङ्गल गावै, लावै मोती मालरे ।
चन्दन चरची पाये लागे, प्रभु जीवो चिरकालरे ॥
आ० ॥ ३ ॥ नाजि राजा दानदेवे, वरसे अखण्डित
धाररे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे, देवे मणि जंढाररे
आ० ४ ॥ हाथी देवे सार्थी देवे, रथ देवे तुखारे ।
हीर चीर पिताम्बर देवे, देवे सब सिनगाररे ॥ आ०
५ ॥ तिन लोक को दिनकर प्रगट्यो, घर घर मङ्गल-
चाररे । केवल कमला रूप निरञ्जन, आवागमन
निवाररे ॥ आ० ६ ॥ इति ॥

रागिणी जैरवी-ताल धिमे तेताला

मङ्गलरे गावत सकल सुरनार ॥ ढेर ॥ मोती-
यन थाल जरी जाय बधावत, गावत गीत रसाल ॥
मं० १ केशर चन्दन कावन जरीयारे, कर लीय
कंचन थाल ॥ मं० २ ॥ चंद कुशलकी यही अरज
है रे, जवोदधि पार उतार ॥ मं० ३ ॥ इति ।

चैतावरकी चाल

आजकी रेण सोहानि, देखो आजकी रतियां ॥
 आ० ॥ पारस प्रजुजीको जनम जयो है, हरष जई
 देवा हरष जई वामा राणी ॥ देखो० १ ॥ अश्वसेन
 घर बटत बधाई, घर २ अरी देवा घर २ मङ्गल
 मांनी ॥ दे० आ० २ ॥ द्वार २ सब तोरण थंज
 है, चोखे मुख सेज सेगानी ॥ दे० आ० ३ ॥ रतन
 थाल मुगताफल जरके, चोक पुरे इन्द्रानी ॥ दे०
 आ० ४ ॥ सुमन अधमको निज पद दीजे, सुध
 समकित सहनानी ॥ देखो० आ० ॥ ५ ॥ इति

॥ जैरवीका झूहा ॥

प्रजुको नाम अमोल है, जामे लगत न मोल ।
 नफा बहोत तोटा नहीं, जर जरके मन तोल ॥
 ए जीब झूला फीरत है, ममताके कल्लोल ।
 अश्वसेनके लाडले, श्रीपारस मुख बोल ॥

रागिणी जैरवी-ताल यत्

बलिहारीमरु देवी नन्दकी, जज नाजिके नन्दन
 अवध बिहारी ॥ बलि ० १ ॥ तिन लोक तिन पावन
 कीन्हें, आनन्द लहर सुनन्दकी ॥ बलि० २ ॥
 कोशलपूर निकट सरजु तट, पूरण कला सो चन्दकी ॥
 बलि० ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, जयजय
 कृषज जिनन्दकी ॥ बलि० ४ ॥ इति ॥

पुनः—ताल तेताल

जगदीठा तुं मेरा प्रभु प्यारावे, तेरी आंखियां दी
मानुं अजब बनी है, सुन्दर श्याम दीदारावे ॥
जग० १ ॥ घनि २ पल २ सुमरण तेरो, कवहुं न
दीलसैं न्यारावे ॥ जग० २ ॥ जो तुऊ ध्याया तिन
सुख पावा, दरशन ज्ञान आधारवे ॥ जग० ३ ॥ इति ॥

पुनः—ताल तेताला

आज प्रभु तेरे चरण लाग, मिथ्यातनींद मै
खोईरे । दर्शन कर परशन मन मेरे, आनन्द चित
अव होईरे ॥ आज० १ ॥ तुम बिन देव अवर
नही छुजो, देखा त्रिजुवन जोईरे ॥ आज० २ ॥
दास तुमारो करत बिनती, तुम बिन मेरो न कोईरे ॥
आज० ३ ॥ इति ॥

पुनःताल कवाली

नेम जिनन्दजीसैं आंखफली; मोरी रैन दिवस
नीत लग रहीरे ॥ ने० ॥ १ ॥ पहले आय उन दोस्ती
कीन्ही, ले पीठे ठिटकाय दर्ईरे ॥ ने० ॥ २ ॥ पसु
यन पर प्रभु दया करीनै, शिव रमणीनैं वर लईरे
॥ ने० ३ ॥ केई जविक रसना कर दोस्ती, रत्न विम
ल पद पाय लई रे ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

पनः

झगन जररी देखन दे मुखन चन्द, मोरा देवी
माता श्रीधन धन, जायोठे कृषज जिनन्द ॥ झ० १

याकुं पूजत अती सुख उपजत, सब जीवन सुख
कंद ॥ ५० १ ॥ यातें हीतकर अरज करत है, ची
रंजी रहो तेरानंद ॥ ५० ३ ॥ इति

पुनः

मेरी लागी लगन, नेम प्यारेसे ॥ मे० ॥
सुनरी सखीएक बात हमारी, कहीयो कन्त हमारे
से ॥ मे० १ ॥ जोगन होकर सङ्ग चखुङ्गी, प्रीत त
जुं जग सारेसे ॥ मे० २ ॥ नाम लीयासैं आनन्द
उपजे, कीरत होत उर धारेसे ॥ मे० ३ ॥ इति

पुनः

रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोवे जिया
जागरे रा० ॥ दोय घनी तडको अब रहियो, ऊठ
धरममें लागरे ॥ रा० १ ॥ जिन वानी ऊर बीच
धारले, और जरम सब त्यागरे ॥ रा० २ ॥ आन
न्द सुगुरु बचन हित मानो, ए सुधा शिव मार्गरे ॥
रा० ४ ॥ इति ॥

रागिणी चैरबी

आदि जिनन्द, मेरो आदि जिनन्द । दरसन
तेरो है सुखकन्द ॥ मे० १ ॥ तुम दरशन विन क
ल न पमत्त है, तिन मै तो दीन हीन पकड्यो स
रण ॥ मे० २ ॥ दास तिहारो अरज करत है जि
नजी अवतो तुम्हावो जवफन्द ॥ मे० ३ ॥

पुनः

नवरिया मोरा कोन उतारे बेना पार । इह सं
सार समुद्र गंजीरा, किसबिध उतरंगा पार ॥ न०
॥ १ ॥ राग छेष दोनुं नदियां बहत है । जमर पर
त गति च्यार ॥ न० ॥ २ ॥ कृषज दासको दरसन
चहिये । ए वीनती अवधार ॥ न० ३

रागिणी जैरवी—ताल दादरा

जरखावोरे कटोरा केशरका, में नब अंग पूजुं पर
मेश्वरका ॥ ज० ॥ मरुदेवी कुंखें जन्म लियो है ।
कुमर नाजि रत्नेसरका ॥ ज० १ ॥ केशर चन्दन
पुष्प चढाउं ॥ मुख निरखु कृषजैसरका ॥ ज० २ ॥
रत्न जड़ितकी आरती उतारुं । नृत्य करुं परमेश्वर
का ॥ ज० ३ ॥ मोती चंदकी एहिज वीनती, चरणन
ढोउं परमेश्वरका ॥ ज० ४ ॥ इति

पुनः

म्हारो मुंनैं कब मिलस्यै मन मेळू ॥ मन मेळू
बिन केलिन कखिए । वालै कवल कोई वेळुं ॥ म०
१ ॥ आप मिळार्थी अंतर रावै ॥ सुमनुष ते नहि
ले लू ॥ म० ॥ २ ॥ आनन्द घन प्रभु मन मिळियावि
न ॥ कौ नवि विखगैचेलू ॥ म० ३ ॥

जैरवी—ताल दादरा

ईन्द्राणी प्रभुके वेगी आंज्यो कजरा । मे तो
नवन करि कर लेही, तुं करले इयाकी जाप जीरा

॥ १ ॥ ई ॥ मैं पहिराती जुज जुजबंध, पहरा देतुं वाली
कपका ॥ ई० ॥ १ ॥ मैं तो मुगट धरुं सीर उपर तुं पहरा
दे फूलुंके गजरा ॥ ई० ॥ ३ ॥ नयनानन्द सुर ईन्द्र
जगति लख, जविजन सम्यक दृष्टि खरा ॥ ई० ॥ ४ ॥

ताल दादरा ।

नयना पीहर वा गये नयना वदल ॥ नयना वदल
गये वनकुं निकल गये, वृत्तलीना सुधर ॥ नय ॥ व्याह
नकुं, आये मेरे छुला कहां ॥ दे दरस गये तोरणसे
फिर ॥ नय ० ॥ १ ॥ जो मारथ परमारथ कारण, कंकणको
तोड लीया संजमको धर ॥ न ० ॥ १ ॥ पशु पुकारे प्रजुजी
नीहारे । दुखिया बिचार ठोडे बन्धन कतर ॥ नय ० ॥ ३ ॥
खेलो प्यारी ठीमा हमारि । मुंजें वेगी बता दो गिरनार
की मगर ॥ ने ० ॥ ४ ॥ करुंगी नयन सुखकारी तपस्या
में तो लौंगी प्रजुके पद पंकज पकर ॥ न ० ॥

पुनः

सखीरी म्हारो, नेम गयो गिरनार । तारि है
राजुलनार सखीरी ० ॥ तोरनसे रथ पीठो फेरयो,
पशुवारी सुनिठे पुकार सखीरी ० ॥ १ ॥ सहसा व-
लकी कुंज गखिनमें, पंच महाव्रतधार सखीरी ० ॥ १ ॥
राजुल उजी अर्ज करत है, आवागमन निवार स
खीरी ० ॥ ३ ॥ चंद कपुरा कहे कर जोडी, चरण
सरण आधार सखीरी ० ॥ इति ॥

पुनः

मेंतो दासी 'तुमारी विना दामकि । निजरमें जो
 ठहरुं किसी कामकि ॥ १ ॥ और देवसे काम नहीं
 मेरे । दिलमें वसि है सूरत स्यामकी ॥ २ ॥ मे० ॥
 घडि घडि पल पल छिन छिन निस दिन । रटन
 दगरी है तेरे नामकी ॥ ३ ॥ मे० ॥ राखूगी आखुंमें
 सुरमें से बढके, जो पांउगी रजमें तेरे धामकी ॥ ४
 मे ॥ ४ ॥ तप जप संजममें चित लावो, जेसे मिले राज
 शिववामकी ॥ ५ ॥ जैन धरम मानव जव पाके । करले ज
 लाई आतम रामकी ॥ ६ ॥ मे० ॥ दास गुलावकी एहि
 अरज है । सार करो मुऊ नामकी ॥ मे० ७ ॥ इति ॥

रागिणी गारा जैरवी

वस्तुगतेवस्तुनोलक्षण, गुरुगम विनानहीपावेरे ।
 गुरुगमविन नहीपावेकोऊ, जटकत जरमावेरे ॥ जवन
 आरिशे श्रानकुकरा निजप्रतिबिंबनिहावेरे ॥ इतर
 रूपमनमाहि विचारी, महाशुध विस्तारेरे ॥ व० १ ॥ निर
 मलफिटक शिलाअंतरगत, करिवर लक्षपर ठाहिरे ॥
 दशनपुराय अधिक दुखपावे, द्वेषधरत दिलमांहिरे
 व० ॥ २ ॥ सश लेजाय सिंघकुं पकडे । कुबोदिष्ठ दि-
 खाईरे ॥ निरख हरितेजाण्डुसरो । पड्यो ऊंप तिहां
 खाईरे ॥ व० ॥ ३ ॥ निजठायावेताल जरमधर ॥ रु
 तबाव चित मांहिरे ॥ रजु सर्प करि कोउ मानत ॥
 ज्यौलौंसमजत नांहिरे ॥ व० ॥ ४ ॥ नलनी ब्रम

मर्कट मुठीजिम ॥ त्रमबशअतिदुखपावेरे ॥ चिदा
नंद चेतनगुरुगमबिना, मृग त्रक्षाधरीधावेरे ॥५॥इति

रागिणी जैरवी—ताल मध्यमान

बसोजी मेरे नेननमें महाराज, सामखि सूरत मोह
नि मूरत ॥ तारण तरण जिहाज ॥व०॥ वानी सुधारस
दरस ऊपन्यो ॥ करतां अगम अपार ॥व०॥ चेन विजय
करजोडी वीनवे, चरण कमल सिरताज ॥व०॥इति॥

रागिणी गारा जैरवी

दीनके नाथ दयाल सबन की । तैं काहेकुं कृपा
विसारीरे दीन० ॥ में हुं दीन अनाथ जगत मै, तूं
साहिव उपकारीरे । दीन० । पण अपनेकी रीत निब
हिये । दो संपद सुखकारीरे दी० ॥ दास चुनी सेव
ककी अरजी । सुनिये प्रभु जसधारीरे ॥ दी०॥इति

पुनः

प्रभु मोसे कवन वहाने बोलो, रैन दिहा मानुं
ध्यान तुमारा, अंतर दी पट खोलो ॥ प्र० ॥ हाल
असांका तुऊनुं माळुम, जो खामि टुक जोलो ॥प्र०॥
आस पुरावो दासको स्वामी, ऊटपट सङ्ग मिला लो ॥
दास चुनी पायो रत्न अमोक्षक, वेर २ क्युं तोलो ॥

रागिणी जैरवी—ताल तेताल

अविकनरसेवोशांतिजिनन्द ॥ कञ्चन वरन मनो
हरमुरती, दीपत तेजदिनन्द । १॥० ॥ पञ्चम चक्रध
र सोलमजिनवर, विश्वसेननृपकुलचंद ॥ २ म० ॥

जवडुख जंजन जन मनरंजन, लंठन मृग सुखक
 नंद ॥ ३ ज० ॥ गुनविलासपदपङ्कजजेटत ॥ पायोप
 रमानंद ॥ ४ ज० ॥ इति

रागिणी जैरवीमे होली-ताल कवाली

मेरे जाई जुई गुलावरी ॥ आज १ ॥ पूजनको
 हरख जयो ॥ एटेक ॥ केतकीचंपक मरुठ मोघरा ॥
 फूलकी पगर जरावरी ॥ आज प्रचु० ॥ १ ॥ मुकट
 कुंमल शिरठत्रबिराजे ॥ आंगीशोहे जमावरे ॥ आ
 ज० २ ॥ संत सवे मिली जावना जावो ॥ मादल
 ताल मिलावरी ॥ आज ३ ॥ अनन्तनाथ जीके
 गुणगांठ ॥ लालगुलाल उमावरी ॥ आज० ४ ॥ कर
 जोरी प्रचुआगे अरजी ॥ जवडुखसे ठोमावरी ॥
 आ० ५ आठोपोहोरहे नांम तुह्यारा ॥ ध्यानधरुं
 शुभजावरी ॥ आ० ६ आनन्द हरष वधाई उनको
 ॥ विनय सहित गुणगावरी ॥ आज० ७ ॥ इति

रागिणी सिन्धजैरवी

कुण वन वीर समोसख्या मैतोसुणिहे श्रवनधुनि
 आजरी कुण ॥ जंगम तीरथ सुरतरु, जगनायक, श्री
 जिनराजरी ॥ १ कुण० ॥ गोतमगधर सारिषा, साथै
 एकादश गणधारी ॥ मुनिचऊदसहससाथेजला, गुरु
 तारणतरणजिहाजरी ॥ २ कुण० ॥ शमव सरण रच
 ना रची, मिलचउसठसुरराजरी ॥ सूर नर विद्याधर
 मिली ॥ मिलचउविहसंध समाजरी ॥ ३ कुण० ॥ घ

णारे दीवशनी जावना ह्यारी, सफल फली सब आज
री । चलो सखी विलंबनकीजीये, बंदीजेश्रीजिनराज
री ॥ ४ कृण० । जावजगति दिलमें घणी, सजि सा
थै सामग्रीसाजरी ॥ हरखचंद राणी चेलना ॥ सास्या
निज आतमकाजरी ॥ ५ कृण० ॥ इति

रागिणी सिन्धु

आदिनाथ जिन प्यारा हो, तेरो दरशन आन
न्दकारा १ ॥ नाजि राय मारुदेविके नंदा । तुम ता
रण संसारा ॥हो ते०॥ तुमरे गुणको पार न पावे, ज
जन करे जगसारा ॥हो ते०३॥ बरस दिवसने पारणे,
स्वामी पीयोरस अपारा हो ते० ॥ ४ ईन्द्रचन्द्रनी
आस्या पुरो । मेटो कष्ट हमारा, होते० ५ ॥ इति

रागिणी जैरवी

समऊ परी मोहे समऊ परी जगमाया सब कुं
ठी ज० ॥ १ ॥ आजकाल तुं कहा करै मूख, नांहि
जरोसा दिन एक घरी ज० ॥ २ ॥ गाफिल ठिन
जर नांहि रहो तुम, सिर पर घुमें तेरे काल अरी
ज० ॥ ३ ॥ चिदानंद ये बात हमारी प्यारे, जाणो
हो नित्त दिल मांहि खरी ज० ॥ ४ ईति

पुनः

चितमें धरो प्यारे चितमें धरो ये सीख हमारी
अब चितमें धरो, ओमासा जीवनां काज अरे नर,
काहेकुं ठलपर पंच करो ये० ॥ १ ॥ कूरु कपट पर

द्रोह करण तुम, अरे मन पर जव थाह जरो ॥ ए० ॥
॥ १ ॥ चिदानंद जोए नहीं मानौ तो, जनम मरन
जव दुखमें परो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति

ताल दादरा

दोनुं दसतो में अंगीया रचावो सखी, नयना
हमारी प्रभुसेलगी ॥ दोनु० ॥ जालीकी अंगीया प्रभुकी
रचावो ॥ मस्तक मुगट पहनावो सखी ॥ नय० १ ॥
चलो सखी बागोंमें जईये ॥ चुन १ कलियां चढावो
सखी ॥ नय० २ ॥ चलो सखी जिनवंदन जईयें ॥
नृत्य करो सब मिलके सखी नय० ॥ ३ ॥ सांवरी
मूरत खूब रची है, देखतही मन नीहारो सखी ॥
नय० ४ ॥ संवत जनीसे चऊदेकी साले, माघ वदि
तीथ नवमी सखी ॥ नय० ॥ सुन्दर विजयजीकी
एहिअरज है ॥ नित उठ चरण पखावो सखी ॥
नय० ६ ॥ इति

रागिणी जैरवी

मेरो मन लागी रह्यो महावीर चरणमें जाय ॥
सिद्धारथके नन्दन ऐसे ॥ मातात्रिसला देवीमाय ॥
मे० १ ॥ जनमतही स्वामी मेरुकंपायो, संसयदीया
है मिटाय ॥ मे० ॥ द्वीकुंठ स्वामि जनम लिया
हैं, मुगत पावा पुरी जाय । मे० जो कोई ध्यावे
स्वामी सोफल पावे, चंद किरत गुण गाय मे० ॥ इति

पुनः

तु मेरी विनतकीऊर धारो । तुम तारण तिहुं
स्वामी । मोहे जरोसो तीहारो ॥ १ ॥ मोसे
आ जगमें कोई । मैं देख्यो जग सारो ॥ १॥
तुम तारण पतीत ऊधारण । जवसागरथी
तारो ॥ ३ ॥ जुल सेवककी चित्त न दीजे, अपनी
और नीहारो ॥ प्र० ॥ इति

पुनः

नाथ जयेवैरागी हमारे ॥ कासे जाय कहुं मेरी
सजनी । वीन अवगुन मोहे त्यागी ॥ हमा० ॥
परवस तुती जाय परी है तुंहिं तुंहिं रटणा लागी ॥
ह० ना० बाल विनोदी ईह रूपको नीरखत । वीर
ह व्यथा तन जागी ॥ ह० ना ॥ इति

पुन

शीतलनाथनुं स्तवन.

तारिये मोहे शीतल स्वांमी ॥ शीतल स्वांमी
अन्तर जांमी ॥ आंकडी ॥ काल अनादि पुदगलके
संग, जटकत जयो हुं निकामी ॥ तारि० ॥ १ ॥ एसो
न रहियो कोई थानक, मरण विनाको अंतरजामी
॥ २ ॥ ओर फीर सुकम बादर पुदगल ॥ परावरत
कीयो सीरनामी ॥ ३ ॥ तारी० अधम ऊधारण
बिरुद तिहारो, कृपा करी तारो जव्यजानी । जानुं

चंद कहे प्रभुजीकी सेवा, सिवसुख की है य
निशानी ॥ ४ ॥ तारी० इति

पुन

अध्यात्म स्तवन.

क्योंकर जक्ति करुं प्रभु तेरी ॥ क्यों० ॥ काम
क्रोध मद मान विषय रस, ढोडत गेल न मेरी प्र० ॥
करम नचावत तिमहि नाचत, माया बस नट चेरी
प्र० ॥ दृष्टि राग दृढबंधन बांध्यो, निकसत न लहे
सेरी ॥ प्र० ॥ करत प्रसंशा सब मिल अपणी ॥
परनिंदा अधिकेरी ॥ कहत मान जिन जाव जगत
विन; शिव गत होत न नेरी ॥ प्र० ॥ इति

पुनः

संसार नाम जिसका, जो सारा असार हैं, इस
जगमें न कोई मेरा ॥ तेरा नाम सार है ॥ जवजल
अगम अथाहरे इसका न पार है ॥ चारो गतिकी
जवरां, पडती अपार है ॥ से० ॥ १ ॥ जिया देख डरा
मेरारे, तुमसे नहीं ठिपा ॥ तेरे हाथ मेरारे अबतो
उधार है ॥ सं० ॥ तुम सिवाय देव मै, ध्याउं न
दूसरा, मैंनेतो अपने दिलमें किया करार हैं ॥
स० ॥ २ ॥ अब ढोड सकल वातकुं तेरी शरन गही,
जिनदास हाथ जोडके करता पुकार हे ॥ सं० ॥ ४ ॥

पुनः (थियेटर)

मैं अरज करूं, सूनो महाराज । पायो मैं चरण
सरण राखोने प्रभुजी लाज ॥ सु० १ ॥ सुमति
जिनन्दा मेरे । सुरत सुहानी तेरे । कुमति न आवे
नेडे, महिमां कहाँलों देखो, सफल धनीहे आज
॥ सु० २ ॥ वैशाख मास जो आया । सहु लोग
हरष पाया । रोग शोग दुख पुलाया । शुक्ल पक्ष
देखो सोहे । पंचमी तिथि है आज ॥ सु० ३ ॥
नविन मंदिर ठाजै । जहां प्रभुजी विराजे । मानुं
शशि सूरज लाजे । चलो सखी सब मित्रि । प्रभु-
जीकुं पुजुं आज ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिनन्दा प्रभु आज जुहारो । अष्टद्रव्य
लेके आय ॥ पुजुं प्रभुजीके पाय । मनहिमें हरष
अति जयोही मेरो ॥ सु० १ ॥ आयो मैं तुमारे
पास । पुरो मेरी अजिजाष । दीन बन्धु दिनानाथ
जगत उजियारो । नामिलेगो एसो दाव काज सु-
धारो ॥ सु० ॥ २ ॥ इति

पुनः (तुमरि)

नेमि जिन तुमरो दरस लागे प्यारोरे । दरस
देख मन आनन्द आवे । पातिक हर गयो सारोरे
॥ ने० १ ॥ मैं हुं दीन अनाथ प्रभुजी । नाथ गरिव
नेवाज हो तुमहि । कृपा करी मोहे तारोरे ॥ ने० २ ॥

सेवककी प्रभु एहि अरज है । जब सङ्कटसे निवा
रोरे ॥ ने० ३ ॥ इति

पुनः

सूरत एसी सांवरी । मैं जांउ वारि १ । प्रभुजी
एक अरज सुनो मोरी ॥ टे० ॥ समुद्र विजेजीके
नन्दन प्रभुजी, सेवा देवी माता जिके नयननको ज
ये गुलजारी ॥ सु० १ ॥ राजुलको परनीजन आ
ये । पशुयनको निरख रख फेरके चले गये
गिरनारी ॥ सु० २ ॥ नव जब प्रीत भिनमें तो
की । नेम राजुल मिल हुवे जब मुगतिके अधिका
री ॥ सु० ३ ॥ दास आस कर अरज करतु है, मे
हर मोहे कीजे दरस मोहे दीजे । चरनणकी में
जांउ बलिहारी ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिन मुजरो हमारो प्रभु लीजेजी ॥ मेघ
नृपति जीके नन्दन स्वामी मात सुमङ्गलाके प्यारो
जी ॥ सु० १ ॥ अैसे नर जब पायके प्राणि । नित
नित वन्दन किजेजी ॥ सु० २ ॥ अैसे जिनजीको
पूजत प्राणी । जब जब पातिक भिजेजी ॥ सु० ३ ॥
दास तूमारो करत वीनति अजर अमर पद दीजे
जी ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

हजूर तुमसै कहूं मैं दिलकी बेजार पनमें जो

वीती वतियां । ह० टे० । न धीर तनमें खुसी न
दिलमें बेहाल पनमें जराई ठतियां ॥ ह० १ ॥ सि
द्धार्थ तिसला के नन्द सुनिये कृपाके सिंधु हेवी
रस्वामी, संसार वनमें कीयो ज्रमन मैं, चोरासि
दलकी यह च्यार गतियां ॥ ह० २ ॥ कषाय कुमति
कुर्म मित्रके दे मार च्यारुं तरफसे घेरयो । सदासे
इनकी बेजासही है मैं मेरे दमसे उपाधि अतियां ॥
॥ ह० ३ ॥ रही न बाकी विपतकी बातें न जानुं
तुम क्या विशाल ज्ञानी, रहूं सरणमें निहाल कीजै
अजैकी लागी चरनसै मतियां ॥ ह० ४ ॥

पुनः

साहिव तेरी वंदगी मैं जुलता नहीं, जुलता न
ही साहव विसरता नहीं ॥ सा० टे० ॥ अष्टादश
दोष रहित देव है सहि और देव अन्यदेव मानता
नहीं ॥ सा० सा० १ ॥ मुनि है निग्रंथ सो तौ गुरु
है सहि और गुरु जैसधारी मानता नहीं ॥ सा० २ ॥
जीव दया सुख सो तो शास्त्र है सहि और शास्त्र
आस्था रूपी मानता नहीं ॥ सा० ३ ॥ दान शिष्य
ल तप जप धर्म है सहि और धर्म विषय मानता
नहीं । सा० ४ ॥ मुक्ति रूपी सिद्ध शिला बांढता
सहि संसार दुखजाल रूपी मेटीए सहि ॥ सा०
५ ॥ कहत मुनि खेत माल तारिये मोहि आवाग
मन मोरी मेटिये सहि ॥ सा० ६ ॥ इति

पुनः

दीक्षे नादानकुं समजाया चायगें । हालमें हमकुं
जगति जली हुवे । सुज शीयल संजमकुं सजवाय
लायेगें ॥ दी० ॥ अष्टकमौंकी प्रकृतिका सञ्चय होए
जाहिल । बंध वा उदय उदीरण सत्तामें तूं गाफि
ल । महाराजा मोहकी गति जाति सें उलजा सा
मिल । सागर कोमा कोमी सतरे काठीया जव सा
मिल । चउनाणी अनगार जिनोके हीये इस धाई
ल । ऐसे कर्म मोह मदन्नकुं जीतावी चायेगें ॥
दिल० १ ॥ इति

पुनः

आवो नेम रह जावो सदन, हमको न सता
वोरे । आ० (ढेर ॥ व्याहन आए सजकै सज्जान,
पशुवनकी सुन देख रुदन । गिरनारी चले निज ठांड
वतन् तकसीर बतावोरे ॥ ये० १ ॥ पूनम जैसें
चंद वदन, मोहन मुरति श्याम वरण, मेरी नकी
लागी नव जवकी लगन, मत ठेह दिखावोरे
॥ २ ॥ ये रिहम० ॥ संजम दूती लागि श्रवन्,
प्रजुको सिखाए नीके फिरन् । प्रजु तारण ना
म तुह्यारो तरण । रथ फेरिन जावोरे येरि० ३ ॥
कपूर कहे प्रजुजीके चरन् राजुल मन बेराग धरण
लेउं दोरु नेमि जिनजीकी सरण, शिवपूरतो दिखा
वोरे ॥ येरिशि० ४ ॥ इति

पुनः (पहाड़ी)

कधी प्रभु पदमें मन लाया तो होता, अरे निरगुनका गुण गाया तो होता । पडां है बेखबर मायाके फंदमें, जगतजंजालसुं छजाया तो होता ॥ ज
क० १ ॥ अब अबसर आमिला, टुक सोच प्यारे,
आतम हितकार प्रभु ध्याया तो होता ॥ क० २ ॥ तुं
है मनमोहनके त्रिशलानंद प्यारा । जिन सेवामें
सुख पाया तो होता, पुरायो आश चुनीकी प्रभुजी,
दिल जर दरस दिखलाया तो होता ॥ क० ३ ॥ इति

पुनः

शांति वदनकज देख नैन मधुकर मन लीनोरे ॥
जलाम० डेर ॥ श्रीजिनके मकरंद बैन । विरमी ज
व डुरगन्ध रैण शिवपुरके सदासुख कंद दैन । सम
कितरस जीनोरे ॥ ज० १ कामित पूरण काम धैन ।
मद मोहके चूरण ठांम फैन, लहे मनको अली
आराम चैन, गुंजै अति लीनोरे ॥ ज० २ ॥ कपूर
कहे जिनपदका अैन । उरधारो जवि तारलैन । हो
य मुक्ति सेऊ पर सार सैन । आगम कह दीनोरे
॥ ज० ३ ॥ इति

पुनः

दिवाना तेरे दरसका थार मै हुं । जो रखता हुं
तुझसे सरोकार मै हुं ॥ दि० ॥ तेरा ध्यान रहता
है हरदम् मुझको । टुक एक महर कीजो लाचार

में हूं ॥ दि० ॥ दया जाव धारो प्रभु चरणसे लगा
लो खवर लोगे मेरा गुणगार में हूं । दि० ॥ दरसवे
गी दिजीये दया कर चुन्नीको, जगन्नाथ तुम हों,
तावेदार में हूं ॥ दि० ॥ इति ॥

पुनः

ध्यानमें जिनके सदा लयलीन होना चाहिये,
ज्ञान गुरु ज्ञानीसे ले परवीन होना चाहिये ॥ राह
सज्जमका पकर कद्व्यानकी सूरत मिले, काल गफ-
लतमे सजन्, नाहक नखोना चाहिये ॥ ध्या० ॥
धर्मकी खेती किया चाहे जमीकुं साफ रख बीज
समकितको हृदयमें सच्चेसे बोना चाहिये ॥ ध्या० ॥
कामना मनकी सफल आनन्दसे पूरन जई, अवतो
समता सेजउपर सुखसे सोना चाहिये । दास चुन्नी
अपने घर आंगनमे फूलेगा कलप । जब थिति प
कनेसैं मुक्ति फल सलोना चाहिये ॥ ध्या० ॥ इति ॥

पुनः (तुमरि)

श्रीआदिनाथजीका देख दरश डुविधा मोरी
मिट गईरे ॥ आज डुवि ॥ आनंद आज जयो मेरो
मन ॥ सिव सुख चाहतहूं प्रभु हाथन ॥ जिन की मुर
त चंदनसे तनमनसे लपट गईरे ॥ आज डुवि०
॥ १ ॥ अष्टद्रव्य ले पूजन आये वीतराग के दरश-
न पाए जिनवांनी कानोंसै सुनी डुरगत मोरी कट
गईरे ॥ आ० ॥ २ ॥ काल अनादि मैं प्रभु फिरी

यो, कारजएक मेरोनासरीयो, अब मैं तेरो दरशन पायो कुमति मोरी हटगईरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जबल ग मुक्तन आवैं नेडे, तबग नक्तिवसौ उर मेरे, आत्म सुख समकित धरकेशिव रमणी वर लइरे ॥ आ० ॥ इति

पुनः (खाम्बाज)

जिनंदकी मैं वारी ठवि प्यारी, वारी जाउं वार हजारी ॥ जि० ॥ वदन ठवि मांनुचंद शरदसी, मेढो अशुज अंधियारी ॥ जि० ॥ १ ॥ निरख चकोरी हरष जरानी, नैनन मङ्गल कारी ॥ जि० ॥ २ ॥ चुन्नी तृप्त होत दरसनसे, आसा पूरो हमारी ॥

पुनः

एहाल अपना कहूं मैं कासे, सजन विना जर जर आवै ठतिया ॥ ए० ॥ न ताव तनमें न चयन दिलको विरहका मारा वेहाल मतिया ॥ ए० ॥ न कोई ऐसा हकीम देखूं जो मेरे दिलको करार आवै, सखी खजनका खबर जो पाऊं, तो लिख लिख पठाऊं पतिया ॥ ए० ॥ १ ॥ जल विन मीन क्योंकर जीवे, अरज इतना विचार देखो, एजीव जीवन पिया दरश विन, कटैगा कैसे अन्धेरी रतियां ॥ ए० ॥ क पटके पट खोल आए सजन सखी गये दुख जनम जनम के । चुन्नी निरुपम दरसकै आगे कहूं मैं अब क्याअनुठी वतियां ॥ ए० ॥ इति ॥

श्री पंच तीर्थ जिन स्तुति.

नृपतनयेवर हे मन माजे. ए राह.

श्री जिनराज सदा सुखकारी, दास नमे शिर न मनकरी
तुम शरणांगत आव्यां बालक, तारो हे प्रभु मेहर करी,

आदि जिनवरा,	अजित प्रभु खरा,
शांतिनाथजी,	शांति करो त्वरा,
पार्श्वनाथने,	वीर जीनवरा,
बालमित्रनें,	साह्य करो त्वरा,
जिनवरजी,	करुं अरजी—श्री जीनराज. १
तुमे दया करी,	अम पाप परहरी,
शिवबधु प्रभू,	आपजो खरी,
तुम विना बिजो,	देवठे वृथा,
जाणी एम अमे,	ठोडीये मिथ्या.
शिवरमणी,	मनहरणी—श्री जिनराज० २
नगरमां रही,	अर्ज करे सही,
तारक तुमविना,	बीजो कोई नहीं,
सकल संघना,	कष्ट कापजो,
मनसुखलालने,	मग्न राखजो,
सुख करजी	दुःख हरजी—श्री जिनराज. ३

श्री आदिनाथनुं स्तवन.

आदिजिनेश्वर—अर्ज स्विकारो, कर ग्रही सेवकनें
प्रभु तारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥१॥ प्रथम नरेश्वर,—
प्रथम जिनेश्वर, प्रथम युगल तुमे धर्मनिवाख्यो ॥

आदिजिनेश्वर० ॥ १ ॥ आजनी आंगी—अजव बनी
 ठे ॥ सुंदर मुख शोभे प्रभु सारो ॥ आदिजिनेश्व
 र० ॥ ३ ॥ रोहिणी पतिथी—कोटी गुणो प्रभु वदन
 आनंदी दिसेठे तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ४ ॥
 मृगपतिथी पण अधिक गुणोठे, लंक कटीनो प्रभु
 जी तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ५ ॥ नाथ निरंज
 न—जव दुःखजंजन, जवो जव होजो शरण तुमा
 रो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ६ ॥ युगम् जाव स्तवना
 वली करवा, बालमित्रनी बुद्धिबधारां ॥ आदिजि
 नेश्वर० ॥ ७ ॥

श्रीसंजवनाथजिनुं स्तवन ।

त्रिताल चोपाइ—प्रभु पासनुं मुखकुं ॥

संजवजिनजीनुं मुखकुं शोहे, नयणा देखी जग
 सहु मोहे. रोहिणीपतिसम वदन विशाल, तस अ
 र्द्धाकारे दीसे जाल, कांति कनकसरीखी सारी, इंद्र
 चंद्ररूप जायहारी;

सावथ्यीमां हतो दूकाल, प्रभू जनमतां थयो
 सुगाल, धान्यनां तिहां संजव थाय, द्रव्य संजवथी
 नयरी साहायः फल फूल संजवथया सार, तेथी वर
 त्यो त्यां जयजयकार; राय जितारी वीचारी आस,
 संजवथी पाड्युं संजव नाम; एवा संजव करजो अ-
 मने, बालमित्र अरज करे तुमने; अहमदनगरमां र
 हेतां उदहास, मुनि मनसुखनी पुरोआस ।

श्री अजिनन्दन जिन स्तवन ।

गजस्र, आज आबी राज हजुरमां ए राह ।

अजिनन्दन आज आनन्दमां, तुम दर्शनै थइ सु
ज मती; एक दुष्ट कुवटा ठे सही, पूर्व जवनु बेर
काढ्युं अही; अहोनिश मारे पाठक्षपडी, मतीत्रष्ट
कीधी मारी अति ॥१॥ एवी दुष्ट ठे जे कुमती, जस
सोबते होय दुर्गति । ते दुष्टा डुर निवारिनैं, आपो
अमोने सुमती । अ ॥२॥ रही नगरमां मन मगन
थइ, बालमित्र अति आनन्दथी, मांगे मुखें थी एम
कही, आपो अमोने शिवगती । ३

श्रीसुमतिनाथजिनु स्तवन ।

अवर मदन अलबेलो—ए राहमां ।

सुमति जिनेश्वर तारो जवाब्धिथी सुमति जिने
श्वर तारो । नयरी कोशदया धन तुज धरणी, जन्म्यो
सुमति जिन प्यारो । जवा० १ कुल दीपक मेघरथ
राजाना, त्रण जगत्रने तारो ॥२॥ मङ्गला माता मङ्ग
ल उदरी, प्रसवे सुमति जिन सारो । जवा ॥३॥ शशी
सम सोहे धदन प्रभुनुं, क्रौंच लंठन हितकारो । ज.
॥४॥ सुमती दाता समकित आपो, कुमती दूर निवा
रो ॥ज.५॥ आप हजुरे खेजो अमने, बुटे आजनमा
रो । ज.६॥ बालमित्रना प्यारा प्रभुजी, मनसुखदास
तुमारो । ज. ॥ ७ ॥

श्रीपदम प्रभु स्तवन

होरीनी राह सांवरसे कहियो-ए राह ॥

प्रभु पद्म प्रज जिन प्यारा ॥ ए टेक ॥ सुशिमा
माता उदरे आब्या, चउद सूपन गुणसारा; लंठन
शोहे रक्त कमलनुं, नयरी कोसंबी वशनारा, प्रभु
जीतो मोहन गारा ॥ प्रभु पद्म प्रज जिनप्यारा ॥ १ ॥
छादशी कार्तिक वदनी सोहे, जनम तिथी ग्रह सा
रा; कुल इक्ष्वाकुं दिणयर प्रगट्या, श्रीधरकुल शण
गारा, प्रभु सब जन हितकारा ॥ प्रभु पद्म प्रज जिन
प्यारा ॥ २ ॥ अहमदनगरे आज आनन्दे, गावे गुण
तुम सारा; बालमित्र करजोड़ी विनवे, पावे चवोद
धि पारा; जव जव शरण तुमारा ॥ प्रभु पद्म प्रज
जिनप्यारा ॥ ३ ॥

श्रीसुपार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

बनजारानी राह ।

सुपार्श्वजिनन्दप्रभु प्यारा, मुज स्वामी मोहनगा
रा, ए टेक ॥ वणारशीनां तुमे वाशी, माता पृथ्वीम
न उल्हाशीजि; रायप्रतिष्ठित कुल श्रंगारा, मुज
स्वामी मोहनगरा ॥ १ ॥ जेष्ठ शुक्लछादशी सार,
जन्म्या त्रीजगदाधारजी, तुलसीनां धरनारा, मु
ज स्वामी मोहनगरा ॥ २ ॥ मध्यम त्रैवेयकथी
आब्या, वान कंचनसम सोहाब्याजी ॥ उंचा छिश्
तधनुष ठे सारा, मुज स्वामी मोहनगरा ॥ ३ ॥ वि

शलाख पुरवनु आयु, दिनकरथी तेज सवायुंजी,
 ठो स्वस्तिकलंठन धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा
 ॥ ४ ॥ प्रजु तुम दरशन मनजावे, मुनिमनसुख तुम
 गुणगावेजी ॥ ठोबालमित्रना प्यारा ॥ मुज स्वामी
 मोहन गारा ॥ ५ ॥

श्रीचन्द्रप्रजुजीनुं स्तवन ॥

राग माढ—मेवाडो मली—ए राह ॥

चंद प्रजु चित चोरी लीधुं, देखाडी दीदार ॥ मन
 मोहावुं मांहरु. मने देखाकी दीदार ॥ चन्द्रपूरी न
 यरी विषे, महासेन राजान ॥ लक्ष्मणा माता उदरे,
 प्रजु आव्या पुरुष प्रधानरे म० ॥ १ ॥ लंठन शोजे
 चन्द्रनुं कांई गुण अनन्त प्रधान ॥ दर्शन करतां
 आपजो, कांई शिवरमणीनुं दानरे म० ॥ २ ॥ नयणा
 कमल कचौलडा कांई, नाशा शुक समसार ॥ सम्य
 क दृष्टि जीवने प्रजु, ताहरो ठे आधाररे ॥ म० ॥ ३ ॥ चि
 तमां लागी चटपटी प्रजु, छटपट मन लोजाय ॥ खट
 पट शिव वधुने माटे, आवे ठे मुजदायरे ॥ म० ॥ ४ ॥
 एकला आप वरीने बेठा, करीये सेवक सार ॥ बाल
 मित्र शुज वन्दन करतां, विनवे वारंवाररे म० ॥ ५ ॥

श्रीसुविधिनाथ स्तवन ॥

ठे अधर सुधारस पान चतुर नर प्रेम थकी करीये ॥

ए राह ॥

नवरंगी आंगी आज बीलमां धरीये, रस अमृ

त जक्ती पान चतुर नर प्रेम थकी करिये ॥ जइ
जिन मंदिरमां आंगी नव नव रचिये, पल पल वारे
जिन नाम हृदयमां धरीये, तो मोक्षाख्यनु द्वार
सत्त्वरे वरीये ॥ रस अ० ॥ १ ॥ रुम जुम बुम बू
म पग थकीनृत्यने करीये, त्यां चैत्याख्यमां गीत
ज्ञान आदरीये, तो जव सागरनो पार शीघ्रथी त
रीये ॥ रस अ० ॥ रही अहमदनगरे बालमित्र गुण
गाइयें, प्रभु जक्ती करतां अनन्त सुखने पाइये, तो
सुविधि जिनेश्वर जजतां सुखीया थईये रस० ॥ ३

शीतल नाथ स्तवन ।

शीतलनाथनी शीतलता जारी, दरशन करतां जाय
कषायहारी॥कमल सम नेत्र तेज जारी । शीतलना
नी ॥ १ ॥ शशिसम वदन शीतल कारी, कटी केश
री लंकारी, रुपे इन्द्र चन्द्र जाये वारी । शीतल
नाथनी ॥२॥ कांतिकेवि दिशे कामणगारी ॥ मुरती
प्रभुजीनी मनोहारी ॥ जगतवत्सल प्रभु जयकारी॥
शीतलनाथनी ॥ ३ ॥ जवी जीवने शीतलकारी, अ
रजी मनसुखनी स्वीकारी ॥ बालमित्रने खेजो तारी॥
शीतलनाथनी ॥ ४ ॥

श्रेयांसजिनस्तवन ।

मातुं लगाडो तो मारा सम ठे सखुंनीरे-ए राग ।
श्रेयांस प्रभुजी तुमें सहाय करोमारीरे, आपणों किं
कर जाणी उतारो जवपारीरे, श्रे० ॥१॥ विष्णु पि

जगतमां सार रूप एक जैन धरम, औसा जाण मि
थ्यात्वकुं ठोडेगें हम, तनका क्या जरोसा निकल
जावैगा दम । पूजो० ॥ १ ॥ जजो जजो प्रभुकुं क्या
लगता हे दाम॥ सबसैं आगे प्रभुका हम लेवेगें नाम
सेवे जो बिमल नाथ होवेगा काम । पूजो देव०१
बाह्यमित्र पूजे चन्दन केशरचंग, चालो१पूजो प्रभुजी
के नव अंग, कहे करजोडी मनसुख मनरङ्ग । पूजो
देव० ॥ ३ ॥

वैरागीपद

ठवि ठवि वदन निहार निहार ॥ ठ० ॥ प्रोखि
तपति अगमा गम कीनो विसरी विगत बिहार ॥
ठ० ॥ १ ॥ गये अनादि कालमें ऐसे दीठी न हिय
दिदार, निरुपम निजर निहार निहारत, रंजिय रूप
रिऊ वार ॥ ठ० ॥ २ ॥ अंतर एक महूरत अंतर
प्यार करी अणुगार, छीने ज्ञान सारपद जीतर, चे
तनता जरतार ॥ ठ० ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीअनन्तनाथजिनुं स्तवन ।

जेखरे उतारो राजा जरथरी॥ ए राह । अनन्त प्र
भु मुज तारजो० ए टेक । अवगुण मुजमां अनन्त ठे,
तुम गुण अनंत अनंतजी; मोहराय वश हुं परयो
तुमें तो कीधो तस अंतजी॥१॥अनंत ॥ हुं रागी घणो
खालची, तुमें तो थया बीत रागजी । राग छेष मु
ज टालीये, चार कषायनो त्यागजी । अनंत ॥२॥ पाप

अनन्ता में कर्या, कुम्ह कपटनो तुं गेहजी ॥ आ पापी
नै उद्धारशो ॥ ओ तारक निसंदेहजी । अनंत ॥३॥
तुम सम तारक कोई नहीं, मुज सम पापी न अ
न्यजी ॥ करुणा नजर हवे कीजीये, तो थाजं धन्य
धन्यजी ॥ अ. ॥ ४ ॥ जवजव जटक्यो तुम विना, म
लीया हवे जगवंतजी, बालमित्रने दीजिये, अक्षय
ज्ञान अनंतजी । अ. ॥ ५ ॥

श्रीधर्मनाथनुं स्तवन ।

प्रभु धर्म नाथ (१) तुमें धर्मतणा ओ दाता, तुम
बिना अनंत जव रखक्यो पण मली नहीं कांई शा
ता प्र० ॥ १ ॥ हवे तुम ठेडो (१) पकड्योठे करो
एक काम, मम घरमां जे तस्वर ठे ते काढो तमे
तमाम प्र. ॥ २ ॥ महा मेहेनतथी (१) तुं मेलवुं
द्रव्य अपार ॥ चार चोर छुटी करी मारे ठे मने बहुं
मार, प्र. ॥ ३ ॥ तेनि पांच जग्गी (१) ठे दुष्ट कृ
त्य करनारी, ते तस ज्ञातनी साथै मली बहु पाप
करावे जारी प्र. ॥ ४ ॥ मम मित्र आवे (१) मुज
घर मांहे कोई वार, ज्ञात जग्गी जेगा थई काढे ठे
तेने बाहार प्र. ॥ ५ ॥ मुज घर केरो (१) में अश्व
महामद मातो ते पण तेणें कबजक्यों ठे कहुं केटली
वातो प्र. ॥ ६ ॥ दरशन करतां (१) में औलखीया
जगवांन, बालमित्रनी अरज स्वीकारो देजो अक्षय
ज्ञान प्र. ॥ ६ ॥

शांतिनाथ जिन स्तवन ।

प्यारी बेनी शोक तमें समावजो—ए राह ॥ प्रभु
शांतिनाथने समरजो, जिनराज प्रभुनुं ध्यान सदा
तुमें मनथी, धारजो ॥ शांतिनाथ ध्यावो, सुखी थावो,
द्वयो लावो, श्रावक कुलमांआवी रुडा गुणथी गाज
जो ॥ प्र. ॥ १ ॥ पाप त्यजजो प्रभु जजजो अरिदम
जो ॥ कर्म रिपुने मारी जलदी शिवमां जावजो प्र. २
गुण गावे, जगति जावैं बहु ध्यावे, अहमदनगरना
बालमित्रने प्रेमे पालजो प्र. ॥ ३ ॥

श्रीकुंथुनाथजिन स्तवन ।

मुखथीरे मांगु प्रभु तुम पाशे, आपो मोक्ष रत
न, शिवरमणी नहीं ठोरु प्रभुजी नीश्वे एह वचन;
मोक्ष वधु नहि मुकुं प्रभुजी निश्वे एह वचन. शिव
वधु वरवा, मोजने करवा, मनमां राखुं मान, जव
स्थिति पाके, समकित सांखे, आवीस करतो गम
न । शिव० ॥ १ ॥ क्रोध तजवजो, मान हरवजो
मायाने मारजो मार; लोच न ठारो जव जव टाखो;
मुज पर राखी मन । शिव० ॥ २ ॥ सुखने करजो
दुखने हरजो खेजो आप हजूर; कुन्थु जिनवरजी
बालमित्र अरजी, स्वीकारो थाउं मगन । शिव० ३

श्रीअरनाथजीनुं स्तवन ।

जैन धर्म हृदय धरो ठेचिंतामणी, मारो कर्म करो
ठार वरो शिवरमणी, ए टेक । दुर देशांतर थी तुमें

आव्या ॥ सोदागर गुणवंत; जाबुं ठे इजी डुर तुमारे
 पकसो कोईक सन्त । वरो ॥१॥ जनम जरा मृत्यु त
 णा, जय ते अपरम्पार; नरक निगोद थी जमतां २
 पाम्यो मनुष्यअवतार । वरो. ॥१॥ धर्मरूपी ड्रव्य मे
 लवी, पहुँचो शिवपूर वास; मनुष्य जव पामी करी,
 तुमें एवा करीने प्रयास. ॥३॥ वरो ॥ पांचे इंड्री वश करो,
 मारो चार कषाय; त्रण दलालनी सङ्गत थी, व्यापार
 ते बहु थाय ॥ वरो ॥ ४ ॥ श्रीअरनाथ कृपा करी, देजो
 मोक्ष आवास ॥ बालमित्रनी वीनती, प्रभु पुरो म
 ननी आश । वरो ॥ ५ ॥ इति ॥

मह्वीनाथजीनुं स्तवन ।

राग परज ॥ पानीने गमका मचाया ॥ एराह ॥ मह्वी जिने
 श्वरवन्दिये । ए टेक ॥ मिथुला नयरी अति शोचती,
 कुम्भ नरेश्वर राय २ । राणी प्रजावती उदरे, मह्वी
 नाथ प्रभु आय । म. ॥ १ ॥ पूर्व जवे माया करी
 तेथी लाग्या बहु पाप २ ; स्त्रीपणे आवीने ऊपना
 एवो मायानो ठे व्याप । म. २ ठमित्रने प्रतिबोध
 तां, कीधो बहु उपकार २ । तेम मने प्रतिबोधजो,
 मारी अरज स्वीकार । म. ३ एवुं जाणीने अमे त्या
 गशुं, माया कपट विकार २ । बालमित्रनी विनती.
 अवधारो ते श्रीकार । म. ४

श्रीमुनिसुब्रत जिन स्तवन ।

कुवरी कुंवर मारा लारुकां ए राह मुनिसुब्रत

जिन सांजलो, शी कहुं दुःखनीरे वात, पापना पिंरु
समान हुं, तुमें ठो जग तात । मुनी. ॥ १ ॥ बादर
सुद्धम नीगोदमां, जम्यो अनंतो काल, । ठेदन जे-
दना वेदना॥ थकी काढो दयाल । मुनी. २ बीती चउ
रिंद्री जीवमां, जम्यो काल असंख्य, जलचर थलचर
खेचरे, जम्यो संख्यासंख्य । मुनी. ॥ ३ ॥ तेम पंचेंद्रि
तीर्यनूचमा । कीधा पाप अपार । तेथी वली २ नरक
मां । उपज्यो बहु वार । मुनी. ॥ ४ ॥ साते नरक
मां वली २, ऊपनो वार अनंत, परमां धामीनी वेद
ना, पापी जीव सहंत । मुनी. ॥ ५ ॥ पकमी २ पठा
रुता, देतां उपर मार, करवत थी शीर वेरता, मारे
वली तरवार । मुनी. ॥ ६ ॥ एम अनंती, वेदना, सही मै
वार अनन्त; पण आ पापी जीवना, दुखनो आव्यो
न अन्त । मुनी. ॥ ७ ॥ जगवठल जिनराजजी, हवे
आव्वो तुम पास, ठोडुं नही हवें ठेरुलो, तुजमां ठे
मुज आश । मुनी. ॥ ८ ॥ जीव अनन्ता ऊधर्या,
देइ अक्षय ज्ञान, बालमित्रनी विनती, चित धरजो
जगवान् । मुनी. ॥ ९ ॥

श्रीनमिनाथजिनुं स्तवन ।

दशा आ शी थइ मारी-ए राह । मोहनगारी,
मनोहारी, शोचा नमीनाथनी जारी ॥ मस्तक मुकुट
मणीं तणी, कांति अतिचलकंता ॥ जाल स्थल पण ऊल
कतुं, कुंरुल थी उल्लसंत, सकल अंगे शोचाकारी,

ठबि देखी जाउ वारी । मो. ॥ १ ॥ आङ्गी चनी ज
 मावनी ॥ हीरामणि ऊलकंत, मुख ठबि कोटि चन्द्र
 मां॥ नयणा अति विकसंत, जगत शोज्ञानी हरनारी,
 देखी वंदे ठे नरनारी । मो. २ समकीत दे दातार
 तुं, देतुं अक्षय ज्ञान, पद २ ताहरी बंदना, श्रीपति
 श्रीजगवान; बालमित्र जक्ति तारी, सकल सुखनीठे
 देनारी । मो. ॥ ३ ॥

श्रीनेमनाथजी स्तवन ।

प्यारा नेम मानो, नहीं पाठा आवो, दीन दयाल
 कृपा करी आवो; द्वियो २ संसारनो, लाब्हो, नहीं
 पाठा आवो । टेक ॥ (राजुल)—तुम विन आ संसा
 रमां॥ अवर न को आधार; आमी आवी उज्जी रहुं,
 क्यां जाशो आवार । (नेमनाथ)—सारथी चाल नहीं
 ऊजुं रहेवायठे, (राजुल)—परण्या विना जोजं केम
 जवाय ठे । प्यारा ॥ १ ॥

कर ग्रहीने जले पठी जाजो, मानो मानो जादव
 पति जासो । नहीं० (नेमनाथ)—अष्ट जवांतर हुं रह्यो,
 तुज साथे सुण नार; नवमे जव तुमे हवे, आवो अ
 मारी लार; (राजुल)—मुजथी साथे पण हवे अवाय
 ठे, बाल मित्र मन राजी बहु थाय ठे । प्यारा. ॥१॥

श्रीपार्श्वनाथजी स्तवन,

प्रभु पुरो मारी आस. ॥ एटेक ॥ वसों नयरी वनार
 सी वास॥ त्रेवीसमा जिनश्री पास॥ अहि लंठन धरी

उद्धासरे. प्रभु० ॥१॥ वाहः वदन तुमारुं पास ॥ करे
दिनकर सम उजास॥तुम दर्शनथी पापनो नासरे॥प्र
भु० २ कल्यां चोरांसी प्रवास ॥ जमी आव्यो हवे
तुम पास ॥ तुं आप चरणनो दासरे. प्रभु० ॥३॥ को
ध मान मोहनो त्रास ॥ वली लोत्ते कीधो लास ॥ कर
जोकी करुं अरदासरे. प्रभु० ॥४॥ सहां नर्क निगो
दनां त्रास, करोकूर कर्मनो नास, हवे आपो मोक्ष
आवासरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ बालमित्रनी अरजी खास,
कहे मनसुख मन उद्धास.तुं पास प्रभुनो दासरे.प्रभु०६
श्रीमहावीर स्वामीनो स्तवन ।

जपती प्रीतमनी जपमाल ए राह करतां जिन
वरना गुणग्राम पूजा करुं बहुसारी । पूजा करतां
बहु प्यारी ॥जक्ती जाव थकी मेंधारी॥वरसूं प्रेमथी
शिवसुन्दरी नारी । करतां ॥ टेक ॥ चार अने चोरा
शाना, चक्रे चढयो बहूवार । कूप अरट सम त्रम
णनो ॥ कदीयें न पाम्योपार । मलिया महावीर उप
गारी,तसआणा शिरधारी॥वरसूं ॥१॥ मनमहारुं ला
गी रहयुं ॥ सुंदरी तारी पास । तुज रूप नयणें निर
खवा ॥ मनमां बहू उद्धास । जवोजव सेवना सारी
जेटवाजक्ति ठे जारी । वरसुं ॥२॥ नार कुमती यें जोल
व्यों ॥ प्रीत थी पारावर । ये नारीना सङ्गमा ॥ कांश्ये
नदीठोसार । कुमती न नारी नारी ॥ तेथी गयोहुं
हारी । वरसुं ॥३॥ तुज सम प्रियआजगतमां ॥ अव

र न को देखाय । जिन दरशन करतां अहीं मनरु
बहु हरषाय । देखतां तुज देदारी॥बनीश हुं गेहलो
जारी । बरसुं ॥ ४ ॥ गुण गातां महावीरना ॥ टलशे
कुमती कुनार । मनसुख अने बाह्यमित्रने ॥ मलशे
शिवपूरी सार । नंदन वन मोजारी ॥ विनती करे क
रारी । बरसुं ॥ ५ ॥

॥ मुंठाळो महावीर स्तवन ॥

॥ रागणी केरबा ॥

मारो मुंठाळो महावीर ॥ मा ॥ वीरसर्वमां धीर
वीर तुं ॥ मुं ॥ देरामा राजायें आवी, मुंठे नाख्यो
हाथ ॥ अजिमानि राजाने शिक्षा, दिधि तें जगना
थ ॥ १ ॥ मुं० ॥ हाथ नाखतां मुंठो तुटी ॥ पडी
देरासर मांय ॥ अजिमानि राजा त्यां नमीयो,
ए अचरिज मनमाय ॥ २ ॥ मुं० ॥ ते दिनथी जग
मां विख्यातो, मुंठाळो महावीर ॥ घाणेरावनां डूंग
रमाहें, बेगो साहस धीर ॥ ३ ॥ मुं ॥ एकलडुं देहेरुं
देखिने, मुगळे कीधी रीस ॥ देरुं पारुवा सुजट सी
पाई आव्या ते दस बीस ॥ ४ ॥ मुं ॥ तुज आणा
धारी योगणीयो, करवा लागी युध्द ॥ त्रसुल तणा
प्रहारें मार्या, नाछा तेह अबुद्ध ॥ ५ ॥ मुं ॥ मुंठ
त्रूटतां पाणी राख्युं, देख्याड्या जो हाथ ॥ तारण
तरण ठे विरुद तुम्हारुं, शिवपुरनो ठे साथ ॥ ६ ॥
मुं ॥ आणेराव स्वामीने जेठ्या, मुंठाळो महावीर ॥

अक्षयज्ञान सेवक हम जंपे, जयजय श्री महावीर
॥ ७ ॥ मुं ॥ इति ॥

रागणी पीळु

तोबिना और न जाचुं जिनंद राय ॥ ए टेक ॥
और देवशिव देवे ए मत, सांजली किम करी राचुं ॥
एमत जे धारे ते जननुं, समकित किम रहे साचुं ॥
जि ॥ १ ॥ जबहिं तबहिं तुम देवोगे, एह वचन नही
काचुं ॥ समकित रत्न देखावो तेथी, मानुं हुं सह
साचुं ॥ जि ॥ २ ॥ आगे अनेक उरूारे सुनकर, चर
नकमलपर माचुं ॥ अक्षय ज्ञान दायक देखिने, हर
षित थइ थइ नाचुं ॥ जि ॥ ३ ॥ इति

रागणी कीजोटी

साचुं ठे जिनंद नाम अवरने न राचुं ॥ मुकुट
कुंडल चलक ऊलक, जाल तिखक जाचुं ॥ रत्न ज
मित कुंभलेथी ॥ तरणी तेज काचुं ॥ १ ॥ मोतिहार
ऊग ऊगाट, देखतांज माचुं ॥ बाजुबंध ज्ञानचंद्र,
गीत गाइ नाचुं ॥ साचुं ॥ २ ॥ इति

रागणी पीळु-

धन युवती पर मन ललचाणुं. एथी अधिक बी
जुं कांइ नजाणुं ॥ एटेक ॥ दान शियलमां चित्त
नव लागे, जप तप सुणतां मन गजराणुं ॥ धन ॥
॥ १ ॥ सप्त व्यसन सेवनमां रसियो, करवा कपट
कालजुं कोतराणुं ॥ धन ॥ २ ॥ इषा छेष मत्सर पर

निंदा, ठल प्रपंचथी हृदय जराणुं ॥ धन ॥ ३ ॥ जव
जव एवा पाप करंता, पापनां चारथी पिंरु जराणुं ॥
धन ॥ ४ ॥ तुं तारक पण हुं बहु पापी, मारो उध्धार
करोतो हुं जाणुं ॥५॥ धन॥ श्रीशंखेश्वर ताहरी कृपा
थी, अक्षय ज्ञाननुं पेहेरुं घराणुं ॥ धन ॥६॥ इति ॥

मराठी चालनी साखी

अकल स्वरूपी घट घट व्यापी, अनंत गुणी जग
वान. लोका लोक प्रकाशक जास्कर, केवल ज्ञान
निधान ॥ जग हितवच्छल करुणासागर, गुण रत्नाकर
स्वामी. शिव सुख पामी बहु दुःख वामी, त्रिजुवन
जन विश्रामी. ॥ १ ॥ अशरण शरणा जव जय हरणा.
तुं प्रजुतारण तरणा ॥ अजर अमरणा, शिवसुख
करणा, प्रजु वंडु तुज चरणा. तुंजगत्राता तुं पितु
माता, दे सुख शाता दाता; तुंजगत्राता विश्व
विख्याता, अक्षय ज्ञान प्रदाता ॥ २ ॥

जियेटर

दीलधर मनकर जिनवर पूजन करवा जइयें आ
ज ॥ एटेक ॥ जाव धरीने पूजे जिनने तेहने धन्य
धन्य॥ पूजा करतां शिवपूरजावा प्राणी बांधे पुण्य,
साची नक्ति रीजी स्वामी देजो दरिसन ॥

रागणी गुजराती गरबी

प्रजुतार हवे मारुं अहिं शुं थसेरे ॥ कर्या पाप
ते अनंत मारां क्यम जसेरे ॥ १ ॥ प्र० ॥ ताहरुं

शरण मारे हवे अहीं एक ठेरे, ताहरा ध्यानथी अ
नंत पाप दाय जसेरे ॥ १ ॥ प्र ॥ जैन गायन मंड
ली नित्य गाय ठेरे ॥ तेथी अद्वय ज्ञान मने आप
सेरे ॥ ३ ॥ प्रभु ॥ इति ॥

रागणी दक्षणी थीयेटर

श्री चराचर विश्ववरा, शिवसौख्यकरा, जयजी
क हरा, सुरासुरेश्वर बंध तरा ॥ शि ॥ एटेक ॥ ज
व तारक तुं जगनो त्राता, जय वारक विजुविश्व
विख्याता, तुं सुखशाता, देपितुमाता, अनंतगुणो
तुजमां प्रवरा, जय धैर्य धरा ॥ १ ॥ शि ॥ अखूट
खजानो ठे प्रभु ताहरो, हुंहुं सेवक प्रभुजी ताहरो,
जवसागरथी पार उतारो, कांश्क जुजपर करण करा
जय शोक हरा, ॥२॥ शि ॥ ताहरुं ध्यान धरुं नित्य रंगे,
हुं पण थाइस प्रभु तुज संगे, अद्वय ज्ञान दे दान
उमंगे, नाजिनंदन नाम धरा, जयविजय करा ॥ ३ ॥

गजल.

उंका निसा सा नाखती रे दीकरी डुखी ॥ ए
राह ॥ निहार यार तार तुं विचार दारहे ॥ गुनेगा
रकुं उतार पार तुंहि दिखदार हे ॥१॥ नि ॥ अव्य
क्तमे अजाणते यह कर्ममें करे, कृपाकरें प्रभु अहो
कृपावतारहें ॥ २ ॥ नि ॥ शरण्यहे प्रभुजी तुं शर
ण दीजीयें मुजे, अद्वय ज्ञान दानदे त्रैलोक्य सार
हे ॥ ३ ॥ निहार इति ॥

राजुलगीत.

देखा नही कबु सार जगतमे देखा नही कबु
 सार, आसंसार असार ॥ ज ॥ तुं तारे तो तार ॥ ज ॥
 माहारे तुं आधार ॥ ज ॥ दे । एटेक ॥ मेंणा दइ
 दइ हवेहुं थाकी ॥ संदेस नो नही पार ॥ हाय हाय
 हायरे हवे ॥ ठेक बनी लाचार ॥ ठे ॥ ज ॥ दे ॥ १ ॥
 रफिरडिहुं आसुंडे जीनी ॥ गमे नही शृंगार ॥ हाय
 हाय हायरे हवे ॥ अंगबले अंगार ॥ अं । ज । दे ॥ २ ॥
 फुरी फुरी पिंजर थयुं अंग ॥ वियोगहुः खअपार ॥
 हाय हाय हायरे हवे ॥ दीक्षालउं आवार । दी ॥ ज ॥ दे
 ॥ ३ ॥ जैन गायक मंडली गावे ॥ राजुलगीत उचा
 र ॥ जाय जाय जायरे एतो । मोक्ष मंदिरमां पधा
 र ॥ मो ॥ ज ॥ दे ॥ ४ ॥

रागणी खमाच तुमरी ॥

दरीसन बिन अखियां तरस रही ॥ ए राह ॥
 नव पदसैं मेरे विघन कटे । ज्यों श्री पालके अघ वि
 घटे ॥ एटेक ॥ ध्यान स्मरण जो करते तिनके ॥ स्पष्ट
 अस्पष्ट सब कष्ट कटे ॥ १ ॥ न ॥ नट बिट लंपट
 सबहि सुधारे, मोह सुन्नटका जोर हटे ॥ २ ॥ न ॥
 दान शिखर तप जाव प्रमुख गुण ॥ विनय नयादिक
 गुण प्रगटे ॥ ३ ॥ न । अघट विघट घटना इह ज
 गकी ॥ नव पद ध्यानसैं सब सुखटे ॥ ४ ॥ न ॥ पुना
 जैन गायक मंडलीकुं ॥ अक्षय ज्ञान दशा प्रगटे ॥ ५ ॥

धनासिरी.

जबलग विषय घटा न घटी ॥ एटेक ॥ तबलग तप
जप संयम क्रिया ॥ कहा करत कपटी ॥ लोक दि
खावन करत हे क्रिया ॥ पहिरत पीत पटी ॥ १ ॥
ज ॥ ध्यान धरी योगी होय वेछत ॥ बक वृत्ति कप
टी ॥ बेछ तखत ज्ञानी होय वेछत ॥ करे उपदेश
अती ॥ २ ॥ ज ॥ उग्रविहार धरत आरुंवर ॥ मुख
से कहत यति ॥ वनवासी तनजस्म लगावत ॥ शिर
पर धरत जटी ॥ ३ ॥ ज ॥ नम्र रहत पंचाम्नी सेव
त, साधत योगहठी ॥ शठ हठ कष्ट करे पण मनतो,
नाचत नृत्यनटी ॥ ४ ॥ जबलग विषय घटा न घटी
तबलग तुं क्या फलपावेगो, विषयवल्लीनकटी ॥
जैन गायन मंरुल ताकुं वंदत ॥ जाकी अक्षयज्ञान
दशा प्रगटी ॥ ५ ॥ जबलग ॥ इति ॥

राग कल्याण

जय जय नव पदा आप संपदा ॥ काप आपदा ते
शुज ध्यानथी सदा ॥ एटेक ॥ श्वेतरंग अरिहंता
वंदो, रातासिद्धमहंत ॥ आचारजपीला ने लीला,
उवजायाजगवंत ॥ १ ॥ ज ॥ सुंदरश्याम सखूंणा साधु ॥
धवलाठे पद चार ॥ दंशणनाण चरण तपवंदो, सिद्ध
चक्र एसार ॥ २ ॥ ज ॥ पांच गुणी चउ गुण ठे
एमां, आधारा आधेय ॥ गुणसेव्याथी गुणीयल
आये, जाणोतिः संदेह ॥ ३ ॥ ज ॥ शांतिसारे विघन

निवारे, उतारे जवपार ॥ अक्षय ज्ञान प्रचारक मं
डल ॥ वंदेवारंवार ॥ ४ ॥

रागणी बरवा

॥ अरे दहि माहरी तुरकवाने घेर लई ॥ एराह
॥ प्रभुदीजें दरस बनी देर जई ॥ टेक ॥ लखचो
रासी फेराफिरतां ॥ दुःखसहन करे मेनें केइ केई
॥ १ ॥ प्र ॥ जवजव जटकत सरणेहुं आयो ॥ अब
तो राखो समकित दान दई ॥ २ ॥ प्र ॥ पुना जैन
गायक मंरुली तो ॥ अक्षय ज्ञान पद चाहाय
रही ॥ ३ ॥ प्र ॥

तुमरी

॥ हजारों मेरे कानके मोती ॥ एराह ॥ प्रभु
मेरो ज्ञानकी ज्योती ॥ मानों सुर्यकिरण कोटी ॥
टेक ॥ घटघट व्यापक ज्ञान कला ठे, निजगुणता
मोटी ॥ १ ॥ प्र ॥ अनंत गुणीनां गुणनी गणना ॥
करवी ते खोटी ॥ २ ॥ प्र ॥ ए प्रभुने तो रूप न रे
खा, वर्णादिक नोती ॥ ३ ॥ प्र ॥ गुणीयनकों जजते
गुणी होवे ॥ केवलता मोटी ॥ ४ ॥ प्र ॥ अक्षयज्ञान
दशा प्रगटावे ॥ कर्ममल्लीन धोती ॥ ५ ॥ इति ॥

राग गोमी

गोडी गाइयें मनरंग ॥ एटेक ॥ एक ध्याने एक
ताने ॥ कर केदारो संग ॥ १ ॥ गोमी ॥ यात्रा कीजे
अमृत पीजे ॥ नीर वहे जिम गंग ॥ रोग शोक जय

क्लेश नासे ॥ आलस नावे अंग ॥ १ ॥ गोमी ॥
पोढंता प्रचुनाम लीजें ॥ आणी मन उठरंग ॥ अ
जय तेहने नींद माहे ॥ कदिय न होवे चित्त जंग
॥ ३ ॥ गोमी ॥ इति ॥

तुमरी

सकल मर्म मल क्षय करके मुगत पुर गए गए
रे ॥ मु ॥ एटेक ॥ अविनाशी अविकारहे ॥ परमात्म
शिव धामरे ॥ समाधान सर्वांग अरुपी ॥ मेरेमन
रहेरहे रे ॥ १ ॥ स ॥ शुद्ध बुद्ध अविद्धहे ॥ रहे
अनादि अनंतरे ॥ वीरप्रभुके आगे गौतम ॥ अमृ
त पद लहे लहेरे ॥ २ ॥ स ॥ इति ॥

वैरागी पद

कहा कीनो नर जव पाके ॥ रहा मोहमद ठाके
॥ टेक ॥ वृद्ध अवस्था आयलगी तब ॥ बेछो बुद्धि
गुमाके ॥ क ॥ जुष्ठ बोल धन जोर लीयो हे ॥ जो
खे जीवनकों समजाके ॥ कुमतीनार संग राच रह्यो
हे ॥ सुमती गुनकों नसाके ॥ १ ॥ क ॥ मात तात
सुता सुत नारी ॥ इनसे नेह लगाके ॥ ए सब अ
पने घरकों आवे ॥ तेरी देह जलाके ॥ ३ ॥ क ॥
सतगुरु कहे पर जव सुख करखे ॥ चरनन चित्त लगा
के ॥ अब सुनखे फिर कोन सुनावे ॥ श्रवणन सुद्ध
कराके ॥ ४ ॥ क ॥ इति ॥

राग माढ ताल पंजाबी

अजिहो कहो ज्ञानी, कोठे थांको देश ॥ साची
तो कहोने ॥ कोठे ॥ एटेक ॥ जन्म लियो तबहो
ज्ञानी, जुरा होता केस ॥ स्याइकी सपेदी आई ॥
अज हुं क्युं नहिचेत ॥ १ ॥ कोठे ॥
कोठेका संगती तुम ॥ इठे आया एक ॥ कठिने
जावोडा हो ज्ञानी ॥ जमता एका एक ॥ २ ॥ कोठे ॥
सुखमे संगती घणा ॥ दुखमे न एक ॥ ब्रथाहिपचो
ठो ज्ञानी ॥ नीका कर देख ॥ ३ ॥ को ॥ धर्म तो
संगतीसाचो ॥ जुठातो अनेक ॥ अमीचंद साहेब
ने समरो ॥ राखे थांकीटेक ॥ ४ ॥ को ॥ इति ॥

जजनी पद

जिन रायानां दरिसन पायारे ॥ जलेजले जिनं
द गुण गाया ॥ तने वंदेठे सुरनररायारे ॥ १ ॥ तुने बं
वार्थी गुणीमां गणायारे ॥ २ ॥ एटेक ॥ अश्वसेन
नृपनंदन राया ॥ वामाराणीनां ठो जाया ॥ चिंताम
णीजी प्रभु चिंता चूरोने ॥ जवजवनी जावछहरा
यारे ॥ ३ ॥ १ ॥ स्वप्नाना सुखने अत्रनी ठाया ॥
एवी संसारनी ठे माया ॥ एवो उपदेश ठे साचो
तुमारो पण ॥ ठासे जगत जरमाया रे ॥ २ ॥ जले
॥ जिणंद वाणी अमीय समाणी ॥ साची जाणे ठे
जवि प्राणी ॥ ठास ठासतो जवि ठांडी देजो ने
तुमे ॥ माखण लेजो तांणीरे ॥ ३ ॥ जले ॥ धन्य

सफल दिन आज घमिपल ॥ आजनी सुकृत कमा
णी ॥ वीर्य उद्भास विनानी जे करणी ते ॥ पाणी
मां जेम लोंटी तांणीरे ॥ ४ ॥ जले ॥ साचीतो वा
णी तेणेज जाणी ॥ जेणें करी ते प्रमाणी ॥ अक्षय
ज्ञान मुनी स्पर्श ज्ञानविण ॥ बीजुं बधुं धुल धाणी
रे ॥ ५ ॥ जले ॥ इति ॥

॥ श्रीशांति नाथजी स्तवनं ॥

तुज्यं नमस्ते स्वामी ॥ शांति जिनंदाजी ॥ दृग
देखे परमानंदा, ॥ मुख पुनमचंदाजी ॥ शां ॥ एटे
क ॥ जन्मे प्रभु शांति सुधारी ॥ जग मरी निवारी
जी ॥ प्रभु शांति नाम हितकारी ॥ मेंने सेवा धारी
जी ॥ १ ॥ तुज्यं ॥ तुमविना कोन हे मेरा ॥ तुं
साहब हेराजी ॥ हरो मिथ्या रोग अंधेरा ॥ हछो
जव फेराजी ॥ २ ॥ तुज्यं ॥ तुम दीन दयालाजी ॥
शासनके लाळाजी ॥ मे सदा जपुं जप माला ॥
घर खेम खयालाजी ॥ ३ ॥ तुज्यं ॥ तुम कल्पवृक्ष हित
कारी ॥ चिंतामन धारीजी ॥ प्रभु आतम शरण तु
मारी ॥ द्यो हमे सुधारीजी ॥ अख खुसी तुमारीजी ॥
॥ ४ ॥ तुज्यं ॥ इति ॥

तुमरी

वीर प्रभुजी तेरी दोस्तिमे ॥ मेरी समता सखी मे
रवान जशरे ॥ एटेक ॥ आपन आए बोध पढाए ॥
तेरी सुरतपस कुरवान जशरे ॥ १ ॥ वीर ॥ शासन

नायक एहि अरज हे ॥ दीजे दरस बनी बेर जइ
रे ॥ १ ॥ वीर ॥ आशा दासकी पुरन कीजें ॥ चरण
शरण लपटाय रइरे ॥ ३ ॥ वीर ॥

॥ समेत शिखरथी स्तवन ॥

तुमतो जले विराजोजी ॥ सांबरिया महाराज
शिखरपर जले विराजोजी ॥ तेरे घाटे चोकी लागे ॥
यात्री जाण न पावे ॥ हुकुम कियो श्रीपार्श्वजिनेश्वर
॥ बांह पकमलेजावे ॥ १ ॥ तु ॥ उंचा नीचा पर्वतसो
हे ॥ तले जीलका वासा ॥ पेरुपेरु पर सिंह धरुके ॥
जिहां लिया तुम वासा ॥ २ ॥ तु ॥ टुंक टुंक पर
धजाविराजे ॥ जालरका ऊणकारा ॥ जालरका ऊण
कारासेती ॥ गुंजे परवत सारा ॥ तुम ॥ ३ ॥ दूरदेस
के जात्री आवे ॥ पूजा आन रचावे ॥ अष्ट ड्रव्य
पूजामे लावे ॥ मन वंछित फलपावे ॥ तु ॥ ४ ॥ सुरनरमुनि
जनवंदन आवे ॥ महा परम-सुखपावे ॥ चंद खुसाल
चरणको सेवक हरख हरख गुणगावे ॥ तुम ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ विरजिनस्तवन ॥

नाथ कैसें जंबुको मेरुं कंपायो ॥ ना ॥ सिद्धा
रथ सुत नाम धराया ॥ त्रिसला राणीनो जायो ॥
ढप्पन दिशि कुमरी मील आई ॥ सुची कर्म
करायो ॥ १ ॥ ना ॥ इंद्र महोत्सव जबतिहां प्रग
टयो ॥ मेरु शिखरले आयो ॥ इंद्र सिहांसन
पर ले बेछो ॥ मनसंदेह जरायो ॥ २ ॥ ना ॥ अब

धि ज्ञानसे तवतिहा देख्यो ॥ अंगुष्ठे मेरु चंपायो
॥ संशय हरण चरण प्रभुजीके, कलस हजारु ढ
रायो ॥ ना ॥ ३ ॥ सिद्धारथ घर आयकेरे ॥ मंगल
चार गवायो ॥ सुमन अधमकों निजपद दीजे, मन
बंधित फल पायो ॥ ४ ॥ इति ॥

समेत शिखर ॥

सांवरिया जैसे बने तेसे तारो ॥ मेरी करणी
कतु न विचारो ॥ सा ॥ नागनागनी व्याकुल दोनुं
॥ जरत अगनीसे उवारो ॥ उनकों राजदियो सुर
पुरकों ॥ मुजकों क्यों उधारो ॥ १ ॥ सां ॥ अश्व
सेनके नंदन कहिये ॥ माता वामा देवी प्यारो ॥
बाल आवस्थामें जोग दियो हे ॥ चार महाव्रत
धारो ॥ २ ॥ सां ॥ योग निरोधी दसलख श्रावक ॥
अष्ट करमकों पठारो ॥ काया गाल गए सिवपुरकों
॥ लोका लोकनिहारो ॥ ३ ॥ सां ॥ धन्यधनी धन्य
जाग हमारो ॥ शिखर समेत जुहारो ॥ मनवचका
नमत बुध गंगा ॥ चरण कमल बलि हारो ॥

रागणी माढ.

मेवाडोरे मल्ली ॥ एराह ॥ प्रभु जीव जीवन
आधाररे, तुमने खमारे खमा ॥ एटेक ॥ श्रीसिद्धा-
चल मंरुन साहेब, तुं प्रभु आनंद कंद ॥ जव्य
कमल प्रति बोधन दिनमणि, मुखडुं पुनम चंदरे
॥ १ ॥ तु ॥ तुज वाणी अमृत ऊरेरे, सागर जेम

गंजीर ॥ दीन दयाल कृपाकर मुजपर, तारक जव
जल तीररे ॥१॥ तुं ॥ जवजव जटकत शरणेहुं आ-
व्यो, जांगो जवनी जीर ॥ मारां तारां सुं करो प्रभु,
तारक ठो वडवीररे ॥ ३ ॥ तुं ॥ मरुदेवीने तारियां
प्रभु, तार्या सोये पुत्र ॥ तार्या विना केम चालसे
प्रभु, हुं पणहुं घर सूत्ररे ॥ ४ ॥ तुं ॥ दीना नाथ
दयाल दयाकरी, राखो मुजने पास ॥ पुना जैन
गायक मंरुलीने ॥ अक्षय ज्ञाननी आशरे ॥ ५ ॥

मस्तक मुकुट कानठ कुंरुल, जलक जलक तेज पुज
जगतना यटना ठ आतन्धिरा ॥ ६ ॥ आगा
नी रचना ठे बहुसारी ॥ करतां अनुमोदन पुण्णथाय
जारी ॥ एटेक ॥ हीरामणि माणक जडेलां, मुख-
ठबी तेज देखी जाय चन्द्रहारी ॥ १ ॥ आं ॥
मस्तक मुकुट कानेठे कुंरुल, जलक जलक तेज पुंज
बलिहारी ॥ २ ॥ आं ॥ बाहे बाजुबंध हार गलामा,
मुक्ताफलना वंदेठे नरनारी ॥ ३ ॥ आं ॥ सर्वांगे
प्रभुतेज अनंतु, चंद्रसूर्य कोटी तेज जायहारी ॥४॥
आं ॥ पुना जैनगायन मंडलीने दीजे ॥ अक्षय
ज्ञानदशा विस्तारी ॥ ५ ॥ आं इति ॥

होरी

॥ सामरो सुख दाई, जाकी ठबी वरनी नजाई
॥ सा ॥ एटेक ॥ श्रीअश्वसेन वामा नंदनकी, की-
र्ति त्रिभुवन ठाई ॥ समेत शिखर गिरि मंरुन प्र-

जुझे, देख दरस हरखाई ॥ हृदय मेरो अति उल
साई ॥ १ ॥ सा ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगटे, आज
आनंद बधाई ॥ तिन लोकको नायक निरख्यो,
प्रगटी पूर्व पुण्याई, सफल मेरो जन्म कहाई ॥ २ ॥
सा ॥ प्रजुके सरस दरस बिनुपाए, जव जव जटक्योंमें
जाई ॥ अबतो प्रजुके चरण चित्तलाग्यो, बाल कहे
गुणगाई; प्रजु संग लगन लगाई ॥ ३ ॥ सा ॥ इति ॥

होरी.

राग उपर प्रमाणे ॥ सामपे कहियो वीनती मो-
री ॥ एटेक ॥ राजुल चंद्रानकों बोले, आइ बसंत
रीतु होरी, बागुमें फाग केसीमे खेलुं ॥ सब सखि-
यनकी टोरी ॥ प्रिया गए हमको ठोरी ॥ १ ॥ सा ॥
सज सिनगार संग लइ सिखरे, अबीर गुलालकी
जोरी, अपने पिया संग खेलखेलत हे, केशरको
रस घोरी, बाजे रुफ ताल टकोरी ॥ २ ॥ ॥ सा ॥
एते कारन वालम घर आवो, खेलुमें रंगजर होरी ॥
ए वीनती सुन प्रजुने राजुलकी ॥ दीने सब दुख-
तोरी ॥ रत्नकहे जइ वरजोरी ॥ ३ ॥ सा ॥ इति ॥

॥ पावा पुर जिन गीतं ॥

अखियां मेरी प्रजुजीसैं आज लगी ॥ टेर ॥ पा-
वा पुर श्रीवीरजिनेश्वर ॥ देखत दुरगति दुरटली ॥
अ ॥ १ ॥ मस्तक मुकुटसोहे मनमोहन ॥ बिच-
बिच हीरा मोतिलालजनि ॥ २ ॥ अ ॥ रत्नजनि-

त दोयकुंमलसोहे ॥ ॥ गले बिच मोतियन माल-
पकी ॥ ३ ॥ अ ॥ हरखचंद के तुम प्रजुसाहेब ॥
चरण न ठोडुं पल एक घरी अ ॥ इति ॥

॥ पद ॥

जिन राज नाम तेरा ॥ हो राखुरे हमारा घटमे
॥ टेक ॥ जाके प्रजाव मेरा ॥ अज्ञानका अंधेरा ॥ जा
गा जया उजेरा ॥ १ ॥ रा ॥ सुरत तेरी रागें ॥ दे-
ख्या विज्ञाव त्यागे ॥ अभ्यात्म रूप जागे ॥ २ ॥ रा ॥
मुद्रा प्रमोद कारी ॥ कृष्णसे ज्युं तिहारी ॥ लाग-
त मोहे प्यारी ॥ ३ ॥ रा ॥ त्रैलोकनाथ तुमही ॥ ह-
महें अनाथ गुनही ॥ करियें सनाथ अबहि ॥ ४ ॥
रा ॥ प्रजुजी तिहारी सांखे ॥ जिन हर्ष सुरी जा-
षे ॥ दिख माहिं येहिं राखेहो ॥ ५ ॥ इति ॥

पीछु बरवा.

अबतो उधार्यो मोहे चाहिये ॥ जिनंदराय, राखुं
जरोंसो मे प्रजुके चरणको ॥ एटेक ॥ सुनो श्रीश्रेयां
सनाथ ॥ साचो शिव पुर साथ ॥ विरुद तुमारो प्रजु
तारन तरनको ॥ १ ॥ अ ॥ सिंह पुरी जन्म ठाम ॥
पिता विष्णुसेन नाम ॥ विष्णुराणी कुंखें जायो ॥
कंचन वरनको ॥ २ ॥ अ ॥ वरस चोरासी लाख ॥
आयुष्य परम जांख ॥ लंठन चरन खग सुखके क-
रनको ॥ ३ ॥ अ ॥ हुंतोडुं अनाथ तुम नाथनके
नाथ प्रजु ॥ तुमविना और मेरे दुसरो सरनको

॥ ४ ॥ रा ॥ प्रज्जुके चरणारविंद पुजत हरषचंद ॥
काटिये करम दुःखमेटिये मरनको ॥ ५ ॥ अ ॥ इति
पद.

गुण अनंत अपार प्रज्जुतेरे ॥ गु ॥ टेक ॥ सहसर
सना करत सुरगुरु ॥ तोउ न पायोपार ॥ १ ॥ प्र ॥
कोन अंबर गिने तारा ॥ मेरु गिरको जार ॥ चरम
सागर लहर माला ॥ करत कोन विचार ॥ २ ॥ प्र ॥
जक्ति गुण लवलेस जाखें ॥ सुविधिजिन सुखकार ॥
समय सुंदर कहत हमको ॥ स्वामी तुम आधार ॥ प्रण
राग कल्याण.

माझ मेरो मन तेरो नंद हरे ॥ एटेक ॥ कंचन
वरण कमल दल लोचन ॥ निरखत नयन छरे ॥ १ ॥
पंचवरण मनहरण धरनपर, ठम ठम पांव धरे ॥ रत-
न जकित कंचन घुघरियां ॥ रुण ऊणकार करे ॥ २ ॥
मा ॥ हलत लसत मुंगता फल माला ॥ पीत वसन
उपरे ॥ मानु चलिहे मान शिखरते ॥ गंगप्रवाह
खिरे ॥ ३ ॥ मा ॥ धन त्रिसलादे जाग्य तिहारो ॥
तुंतिहुं जवन शिरे ॥ तीन जवनको नायक तेरे ॥
आंगनमे विचरे ॥ ४ ॥ मा ॥ श्रीवर्द्धमान जिनंकी
मूरत ॥ बिनु देखे न सरे ॥ हरखचंद प्रज्जु वदन
विलोकत ॥ सबहि काजसरे ॥ ५ ॥ इति ॥

तुमरी.

इंद्रानी सब छमक छमक जन्म महोत्सव आवे ॥

घननननन घननननन, घंटा सुघोखा बाजे ॥एतेक॥
 ॥ गान तान नाच रंग ॥ इंद्रासन थाय ॥ धन्य धन्य
 आजको दिवस, प्रजुजीको दरिसन पाय ॥ इं ॥ १ ॥
 वीर काया लघु देखी ॥ इंद्र मन अकलाय ॥ अ-
 वधि देखी वीर मेरु अंगुठे दवाय ॥ २ ॥ इं ॥ जन्म
 महोत्सव जिनको करी, इंद्र देव लोक जाय ॥ दा-
 स नर प्रजु तणा, हरसेन गुन गाय ॥ ३ ॥ इंद्र ॥ इति

॥ राग सौरष्ठ ॥

॥ कहुं कहाँलोंवारुं नणदलवीर ॥ क० ॥ मिथ्या
 गणकि पूंजीषाइ, बनगए जनम फकीर ॥ क० ॥ १ ॥
 गर्इय गर्ई सो जह्नीय रहीसो, धर धर मनको धीर ॥
 कहाँलों धीर धरुं धीरज धर, विरह जनमवहीर ॥ क०
 ॥ २ ॥ जाललाल बिंदी नही जावै, आचुषण नही वीर
 ॥ ग्यानसार वालो आयमिलै घर, तोन रहै कोई पीर ॥

॥ राग पुनः ॥

॥ होजी आखी जानै मानै थारी चाहि घणीठै,
 वहिला वेग पधारो ॥ हो० ॥ आयुकरम बिन सातुं
 किस्थिति, कोरु सागर इककोरु गुणीठै ॥ हो० ॥
 १ ॥ के ते दिन चिंतवतां अबकै, ज्युं त्युं प्रीतवणी
 ठै ॥ २ ॥ जलो बुरो तोही चलि आयो, अंत
 तो घरको धणी ठै, ग्यानसार कहै ढीलन कीजै,
 प्रीत अंतरको जणीठै ॥ हो० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ राग जैहं ॥

॥ ऋषभ जिणंद आणंद कंद कंदा, याहीते चरण
सेवे कोट सुर इंदा ॥ १ ॥ मरुदेवा नाजि नंद,
अनुजवचकोर चंद ॥ आपरूपकोस्वरूप, कोटज्युं
दिणंदा ॥ २ ॥ शिवशक्ती न चाहुं चाहुं न
गोविंदा ॥ ग्यानसार जक्तिचाहुं, मे हुं तेरा बंदा ॥

आयो हलकारो गोपी मदको अरे राह
प्रभु नेम कुमरजी आप बीराजो गीरनारमे एतेक ।
गीरनारी गीरवररे उपर. जंची टुंकां शात ॥ शातों
टुंके चरण पाडुका. में वंडु दिनरातरे. प्रभु नेमकुम
रजी ॥ १ ॥ शंख लंठन दश धनुषरीकाया. आयु वर
स हजार ॥ श्याम वरण शीवादेवी नंदन, बंदो वार
हजाररे ॥ प्रभु नेमकुरजी ॥ २ ॥ काती वद बारश
चवी आयो. सौरी नयरी मजार ॥ श्रावण सुद पंच
मि दिन जनम्या. वरत्यो जयजय कार रे ॥ प्रभु नेमकु
॥ ३ ॥ शहशावन जइ शंयम लीनो. ठांडी राजुल
नार ॥ श्रावणवद षष्ठी दीन दीक्षा. प्रभुजी बाल
कुमाररे. प्रभु नेमकुमरजी ॥ ४ ॥ चोपन दीन ठदम
स्थ रहीने. आशो वद्य अमाश ॥ वेरुश वृद्ध तळे
प्रभु पायो केवल ज्ञान प्रकाशरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी
॥ ५ ॥ सुदी आषाढ अष्टमी रुमी, शंखेखन एकमा
स ॥ पदमाशन प्रभु मोक्ष पधारें. अविनाशी आवा
सरे ॥ प्रभु नेमकुरजी ॥ ६ ॥ कढ्याणक पांचो इम

श्रुणतां. पामो अक्षय ज्ञान ॥ बालमित्रकी अरजी
इणवीध. प्रभुको शरण प्रधानरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी ७
पद.

किसविध किये कर्म चकचूर ॥ उत्तम दामापे
अचंचो मने आवे ॥ कि ॥ एक तो प्रभु तुम परम दयालु
रोसन तिलतुष मात्र हजूर ॥ हुजे जीव दयाके सागर ॥
तीजे संतोषी जरपुर ॥ उ ॥ १ ॥ चोथे प्रभुतुमही
तउपदेशी ॥ तारन तरन जगत मसहुर ॥ कोंमल
वचन सरन सत वक्ता ॥ निर्वोत्ती संजम तपसूरा ॥ १॥
केसे मोह मद्धतुमजीत्यो ॥ अंतराय केसेकियो
निरमूल ॥ केसेज्ञाना वरण निवार्यो ॥ केसे कियेचा
रोधातिया दूर ॥ ३ ॥ त्यागी वैरागी हो तुमसाहेब ॥
अकिं चनव्रत धारकचूर ॥ सुरनर मुनी सेवेचर्नतुमारे
तोत्तीनहि प्रभुजीकेगरुर ॥ ४ ॥ करत आसअरदास
नेनसुख ॥ दीजेअब मोहेदान जरुर ॥ जन्मजन्म
पद पंकज सेवुं ॥ ओरन कबुचित चाहेहजूर ॥ ५ ॥

॥ इति चतुर्थ परिच्छेदः समाप्तः ॥



॥ अथ पंचम परिच्छेद. प्रारब्धते ॥

॥ अथ श्री सीताजीनी सद्याय प्रारंभ ॥

॥ जनक सुता हुं नाम धराबुं, राम ठे अंतरजा
मी ॥ पालव मारो मेलने पापी, कुलने लागे ठे
खामी ॥ अरुशो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ०
॥ महारो नाहलीउं डुहवाय ॥ अ० ॥ मने संग के
नो न सुहाय ॥ अ० ॥ माहारुं मन मांहेथी अकु
लाय ॥ अ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठा
म तजे जो, पठर पंकज जगे ॥ जो जलधि मर्यादा
मूके, पांगलो अंबर पूगे ॥ अ० ॥ २ ॥ तो पण तुं
सांजल रेरावण, निश्चय शील न खंनुं ॥ प्राण अ
मारो परलोक जाये, तो पण सत्य न ठंनु ॥ अ० ॥
॥ ३ ॥ कुण मणिधरनी मणि लेवाने, हैडे घाले
हाम ॥ सती संघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे
काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ परदारानो संग करीने, आखर
कोण उगरियो ॥ उंडुं तो तुं जोवे आलोची, सही
तुज दाहानो फरियो ॥ अ० ॥ ५ ॥ जनकसुता हुं
जग सह जाणे, जामंरुल ठे जाई ॥ दशरथ नंदन
शिर ठे स्वामी, लखमण करशे लमाई ॥ अ० ॥ ६ ॥
हुं धणीयाती पीउ गुणराती, हाथ ठे महारे ठाती
॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलुं, कां कुलें वाये ठे
काती ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन कहे धन्य ए अब

લા, સીતા જેહનું નામ ॥ સતીયો માંહે શિરોમણિ
કહીયે, નિત્ય નિત્ય હોજો પ્રણામ ॥ અ૦ ॥ ૮ ॥

॥ અથ વણજારાની સઘાય ॥

॥ નરજવ નયર સોહામણું ॥ વણજારા રે ॥ પા
મીને કરજે વ્યાપાર ॥ અહો મોરા નાયક રે ॥ સ
ત્તાવન સંવર તણી ॥ વ૦ ॥ પોઠી જરજે ઉદાર ॥ ૧ ॥
॥ અ૦ ॥ શુજ પરિણામ વિચિત્રતા ॥ વ૦ ॥ કરિયા
ણાં બહુ મૂલ ॥ અ૦ ॥ મોક્ષ નગર જાવા જણી ॥
વ૦ ॥ કરજે ચિત્ત અનુકૂલ ॥ અ૦ ॥ ૨ ॥ ક્રોધ દાવાન
લ ઝેલવે ॥ વ૦ ॥ માન વિષમ ગિરિરાજ ॥ અ૦ ॥
ઝેલંઘજે હલવેં કરી ॥ વ૦ ॥ સાવધાન કરે કાજ ॥
॥ અ૦ ॥ ૩ ॥ વંશ જાલ માયા તણી ॥ વ૦ ॥ નવિ
કરજે વિશરામ ॥ અ૦ ॥ ચામી મનોરથ જટ તણી
॥ વ૦ ॥ પૂરણનું નહીં કામ ॥ અ૦ ॥ ૪ ॥ રાગ દ્વેષ
દોય ચોરટા ॥ વ૦ ॥ વાટમાં કરશે હેરાન ॥ અ૦ ॥
વિવિધ વીર્ય ઝલ્લાસથી ॥ વ૦ ॥ તે હણજે શિરઠાય
॥ અ૦ ॥ ૫ ॥ ઇમ સવિ વિઘન બિદારીને ॥ વ૦ ॥
પહોંચજે શિવપુર વાસ ॥ અ૦ ॥ સ્વયં ઉપશમ જે
જાવના ॥ વ૦ ॥ પોઠી જસ્યા ગુણ રાશ ॥ અ૦ ॥ ૬ ॥
લાયકજાવેં તે થશે ॥ વ૦ ॥ લાજ હોશે તે અપાર
॥ અ૦ ॥ ઉત્તમ વણજ જે એમ કરે ॥ વ૦ ॥ પદ્મ
નમે વારંવાર ॥ અ૦ ॥ ૭ ॥ ઇતિ ॥ વણજારાની સઘાય ॥

॥ अथ सोदागरनी सच्चाय ॥

॥ लावो लोवोने राज, मोघां मुलनां मोती ॥

॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर बे, दिलकी बात हमेरी ॥ तैं
सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मोस
म आये माल सवाया, रतनपुरीमां ठाया ॥ सु० ॥
॥ १ ॥ तिनुं दलालकु हर समजाया, जिनसें बहोत
न फाया ॥ पांचुं दीवानुं पाऊं जगाया, एककुं चो
की बिठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल बि
हरणां, चुआ कटे न युं धरनां ॥ दोनुं दगाबाजी
डुर करनां, दीपकी ज्योतसें फिरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥
औरदिन बली मेहेलमें रहनां, बंदरकुं न हलानां ॥
दश सेरसें दोस्तिहि करनां, उनसें चित्त मिलानां ॥
॥ सु० ॥ ४ ॥ जनहर तजनां, जिनवर जजनां, स
जना जिनकुं दलाइ ॥ नवसरहार गलेमें रखनां, ज
खनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुकुट
चमर ढोलाइ, अम घर रंग बधाई ॥ श्रीशुजवीर
विजय घर जाइ, होत सताबी सगाइ ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आपस्वज्ञावनी सच्चाय ॥

॥ आप स्वज्ञावमां रे, अबधु सदा मगनमें रहे
नां ॥ जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कबुअ
न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा कोइ नहीं
तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा है सो तेरा पासे,

अवर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं
 अविनाशी, अब हे इनकुं विलासी ॥ वपु संग जब
 दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥
 रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥
 ॥ जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका ई
 सा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए
 हे जग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अज्यासा, ल
 हो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहींक काजी
 कबहींक पाजी, कबहींक हुआ अपत्राजी ॥ कबहींक
 जगमें कीर्ति गाजी, सब पुजलकी बाजी ॥ अ० ॥
 ॥ ६ ॥ शुरू उपयोग ने समता धारी, ध्यान ज्ञान
 मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे
 शिव नारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति आपस्वज्ञाव सद्याय ॥

॥ अथ श्री सहजानंदीनी सजाय ॥

बीजी अशरण जावना ॥ ए देशी ॥

॥ सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चित रे
 ॥ मोह तणा रणीया जमे, जाग जाग मतिवंत रे,
 लूटे जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे, नरका
 वास ठवंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥
 राग द्वेष परिणति जजी, माया कपट कराय रे ॥
 काश कुसुम परें जीवमो, फोगट जनम गमाय रे,
 माथे जय जम राय रे, श्योमन गर्व धराय रे, सहु
 एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥

॥ स० ॥ २ ॥ रावण सरीखा रे राजवी, नागा चा
 द्या विण धाग रे ॥ दश माथां रण रुवड्यां, चांच
 दीए शिर काग रे, देव गया सवि जागरे, न रह्यो
 माननो ठागरे, हरि हाथें हरिनाग रे, जोजो जाइउं
 ना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चादया केइ चालशे,
 केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नित्य प्रत्यें,
 जोतां लग्न हजार रे, देश विदेश साधार रे, ते नर
 क्षणें संसार रे, जातां जम दरबार रे, न जुवे वार
 कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायणपुरी द्वारिकां, ब
 लती मेढी निराश रे ॥ रोता रणमां ते एकला, ना
 ठा देव आकाश रे, किहां तरु ठाया आवास रे, ज
 ल जल करी गयो सास रे, बल जड सरोवर पास
 रे, सुणी पांरुव शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥ गाजी
 गाजीने बोलता, करता हुकम हेरान रे ॥ पोढ्या
 अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त
 नरक प्रयाण रे, ए रुद्धि अथिर निदान रे, जेवुं
 पीपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥
 वाद्वेसर विना एक घरी, नवि सहातुं लगार रे ॥
 ते विना जनमारो वही गयो, नहीं कागल समाचार
 रे, नहीं कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीयो परिवार
 रे, माता मरुदेवी सार रे, पहोतां मोक्ष मोजार रे
 ॥ स० ॥ ७ ॥ माता पिता सुत बांधवा, अधिको राग
 विचार रे ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंढे विष

य गमार रे, जुवो सूरिकांता जे नार रे, विष देती
 जरतार रे, नृप जिनधर्म आधार रे, सज्जन नेह
 निवार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ हसी हसी देती रे ताळी
 यो, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर अंते माटी
 थया, लोक चणें घर बाररें, घरता पात्र कुंजार रे,
 एहवुं जाणी असार रे, ठोडे विषय विकार रे, धन्य
 तेहतो अवतार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ आवच्छासुत शिव
 वर्या, वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् विषया
 रे जीवने, लक्ष वैराग्य रसाल रे, मेहेली मोह जंजा
 लरे, घर रमे केवल बाल रे, धन्य करकंठु जूपाल
 रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री शुभविजय सुगुरु लही, धर्म
 रयण धरी ठेक रे ॥ वीर वचन रस शेलडी, चाखे
 चतुर विवेक रे, न गमे ते नर जेक रे. धारता धर्म
 नी टेक रे, जवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥
 इति सहजानंदी सद्याय ॥

॥ अथ सांजल सयणानी सद्याय ॥

॥ लांजल सयणा साची सुणावुं, पूरवपूरयें तुं
 पाम्यो रे जाइ ॥ नरक निगोदमां जमतां नरजव, तें
 निःफल केम वाम्यो रे जाइ ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म
 जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे जाइ ॥
 मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दज घरमां बांध्यो रे
 जाइ ॥ सां० ॥ २ ॥ कटपवृद्ध कूहाडे कापी, धंतुरो
 घेर धारे रे जाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, का

ग उम्हाडण डारें रे जाइ ॥ सां ॥ ३ ॥ इम जाणी
जावा नवि दीजें, नर नारी नरजवनें रे जाइ ॥ उ
लखी शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मनने रे
जाइ ॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विज्ञाव परज्ञावमा जजीयें,
रमण स्वज्ञावमां करीयें रे जाइ ॥ उत्तम पदपद्मने
अवलंबी, जवियण जवजल तरीयें रे जाइ ॥ सां० ॥
॥ ५ ॥ इति श्रीआतम हित सव्वाय ॥

॥ अथ रात्रिजोजननी सव्वाय प्रारंभ ॥

॥ पुण्य संजोगें नरजव लाधो, साधो आतम
काज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, इम जांखे
जिनराज रे प्राणी ॥ रात्रिजोजन वारो ॥ १ ॥ आ
गम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी
रे प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ए आंकणी ॥ अजह्य बावी
शमां रयणीजोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणें का
रण रातें मत जमजो, जो हुवे हृदये शान रे ॥
॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुधने जोजन, एटला
रातें न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नितिबच
न समजीजें रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण रातें,
टाळे जोजन टाणो ॥ तुमे तो मानवी नाम धरावो,
केम संतोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू
कीनी कोळी आवळो, जोजनमां जो आवे ॥ कोढ
जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥ प्रा०
॥ ५ ॥ ठसुं जव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपा

યું ॥ એક તલાવ ફોમંતાં તેટલું, દૂષણ સુગુરુ બતાયું
 રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૬ ॥ એકલોત્તર જવ સર ફોડ્યા
 સમ, એક દવ દેતાં પાપ ॥ અઠલોત્તર જવ દવ
 દીધા જિમ, એક કુવણિજ સંતાપ રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૭ ॥
 ॥ એક શો ને ચુમ્માલીશ જવ લગે, કુવણિજના જે
 દોષ ॥ કૂડું એક કલંક દિયંતાં, તેહવો પાપનો પોષ
 રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૮ ॥ એક શો એકાવન જવ લગે દીધાં,
 કૂમાં કલંક અપાર ॥ એક વાર શીલ શંડ્યા જેવો,
 અનર્થનો વિસ્તાર રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૯ ॥ એકશો નવાણું
 જવ લગે શંડ્યાં, શીયલ વિષય સંબંધ ॥ એકે રાત્રિ
 જોજને તેહવો, કર્મ નિકાચિત બંધ રે ॥ પ્રા૦ ॥
 ॥ ૧૦ ॥ રાત્રિજોજનમાં દોષ ઘણા છે, ડ્યો કહિયે
 વિસ્તાર ॥ કેવલી કેહતાં પાર ન પાવે, પૂરવ કોડી
 મઝાર રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૧૧ ॥ રાતે નિત્ય ચોવિહાર ક
 રીને, શુજ પરિણામ ધરીજે ॥ માસે માસે પાસખમ
 ણનો, લાજ શણે વિધ લીજે રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૧૨ ॥ મુનિ
 વસતાની એહ શિલામણ, જે પાલે નર નારી ॥ સુર
 નર સુખ વિલસીને હોવે, મોઢ તણા અધિકારી રે
 ॥ પ્રા૦ ॥ ૧૩ ॥ ઇતિ રાત્રિજોજનની સઘાય ॥

॥ અથ જોબન અસ્થિરની સઘાય ॥

॥ રાગ પ્રજાતિ ॥

જોબનીયાની મોજાં ફોજાં, જાય નગારાં દેતી
 રે ॥ ઘમિ ઘમિ ઘમિયાલાં વાજે, તોય ન જાગે તેથી

रे ॥ १ ॥ जो ॥ जरा राक्षसी जोर करे ठे, फेलावे
फजेती रे ॥ आवी अवघें उशंके नहीं, लखपतिने
खेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माळें बेठा मोज करे ठे,
खातें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे,
गोफण गोला सेंती रे ॥ ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने
शरणें जाऊ, जोराखो को न जेथी रे ॥ डुनीयामा
दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥
॥ ४ ॥ दंत पड्याने मोसो थयो, काज सखुं नहीं
केथी रे ॥ उदयरल कहे आपें समजो, कहीयें
वातो केती रे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ अथ निंदावारक सद्याय ॥

॥ निंदा म करजो कोइ पारकी रे, निंदानां
बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे,
निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निंदा ॥ १ ॥
दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती जुवो
सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगमां रे, कहो
केम ऊजळां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजाखो
सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पत्नी देव रे ॥ थो
डे घणे अवगुणें सहु जस्यो रे, केहनां नदियां चुण
केहेनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी
रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो क
रजो आपणी रे, जेम बुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥
॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो

एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुं
दर सुखकार रे निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सदाय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहा मणी
॥ प्रीत न कीजें रे, परनारी तणी ॥ उथलो ॥
परनारी साथे प्रीत पिउमा, कहो किण परें कीजी
यें ॥ उंघ वेची आपणी, उजागरो केम बीजीयें ॥
काठडीबुटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीये ॥ कुल
विषय खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥
चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पहेलां बीहीजीयें ॥ रखे
कोइ जाणे रे मनशुं धुजीयें ॥ उ० ॥ धुजीयें मनशुं
छुरीयें पण, जोग मलवो ठे नहीं ॥ रात दिन विल
पंत जाये, अवटाइ मरवुं सही, ॥ निज नारीथी
संतोष न वढ्यो, परनारीथी कहो शुं हशे ॥ जो ज
रें जाणे तृप्ति न वढी तो, एठ चाटे शुं हशे ॥ २ ॥
मृग तृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टखे ॥ वेखु पीढ्यां रे,
तेल न नीसरे ॥ उ० ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां,
खव वेश मांखणनो वढी ॥ बुरुतां वाचक जर्यां
पाणी ते, तख्या वात नसांजली ॥ तेम नार रमतां
पर तणी संतोष न वढ्यो एक घरी ॥ चित्त चट
पटी उच्चाट लागे, नयणें नावे निझडी ॥ ३ ॥
चाल ॥ जेवो खोटो रे रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको
रे, परस्त्रीसंग नो ॥ उ० ॥ परनारी साथें प्रेम पिउ

मा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रू
 डो, पठी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथें नेह
 मांडे ठांम तेहशुं प्रीतनी ॥ एम जाणी म म कर
 नाहला, परनारि साथें प्रीतनी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे
 पति वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमेंरे राचे
 सापिणी ॥ ७० ॥ सापिणी सरखी वयण निरखी,
 रखे शीयलथकी चले ॥ आंखने मटके अंग लटके,
 देव दानवने ठले ॥ ए मांहे काळी अति रसाळी,
 वाणी मीठी शेलनी ॥ सांजली रे जोला रखे चूले
 जाणजे विष वेळनी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे,
 पररामा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मिलवातणो
 ॥ ७० ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहि
 लुं ॥ ऋण मेरियें ऋण सेरीयें, जमतां न लागे सो
 हिलुं ॥ उश्वासने निःश्वास आवे, अंग जांजे मन
 जमे ॥ वली कामिनी देखी देह दाजे, अन्न दीतुं
 नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलाले रे, मनशुं
 कल मले ॥ उन्मत्त थडने रे, अलल पलल लवे ॥
 ॥ ७० ॥ लवे अलल पलल जाणे, मोहगहिला मन
 रडे ॥ महा मदन कठिन कारी, मरण वारु ब्रेवडे ॥
 ए दश आवस्था काम केरी, कंत कायानेदहे ॥ एम
 चित्त जाणी तजेराणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥
 चाल ॥ परनारीनां रे, परीजव सांजलो ॥ कंता की
 जें रे, जाव ते निर्मलो ॥ ७० ॥ निर्मलें जावें नाह

समजों, परवधू रस परिहरो ॥ चांपीउं कीचक जी
 मसेनें, शिला हेठल सांजलो ॥ रण पड्यां रावण
 दशे मस्तक. रम वड्यां ग्रंथे कह्यां ॥ तेम मूंजपति
 दुःखपुंज पाम्यो, अपजश जग मांहे लह्यां ॥ ८ ॥
 ॥ चाल ॥ शीयल सलूणा रे, माणस सोहीयें ॥
 विण आजरणें रे, जग मन मोहीये ॥ ७० ॥
 मोहीयें सुर नर करे सेवा, विष अमिय थई
 संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल थाये, अनल तिम
 शीतल करे ॥ साप थाए फूलमाला, लछी घरे
 पाणी जरे ॥ परनारी परिहरी, शीयल मन धरी,
 मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ९ ॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे,
 वालम विनवुं ॥ पाए लागीनें रे, मधुर वयणे स्तवुं
 ॥ ७० ॥ वयण महारुं मानीयें, परनारीथी रहो वेग
 ला ॥ अपवाद माथे चढे मोटा, नरकें थइयें दोहि
 ला ॥ धन्य धन्य ते नर नारि जे दृढ, शीयल पाले
 कुल तिलो, ते पामशे यश जगतमांहि, कुमुद चंद
 सम ऊजलो ॥ १ ॥

॥ अथ नारी शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखामण खरी ॥ स
 मजी छेजो रे, सघली सुंदरी ॥ ७० ॥ सुंदरी सहे
 जें हृदह हेजें, पर सेजें नवि बेसीयें ॥ चित्तथकी
 चूकी लाज मूकी, परमंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर
 हींमी, नार निर्लज, शास्त्रे पण, तजवी कही ॥ जेम

प्रेत दृष्टें, पड्युं जोजन, जमवुं ते, जुग तुं नहीं ॥
 १ ॥ चाल ॥ परशुं प्रेमें रे, हसीय न बोलीयें ॥ दां
 त देखानी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ उ० ॥ गुह्य घरनुं,
 परनी आगें, कहोने केम प्रकाशीयें ॥ वली वात जे,
 विपरीत जांखे तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा,
 अने अगोचर, एकलां नवि, जाइयें ॥ सहसात्कारें,
 काम करतां, सहेजें शील गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥
 नट विट नरशुं रे नयण न जोकीयें ॥ मारग जातां
 रे, आघुं उढीयें ॥ उ० ॥ आघुं ते उढी, वात करतां,
 घणुंज रुकां, शोचीयें ॥ सासू अने, माना जण्या
 विण, पलक पास न, थोचीयें ॥ सुख दुःख सरज्युं,
 पामीयें पण, कुलाचार, न मूकीयें ॥ परवश वसंतां,
 प्राण तजतां, शीयलथी, नवि चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥
 व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥ परनर हाथेरे, ताखी
 न लीजीयें ॥ उ॥ ताखी न लीजें, नजर न दीजें चंचल
 चाल न चालिये ॥ एक विषयबुद्धें, वस्तु केहनी हाथे
 पण नवि ऊलियें ॥ कोटी कंदर्प, रूप सुंदर, पुरुष पेखीन
 मोहिये ॥ तणखला तोले गणिय तेहने, फरिय सामुं
 न जोइयें ॥ ४ ॥ चाल ॥ पुरुष पीयारो रे, बलि न व
 खाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीयें ॥ उ० ॥
 जाणीयें पीयु विण, पुरुष सघला, सहोदर, समो बडे
 ॥ पतिव्रतानो, धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवरें ॥ कुरूप
 कुष्टी कूबरुने दुष्ट दुर्बल निर्गुणो ॥ जरतार पामी,

कामिनी ते इंद्राक्षी अधिको गणो ॥ चाल ॥ अमर
 कुमारें रे, तजी सुर सुंदरी ॥ पवनंजयें रे, अंजनापरि
 हरी ॥ ७० ॥ परिहरी रामेवनमां सीता, नखे दमयंति
 वली ॥ महा सती माथे, कष्ट पड्यां पण शीयलक्ष्मी
 ते, नवि चली ॥ कसोटीनी परें, कसीअ जोतां कंतशुं
 विहडे नहीं ॥ तन मन्न वचनें, शीयल राखे, सती
 ते जाणो सही ॥ ६॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष
 न पाडीयें ॥ व्याकुल यझने रे मन न बगाडीयें ॥
 ॥ ७० ॥ मन न बगामीयें, पर पुरुषनुं, जोग जोतां,
 नवि मले ॥ कलंक माथे, चढे कूनां सगा सहु, दूरें
 टले ॥ अणसरज्यो, उच्चाट, थाये, प्राण तिहां, ला
 गी रहे ॥ इह लोक पामे आपदा, परलोक पीना
 बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा
 मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने इजत खोइ ॥ ७०
 ॥ इजत खोइ देख अजया, शेठ सुदर्शन, नवि च
 द्यो ॥ जरतार आगल, पनी जोंठी, अपवाद सघ
 ले, उबढ्यो ॥ कामिनी देखी, कामनी बुद्धें, वंकचूल,
 वाह्यो घणुं ॥ पणशीयलक्ष्मी, चुकी नहीं, दृष्टांत एम,
 केतां जणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीयल प्रजावें रे, जुवो
 शोले सती ॥ त्रिभुवनमांहे रे, जेह थई ठती ॥ ७० ॥
 सती थईने, शीयल राख्युं, कढपना, कीधी नहीं ॥
 नाम तेहना, जगत् जाणे विश्वमां ऊगी रही ॥ वि
 विध रले, जडित भूषण, रूपसंदरि, किन्नरी ॥ एक

शियल विण शोजे नही ते सत्य गणजो सुंदरी ॥९॥
 चाल ॥ शीयल प्रजावे रे, सुर सेवा करे ॥ नव वा
 मेंरे जेह निर्मल धरे ॥ धरें निर्मल, शीयल उज्वल,
 तास कीर्ति ऊलहले ॥ मनकामना, सवि सिद्धि पामे,
 अष्ट जय, छुरे टले ॥ धन्य धन्य ते, जाणो धरा,
 जे शीयल चोखुं, आदरे, ॥ आनंदना ते, उंघ पामे
 उदय महा जस, विस्तरे ॥ १० ॥ इति नारीने

॥ अथ धोबीमानी सवय ॥

॥ धोबीमा तुं धोजे मननुं धोतीयुं रे, रखे राख
 तो मेल लगार रे ॥ एणेंमेले जग मेलो कस्यो रे, विण
 धोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥१॥ जिनशासन सरो
 वर सोहामणुं रे, सम कित तणी रूमी पाल रे ॥
 दानादिक चार बारणां रे, मांहि नव तत्व कमल
 विशाल रे ॥ धो० ॥२॥ तिहां जीले मुनीवर हंसला रे,
 पी ये ठे तप जप नीर रे ॥ शम दम आदि जे शील रे,
 तिहां खाले आपणुं चीर रे ॥ धो० ॥३॥ तपवजे तप तरुके
 करी रे, जालवजे नव तत्व वारु रे ॥ ठांटा उमाडे रखे
 पाप अढारना रे, एम उजळुं होशे ततकाल रे ॥ धो०
 ॥४॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे, रखे आवे माया
 शेवाल रे ॥ निश्चे प वित्रपणुं राखजे रे, पठे आपण
 नीमी संजाल रे ॥ धो० ॥५॥ रखे मूकतो मन मोकळुं
 रे ॥ चल मेळीनें संकेल रे ॥ समयसुंदरनी शीखनी रे,
 सुखनी अमृत वेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जरतचक्रीनी सद्याय ॥

॥ मनहीमे वैरागी जरतजी, मनहीमें वैरागी ॥
 सहस्स वत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वडवागी
 ॥ चोशठ सहस्स अंतेजरी जाके, तोहि न हुवा
 अनुरागी ॥ ज० ॥ १ ॥ लाख चोराशी तुरंगम जाके,
 ठनुं कोरु हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सो
 हिये, सुरता धर्मशुं लागी ॥ ज० ॥ २ ॥ चार करो
 ड मण अन्नज उपडे, लूण दश लाख मण लागे ॥
 तीन कोरु गोकुल डुजे, एक कोरु हल सागी ॥ ज० ॥
 ॥ ३ ॥ सहस्स वत्रीश देश वरजागी, जये सरवके
 त्यागी ॥ ठनुं कोरु गामके अधिपति ॥ तोहे न हुआ
 सरागी ॥ ज० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगडा बा
 जे, मन चिंता सब जांगी ॥ कनक कीरत मुनिवर
 वंदत हे, देजो मुक्ति में मागी ॥ ज० ॥

चेत चतुरनर निज मनमाहिं ॥ दण दण आयुष
 जायजी कांइ निचिंत यइने सुतो, नरजव ए ले जाय
 जी ॥ १ ॥ चे ॥ काम क्रोध तृष्णारसें रातो, तेणें न जायुं,
 कांय जी ॥ लागे घरे किम कूप खण्णसेसांजे न बांधि
 पालजी ॥ २ ॥ चे ॥ आयु अ स्थिर जिम जल पंपोटो मर
 ण ते आवे निदानजी ॥ राय रंक केहने नवि बोडे,
 पंडित जाण अजाणजी ॥ ३ ॥ चे ॥ पुण्य पाप दोय साथें
 आवे, अवर न आवे कोयजी ॥ कहे नारायण धर्म
 करो जिम, आवागमण न होयजी ॥ ४ ॥ चे ॥ इति ॥

॥ अथ श्री बाहुबलजीनी सखाय ॥

॥ बहेनी बोले हो बाहुबल सांजलो जी ॥ रूडा
रूमा रंगनिधान ॥ गयवर चढिया हो, केवल केम
हुवे जी ॥ जाण्युं जाण्युं पुरुष प्रधान ॥ ब० ॥ १ ॥
तुज सम उपशम जगमां कुण गणेजी, अकल निरं
जन देव ॥ जाइ जरतेसर वाहाला विनवे जी, तुऊ
करे सुर नर सेव ॥ ब० ॥ २ ॥ जर वरसालो हो
वनमां वेठीउं जी, जिहां घणां पाणीनां पूर ॥ ऊर
मर वरसे हो, मेहुलो घणुं जी, प्रगट्या पुण्य अंकूर
॥ ब० ॥ ३ ॥ चिहुं दिशि वींढ्यो हो वेलमीये घणुं
जी, जेम वादल ठायो सूर ॥ श्री आदिनाथे हो,
अमने मोकट्यां जी ॥ तुम प्रतिबोधन नूर ॥ ब० ॥
॥ ४ ॥ वर संवेगरसे हो, मुनि जस्यो जी ॥ पाम्युं
पाम्युं केवल नाण ॥ माणकमुनि जस नामे हो,
हरख्यो घणुं जी ॥ दिन दिन चढते रे, वान ॥ ब०
॥ ५ ॥ इति सखाय ॥

॥ अथ श्री ढंढण ऋषिजीनी सखाय ॥

॥ ढंढण ऋषिजीने वंदण ॥ हुं वारी लाल ॥ उ
त्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अजियह
लीधो आकरो ॥ हुं वारी ० ॥ लब्धे लेशुं आहार रे
॥ हुं वारी लाल ढं ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी
॥ हुं ० ॥ न मले शुरू आहार रे हुं ० ॥ न लीये मू
ल असूजतो ॥ हुं ० ॥ पींजर हुवो गात रे ॥ हुं ॥

ठं० ॥ २ ॥ हरि पूठे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर
 सहस्स अठार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥
 ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ ठं० ॥ ३ ॥
 ठंढण अधिको दाखीयो ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेम जि
 णंद रे ॥ हुं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ ध
 न्य जादवकुल चंद रे ॥ हुं० ॥ ठं० ॥ ४ ॥ गलीआ
 रे मुनिवर मढ्या हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं० ॥
 किणही मीथ्यात्वी देखिने ॥ हुं० ॥ आव्यो जाव
 विशेष रे ॥ हुं० ॥ ठं० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधु
 जी ॥ हुं० ॥ ह्यो मोदक ठे शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ रिषीजी
 लइ आवीया ॥ हुं० ॥ प्रभुजी पास विशुद्ध रे ॥
 ॥ हुं० ॥ ठं० ॥ ६ ॥ मुज लब्धे मोदक मिढ्या ॥
 ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ लब्धि न
 हिं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपति लब्धि निहाल रे
 ॥ हुं० ॥ ठं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं ॥ हुं० ॥
 चाढ्यो परठण काज रे ॥ हुं० ॥ इंट निंजाडे जाइ
 ने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हुं० ॥ ठं० ॥ ८ ॥
 आवी सूधी जावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाण रे
 ॥ हुं० ॥ ठंढण रुषि मुगते गया हुं० ॥ कहे जिन
 हर्ष सुजाण रे ॥ हुं० ॥ ठं० ॥ ए ॥ इति ठंढण रु
 षिनी सद्याय ॥

॥ अथ श्री अश्मंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अश्मंता मुनिवरजूके, करणीकी बलि हा

री वे ॥ खट वर्षेनके संजम लीनो, वीरवचन चित्त
धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्रीदेवी नंद
न, कोलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार पढे गुण
आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥
॥ २ ॥ तपगुण रयण संवत्सर आदिक, करकें काय
उद्धारीवे ॥ प्रजु आदेशें विपुलाचल परि, करी अ
णसण अति ज़ारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय
मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलंक निवारी वे ॥ अढा
र अमृताले तिहिं गिरि उपर, कीनी थापना सारी
वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसाये,
सुवि चारी वे ॥ शिष्य द्रुमाकद्वयाण हरख धर, गावे
आति जयकारी वे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री करकंडू प्रत्येक बुधजीनी सद्या ॥

॥ चंपा नगरी अति ज़ली ॥ हुं वारी लाल ॥
दधिवाहन जूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती
कूखें उपनो ॥ हुं ॥ कर्म कीधो चंमाल रे ॥ हुं ॥
॥ १ ॥ करकंडुने करुं वंदणा ॥ हुं ॥ पहिलों प्रत्येक
बुध रे ॥ हुं ॥ गिरुवाना गुण गावतां ॥ हुं ॥ स
मकित थाये शुद्ध रे ॥ हुं ॥ २ ॥ लाधी वांशनी
लाकनी ॥ हुं ॥ थयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं ॥
बापसुं संग्राम मांकीउ ॥ हुं ॥ साधवी लीउ सम
जाय रे ॥ हुं ॥ ३ ॥ वृषज रूप देखी करी ॥ हुं ॥
॥ प्रतिबोध पाम्यो नरेश रे ॥ हुं ॥ उत्तम संजम

आदख्यो ॥ हुं० ॥ देवतादीधो वेश रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥
 कर्म खपाय मुगतें गया ॥ हुं० ॥ करकंडू रुषि राय
 रे ॥ हुं० ॥ समयसुंदर कहे साधुने ॥ हुं० ॥ प्रण
 म्यां पातक जाय रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मनोरमा सतीनी सत्वाय ॥

॥ मोहनगारी मनोरमा, शेठ सुदर्शन नरीरे ॥
 शील प्रजावें शासनसुरी, थइ जस सान्निध्यकारी
 रे ॥ मो०॥१॥ दधिवाहन नृपनी प्रिया अजया दीए
 कलंक रे कोप्यो चंपापति कहे, शूली रोपण वंक रे
 ॥ मो० ॥ २ ॥ ते निसुणीने मनोरमा, करे काउस्स
 गग धरी ध्यान रे ॥ दंपती शील जो निरमलुं, तो
 वधो शासन मामरे ॥ मो०॥३॥ शूली सिंहासन थयुं
 शासन देवी हजूर रे ॥ संजम ग्रही थया केवली,
 दंपती दोय सनूर रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल गुण
 शीलथी, शासन शोच चढावे रें सुर नर सवि तस
 किंकरा, शिव सुंदरी ते पावे रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोधनी सत्वाय ॥

॥ कडवां फल ठे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥
 रीशतणो रस जाणीयें, हलाहल तोलें ॥ क० ॥
 ॥ १ ॥ क्रोधें क्रोरु पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥
 क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखें न थाय ॥ क०॥२॥
 साधु घणो तपीयो हुतो, धर तो मन वैराग ॥ शिष्य
 ते क्रोधथकी थयो, चंरुकोशोयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥

आग उठे जे घरथकी, ते पहेलुं घर बाळे ॥ जल
नो जोग जो नवि मळे, ते पासेनुं परजाळे ॥ क० ॥
॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥
॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥
॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गळे
साही ॥ काया करजो निर्मली, उपशम रस नाही
॥ क० ॥ ६ ॥ इति क्रोधनी सद्याय ॥

॥ अथ माननी सद्याय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीयें, माने विनय न आ
वे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित
पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं,
चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख ठे शा
श्रुतां, ते केम लहियें जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विन
य वनो संसारमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ मानें गुण
जाये गल्ली, प्राणी, जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥
मान कळुं जो रावणे, तेतो रामे माख्यो रे ॥ दुर्यो
धन गरवे करी, ते अंते सवि हाख्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥
शूकां लाकमां सारिखो, दुःखदायी एखोटो रे ॥ उद
यरल कहे मानने, देजो तमे देशवटो रोरे ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ मायानी सद्याय ॥

॥ समकितनुं मुख जाणीयें जी, सत्य वचन सा
क्षात ॥ साचामां समकित वसे जी, मायामां मि
थ्यात्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥

ए आंकणी ॥ सुख मीठो जूठो मनं जी, कूरु कपट
 नो रे कोट ॥ जीनें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे
 ताके चोट रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ आप गरजे आघो पडे
 जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी,
 ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्री
 तनी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न ठंडे मन
 तणोजी, ए माया नु मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप की
 धुं माया करी जी, मित्रशुं राखे रे जेद ॥ मल्लि
 जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥
 ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदयरल कहे सांजलो जी, मेलो
 मायानी बुद्धि ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मा
 रग ठे शुरू रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ आचारांग सूत्रनी वाय ॥

॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रेलो ॥ अे देशी ॥

आचारांग पहेलुं कछुं रेलो अंग इग्यार मजार
 रे ॥ चतुरनर ॥ अढार हजार पदें जिहां रेलो, दा
 ख्यो मुनि आचार रे ॥ च० ॥ १ ॥ जावधरीने सां
 जलोरेलो. जिम जाजे जव जीति रे ॥ च० ॥ पू
 जा जक्ति प्रजावना रेलो, साचविये सवि रीति रे
 ॥ च० ॥ जाव० ॥ ए आंकणी ॥ दो सुअबंध सुहा
 मणां रेलो, अज्जयणां पणवीस रे ॥ च० ॥ शाश्वता
 अर्थे इहां कहे रेलो, युक्ति श्रीजगदीश रे ॥ च० ॥
 जा० ॥ १ ॥ मीठडेवयणें गुरु कछुं रेलो, मीठडुं अं

गज एह रे ॥ च० ॥ मीठडीरीते सांजले रेलो, सु
ख खहे मीठडां तेह रे ॥ च० ॥ जा० ॥ ३ ॥ सुर
तरु सुरमणि सुरगवी रेलो, सुरघट पूरे काम रे
॥ च० ॥ सांजखनुं सिद्धांतनुं रेलो, तेहथी अति अ
जिराम रे ॥ च० ॥ जा० ॥ ४ ॥ श्रीनयविजयविबु
द्धतणो रेलो, वाचक जस कहे शीश रे ॥ च० तुम
ने पहिला अंगनो रेलो, शरण होयो निशदीश रे
॥ च० ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥

॥ अथ कलियुगनी सहाय ॥

॥ सरसती सामिनी पाय नमीने, उलट मनमां
हे आयो ॥ तीरथ नहीं कोइ इण संसारे, तेणे ए
कलियुग आयो ॥ देखो बे यारो कूम्हो कलियुग
आयो ॥ एआंकणी ॥ बाबो कहे मारी नानकी
बेटी, दिन दिन मूख्य सवायो ॥ यारो कूम्हो कलियु
ग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम
जलायो ॥ बोल बंध नहि मंत्रीने, गोचर खेत्र खे
लायो ॥ बे यारो ॥ २ ॥ गुरुने गाल्ल दिये नित चेखो,
वेद पुराण पढायो ॥ सासु चूले ने बहु खाटलडे,
फुके शरीर जलायो ॥ बे यारो ॥ ३ ॥ एशी वरस
नो हींडे होशे, मूठे हाथ घलाये ॥ पंच तणी साखे
परणीने, अबला अर्थ गमायो ॥ बे यारो ॥ ४ ॥ जोगी
जंगम ने संन्यासी जांग जखे मदवाहो ॥ चोर चाड
परधनने खाये, साधु जन सीदायो ॥ बे यारो ॥ ५ ॥

निर्धनने बहु बेटा बेटा धनवंत एक न पायो ॥
 नीच तणे घर अति वणी लखमी उत्तम जन सीदा-
 यो ॥ बे यारो ॥ ६ ॥ न मले बाप संगते बेटो,
 घणेरे मनोर्थे जायो ॥ हाथउपाडे मायने मारे, पर-
 णी शुं उमाह्यो ॥ बे यारो ॥ ७ ॥ घरमाने घेलो
 कहे बेटो, आद तणो मद वाह्यो ॥ बहु सूतीने वर
 हींकोले, सासरे सूवाने धायो ॥ बे यारो ॥ ८ ॥
 हलखेडे ब्राह्मण गौ जोत्ति, निर्दय नाक फकायो ॥
 मा बापे बेटा वेचीने, बेटाने परणायो ॥ बे यारो
 ॥ ९ ॥ राग तणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे परा
 यो ॥ कांगानी पेरे कलहो मांकी, कुल गुरु नाम
 धरायो ॥ बे यारो ॥ १० ॥ बैयर बार वरसनीने
 बेटो, दीगो गोद खेलायो ॥ माग्यां मेह न वरसे
 महीयल, लाजें धर्यो सवायो ॥ बे यारो ॥ ११ ॥
 कूमा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो ॥
 पन्नणे प्रीति विमल परमारथ, जीन वचनें सुख
 पायो ॥ बे यारो कूमा ॥ १२ ॥

॥ अथ शियल स्वाध्याय ॥

धन्य धन्य ते दीन माहारो ॥ ए देशी ॥ शिय-
 ल समुं व्रत को नहि, श्री जीनवर जाखे रे ॥ सुख
 आपे जे शाश्वतां, दुर्गति परता राखेरे ॥ शि० ॥ १ ॥
 व्रत पचस्काण विना जुओ, नव नारद जेहरे ॥ एक
 ज शियल तणें बले, गया मुकतें तेहरे ॥ शि० ॥

॥ १ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत ठे सुखदायीरे
शियल विना व्रत जाणजो, कुशका सम जाइरे ॥
॥ शि० ॥ ३ ॥ तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण
लाल कमानरे ॥ शियल विना व्रत एहवुं, कहे वीर
जगवानरे ॥ शि० ॥ ४ ॥ नव वारुं करी निर्मलुं, प
हेलुं शीलज धरजोरे ॥ उदय रत्न कहे ते पढी,
व्रतनो खप करजोरे ॥ शि० ॥ ५ ॥

॥ निद्रानीनी सवाय ॥

निद्रानी बेरण हुइ रही, कीम कीजें हो सा पुरु
श निदानके; चोर फरे चिहुं पासथी, किम सूता
हो कांइ दिनने रात के ॥ नि० ॥ १ ॥ वीर कहे
सूणो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमादके
॥ जरा आवे यौवन गले, किम सूता हो कांइ कव
ण सवादके ॥ नि० ॥ २ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा
निद्रा करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनंतो
अनंत काल तिहारहे, इम बगडे हो, कांइ धरमनो
मोदके ॥ नि० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यम
राजा हो कांइ सबल करुरके ॥ नीज सेन्या लइ
चिहुं दिशे, किम जागता हो नर कहिये शूर के ॥
नि० ॥ ४ ॥ जागतडां गंजे नहि, ठेतराये हो नर
सूतो नेटके ॥ सूतारीणी पाका जण्खा, किम कीजें
हो सा पुरुषनी जेटके ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्री वीरें इम
जाखीयुं, पंखी जारंड हो न करे परमाद के; तेह

तणी परें विचारजो, परिहरजो, हो गोयम परमाद
 के ॥ नि० ॥ ६ ॥ वीर वचन इम सांजली, परिहरी
 यो हो गोयमें परमाद के; लीला सुख लाधां घणां,
 श्रीर रहियो हो जगमां जसवादके; ॥ नि० ॥ ७ ॥
 निंद निद्रनी मत आणजो, सूइ रहेजो हो साव
 धान के; ध्यान धरम हियें धारजो, इम जाखे हो
 मुनि कनक निदान के ॥ नि० ॥ ८ ॥

॥ अथ आत्मबोध सव्याय ॥

जीव क्रोध म करजो, लोभ म धरजे, मान मला
 इश जाइ ॥ कूडां कर्म म बांधीश, धर्म म चूकीश,
 विनय म मूकीश ॥ जाइरे जीवडा ॥ दोहिलो मान
 वज्रव लाधो, तुमे कांइ करी तत्त्वने साधो रे जोखा
 ॥ दोहिला० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ घर पठवाडे दे
 रासर जतां, वीश विमासण थाय ॥ जूख्यो तरइयो
 राउल राते, माथे सहेतो घाय रे ॥ जीवधा दोहि०
 ॥ २ ॥ धर्म तणी पोशाखे चाढ्या, सूणवा सदगुरु
 वाणी ॥ एक वात करे बीजो उठी जाये, नयणे
 निंद जराणीरे ॥ जीव० ॥ ३ ॥ नामे बेठो लोभे पेठो,
 चार पोहोर निशि जाग्यो ॥ बे घनीनुं पकि कमणुं
 करतां, चोखो चित्त न राख्योरे ॥ जीव० ॥ ४ ॥ आ
 ठम चउदश पुनम पाखी, पर्व पर्युसण सारो ॥ बे
 घनीनुं पचस्काण करंतां, एक बीजाने वारो रे ॥
 रे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ कीर्ति कारण पगरण मांडी, अ

रथ गरथ सवि लूटे ॥ पुण्यने काजे पारकुं पोतानु,
गांठडीए नवि लूटे रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ घर घरणीने
घाट घमाव्या, पहेरण आठा वाघा ॥ दश आंगली
दश वेढज पहर्था, निर्वाणे जावुं ठे नागारे ॥ जीव
मा० ॥ ७ ॥ वांको अकर माथे मीडुं, नीलवट आ
धो चंदो ॥ मुनि लावण्य समय इम बोधे, ए त्रण
काळें वंदो ॥ जीवमा० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री जीनहर्षजीकृत पांचमा आरानो सच्चाय ॥

॥ वीर कहे गौतम सुणो, पांचमा आरना जाव
रे ॥ दुखीया प्राणी अतिघणा, सांजल गौतम सु
जावरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ शहेर होशे ते गाममां,
गाममां, होशे समशान रे ॥ विण गोवाळें रे
धण चरे, झानी नहिं निरवाण रे ॥ वी० ॥ २ ॥ मु
ज केडे कुमती घणा, होशे ते निरधार रे ॥ जिनम
तिनी रुचि नवि गमे, थापशे निजमति सार रे ॥
वीर० ॥ ३ ॥ कुमति जाजा कदाग्रही, थायशे आप
णा बोलरे ॥ शास्त्र मारग सवि मूकशे, करशे जि
न मत मोल रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ पाखंकी घणा जाग
शे, जांगशे धरमना पंथ रे ॥ आगम मत मरमी
करी, करशे नवा वली ग्रंथ रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ चाल
णीनी परें चालशे, धर्म न जाणे लेशरे आगम शा
खाने टालशे, पालशे निज उपदेश रे ॥ वी० ॥ ६ ॥
चोर चरड बहु लागशे, बोली न पाले बोल रे ॥ सा

धुजन सीदा यशे, दुर्जन बहुला मोल रे ॥ वी० ॥ ७ ॥
 राजा प्रजाने पीरशे, हिंडशे निरधन लोक रे ॥
 माग्या न वरसशे मेहुला, मिथ्यात्व होशे बहु थो
 क रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ संवत् ओगणीश चौदोत्तरें, हो
 शे कलंकी राय रे ॥ माता ब्राह्मणी जाणीयें, बाप
 चंमाल कहेवाय रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ ठ्यासी वरषनु
 आउखु, पामलीपुरमां होशे रे, तसु सुत वत्त नामें
 जलो, श्रावककुल शुज होषे रे ॥ वी० ॥ १० ॥ कौतुकी
 दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोय रे ॥ चोथ लेशे
 जिह्वा तणी, महा आकरा कर होय रे ॥ वी० ॥
 ॥ ११ ॥ इंद्र अवधियें जोयतां, देखशे एह स्वरूप रे
 ॥ द्विजrupें आवी करी, हणशे कलंकी जूप रे ॥
 ॥ १२ ॥ दत्तने राज्य थापी करी, इंद्र सुर लोकें ज
 य रे ॥ दत्त धरम पाळे सदा, जेटशे शेत्रंज गिरि
 राय रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ पृथ्वी जीन मंडित करी
 पामशे सुख अपार रे ॥ देव लोकें सुख जोगवे, नामे
 जयजयकार रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ पांचमा आराने ठेकु
 ले, चतुर्विध श्रीसंघ होशे रे ॥ ठठो आरो बेसतां,
 जीनधर्म पहिलो जाशे रे ॥ वी० ॥ १५ ॥ बीजे
 अगनी जायशे, बीजे राय न कोय रे ॥ चोथे पोहरे
 लोपना, ठठे आरे ते होय रे ॥ १६ ॥ दोहा ॥ ठठे
 आरे मानवी, बिलवासी सवि होय ॥ बीश वरसनुं
 आउखं, षटवर्षेगर्जज होय ॥ १७ ॥ सहस चोराशी

वर्षपणे, जोगवशे जवि कर्म ॥ तीर्थकर होशे जलो,
श्रेणिक जीव सुधर्म ॥ १७ तसु गणधर अति सुंदर,
कुमार पाल जूपाल ॥ आगम वाणी जोशने, रचीय
रयण रसाल ॥ १८ ॥ पांचमा आराना जाव ए,
आगमें जाख्या वीर ॥ ग्रंथ बोल विचार कह्या,
सांजलजो जवि धीर ॥ १९ ॥ जणतां समकित सं
पजे, सुणतां मंगल माल ॥ जीनहर्षे कही जोड ए,
जाख्यां वयण रसाल ॥ २० ॥ इति ॥

॥अथ अमल वर्जन स्वाध्याय कथं तमाकू परिहरो॥
ए देशी ॥

॥ श्रीजीनवाणी मन धरी, सद्गुरु दीये उपदेश
मेरे लाल ॥ बावीश अजदयमांहे कळुं, अमल अ
जदय विशेष ॥ मे० ॥ अमल म खाउं साजनां ॥१॥
अमल विगोवे तन ॥ मे० उंघ बगासां घेरणी, आवे
आखो दिन्न ॥ मे० ॥ अ० ॥ २ ॥ अमली अमलने
सारिखो, आवे आनंद थाय ॥ मे० ॥ उतरतां आ
रति घणी, धीरज जीव न धराय ॥ मे० ॥ अ० ॥३॥
आलस ने उजागरो, बेठो ढबकां खाय ॥ मे० ॥
अकल नकांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मे० ॥
॥ अ० ॥ ४ ॥ काला अहिथी उपनुं, नामें जे अहि
फीण ॥ मे० ॥ संग करे कोण एहनो, पंकित लोक
प्रवीण ॥ मे० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पहेलुं मुख करुवुं हु
वे, वली घांटो घेराय ॥ मे० ॥ उदर व्यथा नित्य

आकरो, इण्थी अवगुण थार्ये ॥ मे० ॥ अ० ॥ ६ ॥ नाक
 बंधार्ये बोखतां, आधुं वचन बोलाय ॥ मे० ॥ अमी
 सुकाये जीजनुं, एहने खाय बलाय ॥ मे० ॥ ७ ॥
 दाढीने मूठांदिशि, उगे नही अंकूर ॥ मे० ॥ काया
 काली मिश दुए, गावमी गाळे नूर ॥ मे० ॥ अ० ॥
 ॥ ८ ॥ पलक अवेरुं जो लीए, तो आतम अकुलाय
 ॥ मे० ॥ नाक चूए नयणां ऊरे, काम करी न शका
 य ॥ मे० ॥ अ० ॥ ९ ॥ अधविच मारगमां पडे,
 जीवन मृत्यु समान ॥ मे० ॥ हाथ पगोनी नस ग
 ले, अमली आवी शान ॥ मे० ॥ अ० ॥ १० ॥ आ
 गराइ आठो कह्यो, मालवी मांहे जेल ॥ मे० ॥
 आपदशुं सखरुं नही, मिशरीशुं मन मेल ॥ मे० ॥
 अ० ॥ ११ ॥ नवटांक जे नर जीरवे, तसु अहि वि
 ष न जणाय ॥ मे० ॥ अमल घणुं खाधाथकी, कंद
 र्प बल मिट जाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १२ ॥ अमलीने
 उन्हुं रुचे, टाढु नावे दाय ॥ मे० ॥ खोजी रोटी
 खांरु धी, उपर दूध सुहाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १३ ॥
 कुलवंती जे कामनी, जाणे जुगति सुजाण ॥ मे० ॥
 कांति विखी रुण करी, अमलीने दीए आण ॥
 ॥ मे० ॥ १४ ॥ प्रीतम आशा पूरती, न करे रीश
 लगार ॥ मे० ॥ कथन न लोपे कंथनुं, ते विरली
 संसार ॥ मे० ॥ अ० ॥ १५ ॥ दुर्जागणी नारी जी
 का, बोळे कर्कश वाण ॥ मे० ॥ रे रे अधम अफी

णिया, आलसवंत अजाण ॥ मे० ॥ अ० ॥ १६ ॥
 परणी जाइ पारकी, शुं कीधुं तें धीठ ॥ मे० ॥ पो
 तानुं पण पेट ए, नितुर जराय न नीठ ॥ मे० ॥
 ॥ अ० ॥ १७ ॥ कान कोट नूषण सह, वेची खाधुं
 तेह ॥ मे० ॥ निर्लज तुज घरवासमां, कहे सुख
 पाम्युं जेह ॥ मे० ॥ अ० ॥ १८ ॥ अमल समो अ
 सुगो नही, मानो एमुज शीख ॥ मे० ॥ बासे सुंद
 र देहमी, अंते मगावे जीख ॥ मे० ॥ अ० ॥ १९ ॥
 दाखिझीने दोहिलुं, सुर जग्यानुं शाल ॥ मे० ॥ श्री
 मंतने पण नहीं जलुं, जोतां ए जंजाल ॥ मे० ॥
 ॥ अ० ॥ २० ॥ सासु बहु बढतां ठतां, रीसे अमल
 जखंत ॥ मे० ॥ बालक खाये अजाणतां, जो घर अम
 ल हवंत ॥ मे० ॥ अ० ॥ २१ ॥ प्राणी बध जिणशुं
 हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे० ॥ कर्मादान दशमुं
 कलुं, विष व्यापार परुर ॥ मे० ॥ अ० ॥ २२ ॥ च
 तुर विचार ए चित्त धरी, कीजें अमल परिहार ॥
 ॥ मे० ॥ खिमाविजय पंडित तणो, कहे माणिक म
 नोहार ॥ मे० ॥ अ० ॥

॥ अथ काया उपर सधाय ॥

॥ काया रे वामी कारमी, सीचंतांरे शूके ॥ उठ
 कोरु रोमा-बली, फल फूल न मूके ॥ का० ॥ का
 या माया कारमी, जोवंतां जाशे ॥ मारग लेजो मो
 हनो, जीवको सुख पाशे ॥ का० ॥ १ ॥ अरिहंत

आंबो मोरीयो, सामायिक थाणे मंत्र नवकार संज्ञा
 रजो समकित सुधठाणे ॥ का० ॥ ३ ॥ वामी करो
 विरतां तणी, सवि लोज निवारो ॥ शील संयम
 दोनु एकठां, जली पेरे पारो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच
 पुरुष देशावरी, बेठा एणी डाली ॥ फल चुंटीने
 चोरीआं, न करी रखवाली ॥ का० ॥ ५ ॥ इण
 वामी एक सूखलो, सुख पिंजर बेठो ॥ बहुत जतन
 करी राखजो, जातो किणही न दीठो ॥ का० ॥ ६ ॥
 कां जोलपणे जव हारियो, मती मोमी संज्ञाली ॥
 रत्न चिंता मणि सारीखी, कांइ गांठ न वाली ॥
 ॥ का० ॥ ७ ॥ रत्न तिलक सेवक जणे, सुणेजो
 वनमाखी ॥ वाम जली परें पालजो, करजो ढंग
 वाली ॥ का० ॥ ८ ॥

॥ अथ तेर काठियानी सद्याय ॥

॥ आलस पहेलो जी काठियो, धमें ढील कराय
 रे, निवारोजी काठिया तेर दूरें करो ॥ बीजो ते मो
 ह पुत्र कलत्रशुं, रंगें रहे लपटाय रे ॥ निवारोजी
 ॥ का० ॥ १ ॥ त्रीजो ते अवरण धर्ममां, बोले अव
 रण वादरे ॥ निवारोजी ॥ क० ॥ चोथो ते दंजज
 काठियो, न लहे विनयें सवाद रे ॥ निवारोजी ॥
 ॥ का० ॥ २ ॥ क्रोध ते काठियो पांचमो, रीसें रहे
 अमलाय रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ठठां प्रमाद ते
 कठियो, व्यसनें विगूतो थाय रे ॥ निवारोजी ॥

॥ का० ॥ ३ ॥ कृपण काठियो सातमो, न गमे दाननी वातरे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ आठमो जयथी नवी सुणे, नरकादिक अवदात रे ॥ निवारोजी ॥ ४ ॥ नवमो ते शोक नामें कह्यो, शोकें ठांडे धर्म रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ दशमो अज्ञाने ते नविलहे, धर्म अधर्मनो मर्म रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ॥ ५ ॥ विकथा नामे अग्यारमो, लोक वातें धरे प्रीत रे ॥ निवारोजी ॥ क० ॥ कुतुहल काठियो बारमो, कौतुक जोवा धरे चित्त रे ॥ निवारोजी ॥ ॥ का० ॥ ६ ॥ विषय ते काठियो, तेरमो, नारि साथें धरे नेहरे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ७ ॥ इति श्री तेर काठियानी सव्वाय ॥

॥ अथ महोटी होंस न करवा आश्रयी सव्वाय ॥
होंशीका जाइ (प्राणि) होंश न कीजें महोटी वावी ठे बंटी बाजरी, तो शाली केम लहियें मोटी रे ॥ हों० ॥ प्राणी जेणें दीधुं तेणे लीधुं जे देशे तेलेशेरे ॥ जेणे नवि दीधुं तेणे नविलीधुं, दीधा विना केम लेशे रे ॥ हों० ॥ १ ॥ वाव्या विना कर्षण केम लहियें, सेव्या विना केम ठरीयें ॥ पुण्य विना मनो रथ मोटा, दीधा विण केम करियें रे ॥ हो० ॥ ॥ २ ॥ सीसानी अकोटी आपी, आपी तरुवानी त्रोटि ॥ ते सोनार कने केम मागीश, सोनानी करी मोटी रे ॥ हों० ॥ ३ ॥ शालिजद्र धन्नो कयवन्नो, मूलदे

व धनसार ॥ पुण्य विशेषें प्रत्यक्ष पाभ्या, अलवेस
र अवतार रे ॥ हों० ॥ ४ ॥ एवुं जाणी रुकुं पामी,
करजो धर्म सखाइ ॥ साधु हर्ष कर जोमी विनवे,
दीधुं लेशे लाइरे ॥ हों० ॥ ५ ॥ इति होंसीका सद्याय ॥

॥ अथ मधुबिंदुआ दृष्टांत सद्याय प्रारंजः ॥

॥ ढाल ॥ सरसती मुज रे, माता द्यो वरदान रे
॥ पूठे गौतम रे, जांखे श्रीवर्द्धमान रे ॥ ठंडो गिरु
आ रे, विरुआ विषयनु ध्यान रे ॥ विषयारस रे,
ठे मधुबिंदु समान रे ॥ त्रुटक ॥ मधुबिंदु सरिखो
विषय निरखो, जाइ परखो, चित्त शुं ॥ नर जनम द्वारयो
मोह गारयो, पिरु जारयो पापशुं ॥ कंतार परियो नाग
नरियो, कोइ देवाणुपियो ॥ वरुवृद्ध जमियो वेगें
चमीयो करडियो ठप्पियो ॥ १ ॥ ढाल ॥ वरु हेठल रे,
कूप अठे असराल रे ॥ दोय अजगर रे, मगर जिझ्या
विकराल रे ॥ चिहुं पासे रे, चार जुयंगम काल रे
॥ वली उपर रे, मोटो ठे महुयाल रे ॥ त्रुटक ॥
महुयाल माखी रगत चाखी, चंचु राखीनें रही ॥
घंधोलतो गजराज धायो, पडत वरुवाइ ग्रही ॥
वरुवाइ कापे उंदर आपे, ताप संतापें ग्रह्यो ॥ मधु
थकी गल्लीयो बिंदु ढल्लीयो, तेणे सुखलीणो रह्यो
॥ २ ॥ ढाल ॥ एह संकट रे, ठोडण देव दयाल रे ॥
दुःख हरवा रे, विद्याधर ततकाल रे ॥ उद्धरवा रे,
धरियुं तास विमान रे ॥ ओ आवे रे, मधुबिंदु करे

सान रे ॥ त्रुटक ॥ मधुबिंदु चाखे, वचन जाखें, करे
 लालच लखवली ॥ वार वार राखे सान पाखे, रहो
 कृष्णएक पर रखी ॥ तस खेचर मलीयो वेगे वलि
 यो, रंक रुलीयो ते नरु ॥ मधुबिंदु चाटे विषय
 साटे कह्यो उपनय जगगुरु ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोराशी
 लख रे, गतिवासी कांतार रे ॥ मिथ्यामति रे, झूलो
 जमे संसार रे जरा मरणारे, अवतरणा ये कूप रे, ॥
 आठ खाणी रे, पाणी पगड् सरुप रे ॥ त्रुटक ॥
 आठ कर्म खाणी दोय जाणी, तिरिय निरय अज
 गरा ॥ चारे कषाया मोह माया, लंबकाया विषह
 रा ॥ दोय पक्ष उंदर मरण गयवर, आयुवरुवाड
 वटा ॥ चटका वियोगा रोगशोगा, जोग योगा सा
 मटा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ विधाधर रे, सहगुरु करे संज्ञा
 ल रे ॥ तेणें धरीयुं रे, धर्म विमान विशाल रे ॥
 विषया रस रे, मीठो जेम महुयाल रे ॥ पम्खावे
 रे, बाल यौवन वयकाल रे ॥ त्रुटक ॥ रह्यो बाल
 यौवन काल तरुणी, चित्तहरणी निरखतो ॥ घरजा
 र युत्तो पंक खुत्तो, मदवगुत्तो पोषतो ॥ आनंद आ
 णी जैनवाणी, चित्त जाणी जागीयें ॥ चरण प्रमोद
 सुशिष्य जंपे, अचल सुख एम मांगीयें ॥५॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्य सहाय प्रारंभः ॥

॥ श्रीसीमंधर साहेब सांजलो ॥ ए देशी ॥

॥ कां नवि चिंतें हो चित्तमें जीवना, आयु गळे

दिन रात ॥ वात विचारी रे पूरवज्जव तणी, कुण
 कुण ताहरी रे जात ॥ कां० ॥ १ ॥ तुं मत जाणे रे
 ए सहु महारां, कुण माता कुण त्रात ॥ आप
 स्वारथ ए सहु को मढ्या, म कर पराइ रे वात ॥
 ॥ कां० ॥ २ ॥ दोहिलो दीसे रे ज्जव माणस तणो
 श्रावक कुल अवतार ॥ प्राप्ति पूरी रे गुरु गिरुआ
 तणी, नहीं तुज वारो रे वार ॥ कां० ॥ ३ ॥ पुण्य
 विहूणो रे दुःख पामे घणुं, दोष दीये किरतार ॥
 आप कमाइ रे पूरव ज्जवतणी, नवि संचारे गमार ॥
 ॥ कां० ॥ ४ ॥ कठिन कर्मने रे अहनिश तुं करे, जेहना
 सबल विपाक ॥ हुंनवि जाणुं रे कुण गति ताहरी, ते
 जाणे वीतराग ॥ कां० ॥ ५ ॥ तुज देखंतां रे जोने
 तें जीवडा, केइ केइ गयां नर नार ॥ एम जाणीनेरे
 निश्चें जांयवुं, चेतन चेतो गमार ॥ कां० ॥ ६ ॥ सुख
 पाम्यां रे बहु रमणीतणां, अनंत अनंती रे वार ॥ ल
 व्ध कहेरे जो जिनशुं रमे, तो सुख पामे अपार ॥ ७ ॥

॥ अथ स्त्रीवर्जन शिखामण सद्याय ॥

॥ धर्म जणी जातां धरा, वचमांहे पाडे वाट ॥
 लछि लीए सर्व लूटीने, व्रतनी जे वहे उवाट ॥ ब
 ला हो, बहु बहु बोली ए बाल, जे अठता उपाये
 आल, जे बाघणथी विकराल, जे आपे मरण अ
 काल ॥ व० ॥ १ ॥ संसारे सहू सरिखुं नहीं, जोरें
 वसंतां जोय ॥ एक वांको एक पाधरो, बोरडीये

कांटा जिम होय ॥ ब० ॥ १ ॥ बला बला सहुको
 कहे, बीजी जला बलवंत ॥ ए जेवी एके नहीं, जे
 ठलें पामी ठलंत ॥ ब० ॥ ३ ॥ आखाढो गाढो ठ
 द्यो केइ ठल्या नर कोरु ॥ गुणवंतनु पण नहीं ग
 जु, जे कणमां लगाडे खोड ॥ ब० ॥ ४ ॥ उलाखे
 आकासमां, एक आंखे उलाखे अनेक ॥ महींयें
 पग मंडे नहीं वली, नासे विनय विवेक ॥ ब० ॥
 ॥ ५ ॥ जशोधर जिस्या खानमी, वली मुंज जिस्या
 महाराज ॥ पुण्यवंत परदेशी सारिखा, ते कांता हणया
 निजकाज ॥ ब० ॥ ६ ॥ जोरावर जंबू जिस्या, वंक
 चूल सरिखा वीर ॥ समर्थ थूखिज्ज सारिखा, जेह
 नां नारियें न उतास्यां नीर ॥ ब० ॥ ७ ॥ शोल स
 ती आदें थइ महासतीओ जग हितकार ॥ अने
 क नर तेणें उद्धर्या, रहनेमि आदें निरधार ॥ ब० ॥
 ॥ ८ ॥ सुदर्शन ठलतां नवि ठढ्यो, थयो केवल क
 मलाकंत ॥ परमोदय पामे सही, जे पास एहने न
 पमंत ॥ ब० ॥ ९ ॥ इति स्त्री वर्ज्जन सज्जाय ॥

॥ अथ परस्त्री वर्ज्जन सव्वाय ॥

॥ धणरा ढोला ए देशी ॥

॥ शीख सुणो पीठ माहरी रे, तुजने कहुं कर
 जोरु ॥ धणरा ढोला ॥ प्रीत म कर परनारी शुं रे,
 आवे पग पग खोरु ॥ ध० ॥ कह्युं मानोरे सुजाण
 कह्युं मानो ॥ वरज्यां वर्ज्जो, मारा लाल, वरज्यां

बज्जों, परनारीनो नेहलको निवार ॥ धणरा ढला ॥
 ॥ १ ॥ जीव तपे जिम वीजली रे, मनहुं न रहे
 ठाम ॥ ध० ॥ काया दाह मिटे नही रे, गांठे न
 रहे दाम ॥ ध० ॥ २ ॥ नयणें नावे निझमी रे,
 आठे पोहोर उद्वेग ॥ ध० ॥ गल्लीआरे जमतो रहे
 रे, लागू लोक अनेक ॥ ध० ॥ ३ ॥ धान न खाये
 आपतो रे, दीतु न रुचे नीर ॥ ध० ॥ नीसासा ना
 खे घणा रे, सांजल नणदीना वीर ॥ ध० ॥ ४ ॥
 जूतलमें निसि नीसरे रे, जुरी जुरी पिंजर होय ॥
 ध० ॥ प्रेमतणे वश जे पडे रे, नेह गमे तव दोय
 ॥ ध० ॥ ५ ॥ रात दिवस मनमां रहे रे, जिणशुं
 अविहम नेह ॥ ध० ॥ वीसांख्या नवि वीसरें रे,
 दाजे कण कण देह ॥ ध० ॥ ६ ॥ माये बदनामी
 चढे रे, लागे क्रोम कलंक ॥ ध० ॥ जीवितनो सं
 शययमैरे, जूवोरावण पतिलंक ॥ ध० ॥ ७ ॥ परनारीना
 संगथीरे, जलो न थाये नेठ ॥ ध० ॥ जूवो कीचक
 जीमडे रे, दीधो कुंजी हेठ ॥ ध० ॥ ८ ॥ थाये लं
 पट लाखची रे, घटती जाये ज्योत ॥ ध० ॥ जीत
 न थायेतेहनी रे, जिम रायचंद प्रद्योत ॥ ध० ॥ ९ ॥
 परनारी विषवेलमी रे, विषफल जोग संयोग ॥
 ॥ ध० ॥ आदर करी जे आदरे रे, तेहने जवजय
 शोग ॥ ध० ॥ १० ॥ बाहाला महरि विनति रे, सा
 ची करीने जाण ॥ ध० ॥ कहे जिन हरष तुमे सां

जलो रे, हियडे आणि मुज वाण ॥ ध० ॥ ११ ॥
इति परस्त्री वर्जान स्वाध्याय ॥

॥ अथ जीवने समता विषे शिखामण ॥

॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत तजी चित्त
धारीयें, हो वालमजी वचन तणो अति उंफो मरम
विचारीयें ॥ ए आंकणी ॥ हारे तुमें कुमतिके घेर
जावो ठो, तुमें कुलमां खोट लगावोठो, धिक्क ऐठ ज
गतनी खावो ठो ॥ हो० ॥ १ ॥ अमृत त्यागी विष पीउंठो,
कुमतिनो मारग लियोठो, ए तो काज अयुक्त की
योठो ॥ हो० ॥ २ ॥ ए तो मोह रायकी चेटी ठे,
शीव संपत्ति एथी ठेटी ठे, एतो साकर गलती पे
टी ठे ॥ हो० ॥ ३ ॥ एक शंका मेरे मन आवी ठे,
किण विध ए चित्त जावी ठे, एतो दाहण जगमां
चावी ठे ॥ हो० ॥ ४ ॥ सह रुद्धि तमारी खाए
ठे, करी कामण चित्त जरमाए ठे, तुम पुण्ययोगे
ए पाए ठे ॥ हो० ॥ ५ ॥ मत आंबल काज बाउल
बोवो, अनुपम जव विरथा नवि खोवो, अब खोल
नयण प्रगटी जोवो ॥ हो० ॥ ६ ॥ इण विध समता
बहु समजाए, गुण अवगुण कंइ सहु दरशाए, सुणी
चिदानंद निज घर आये ॥ हो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ दान, शील, तप, जाव स्वाध्याय ॥

॥ श्री महावीरे जांखीया, दानना चार प्रकार रे
॥ दान शियल तप जावना, सखी पंचम गति दा

तार रे ॥ श्री महा० ॥ १ ॥ दानें दोलत पामीयें
 सखी दाने क्रोड कळ्याणरे ॥ दान सुपात्र प्रजाव
 थी, सखी कयवन्नो शालिज्जड जाणरे ॥ श्री महा०
 ॥ २ ॥ शियळे संकट सवि टळे, सखी शिलें वंदित
 सिद्धरे ॥ शियलें सुर सेवा करे, सखी सोल सति
 परसिद्धरे ॥ श्री महा० ॥ ३ ॥ तप तपो जवि जाव
 शुं, तपें निर्मल तन्नरे ॥ वर्षोपवासी ऋषज्जजी, सखी
 धन्नादिक धन्य धन्यरे ॥ श्री महा० ॥ ४ ॥ जरता
 दिक शुज जावथी, सखी पाम्यो पंचम ठाम रे ॥
 उदयरल मुनि तेहने, सखी नित्य किरे प्रणामरे ॥
 श्री महावीरे ॥ ५ ॥

॥ सामायिक लाज सद्याय ॥

॥ कर पक्कमणुं जावशुं, दोय घमी शुज ध्यान
 ॥ लालरे ॥ परजव जातां जीवने, संबल साचूं जा
 ण ॥ लालरे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्री वीर मुख इम उ
 चरे, श्रेणिक राय प्रत्यें जाण ॥ लालरे ॥ लाख खांमी
 सोना तणी, दिचे दिन प्रत्यें दान ॥ लालरे ॥ क० ॥
 ॥ २ ॥ लाख वरस लगे ते वढी, एम दीये डव्य
 अपार ॥ ला० ॥ एक सामायिकने तोळें, नावे तेह
 छगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ सामायिक चउविस
 लो, देव वंदन दोयवार ॥ ला० ॥ व्रत संजारो रे
 आपणां, ते जव कर्म निवार ॥ ला० ॥ कर० ॥ ४ ॥
 कर काउस्सगग शुज ध्यानथी, पचस्काण सूधुं वि

चार ॥ ला० ॥ दोय सद्यायें ते वल्ली, टाखो टाखो
अतिचार ॥ ला० ॥ कर ॥ ५ ॥ श्री सामायिक
प्रतापथी, लहियें अमर विमान ॥ लाखरे ॥ धर्म
सिंह मुनि एम ज्ञणे, ए ठे मुकित निदान ॥ ला
खरे ॥ कर० ॥ ६ ॥

॥ अथ ठींक विचार सद्याय ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ ठींक शुकननो कहुं विचार,
सुगुरु समीप सूण्यो में सार ॥ आगलमां जो ठींकज
होय, अशुच तणी जाणे जे, कोय ॥ १ ॥ पहेला शुकन
हुवां शुच घणां ॥ ठींकज हुआ निष्फल तेतणां पठीं
कज हुआ पठी जे जाण, शुकन हुआं ते करो प्रमा
ण ॥ २ ॥ गावी ठींक होय अर्ध फली कहे, जमणी
ठींक बुरी सउ कहे ॥ पूठे ठींक सुखदायक सही,
घणी ठींक ते निःफल कही ॥ ३ ॥ हांसे जय उपा
धीयें करी, हठ घणो मनमांहे धरी ॥ एक ठींक ते
निःफल जाण, कुतर ठींक तो निःखर आण ॥ ४ ॥
मंजार ठींक ते मरणज करे, इसी ठींक कष्टकारी
सरे, ॥ वस्तु वेचतां ठींकज होय, आण्युं करीयाणुं
मोघुं होय ॥ ५ ॥ वस्तु खेतां ठींकज होय, बमणो
लाज सधलानो जोय ॥ गइ वस्तु जो जोवा जाय,
ठींक होय तो लाज न थाय ॥ ६ ॥ नवां वस्त्र वल्ली
पेहेरतां, ठींक होये आगल आण ठतां ॥ चोजन
होम पूजानुं काम, मंगलीक जेधर्म सुगाम ॥ ७ ॥

काम एट्छां कीधानी अंत, वल्ली क्रिया करावे खंत
 ॥ रति स्नान करीने रहे, ठीक होय तो पुत्रज लहे
 ॥ ७ ॥ ऋतुवतीने दीधे दान, पढी होवे पुत्र निदा
 न ॥ वैरी जीती जाशुं जोये, ठीके वैरी सब लो हो
 य ॥ ८ ॥ रोगी काज वैद्य तेरवा, जातां ठीके जो
 नव नवा ॥ ते रोगीने मृत्यु जाणीये, काम विन
 वैद्ये नाणीये ॥ १० ॥ वैद्य रोगीने घरे आवतां, ठी
 क होये औषध आपतां ॥ रोगी तणो रोग ते समे,
 आहार लेते जमवुं गमे ॥ ११ ॥ व्यापारे लीधे व्या
 पार, ठीक होय तो वृद्धि अपार ॥ लेखुं शुरू दीधुं
 रायने, ठीक फोक थाये तेहनें ॥ १२ ॥ पाणीपीतां अथ
 संवाद, ठीक दृष्टि दोष अनिवाद नवे घरे वसवा
 आवीयें, ठीक होये तो उचालीयें ॥ १३ ॥ व्याजे
 द्रव्य केहने आपतां, वल्ली पृथ्वीमां धन दाटतां ॥
 कर्षण जोवा जातां वली, वृष्टि होय पुहवी मन रु
 ली ॥ १४ ॥ ठीक शुकन नर जाणे जेह, पग पग
 संपद पामे तेह ॥ ठीक विचार जाणे जो कोइ, रु
 द्धि वृद्धि कळ्याणक होइ ॥ १५ ॥ इति ठीक विचारा ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशक सव्वाय ॥

॥ हक मरनां हक जाना यारो, मत को करो गु
 माना ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उढण माटी, पेंरण माटी,
 माटीका सराना ॥ वसतीमेंसें बहार निकाला, जंग
 ल किया ठिकाना ॥ २ ॥ हाथी चढते घोडे च

रुते, उर आगें निशाना ॥ नीली पीली बेरख चल
ती, उत्तर किया पयाना ॥ ह० ॥ १ ॥ नरपति हो
के तखतपर बेठे, जरिया ज़ारी खजाना ॥ सांज स
वारे मुजरा लेते, उपर हाथ बेकाना ॥ ह० ॥ ३ ॥
पोथी पढ पढ हिंडु जूले, मुसलमान कुराना ॥
रुपचंद कहे अरे जाइ संतो, हरदम प्रभु गुण
गाना ॥ ह० ॥ ४ ॥

॥ अथ जाव स्वाध्याय ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन महारो ॥ ए देशी ॥

॥ रे जवि जाव हृदय धरो, जे ठे धर्मनो धोरी
एकल मल्ल अखंरु जे, कापे कर्मनी दोरी ॥ रे
जवि० ॥ १ ॥ दान शियल तप त्रण ए, पातक मल
धोवे ॥ जाव जो चोथो नवि मले, तो ते निष्फल
होवे ॥ रे जवि० ॥ २ ॥ वेद पुराण सिद्धांतमां, षट्
दर्शन जांखे ॥ जाव विना जव संतति, परतां को
ण राखे ॥ रे जवि० ॥ ३ ॥ तारक रुप ए विश्वमां,
ऊंपे जग जाण ॥ जरतादिक शुज जावथी, पाम्या
पद निर्वाण ॥ रे जवि० ॥ ४ ॥ औषध आय उपाय
जे, मंत्र यंत्रने मूली, जावे सिद्ध होवे सदा, जाव
विण सहु घूली ॥ रे ॥ जवि० ॥ ५ ॥ उदय रत्न क
हे जावथी, कोण केल नर तरिया ॥ शोधी जोजो
सूत्रमां सज्जन गुण दरिया ॥ रे जवि० ॥ ६ ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनो सव्वाय ॥

॥ श्रीसीमंध साहेव आगे ॥ ए देशी ॥ अरि
हंत पहेले थानक गणीये, बीजे पद सिद्धाणं ॥ त्री
जे पवयण आयरिय चोथे, पांचमे पद थे राणं रे
॥ जविया ॥ वीश थानक तप कीजें ॥ ओखी वीश
करीजें रे ॥ ज० ॥ गणणुं एह गणीजें रे ॥ ज० ॥
जिम जिनपद पामीजें रे ॥ ज० ॥ नर जव लाहो
लीजें रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उववाए ठे
सवसाहूणं, सातमे आठमे नाण नवमे दंसण दस
मे विणयस्स, चारित्र अगियारमे जाण रे ॥ ज० ॥
॥ वा० ॥ २ ॥ बारमे बंजवय धारीणं, तेरस मे कि
रियाणं ॥ चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोलसमें न
मो जीणाणं रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्त
रमे जपीजें, अठारसमे नाणस्स ॥ उगणीशमे नमो
सुयस्स संजारो, वीशमे नमो तित्थस्स रे ॥ ज० ॥
॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देव वंदन, गणणुं
दोय हजार ॥ संध विनय बुध शिष्य सुदर्शन, जंपे
एह विचारो रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ शीयल विषे शीखामणनो सव्वाय ॥

॥ ढाल ॥ एतो नारी रे, बारी ठे छुर्गति तणी ॥
ठांरु संगत रे मूरख तुं परखी तणी ॥ जीव जोला
रे, कोला तेहशुं मंम करे ॥ शीख मानी रे, ठानी
वात तुं परिहरे ॥ १ ॥ छुटक ॥ जो वात करीश

परनारी साथें, लोक सहु हेरे अठे ॥ राय रांक थ
इ ने रदया रानें, सुखें नहीं बेसे पठे ॥ ए मदनमा
ती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहेलुं तो
वढी सुख देखाडे पठे, पठाडे जामिनी ॥१॥ ढाल कर
पगना रे, नयण वयण चाला करी ॥ बोलावी रे, नर
लेइ धाइ सुंदरी ॥ जोलावी रे, हाव जाव देखाडशे ॥
पगें लागी रे, मरकलडे पठे पाडशे ॥३॥ त्रुटक ॥ ए
पास पाडे धन गमाडे, मान खंडे ले लठी ॥ बोलं
ती रुडी चित्त कूडी, कूरु कपटनी कोथली ॥ ए नर
अमूलक वस्य पडिउं, पठे नपोसायें पायको दीवा
नरुंडे मानखंमे मारसहे पठे रायको ॥ ४ ॥ ढाल ॥
ठांमी लेशे रे, वेझ्याना लंपट नरा ॥ सहु सधवा
रे, विधवा दासी दूरें करा जा नाशी रे, रुप देखी
जीव एह तणुं ॥ उजो रही रे, एह साहामुं, मम
जो घणुं ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ घणुं म जोइश एह साहा
मुं, कुलछी दीठे नवि गमे ॥ जीम शूनी पूतें श्वान
हींडे, तिम परनारि पूतें कां जमे ॥ जिम बिलामो
दूध देखे, मोलें डांग न देख ए, परनारि वेंधो पुरुष
पापी किसो जय नवि, लेख ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फू
ल वेणी रे, शिर सिंदूर सेंथोज्ज्यो ॥ ते देखी रे,
फट मूरख मन कां कज्यो ॥ देखी टीलां रे, ढीलां
इंद्रिय करी गह गह्यो ॥ शिर राखनी रे, आंखें दे
इ तुं कां रह्यो ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ कां रह्यो मूरख आं

खें देइ, शणगार नार एणें धर्या ॥ ए उल्ली जीहा
 आखें पीहा, कान कूपा मल जस्या ॥ नारी अग्नि
 पुरुष माखण, बोलतां बीगरे ॥ स्त्री देहमां शुं सार
 दीतो, मूढ महिआंकां करे ॥ ७ ॥ ढाल ॥ इंद्रिय
 बाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापिउं ॥ माने नरगह रे,
 सरग करी विष व्यापीउं ॥ कां जूलो रे, शणगार
 देखी एहना ॥ जाणी प्राणी रे, ए ठे दुःखनी अंग
 ना ॥ ए॥ त्रुटक॥ अंगना तुं ठोमी जो करे, तो जश की
 र्ति सघसे लहे ॥ कुशीलनुं जो नाम लियेको, पर
 लोक दुरगति दुखसहे, विजय नद बोलै जे न
 मोले, शीयल थकीजे नरवरा ॥ तस पायें लागुं सेवा
 मागुं, जे जगमांहे जयकरा ॥ १० ॥ इति ॥ शील सदाय ॥

॥ अथ प्रजातें वाहाणलां गावानो सदाय ॥

॥ मिथ्यामति रे रजनी असरालके ॥ वाहाणलां
 जलें वायारे ॥ जीहां उंचे रे प्राणी बहुकाल के ॥
 वहाणां ॥ नवि जाणे रे जीहां यमनी फाल के ॥
 ॥ वा० ॥ तिहां पामे रे पग पग जंजाल के ॥ वा०
 ॥ १ ॥ जीहां ऊरुपे रे क्रोध दवनी जाल के ॥ वा० ॥
 मानरुपी रे अजगर विकराल के ॥ वा० ॥ डंसे मा
 या रे सापणी रोषाल के ॥ वा० ॥ जीहां चावो रे
 छोज रुप चंमाल के ॥ वा० ॥ २ ॥ रागादिक रे राक्ष
 स महावृंद के ॥ वा० ॥ आठ कर्मना रे जीहां मांड्या
 फंद के ॥ वा० ॥ जीहां देखे रे दुरगति दुःख दंद के

॥ वा० ॥ नवी दीसे रे जीहां ज्ञान दिणंद के ॥
 ॥ वा० ॥ ३ ॥ धसमसतां रे जीहां विषयनी जाख
 के ॥ वा० ॥ लीये लूटी रे नगणे पखिवाल के ॥
 ॥ वा० ॥ अटवी अनंती रे जीहां विकट उज्जार के
 ॥ वा० ॥ चाले नही रे जीहां व्रतनी वाड के ॥
 ॥ वा० ॥ ४ ॥ निरखंतारे श्रीजिनमुख नूर के ॥
 ॥ वा० ॥ हवे उग्यो रे महासमकेत सूर के ॥ वा० ॥
 दुखदायी रे दोषि गया दूर के ॥ वा० ॥ वली प्रगट्या
 रे पुण्यतणा अंकूर के ॥ वा० ॥ ५ ॥ सुता जागो रे
 देसविरतिना कंत के ॥ वा० ॥ वली जागो रे सर्व
 विरति गुणवंत के ॥ वा० ॥ तमे जेटो रे ज्ञावें जगवंत
 के ॥ वा० ॥ पक्किमणां रे करो पुण्यवंत के ॥ वा० ॥ ६ ॥
 तमे लेजो रे देवगुरुनु नाम के ॥ वा० ॥ वली करजो
 रे तमे धर्मनां काम के ॥ वा० ॥ गुरुजन नारे गावो
 गुण ग्रामको ॥ वा० ॥ प्रेम धरीनें रे करो पूज्य प्रणा
 म के ॥ वा० ॥ ७ ॥ तमे करजो रे दशविध पञ्चखाण के
 ॥ वा० ॥ तुमे सुणजो रे श्रीसूत्रवखाण के ॥ वा० ॥
 आराधो रे श्री जिननी आण के ॥ वा० ॥ जिम
 पामो रे शिवपुर संठाणके ॥ वा० ॥ ८ ॥ सांजलीने
 रे श्रीमुखनी वाण के ॥ वा० ॥ तमे करजो रे सही
 सफल विहाण के ॥ वा० ॥ वदे वाचक रे उदयर
 ल सुजाण के ॥ वा० ॥ एह जणतां रे लहीये कोड
 कट्याण के ॥ वा० ॥ ९ ॥ इति ॥ बाहला ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥

कोउ काज न आवे रे दुनियांके लोको, कोउ
काज न आवे ॥ जूठी बातका आनि जरोसा, पीठे
सें पस्तावे रे ॥ दु० ॥ १ ॥ मतलबकी सब म
खि लोकाइ, बहोतहिं रंग बानावे रे ॥ दु० ॥ २ ॥
अपना अर्थ न देखे सो तो, पलकमे पीठ देखावे
रे ॥ दु० ॥ ३ ॥ बाजीगरकी बाजी जेसा, अजब
दिमाक देखावे रे ॥ दु० ॥ ४ ॥ देखो दुनियां सकल
खीली है, युंहीं मन ललचावे रे ॥ दु० ॥ ५ ॥ जि
नें जान्या तिने आप पिठान्या, बे खबरी दुःख पा
वे रे ॥ दु० ॥ ६ ॥ हंस सयाने एक सांइशुं ठर,
काहेकुं चित्त न लावे रे ॥ दु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चैतन्य शिक्षाज्ञास प्रारंभ ॥

॥ आप विचारजो आतमा, ज्रातें शुं जूले; अ
थिर पदारथ उपरें, फोगट शुं फूले ॥ आ० ॥ १ ॥
घटमांहे ठे घरधणी, मेलों मननो जामो ॥ बोले
ते बीजो नथी, जोने धरी तामो ॥ आ० ॥ २ ॥ पा
मीश तुं पासेंथकी, बाहेर शुं खोले ॥ बेसे कां तुं
बुरुवा, मायानी उलें ॥ आ० ॥ ३ ॥ प्रीठा विण
केम पामीये, सुण मूरख प्राणी ॥ पीवाये किम पश
लीयें, जांऊवानां पाणी ॥ आ० ॥ ४ ॥ आप स्वरूप
न उलखे, मायामांहे जूले ॥ गरथ पोतानी गांठनो,
व्याजमां जिम डूले ॥ आ० ॥ ५ ॥ जोतां नाम न

जाणिये, नहिं रुप न रेख ॥ जगमांहे ते केम जडे,
 अरुपी अखेख ॥ आ० ॥ ६ ॥ अंध तणी पेरे आ
 फले, सघला, संसारी ॥ अंतरपट आमो रहे, कोण
 जूवे विचारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पहेले पातुं करी, पठी
 जोने निहाळी ॥ नजरें देखीश नाथने, तेहशुं ले
 ताळी ॥ आ० ॥ ८ ॥ बंधण हारो को नथी, नथी ठोका
 वण हारो ॥ प्रवृत्तें वांधियें पोतें, निवृत्तें निस्तारो ॥
 आ० ॥ ९ ॥ जेदाजेद बुद्ध करी, जासे ठे अनेक ॥ जेद
 तजीने जो जजे, तो दीसे एक ॥ आ० ॥ १० ॥ काळे
 धोळुं जेळीये, तो ते थाये बेरंगू बेरंगें बुडे सहि, मन
 न रहे चंगु ॥ आ० ॥ ११ ॥ मन मरें नहिं जिहां लगे,
 घूमे मद घेख्यो ॥ तब लगे जग जूढ्युं जमे, न मटे
 जव फेरो ॥ आ० ॥ १२ ॥ उंध तणे जोरें करी, शुं
 मोह्यो सुहणे ॥ अलगी मेळी उंधने, खोळी जोने
 खूणे ॥ आ० ॥ १३ ॥ त्यारे जगमां तुज विना, बी
 जो नवी दीसे ॥ जिन्न जाव मटशे तदा, सेहेजे
 सुजगीशें ॥ आ० ॥ १४ ॥ मारुं तारुं नवि करे, स
 हुथी रहे न्यारो ॥ इणेएहिनाणे उंढीख्यो, प्रजु
 तेहने प्यारो ॥ आ० ॥ १५ ॥ सिद्धदिशायें सिद्धने,
 मळीयें एकांति ॥ उदयरत्न कहे आतमा, तो जांगे
 ज्ञांति ॥ आ० ॥ १६ ॥ इति चैतन्यशिक्षाज्ञास संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सव्वाय ॥ राम आशावरी ॥

॥ किसीकुं सब दिन सरखे न होय ॥ प्रहउग

त अस्तंगत दिनकर, दिनमें अवस्था दोय ॥ कि०
 ॥ १ ॥ हरि बलिजद्र पांरुव नल राजा, रहे खट
 खंट रिद्धि खोय ॥ चंमाल के घर पाणी आण्युं,
 राजा हरिचंद जोय ॥ कि० ॥ २ ॥ गर्व म कर तुं
 मूढ गमारा, चरुत परुत सब कोय ॥ समय सुंदर
 कहे इतर परत सुख, साचो जिनधर्म सोय ॥ कि०
 ॥ ३ ॥ इति वैराग्य सद्याय ॥

॥ अथ निद्रानी सद्याय ॥

॥ बेटी मोह नरिंदकी, निद्रा नामें विख्यात बे
 ॥ धर्म छेषणि पापणी, न गमे धर्मनी वात बे ॥
 निंद न लहे जे सज्जनां, सज्जनां बे दुःखचंजना बे
 ॥ टेक ॥ नि० ॥ १ ॥ घेरे सघला जीवने, जिहां
 जमनो पास बे ॥ जा घमि निंद न पाइयें, ता घ
 मि प्रभुको वास बे ॥ नि० ॥ २ ॥ आलस उमराव
 एहनो, जाखिम जोरु जुवान बे ॥ दूत बगासूं जा
 णजो, चाखे आगेतान बे ॥ नि० ॥ ३ ॥ जाति पां
 च ठे जेहनी पसरि विश्व प्रमाण बे ॥ केवली विना
 एक जेहनी, कोइ न लोपेआणवे ॥ करमे न आवे
 ठूकडी धर्मे पांमै चंगाणवे वाजां बाजे जिहां उंघनां,
 तिहां होय सुखनी हाण बे ॥ नि० ॥ ४ ॥ उदय रत्न कहे
 उंघने, जीत्यानो एह उपाय बे ॥ पहेला आहार जो
 जीतिये, तो निद्रावश आय बे ॥ ६ ॥ नि० ॥ इति ॥

॥ અથ વૈરાગ્ય સદ્વાય ॥

॥ પ્રાણી કાયા માયા કારમી, કૂડો છે કુટુંબ
પરિવારે ॥ જીવનલા ॥ સમરણ કીજેં સિદ્ધનું ॥ મા
હરું માહરું મ કર રે માનવી, પંથ વહેવું પરલે પાર રે
જીવનલા ॥ સમ૦ ॥ ૧ ॥ પ્રાણી સદુને વલ્લાવે સાંક
લ્યા. મલિયા છે મોહને સંબંધ રે જીવનલા ॥ પ્રાણી
આયુ ક્યેં અલગાં થયાં, ધીઠો એવો સંસારી ધંધ
રે જી૦ ॥ સમ૦ ॥ ૨ ॥ પ્રાણી કાષ્ટ પરેં રે કાયા
બલે, વલી કેશ બલે જેમ ઘાસ રે ॥ જી૦ ॥ પ્રાણી
માનવી મર્કટ વૈરાગીયા, વલી પહે માયા વિશ્વાસ
રે જી૦ ॥ ૩ ॥ પ્રાણી પનાડુ ડહે જીવ ડપરેં, દોરી
પવન બલે લેઈ જાય રે જી૦ ॥ પ્રાણી ટુટી દોરી
સંધાય છે, આઝઝુ ટુટું ન સંધાય રે જી૦ ॥ સમ૦ ॥
॥ ૪ ॥ પ્રાણી કાચે કુંજે પાણી કેમ રહે, હંસ ડમી
જાય કાય રે જી૦ ॥ પ્રાણી આશા અતિઘણી આદ
રે, થાવા વાલો તેહિજ યાયરે જી૦ ॥ સમ૦ ॥ ૫ ॥
પ્રાણી જેને ઘરે નોવત ગરુગહે, ગાવે વલી ચટ રા
ગ રે જી૦ ॥ પ્રાણી ગોરવેં તેહને ધૂમતા, શૂન્યથયે૦
વલી ડહે કાગ રે જી૦ ॥ સમ૦ ॥ ૬ ॥ પ્રાણી એમ
સંસાર અસાર છે, સારમાં શ્રીજિનધર્મ સાર રે જી
પ્રાણી શાંતિ સમર સમતા ઘરી, ચાર ત્યજી વલી
આદરો ચારરે જી૦ ॥ સમ૦ ॥ ૭ ॥ પ્રાણી પાંચે ત
જો રે પાંચે જજો, ત્રણ જીપો ત્રણ ગુણધાર જીરે ॥

પ્રાણી રચણી જોજન પરિહરો, સાત વ્યસન તજો
સુવિચાર રે જી૦ ॥ સમ૦ ॥ ૮ ॥ પ્રાણી સમતા ક
રો ઠ કાયાની, સાંજલો સદ્ગુરુની વાણ રે ॥ જી૦ ॥
પ્રાણી સાચી શીખામણ એહ છે, એમ કહે છે મુનિ
કહ્યાણ રે જી૦ ॥ સમ૦ ॥ ૯ ॥ ઇતિ ॥

॥ અથ સાર બોલની સદ્વાય લિખ્યતે ॥

॥ સરસતી સામિની પય પ્રણમેવ, સદ્ગુરુનામ
સદા સમરેવ ॥ બોલિશ એણિ પરે આચાર, જોડ લે
જો જાણ વિચાર ॥ ૧ ॥ પંક્તિ તે જે નાણે ગર્વ,
જ્ઞાની તે જે જાણે સર્વ ॥ તપસ્વી તે જે નાણે ક્રોધ,
કર્મ આઠ જીતે તે જોધ ॥ ૨ ॥ ઉત્તમ તે જે બોલે ન્યાય,
ધર્મી તે જે મન નિરમાય ॥ ઠાકુર તે જે પાલે વાચ,
સદ્ગુરુ તે જે જાંચે સાચ ॥ ૩ ॥ ગિરુડ તે જે ગુણ
આગલો, સ્ત્રી પરિહાર કરે તેજલો ॥ મેલોતેજે નિંદા
કરે, પાપી તે હિંસા આચરે ॥ ૪ ॥ મૂર્તિ તે જે જિ
નવરતણી, કીર્તિ તે જે વીજે સુણી લલિધ તે ગૌતમ
ગણધાર, બુદ્ધિશ્રતિકો અજય કુમાર ॥ ૫ ॥ શ્રાવક
તે જે લહે નવતત્ત્વ, કાયર તે જે મૂંકે સત્ત્વ ॥
મંત્ર ચરો તે શ્રીનવકાર, દેવ ચરો જે મુક્તિ દાતા
ર ॥ ૬ ॥ પદવી તે તીર્થકર તણી, મતિ તે જે ઉપ
જે આપણી સમકિત તે જે સાચું ગમેં, મિથ્યામતિ
તે જૂલો જમે ॥ ૭ ॥ મોટો જે જાણે પરપીડ, ધનવં
તો જે જાંગે જીડ ॥ મનવશ આણે તે બલવંત, આ

लसथी अलगो पुण्यवंत ॥ ८ ॥ कामी नर ते कही
 यें अंध, मोहजाल ते मोटो बंध ॥ दारीझी जे धर्म
 हीन, दुर्गतिमांहे रुखे ते दीन ए ॥ आगम ते ज्यां
 बोली दया, मुनिवर ते जे पाळे क्रिया ॥ संतोषी ते
 सुखिया थया, दुःखीया ते जे लोत्रे ग्रह्या ॥ १० ॥
 नारी ते जे होये सती, दर्शन ते उघो मुहुपत्ति
 ॥ राग छेश टाळे ते यति, सूधू जाणे ते जिनमती
 ॥ ११ ॥ काया ते जे शीलें पवित्र, मायारहित होए
 ते मित्र ॥ वृद्धपणुं पाळे ते पुत्र, धर्म हाण पाडे ते
 शत्रु ॥ १२ ॥ वैरागी ते विरमे राग, तारु ते जवतरे
 अथाग ॥ रौरव नरकतणो ए जाग, ठाग हणीने
 मागे त्याग ॥ १३ ॥ देहमांहे ते सारी जीह, धर्म
 थाय ते लेखे दीह ॥ रसमांही उपशम रस लीह,
 थूलीजड मुनिवरमां सिंह ॥ १४ ॥ साचु ते जे जि
 ननुं नाम, जिननु देरु ज्यां ते गाम ॥ न्यायवंत क
 हियें ते राम, योगी ते जे जीते काम ॥ १५ ॥ एह
 बोल बोल्या में खरा, सार नथी एथी उपरा ॥ कहे
 पंक्ति लक्ष्मी कल्लोल, धर्म रंग मन धरजो चोख ॥
 ॥ १६ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ सामायिकना बत्रीश दोषनी सद्याय ॥

॥ चोपाइ ॥ शुज गुरु चरणें नामी शीश सामा
 यिकना दोष बत्रीश ॥ कहिशुं त्यां मनना दश दो
 ष, दुश्मन देखी धारतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक

अविवेकें करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन उधे
 ग वंठे यश घणो, न करे विनय बडेरातणो ॥ १ ॥
 जय आणे चिंते व्यापार, फल संशयनी आणुं सार
 ॥ हवे वचनना दोष विचार, कुवचन बोले करे
 टुंकार ॥ २ ॥ ले कुंची जा घर उधार, मुख लवरी
 करतो बढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह
 करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अ
 पार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरां दूषण
 बार, चपलासन जोवे दिश चार ॥ ५ ॥ सावध्य
 काम करे संवात, आलस मोडे उंचे हाथ ॥ पग
 लंबे बेसे श्वनीत, उठिंगन द्ये थांजो जींत ॥ ६ ॥
 मेल उतारे खरज खणाय, पग उपर चढावे पाय ॥
 अति उघाडुं मेळे अंग, ढांके तेम वली अंग उपंग
 ॥ ७ ॥ निद्रायें रस फल निर्गमें, करहा कंटक तरु
 ए जमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक कर
 जो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली,
 केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुजवीर वचन पा
 लती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ अश्मंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अश्मंता मुनिवरजूकी, करणी की बद्धि
 हारी वे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन
 चित धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्री
 देवी नंदन, पोलासपुर श्वतारी वे ॥ अंग अग्यार

पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥
 ॥ श्री० ॥ १ ॥ तप गुण रयण संवत्सर आदिक,
 करके काय उद्धारी वे ॥ प्रभु आदेशें विपुलाचल
 पर, करी अणसण अति जारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर कर्म कलंक
 निवारी वे ॥ अढारसें अरुताले त्रिहि गि
 रि, कीनी थापना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक
 अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसार्यें सुविचारी वे ॥ शिष्य
 दामा कल्याण हरख धर, गुण गावे जयकारी ते ॥
 ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति अश्मंता मुनिनो सद्याय ॥

॥ अथ समकेतनी चोपाइ ॥

॥ धुर प्रणमुं जिनवर चोवीश, सविगणधरने
 नामुं शीश ॥ तेहनां वयण सुणे जे कान, मन रा
 खे समकितने ध्यान ॥ १ ॥ साचो देव एक वीतरा
 ग, धर्म तणो जेणें दाख्यो माग ॥ ते जिनवरनी
 पाहुं आण, जे होये साचा सुगुरु सुजाण ॥ २ ॥
 पंच महाव्रत मनमां धरे, राग द्वेष पेहेलुं परिहरे ॥
 चारित्र पाळेटाळे दोष, दीये आहार थोडे संतोष ॥ ३ ॥
 दोषमांहे जे आधाकर्म, टाळे ते त्रोडे आठ कर्म ॥
 आधाकर्म करे नर नार, ते पण घणुंए रुळे संसार
 ॥ ४ ॥ मूकी देह तणा सुखवास, सहे परीसह बा
 रे मास ॥ तपे करिने जेणें जस लाध, वंदनिक ते
 त्रिभुवन साध ॥ ५ ॥ एक संयमने बीजी दामा,

शत्रु मित्र जेहने बेहु समा ॥ दृष्टिराग तरी उतरी
 ते जाशे जव सायर तरी ॥ ६ ॥ एकआपणुं करी
 मन ठाम, जणे गुणे सिद्धांत तमाम ॥ सदूरुनो उपदेश
 आचार, जोइ समजो हैये विचार ॥ ७ ॥ एकपहेरे
 मुनिवरनो वेश, पण साचो न दीये उपदेश ॥ जेह
 उत्थापे जिनवर वयण, तेहने किहां हियानां नय
 ण ॥ ८ ॥ घर मूकीने थया माहातमा, ममता जइ
 लागा आतमा ॥ मारुं मारुं एम कहे घणुं, तेह मू
 रख वदनता पणुं ॥ ९ ॥ एक त्यागी दीसे ठे इस्या,
 लोचें शिष्य करे आण कश्या ॥ पंच महाव्रत कहे, उचरे,
 उपशम रस ते कहो किम गरे ॥ १० ॥ आधाकर्मी
 वहोरे घणो धरम विगोवे जिन वरतणो यंत्र
 तंत्र मूली करी करी, चूरण आपे घर घर फरी
 ॥ ११ ॥ कुगुरु तणा जाणी अहि नाण, सेवा
 न करे जे होये जाण ॥ जिनवाणी सांजलीयें
 इसी, सोनुं गुरु बे लीजें कसी ॥ १२ ॥ सोनार्थी होय
 एकज वहाण कूगुरुकरे जव जवनीहाण, सोने घाठा
 पण ते मळे, कुगुरु पसायें जव जव रुळे ॥ १३ ॥ स
 र्प रुसे हुए जवनो अंत, कुरुगु करे संसार अनंत
 ॥ एम जाणी वली लीजे साप, कुगुरु नमि नवि
 बोलियें आप ॥ १४ ॥ एक वहे जिनवरनी आण,
 वैर वहे तिहां एक अजाण ॥ एह आपणा नही
 गुरु एम, बोली लीये वदंतुं तेम ॥ १५ ॥ एक जणे

मारा गुरु देव, में करवी एहि जनी सेव ॥ पद
तणा स्वामीने मान, अवर पढ़ने दे अपमान ॥१६॥
एक सगा जाणी माहातमा, गुणपाखें तारे आतमा ॥
पात्र जणी पूजे तेहने, समकित केम ठे तेहने ॥
॥ १७ ॥ देखी परखी गुरु गुणवंत, श्रावकने मनसं
यमवंत ॥ एह आपणा नही इम जणे, दान मान
सघले अवगणे ॥ १८ ॥ एका ने गढनो अनुराग,
पण न लहे साचो जिनमाग ॥ वीर वचन क्षेष्टने
पाधरुं, कुगुरु सुगुरु जोइ आदरुं ॥ १९ ॥ जेहने
आगमनुं बहु मान, तेहना उघडे एणे कान ॥
ए साधारण गुरुनी वात, जश्ने जोस्ये मुक्ति मात ॥
॥ २० ॥ हृयय नयन तम जुठ सुजाण, ठंमो कुगुरु
ए जिन आण ॥ सदगुरु तणा चरण आचरो, जेम
जवसायर लीलायें तरो ॥ २१ ॥ जे जिन आण व
हे निशदीश, ते उपर जे नाणे रीश ॥ नवे तत्त्व
निरता सदहे, सूधूं समकित ठैते कहै ॥२२॥ एहबुसम
कित सूधूं जाण, धर्मकाजनु म करीश काण ॥
जिनवर पूजासजुगुरु जक्ति, जावें करवी आतम
सक्ति ॥ २३ ॥ पन्तिक्रमणुंने फासुं नीर, कीजें
धर्म कह्युं जे वीर ॥ धर्मे रुझि छिझि घर हूंत,
धर्मे संकट सवि जाजंत ॥२४॥ धर्मे सूर्य निरतो तपे,
धर्मे पाप करम सवि खपे ॥ धर्मे होये रुपनो योग,
धर्मपसायें संपत्ति जोग ॥२५॥ जणे गुणे ने बहु तप

करे, पण समकित सूधुनादरे ॥ समकित विण
 ते सहुए फोक, समकित आदर करवुं रोक ॥ २५ ॥
 समकित माय बाप संसार, समकित सुख संपत्तिनो
 सार ॥ समकित एह धर्मनु मूल, समकितथी सहु
 ए अनुकूल ॥ २७ ॥ समकित रुद्धि सिद्धि घर धणी
 समकित लगें होये सुर धणी ॥ समकित सीजे सघ
 लां काज, समकित लगें त्रिचुवननुं राज ॥ २८ ॥
 समकित सहितनुं सुणो प्रमाण, कृष्णरायनुं जुळ
 मंमाण ॥ तपविण श्रेणिक राजह धणी, लेशे पदवी
 अरिहंत तणी ॥ २९ ॥ समकित पालेजे नर नार,
 वली नआवे ते संसार ॥ एम जाणी समकित आ
 दरो, सिद्धि रमणी जेम लीला वरो ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ आत्मशिक्षा सचाय ॥ राग रामग्रीमा

सहेजानंदी देशी ॥

॥ आतमरामेंरे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय
 रे ॥ ताहारुं दीसे न कोय रे, सहु स्वारथी मढ्युं
 तोय रे, जन्म मरण करे लोयरे, पूछें सवि मली
 मली रोय रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि का
 रिमुं, कूको कुटुंब परि वार रे ॥ कोइ न करे तुज
 सार रे, धर्म विण नहीं कोइ आधार रे, जिणें पा
 मे जव पार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अनंत कळेवर मूकी
 यां, तें कीयां सगण अनंत रे ॥ जव उछेगें रे तुं

जन्म्यो तोही न आव्यो तुज अंत रे ॥ चेतो हृदय
मां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जोग अनंता तें जोग
व्या, देव मणुष गतिमांहे रे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे
जीवमो, हजी तुज वांढा ठे त्यांहिरे, आण संतोष
चित्तमांहि रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान करो रे आतम
तणुं, परवस्तुथी चित्त वारी रे ॥ अनादि संबंध
तुज को नहीं, शुद्ध निश्चें इम धारी रे इणविध नि
ज चित्त ठारी रे, मणिचंद्र आतम तारी रे॥आ०५
॥ अथ समय सुंदरजीकृत मायानी स्वाध्याय ॥

॥ माया कारमी रे, माया म करो चतुर सुजाण
॥ जा० ॥ ए आंकणी ॥ मायायें वाह्या जगत विलु
द्धा, दुखीया थाये अजाण ॥ मा० ॥ १ ॥ न्हाना
महोटा नरने माया, नारीने अधिकेरी ॥ बली वि
शेषें अतिघणी व्यापे, घरमाने जाजेरी ॥ मा० ॥ २ ॥
योगी जंगम यती संन्यासी नग्नथइ परवर्था ॥ उंधे
मस्तक अग्नि धखंती, मायाथी नवि मरिया ॥ मा० ॥
॥ ३ ॥ माया मेली करी बहु जेली लोत्रें लक्षण
जाय ॥ चोर रुं धरतीमां घाले, उपर विसहर
थाय ॥ मा० ॥ ४ ॥ माया कारण दुरदेशांतर, अ
टवी वनमां जाय, प्रवहण वेसीद्री पदि पोतर सायरमा
जंपाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ शिवभूति सरिखा सत्यवादी,
सत्यगोष कहावे ॥ रतन देखी मन तेहनुं चलीजं,
मरीने दुर्गति जावे ॥ मा० ॥ ६ ॥ लब्धिदत्त मा

यायें नकीयो, पकीयो समुद्र मजार ॥ मुख माख
णीउं थइने मरीयो, पकीयो नरक दु वार ॥ मा० ॥
७ ॥ इंडे तो सिंहासनथापी, संजूयें माया राखी ॥
नेमीसर तो माया मेली, मुगतीमां थया साखी ॥
मा०॥७॥ मन वचन कायायें माया, महेली वनमा
जाय ॥ धन्य धन्य तेह मुनि सर जेहना तीन
जवन गुणगाय ॥ मा० ॥ ए ॥ एतुं जाणीने जविप्रा
णी, माया मूको अलगी ॥ सम यसुंदर कहे सार ठे
जगमां, धर्म रंगशुं वलगी ॥ मा० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शीलविषे सचाय ॥

॥ रखेकोइ रमणी रागमां, प्राणी मुंजाउं ॥ अ
थिर ए बाला उपरे, थिरशाने थाउं ॥ १ ॥ एतो
अनरथनुं आश्रम ठे; कलेशनो ठे कंदो ॥ वैरोदधी
पूर वधारवा, आवो पूनमचंदो ॥ २० ॥ २ ॥ कुलटा
नारीने कारणे, केइ कुलवंता ॥ आचरण हीणा आ
चरे, वहालाशुं वेढंता ॥ २० ॥ ३ ॥ दुखनी दरी
ए सुंदरी, दुरगतीनी दाता ॥ आगमथी द्यो उल
खी, गुण एहना झाता ॥ २० ॥ ४ ॥ खांरु मीठी
करी लेखवे मलतां मूढप्राणी ॥ उदेवदे कहीयें पढे,
जिनमतीयें जाणी ॥ २० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मुनि दान विजयजी कृत कर्म उपर सज्जाय ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥
सुख दुःख सरज्या पामीयें रे, आपद संप्रद होय ॥

लीला देखी परतणी रे, रोष म धरजो कोय रे, ॥
 प्राणी मन नाणों विष वाद ॥ एतो कर्मतणा पर
 साद रे ॥ प्रा० म० ॥ १ ॥ फलने आहारे जीवीआ
 रे, बार वसर वन राम ॥ सीता रावण लइ गयो रे. कर्म
 तणां ए काम रे ॥ प्रा० ॥ १॥ नीर पाखें वन एकलो रे
 मरणपाम्यो मुकुंद ॥ नीच तणे घर जल बह्यो रे, शीसधरी
 हरिचंद रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ नखे दमयंति परिहरी रे, रात्रि सम
 य वन बाल ॥ नाम ठाम कुल गोपवी रे, नखे निर
 बाह्यो काल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ रूप आधिक जग जा
 णीयें रे, चक्री सनत कुमार ॥ वरस सातशें जोग,
 वी रे, वेदना सात प्रकार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ रुपें
 बली सुर सारिखा रे, पांडव पांच विचार ॥ ते वन
 वासैं रमवड्या रे, पाम्या दुःख संसार रे ॥ प्रा० ॥
 ॥ ६ ॥ सुरनर जस सेवा करे रे, त्रीजुवनपति वि
 ख्यात ॥ ते पण कर्मविटंबीया रे, तो माणस केइ
 मात रे, ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ दोष न दीजें केहने रे, क
 र्मविटंबण हार ॥ दान मुनि कहे जीवने रे, धर्म
 सदा सुखकार रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ इति कर्मनी स्वाध्याय ॥

॥ अथ सुमति विलाप सव्वाय प्रारंभ ॥

॥ परजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो मोहमहे
 राण ॥ बाह्यो महरो निजघरें नाबीयो, एणे परघर
 कीधां प्रयाण ॥ वा० ॥ इम कहे सुमती सुजाण ॥

वा० ॥ १ ॥ दांतपाडुरें डुती तणा, पाफोसणना लउं
 प्राण ॥ जेंणें महारो जीवन जोंलव्यो ॥ लइ ना
 ख्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥ माययें मद पाइ
 रे, वास्यो पोताने वास ॥ माहारोने वासो एणें टा
 लीयो, इणे मुज कीधी निरास ॥ वा० ॥ ३ ॥ गुण
 वंतना गुण गोपवी, निगुणाशुं मांडे गोठ ॥ आप
 स्वरूप न ओलखे, एतो पापनी चखवे पोठ ॥ वा० ॥
 ॥ ४ ॥ अपूज्य साथें धरे आसकी, एतो पूज्यना
 पूजे पाय ॥ परम महोदय पामशे ज्यारें आवशे
 आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ श्रीदादापास पसाउलें,
 मेंतों कुमतीनो पाम्यो कोट ॥ घरें आण्यो निज
 घरधणी, मेंतो शोकनी चूकवी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥
 उदयरतन वाचकवदे, पूजशे जे प्रभुना पाय ॥ ते
 परमपदें पधारशे, वली संपद लेशे सवाय ॥ वा० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथनो दशमो जव मेघरथ

राजानी सवाय प्रारंभः ॥

॥ दशमें जवेंश्रीशांतिजी, मेघरथ जीवडा राय
 रूढाराजा ॥ पोसह शालामां एकला, पोसह लीयो
 मन जाय ॥ रूढा राजा ॥ धन्य धन्य मेघरथ राय
 जी, जीवदया गुण खाण ॥ धर्मी राजा ॥ धन्य० ॥
 ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ इशानाधिप इंद्रजी, वखाण्यो
 मेघरथ राय ॥ रूढा राजा ॥ धर्मे चलाव्यो नवि च
 ले, महासुर देवता आय ॥ रूढा राजा ॥ धन्य० ॥ १॥

पारेवुंसींचाणा मुखें श्रवतरी, पनीयुं पारेवुं खोला
मांय ॥ रुमा राजा ॥ राख राख मुज राजवी, मुज
ने सींचाणो खाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥
सींचाणो कहे सुणो राजीया, ए ठे महारो आहार
॥ रुडा राजा ॥ मेघरथ कहे सुण पंखीया, हिंसाथी
नरक अवतार ॥ रुमा पंखी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ शरणे
आव्युं रे पारेवडुं, नहीं आपुं निरधार ॥ रुमा पंखी
॥ माटी मगावी तुजने देउं, तेहनं तुं कर आहार
॥ रुडा पंखी ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ माटी खपे मुज एह
नी, कां वली ताहरी देह ॥ रुडा राजा ॥ जीवदया
मेघरथ वसी, सत्य न मेले धर्मी तेह ॥ रुडा राजा
॥ धन्य० ॥ ६ ॥ काती लेइ पिंन कापीनें, ले मांस
तुं सींचाण ॥ रुमा पंखी ॥ त्राजुणे तोलावी मुजने
दीउं, ए पारेवा प्रमाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ ७ ॥
त्राजुउं मगावी मेघरथ रायजी, कापी कापी मुकेठे मंस
रुमा राजा ॥ देवमाया धारण समी, नावे एकण
अंश ॥ रुडा राजा ॥ धन० ॥ ८ ॥ जाइ सुत राणी
वलवले, हाथ जाली कहे तेह ॥ घेला राजा ॥ एक
पारेवाने कारणे, गुं कापोढो देह ॥ घेला राजा ॥
धन्य० ॥ ९ ॥ महाजन लोक वारे सहु, म करो
एवडी वात ॥ रुमा राजा मेघरथ कहे धर्म फल
जलां, जीवदया मुजधात ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥
॥ १० ॥ त्राजुयें बेठा राजवी, जे जावे ते खाय ॥

रुमा पंखी ॥ जीवथी पारेवो अधिको गण्यो, धन्य
 पिता तुज माय ॥ रुमा राजा धन्य० ॥ ११ ॥ चड
 ते परिणामे राजवी, सुर प्रगढ्यो तिहां आय ॥
 रुमा राजा ॥ खमावे बहुविधें करी, लली लली
 लागे ठे पाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥
 इंडे प्रशंसा ताहारी करी, तेहवो तुं ठो राय ॥ रु
 डा राजा ॥ मेघरढ काया साजी करी, सुर पोहोतो
 निज ठाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ संयम
 लीयो मेघरथ रायजी, लाख पूरवनुं आय ॥ रुमा
 राजा ॥ वीशस्थानक विधें सेवियां, तीर्थकर गोत्र
 बंधाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ इग्यारमे ज
 वें श्रीशांतिजी, पोहोता सर्वार्थसिद्ध ॥ रुमा राजा ॥
 तेत्रीस सागर आउखुं, सुख विलसे सुर रिद्ध ॥
 रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ एक पारेवा दयाशकी,
 बे पदवी पाम्या नरिंद ॥ रुडा राजा ॥ पांचमा च
 क्रवर्त्ति जाणियें, शोलमा शांतिजिणंद ॥ रुमा राजा
 ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ बारमे जवें श्रीशांतिजी, अचिरा
 कूखें अवतार ॥ रुडा राजा ॥ दीक्षाक्षेप्ते केवल व
 स्था, पहोता मुगति मोऊार ॥ रुडा राजा ॥ १७ ॥
 त्रीजेजवें शिवसुख लह्यो, पाम्या अनंतु ज्ञान ॥ रु
 मा राजा ॥ तीर्थकरपदवी लही, लाखवर्ष आयु
 जाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १८ ॥ दयाशकी नव
 निधि होवे, दया ये सुखनी खाण ॥ रुडा राजा ॥

जव अनंतनी ए सगी, दया ते माता जाण ॥ रुक्मा
राजा ॥ धन्य० ॥ १९ ॥ गजजवें शशलो राखियो,
मेघकुमार गुंण जाण रुडां राजा ॥ श्रेणिकराय सुत
सुख लह्यां, पोहोता अनुत्तर विमान ॥ रुक्मा राजा
॥ धन्य० ॥ २० ॥ एम जाणी दया पालजो, मनमांहे
करुणा आण ॥ रुक्मा राजा समयसुंदर एम वीनवे,
दयात्री सुख निरवाण ॥ रुक्म राजा ॥ धन्य० ॥ २१ ॥
॥ अथ श्री लब्धिविजयजी कृत पंदर तिथिनी पंदर
॥ सद्याय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमद्गोडी जगधणी, दायक शिवग
ति जेह ॥ अखिय विघन दूरें हरे, टाळे दुरित अ
वेह ॥ १ ॥ सुधादृष्टि होवे सदा, एहवी जेहनी दृ
ष्टि ॥ उरग तजी सुरपति कख्यो, गिरुठ गुणें गरिष्ट
॥ २ ॥ जावियपद पंकज सदा, हुं नित्य प्रणमुं तास
॥ सकल मनोरथ पूरवे, ते वीशमो जिनपाश ॥ ३ ॥
जावे प्रणमू जारती पूरे पूरण आश ॥ मूरखनें पंक्ति
त करे, आपे वचन विलास ॥ ४ ॥ (पांठांतरें)
मूरखने पंक्ति करे, जेवी तुज आख्यत ॥ वचन
सुधारस पोषवा, वर दे शारद मातु ॥ ४ ॥ शक्ति
नहिं सिद्धांतनी, बुद्धि नही लवलेश ॥ वचन विला
स करी कहूं, ते पण नहिं सुविशेष ॥ ५ ॥ पण मु
ज एक आधार ठे, सगुरु तणो पसाय ॥ तस अनु
जावें उपजे, वचन सदा सुखदाय ॥ ६ ॥ आगमना

अनुसारथी, आणी मन पवित्र ॥ पंदर तिथि
सात वारनां, पञ्चणुं तेह चरित्र ॥ ७ ॥ जिम मृग
नाद लीनो थको, निसुणे थइ एक रंग ॥ तिम सु
णजो जवियण तुमें, आणी चित्त अजंग ॥ ८ ॥

॥ अथ प्रतिपदानी सव्वाय प्रारंजः ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥
पहेली तिथि एणीपरें वदे रे, सांजलो प्राणी
सार ॥ एक धर्म जग आदरो रे, जाणी अथिर सं
सार रे प्राणी ॥ धरजो धर्मशुं राग, जिम पामो
जवतागो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
दश दृष्टातें दोहिलो रे, मानवजव अवतार ॥ पामी
धर्मने सहहो रे, पामो जिम जयकारो रे ॥ प्रा० ॥
॥ ध० ॥ २ ॥ धर्म वगो संसारमां रे, जांखे श्रीकी
रतार ॥ सुरमणिसम ए धर्म ठे रे, अरुवनियां आ
धारो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ३ ॥ धर्मथकी संपद मळे
रे, धर्मथकी नवनिधि धर्मथकी संकट टळे रे, धर्म
थकी कृद्धि वृद्धि रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ४ ॥ जुळ धर्म
प्रजावथी रे, चक्री जरत नरेंद्र ॥ अजरामर पद
शाश्वतां रे, पाम्यो परमाणंदो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥
॥ ५ ॥ जे नर जिनधर्म पामीने रे, करशे प्रमाद
लगार ॥ तो पडवे कहे जीवगो रे, परुशे नरक म
जारो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ६ ॥ एम जाणी जवि जा

वशुं रे, कीजे अनुत्तर धर्म ॥ विजय लब्धि सदा
लहो रे, ठंकी मिथ्या जरमो रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वितीयानीसजजाय प्रारंभः ॥

॥ कोइलो वर्वत धुंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥
बीज कहे जव्य जीवने रे लो, निसुणो आणी
रीऊ रे ॥ सुगुणनर ॥ सुकृतकरणी खेतमें रे
लो, वावो समकित बीज रे ॥ सु० ॥ धरजो धर्मशुं
प्रीतमी रे लो, करि निश्चय व्यवहार रे ॥ सु० ॥
इह जवें परजवें जवोजवें रे लो, होवे जयुं जग ज
यकार रे ॥ सु० ॥ धर० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कि
रिया ते खातर नाखियें रे लो, समता दिजें खेर
रे ॥ सु० ॥ उपशम नीरे सींचीयें रे लो, उगें जयुं
समकित ठोर रे ॥ सु० ॥ घ० ॥ २ ॥ वारु करो सं
तोषनी रे लो, तस पांखनी चिहु ठोर रे ॥ सु० ॥
व्रत पञ्चस्काण चोकी ठवो रे लो, वारे युं कर्मना
चोर रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ अनुजव केरे फूलडे रे
लो, महोरे समकित वृद्ध रे ॥ सु० ॥ श्रुतिचरित्र
फल उतरे रे लो, ते फल चाखो शिद्धरे ॥ सु० ॥
ध० ॥ ४ ॥ ज्ञानामृत रस पीजीयें रे लो, स्वाद ल्यो
साम्य तांबूल रे ॥ सु० ॥ इण रसें संतोष पामशो
रे लो, लेहशो जवनिधि फूल रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ५ ॥
इण विध बीज तमें सहो रे लो, ठांडी राग ने
छेष रे ॥ सु० ॥ केवल कमला पामीयें रे लो, वरि

यें मुक्तिविवेक रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ६ ॥ समकित बी
ज ते सद्देहे रे लो, ते टाळे नरक निगोद रे ॥ सु० ॥
विजय लब्धि सदा लहे रे लो, नित नित विविध
विनोद रे ॥ सु० ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीयानी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥
त्रीज कहे मुजउलखी रे, आदरो देवगुरु धर्म ॥
जनम जरा मृत्यु बुटस्यो रे, टाळो जवजय कर्म ॥
जविकजन, धरजो धर्मशुं राग ॥ जिम पामो ज
वनिधि ताग ॥ ज० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
मोहिनी त्रणे परिहरो रे, राखो मन निःशब्द ॥ गा
रव त्रणे मत करो रे, ठंमो त्रणये शब्द ॥ ज० ॥
ध० ॥ २ ॥ मानव जवमां मोटकां रे, कहियां तीने
रत्न ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र अठे रे, तेहनुं करियें य
त्न ॥ ज० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ए त्रणये रत्नयोगशी रे, पा
मियें त्रीजुवन राज ॥ श्रीजगवंत शकारशे रे, सर
शे वंठित काज ॥ ज० ॥ ध० ॥ ४ ॥ त्रिवर्गनां सुख
मेलवो रे, आणी त्रणये योग ॥ मन वचन काया
योगशी रे, टाळो कर्मना रोग ॥ ज० ॥ ध० ॥ ५ ॥
त्रण गुप्ति सूधी धरे रे, जे नर त्रीज आराधि ॥ वि
जयलब्धि ते पामशे रे, दिन दिन सुख समाधि ॥

॥ अथ चतुर्थीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ कपूर हवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

चोथ कहे जवि सांजलो रे, माहुरा गुण अ
जिराम ॥ माहुरी शीखें चालशो रे, तो लेशो मु
क्तिनु ठाम रे ॥ प्राणी, जिनवाणी धरो चित्त ॥ ए
तो आणी मन शुज रीत रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ए
आंकणी ॥ १ ॥ विकथा चारे परिहरो रे, परिहरो
चार कषाय ॥ क्लमा रुपी धन संचियें रे जवोजव
पातक जाय रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ २ ॥ त्रिगडे बेसी
जिनवरें रे, जांख्यो चउविह धर्म ॥ दान शियल
तप जावना रे, ए चारे सुखनां हर्म्य रे ॥ प्रा० ॥
जि० ॥ ३ ॥ दानें ते दोलत पामीयें रे, शीखें जस
सौजाग्य ॥ तप करी कर्म विनाशियें रे, जावें जाव
ठ जाग रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ४ ॥ जवनिधि पार उ
तारवा रे, ए चारे नाव समान ॥ सकल पदारथ
आपवा रे, ॥ ए चारे प्रगट निधान रे ॥ प्रा० ॥
जि० ॥ ५ ॥ इम जाणी पुण्य कीजीयें रे, सांजली
सदगुरु वाणी ॥ चिहुं गतिनां दुःख टाळीयें रे, हो
वे कोनी कल्याण रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ चोथ
तणा गुण जाणिने रे, जे धरे चउ धर्मद्वार ॥ विज
य लब्धि सदा लहे रे, साधि पदारथ चार रे ॥

॥ अथ पंचमीनी सहाय प्रारब्धते ॥

॥ जय जगनायक जगगुरु रे ॥ ए देशी ॥
पुनरपि पांचम एम वदे रे, सांजलो प्राणी सु
जाण ॥ श्रीजिन अनुमते चालीयें रे, जिम ल

हियें सुखनी खाण ॥ १ ॥ जविक जन, धरजो धर्म
 शुं प्रिति ॥ ए तो आणी मन शुज रीत ॥ ज० ॥
 ध० ॥ ए आंकणी ॥ आश्रव पंच दूरें करी रे, कीजें
 संवर पंच, सुमितिसखी शुज पावनीनं रे, तुमें मेलो शिव
 वधूसंच ॥ ज० ॥ ध० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत अनुस
 री रे, पावों पंच आचार ॥ त्रिकरण शुद्धियें ध्याव
 जो, रे पंचपरमेष्ठी नवकार ॥ ज० ॥ ध० ॥ ३ ॥ सम
 कित पंच आजुवावजो रे, धग्जों चारित्र पंच ॥ पं
 च जूषणें पडिवजी रे, टावो दुषण पंच ॥
 ज० ॥ ध० ॥ ४ ॥ मत करो पंच प्रमादनें रे, मत
 करो पंच अंतराय ॥ पंचमी तप शुज आदरो रे, जि
 म दिन दिन दोलत थाय ॥ ज० ॥ ध० ॥ ५ ॥ पं
 चमी तप महिमा घणो रे, कहेतां नावे पार ॥ वर
 दत्तनें गुणमंजरी रे, जुठं पाम्या जवनो पार ॥ ज० ॥
 ध० ॥ ६ ॥ पांचमी एम आराधीयें रे, लहियें पंच
 म नाण ॥ चउद रज्जवात्मक लोकना रे, एतो मनप
 ज्जिव शुज जाण ॥ ज० ॥ ध० ॥ ७ ॥ घनधाति क
 र्म खपावतां रे, वाजे हो मंगल शब्द ॥ पंचमी ग
 ति अविचल लहे रे, तिहां सुख अनंत सुखब्द ॥
 ज० ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ षष्ठीनी सहाय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ इण विध पांचे तिथि जखि बोली
 शुज परिणाम ॥ एक एकथी चढते गुणें, मनोहर

ठे अजिराम ॥ १ ॥ ठठी तणा गुण वर्णवुं, मूकी
मन अजिमान ॥ हवे जवियण जावें करी, निसुणो
थइ सावधान ॥ २ ॥ ढाल ॥ जुबखमानी दे
शी ॥ ठठी कहे मुज उलखी रे, ठटको पापथी दूर
सनेहा सांजलो ठकाय रक्षा कीजीयें रे, होवे ज
युं सुखसनूर ॥ स० ॥ १ ॥ चार कषाय राग छेषने
रे, नाखजो दूर विमारि ॥ स० ॥ ठए ड्रव्यने उल
खी रे, पाखो निरतिचार ॥ स० ॥ २ ॥ समकित
शुद्ध जगावियें रे, जांगियें दुःखनी बेनि ॥ स० ॥
मग्न रहो जिनधर्ममें रे, नाखो कुगति उखेनि ॥
॥ स० ॥ ३ ॥ ठठ आराधो जावशुं रे जवियण थइ
उजमाल ॥ स० ॥ जकित मुकित सदा लहो रे,
होवे युं मंगल माल ॥ स० ॥ ४ ॥ लब्धि कहे सा
जन तुमें रे, म करो प्रमाद लगार ॥ स० ॥ दिन
दिन संपदा अजिनवी रेहोवे श्री श्रीकार ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ अथ सप्तमीनी सहाय प्रारंजः ॥

॥ लुहारणे जायो दीकरो सो नारी हे ॥ ए
देशी ॥ सातम कहे सात आतमा ॥ सुखकारी
हे ॥ प्राणी राखीयें सोय ॥ सदा सुखकारी हे ॥
सुख आवे गर्व न कीजीयें ॥ सु० ॥ दुःख
आवे दीन न होय ॥ स० ॥ १ ॥ सात जय निवा
रियें ॥ सु० ॥ ठनियें मिथ्या शंस ॥ स० ॥ सात
अमीरस कुरुमां ॥ सु० ॥ ऊलीयें थडनें हंस ॥

॥ स० ॥ २ ॥ सातम दिन साखे तमें ॥ सु० ॥ वा
 वीयें द्रव्य विशेष ॥ स० ॥ सुकृतकर्षण उगीनें ॥
 ॥ सु० ॥ उपजे धान्य विवेक ॥ स० ॥ ३ ॥ वारु
 करो तुमें शीलनी ॥ सु० ॥ तस पांखमी चिहुं छोर
 ॥ स० ॥ चोकी ठवो सही धर्मनी ॥ सु० ॥ अध
 को न करे जोर ॥ स० ॥ ४ ॥ मनरूपी माल बनावियें
 ॥ सु० ॥ बेसी यें तिहां सावधान ॥ स० ॥ विरतिरूपी गोफ
 णे करी ॥ सु० ॥ नाखियें गोछा शान ॥ स० ॥ ५ ॥
 दुष्कृत पंखी उमाडीयें ॥ सु० ॥ करी निश्चयव्यव
 हारे ॥ स० ॥ पोंक आरोगियें पुण्यना ॥ सु० ॥ जवियण
 थइ हुशियार ॥ स० ॥ ६ ॥ सात नय जाणी तुमें
 ॥ सु० ॥ तडूपी खलां बनाव ॥ स० ॥ करुणारस
 जल आणीने ॥ सु० ॥ सात नय खलां पिवराव ॥
 ॥ स० ॥ ७ ॥ जीवदया सकटे जरी ॥ सु० ॥ सुकृत
 कर्षण सार ॥ स० ॥ संवर बलदनें जोतरी ॥ सु० ॥
 आणियें खला मजार ॥ स० ॥ ८ ॥ ध्यानरूपी थंज
 रोपीने ॥ सु० ॥ लणियें कपक संयोग ॥ स० ॥ जि
 नआण सही जावीयें ॥ सु० ॥ हावरुआं अशोक
 ॥ स० ॥ ९ ॥ दुःखरूपी बूरां झाटकी ॥ सु० ॥ ना
 खियें दूर सुजाण ॥ स० ॥ आतमवल जंकारमें ॥
 ॥ सु० ॥ जरजो सृकृत ध्यान ॥ १० ॥ स० ॥ इह जव
 परजव जवो जवें ॥ सु० ॥ पामियें सुख विचित्र ॥ स० ॥
 संतोष राखी आतमा ॥ सु० ॥ कीजें पुण्य पवित्र ॥

॥ स० ॥ ११ ॥ लब्धि कहे जविष्ण विधे ॥ सु० ॥
आदरे प्राणी जेह ॥ स० ॥ सात रज्ज्वातम जेदीनें
॥ सु० ॥ सवि सुख लेहेशे तेह ॥ स० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ आठम कहे
आठ मदनो, प्राणी मूको ते ठाम रे जवियण हित
धरी ॥ आठ प्रकारें आतमा, उलखो तुमें अजिरा
म रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिक्रमणां पोषा करी, तोनो
दुःखना वर्ग रे ॥ ज० ॥ सुमिति गुप्ति सूधां धरी,
मेलो सुख अपवर्ग रे ॥ ज० ॥ २ ॥ अष्ट महागुण
सिद्धना, ध्यावो ते निश दीस रे ॥ ज० ॥ अष्ट म
हासिद्ध संपजे, पहोचे मनह जगीश रे ॥ ज० ॥
॥ ३ ॥ जिनदेवनी करो हाजरी, दिल पाक करी
मन कोड रे ॥ ज० ॥ मनरूपी घोडो बनावियें, गुरु
ज्ञान लगाम जोरु रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ शीलनी पाखर
नाखीयें, तपरूपी खरग लेह हाथ रे ॥ ज० ॥ द्रमा
बक्तर पेहेरीनें, ध्यान कबाण सलोथ रे ॥ ज० ॥
॥ ५ ॥ विरति तीर चलाविनें, अष्ट करम मद मो
डि रे ॥ ज० ॥ विषय कषाय जे आकरा, तेहनां ते
मस्तक तोरि रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ श्रीजिन आगल आ
वीनें, मजरो करो कर जोडि रे ॥ ज० ॥ श्रीजिन
केरा पसायथी, मोक्ष शहेरें जाउ दोनी रे ॥ ज० ॥
॥ ७ ॥ आठम दिन शुभ जाणिनें, धर्मनां करियें

वखाण रे ॥ ज० ॥ कपटनो कोट उमाफियें, वाजे
 खुं जीत निशान रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ इणि परें अष्टमी जा
 वशुं, आदरे प्राणी जेह रे ॥ ज० ॥ लब्धि कहे ज
 वि तस घरे, प्रगटी घुण्यनी रेह रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति
 ॥ अथ नवमीनी सद्याय प्रारंज ॥

॥ बन्यो रे विद्याजीनो कलपको ॥ ए देशी ॥
 जीरे नवमी कहे नमीयें सदा, एतो श्रीजनकेरां
 बिंब हो विशेष ॥ नव अंगें पूजा बनावीयें, ए तो
 मूकी मननो दंज हो ॥ विशेष ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
 जवियण शुजजावें करी ॥ ठंको विषयकषाय अतीव
 हो ॥ वि० ॥ स्नात्र महोत्सव कीजीयें, एतो दीजें
 दान सदीव हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ २ ॥ जीरे पूजा ज
 क्ति प्रजावना, करि रोपे जे कीर्ति थंज हो ॥ वि०
 ॥ सुख अनंतां ते वरे, तस जस जणिसुर रंग हो ॥
 ॥ वि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिरे जिन आगें स्तवना जा
 वशुं, एतो जे करे नाटारंज हो ॥ वि० ॥ लाज अ
 नंतो जिन जणे, जुळ महिमा जाव अचंज हो ॥
 ॥ वि० ॥ ज० ॥ ४ ॥ जिरे जिन स्तवना गुण गाव
 तां, एतो समकित होये उद्योत हो ॥ लंकापति रा
 वण परें, एतो बांधि तीर्थकर गोत हो ॥ वि० ॥
 ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिरे अरिहंत जक्ति प्रजावशी, ए
 तो जाये जवनां पाप हो ॥ वि० ॥ जिरे नव निधा
 न सुख संपजे, वढी होवे खुं अधिक प्रताप हो ॥

॥ वि० ॥ ज० ॥ ६ ॥ जिरे नवपद ध्यान सदा धरी,
 ए तो पालीयें नव विध शील हो ॥ वि० नव नोकषायने परहरी,
 एतो लहीयें सुखनी लील हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ ७ ॥ जिरे नवेतत्त्वने ओलखी,
 ए तो पामी मनुष्य अवतार हो ॥ वि० ॥ शत्रुमित्र स रिखा गणो,
 एतो सकल जंतु निर्धार हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ ८ ॥ जिरे उपकार ते कीजीयें,
 ए तो टालीयें परनी पीर हो ॥ वि० ॥ नवमीयें नवपुण्य अनुसरी,
 ए तो जांगीयें जवनी जीर हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ ए ॥ जिरे इणविध नवमी प्रमोदशुं,
 एतो आदरे प्राणी जेह हो ॥ वि० ॥ लब्धिविजय रंगें करी,
 एतो शिवसुख लेहशे तेह हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ दशमीनी सहाय प्रारंभः ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ दशमीयें दुषमन वारियें
 काम क्रोध मद जोर रे ॥ दशविध यति धर्म आचरी,
 कापीयें दुःख तणी दोर रे, लाल सुरंगारे अत्तमा वहिये
 धर्मनी होर रे प्रगटे पुण्यनो तोर रे, लहियें मुकितनुं
 ठोर रे, बाधे जस चिहुं उर रे ॥ ला० ॥ १ ॥ दशविध विनय
 अज्यासथी, तोमीयें मोहजंजाल रे ॥ दशविध मिथ्या
 त्व परहरी, ठंमीयें आल पंपाल रे ॥ ला० ॥ मेढी
 यें सुकृतमाल रे, प्रगटे जाग्य विशाल रे, होवे मंगल
 लमाल रे, लहियें सुख ततकाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥

त्रस थावर सर्व जीवने, संज्ञा कही तस रंग रे ॥
 संज्ञा प्रत्ये उलखी, कीजे गुरुनो प्रसंग रे ॥ ला० ॥
 संज्ञा धर्म न चंग रे, राखीये चित्त अजंग रे, सुख
 तटिनी वहे अंग रे, उलटे ज्युं गंगरंग रे ॥ ला० ॥
 ॥ ३ ॥ दशविध प्राण त्रस जीवने, जांखे जिनवर
 वीर रे ॥ ते दश प्राण तुं पामीनें, धरिये, मन दया
 धीर रे ॥ ला० ॥ दशविध सुख शरीर रे. हरिये द
 श विध पीर रे, तोडीये दुःखजंजीर रे, पामीये न
 वोदधि तीर रे ॥ ला० ॥ ४ ॥ दश पञ्चस्काण सिद्धांत
 मे, पाढ्यां ठे सहि बोल रे ॥ तेहमां नित्य एक ज्ञा
 वशुं, करे पञ्चस्काण अमोल रे ॥ ला० ॥ जाण ला
 न अतोल रे, मुकितशुं करि बंध कोल रे, लब्धि
 जणे दिख खोल रे, वाजे जीतना ढोल रे ॥ ला० ॥ ५ ॥

॥ अथ एकादशीनी सव्वाय ॥

॥ दोहा: एम दशतिथि अधिकार अथ, किंचित्
 कह्यो चरित्र ॥ शास्त्र तणा अनुसारथी, वर्णन करी
 विचित्र ॥ १ ॥ हवे एकादशितिथि तणा, कहे सूरि
 जन माहाराज ॥ त्रिकरण करीनें आतमा, निसुणो
 थइ मृगरज ॥ २ ॥ ढाल ॥ नथरो नगीनो माहरो ॥
 ए देशी ॥ हवे एकादशी इज वदे, जवि, जन ठंडी
 ये विषयासत्त हो ॥ वसन उढो निर्विकारनां ॥
 ॥ ज० ॥ जेहनी ठे सबल प्रतीत हो ॥ १ ॥ गुणना
 रागी जवी, अवगुण त्यागी सही होइ ऐं ॥ ज० ॥

पामी अनुजव संतहो ॥ एआंकणी ॥ ध्यान तणी अं
गीठिका ॥ ज० ॥ जोजन तिम संतोष हो ॥ आस
व समता पीवतां ॥ ज० ॥ करजो काया पोष
हो ॥ गुण० ॥ अ० ॥ २ ॥ मायानिशादूरें कीजीयें
॥ ज० ॥ शुद्ध स्वजावें कीण हो ॥ तैलाज्यंग
तिम उदासीनता ॥ ज० ॥ श्रुत तंबोल प्रवीण हो
॥ गु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ उचा महेल विवेकना ॥ ज० ॥
वास करो तेह मांहे हो ॥ अग्यार बोल ते धारियें
॥ ज० ॥ रसपोषण ठे जेह हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ४ ॥
अग्यार अंगरस सांजली ॥ ज० ॥ प्रतिमा व्हो अ
ग्यार हो ॥ कर्म कठिन दूरें करी ॥ ज० ॥ लहियें
यु मुक्ति डुवार हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ५ ॥ एकाद
शी तप कीजियें ॥ ज० ॥ एम एकादश वर्ष हो ॥
अग्यार अंग वाचक होवे ॥ ज० ॥ पामियें सुजस
हर्ष हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ इणविध जवियण आदरो ॥
ज० ॥ जाणो एकादशी सार हो ॥ लब्धि कहे जवि
सांजलो ॥ ज० ॥ होवे ज्युं जवनिस्तार हो ॥ गु० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वादशीनी सहाय प्राजरं ॥

॥ रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥ द्वादशी कहे
जविजावशुं, कीजें धर्मनी गोठ लाल रे ॥ विण दा
में रस लीजीयें, जिम साकरनी जरी पोठ ॥ लाल रे
॥ १ ॥ जावें जवियण सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ बा
रसैं बार उपांगना. निसुणो जे कहा बोल लाल रे

॥ स्वाद ल्यो अमृत तेहना, टालीजकतानिटोल
 लाल रे ॥ जा० ॥ २ ॥ बारे व्रत जवि उच्चरी, मेली
 यें सुकृत माल लाल रे ॥ कर्म मलीन दूरें करी, श्रावक
 कुल अजुवाल लाल रे ॥ जा० ॥ बारे जेदें तप जे
 अठे, आदरो ठंडी क्रोध लाल रे ॥ बारे जावना
 जावियें ममता वारियें विरोध लाल रे ॥ जा० ॥ ४ ॥
 कुरस वचन कहेतां थकां, दिवस तणुं तप जाय
 लाल रे ॥ अधिक खीजंतां मासनुं, तप तप्युं निष्फ
 ल थाय लाल रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ शाप दियंतां वर्षनुं,
 तप जाये सुणो धीर लाल रे ॥ हणतां श्रमणपणुं
 हणें, एणी परें बोले वीर लाल रे ॥ जा० ॥ ६ ॥
 श्रीजिनवरें हो वर्णवी, जिस्कुप्रतिमा बार लाल रे
 ॥ ते तुमें जवियण पडिवची, पाक्षीयें शुरू आचार
 लाल रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ इणविध जे नर द्वादशी,
 आदरे शुभ परिणाम लाल रे ॥ ते नर वंठित पाम
 शे, शाश्वतां सुख अजिराम लाल रे ॥ जा० ॥ ८ ॥
 द्वादशी जेह आराधशे, धरशे जिनशुं राग लाल रे
 ॥ लब्धिविजय कहे ते नरा, पामशे जवनो त्याग
 लाल रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोदशीनी सव्वाय प्ररंजः ॥

॥ रंगरो रे रसीया रे फुला गुलावरो ॥ ए दे
 शी ॥ ते रस श्रोता आगले, जाखे मन आदहाद
 हे ॥ श्रीजिनवाणी सांजाळी, ते रस चाखो स्वाद

हे ॥ १ ॥ रसिया रे सूरिजन जावें हे सांजलो ॥
 श्रीजिन बिंब जरावियें, कीजें जिन प्रासाद हे ॥
 ज्ञानजक्ति सवि साचवो, ते रस चाखो स्वाद हे
 ॥ २० ॥ २ ॥ काठीया तेरे परहरी, कीजें नव पद
 याद हे ॥ समकित वास सदा लही, ते रस
 चाखो स्वाद हे ॥ २० ॥ ३ ॥ श्रीजिन अनुमति
 चाखियें, तजीयें मिथ्यावाद हे ॥ अनुजवरूपी शेष
 की, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ २० ॥ ४ ॥ तेरमे गुण
 ठाणे संचरी, शुक्तिध्यान प्रसाद हे ॥ केवलकमला
 पामीने, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ २० ॥ ५ ॥ ते
 रसना गुण जाणीनें, जे नर तजशे प्रमाद हे ॥ ते
 नरना गुण बोलशे, सुर नर अमृत वाद हे ॥ २० ॥
 ६ ॥ शुजजावें सुकृतपणे, तेरशगुण आराधी हे ॥
 लब्धि विजय कहे नेहशुं, लहियें सुख समाधि
 हे ॥ २० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दशीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ प्यारी ते पीयुने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥
 हवे चउदशतिथि श्म वदे रे हां, एतो सांजलो चतुर
 सुजाण ॥ जवियां जावशुं ॥ श्रुत सिद्धांतना बोलजे
 रे हां, एतो ते करो वचन प्रमाण ॥ ज० ॥ १ ॥ व
 रुना कुसुम तणी परें रे हां, एतो दोहिलो मनु
 अवतार ॥ ज० ॥ आर्यदेश पण दोहिलो रे हां,
 एतो दोहिलुं श्रावक कुल सार ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रद्धा

ते पण दोहिलुं रे हां, एतो दोहिलो ज्ञानसंयोग
 ॥ ज० ॥ दोहिली जिननी सेवना रे हां, एतो दो
 हिलो मननो योग ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए सविटुर्लज
 पामवां रे हां, जिम रयणतणे दृष्टांत ॥ ज० ॥ ते
 तुम पुण्यप्रज्ञावथी रे हां, एतो पाम्यो मनुजव संत
 ॥ ज ॥ ४ ॥ पामी चउदश तप तणो रे हां, एतो
 खप करो मननें प्रमोद ॥ ज० ॥ चौद नियम संज्ञा
 रजो रे हां, एतो संक्षेपजो तिम चौद ॥ ज० ॥ ५ ॥
 चौद पूरवना ज्ञावथी रे हां, एतो चौदमे चढे गुण
 ठाण ॥ ज० ॥ अंतगरु केवली होवे रे हां, एतो
 अक्षर पंच प्रमाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ चौद जुवन ए
 लोकनां रे हां, एतो देखी जाणे ज्ञाव ॥ ज० ॥ चौद
 रज्ज्वात्मक जेदीने रे हां, एतो शिव सुख ते नित्य
 पाव ॥ ज० ॥ ७ ॥ चौद लाख मनु योनिना रे हां, ए तो
 बूटीयें दुःखथी जीव ॥ ज० ॥ इम जाणी चउदश
 आदरो रे हां, एतो दिल करि ज्ञाव अतीव ॥ ज० ॥
 ॥ ८ ॥ चउदशना गुण सांजली रे हां, धरियें सुवि
 हित बुध ॥ ज० ॥ लब्धिविजय रंगे करी रे हां,
 एतो लहिये रुद्धि समृद्धि रे ॥ ज० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अक पूर्णिमानी सञ्जाय प्रारंजः ॥

॥ सुरुला संदेशो रे कहे माहरा पूज्यनें रे ॥ ए
 देशी ॥ पूनम कहे जव्य जीवनें रे, सांजलो सद्गुरु
 वाणी रे ॥ अथिर तन धन आउखुं रे, जलबुद

परें जाण रे ॥ जावें हे जवियण सांजलो ॥ ए आं
 कणी ॥ १ ॥ असार संसारने पेखीनें रे, धर्मशुं ध
 रो प्रतिबंध रे ॥ बांधव सयण ए जाणजो रे, स्वार्थ
 जूत संबंध रे ॥ जा० ॥ २ ॥ सकल कुटुंबनें पोषवा
 रे, जे नर करेय ठे पाप रे ॥ तेह तणां रे फल दो
 हिळां रे, सद्देशे ते एकलो आप रे ॥ जा० ॥ ३ ॥
 जिम मृग तृष्णानें कारणें रे, जमतो रणमां धाय रे
 ॥ जमे पठे ए जीवमो रें, जव जव दुःखीयो आयरे
 ॥ जा० ॥ ४ ॥ ए धन घरणी ए धामने रे, कांइ न
 ले गयो साथ रे ॥ जिहां जइनें जीव उपनो रे, ति
 हां सहि होये तेहनें हाथ रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ इम
 जाणीनें धर्म कीजीयेरे, टाली ते विषय विकार रे
 ॥ दिन दिन दोलत अजिनवी रे, पामियें हर्ष अ
 पार रे जा० ॥ ६ ॥ पूरण जीवितव्य पामीनें रे, आ
 दरो पूरण धर्म रे ॥ पूरण शांत स्वजावशी रे, पूर
 ण ठेदो ए कर्म रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ पूरण जन्म जरा
 थकी रे, पूरण बूटीयें दुःख रे ॥ पूरण लीला पा
 मीयें रे, पूरण सुरनर सुख रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ पूरण
 पन्नर सिद्धना रे जाणियें पूरण जेद रे ॥ पूरण पंद
 र योगना रें. ते पण जावनिर्वेद रे ॥ जा० ॥ ९ ॥
 पंदर जातिना जांखियां रे, परमाधामी जोर रे ॥
 ॥ ते पण दुःखथकी बूबीयें रे, टाली ते कर्म अघो
 र रे ॥ जा० ॥ १० ॥ पंदर कर्म जूमि जलखी रे,

ठंनो कषाय ते शोल रे ॥ जवियण दिन दिन पा
मीयें रे, संपदा पुण्यरंग रोल रे ॥ जा० ॥ ११ ॥
जिम शशी शोलकली सही रे, चांखे जिनवर वाच
रे ॥ तिम ए धर्म कला सशी रे, पामीयें जगतमां साच
रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ पूरणमासी ए जाणीने रे, जे स
सही करशे ए पुण्य रे ॥ विजयलब्धि ते पामशे
रे, दिन दिन निज सुखतन्न रे ॥ जा० ॥ १३ ॥
आठम चउदश पूर्णिमा रे, अंग उपांगें अधिकार
रे ॥ जिनवरें कहियो माहानिशीथमां रे, बीजप्रमु
खनो विचार रे ॥ जा ॥ १४ ॥ ते सवि जाणो व्यव
हारथी रे, धर्म उद्यम उपदेश रे ॥ निश्चयमागें अ
प्रमादी जे होवे रे, ते पाळे पंदर तिथि विशेष रे ॥
॥ जा० ॥ १५ ॥ एम जाणीने जवि जावियें रे, उव्य
ने जावथी धर्म रे ॥ सघली तिथि आराधतां
रे, लब्धि कहे सदा सुख शर्म रे जा० ॥ १६ ॥

॥ अथ उपदेशी पद ॥

मैं हुं मुसाफर आया हो प्यारा, नहीं कोइ मे
रा ॥ नहीं० ॥ जनम हुवा तब अपना कहावे, न
ही रेहेणैका डेरा हो प्यारा ॥ नहीं० ॥ १ ॥ सजन
कुटुब सब अपना कहावे, ज्युं तीरथका मेला हो
प्यारा ॥ २ ॥ धन कंचन कबु स्थिर नहीं रेहेणां,
ज्युं बादलका घेरा हो प्यारा ॥ नहीं० ॥ ३ ॥ रुपचंद
कहे प्रेमकी बातां, ज्युं धानीका फेरा हो प्यारा ॥ ४ ॥

॥ अथ उपदेशी प्रज्ञाती पद ॥

जाग जाग रयण गइ जोर जयो प्यारे ॥ पंचकुं
प्रपंच कर, वश यारे ॥ जाग जाग रयण गइ जोर
जयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृषनामे मीन
मरे, जोगमें मतंगा ॥ श्रवणमें कुरंग मरे, नयनमें
पतंगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें त्रमर मरे नासारस
लेतां ॥ एक एक इंड्रीसंग, मरे जीवकेता ॥ जा० ॥ ३ ॥
पंचके पड्यो तुं फंद, कयुं कर वश आवे ॥ मार तुं
मन इछा झूत, ज्युं निरंजन पावे ॥ जाग० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रज्ञाती रागमां पद ॥

में परदेशी दूरका, प्रभु दरसनकुं आया ॥ ला
ख चोराशी देश फिरया, तेरा दरिसन पाया ॥ मे० ॥
॥ १ ॥ सूक्ष्म बादर निगोदमें, वनस्पति बसाया ॥
अप तेज वायुकायमें काल अनंत गमाया ॥ में० ॥
॥ २ ॥ स्वर्ग नर्क तिर्यचमें, केता जन्म गमाया ॥
मनुष्य अनारजमें जम्या, तिहां नही दरिसन पा
या ॥ में० ॥ ३ ॥ तेरो मेरो दरिसन अब जयो, पुर
न पुन्य पसाया ॥ रुपचंद कहे जाग्य खुले, निरंज
न गुण गाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ मनहित शिद्धानुं पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ रे मन खोजी तेरो कोण पति
यारो ॥ रे मन० ॥ आठ गांठको सांठो मीठो, गांठ
गांठ रस न्यारो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ ठिनमें उरे पल

कमें दूजो, घमी घमी दिलसैं न्यारो ॥ रे मन० ॥
॥ १ ॥ चचंल मन वरज्यो नही माने, प्रभुजवपार
उतारो ॥ रे मन लोत्री. ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपद ॥

॥ राग बेलावल ॥ रे मन कयुं जिन नाम विसा
रयो ॥ कयुं० ॥ रे मन० ॥ विषय विकार महामद
धारयो, जनम जुआ ज्युं हारयो ॥ रे मन० ॥ १ ॥
जीने तोकुं नरदेही दीनी, गर्जकी आंच उछारयो ॥
प्रभुजीकुं तैं शठ मूरख, एक घमी न संजार्यो ॥ रे
मन० ॥ २ ॥ नही कतु दान शियल तप पूजा, न
ही जीन नाम उच्चार्यो ॥ जैन धर्म चिंतामणी सरी
खो, काच जाणकर मार्यो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ कर ले
सुकृत दया उछरले, जो जव चाहत सुधार्यो ॥ हर
खचंद वर्धमान जीनेसर अवसर मांहेन संजार्यो ॥
रे मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राघ जंगलो काफी ॥ जगमें नही तेरा कोइ,
नर देखहु निहचें जोइ ॥ जग० ॥ ए आंकणी ॥
सुत मात तात अरु नारी, सहु स्वारथके हीतकारी
बिन स्वारथ शत्रु सोइ ॥ जग० ॥ १ ॥ तुं फीरत
महा मदमाता, विषयन संग मूरख राता ॥ निज
संगकी सुध बुझ खोइ ॥ जग० ॥ २ ॥ घट ज्ञानक
ला नवि जाकुं, पर निज मानत सून ताकुं ॥ आख

र पढतावा होइ ॥ जग० ॥ ३ ॥ नवि अनुपम नर
जव हारो, निज शुद्ध स्वरूप निहारो ॥ अंतर मम
ता मल धोइ ॥ जग० ॥ ४ ॥ प्रभु चिदानंदकी वा
णी, धार तुं निश्चे जग प्राणी ॥ जिम सफल होत
जव दोइ ॥ जग० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ जूठी जूठी जगतकी माया, जिन जाणी जेद
तिन पाया ॥ जू० ॥ ए आंकणी ॥ तन धन जोवन
सुख जेता, सज्ज जाणहुं अस्थिर सुख तेता ॥ नर
जिम बादलकी ठाया ॥ जूठी ॥ १ ॥ जिम अनित्य
जाव चित्त आया ॥ लख गलित वृषजकी काया ॥
बूजे कर कंठुराया ॥ जूठी ॥ २ ॥ इम चिदानंद
न मनमांही, कहु करीए समता नाहीं ॥ सदगुरुए
जेद लखाया ॥ जूठी ॥ ३ ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग प्रजाती ॥ मान कहा अब मेरा मधुकर
॥ मान० ॥ ए आंकणी ॥ नाजिनंदके चरण सरोज
में, कीजे अचल बसेरा रे ॥ परिमल तास लहत
मन सेहेजे, त्रिविध पाप उतेरा रे ॥ मान० ॥ १ ॥
उदित निरंतर ज्ञान जान जिहां, तिहां न मिथ्यात
अंधेरा रे ॥ संपुट होत नही ताते कहा, सांज क
हा सवेरा रे ॥ मान० ॥ २ ॥ नहितर पढतावोगे

आखर बीतगया यो वेरा रे ॥ चिदानंद प्रभु पदपंक
ज सेवत, बहुरि न होय जव फेरारे ॥ मान० ॥३॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग धनाश्री ॥ जूझ्यो जमत कहा बे अजा
न ॥ जूझ्यो० ॥ ए आंकणी ॥ आल पंपाल सकल
तज मूरख, कर अनुजव रस पान ॥ क० १ ॥ आप कृ
तांत गहेगो इक दिन, हरि मृग जेम अचान ॥
होयगो तन धनथी तुं न्यारो, जेम पाको तरु पान
॥ कढ्यो० ॥ २ ॥ मात तात तरुणी सुत सेंती, गर
ज न सरत निदान ॥ चिदानंद ए वचन हमारो,
धर राखो प्यारे कान ॥ कढ्यो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग जैरव ॥ जागरे बटाउ अब, जइ जोर
वेरा ॥ जाग० ए आंकणी ॥ जया रविका प्रकाश,
कुमुदहु थये विकास ॥ गया नाश प्यारे मिथ्या,
रेनका अंधेरा ॥ जा० ॥ १ ॥ सूता केम आवे घाट,
चाखवी जरुर वाट ॥ कोइ नांहि मित्त परदेशमें
ज्युं तेरा ॥ जा० ॥ २ ॥ अवसर बीत जाय, पिठे
पिठतावो थाय ॥ चिदानंद निहचें, ए मान कहा
मेरा ॥ जागरे बटाउ अब जइ जोर वेरा ॥३॥ इति

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग आशावरी ॥ उं घट विणसत वार न
खागे ॥ उंघट ॥ ए आंकणी ॥ याके संग कहा अ

व मूरख, ढिन ढिन अधिको पागे ॥ ओ० ॥ १ ॥
 काया गमा काचकी शीशी, लागत ठणका जागे ॥
 उं घट० ॥ २ ॥ आवि व्याधि व्यथा दुःख इण ज
 व, नरकादिक फुनि आगे ॥ रुगहु न चखत संग
 विण पोण्या, मारगहुमें त्यागे ॥ उं० ॥ ३ ॥ मदठक
 ठाक गहेल तज वीरला, गुरु किरपा कोउ जागे ॥
 तनधन नेह निवारी चिदानंद, चलीये ताके
 सागे ॥ उं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपदेशी पद ॥

॥ राग बिजास ॥ जूठी जग माया नर केरी
 काया, जिम बादरकी ठाया माइरी ॥ ए आंकणी
 ॥ ज्ञानंजन कर खोल नयण मम, सदगुरु इणे विग
 प्रगट लखाइरी ॥ जूठी० ॥ मूल विगत विषवेल
 प्रगटीइक, पत्र रहित त्रिजुवनमें ठाइरी ॥ तास पत्र
 चुण खात मिरगवा, मुखबीन अचरिज देखहुंआइरी
 ॥ जूठी० ॥ २ ॥ पुरुष एक नारी निपजाइ, तेतो नपुंसक
 घरमें समाइरी ॥ पुत्र जुगल जायेति एवालाते जगमां
 हे अधिक दुःख दाइरी ॥ जूठी० ॥ ३ ॥ कारण
 बिन कारजकी सिद्धि, केम जइ मुख कही नवि
 जाइरी ॥ चिदानंद एम अकल कलाकी, गति मति
 कोइ विरले जन पाइरी ॥ जूठी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानोपदेशी पद ॥

॥ राग सारंग ॥ मेरे घट ग्यात जानु जयो

जोर ॥ मेरे० ॥ चेतन चकवा चेतन चकवी, जागो
 विहरको सोर ॥ मेरे० ॥ १ ॥ फैली चिंहु दीश चतु
 रा जाव सचि, मिट्यो जरम तम जोर ॥ आपकी
 चोरी आपही जानत, औरे कहत न चोर ॥ मेरे०
 ॥ २ ॥ अमल कमल विकस जये झूतल, मंद विष
 य शशी कोर ॥ आनंद घन एक वटलज लागत,
 और न लाख किरोर ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग कट्याण ॥ या पुद्गलका क्या विसवासा,
 है सुपनेका वासारे ॥ या० ॥ ए आंकणी ॥ चमत
 कार बिजुली दे जैसा, पाणी बीच पतासा ॥ या
 देहीका गर्व न करना, जंगल होयगा वासा ॥ या०
 ॥ १ ॥ जूठे तन धन जूठे जोंखन, जूठे है घरवा
 सा ॥ आनंद घन कहे सबही जूठे, साचा शिव
 पुर वासा ॥ या० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ इति पंचम परिच्छेद समाप्त ॥

॥ शष्ठमपरिच्छेद प्रारंभः ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेंसर केरो, शिष्य, गौतम नाम जपो
निशदीश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तोघर विख
से नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरि वर चडे
मनोवांछित हेल्ला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग,
गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरूआ
वंकडा, तस नामें नावे दुकमा ॥ झूत प्रेत नविमंडे
प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें
निर्मल काय, गौतम नामें बाधे आय ॥ गौतम जि
नशासन शणगार, गौतम नामें जय जयकार ॥ ४ ॥
शाल दाल सुरहा घृत गोळ, मनोवांछित कापरु
तंबोळ ॥ घरसुघरिणी निर्मल चित, गौतम नामें पुत्र
विनित ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल जाण, गौत
म नाम जपो जग जाण ॥ महोटां मंदिर मेरुसमान,
गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगळ
घोरानी जोरु, वारू पहोंचे वांछित कोरु ॥ मही
यल माने महोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय ॥ ७
॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत
मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें बाधे
वान ॥ ८ ॥ पुण्यवतं अवधारो सहु, गुरु गौतमना

गुण ठे बहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोरु, गौत
तूठे संपत्ति कोरु ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तिजयपहुत्त प्रारंभ ॥

॥ तिजयपहुत्त पयासय, अठ महापादिहेरजुत्ता
णं ॥ समयखित्त ठिआणं, सरेमि चक्रं जिणंदाणं
॥ १ ॥ पणवीसाय असीआ, पन्नरस पन्नास जिण
वर समूहो ॥ नासेउ सयल डुरिअं, जविआणं
जत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पण्या लाविय, तीसा
पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहजूअ रस्क साइणि, घोरु
वसगं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसाविय,
सठी पंचेव जिणगणो एसो ॥ बाहि जल जलण
हरि करि, चोरारि महाजयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्नाय
दसेव य, पन्नछी तहय चेव चालीसा ॥ रस्कंतु मे
सरीरं. देवासुर पणामिआ सिआ ॥ ५ ॥ उ हरहुं
हः सरसुंसः, हरहुंहः तहचेव सरसुंसः ॥ आलिहिय
नाम गणं, चक्रं किर सबजंजहं ॥ ६ ॥ उ रोहिणी
पन्नत्ती, वज्जसिखला तहय वज्जअंकुसिआ ॥ चक्रे
सरि नरदत्ता कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥
गंधारी महाजाला, माणवि वइरुह तहय अबुत्ता ॥
माणसि महमाणसिआ, विद्यादेवीउ रस्कंतु ॥ ८ ॥
पंचदस कम्म जूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं ॥
विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ डुरिआइ
॥ ९ ॥ चउतीस अइ सय जुआ, अठ महापाडि

हेर कयसोहा ॥ तिष्ठयरा गयमोहा, जाएअवा पय
 तेणं ॥ १० ॥ उँ वरकणय संख विडुम, मरगय घण
 सन्निहं विगयमोहं ॥ सत्तरिसय जाणणं, सवामर
 पूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ उँ जवणवइ वाण
 वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ ॥ जे केवि
 डुठ देवा, ते सबे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥
 चंदण कप्पूरेणं, फलण लिहिजण खालिअं पीअं ॥
 एगंतराइ गहजूअ, साइणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥
 इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं, डुवारि पफिलि
 हिअं ॥ डुरिआरि विजयवंतं, निपंतं निच्चमच्चेह ॥
 ॥ १४ ॥ इति ॥ ए१ ॥

॥ अथ श्री नमिजणनामक स्मरणं लिख्यते ॥

॥ नमिजण पणय सुरगण, चूमामाणि किरण
 रंजिअं मणिणो ॥ चलणजुअलं महाजय, पणासणं
 संथवं वुठं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निबु
 ह नासा विवन्न लायन्ना ॥ कुठ महा रोगानल,
 फुलिंग निदह सवंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण,
 सलिलंजलि सेय बुद्धिय ङाया (उठ्ठहा) वण दव
 दह्वा गिरिपा, यव व पत्ता पुणो लह्मी ॥ ३ ॥ डुवाय
 खुप्रिय जलनिहि, उप्परु कल्लोल जीसणारावे ॥ संजं
 त जय विसंतुल, निवामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अवि
 दलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इत्थिअं कूलं ॥
 पासजिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जेन मंति

नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुञ्जुश्च वणदव, जालावलि
 मिलिय सयल डुम गहणे ॥ डप्रंत मुळ मय
 बहु, जीसणरव जीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो
 कमजुअलं, निवाविश्च सयल तिहु अणाजोअं ॥ जे
 संजरंति मणुआ, न कुणइ जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥
 विलसंत जोग जीसण, फुरिआरुण नयण तरल जी
 हाळं ॥ उग्गजुअंगं नवजलय सञ्जहं जीसणायारं ॥ ८ ॥
 मन्नंति कीरु सरिसं दूर परिबुद्ध विसम विसवेगा ॥
 तुह नामस्कर फुरुसि, ऊमंत गुरुवा नरा लोए
 ॥ ९ ॥ अरुवीसु जिल्ल तकर, पुलिंद सहुल सद्दजी
 मासु ॥ जयविहुर बुन्नकायर, उल्लुरिश्च पहिश्च सञ्जासु
 ॥ १० ॥ अविबुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम मत्त
 वावोरा ॥ ववगय विग्घासिग्घं, पत्ता हिय इच्चियं
 ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलि आनलनयणं, दूरवियारियमु
 हं महाकायं ॥ नह कुलिसघायविश्चलिश्च, गइंद
 कुंजल्लजोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंजम पब्बिव, नह
 मणिमाणिक पम्भिश्च पम्भिमस्स ॥ तुह वयणपहरण
 धरा, सीहं कुंरूपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल
 दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल बुद्धि उब्बाहं ॥ महुपिंग
 नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥ १४ ॥
 जीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥ जे
 तुह चलय जुअलं, मुणिवइ तुंगं समह्वीणा ॥ १५ ॥

समरस्मि तिस्क खग्गा, जिग्घाय पविस्स उरूय कवं
 धे ॥ कुंतविणिजिन्न करि कलह, मुक्कसिक्कार पउरं
 मि ॥ १६ ॥ निज्झिय दप्पुस्सर रिउ, नरिंद निवहा
 जडा जसं धवदं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजि
 ण तुह प्पजावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,
 चोरारि मइंद गय रण जयाइं ॥ पासजिण नाम
 संकी, त्तेण पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा
 जयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुत्थारं ॥ जविय जणा
 णंदयरं, कट्ठाण परंपर निहाणं ॥ १९ ॥ राय जय
 जस्करक्स, कुसुमिण दुस्सउण रिक्कपीमासु ॥
 संजासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥
 जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणंकइणो य माणतुंग
 स्स ॥ पासो पावं पसमेउ, सयल जुवणच्चिय चलणो
 ॥ २१ ॥ उवसग्गंते कमठा, सुरस्मि जाणाउ जोन सं
 चलिउ ॥ सुरनर किन्नर जुवईहिं, संथुउ जयउ पा
 सजिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मप्पयारे, अठारस अस्केरहिं
 जो मंतो ॥ जो जाणइ सो जायइ, परम पयडं फुनं
 पासं ॥ २३ ॥ पासह समरण जो कुणइ, संतुठे हिययेण
 ॥ अतुत्तर सय वाहि जय, नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥

॥ अथ श्री जक्तामर स्मरणं प्रारंभः ॥

॥ जक्तामर प्रणत मौखिमणि प्रजाणा, मुद्योतकं
 दक्षित पापत मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन
 पादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले पततां जनानाम्

॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ् मयतत्त्वबोधा, दुद्
 चूतबुद्धि पटुजिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जग त्रितय
 चित्त हरैरुदारैः स्तोष्येकिलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्र
 म् ॥ २ ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पादपीठ, स्तोतुं
 समुद्यतम तिर्विगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय जलसं
 स्थितमिंदु बिंब, मन्यः क इष्टति जनः सहसा ग्रही
 तुं ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, क
 स्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कटपांत कालप
 वनोद्ग तनक्रचक्रं, कोवा तरीतुमल मंबुनिधिं जुजा
 ज्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव जक्ति वशान्मु
 नीश, कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्म
 वीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाज्येति किंनिजशिशोः
 परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अद्वयश्रुतं श्रुतवतां परिहास
 धाम, त्वदजक्तिरेव मुखरीकुरु ते बलान्मां ॥ यत्को
 किलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु च्यूतकलि
 कानिकरै कहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जवसंततिस
 न्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षय मुपैतिशरीर जाजाम् ॥
 आक्रांत लोकमखिनी लमशेषमाशु, सूर्यांशुचिन्नमिव
 शर्वर मंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं
 मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रजावात् ॥ चेतो
 हरिष्यतिसतां नखिनीदलेषु, मुक्ताफल ह्युतिमुपैति
 ननूदविंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवन मस्तसमस्त
 दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति ॥ दूरे सह

स्वकिरणः कुरुते प्रज्ञैव, पद्मा करेषु जलजानि विका
 शजांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं जुवन जूषणजूतनाथ, जूतै
 गुणैर्जुविज्वंतमज्जिष्ठ्वंतः ॥ तुल्या ज्वंति ज्वतो
 ननु तेन किंवा, जूत्याश्रितं यद्गृह्णात्मात्मसमं करोति
 ॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तो
 षमुपयातिजनस्थ चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकर
 द्युतिदुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेर शितुं कश्चेत्
 ॥ ११ ॥ यैः शांतराग रुचिजिः परमणुजिस्त्वं, निर्मा
 पितस्त्रिजुवनै कललामजूत ॥ तावंतएव खलु तेप्य
 णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२
 ॥ वक्रं क ते सुरनरोरग नेत्रहारि, निः शेषनिर्जित
 जगत्त्रित योपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क निशा
 करस्य, यद्भासरे ज्वति पांरुप लाशकटपम् ॥ १३ ॥
 संपूर्णं मंरुल शशांक कलाकलाप, शुभ्रागुणा स्त्रिजु
 वनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रि जगदीश्वर ना
 थमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतोय श्रेष्ठम् ॥ १४ ॥
 चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशागनाजि, नीतं मनागपि
 मनो न विकारमार्गम् ॥ कटपांत कालमरुता चलि
 ताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्
 ॥ १५ ॥ निर्झूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगन्न
 यमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्योनजातु मरुता चलता
 चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥
 नास्तं कदाचिदुपयासि नराहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि

सहसा युगपज्जगंति ॥ नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रजा
वः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र लोके ॥ १७ ॥ नि
त्योदयं दक्षितमोहम हांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य
न वारिदानाम् ॥ विज्राजते नव मुखाब्जमनद्वपकांति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किंशर्वरी
षु शशिनाहि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दुदक्षिते षुत
मस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलचारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं य
था त्वयि विजाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरा
दिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा मह
त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्ये
वरं हरिहरा दयएव दृष्ट्वा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि
तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन जवता जुवि येन नान्यः,
कश्चिन्म नोहरति नाथ जवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां
शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं
जननी प्रसूता ॥ सर्वादिशो दधति जानिसह स्त्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु जालम् ॥ २२ ॥ त्वामा
मनंति मुनयः परमं पुमांस, मादित्य वर्णममलं तम
सः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलज्य जयंति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनिन्द्र पंथाः ॥ २३ ॥ त्वाम
व्ययं विजुमचित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनं त
मनंग केतुम् ॥ योगीश्वरं विदित योगमने कमेकं,
ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुद्ध स्त्व

मेव विबुधार्चित बुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि जुवन
 त्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्ग विधेर्विधा
 नात्, व्यक्तं त्वमेव जगवन् पुरुषोत्तमो ऽसि ॥२५॥
 तुज्यं नमस्त्रिजुवनार्ति हराय नाथ, तुज्यं नमः
 क्षितितलामल जूषणाय ॥ तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमे
 श्वराय, तुज्यं नमोजिन जवो दधिशोषणाय ॥ २६ ॥
 कोविस्सयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वंसं श्रितो
 निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्त विविधा श्रय
 जातगर्वैः स्वप्नां तरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७
 ॥ उच्चै रशोकतरु संश्रित मुन्मयूख, माज्ञाति रूप
 ममलं जवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोद्वसत्किरण मस्ततमो
 वितानं, बिंबं रवेरिव पयोधर पार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥
 सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे, विज्राजते तव
 वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विल सदंशुलतावि
 तानं, तुंगोदयाद्रि शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥
 कुंदावदात चक्षुचामर चारुशोचं, विज्राजते तव वपुः
 कलधौतकांतम् ॥ उद्यद्दशांकशुचिनिर्जरवारिधार,
 मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिवशातकौजम् ॥ ३० ॥ उन्नत्रयं
 तव विज्ञाति शशांककांत, मुच्चैःस्थितं स्थगितज्ञानु
 करःप्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोचं, प्रख्या
 पय त्रिजगतः परमेश्वरत्वंम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनव
 पंकजपुंजकांति, पर्युद्वसन्नखमयुखशिखाजिरामौ ॥
 पादौपदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः, पद्मानि तत्र

विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभू-
 तिरभूज्जिनेन्द्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥
 यादृक्प्रजा दिनकृतः प्रहृतांधकारा, तादृकुतो ग्रहग-
 णस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥ श्रयोतन्मदाविलविलोदक
 पोलकमूल, मत्तत्रमद त्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरा-
 वताजमिजमुद्धतमापतंतं, दृष्टा जयं जवति नो जव-
 दाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ जिह्वेजकुंजगलदुज्ज्वलशोणि-
 ताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिजागः ॥ बद्धक्रमः क्र-
 मगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसं-
 श्रितं ते ॥ ३५ ॥ कट्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकटपं,
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम् विश्वंजिघत्सुमि-
 व संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्
 ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं
 फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन
 निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः
 ॥ ३७ ॥ वल्गुचतुरंगगजगर्जित जीमनाद, माजौ बलं
 बलवतामपि भूपतीनां ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखा
 पविंरु, त्वत्कीर्तनायमश्वाशु जिदामुपैति ॥ ३८ ॥
 कुंताग्रजिह्वगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरुणानु-
 रयोधजीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्व-
 त्पादपंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अञ्जोनिधौ
 ह्युज्जितजीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठजयदोद्वणवारुवा-
 ओ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा स्त्रासं विहाय

जवतःस्मरणादूत्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतजीवणजलो
 दरजारजुग्माः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः॥
 त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या जवंति मकर
 ध्वजतुह्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृखलवेष्टि
 तांगा, गाढं बृहन्निगरुकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाम
 मंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयंविगतबंधज
 या जवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि,
 संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोद्धम ॥ तस्याशु नाशमुप
 याति जयं जियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमान
 धीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्वजं तव जिनेंद्रगुणौर्निबद्धां,
 जक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य
 इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति ल
 इमीः ॥ ४४ ॥ इति श्री जक्तामरस्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यजेदि, जीताजयप्रदम
 निंदितमंग्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजतुं, पो
 ता यमानमजिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुर
 गुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विजुर्विधा
 तुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष
 किल संस्तवन्नं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्य
 तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश
 जवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिव

धो, रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोह
 क्षयादनुजवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं
 न तव क्षमेत ॥ कटपांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,
 न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अच्युद्य
 तोस्मि तव नाथ जम्भाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसं
 ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं ननिजबाहुयुगं वित
 त्य, विस्तीर्णतांकथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगि
 नामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तं कथं जवति तेषु
 ममावकाशः ॥ जाता तदेव मसमीक्षित कारितेयं, ज
 द्वपंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आ
 स्तामचिंत्यमहिमाजिनसंस्तवस्ते, नामापि पातिज
 वतो जवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहत पांथजनान्नि
 दाधे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥
 हृष्टर्त्तिनि त्वयि विजो शिथिली जवंति, जंतोः क्षणेन
 निबिरा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो जुजंगम मया श्व
 मध्यजाग, मज्यागते वनशिखंमिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥
 मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र, रौद्रैरुपद्रव शतै
 स्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि
 दृष्टमात्रे, चैरैरिवाशु पशवः प्रपलाय मानैः ॥ ९ ॥
 त्वं तारको जिन कथं जविनां त एव, त्वामुद्रहंति
 हृदयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनु
 न, मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुजावः ॥ १० ॥ य
 स्मिन्हर प्रचृतयोऽपि हतप्रजावाः, सोऽपि त्वयार

तिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता द्रुत जुजः
 पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवारुवेन ॥
 ११ ॥ स्वामिन्न नटपगरिमाण मपि प्रपन्ना, स्त्वां जं
 तवः कथमहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु
 तरंत्यति लाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा
 प्रजावः ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रथमं निरस्तो,
 ध्वस्ता स्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र
 यदिवा शिशिरापि लोके, नीलझूमाणि विपिनानि
 न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा
 परमात्मरूप, मन्वेषयन्ति हृदयांबुज कोशदेशे ॥ पूत
 स्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य, दक्षस्य संज्ञवि प
 दं ननु कर्णिकायः ॥ १४ ॥ ध्याना ज्जिनेश जवतो
 जविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ॥
 तीव्रानला दुपल जावमपास्य लोके, चामीकरत्वम
 चिरादिव धातुज्जेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिनयस्य
 विज्ञाव्यसेत्वं, जव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥
 एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयं
 तिमहानुज्ञावाः ॥१६॥ आत्मा मनीषिजिरयं त्वदज्ञे
 दबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र! जवतीह जवत्प्रजावः ॥ पा
 नीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमानं, किं नाम नो विषवि
 कारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादि
 नोपि, नुनं विज्ञो हरिहरा दिधियाप्रपन्नाः ॥ किं का
 चकामक्षिजि रीश सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विवि

धवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानु
 ज्ञावा, दास्तां जनो जवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अ
 न्युज्जते दिनपतौ स महीरुहोपि, किंवा विबोधमु
 पयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विज्ञो कथमवा
 द्भुमुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुर पुष्पवृष्टिः ॥
 त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश गठंति नूनम
 धएव हि बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गज्जीर हृदयोदधि
 संजवायाः, पीयूषतां तवगिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा
 यतः परम संमदसंग जाजो, जव्या व्रजंति तरसाप्य
 जरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूर मवनम्यसमुत्प
 तंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै
 नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः
 खलु शुद्धजावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गज्जीरगिरमुज्ज्वलहे
 मरत्न, सिंहासनस्थमिह जव्य शिखंनिन स्वाम् ॥
 आलोकयंतिरजसेन नदंत मुच्चै, श्रामी कराद्रि
 शिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव
 शितिद्युति मंरुत्नेन, लुप्त छदच्छवि रशोक तरुर्बजूव ॥
 सान्निध्य तोऽपि यदिवातववीतराग, नीरागतां व्र
 जतिको न सचेत नोपि ॥ २४ ॥ जोजोः प्रमाद म
 वधूय जजध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवा
 हम् ॥ एतन्निवेदयति देवजगन्नयाय, मन्ये नदन्नजि
 नजः सुरकुंडुजिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु जवता जुवने
 षु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताक

लाप कलितोद्धसितातपत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्धुव
 मञ्जुपेतः ॥१६॥ स्वेन प्रपूरितजगन्नयपिंकितेन, कां
 तिप्रताप यशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजत
 प्रविनिर्मितेन, साक्षत्रयेण जगवन्नजितोविजासि ॥
 ॥ १७ ॥ दिव्यसृजोजिन नमस्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृ
 ज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति जव
 तो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव
 ॥ १८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराडमुखोपि, यत्ता
 रयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिवनि
 पस्य सतस्तवैव, चित्रं विज्ञो यदसि कर्मविपाकशून्यः
 ॥ १९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किंवा
 करप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव
 कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः
 ॥२०॥ प्राग्जारसंज्ञृत नजांसि रजांसि शेषाडुष्ठापि
 तानि कमठेन शठेन यानि ॥ ढायापितैस्तव न नाथ
 हताहताशो, ग्रस्तस्त्वमी जिरयमेव परं दुरात्मा ॥
 ॥ २१ ॥ यदगर्ज्जदुर्जितघनौघमदन्नजीमं, त्रश्य
 त्तिङ्गिमुसलमांसल घोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दु
 स्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम्
 ॥ २२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृता कृतिमर्त्यमुंरु, प्रादंब
 भूद् जयदवक्र विनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिजवंतम
 पीरितोयः, सोऽस्याऽजत्प्रतिजवंत वदुःखहेतुः ॥२३॥
 धन्यास्त एव जुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति

विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ जक्तयोद्धसत्पुलकपद्मल
 देहदेशाः, पादद्वयं तव विज्ञो जुवि जन्मजाजः ॥
 ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारजववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न
 मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्र
 पवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥
 जन्मांतरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महित
 मीहित दानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवा
 नां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं
 न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विज्ञोसकृदपि प्रविलो
 कितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्य
 त्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि
 महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मयाविधृ
 तोऽसिजक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव दुःख
 पात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न जावशून्याः ॥ ३८ ॥
 त्वं नाथ दुःखजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य पुण्यव
 सते वशिनां वरेण्य, ॥ जक्त्या नते मयि महेश दयां
 विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥
 निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरि
 पुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्प्यादपंकजमपि प्रणिधानवं
 ध्यो, वध्योऽस्मिचेद् जुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥
 देवेंद्रवंथ विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विज्ञो
 जुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीहि,
 सीदंतमद्य जयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति

नाथ जवदंघ्रिसरोरुहाणां, जक्तेः फलं किमपि संतति
संचितायाः ॥ तन्मेत्वदेकशरणस्य शरण्य जूयाः, स्वा
मीत्वमेव जुवनेऽत्र जवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इहं समा
हितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोद्धसत्पुलककंचुकि
तांग जागाः ॥ त्वद्विंबनिर्मलमुखांबुजवद्भलदया,
ये संस्तवं तवविजो रचयंति जव्याः ॥ ४३ ॥ आर्या ॥
जननयनकुमुदचंद्र, प्रजास्वराः स्वर्गसंपदो जुत्वा ॥ ते
विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ युग्म
म् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरसंपूर्ण ॥

॥ अथ वृद्ध गोतम स्वामीनो रासलि ॥ वीर जिणे
सर चरण कमल, कमला कय वासो ॥ पणमवि पजणी
सुसामिसाल, गोयम गुरुरासो ॥ मण तण वयणे
एकांत करवि, निसुणउ जो जविया ॥ जिम निवसै
तुम देह गेह, गुण गण गह गहियां ॥ १ ॥
जंबूछिव सिर जरह खित्त, खोणी तल मंरुण ॥ मग
ह देश सेणिय नरेस, रिउ दल बल खंरुण ॥ धण
वर गुवर गांम नाम, जिहा गुणगण सज्जा ॥ विप्प
वसै वसुज्जूइ तत्थ, तसु पुहवीजज्जा ॥ २ ॥ ताण
पुत्त सिरी इंद जुय, जूवलय पसिद्धो ॥ चउदह विज्जा
विविह रूव, नारी रस दुद्धो ॥ विनय विवेक विचार
सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण
देह, रूवहि रंजा वर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर
चरण जिण विपंकज जल पाणिय, तेजेंहि तारा,

चंद सूर, आकास जमानिय ॥ रूवहिमयण अनं
 ग करवि मेढयो निरधानिय धीरमें मेरु गंजीर
 सिंधु, चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ येखवि निरुवम
 रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल
 जीत इठ, गुण मेढया संचिअ अहवा निश्चें पुव
 जम्म, जिणवर इणअंचिय ॥ रंजा पउमा गौरी
 गंगा, रति हा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुरु
 नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउं ॥
 पंचसया गुणपात्र ठात्र, हींडे पर वरिउं ॥ करे
 निरंतर यइकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण ठल
 होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु,
 ठंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह, जरह वासंमि, खो
 णीतलमंरुणो, मगधदेस सेणिय नरे सर ॥ धण
 वर गुब्बरगाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुंदर,
 तसु पुहवी जज्जा सयल, गुणगणरुव निहाण ॥
 ताणपुतवीद्या निलउं, गोयम अतिहि सुजाण
 ॥ ७ ॥ जाषा ॥ चरम जिणेसर केवल नाणी, चउ
 विहसंघपइछाजाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउ
 विह देव निकायें जुत्तो ॥ ७ ॥ देवें समवसरण तिहां
 कीजें, जिणे दीठें मिथ्यामति सीजे ॥ त्रिचुवन गुरु
 सिंहासण बइछा, ततखिण मोह दिगतें पइछा ॥
 ॥ ८ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा
 जिम दिनचोरा ॥ देवहुंहुनि आकाशें वाजी, धर्म

नरेसर आविउं गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे
 तिहां देवा, चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चामर
 ठत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहिं जिणवर जग सहु मोहे
 ॥ ११ ॥ उवसम रसजर जरी वरसंता, जोजन वाणी
 वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर
 नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें ऊलऊल
 कंता, गयण विमाणें रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रचूड़
 मन चिंते, सुर आवे अह्य जगन होवेंते ॥ १३ ॥
 तीर तरंकक जिम ते वहता, समव सरण पुहता
 गहगहता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इणि अवसरें
 कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाणिउं बोले,
 सुर जाणंता इम कांड मोले ॥ मूं आगल कोइ जाण
 जणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु
 छंद ॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाण, संपन्न पावा
 पुरि सुर महिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहिं
 देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुखकारण ॥
 ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजें करि दिनकार ॥
 सिंहासण सामिय ठविउं, हुउं सुजयजयकार ॥ १६ ॥
 जाषा ॥ तो चढिउं घणमाण गजें, इंद्रचूड़ चूय देव
 तो ॥ हुंकारो करी संचरिउं, कवण सुजिणवर देव
 तो ॥ जोजन जूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंज
 तो ॥ दह दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज
 तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंरुधजा, कोसीसे नव

घाट तो ॥ वैरविवर्जित जंतुगण, प्रातीहारज आठ
तो ॥ सुर नर किन्नरअसुरवर, इंद्र इंद्राणी राय
तो ॥ चित्ते चमक्रिय चित्तवे ए, सेवंता प्रजुपाय तो
॥ १८ ॥ सहस किरणस्वामी वीर जिण, पेखवी रूप
विसाल तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंद्र
जाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग गुरु, इंद्रजूइ नामेण
तो ॥ श्रीमुख संशय सामि सवे, फेडे वेदपण तो
॥ १९ ॥ मान मेदिह मद ठेलि करे, जगतें नामें
सीस तो ॥ पंचसयाशुं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो
सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिजूइ आवे
इ तो ॥ नाम लेइ आजाष करे, ते पण प्रतिबोधेइ तो
॥ २० ॥ इणे अनुक्रमें गणहररण, आप्या वीर
इग्यार तो ॥ तो उपदेशें जुवन गुरु, संजमशुं व्रत
बार तो ॥ बिहु उपवासें पारण ए, आपणपें विहरंत
तो ॥ गोयम सजम जग सयल, जयजयकार करंत
तो ॥ २१ ॥ वस्तुठंद ॥ इंदजूइ इंदजूइ चढिय बहु
मान ॥ हुंकारो करि संचरिउं, समवसरण पुह तो,
तुरंततो ॥ इह संसय सामि सवे चरमनाह फेडे
फुरंतो ॥ बोधबीज सदाय मने, गोयम जवह
विरत्त ॥ दिस्का लेइ सिस्का सहिय, गणहर गुण
संपत्त ॥ २२ ॥ जाषा ॥ आज हुउं सुविहाण, अज
पंचेलिमां पुण्य जरो ॥ दीठा गोयमसामि, जो निय
नयणें अमिय जरो ॥ सिरिगोयम गणधार, पंचसया

मुनि परिवरिय ॥ जूमिय करय विहार, जवियांजन
 पविबोह करे ॥ समवसरण मजार, जे जे संसा उप
 जे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूठे मुनिपवरो
 ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजेदिस्क, तिहां तिहां केव
 ल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोमय दीजें
 दान इम ॥ गुरु उपर गुरु जत्ति, सामिय गोयम उप
 निय ॥ इण ठल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे
 ॥ २४ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउविस जिण
 आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोइ मुनि ॥
 इअ देसणानिसुणेइ, गोयम गणहर संचरिउं ॥
 तापस पन्नरस एण, तो मुनि दीठो आवतोए ॥ २५ ॥
 तवसोसिय निय अंग, अम्ह सक्ति नवि उपजे ए ॥
 किम चढशे दढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥
 गिरुउं ए अजिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥
 तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण
 ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंरु कलस धज वरुस
 हिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिनहर जरहेसर महि
 अ ॥ नियनिय काय प्रमाण, चउदिसि संठिअजिणह
 बिंब ॥ पणमवि मन उद्धास, गोयम गणहर तिहां
 वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक् जृञ्जक
 देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंडरीक, कुंरुकीक अध्ययन
 जणी ॥ बलता गोयम सामी, सवि तापस प्रतिबोध
 करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाढे जिम जूथाधिपति

॥ २८ ॥ खीरखंरु घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ
 ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुंसवे ॥ पंच
 सया शुभ्र जाव, उज्जल जरिउं खीरमीसैं ॥ साचो
 गुरुसंजोग, कवल ते केवल रूप हुउं ॥ २९ ॥ पंच
 सया जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय ॥ पेखवि
 केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह
 पीयूष, गाजंती घणमेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ,
 नाणी हूआपंचसया ॥ ३० ॥ वस्तुउंद ॥ इणे अनु
 क्रमे इणे अनुक्रमें नाणसंपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय,
 हरिय डुरिय जिणनाह वंदिय ॥ जाणवी जगगुरु
 वयण, तिह नाण अप्पाण निंदइ ॥ चरम जिणे
 सर इम जणइ, गोयम मकरिस खेउ ॥ ठेह जइ
 आपण सही, होसुं तुझा बेउ ॥ ३१ ॥ जाषा ॥ सामि
 उं ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥
 विहरिउं ए जरहवासम्मि वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥
 ठवतो ए कणय पउमेव, पायकमल संघें सहिअ ॥
 आविउं ए नयणाणंद, नयर पावापूरिसुरमहिय ॥
 ॥ ३२ ॥ पेखीउं ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रति
 बोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देव, नंदन पढोतो
 परम पए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणिय
 जिणसमे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद जेद
 जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि
 आप कन्हे हुं टालिउं ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण

नाह, लोक बेवहार न पालिउं ए ॥ अति जलुं ए
 कीधलुं सामि, जाणिऊ केवल मागशे ए ॥ चिंतवि
 जं ए बालक जेम, अहवा केमें लागशे ए ॥ ३४ ॥
 हुं किम ए वीरजिणंद, जगतें जोखो जोखविउं ए ॥
 आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥
 साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणें लालिउं ए ॥
 इण समे ए गोयमचित्त, राग बेरागें वालिउं ए
 ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उलट, रहेतो रागें साहिउं
 ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहेंजें उमा
 हिउं ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा
 सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, जवियण जव
 इम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तुठंद ॥ पढम गणहर
 पढम गहणर वरस पंचास गिहिवासें संवसिय ॥
 तीस वरिस संजम विजूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण,
 बार वरिस तिहुयणनमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं
 ठविअ, बाणवइ वरिसाउं ॥ सामी गोयम गुणनिलो,
 होशे शिवपुर ठाउं ॥ ३७ ॥ जाषा ॥ जिम सहकारें
 कोयल टहुके, जिम कुसुमबनें परिमल महेके, जिम
 चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके,
 जिम कणयाचल तेजें ऊलके, तिम गोयम सौजाग्य
 निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम
 सुर वर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीव
 वनी ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिमअंबर

तारा गण विकसैं, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ३९ ॥
 पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा
 जिम जग मोहे, पूरवदिसि जिम सहसकरो ॥ पंचा
 नन जिम गिरिवर राजे, नरवर घर जिम मयंगल
 गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सु
 रतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तममुख मधुरी ज्ञाखा,
 जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम जूमिपति जूय
 बल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गो
 यम लब्धे गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ
 आज, सुरतरु सारे वंठिय काज, कामकुंज सवि वश
 हुउं ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि
 आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥
 पणवस्कर पहेलो पजणीजें, मायाबीज श्रवण निसु
 णजें, श्री मती शोभा संजवे ए ॥ देवहधुरि अरि
 हंत नमीजें, विनयपहु उववाय शुणीजें, इण मंत्रें
 गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजें, देश
 देशांतर कांइ जमी जें, कवण काज आयास करो ॥
 ग्रह इठी गोयम समरीजें काजसमग्रह ततखण.
 सिजे, नवनिधि बिलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह
 सय बारोत्तर वरसैं, गोयम गणहर केवल दिवसे,
 किउं कवित उपगारकरो ॥ आदिहिंमंगल एहपज
 णीजे, परव महोन्नव पहिलो लीजे, रुद्धि वृद्धि क
 ह्माण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणे जयरे धरिया,

धनपिता जिण कुल अवतरिया धन सहगुरु जिणे
दिखियाए ॥ विनयवंत विद्या जंकार, जसुगुण कोइ
न लपे पार, विद्यावंत गुरु विनवे ए ॥ गौतमसामीनो
रास जणीजे, चउविह संघ रलि यायत कीजे, रुद्धि
वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन ठमो देव
रावो ॥ माणक मोतिनां चोक पुरावो ॥ रयण सिंहा
सण ॥ बेसणुंए ॥ तिहां बेसी प्रभु देसना देसे ॥ जविक
जीवनां काज सरसे ॥ नित्य नित्य मंगल उदयकरो ॥
इति श्री गौतम स्वामीनो रास संपूर्ण

॥ अथ श्रीमहावीरजिन ठंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरिकोधने
मन्नथी दूर वारो ॥ संतोषवृत्ति धरो चित्तमांहिं, राग
द्वेषथी दूर थाउं उछाहिं ॥१॥ पड्यामोहना पासमां
जेह प्राणी, शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनु
जन्म पामी वृथा कां गमोठो, जैनमार्ग ठंकी जुला
कों जमो ठो ॥२॥ अलोत्री अमानी निरागी तजो ठो
सलोत्री समानी सरागी जजो ठो ॥ हरि हरादि अ
न्यथी शुं रमो ठो, नदी गंगा मूकी गलीमां पमोठो ॥३॥
केइ देव हाथें असि चक्रधारा, केइ देव घाले रुंद मा
ला ॥ केइ देवउत्संगें राखे ठे वामा, केइ देव साथें रमे
वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ
मांसजही महावीकराला ॥ केइ योगिणी जोगिणि
जोग रागें, केइ रुद्राणी ठागनो होम मागे ॥ ५ ॥

इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुख
 ने केम चाखे ॥ जदा लोचना थोकलो पार नाव्यो,
 तदा मधनो बिंदु उमन्न जाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां
 आपणी आश राखे, तेह पिंरुने मन्नशुं लेअ चाखे ॥
 दीन हीननी जीडते केम जांजे, फुटो ढोल होथे
 कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ ज्ञाता जजो मोह
 दाता, अलोत्री प्रज्ञूने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न
 चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काच ना
 पिंरुशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धिसु जेह प्राणी
 कहे ठे, सवि धर्म एकत्व जूळो जमे ठे ॥ कीहां
 सर्षवाने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायरा ने कीहां
 शूर वीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णशालं कीहां कुंजखंडं ॥
 किहा क्रोडवा ने कीहा खीर मंमं ॥ कीहां खीरसिं
 धु कीहां द्वारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां ठाग
 द्वीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां
 रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकीने कीहां
 देवजोगी, कीहा इंद्र देही कीहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥
 कीहां कर्म घाती कीहां कर्मधारी, नमो वीर स्वामी
 जजो अन्यवारी ॥ जिंसी सेजमां स्वप्नथी राज्य
 पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥
 अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, ते जना मूढमां
 श्रेष्ठशुं इष्ट ठाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंजरोषी,
 सजो पुण्य पोषीजजो ते अरोषी ॥ १३ ॥ गतिचा

र संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु
पाय स्वामी ॥ तुहिं तुहिं तुहिं प्रभु परम रागी,
जव फेरनी शृंखला मोह जागी ॥ १४ ॥ मानीयें
वीरजी अर्ज ठे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना
चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुज गुरु आज मेरो
वीवेकें लह्योमे प्रभू दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकारनो ठंद ॥

॥ दोहा ॥ वंठित पूरे विविध परे, श्री जिन
सासनसार ॥ निश्चय श्रीनकार नित्य, जपतां जयज
यकार ॥ १ ॥ अमरशठ अक्षर अधिक फल, नव पद
नवे निधान ॥ वीतराग स्वय मुख वदे, पंच परमेष्टि
प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्या
संपत्ति आय ॥ संचित्त सागर सातनां, पातिक दूर
पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सज्जु
जापित सार ॥ सो जवियां मन शुद्धशुं, नित्य जपीये
नवकारा ॥ ठंदहाटकी ॥ नवकार अकी श्रीपाल नरेशरा ॥
पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिवनाम
कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंता
नरक निवारे, पामे जवनो पार ॥ सो जवियां जत्तें
चोखे चित्ते, नित्य जपीये नवकार ॥ ५ ॥ बांधि
वरुशाखा शिंके बैसि, हेठल कुंड हुताश ॥ तस्कर
ने मंत्र समर्थ्यो आवके, उड्यो ते आकाश ॥ विधि

रीत जप्यो विषधर विष टाले, ढाले अमृतधार
 ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल, व्यंत
 र दुष्ट विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाली, पाम्यो
 यक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपतां थाये जिनवर,
 इस्यो ठे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पद्विपति शिख्यो
 मुनिवर पासे, महामंत्र मन शुरू ॥ परजव ते राज
 सिंह पृथ्वीपति, पाम्यो परिगल रिऊ ॥ ए मंत्रथकी
 अमरापुर पढोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥
 संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले ॥
 दीवो श्रीपास कुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाल ॥
 संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख, इंद्रजुवन अवतार
 ॥ सो० ॥ ९ ॥ मनशुरूं जपतां मयणा सुंदरी, पामी प्रिय
 संयोग ॥ इण ध्याने कुष्ठ टढ्यो उंबरनो, रक्त पित्तनो
 रोग ॥ निश्चें शुं जपतां नवनिधि थाये, धर्म तणे आ
 धार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण जुजंगम घाढ्यो,
 घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रजावे हार फूलनो,
 वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें पिंगल कीधो,
 पापतणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति
 राखी गृहिणी, पामीबाणप्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांडु
 पति घर, ते थई कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा
 मंदिर. जवडुःख जंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबल संबलें
 कादव काढ्यां, शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें
 गया देवदोके, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी

संपत्ति वसुधातलें विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥
 ॥ १३ ॥ आगें चौवीशी हुई अनंती, होशे वार
 अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, एम
 ज्ञांखे अरिहंत ॥ पूरवदिशि चारे आदि प्रपंचे,
 समस्यो संपत्ति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरप
 द ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंरुरिगिरि
 उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधर ने एक मोर ॥ सह
 गुरु सन्मुख विधि समरंता, सफल जनम संसार
 ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लोह
 खरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो
 अमरनी रुद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवाख्यो,
 सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंच परमेष्ठि
 ज्ञानज पंचह, पंचह दानचारित्र ॥ पंच सच्चाय महा
 व्रत पंचह, पंच समिति समकित ॥ पंच प्रमाद
 विषय तजो पंचह, पालो पंचाचार ॥ सो० ॥ १७ ॥
 कलश ॥ ठप्पय ॥ नित्य जपीयें नवकार, सार संपत्ति
 सुखदायक ॥ सिद्धमंत्र ए शाश्वतो, एम जंपे
 जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य
 जणीजें ॥ श्रीजवज्जाय सुसाधु, पंचपरमेष्ठि शुणी
 जें ॥ नवकार सार संसार ठे, कुशल लाज वाचक
 कहे ॥ एक चितें आराधतां, विविधरुद्धि वांढित
 लहे ॥ १८ ॥ इति ॥ ११५ ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो ठंड ॥

॥ आदि नाथ आदिजिनवर बंदी, सफल मनो
 रथ कीजियें ए ॥ प्रजातें उठी मांगलिक कामें, शोल
 सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग
 हितकारी, ब्राह्मी जरतनी बहेनकी ए ॥ घट घट
 व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे वकी ए ॥
 ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी
 नामे रिषज सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिजुवनमांहि,
 जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बाल
 पणार्थी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदनां
 बाकुलां वीर प्रतिलज्या, केवल लह्मी व्रत जाविका
 ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती
 नेम वल्लजा ए ॥ जोवन वेशें कामने जीयो, संयम
 लेश देव डुल्लजाए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांरुव नारी,
 डुपदतनया वखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीरपूरा
 णां, शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ
 नृपनी नारी निरुपम, कौशल्य कुलचंद्रिका ए ॥
 शीयल सखूणी राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका
 ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें संतानिक नामें, राज्य
 करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावतीसती,
 सुरजुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची
 शीयलें न काची, राची नहीं विषयारसें ए ॥ मुख
 मुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥

॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता
सीता सती ए ॥ जगसहु जाणे धीज करंतां, अनल
शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे
चाखणी बांधी, कूवाथकी जल काढीयुं ए ॥ कळंक
उतारवा सतीय सुजडा, चंपा बार उघामीयुं ए
॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंमित, शिवा शिव
पदगामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल थश्यें, बलि
हारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांमुरायनी,
कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांमुर माता दसे दसारनी,
बहेन पवित्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामे
शीलव्रतधारिणी, त्रिविधेंतेहने वंदीयें ए ॥ नाम
जपंतां पातक जाए, दरिसण डुरित निकंदीयें ए
॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिदनी, दमयंती तस
गेहनी ए, ॥ संकट पमतां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन
कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन
पूजिता, पुष्पचूळा ने प्रजावती ए ॥ विश्वविख्याता
कामित दाता, शोलमी सती पदमा वती ए ॥ १६ ॥
वीरेंजांखी शास्त्रें साखी, उद यरतन जांखे मुदा ए ॥
वहाणुं वातां जे नर जणशे, ते लेशे सुख संपदा ए
॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकार लघु बंद ॥

॥ सुखकारण जवियण, समरो नित्य नवकार ॥
जिनशासनआगम, चौद पूरवनो सार ॥ ए मंत्रनो

महिमा, कहेतां न लहुं पार सुरतरु जिम चितित
 वंठित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव
 करे करजोड ॥ जुविमंरुल विचरे, तारे जवियण
 कोरु ॥ सुर ठंदें विलसे, अतिशय जास अनंत ॥ पहे
 ले पद नमियें, अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे
 जेदें, सिद्ध थया जगवंत ॥ पंचमी गति पोहोता,
 अष्ट करम करि अंत ॥ कल अकल स्वरूपी, पंचानं
 तक जेह ॥ जिनवर पय प्रणमुं, बीजे पद वलि एह
 ॥ ३ ॥ गच्छत्तार धुरंधर, सुंदर शशिहर सोम ॥
 करे सारण वारण, गुण ठत्तीसैं थोम ॥ सुत्र जाण
 शिरोमणि, सागर जेम गंजीर ॥ त्रीजे पद नमीयें,
 आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगर, सूत्र
 जणावे सार ॥ तपविधि संयोगें, जांखे अर्थ विचा
 र ॥ मुनिवर गुण जुता, कहियें ते उवझजाय ॥ चो
 थे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचा
 श्रवटाले, पाले पंचाचार ॥ तपसी गुण धारी, वारे
 विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर, लोकमांहें जे
 साध ॥ त्रिविधें ते प्रणमुं, परमारथ जिणें लाघ ॥
 ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायणी कायणी चूत वैता
 ल ॥ सवि पाप पणासे, बाधेमंगल माल ॥ एणें
 समरण संकट, दूर टले ततकाल ॥ इम जंये जिन
 प्रज्ञ, सूरि शिष्य रसाल ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ इति श्री पंचपरमेष्ठी ठंद ॥

॥ श्री ॥

जिनपञ्जरस्तोत्रं

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हज्जयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं
श्रीं अर्हं सिद्धेज्जयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचा-
र्येज्जयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेज्जयो
नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं गौतम प्रमुखसर्वसाधुज्जयो
नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्चनमस्कारः सर्व पाप क्षयं
करः ॥ मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं जवति मङ्गलम्
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मनेन
मः ॥ कमलप्रजसूरीन्द्रो, ज्ञापते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥
एकजक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् ॥ मनोऽजि-
लषितं सर्वं, फलं स लज्जते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्याब्र-
ह्मचर्येण, क्रोधलोभविजर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा,
षण्मासैर्लज्जते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि,
सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये उपाध्या-
यं तु नासिके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं
विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्ध-
ये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जि-
नः ॥ अङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥
पूर्वांशां च जनो रक्षे-दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षि-
णांशां परब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चि-
मांशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थ-
कृत्सर्वामीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं जगवा

नर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः, ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो,
 रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषज्ञो मस्तकं रक्षे.
 दजितोऽपि विलोचनम् ॥ संचवः कर्णयुगलेऽजिनन्द
 नस्तु नासिके ॥ १२ ॥ उष्टं श्रीसुमती रक्षेदन्तान्प
 द्मप्रज्ञो विजुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्र
 प्रज्ञाजिह्वः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधि रक्षेद्, हृदयं
 श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्व
 यम् ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ नखानपि ॥
 श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाजि मंजुलम् ॥ १५ ॥
 श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षे, दरो लोम कटी तटम् ॥ मल्लिरू
 रुष्टवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमीरक्षे
 ब्रूनेमिश्ररणद्वयम् ॥ श्रीपार्श्व नाथः सर्वांगं वर्धमा
 नश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वा
 काशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेष पापेभ्यो, वीतरागो नि
 रज्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे स्मशाने च, संग्रामे शत्रु
 संकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, जूत प्रेतजयाश्रिते ॥
 ॥ १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥
 अपुत्रत्वे महादुःखे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥
 माकिनीशाकिनी ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्ता
 रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव
 समुच्चाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् ॥ तस्य किञ्चिद्भयं
 नास्ति, लज्जते सुखसंपदः ॥ २२ ॥ जिन पिञ्जरनामेदं, यः
 स्मरेदनुवासर ॥ कमलप्रज्ञ राजेन्द्र- श्रियं सलज्जते

नरः ॥ १३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत्कृतज्ञो, यस्तोत्र मेत
ज्जिन पञ्चराख्यं ॥ आस्तादयेह्नी कमल प्रज्ञाख्यं, लक्ष्मी
मनोवाञ्छितपूरणाय ॥ १४ ॥ श्रीरुद्रपद्मीय वरेण्यगच्छे,
देवप्रज्ञाचार्य पदाब्जहंसः ॥ वादीन्द्रचूनामणिरेषजै
नो, जीयाद्गुरुः श्रीकमल प्रज्ञाख्यः ॥ १५ ॥ इति श्रीकम
लप्रज्ञाचार्य विरचितं श्रीजिन पञ्चर स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री ॥

॥ ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुज्ञापितम् ॥ ग्रह
शान्तिं प्रवक्ष्यामि ज्ञव्यानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जन्म
लभे च राशौ च, यदा पीरन्ति खेचराः ॥ तदा
संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहिताज्जिनान् ॥ २ ॥ पुष्पै
र्गन्धैर्धूपदीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः ॥ वर्णसदृशदानैश्च
वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ ३ ॥ पद्मप्रज्ञस्य मार्तण्डश्च
न्द्रश्चन्द्रप्रज्ञस्य च ॥ वासुपूज्येन्नसुतश्च, बुधोऽप्यष्ट
जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ विमलानन्तधर्माऽराः, शान्तिः
कुन्थुर्नमिस्तथा ॥ वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे
बुधो न्यसेत् ॥ ५ ॥ ऋषज्ञाजितसुपार्श्वश्चाजिनन्द
नशीतलो ॥ सुमतिःसंज्ञवस्वामी, श्रेयांसस्य बृहस्प
तिः ॥ ६ ॥ सुविधेःकथितः शुक्रः सुव्रतस्य शनैश्च
रः ॥ नेमिनाथस्य राहुः स्यात्, केतुः श्रीमद्विपार्श्व
योः ॥ ७ ॥ जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणां शान्ति

तवे ॥ नमस्कारशतं जक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥७॥

जडबाहुबुवाचैव पञ्चमश्रुतकेवली ॥ विद्याप्रवादतः

पूर्वात् ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रश

नैश्वरराहुकेतुसहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वति

ष्ठन्तुः मम धनधान्यजयविजयसुखसौभाग्यधृति

की र्तिकान्तिशांतितुष्टिपुष्टिबुद्धिलक्ष्मीधर्मार्थकामदाः

स्युः स्वाहा ॥ इति ग्रहशान्ति स्तोत्र समाप्तं

॥ अथ मंत्राधिराज स्तोत्रं ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशंकरः ॥

नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥ सर्व

विघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ सर्वसत्त्वहितो

योगी श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥ देवदेवः स्वयंसि

द्धिदानन्दमयः शिवः ॥ परमात्मा परब्रह्म, परमः

परमेश्वरः ॥ ३ ॥ जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरु

षोत्तमः ॥ सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासः शुभार्ण

वः ॥ ४ ॥ सर्वज्ञः सर्व देवेशः, सर्वदः सर्वगोत्तमः ॥

सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥

तत्त्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्मप्रकाशकः ॥ परमेन्दुः

परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥ अजः सनातनः

शम्भुरीश्वरश्च सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा,

क्षेत्राधीशः शुभप्रदः ॥ ७ ॥ साकारश्च निराकारः,

सकलो निष्कलोऽव्ययः निर्ममो निर्विकारश्च, निर्वि

कद्वपो निरामयः ॥ ८ ॥ अमरश्चा जरोऽनन्त, ए
कोऽनन्तः शिवात्मकः ॥ अलक्ष्यश्चैवामेयश्च, ध्यानल
क्ष्यो निरञ्जनः ॥ ९ ॥ ॐकाराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरू
पस्त्रयीमयः ॥ ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्जयः परमाह
रः ॥ १० ॥ दिव्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽच्यु
तः ॥ आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान्
॥ ११ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशः, स्वयञ्चूः परमाच्युतः ॥
व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावज्ञासकः ॥ १२ ॥
ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनःस्थितिः ॥
मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः ॥ १३ ॥
सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः ॥ जगवान्
सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥ इति श्री
पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः ॥ दिव्यमष्टोत्तरं
नामशतमत्र प्रकीर्तितम् ॥ १५ ॥ पवित्रं परमं ध्येयं,
परमानन्ददायकम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं पठते मङ्ग
लप्रदम् ॥ १६ ॥ श्रीमत्परमकल्याणसिद्धिदः श्रेय
सेऽस्तुवः ॥ पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, जगवान् परमः
शिवः ॥ १७ ॥ धरणेन्द्रफणवृत्रालंकृतो वः श्रियं
प्रभुः ॥ दद्यात्पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठितशासनः ॥
॥ १८ ॥ ध्यायेत्कमलमध्यस्थं, ॥ श्रीपार्श्वजगदीश्व
रम् ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं समायुक्तं, केवलज्ञानज्ञास्कर
म् ॥ १९ ॥ पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे ॥
परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्रराजेन संयुतम् ॥ २० ॥ अष्ट

पत्रस्थितैः यस्य नमस्कारैस्तथा त्रिजिः ॥ ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं
 नाथं, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ ११ ॥ शतषोडशदला
 रूढं, विद्यादेवीजिरान्वितम् ॥ चतुर्विंशतिपत्रस्थं,
 जिनं मातृसमावृतम् ॥ १२ ॥ मायावेष्टयत्रयाग्रस्थं,
 क्रौंकारसहितं प्रभुम् ॥ नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालै
 र्दशजिवृतम् ॥ १३ ॥ चतुष्कोणेषु मन्त्राद्यचतुर्वीजा
 न्वितैर्जिनैः ॥ चतुरष्टदशद्वीति, द्विधाकसंज्ञैर्युतम्
 ॥ १४ ॥ दिक्षु द्दकारयुक्तेन, विदिक्षु द्वाकि तेन
 च ॥ चतुरस्रेण वज्रांकद्वितितत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥
 श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः लमाराधयेज्जिनम् ॥ तं
 सर्वपापनिर्मुक्तं, प्रजते श्रीः शुभप्रदा ॥ १६ ॥ जिने
 शः पूजितो नम्रया, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा ॥ ध्यात
 स्त्वं यैः द्वाणं वापि, सिद्धस्तेषां महोदयः ॥ १७ ॥
 श्रीपार्श्वयन्त्रराजान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् ॥ शान्ति
 पुष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ॥ १८ ॥ रुद्धि
 सिद्धिमहाबुद्धिधृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ॥ मृत्युंजयं
 शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो जनः ॥ १९ ॥ सर्वकल्या
 णपूर्णः स्याज्जिरामृत्युविवर्जितः ॥ अणिमादिमहासि
 द्धिं, लक्षजापेन वाप्नुयात् ॥ २० ॥ प्राणायाममनो
 मन्त्रयोगादमृतमात्मनि ॥ त्वमात्मानं शिवं ध्यात्वा,
 स्वामिन् सिध्यन्ति जन्तवः ॥ २१ ॥ हर्षदः कामदश्चे
 तिरिषुघ्नः सर्वसौख्यदः ॥ पातु वः परमानन्दलक्षणा
 संस्मृतो जिनः ॥ २२ ॥ तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं, सर्वमङ्ग

वसिद्धिदम् ॥ त्रिसंध्यं यः पठे त्रित्यं, नित्यं प्राप्नो
ति स श्रियम् ॥ ३३ ॥

अथ लघु जिनसहस्रनाम लिख्यते ॥

॥ नमः स्त्रिलोकनाथाय ॥ सर्वज्ञाय महात्मने ॥
वक्ष्ये तस्यैव नामानि ॥ मोक्षसौख्याजिलाषया ॥ १ ॥
निर्मलः शास्वतो शुद्धः ॥ निर्विकल्पो निरामयः ॥
निःशरीरो निरातंकः ॥ सिद्धः शुद्धो निरंजनः
॥ २ ॥ निष्कलंको निरालंबो ॥ निर्मोहो निर्मलो
त्तमः ॥ निर्मयो निरहंकारो ॥ निर्विकारोऽनिष्क्रियः
॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः ॥ निमद्यो निर्मलः शि
वः ॥ निस्तरंगो निराकारो ॥ निष्कल्पो निष्कलप्रभुः
॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपज्ञानः ॥ निरागो निरयोजिनः
निःशब्दः प्रतिमश्लेषः ॥ उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥
निःशङ्कात् प्राप्तकैवल्यो नैष्ठिकः शब्दवर्जितः ॥ अनि
द्यो महपूतात्मा ॥ जगत्शिखर शेषरः ॥ ६ ॥ निः
शब्दो गुण संपूर्ण ॥ पापतापप्रणाशनः ॥ सोपयोगात्
शुचंप्राप्तः कर्मद्योतिबला वहः ॥ ७ ॥ अजरौ अमरः
सिद्धः ॥ अर्चितः अक्षयो विभुः ॥ अमूर्तः अच्यु
तो ब्रह्म ॥ विष्णु रीश प्रजापति ॥ ८ ॥ अनिद्यो वि
श्वनाथश्च ॥ अजो अनुपमोजवः ॥ अप्रमेयोजगन्ना
थ ॥ बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलारा
ध्यो ॥ निष्पन्नो ज्ञानलोचनः ॥ अहेयो निर्मलो नि
त्यः ॥ सर्वसदयविवर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोन्नतः ॥

निष्कषायो जगन्तकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥ वीत
 रागोजिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजा नंद ॥ अवा
 ज्ञानसगोचरः ॥ असाध्यशुद्धश्चैतन्यः ॥ कर्मनोकर्म
 वर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतविमलज्ञानी ॥ निस्पृहो नि
 षप्रकाशकः ॥ कर्माजितो महात्मानः ॥ लोकत्रयशि
 रोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरःशंजुः ॥ विश्व वे
 दी पितामहः ॥ सर्वभूतहितोदेव ॥ सर्वलोकसरण्य
 कः ॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो ॥ जगवांस्त्रिजगद्गु
 रुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः ॥ सत्यव्यक्त व्ययात्मकः
 ॥ १५ ॥ अष्टकर्म विनिर्मुक्तः ॥ सप्तधातुविवर्जित
 गौरवादित्रयावारः ॥ सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अ
 जयःप्राप्तकैवल्यः ॥ निर्माणि निरपेक्षकः ॥ निष्कलं
 केवलज्ञानी ॥ मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अना
 मयो महाराध्यो ॥ वरदो ज्ञानपावकः ॥ सर्वेशःसत्
 सुखावासः ॥ जिनेन्द्रोमुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यून
 परमज्ञानी ॥ विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धो जगवान्ना
 थः ॥ प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो
 रौद्रः सर्वज्ञो मदन्तकः ॥ ईश्वरो भुवनाधीशः ॥
 सचित्तः पुरुषोत्तमः २० ॥ सदोजातमहात्मानं ॥ वि
 मुक्तोमुक्तिवद्वज्रः योगीन्द्रो नादिसंसिद्धः ॥ निरीहो
 ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्त्रः ॥ सत्सौ
 ख्य स्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः ॥ कल्या
 णकोष्ठ मूर्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्बद्धः ॥ सर्वपा

पविवर्जित ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः ॥ सर्वभूतहितंकरः
 ॥२३॥ स्वयंविद्यो महात्मानं ॥ प्रसिद्धः पापनाशनः
 तनुमात्रचिदानंद ॥ चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सक
 लातिशयोदेव ॥ मुक्तिस्थो महतांमहः ॥ मुक्तिका
 र्यायसंतुष्टो ॥ निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महादेवो
 महावीरो ॥ महामोहविनाशकः ॥ महाजावो महा
 दर्शः ॥ महामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महा
 योगी ॥ महातपो महात्मकः ॥ महर्षिको महावीर्यो
 महान्तिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महाबंधो ॥
 महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंसो ॥ महा
 महिमः अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसंबोधः ॥
 एकानेकविनिश्चलः सर्वबंधविनिर्मुक्तो ॥ सर्वलोकप्र
 धानकः ॥ २९ ॥ महासूरो महाधीरो ॥ महादुःख विना
 शकः ॥ महामुक्ति प्रदोधीरो ॥ महाहृद्यो महा
 गुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी ॥ निष्कामो
 विषयाच्युतः ॥ अगवंता महान्रांतो ॥ शान्तिकव्या
 णकारक ॥ ३१ परमात्मापरं ज्योतिः ॥ परमेष्ठी प
 मेश्वरः ॥ परमात्मापरानंदः परंपरम आत्मकः ॥ ३२ ॥
 प्रस्तुतो नंत विज्ञानी ॥ संख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ नाक्र
 तिं नाक्षरोवर्णी ॥ व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥
 व्यक्ताव्यक्तजसंबोधः ॥ संसारभेदकारणः ॥ निरव
 द्योमहाराध्यः ॥ कर्मजिह्मस्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोध
 सत्सुजगद्व्यो ॥ विश्वात्मानरकांतकः ॥ स्वयंभूपाप

हृत्पूज्यः पुनीतोविजवःस्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो
 महातीतः ॥ रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपू
 र्णो ॥ देवदेवेशनायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्योजवविध्वं
 सी ॥ योगिनांज्ञानगोचरः ॥ जन्ममृत्यु जरातीतः ॥
 सर्वविघ्नहरोहरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक्क्षब्धसंबन्धः ॥ पवि
 त्रोगुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः लोकालोकप्रका
 शकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्जोजगतूस्वामी इंद्रबन्धः सुरार्चि
 तः ॥ निष्प्रपंचो निरातंको ॥ निःशेषक्लेश नाशकः
 ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो ॥ लोकालोकविलो
 कनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकीशो ॥ लोकाग्रशिखरस्थि
 तः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि ॥ ये पठन्ति पुनः पुनः
 ते निर्वाणपदं यांति ॥ मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥
 इति लघुसहस्रनाम संपूर्णं ॥

॥ सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं ॥ सहृदयं हृदयं गम
 देशनं ॥ अजिनतोत्तमजक्तसुरेश्वरं ॥ नमतशीतल
 नाथजिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहजसुन्दरसद्गुणमन्दिरं ॥
 विमलकेवलबोधविकस्वरं ॥ अतिसुवर्णसुवर्णसमद्युतं ॥
 प्रवरबन्धुरलक्षणसंयुतं ॥ २ ॥ (युग्मं) यदीयजक्ति
 र्जविनां जवे जवे जवेदजीष्टार्थनिदानमद्भुतं ॥ स
 एव नन्दात्मसमुद्भवो जिनः ॥ समर्चनीयः खलुशी
 तलः प्रजुः ॥ ३ ॥ कर्माजितसान् जविनः सुशीतला
 न् ॥ कुर्व म्रदावाक् सुधया दयापरः ॥ सदेव देवो
 जवतात्सदैव मे ॥ सदिष्टसिद्ध्यै जिनराजशीतलः

॥ ४ ॥ अधिगतशिवशर्मा वीतमोहादिकर्मा ॥ दृढ
रथ तनुजम्ना सर्वतः साधधर्मा ॥ त्रिदशमहितमूर्तिः
स्फूर्तिमत्पुण्यकीर्ति ॥ र्जयतु गतजवार्तिः शीतलः
सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति श्रीशीतलजिनः स्तोत्रम् ॥

॥ यस्य ज्ञान दयासिन्धो ॥ दर्शनं श्रेयसे ध्रुवं ॥
सश्रीमान् पार्श्वतीर्थेशो ॥ निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥
वामासूनोर्यशः पुंजै रगाधस्यानघागुणाः ॥ स्मर्यन्ते येन
स स्मार्यो ॥ जवेत्प्राचीन बर्हिषां ॥ २ ॥ विहाय
विषयाशक्तान् ॥ संसारिकसुरासुरान् ॥ सेव्यतामक्ष
यो धीराः पार्श्व देवोपरः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सर्वार्थ
दानेन ॥ येन कद्वपद्मुमाश्चपि ॥ जवेदन्यर्चितो लो
के ॥ सश्रियेचाम्रतायच ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः ॥
जैनलजप्रदायकः ॥ कल्याणकारको ज्ञयात् ॥ श्री
मान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति पार्श्वजिन स्तुतिः

॥ शालिनीबृन्दः ॥ ॥ गौमीग्रामे स्तंजने चारु
तीर्थे ॥ जीरावल्यां पत्तने लोडवाख्ये ॥ वाणारस्यांचा
पिविख्यातकीर्त्ती श्रीपाश्वेशंनौमि शंखेश्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टा
र्थानां स्पर्शने पारिजातं ॥ वामादेव्यानन्दनं देववं
द्यं ॥ स्वर्गेजूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥ २ ॥
जित्वा ज्ञेयं कर्मजालं विशालं ॥ प्राप्यानन्तं ज्ञानर
त्नचिरत्नं ॥ लब्धामंदानंदनिर्वाणसौख्यं ॥ श्री पा०
॥ ३ ॥ विश्वधीशं विश्वालोके पवित्रं ॥ पापागम्यं सो
दलक्ष्मीकलत्रं, अंजो जातं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्री

पा० ॥ ४ ॥ वर्षेरम्ये स्वं गदो न्नागिचंद्र ॥ संख्येमासे
माधवे कृष्णपक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यै दर्शनं यस्य तंच ॥
श्रीपा० ॥ इति शंखेश्वर जिनस्तवः ॥

॥ विशदसङ्गुणराजि विराजितं ॥ घनघनाघनना
दविज्ञाजितं ॥ जजतजक्तिजरेण रमेश्वरं ॥ जगति
पार्श्वजिनेशमनश्चरं ॥ १ ॥ विविधवर्णविभूषितविग्र
हाः ॥ विहितदूर्द्धम दर्पक निग्रहाः ॥ वसुयुगार्कमि
ताः सुकृताकराः जिनवरा प्रजवंतु शिवंकरा ॥ २ ॥ रु
चिरवर्ण निबद्धमनिन्दितं ॥ सुमनसां प्रकरैरजिबंदि
तं ॥ निखिलसाधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नम
तांचितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकलजव्यसरोज विकाशिका ॥
कुमत संतमसोच्चयनाशिका ॥ जिनवरानन पद्मग
तोन्मुदा ॥ जवतु वाग्जिन क्षात्रशुचार्थदा ॥ ४ ॥
इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रज्ञा ॥
ज्ञास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनांजोधौ व्यवस्थायिनः ॥
ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगतास्ते पाठकासाधवः ॥
स्तुत्यायोगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥
सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं ॥ मुक्तिश्री
नगरायनं जिनपतेः स्वर्गापवर्गप्रदः धर्मः सूक्ति
सुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयं श्रयालयं प्रोक्तं तत्त्रि
विधं चतुर्विधं ममीकुर्वतु मे मङ्गलं ॥ २ ॥ नाज्ञेयादि
जिनाधिपास्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः ॥ श्रीमन्तो

जरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥ ये विष्णु
 प्रतिविष्णुलङ्घनधराः सप्ताधिकाविंशति ॥ स्त्रैलो
 क्ये जयदास्त्रिषष्टिपुरुषाः ॥ कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ३ ॥
 कैलाशे वृषजस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी ॥
 चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः ॥ सम्मेतशैलेर्हतां ॥
 शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हतो ॥ नि
 र्वाणाविनयः प्रसिद्धविजवाः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥
 ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतर ज्ञावनामर गृहे. मेरौ कुलाडौ
 स्थिता ॥ जंबूशाढमलि चैत्यशाखिषु तथावद्धार
 रूप्यादिषु ॥ इदवाकारगिरौच कुंरुलनगेष्टीपेच नंदी
 श्वरे ॥ शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतु मे मङ्गलं
 ॥ ५ ॥ यो गर्जावतरोपिजय त्यर्हतां जन्माजिषेको
 त्सवे ॥ यो जातः परिनिक्रमेवचजवोयः केवलज्ञान
 जाक् ॥ यः कैमल्यपुरप्रवेशमहिमासंज्ञावितः स्वर्गि
 जिः ॥ कट्याणानि च तानि पंचसततं कुर्वंतु मे
 मंगलं ॥ ६ ॥ ये पंचौषधिरुद्धयः श्रुततयोरुड्गि
 ताः पंचये ॥ येचाष्टांगमहा निमित्तकुशला ये ष्ठीवि
 धाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्च येपि बलिनो ये बुद्धि
 रुद्धीश्वरा ॥ सप्तै ते सकलाश्च ते गणधृताः कुर्वंतु
 मे मङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्यश्चाष्टजयादिका द्विगुणिता
 विद्यादिका देवता ॥ श्रीतीर्थं कर मातृकाश्च जन
 कायदाश्च यक्षीश्वराः ॥ द्वात्रिंशत् त्रिदशग्रहानिधि
 सुरादिकन्यकाश्चाष्टधा ॥ दिक्पाला दश इत्यमीसुर

गणाः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्ग
लाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां ॥ पूर्वाह्णेपि महोत्स
वेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ ये श्रृण्वन्ति पठन्ति
तैश्च मनुजैर्धर्मार्थकामान्विता ॥ लक्ष्मीराश्रयतेवि
पायरहिताः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ९ ॥ इति श्री ॥

शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं ॥ नदेवंनबन्धुर्नकर्म
नकर्ता नश्रंगं नसंगं नशृङ्गा नकामं ॥ चिदानन्दरूपं
नमोवीतरगं ॥ १ ॥ नबन्धो नमोक्षो नरागादिषोकं ॥
नयोगंनजोगं नव्याधिर्नशोकं ॥ नक्रोधं नमानं नमाया
नलोचं चि० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा
नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिद्रा ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं
नमुद्रा ॥ चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्युं नमोदं नचिं
ता ॥ नक्षुद्रद्र ॥ नजीतं नकृष्यं नतुंदा, नस्वामीन
भृत्यं नदेवोनमर्त्यं ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदंडे त्रिखंडेह
रेविश्वव्यापं ॥ कृषीकेश विध्वस्त कम्मरिजालं ॥ न
पुण्यं नपापं नश्रद्ध्यानप्राणं ॥ चि० ॥ ५ ॥ नबालं
नवृद्धं नविद्वान्नमूढा ॥ नठेयं नजेयं नमूर्त्तिर्नमीहा
नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंडा ॥ चि० ॥ ६ ॥ नश्रा
द्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या ॥ नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टौ न
प्रव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नश्राद्यो नदीनं चि० ॥ ७ ॥
इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्त्ववेदी ॥ नपूर्णं न शून्यंसचैतन्य
रूपं ॥ न अन्योजिजिह्वंनपरमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥
आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिश्चैतन्यरत्नाकरं ॥ सर्वे

भूतगतागते सुखदुःखज्जातात्वयासर्वग ॥ त्रैलोक्याधि-
पतिस्वयंस्व मनसा ध्यायंति योगीश्वराः ॥ वंदे तं हरि-
वंश हर्षहृदयं श्री मान भू दच्युतः ॥ ९ ॥ इति
श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य ॥ दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं
स्वर्ग सोपानं ॥ दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन
जिनेन्द्राणां ॥ साधूनां वंदनेन च ॥ न तिष्ठति चिरं पा-
पं ॥ विद्महे स्तेयथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य ॥ सं-
सारध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्तपद्मस्य समस्तार्थप्रका-
शकं ॥ ३ ॥ दर्शनं च जिनेन्द्रस्य ॥ सद्गुणमृतवर्षणं जन्म-
दाघविनाशाय ॥ वृंहणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिने जक्ति
जिने जक्ति ॥ जिने जक्ति दिने दिने ॥ स दामेस्तु, स
दामेस्तु, स दामेस्तु जवे जवे ॥ ५ ॥ न हि त्राता न हि
त्राता ॥ न हि त्राता जगत्त्रये ॥ वीतरागसमो देवो ॥
न भूतो न जविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति ॥
त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात् सर्वं प्रयत्नेन ॥ रक्षरक्ष जि-
नेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागमुखं दृष्ट्वा ॥ पद्मरागसमप्रज्ञं ॥
नै कजन्मकृतं पापं ॥ दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो
मंगलं नित्यं ॥ सिद्धाजगतिमंगलं ॥ मंगलं साधवो मु-
ख्यं ॥ धर्मः सर्वत्र मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इहाहं-
तः ॥ सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लोकोत्तमो यतीशा-
नां ॥ धर्मो लोकोत्तमो हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदा हतः ॥

सिद्धाशरणमंगलं ॥ साधवः शरणं लोके ॥ धर्मं
शरणमर्हतां ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कार स्तोत्रं ॥

॥ अथ ऋषिमंजल स्तोत्र ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्य ॥ मक्षरं व्याप्य यत्स्थितं ॥
अग्निज्वालासमंनाद ॥ बिंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥
अग्निज्वालासमाक्रांतं ॥ मनोमलविशोधकं ॥ देदी
प्यमानं हृत्पद्मे ॥ तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥ अर्ह
मित्यक्षरं ब्रह्म ॥ वाचकं परमेष्विनः ॥ सिद्धचक्रस्य
सद्बीजं ॥ सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्हदं न्यर्ह
शेच्य, ॐ सिद्धेज्यो नमोनमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः ॥
उपाध्यायेभ्यः ॐ नमः ॥ ५ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः ॥
ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः ॥ ६ ॥ ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्यः ॥ श्रा
रित्रेभ्यस्तु, ॐ नमः ॥ ७ ॥ श्रेयसेस्तु, श्रियेस्त्वेत ॥
दर्हदाद्यष्टकं शुभं ॥ स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं ॥ पृथग्बी
जसमन्वितं ॥ ८ ॥ आद्यं पदं शिखारक्षे ॥ त्परं रक्षेत्तु
मस्तकं ॥ तृतीयं रक्षेन्नेत्रे ॥ तुर्यं रक्षेच्च नासिकां
॥ ९ ॥ पंचमं तु मुखं रक्षेत् ॥ षष्ठं रक्षेच्च घटिकां ॥ नाभ्यं
तंसप्तमं रक्षेत् ॥ रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ १० ॥ पूर्वप्रणवतः
सांत ॥ सरेफोद्यब्धिपंचषान् ॥ सप्ताष्टदशसर्वाका
न् ॥ श्रितोर्विंदुस्वरान् पृथक् ॥ ११ ॥ पूज्यनामाक्षरा
आद्याः ॥ पंचातो ज्ञानदर्शन ॥ चारित्र्येभ्यो नमो
मध्ये ॥ १२ ॥ सांतहसमलंकृतः ॥ १३ ॥ ॐ ॥ ह्रीं ॥ क्लीं ॥
ह्रूं ॥ ह्रौं ॥ ह्रौं ॥ ह्रौं ॥ ह्रौं ॥ ह्रौं ॥ असिश्चाउसा

ज्ञानदर्शनचारित्र्येभ्योनमः ॥ जंबूवृक्षधरोद्गीपः ॥ द्वारो
 दधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्ट ॥ काष्ठाधिष्ठैरलंकृ
 तः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरुः ॥ कूटलक्षैरलंकृतः ॥
 उच्चैरुच्चैस्तरस्तार ॥ स्तारामंरुलमंमितः ॥ १२ ॥
 तस्योपरिसकारांतं बीजमध्यास्यसर्वगं ॥ नमामिबिं
 वमार्हत्यं ॥ ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं
 निर्मलंशांतं ॥ बहुलं जायतो जित्तं ॥ निरीहं
 निरहंकारं ॥ सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुरुतं
 शुभं स्फीतं ॥ सात्त्विकं राजसंमतं ॥ तामसं चिर
 संबुद्धं ॥ तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारंच निरा
 कारं ॥ सरसं विरसंपरं ॥ परापरं परातीतं ॥ परं
 पर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णंच ॥ त्रिवर्णं तुर्य
 वर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं ॥ सपरंच परापरं ॥ १७ ॥
 सकलं निष्कलंतुष्ट ॥ निवृतं त्रांतिवर्जितं ॥ निरंज
 नं निराकारं ॥ निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं
 ब्रह्मसंबुद्धं ॥ बुद्धं सिद्धं मतंगुरु ॥ ज्योतीरूपं महा
 देवं ॥ लोकालोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु,
 वर्णांतः ॥ सरेफोबिंदुमंमितः तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहु
 धानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः
 सर्वे ॥ वृषजाद्याजिनोत्तमाः ॥ वर्णे निर्जैनिजैर्यु
 क्ता ॥ ध्यातव्यास्तत्रसंगताः ॥ २१ ॥ नादश्च द्रसमा
 कारो ॥ बिंदुनीलसमप्रजः ॥ कलारुणसमासांतः ॥
 स्वर्णाक्षः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरः संक्षीन ईकारो ॥

विनीलोवर्णतःस्मृतः॥वर्णानुसारसंलीनं तीर्थकृन्मंरुलं
 स्तुमः ॥२३॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतौ॥नादस्थिति समाश्रितौ
 ॥ बिंदुमध्यगतौनेमि ॥ सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥
 पद्म प्रज्ञवासुपूज्यौ ॥ कलापदमधिष्ठितौ शिरर्द्धस्थि
 तिसंलीनौ ॥ पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषा
 स्तीर्थकृतः सर्वे ॥ हरस्थाने नियोजिताः ॥ माया
 बीजाक्षरंप्राप्ता ॥ श्रुतुर्विंशतिरर्हतां ॥ २६ गतरागद्वे
 षमोहाः ॥ सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदाः सर्वकालेषु ॥
 ते जवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययच्चक्रं तस्य
 चक्रस्ययाविज्ञा ॥ तयाह्लादित सर्वाङ्ग मामांहिनस्तु
 काकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० ॥ मामांहिनस्तु, राकि
 नी ॥ २९ ॥ देवदे० ॥ मामांहिनस्तु, लाकिनी ॥
 ॥ ३० ॥ देव० ॥ मामांहिनस्तु, काकिनी ॥ ३१ ॥
 देवदे० ॥ मामांहिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० ॥
 मामांहिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० ॥ मामांहि
 नस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतुपन्नगाः
 ॥ ३५ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥
 देवदे० ॥ मामांहिंसंतुराक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० ॥
 मामांहिंसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतु
 सिंहाकाः ॥ ३९ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतु दुर्ज्जनाः
 ॥ ४० ॥ देवदे० ॥ मामांहिंसंतु जूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्री
 गौतमस्ययामुद्रा ॥ तस्यायाजुविलब्धय, ॥ तान्निरज्यु
 यतज्योति ॥ रहंसर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवा

सिनो देवा ॥ देवाञ्छूषीष्ठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि
ये देवाः ॥ सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिल
ब्धयो येतु ॥ परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयोदे
वाः ॥ मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाञ्छूतवेता
लाः ॥ पिशाचामुज्जलास्तथा ॥ तेसर्वेऽप्यु पशाम्यन्तु दे
वदेव प्रजावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्चमृतिर्लक्ष्मी ॥ गौ
री चंद्नी सरस्वती ॥ जया वा विजयानित्या ॥ ह्रीं
न्नाजितामद ड्वा ॥ ४६ ॥ कामाङ्गाकामबाणाच ॥
सानन्दानन्दमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री ॥ क
ला कालीकलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वामहादेव्यो ॥
वर्त्ततेयाजगत्त्रये ॥ मह्यंसर्वाः प्रयत्नन्तु ॥ कान्तिकीर्ति
धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः प्राप्यः श्री
ऋषिमङ्गलस्तवः ॥ जाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राण कृ
तेनयः ॥ ४९ ॥ रणेराजकुलेवह्नौ ॥ जलेदुर्गे गजे ह
रौ ॥ इमशाने विपिने घोरे ॥ स्मृतो रक्षति मानवं
॥ ५० ॥ राज्यत्रष्टा निजं राज्यं ॥ पदत्रष्टा निजं प
दं ॥ लङ्मीञ्छानिजां लक्ष्मीं ॥ प्राप्नुवन्ति न संश
यः ॥ ५१ ॥ जार्यार्थीलज्जते जार्या ॥ पुत्रार्थी लज्जते
सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं ॥ नरः स्मरण मात्रतः
॥ ५२ ॥ स्वर्णैरूप्ये पटेकांस्ये ॥ लिखित्वा यस्तु पूज
येत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः ॥ गृहेवसति शाश्वती
॥ ५३ ॥ नृज्यपत्रेलिखित्वेदं ॥ गलके मूर्ध्नि बाहुजं ॥
धारितं सर्वदा दिव्यं ॥ सर्वजीति विनाशकं ॥ ५४ ॥

जूतैः प्रेतैर्ग्रहै र्यक्षैः ॥ पिशाचैर्मुजलैर्मलैः ॥ वातपित्त
 कफोद्रेकै, मुच्यते नात्रसंशयः ॥५५॥ जूर्जु वः स्वस्त्व
 यीपीठ ॥ वर्तिनः शाश्वता जिनाः ॥ तैस्तुतैर्वदितै
 र्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलंश्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतज्ज्ञोप्यमहा
 स्तोत्रं ॥ नदेयं यस्यकस्यचित् ॥ मिथ्यात्व वासिने द
 ते ॥ बाधहत्या पदेपदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपः
 कृत्वा ॥ पूजयित्वाजिनावली ॥ अष्टसाहस्रिको जा
 पः ॥ कार्यं स्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरंप्रा
 त ॥ र्येपठंति दिने दिने ॥ तेषां नव्याधयो देहे ॥
 प्रजवंति नचापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधियावत् ॥
 प्रातःप्रातस्तुयःपठेत् ॥ स्तोत्रमेत न्महातेजो ॥ जिन
 बिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतोर्विबेजवेसस
 मके ध्रुवं ॥ पदंप्राप्नोतिशुद्धात्मा ॥ परमानंदनंदितः
 ॥ ६१ ॥ विश्वबंधो जवेत् ध्याता ॥ कट्याणानिचसो
 श्रुते ॥ गत्वास्थानंपरं सोपि ॥ जूयस्तु न निवर्तते
 ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं ॥ स्तुतीनामुत्तमंपरं ॥
 पठनात्स्मरणाज्जापा ह्वन्यते पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति
 श्रीऋषिमंरुलंस्तोत्रं ॥ द्वेपकश्लोकान्निराकृत्यमूलयं
 त्रकटपानुसारेण लिखितं गणिजिः श्रीक्षमाकट्या
 णो पाध्यायैः तस्योपरि मयापि लिखितं इदं स्तोत्रं ॥
 ॥ अथ श्रीगौमीपार्श्वजिन वृद्धस्तवनलि० ॥

॥ (दूहा) बाणी ब्रह्मावादनी ॥ जागै जगवि
 ख्यात ॥ पासतणा गुणगावतां ॥ मुक्त मुख वसज्यो

मात ॥ १ ॥ नारंगैश्चण्हिलपुरै ॥ अहमदा वादै
 पास ॥ गौडीजी धणी जागतौ ॥ सहुनी पूरे आस
 ॥ २ ॥ सुज वेला सुजदिन घनी ॥ महुरत एकमंमाण ॥
 प्रतिमा ते इह पासनी ॥ थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥
 (ढाल) गुणहि विसाला मंगलीक माला ॥ वामा
 नो सुत साचोजी ॥ धण कणकंचण मणिमाणकदे ॥
 गौडीजी धणी जाचोजी ॥ ४ ॥ (गुण) अण्हिलपुर
 पाटणमांहे प्रतिमा ॥ तुरक तणें घर हुंतीजी ॥
 अश्वनी जूमि अश्वनी पीमा ॥ अश्वनी वालि विगू
 ती जी ॥ ५ ॥ (गुण) जागंतो जह जेहनें कहि
 ये ॥ सुहणो तुरकनै आपैजी ॥ पासजिने सर केरी
 प्रतिमा ॥ सेवक तुज संतापै जी ॥ ६ ॥ (गुण)
 प्रह उठीनें परगट कर जे ॥ मेघा गोठीनें देजे
 जी ॥ अधिको मलेजे उठो मलेजे ॥ टक्का पांचसै
 लेजेजी ॥ ७ ॥ (गुण) नहिं आपिस तोमारीस मुर
 कीस ॥ मोर बंध बंधास्यैजी ॥ पुत्र कलत्र धन हय
 हाथी तुज ॥ लठि घणी घर जास्यै जी ॥ ८ ॥ (गुण)
 मारग पहिलो तुजनें मिलस्यै ॥ सारथवाहजेगोठी
 जी ॥ निखवट टीलो चोखा चोड्या ॥ वस्तु बहै
 तसुपोठी जी ॥ ९ ॥ (गुण) (दूहा) मनसुंबीहनो
 तुरकडो ॥ मांनें वचन प्रमाण ॥ बीबीनेंसुहणा
 तणो ॥ संजलावै सहिनाण ॥ १० ॥ बीबी बोले
 तुरकनें ॥ वमा देव है कोय ॥ अबसताब परगटकरो ॥

नहीतो मारै सोय ॥ ११ ॥ पाठलीरात परोमीथै ॥
 पहली बंधै पाज ॥ सुहणा माहेंसेठनें ॥ संजलावै जह
 राज ॥ १२ ॥ (ढाल) एम कही यह आयो
 राते ॥ सारथ बाहुनें सुहणें जी ॥ पासतणी प्रतिमा
 तुंलेजे ॥ लेतो सिरमत धुणे जी ॥ १३ ॥ (एम०)
 पांचसैटक्का तेहनें आपे ॥ अधिको मा आपिस
 वारूजी ॥ जतन करी पुहचाडे थानकि ॥ प्रतिमा
 गुण संजारै जी ॥ १४ ॥ (एम०) तुऊनें होसी
 बहु फलदायक ॥ जाई गोठीनें सुणजे जी ॥ पुजी
 स प्रणमीस तेहनापाया ॥ प्रहउठीनें थुणजे जी
 ॥ १५ ॥ (ए०) सुहणो देईनें सुरचाढ्यो ॥ अपने
 थानक पहुतो जो ॥ पाटण माहें सारथबाहु ॥ हींढै
 तुरकनें जोतो जी ॥ १६ ॥ (ए०) तुरकै जातां दीठो
 गोठी ॥ चोखा तिखक खिलाडै जी ॥ संकेत पहुतो
 साचोजाणी ॥ बोलावै बहुलामै जी ॥ १७ ॥ (ए०)
 मुऊ घरि प्रतिमा तुऊनें आपुं ॥ पास जिणैसर
 केरीजी ॥ पांचसै टक्का जो मुऊ आपै ॥ मोलन
 मागुं फेरीजी ॥ १८ ॥ (ए०) नाणो देई प्रतिमा
 लेई ॥ थानक पहुतो रंगैजी ॥ केसरचंदन मृगमद
 घोली ॥ विधसुं पूजे रंगेजी ॥ १९ ॥ (ए०) गादी
 रूनी रूनी कीधी ॥ ते मांहि प्रतिमा राखैजी ॥
 अनुक्रम आव्यापारकरमाहें ॥ श्रीसंघनें सुर सा
 खै जी ॥ २० ॥ (ए०) उज्जव दिनश अधिका

थाये ॥ सत्तर जेद सनात्रो जी ॥ ठामश ना दर
 सण करवा ॥ आवै लोक प्रजातो जी ॥ ११ ॥ (ए०)
 (डुहा) इकदिन देखै अवधिसुं ॥ पारकर पुरनो
 जंग ॥ जतनकरुं प्रतिमा तणो ॥ तीरथ अठै अन्न
 ग ॥ १२ ॥ सुहणो आपै सेठनें ॥ थल अटवी उज्जा
 रु ॥ महिमा आस्यै अति घणी ॥ प्रतिमा तिहां
 पुहचाड ॥ १३ ॥ कुसल खेम तिहां अठै ॥ मुऊनें
 तुऊनें जाणि ॥ संका ठोमी काम करि ॥ करतो
 मकरिस काणि ॥ १४ ॥ (ढाल) पास मनोरथ
 पूराकरै ॥ वाहण एक वृषज जो तरै ॥ पारकरथी
 परियाणो करै ॥ इक थलचढ बीजो ऊतरै ॥ १५ ॥
 बारै कोस आव्या जेतलै ॥ प्रतिमा नविचालै ते
 तलै ॥ गोठी मनह विमासण थई ॥ पास जुवन मंरा
 वूं सही ॥ १६ ॥ आ अटवी किमकरुं प्रयाण ॥ कु
 टको कोइनदीसै पाहण ॥ देवल पास जिनेसर
 तणो ॥ मंरावुं किम गरथै विणो ॥ १७ ॥ जलविन
 श्रीसंघरहस्यै किहां ॥ सिद्धावटो किम आवै इहां ॥
 चिंतातुर थयो निडालहै ॥ यद्दराज आवीनें कहै
 ॥ १८ ॥ गुंहली ऊपर नांणो जिहां ॥ गरथघणो
 जाणीजे तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारीनें ठाणि ॥ पाह
 ण तणी उल्लटस्यै खाणि ॥ १९ ॥ श्रीफल सजल
 तिहां किल जूओ ॥ अमृत जलनीसरसी कूओ ॥
 खाराकूआ तणो इह सैनांण ॥ जूम पड्यो छै नीलो

ढाण ॥ ३० ॥ सिद्धावटो सीरोही वसै ॥ कोढपरा
 जवियो किसमिसै ॥ तिहां थकी तू इहां आणजे ॥
 सत्यवचन माहरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथि
 र थापियो ॥ सिद्धावटनें सुहणो दियो ॥ रोगगमी
 नें पूरुं आस ॥ पास तणो मंरें आवास ॥ ३२ ॥
 सुपन माहे मान्यो तेवैण ॥ हेम वरण देखाड्यो
 नैण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुवा ॥ सिद्धावटैने
 गया तेरुवा ॥ ३३ ॥ सिद्धा वटो आवै समरो ॥
 जीमें खीरखांर घृत चूरमो ॥ घनै घाट करै कोर
 णी ॥ लगन जलै पाया रोषणी ॥ ३४ ॥ थंजश कीधी
 पूतली ॥ नाटक कौतिक करती रखी ॥ रंग मंरुप
 रलियामणो रसै ॥ जोतां मानवनो मन हसै ॥ ३५ ॥
 नीपायो पूरो प्रासाद ॥ स्वर्गसमो मंडे संवाद ॥
 दिवस विचारी ईडोवड्यो ॥ ततखिण देवल ऊपर
 चड्यो ॥ ३६ ॥ शुज लगन शुज वेलावास ॥ पवासण
 वैठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरुसमान ॥ एकल
 मल्लवगडे रहै वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांज
 ली ॥ तवन मांहि सूधी सांकली ॥ गोठी तणा
 गोतरीया अठै ॥ यात्र करीनें परणे पठै ॥ ३८ ॥ (दूहा)
 विघन विडारण यद्द जगि ॥ तेहनो अकल सरूप ॥
 प्रीतकरी श्रीसंघनें ॥ देखाडै निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरु
 ओ गौरी पासजिन ॥ आपै अरथजंकार ॥ सानि
 ध करै श्रीसंघनें ॥ आस्था पूरणहार ॥ ४० ॥ नील

पलाणै नीलहय ॥ नीलो थइ असवार ॥ मारग
चूकामानवी ॥ बाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल)
बरण अठार तणो लहै जोग ॥ विघन निवारै टालै
रोग ॥ पवित्र थई समरै जे जाप ॥ टालै सगला
पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घरि धन नो सूत्र ॥
आपै अपुत्रीयानें पुत्र ॥ कायरनें सूरापण धरै ॥
पार उतारै लढी वरै ॥ ४३ ॥ दो जागीनें दै सोजा
ग ॥ पगविहूणानें आपै पग ॥ ठामनहीं तेहनें बैठा
म ॥ बंठित पूरै अजिराम ॥ ४४ ॥ निरधास्या नें छे
आधार ॥ जवसायर उतारै पार ॥ आरतीआनी आर
त जंग ॥ धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समस्यां
सहाय दीयै यक्ष राज ॥ तेहना मोटा अठै दिवाज ॥
बुद्धि हीणनें बुद्धि प्रकास ॥ गूंगानें छै वचन बिला
स ॥ ४६ ॥ दुखियांने सुखनो दातार ॥ जय जंजण
रंजण अवतार ॥ बंधन तूटै बेडी तणा ॥ श्रीपार्श्व
नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्रीपार्श्व
नाम अक्षर जपै ॥ विश्वानर विसराल ॥ हस्ति यूथ
दूरेटलै ॥ दुद्धरसींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा
जयचकवै ॥ विष अमृत उडकार ॥ विषधरनो विष
ऊतरै ॥ संग्रामें जयजयकार ॥ ४९ ॥ रोग दाखिऊ
दुःख ॥ दोहग दूर पुलाय ॥ घरमेसर श्री पासनो ॥
महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (करुखानीचाल) १
उंजितुं उंजितुं उंज उपसम धरी ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री

पार्श्व अक्षर जपंतै ॥ जूतनें प्रेत जोटिंग ब्यंतर
 सुरा उपसमै ॥ वार इकवीस गुणंतै ॥ ५१ ॥ (उं)
 डुझरा रोग सोगा जरा जंतनें ॥ ताव एकांतरा
 डुत्तपंतै ॥ गर्जबंधन ब्रणं सर्पविहू विषं ॥ चालिका
 वालमेवा ऊखंतै ॥ ५२ ॥ (उं) साइणी माइणी
 रोहणी रंकणी ॥ फोटका मोटका दोषहुंतै ॥ दाढ
 उंदरतणी कोल नोला तणी ॥ खान सीयाल विक
 राखदंतै ॥ ५३ ॥ (उं) धरणेंद्र पदमावती समर
 सोजावती ॥ वाट आघाट अटवी अटंतै ॥ लखमी
 लीखामिलै सुजस वेला वलै ॥ सयल आस्या फलै
 मन हसंतै ॥ ५४ ॥ (उं) ॥ अष्टमहाजय हरै कान
 पीमा टलै ॥ ऊतरै सूल सीसगजणंतै ॥ वदत वर
 प्रीतसुं प्रीति विमला प्रजू ॥ श्रीपास जिण नाम
 अजिराम मंतै ॥ ५५ ॥ (उं जितु) इति श्रीगोडी
 पार्श्वनाथ जी वृद्ध स्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीजीरुजंजन पार्श्वनाथ ठंद ॥

॥ जुजंगी ठंदनी चाल ॥

॥ वारु विश्वमां देश काशी विराजे, जिहां जान्ह
 वी नीर गंजीर गाजे ॥ पुरी नाम वाराणसी तिहां
 प्रसिद्धि, शोजा स्वर्गनी जिणे उलाही लीधी ॥ १ ॥
 घणुं शुं वखाणे कवि घाट तेहनो, सहु चित्त चाहे
 जोवा रूप जेहनो ॥ धराधीश तिहां खड्गधारी धरा
 ने पाले, प्रेमशुं अश्वसेनाजिधाने ॥ २ ॥ वामा तेह

नी गेहनी रूपे रंजा, शीले सर्व नारी जीती ए अचं
जा ॥ सदा सुंदरी ते सोहे चंद्र वयणी, सुती सेज
मां एकदा मध्य रयणी ॥ ३ ॥ सुरलोक दशमां थकी
जे सनूरे, प्रभुपार्श्व वामाकुखे पुण्यपूरे ॥ चतुर्थिदिने
चैत्रनी कृष्ण पक्षे, वस्या गर्जवासे विशाखा सुरदे
॥ ४ ॥ देवी चौद सुहणां तदा दिव्य देखे, महामो
द पामी माने तेह लेखे ॥ जायो पोश मासे दशमी
अंधारी, आखाविश्वनो जेह उद्योतकारी ॥ ५ ॥
मलि दिगकुमारी सुरेंद्रे मलायो, गायो हूँकारायो
पूजीने वधायो ॥ वधंते प्रभु यौवने जाम जायो,
प्रजावती राज कन्या प्रणायो ॥ ६ ॥ विषय जोग
विलशी वस्या गृहवासे, वरश त्रीशमे व्रत लीधुं
उद्धासे ॥ ज्याशी रात्रि मौने रक्षा मुक्ति वासी, तप
स्या करी शुक्ल ध्यानाज्यासी, ॥ ७ ॥ चोखे चित्त निर
दोष चारित्र पाली, बहु कर्मना वृद्धनां मूल बाली ॥
थया केवली चैत्रनी कृष्ण चोथे, देखे लोक अलोकने
ज्ञान ज्योते ॥ ८ ॥ मली देवताये महामोदधारी, कस्यो
त्रिगडो विश्व व्यामोहकारी ॥ स्वामी दिव्य सिंहासने
बेठासोहे ॥ वारे परखदानां बहु मन्नमोहे ॥ ९ ॥
नवे नेहशुं एहने जे निहाले ॥ त्रिधा ताप संताप ते छूर
टाळे ॥ अहो एक नजरे जिणे एह दीठो, मुने मान
खो तेहनो लागे मीठो ॥ १० ॥ दीये देशना दीन
बंधु दयानी, प्राणी पुण्य पामी सुणो जैन वाणी ॥

લહી દુર્લભ માનવં એ શરીરં, મુધા કાં ગમોઢો બુધ
 બોધ હીરં ॥ ૧૧ ॥ મદે જેહ માતા પડ્યા મોહ પા
 સે, ધને જેહ ધાતા વિષયને વિલાસે ॥ મુંજાયા મુગ્ધ
 માયા તણા પંદ માંહી, મિથ્યા તે પ્રસ્યા શુદ્ધને તે ન
 ચાહી ॥ ૧૨ ॥ ધરે ધર્મને જે હોઈ ધર્મ ધોરી, તજી
 કર્મને તે કાપે કર્મ દોરી ॥ તજી શુદ્ધને તે લહે શુદ્ધ
 હેતુ, થાય તેહ મિથ્યાતનો ધૂમ કેતુ ॥ ૧૩ ॥ વસી
 વાસના જેહની જૈન વચણે, નાવે આમલો તેહને કો
 ઇ નચણે ॥ જેહનાં ચિત્ત સિદ્ધાંત માંહે રમેઢે, કિમ
 તેહ જૂલા કહોને જમેઢે ॥ ૧૪ ॥ મિથ્યાતે લીના
 તેહને તે ગમેઢે, દોષી જીવના તે જિહાં તિહાં દમે
 ઢે ॥ ફરી લાલ્લ ચોરાશીના ફેર માંહે, વિના નાથ
 તેહને ધરે કોણ બાહે ॥ ૧૫ ॥ જિણે જૈન સિદ્ધાંત
 ની યુક્તિ જાણી, કહોનેકોઈ તેહને ગમે અન્યવાણી ॥
 હીરે જે હૃદયો ઝંલણી હેત આણી, કહો કિમ
 તે સંગ્રહે કાચ પ્રાણી ॥ ૧૬ ॥ દેશ દેશનાને પ્રજા
 તીર્થ થાપે, જગ જંતુ બંધુપણે બોધ આપે ॥ મહી મં
 મલે વિચરે જેમ વાયુ, પુરું જોગવી એકસો વર્ષ આયુ
 ॥ ૧૭ ॥ માસે શ્રાવણે શૈલ સમેત શ્રૃંગે, વશ્યા શ્વેત
 ષષ્ઠી દિને મુક્તિસંગે ॥ પ્રજા જીવ જંજન નામે જંજ
 તા, જાંજે જીડને સુખ આપે અનંતા ॥ ૧૮ ॥ સેવો
 શુદ્ધ બુદ્ધે સદા બોધ દાતા, તજો જાવ તક્તે પ્રજા
 જૂત ત્રાતા ॥ સેવ્યો હેજશું એહ સહજે સધારે,

पूज्यो प्रेमशुं पापना बंध बारे ॥ १९ ॥ वधे वंदतां
संपदा जे वधारे, धखुं ध्यानमां सेवकां बाहे धारे ॥
अर्च्यो उल्लटे आपदाथी उगारे, स्तव्यो त्रिविधे जेह
संसार तारे ॥ २० ॥ नम्यो नेहशुं जेह नवेनिद्धि
आपे, कीजे चाकरी तो चारे गति कापे ॥ जोतां
जेहनी आदि कोई न जाणे, कवि तेहना गुण केता
वखाणे ॥ २१ ॥ नमो नाथ अनाथ सनाथ कारी,
नमस्ते अरूपी बहु रूपधारी ॥ नमो बुद्धि शुद्धा
तमा सिद्धि जर्ता, नमो पारगामी नमो सौख्य कर्ता
॥ २२ ॥ नमो मुक्ति दाता नमो तुं विधाता, नमो
विश्वनेता नमो तुं विख्याता ॥ नमो सर्व वेदी अवे
दी नमस्ते. नमो शंकरो सर्वव्यापी नमस्ते ॥ २३ ॥
सेढी वेत्रवत्योपकंठे दिदारु, खेकुं हरीआहुं वसे
गाम वारु ॥ राजे तत्र त्रेवीशमो तीर्थराय, जेहना
नामथी कोटि कल्याण आय ॥ २४ ॥ धरणेंद्र पद्मा
वतीने पसाय, सदा संघना विघ्न दूरे पलाय ॥ उद
यरत्न जांखे गाता पार्श्वस्वामी, पूरी आजमेंतो नवे
निद्धिपामी ॥ २५ ॥

॥ अथ सरस्वती अष्टक प्रारंभः ॥

॥ हरिगीत ठंड ॥

॥ बुद्ध विमलकर नाव बुधवर, निरूप रमनी,
निर खियें ॥ वर देय न बाला, पद प्रवाला, मंत्रमा
ला हर खियें ॥ स्थिर आनंजा, अति अचंजा, रूप

रंजा जलकती ॥ जजियें जवानी, जगत जानी, राज
 रानी सरस्वती ॥ १ ॥ सुरराज सेवित, देख दैवत,
 पद्म पेखत, आसनं ॥ सुखदाय सूरति, माय मूरति,
 दुःख दुरति निवारनं ॥ त्रिहु लोक नारक, विघ्न
 वारक, धरा धारक, धरपती ॥ जजियें ॥ २ ॥
 केवियां कोपित, लोच लोपित, अवनि उपित, ईश्व
 री ॥ शंतोष धारन, विघन वारन, मदन मारन,
 महेश्वरी ॥ खल दह्यां खंरुन, ठिड ठंडन, दुष्ट दंरुन,
 नरपती ॥ जजियें ॥ ३ ॥ शिव शक्ति साची, रंग राची,
 अज अजाची, योगिनी ॥ मद ऊरन मत्ता तरन तत्ता,
 धत्त धत्ता ध्वंगिनी ॥ जिनआणपंति, मन रमंति, धवल
 दंति, वरमती ॥ जजियें ॥ ४ ॥ जलथल जनानी पव
 न पानी, मति बखानी, बीजली ॥ गिरवरां गहन,
 वाघ वाहन, सर्प साहन, शीतली ॥ हृदहांक धारी,
 हत हजारी, धनुष धारी, जगवती ॥ जजियें ॥ ५ ॥
 ऊणणाट ऊद्धरि, धिधिम धपवरि, रिरिरिरिधर, खज्जि
 यें ॥ धिधिधौंकिधौं, गरुदि धिधिक धिरतं, धिधिक धौंग
 रुदी गज्जियें ॥ झांकिझौंझौं रुरु मतिझां तत्तकि
 त्रांत्रां दमकती ॥ जजियें ॥ ६ ॥ रिरि रमकि रमि
 रिमि, जिजिम जिमि जिमि ठमकि ठम पग रच्चि
 यें ॥ घम घमकि घम घम ग्रहणिक ग्रहणि, गमअ
 ति अमग नृत्ति मच्चियें ॥ तत थेइय तांनन, मात
 मानन, अचल आनन दरसती ॥ जजियें ॥ ७ ॥ चव

चक्र चालन, ऊटिक जालन, गर्व गालन, गंजनी ॥
 विरदां विदारन, महिष मारन, दक्षिद्र दारन, जंज
 नी ॥ चरचिये चंडी, खलांखंकी, मदन मंडी मलक
 ती ॥ जजियें ॥ ८ ॥ कविकरे अष्टक, टले कष्टक
 विसन पृष्टक कज्जियें ॥ मणिमौलि मंडित, पढेपंरि
 त, ए अखंरित पेखियें ॥ दयासुर देवी, सुरांसेवी,
 नित नमेवी, जगपती ॥ जजियें ॥ ९ ॥ इति समाप्त ॥
 ॥ अथ क्रोध मान माया लोचनो ठंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ पहेलां सरस्वतीनुं लीजे नाम, चोवीश जिनने
 करुं प्रणाम ॥ क्रोध मान मायाने लोच, जाखुं
 अर्थ करी थिर थोच ॥ क्रोधें तप कीधो परजले,
 क्रोधें कर्म घणेरों फले ॥ क्रोधें करणी रूडी जाय,
 क्रोधें समतारस सूकाय ॥ १ ॥ क्रोध तणे वश कांइ
 नवि गणे, मातपिता गुरुने अवगणे ॥ क्रोधें पंचेंद्रि
 य मूजाय, क्रोधें जेर घणेरों थाय ॥ २ ॥ क्रोधें
 विकथा वाधे घणी, क्रोधें कर्म निकाचित जणी ॥
 क्रोधें बे बंधव आंफले, क्रोधें जरत बाहुंबल लडे ॥
 ॥ ४ ॥ क्रोधें अचंकारी जटा, क्रोधें परशुं करे खटप
 टा ॥ क्रोधें अरजुन मालि नाम, महावीर स्वामी
 किधो सुगम ॥ ५ ॥ क्रोधें कूड कपट केलवें, क्रोधें
 चुंरि गति मेलवे ॥ क्रोधें फरससम फरसी फेरवे,
 क्रोधें सुचुम दल मेलवे ॥ ६ ॥ क्रोधें ब्रह्मदत्त थयो

कठोर, ब्राह्मण डोला काढ्या जोर ॥ क्रोधें सासु
 थई नणंद, सुजडासती शिर कीधो फंद ॥ ७ ॥
 क्रोधें काया कर्मनो बंध, क्रोधें घरमां पैसे धंध ॥
 क्रोधें चेडो ते महाराय, हल विहल मामा घरजा
 य ॥ ८ ॥ क्रोधें कोणिक कटकी करे, जांगी विशा
 ला पढो फरे ॥ क्रोधें लखमणने वलि राम, क्रोधें
 रावण टाळ्यो ठाम ॥ ९ ॥ क्रोधतणी ठे खोटी बात,
 कोईन करशो एहनी तात ॥ क्रोधें कर्म घणां बंधा
 य, क्रोधें दुर्गति परुवा जाय ॥ १० ॥ तेह जणीसहु
 ठंडो क्रोध, सुख निरबाध लहो वलि बोध ॥ मान
 तणी हवे सुणजो बात, मानतजे ते सबल सुजात
 ॥ ११ ॥ माने मान तुरंगें चडे, माने मोह जालमां
 पडे ॥ माने नीच कुलें अवतरें, माने विनय मूल
 नविजडे ॥ १२ ॥ माने चउगतिने अनुसरे, माने
 जंबुक जव मांहे फिरे ॥ शांब प्रवृत्त कह्यो विचार,
 माने शियाल तणो अवतार ॥ १३ ॥ माने बलराजा
 निरधार, ब्राह्मण रूप धर्यो मोरार ॥ मान गयंद
 तणोठे जोर, बाहुबले ठांड्यो एकठोर ॥ १४ ॥ मान
 तणीठे वधती वेल, माने नमिया दुखनी रेल ॥ माने
 वीरमती ते नार, चंदनें कीधो कुर्कट सार ॥ १५ ॥
 प्रेमला लढी हाथें चमी, सूरज कुंडे कीधो नर फरी ॥
 माने दुर्योधन दुःख लहे, माने सर्पनी उपमा कहे
 ॥ १६ ॥ माने धर्म न पामे कदा, माने कर्म बंधाये

सदा ॥ माने मान बधंतो होय, माने जीव फरे सहु
 कोय ॥ १७ ॥ माने बुद्ध गलें नर सोय, मान तजे
 ते सुखियो होय ॥ माने गज असवारी करे, माने
 जीव अगोचर फिरे ॥ १८ ॥ मानतणी ते ए गति
 कही, धर्मी नरते सुणजो सही ॥ हवे मायानो कहं
 विचार, माया नरक तणो ठे ठार ॥ १९ ॥ मायामोह
 तणोठे दोष, माया कर्म तणोठे पोष ॥ माया कपटें
 मल्लिनाथ, माया मोह तणोठे साथ ॥ २० ॥ माया
 यें कूरु कपट केलवे, माहायें जुंकी गति मेलवे ॥
 माया मानव जूठोलवे, माया नरनारी शोषवे ॥ २१ ॥
 माया आखारु जूति मुणींद, मायायें लारु वोंहोस्या
 फंद ॥ माया मोहो टो ठे मकरंद, माया पडिया सू
 रज चंद ॥ २२ ॥ माया फंद तणीजे जाल, माया सिंह
 तणीठे फाल ॥ माया अधिक करे उफंड, माया कर्म
 तणोठे कुंठ ॥ २३ ॥ माया मांहे धर्म न थाय, माया
 पुण्य करे अंतराय ॥ २४ ॥ ठोहोटो महोटो माया
 धरे, माया सबल संसारें फिरे ॥ माया जाळें बांध्यो
 जीव, मायाये प्राणी करतो रीव ॥ २५ ॥ अर्थ कह्यो
 मायानो सार, लोचन तणो हवे कहं विस्तार ॥ लो
 चे लक्षण जाये सहु, लोचे पकिया दाणव बहु ॥ २६ ॥
 लोचे लाज घणोरो थाय, लोचे नरनारी उजाय ॥ लो
 चे गांनो घेलो होय, लोचे धर्म न जाणे कोय ॥ २७ ॥
 लोचे सागर दत्त जलमां पड्यो, लोचन सुनुम चक्रीने

नड्यो ॥ लोत्ते संचय धननो करे, माखी जिम महु
 आदें फिरे ॥ १८ ॥ लोत्ते धन नवि खरचे धणी,
 वागुल जव पामशे कां फणी ॥ लोत्ते देश विदेशें
 जाय, लोत्ते नरनारी अफलाय ॥ १९ ॥ पुण्य होय
 तो पामें वली, वेठा धर्म करो मन रली ॥ क्रोध लो
 ज्ननो ठांफोपास, श्रावक धर्म करी उद्धास ॥ २० ॥
 लोत्ते नाना मोटो जीव, लोत्ते अकार्य करे सदीव ॥
 लोत्त तणी गति ठांफो सार, तीर्थयात्र करो उदार
 ॥ २१ ॥ अढार पांत्रीसा वरश मजार, वागमुदेश
 वडो दुसारा ॥ देवदर्शनकरो सुखकार, पामो जिम जव
 सायर पार ॥ २२ ॥ क्रोध मान माया नो संग, वली
 ठांडो लोत्त प्रसंग ॥ कहे कवि सुणो पंक्ति राय,
 कांतिविजय हरखे गुण गाय ॥ २३ ॥

॥ अथ श्रीमणिजड्जीनो ठंद प्रारंभः ॥

॥ श्री मणिजड् सदा समरो, उर बीचमें ध्यान
 अखंरु धरो ॥ जपियां जय जयकार करो, जजियां
 सहु नित्य जंगार जरो ॥ १ ॥ जेकुशल करे नामज
 क्षियां, आनंद करे देव आश कियां ॥ सौजाग्य वधे
 जग सहस्सगुणो, दिलसेव्यादे प्रभु जश दुगुणो ॥ २ ॥
 अरियण सहु अलगा जागे, विरुआवैरी जन पाय
 लागे ॥ संकट शोक वियोग हरे, उण वेला आय
 सहाय करे ॥ ३ ॥ जूत जयंकर सहु जागे, जह
 योगणी सायणी नवि लागे ॥ वाय चोराशी जायअ

लगी, लखमी सहु आय मले वेगी ॥ ४ ॥ गुल पा
 पनियां गुरुवार दिने, लापसिया लारु शुद्ध मने ॥
 धुप दिप नैवेद्य धरो, आठम दिन पूजा अवश्य क
 रो ॥ ५ ॥ जेहने दिनप्रति जाप सदा, तस सुपनांतरमे
 प्रत्यक्ष कदा ॥ जपियां सहु जाये आपदा, कोइ
 मणा घरे रहे न कदा ॥ ६ ॥ मुहमद सारु तमें जस
 कर्यो, गुण सार जिस्यो तमें गुण कस्यो ॥ श्री दी
 ना नाथजी दया करो, शिर उपर हाथ दियो सख
 रो ॥ ७ ॥ जवियण जे जावें जजशें, कारज सिद्धि
 आपणी करशे ॥ पूज्यां पुत्र वधे दुगणा, किणी वा
 तें कदि रहें नहि उंणा ॥ ८ ॥ श्री मणिजद्र मनमें
 ध्यावो, सुख संपत्ति जहु वेगें पावो ॥ लक्ष्मी कीर्तिवर
 आप लहे, शिवकीर्ति मुनि एम सुजस कहे ॥ ९ ॥

॥ अथश्रीमणिजद्रजीनी आरति प्रारंभः ॥

॥ जय जय निधि, जय माणिक देवा ॥ जयमा० ॥
 हरि हर ब्रह्म पुरंदर, करता तुज सेवा ॥ जयदेव
 जयदेव ॥ १ ॥ तुं वीराधिप वीरा, तुं वंछित दाता ॥
 तुंव० ॥ माता पिता तुं सहोदर, ठो प्रभु जगन्नाता
 ॥ जय दे० ॥ २ ॥ हरि करी बंधन उदधी, फणिधर
 अरि अनला ॥ फणि० ॥ ए तुज नामे नासे, साते
 जय सघला ॥ जयदे० ॥ ३ ॥ काक त्रिसुल फूल
 माला, पासांकुस ठाजें ॥ पासां० ॥ एक कर दाणव
 मस्तक, एम षट् जुज राजे ॥ जयदे० ॥ ४ ॥ तुं

जैरव तुं किन्नर, तुं जग महादीवो ॥ तुंज० ॥ काम
 कटपतरु धेनु, तुं प्रजु चिरंजीवो ॥ जयदे० ॥ ५ ॥
 तपगठपति सुरि, ध्यावे तुज ध्यानं ॥ ध्यावे० ॥ मणि
 जड्र जड्रकर, आशा विसरामं ॥ जयदे० ॥ ६ ॥
 संवत् अठारहसैं पांसठ, श्री माधव मास ॥ श्रीमा० ॥
 दीपविजय कविरायनी, पूरो सहु आस ॥ जयदे० ॥
 ॥ ७ ॥ इति श्रीमणिजड्रजीनी आरति ॥

॥ अथ ज्वर (ताव) ठंद ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो आनंद पुरनगरे, अजयपाल राजान ॥
 माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपा निधान ॥ १ ॥
 सातरूप शक्ति हुउं, करवा खेल जगत्त ॥ नाम धरा
 वे जूजुवा पसख्यो तुं इत्त उत्त ॥ २ ॥ एकांतरो
 बेयांतरो, त्रइयो चोथो ताम, शीत उण्ण विषम
 ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ ठंद ॥

॥ ए साते तुज नाम सुरंगा, जपता पूरे कोरि
 उमंगा ॥ तैं नाम्या जे जालिम जूगां, जगमां व्यापी
 तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगें जूपति सब रंका,
 त्रिजूनमां वाजे तुज रंका ॥ माने नहिं तुं केहनी
 शंका, तूगो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध
 तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडे ॥ डुछ
 धीछना कंधर तोडे, नमीचाखे तेहने तुं गोडे ॥ ६ ॥

आवंतो थरहर कंपावे, माह्याने जिम तिम बहकावे
 पहिलो तुं केडमां श्री आवे, सात शिरख पण शीत
 न जावे ॥ ७ ॥ ह्रीं ह्रीं हुं हुंकार करावे, पांशलिया
 हामां कमनावें ॥ उनाळे पण अमल जगावे, तापें
 पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो कार्तिकमां तुज
 जोरो, हठ्यो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश
 पमावे शोरो, करे सर्व तुं तातो तोरो ॥ ९ ॥ तुं
 हाथीनां हाडां जंजे, पापीने ताडे करपंजे ॥ जक्ति
 वत्सल जावें जो रंजे, तो सेवकने कोय न गंजे ॥ १० ॥
 फोरुक तोरुक रुमरु माकं, सुरपति सरिखा माने
 हाकं ॥ धमके धुंसड धांसरु धाकं, चढतो चाळे चंच
 ल चाकं ॥ ११ ॥ पिशुन पठारुण नहीको तोथी,
 तुज जस जीव्या जाय न कोथी ॥ शी अणखील
 करो ए थोथी, मेहर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥
 जक्त थकी एवमीकां खेमो, अवल अमिनां ठांटां
 रेडो ॥ लाखा जक्तनो ए निवेमो, महाराज मूको
 मुज केमो ॥ १३ ॥ लाजवसोमां अजया राणी, गुरु
 आण मानो गुण खाणी ॥ घरें सिधावो करुणा आणी,
 कहुंढु नाके लींटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए
 ठंढजे पढशे, तेहने ताव कदी नव चढशे ॥ कांति
 बल देही नीरोगं, लेहेशे लखमी लीला जोगं ॥ १५ ॥

॥ ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम वदीजें ॥
 आनंदपुर अवनीश, अजयपाल आखीजें ॥ अजया

जात अढार, वांचिये साते बेटा ॥ जपतां एहिज
जाप, जक्तसुं न करे खेटा ॥ उत्तरें अंग चढियो पल्ल
कमे, तारा वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदि,
सार मंत्र गणियें सदा ॥ १६ ॥ इति ज्वरठंद समा
प्त ॥ ए ठंद सात वार, अथवा एकवीश वार सांज
ले गणे तो ताप जतो रहे ॥

॥ अथ श्री यंत्र महिमा वर्णन ठंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ जिण चोवीशे पय प्रणमेवि, सह गुरु तणा व
चन निशुणेवि ॥ यंत्र तणो महिमा अति घणो, जावे
बोळुं जवियण सुणो ॥ १ ॥ शोळे कोठे लखियें वी
श, सघला जय टाळे जगदीश ॥ अठावीसमां रोग
जय हरे, ठत्रीसैं द्युति जय करे ॥ २ ॥ त्रीशे वल्लि
सायणि नासंति, वत्रीसे सुख प्रसवते हुति ॥ देवध्व
जा जो लखियें इमें, परचक्र जय न होवे किमें ॥
॥ ३ ॥ घर बारणे जो लखियें एह, कामण नव परा
जवे तेह ॥ शाकणि संहारी न हुवे तिहां, चोत्रीसो
यंत्र लखिये जिहां ॥ ४ ॥ चाद्विसे शीस रोग टळे,
पागे वयरी हेला दळे ॥ अने वली ठाकरवे बहु मान
वसुधा वल्लि वधारे वान ॥ ५ ॥ वासठे वंध्या गर्जज
धरे, एसा वयण सदगुरु उच्चरे ॥ चोसठनो महीमा
ठे घणो, मार्गे जय न होय कोइ तणो ॥ ६ ॥ वारि
जय रिपु शाकणि तणां, चोसठना महिमा नहिं म

णां ॥ बावत्तरीञ्चूत चूरि जेह. फूँजे नर जय पामे ते
ह ॥ ७ ॥ पंचाशी पंथे जय हरे, अठ्योत्तरशो शिव
सुख करे ॥ बीसोत्तरशो नयणे निरखंत, प्रवस वेद
न ते नवि हुंत ॥ ८ ॥ बावनशोनो उल्ली नीर, मुख
धोवे हुवे बाहालो वीर ॥ सतरिसयनो महिमा अ
नंत, तुळ बुद्धि किम जाणे जंत ॥ ९ ॥ एकसो बहु
त्तरो यंत्र प्रजाव, बालकने टाळे छुष्ट जाव ॥ बिहुंसो
नो यंत्र लखियें बार, वाणिज्य घणां होय हाट मजा
र ॥ १० ॥ त्रणशे नरनारीनो नेह, विणठो बाधे
नहीं संदेह ॥ चारशे घर जय नवि होय, कण उत्प
त्ति घणी खेत्रे जोय ॥ ११ ॥ पांचसे महिला गर्जज
धरे, पुरुषहने पुत्र संतति करे ॥ ठसे यंत्र होये सुख
कार, सातसे ऊगडे होये जय कार ॥ १२ ॥ नवसें
पंथे न लागे चोर, दशसें दुःखन पराजवे घोर ॥
इग्यारसें ठे जे जीव छुष्ट, तेहना जय टाळे उत्कृष्ट
॥ १३ ॥ बंदि मोक्ष बारसे होय, दश सहसे पुनः ते
हिजहोय ॥ वली सयलनीरक्षा करे, एमयंत्र तणी
महिमा विस्तरे ॥ १४ ॥ पंचाससे राजादिक मान,
शाकणि दोष निवारण ग्यान ॥ कंठे तथा मस्तक
जे धरे, अशुच कर्मते शुद्धज करे ॥ १५ ॥ बावनना
नो मस्तके तथा, कंठे खेत्रपालनो हित सदा ॥ पण
याल्लीस शिर कंठे होय, सर्व वश्य थाय तस जोय ॥
॥ १६ ॥ कुंकुम गोरोचंदन सार, मृगमदसों चौदश

रवि वार ॥ पवित्र पणें पुण्य मूल नदात्र, एकमनां
जो लखियें यंत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय,
अक्षय विघन सब दूर पलाय ॥ पंकित अमर सुंद
र हम कहे, पूजे परमास्थ सब लहे ॥ १७ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ चूपति शोहे द्वात्रियकुंभे, तस घेर
त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामि
नी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामि
नी मध्ये शोचतांरे, सुपनदेखे बाह ॥ मयगल कृष
जनें केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर
ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि
उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंवार उज्ज्व
ल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा,
करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजि
त, सकल सुख दातार ॥ मंगल पहेलुं बोली एए,
श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां नयरी
राजगृही, श्रेणिक नामें नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर
गाम वसे तिहां, वसुचूति विप्र मनोहर ए ॥ त्रुट
क ॥ मनोहर तस मानिनी, पृथिवी नामें नार ॥
ईंद्रचूति आदेश ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म
तेणें आदखुं, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे ति
हां समोसख्या, चौवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेह
नो सांजली, लीधो संजमजार ॥ अगीयार गणधर

थापीया, श्रीवीरें तेणी वार॥ ईन्द्रचूति गुरुजगतें थयो
 माहा लब्धिनो जंकार ॥ मंगल बीजुं बोलीयें, श्री
 गौतम प्रथम गणधार ॥ १ ॥ नंद नरिंदनो पामली
 पुरवरें, सकलाल नामें मंत्री सरू ए ॥ लाठलदे
 तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रु
 टक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥
 शीयलवंतमां शिरोमणि, श्रूलीजड जग विख्यात ॥
 मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षजवार ॥ जोग
 जली पेरें जोगव्या, ते जाणे सहस्र संसार ॥ शुद्ध
 संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥
 कोश्या आवासें रह्यो निश्चल, रुग्यो नहीं लवलेष ॥
 शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार ॥
 मंगल त्रीजुं बोलीए, श्रीधूलिजड अणगार ॥ ३ ॥
 हेममणि रूप मय घनित अनुपम, जडित कोशीसां
 तेजेंऊगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोजित, मध्य
 सिंहासन ऊगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ ऊगमगे जिन सिं
 हासने ए, वाजित्र कोलाकोरू ॥ चार निकायना दे
 वता, ते सेवे बेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठशुं रे,
 चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक, शो
 जे श्री जगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, बेठीते पर्ष
 दा वार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना चारप्रका
 र॥ दान शीयल तप जावना रे, टाले सघलां कर्म ॥
 मंगल चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्रीजिनधर्म ॥ ए

चार मंगल गावशेजे, प्रजातें धरी प्रेम ॥ ते कोनि
मंगल पामशे, उदयरत्न जांखेएम ॥ ४ ॥

॥ अथ त्रीङ्गजंजन पार्श्वनाथनो ठंद ॥

॥ जूलणा ठंद प्रजाती ॥ त्रीङ्गजंजन प्रभु त्रीरु
जंजन सदा, नहिंकदा निष्फल थायसेवा ॥ त्रविजन
जावशुं जजन मांही जजे, परमपद संपदा तखत
खेवा ॥ १ ॥ काशी वणारसी जिनपद पुरे जयो,
वामा अश्वसेन सुत विश्वदीवो ॥ सेढीवेत्रक तटे
खेटकपुरतपें, कटपनी कोड कृपाल जीवो ॥ २ ॥
त्रीरु जव जित्तिजय जावछ जंजणो, जक्ति जनरंज
णोजावें जेढ्यो ॥ आज जिनराज मुज काज सिद्धां
सवे, मोह राजाननो मान मेढ्यो ॥ ३ ॥ कोटि मन
कामना सुजस बहु ठामना, शिवसुख धामना आज
साध्यां ॥ मंगल माळिका आज दीपाळिका, मुज मन
मंदिरें मोज वाध्या ॥ ४ ॥ पाठकें ठाठमें कात्ति वद
आठमें, सतर अढ्योत्तरें पासगायो ॥ उदयनिज दा
सनो एह अरदास सुणि, हितधरी नाथजी हाथ
सायो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गौतम गुरु प्रजात ठंद ॥

जयोजयो गौतम गणधार, मोटी खब्धितणो जं
डार ॥ समरे वंठित सुख दातार, जयो जयो गौतम
गणधार ॥ १ ॥ वीरवजीरवनो अणगार, चौद हजार
मुनि शिर दार ॥ जपतां नाम होय जयकार ॥ ज

यो० ॥ २ ॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र कल
त्र सज्जन परिवार ॥ आपे कनक कोनि विस्तार ॥
जयो० ॥ ३ ॥ घरे घोडा पायक नहींपार, सुखासन
पालखी उदार ॥ बैरी विकट थाये विसराल ॥
जयो० ॥ ४ ॥ प्रह उछी जपियें गणधार, रुद्धि
सिद्धि कमला दातार ॥ रूपरेख मयण अवतार
॥ जयो० ॥ ५ ॥ कवि रूप चंद गुरु केरो शिष्य,
गौतम गुरु प्रणमो निशदिस ॥ कहे गुण चंद ए
शमता गार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथ ठंद ॥

॥ चोपाइ ॥ सकलसार सुरतरु जगजाणं, जसु
जस वास जगत परिमाणं ॥ सकल देव शिरमुगुट
सुचंगं, नमो नमो जिनपति मनरंगं ॥ १ ॥ पामधी
छंद ॥ जो जन मन रंगं, अकल अजंगं, तेज तुरं
गं नीलंगं ॥ सवि शोभा संगं, दग्ध अनंगं, शिश
जुजंगं चतुरंग ॥ बहु पुण्य प्रसंगं, नित्य उठरंगं,
नव नव रंगं नारंगं ॥ कीरति जलंगंगं, देश डुरंगं,
सुरपति संगं सारंगं ॥ १ ॥ सारंगा वक्रं, पुण्य पवि
त्रं, रुचिर चरित्रं जीवित्रं ॥ तेजो जित मित्रं, पंक
ज पत्रं, निर्मल नेत्रं सावित्रं ॥ जग जीवन मित्रं,
तरु सत सत्रं, मित्रामित्रं मावित्रं ॥ विश्वत्रय चित्रं,
चामर ठत्रं, सीस धरित्रं पावित्रं ॥ २ ॥ पावित्रा
जरणं, त्रिजुवन सरणं मुगुटा जरणं आचरणं ॥ सुर

अर्चित चरणं, शिव सुख करणं, दारिद्र्य हरणं,
 आवरणं ॥ सुख संपत्ति करणं जवजल तरणं, अध
 संहरणं, उद्धरणं ॥ गोश्रमृत करणं, जन मन हर
 णं, वरणावरणं आदरणं ॥ ३ ॥ आदरणा पालं,
 जाकज्जमालं, नित जूपालं अयुपालं ॥ अष्टमी शशि
 समन्नालं, देव दयालं, चैतन चालं सुकमालं ॥ त्रिजु
 वन रखवालं, महाडुकालं, महाविकरालं, जय
 टालं ॥ शृंगार रसालं, महकेमालं, हृदयविशालं
 जूपालं ॥ ४ ॥ कलश ॥ ठप्पय ॥ अकल रूप उदा
 र, सार शिव संपत्ति कारक ॥ रोग सोग संताप,
 डुरिय डुह डुःख निवारक ॥ चिहुं दिश आण
 अखंरु, चंरु तप तेज दिणंदह ॥ अमर अपठर
 कोरि, गावे जस नमे नरिंदह ॥ श्री शंखेश्वर सुर
 मणि, पाय अधिक मंगल नीलो ॥ मुनि मेघराज कहे
 जिनवर जयो, श्रीपार्श्वनाथ त्रिजुवनतिलो ॥ ५ ॥

॥ अथ गोमीपार्श्वनाथनो ठंद ॥

॥ दोहा ॥ धवलधिग गोमी धणी, सेवक जन
 साधार ॥ पंचम आरे पेखियें, साहिब जग आ
 धार ॥ १ ॥ जुजंग प्रयात वृत्तं ॥ तजोमान माया
 जजो जाव आणी, वामानंदनें सेवियें सार जाणी ॥
 जुवो नाग नागिणी नाथ ध्यानें, पाम्या शक्रनी संप
 दा बोधि दानें ॥ २ ॥ वश्या पाटणें काल केतो
 धरामां, पधाख्या पठें प्रेमशुं पार करमां ॥ थलीमा

बली वास कीधो विचारी, पूरे लोकनी आश त्रैलो
क्य धारी ॥ ३ ॥ धरी हाथमां लाल कब्बान
रंगें, ॥ त्रिनी गातनी, रातनी नील अंगें ॥ चडी
नीलने तेजीयें विघ्न वारे, अराध्या थकां पंथ चूलां
सधारे ॥ ४ ॥ जेणें पाशगोनी तणा पाय पूज्या,
शत्रु सर्वदा तेहना सर्व धूज्या ॥ सर्व देव देवी
थयां आज ठोटां, प्रभु पार्श्वनां एक प्राक्रम मोहो
टां ॥ ५ ॥ गोनी आप जोरे नव खंरु गाजे, जेह
थी शाकिनी डाकिनी दूर जाजे ॥ पुरे कामना पार्श्व
गोडी प्रसिद्धो, हेलां मोहराज जेणें जेर कीधो
॥ ६ ॥ महा दुष्ट दुर्दंत जे चूत चूडा, प्रभु नाम
पामें सर्वत्रास गुंठा, जरा जन्मने रोगनां मूल कापे,
आरध्यो सदा संपदा सुख आपे ॥ ७ ॥ उदय रत्न
जांखे नमो पार्श्व गोडी, नाखो नाथजी दुःखनी
जाल त्रोडी ॥ ८ ॥

अथ चोत्रीस अतिशयनो ठंद ॥

॥ श्री सुमति दायक, दुरित धायक, ज्ञान अनु
जव श्रीवरी ॥ तस सुगुरु केरा, चरण प्रणमूं, जुग
म कर जोडी करी ॥ १ ॥ बहु जाव नक्तें, शुण
जिनवर, चोत्रीसैं अतिशयें करी ॥ जे सुगुरु मुख
थी, सुण्यांते कहूं, आगम शाखें अनुसरी ॥ २ ॥
तिहां प्रथम अतिशयें, श्री जिन केरा, रोम नख
वाधे नहीं ॥ नीरोग निर्मल गात्र अस्ति द्वितीय

अतिशय ए सही ॥ ३ ॥ गोडुग्ध सरिखो, मांस
लोही, तृतीय तेह वखाणियें ॥ चोथो ते उत्पल
गंध सरिखो, श्वासोच्छ्वास सुजाणियें ॥ ४ ॥ आ
हारने नीहार प्रबन्न, एह अतिशय पांचमो ॥
आकाश गत धर्मचक्र ठठो, गगन ठत्र ए सातमो
॥ ५ ॥ रह्या अंबर श्वेत चामर, जुगम अष्टम ए
कह्यो ॥ फटिक सिंहासन सुनिर्मल, नवम अतिश
यए लह्यो ॥ ६ ॥ आकाशगत ध्वज सहस्र मंजित,
इन्द्र ध्वज आगें चले ॥ ए दशमो अतिशय कह्यो
श्रुतमां, देखी परमत खलजले ॥ ७ ॥ इग्यारमें जि
हां, स्वामी उजा, रहे वली बेसे जिहां ॥ च्छाय शु
धज देव ततक्षण, अशोक तरुवर रचे तिहां ॥ ८ ॥
द्वादशम अतिशय प्रज्ञामंडल, पुछें रविकर जीपए ॥
रमणिक सुंदर जोमी जागसो, तेरमो ए दीपए ॥
॥ ९ ॥ अधोमुख होय सर्व कंटक चउदमें अतिश
य वली ॥ अनुकूल थइने परिणमें ऋतु, पंच दशमो
सुख लखी ॥ १० ॥ संवर्तक पवनें जोमी पूंजे, जो
जन लगें ए शोलमे ॥ सुगंध वृष्टी तिहां वरसे,
प्रगट अतिशय सतरमे ॥ ११ ॥ जानु प्रमाणे बीट
नीचो, पंचवरण सुहामणा ॥ जलने ते थलना फूल
वरसे, अठारमें अतिशय घणा ॥ १२ ॥ अमनोझ
शब्दादिकही नासे. उंगणीसमें अतिशयें वली ॥
बीशमें शुजिद्ध थाये, एम कहेते केवली ॥ १३ ॥

एकवीशमें प्रभुतणी देशना, जोजन लगें सविजन
 सुणे ॥ बाविशमें प्रभु अर्ध मागध, जाषायें जिन
 जी जणे ॥ १४ ॥ त्रेवीशमे जिनवाणी जननें, हेतु
 शिव जणी परिणमे ॥ चोवीसमे प्रभु चरण मूळें,
 वैर जंतुना उपशमे ॥ १५ ॥ अन्यलिङ्गी नमे जिननें,
 पंचविंशति अतिशयें ॥ अन्य तीरथी मौन्य थाये,
 ठवीसमें प्रभु निश्चयें ॥ १६ ॥ पण वीश जोजन
 लगे जिनधी, इतनें मारी नहीं ॥ स्वचक्रनें परचक्र
 न होये, तीस अतिशय ए सही ॥ १७ ॥ अति
 वृष्टिने अनावृष्टि, दुर्निह्न त्रण ए नवि उपजे ॥ चोत्री
 समे प्रभु आधि पीडा, व्याधि दुःख न संपजे ॥
 ॥ १८ ॥ चोत्रीस अतिशय एह कहिया, सूत्र सम
 वा यांगमां ॥ जे जणतां गुणतां हिये धरतां, रहे आत
 म रंगमां ॥ १९ ॥ निज शुद्ध आतम रूप प्रगटे,
 जावशुं जो ध्यायें ॥ दर्शनादिक रत्न लहियें, पर
 म सुख पद पायें ॥ २० ॥ अरिहंत जगवंत तणा
 अतिशय, जणो आणी आसता ॥ बहु पुण्य करि
 यें ध्यान धरियें, सुख लहियें सासता ॥ २१ ॥ श्री
 सूरि विद्या उदधि सेवक, शिष्य एणी परें संस्त
 वे ॥ मुनि ज्ञान सागर कहे प्रभुपद, सेव मांगुं
 जवो जवें ॥ २२ ॥ १७ ॥

॥ अथ शिखामणनो ठंद ॥

॥ त्रोटक वृत्त ॥ वरदायक माय सलाम करी,

कहुं सार शिखामण एकखरी ॥ नर नारी सहुहिय
 डे धरियें, जिम आपद संकट उऊरियें ॥ १ ॥ पर
 ज्ञात समे गुरु देव नमो, जिम दारिद्र दोहग दूरें
 गमो ॥ जगवंत सदा चरणां जजियें, कुलरीति कबू
 कबु नां तजियें ॥ २ ॥ लक्रियें नहिं मायनें बापथकी,
 वढियें नहिं कोयथी बाधि जकी ॥ विश्वास न
 कीजें नारि तणो, गुरुराज समीपथी ज्ञान जणो ॥
 ॥ ३ ॥ दरबार अलिकन नां जखियें, घरजीतर अकर
 नहिं लखियें ॥ रखियें नहिं चारु पनोस सदा, तरियें
 नहिं नीर सजोर कदा ॥ ४ ॥ विवसाय सहू
 विधिसें करियें, छग दाव रमी धन ना जरियें ॥ पर
 देशमां गांफिल नां फरियें, नरपति थकी डरता रहि
 यें ॥ ५ ॥ जुगटां व्यसनी परि ना रमियें, रुषि साध
 अनाथकुं ना दमियें ॥ करियें नहिं आल अगन्नी
 तणी, बलि दीजियें सीख सुमित्त जणी ॥ ६ ॥ गुरु
 आसन उपरि ना धसियें, दुर्जनसे संगति ना वसि
 यें ॥ बलि धीज न कीजियें जुठ किसी, घणीवार
 न कीजियें वात हसी ॥ ७ ॥ वयणां मुख बोलह तें
 पलियें, सज्जनथी स्नेह धरी मलियें ॥ परनारिनी
 संगति प्यार तजो, परमारथ कारज नित्य जजो ॥ ८ ॥
 सुखकार शिखामण एम कहे, कवि उत्तमते जय
 माल लहे ॥ गुरु चार लहू अरु दीर्घ धरो, इम
 त्रोटक नामक ठंद करो ॥ ९ ॥ इति शिखामण ठंद

नैऋत्य श्रीअंतरिक पार्श्वनाथ ठंद ॥

॥ प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीतुं, त्रिहुं लोकमां
एटलुं सार दीतुं ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नीतुं,
मन माहरे ताहरुं ध्यान बेतू ॥ १ ॥ मन तुह्य पासे
वसे रात दीसें, मुखपंकज निरखवा हंस हीसे ॥
धन्य ते घडीजेघडी नयण दीसे, जली जक्ति जावें
करीबीनबीसे ॥२॥ अहो एह संसार ठे दुःख दोरी,
इंद्रजालमां हित्त लागुं ठगोरी ॥ प्रभु मानियें
बिनती एक मोरी, मुऊ तार तुं तार बलिहारि तो
री ॥ ३ ॥ सही स्वप्न जंजालमां मन्न मोह्यो, घडी
यालमां काल रमतां न जोयो ॥ मुधा एम संसा
रमां जन्म खोयों, अहो घृत तणे कारणें जल विलो
यो ॥ ४ ॥ एतो जमरलो केसुआं त्रांति धायो, जई
शुक तणी चंचुमांहे जरायो ॥ शुके जंबु जाणी गळ्यो
दुःख पायो, प्रभु लालचें जीवमो एम वाह्यो ॥ ५ ॥
जम्यो जर्म जूलो रम्यो कर्मजारी, दयाधर्मनी
शर्म में न विचारी ॥ तोरी नर्मवाणी परम
सुख कारी, त्रिहुं लोकना नाथ में न संजारी ॥ ६ ॥
विषय वेलनी सेलनी करिय जाणी, जजी मोह तृष्णा
तजी तुझ वाणी ॥ एहवो जलो जूंमो निज दास
जाणी, प्रभुराखियें बाहिनी ठांदि प्राणी ॥७॥ माहा
रा विविध अपराधनी कोमि सहीयें, प्रभु शरण आ
व्या तणी लाज बहीयें ॥ बली घणी घणी बीएतिन

म कहीयें, मुज मानसरें परम हंस रहीयें ॥ ८ ॥
 कलश ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी, मुगतीगामी
 गार्ह्यें ॥ अति जक्ति जावें विपति नावे, परम संपद
 पार्ह्यें ॥ प्रभु महिम सागर गुण विरागर, पास अंत
 रिक जे स्तवे ॥ तस सकल मंगल जय जयारव,
 आनंद वर्द्धन वीनवे ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन विनतिरूप ठंद ॥

॥ शारद माय नमुं शिर नामि ॥ हुं गाउं त्रिभुव
 नको स्वामी ॥ शांति शांति जपे जो कोइ, ता घर
 शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजें
 काम, सोइ काम होवे अजिराम ॥ शांति जपी पर
 देश सिधावे, ते कुशले कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्ज
 थकी प्रभु मारि निवारी, शांतिजी नाम दियो हित
 कारी ॥ जे नर शांति तणा गुणगावे, रुधि अचिं
 ती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सहाइ,
 ता नरकूं क्या आरति जाइ ॥ जो कबु बंढे सोई पूरे,
 दारिद्र्य दुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरं
 जन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रभु वासी ॥
 स्वामी स्वरूप कहुं नवि जाय, कहेतां मोमन अच
 रिज थाय ॥ ५ ॥ डार दीए सबही हथियारा, जीत्यां
 मोह तणा दल सारां ॥ नारि तजी शिवशुं रंग
 राचे, राज तज्युं पण साहेब साचे ॥ ६ ॥ महा
 बलवंत कहिजें देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥

रुद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, जिह्वा आहारी नाम
 कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककूं सम जायक, पण
 सेवकहीकूं सुख दायक ॥ तज्यो परिग्रह जये जगना
 यक, नाम अतित सवे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु
 मित्र सम चित्त गणीजें, नामदेव अरिहंत जणीजें ॥
 सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जाणी महापद
 दीजें ॥ ९ ॥ सायर जैसा होत गंजीरा, दूषण एक
 न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण
 न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन
 जी सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न पेखे ॥ रीश
 विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीश ॥ ११ ॥
 मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशुं
 लय लाई ॥ लोच विना गुणराशि ग्रहीजें, जिह्वा
 जये त्रिगुणो सेवीजें ॥ १२ ॥ निर्ग्रथपणें शिर ठत्र
 धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे ॥ अजयदान
 दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण
 ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजें, करम सबेंको
 मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लब्धी
 घणी देखो नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत
 कहावे, न काहूकूं शीश नमावे ॥ अकिंचनको विरुद्ध
 धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ रागनहिं
 पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे ॥ तजी
 आरंज निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ

चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहियें, तोरा
 गुनको पार न लहीयें ॥ तुं प्रभु समरथ साहेब मोरा,
 हुं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तुं रे त्रिलोकतणो
 प्रतिपाल, हूं रे अनाथ तुं ठे दयाल ॥ तुं शरणागत
 राखणधीरा, तुं प्रभु तारक ठोवरु वीरा ॥ १८ ॥ तुंहि
 समोवरु जागज्युं पायो, तोमेरो काज चढ्यो रे सवायो
 कर जोडी प्रभु विनवूं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी
 मोसुं ॥ १९ ॥ जनम मरणना दोष निवारो. जव
 सागरथी पार उतारो ॥ श्री हृन्निणाउरमंरुन सोहे,
 तिहां प्रभु शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर
 गुरुराज पसाया, श्री गुणसागरके मन जाया ॥ जेनरनारी
 एक चित्तें गावे, ते मनोवंत्रित निश्चें पावे ॥ २१ ॥ इति॥

॥ अथ पार्श्वनाथनो वंद ॥

॥ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणताखिल
 मानवदेवगनं ॥ जिनशासन मंडन स्वामि जयो, तुम
 दरिसन देखी अनंद जयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलां
 वर जानुनिजं, नव हस्तशरीर हरितप्रतिजं ॥ धर
 णेंद्र सुसेवित पादयुगं, जर जासुरकांति सदा सुजगं
 ॥ २ ॥ निजरूपविनिर्जित रंजपति, वदनो व्युति शा
 रद सौमतरतिं ॥ नयनांबुज दीप्ति विशालतरा, तिल
 कुसुम सन्निज नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद
 समान सदा, दशनाखि अनार कट्ठी सुखदा ॥ अ
 धरारुण विडूम रंगघनं, जय शंखपुरा जिध पार्श्व

जिनं ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, कानें
कुंमल रवि शशि जीपे ॥ तुम महिमा महि मंमल
गाजे, नित्य पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर
विद्याधर आवे, नर नारी तोरा गुण गावे ॥ तुज
सेवे चोशठ इंद्र सदा, तुज नामें नावे कष्ट कदा ॥
॥ ६ ॥ जे सेवे तुजने जाव घणे, नवनिधि थाये घर
तेह तणे ॥ अरुयडियां तुं आधार कह्यो, समरथ सा
हिव में आज लह्यो ॥ ७ ॥ दुखीयाने सुखमां तुं दा
खे, अशरणने शरणे तुं राखे ॥ तुज नामें संकट वि
कट टले, वीठमीयां वालां आवि मले ॥ ८ नट विट
खंपट दूरें नासे, तुज नामें चोरचरु त्रासे ॥ रण
राउल जय तुज नाम थकी, सघले आगल तुज
सेवथकी ॥ ९ ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा,
करी केशरी दावानल विहगा ॥ वध बंधन जय सघ
लां जाये, जे एक मनां तुजने ध्याये ॥ १० ॥ जूत
प्रेत पिशाच ठली न शके, जगदीश तवाजिध जाप
थके ॥ महोटा जोटिंग रहे दूरे, दैत्यादिकना तुं मद
चूरे ॥ ११ ॥ डायणी सायणी जाय हटकी, जगवंत
जयां तुज जजनथकी ॥ कपटी तुज नाम लीया
कंपे, दुर्जन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मठ
रावा मुह मोडे, तेपण आगलथी कर जोडे ॥ दुर्मु
ख दुष्टादिक तुंही दमे, तुज जापे महोटा म्हेढ नमे
॥ १३ ॥ तुज नामें माने नृप सबाला, तुज यश उ

ज्ज्वल जेम चंद्रकला ॥ तुज नामें पामे रुद्धि घ
 णी, जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिं
 तामणि कामगवी पामे, हयगय रथ पायक तुज ना
 में ॥ जन पद ठकुराइ तुं आपे, दुर्जन जननां दारि
 द्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तुं धनवंत करे, तूगे को
 ठार जंकार जरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो,
 ते सहु महिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि मा
 णक मोती रत्न जड्या, सोवन जूषण बहु सुघरु घ
 ड्या ॥ वली पेहेरण नवरंग वेश घणा, तुम नामें
 नवि रहे कांइ मणा ॥ १७ ॥ वैरी विरुठ नवि ताकि
 सके, वली चारु चुगल मनथी चमके ॥ ठल ठिछ
 कदा केहनो नलगे, जिनराज सदा तुज ज्योति जगे
 ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर कंपे, पाखंरी पण
 को नवि फरके ॥ लूंटा दिक सहु नासी जाए, मा
 रग तुज जपतां जय थाए ॥ १९ ॥ जरु मूरख जे
 मति हीन वली, अज्ञान तिमिर तसु जाय टली ॥
 तुज समरणथी माह्या थाये, पंक्ति पद पामी पूजाये
 ॥ २० ॥ खस खांशि खयन पीडा नासे, दुर्बल मुख
 दीनपणुं त्रासे ॥ गरु गुंवरु कुष्ट जिके सबलां, तुज
 जापें रोग समे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा बहिरा
 य जिके, तुज ध्यानें गतदुख थाय तिके ॥ तनु कां
 ति कला सुविशेष वधे, तुज समरणशुं नवनिधिसधे
 ॥ २२ ॥ करि केसरी अहि रण बंध सय, जल जल

ए जलोदर अष्ट त्रय ॥ रांघणी पमुहा सबि जाय
 टली, तुज नामे पामे रंग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 श्रीपार्श्व नमो, नमिऊण जपंतां दुष्ट दमो ॥ चिंता
 मणि मंत्र जिके ध्याये, तिण घर दिन दिन दोषत
 थाये ॥ २४ ॥ त्रिकरण शुद्धं जे आराधे, तस जश
 कीर्ति जगमां वाधे ॥ वली कामित काम सवे साधे,
 समहित चिंतामणि तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मञ्जर
 मनथी दूर तजे, जगवंत जली परें जेहजजे ॥ तसघर
 कमला कल्लोल करे. वली राज्य रमणी बहु लील
 वरे ॥ २६ ॥ जय वारक तारक तुं त्राता, सज्जन मन
 गति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तुं स्वामी;
 शिवदायक नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठा
 कुर तुं महारो, निशिवासर नाम जपुं ताहारो, ॥
 सेवकशुं परम कृपा करजो, वालेसर वंढित फल दे
 जो ॥ २८ ॥ जिनराज सदा जय जयकारी, तुज मूर्ति
 अति मोहन गारी ॥ गुज्जार जनपद मांहे राजे, त्रि
 चुवन ठकुराइ तुज ठाजे ॥ २९ ॥ इम जाव जले जि
 नवर गायो, वामासुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि
 मुनि शशि संवत्तर रंगें, जयदेवसूरिमहा सुख संगें
 ॥ ३० ॥ जय शंखपुराजिध पार्श्व प्रजो, सकलार्थ
 समीहित देहि विजो ॥ बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा,
 तप लब्धि रचि सुख दाय सदा ॥ ३१ ॥ कलश ॥
 इष्टं स्तुतः सकलकामितसिद्धिदाता, यक्षधिराजनत

શંખપુરાધિ રાજઃ ॥ સ્વસ્તિ શ્રીહર્ષ રુચિ પંકજસુપ્ર
 સાદાત્, શિષ્યેણ લલિધ રુચિનેતિ મુદા પ્રસન્નઃ ॥૩૨॥
 ॥ ॥ સરસતિ સંપતિ દિશ્યો મુજસદા ॥ અલિય
 વિઘનનવિશ્રાવેકદા ॥ નયરિ ઝજેણી વિક્રમરાય ॥
 સન્નાપૂરીનેં બેઠો ઠાય ॥ ૧ ॥ જોતિષીયા સન્નામાં હિજાં
 ણ ॥ નવગ્રહનાતે કરેવશાણ ॥ એકકહે શનિશ્વર અ
 તિકૂર ॥ દેશાહે અતિ પ્રાણી નેંરુડ ॥ ૨ ॥ નિજદ્રષ્ટિ
 શનિસર પાંગલો ॥ પિતાસારથી તુમેસાંજલો ॥ રાજા
 વિક્રમબોલેશ્યું ॥ ઇણેરાંકબાપહે ચાલે કિશ્યું ॥ ૩ ॥
 ઇણે અવસર સનીસરથે જઠ ॥ અવધી જ્ઞાને જોવે
 તઠ ॥ જોતાંમુજ વિક્રમ અવગુણે ॥ વેગિઆવી રાય
 પ્રતે જણે ॥૪॥ સાંજલ રાજા માહરાંકાંમ ॥ હુંરુઠો ટા
 હુંતુજ ઠાંમ ॥ બિહતો વિક્રમ બોલે વાંણ ॥ સ્વમજો જે
 બોલ્યું અજ્ઞાન ॥ પુજી પ્રણમી શનીસ્વર પાય ॥ સંતો
 ષ્યો નિજ ધ્યાનક જાય ॥ પિણ સંકા મનમાંહિ પયઠ ॥
 કેતેક કાલે શનિસ્વર બેઠ ૬ નિસદિન બીહતો જેહને
 નામ ॥ તે લાગ્યો મુજશનીસ્વર સ્વાંમ ॥ તેની મંત્રીનેં
 આપેંરાજ ॥ મેં જાવું પર દેસે આજ ॥ ૭ ॥ સુંપીરાજ
 ગયો પરદેસ ॥ ચંપા નયરી કરે પ્રવેસ ॥ શ્રીપતીને હાટે
 જઈ બેઠ ॥ તવ તસ નયણેં અમીય પયઠ ॥ ૮ ॥ સેઠ
 ને હાટઠે વસ્તુ અનેક ॥ થોનીવેલા માંહિ વેચી ઠેક ॥
 જાગ્યવંત નર જાણ્યો જાંમ ॥ જિમવાનેં ઘર લાવ્યો
 ત્તામ ॥૯॥ જોજન જક્તી જલ્લી સાંચવે ॥ સુખ સજ્યાઈ

सुवापाठवे ॥ पासे जीतवे ठोहित ठाम ॥ सारस हंसने
मोर चित्रांम ॥ १० ॥ जोवेराजा कौतिक धरी ॥
नाहितव श्रीपति कुंमरी ॥ हारधोरुळे मुकेजांम ॥
इणें अवसर शनि जोवेतांम ॥ ११ ॥ मुज उवेषी
विक्रम राय ॥ चंपा नगरी वेठोठाय ॥ सुख शज्या
सुतो रंगधरी ॥ तो प्राक्रम देखाडुं करी ॥ १२ ॥
शनी संक्रम्योहंस मुजार ॥ चुणी हारनें वेठोठार ॥
तेदेषीने बीहनो राय ॥ कळंक जणीते नाठोजाय
॥ १३ ॥ पुत्री नाहि करे सिणघार ॥ नवि देखे एकाव
लहार ॥ श्री पतिजोवे घणोखपकरी ॥ रायजणे तव जा
व्योफरी ॥ १४ ॥ चोरजणी तेठेद्या हाथ ॥ चउटे
पमीउं तवनरनाथ ॥ तेदी एके दीठो जिसें ॥ जाली
हाथने आण्यो तसे ॥ १५ ॥ काष्टतणा तव कर जोरुवे ॥
वलीवेठो घाणी फेरवे ॥ खायखोलनें तेल रोटला ॥
ठत्रीस राग करें तिहां जला ॥ १६ ॥ दुःख वीसरीउं नी
जघरतणो ॥ सरळें सादे गावेघणो ॥ नरपति पुत्री मंदिर
पास ॥ सुणी साद जोवा थइ आस ॥ १७ ॥ तव तिंहाथी
दासीनें कहे ॥ घांची घरपुरुष जे रहे ॥ वेगें तेही तेह
ने लाव्य ॥ आवे घांची घर तव धाव ॥ १८ ॥ तेह पुरुष
लावे सापास ॥ तव उतरीउं शनिशरतास ॥ अडूत रूप
देखी अतिघणुं ॥ वचन कहे तव वरवा तणुं ॥ १९ ॥
कहे विक्रम कर माहरे नथी ॥ नवी परणांणें में तेहथी ॥
चंढी मंत्र कुंयरीयें साधीउं ॥ सोवर मागीते करलीउं ॥

॥१०॥ ठांनो परण्यो विक्रम राय ॥ केतलेकाले जाणे
 माय ॥ प्रगट परणावि तव पुत्रीका ॥ श्रीपती जेटी पड्या
 तव तिका ॥ ११ ॥ नरपतीनां प्रणमी त्यांपाय ॥ श्रीपती
 निजघर लेई जाय ॥ असन पान करी राजा सुए ॥ सेठ
 सहित नृप चित्रामण जुवे ॥ १२ ॥ बोल्यावरस जब
 साढासात ॥ अविद्योके शनी नृपनीवात ॥ आर्वी हंस
 मध्ये संक्रमी ॥ हार घोरुले मुक्यो वमी ॥ १३ ॥ अढी
 संबधर मस्तकें रहे ॥ अढी नाजि जोतीषीया कहे ॥
 अढी संवत्सर चरणे वास ॥ हुठ सनी सर व्रीजो तास ॥
 ॥ १४ ॥ जन्मद्वितिय चोथो आठमो ॥ द्वादसमो शनी
 सरवडो ॥ एह कथा सांजलस्ये जेह ॥ कुंज रास फल
 पामें तेह ॥ १५ ॥ तेहने तुंपीडेनही कदा ॥ ए वर
 आपो शनिसर सदा ॥ वर देई शनी थानकें गयो ॥
 हृष्योराय उजेणी गयो ॥ १६ ॥ चाढ्यो चतुरंगसे
 नाकरी ॥ आव्यो जिहा उजेणी पुरी ॥ निज जुवने
 विक्रम आर्वीउ ॥ अखिल लोक बधावो दिउ ॥ १७ ॥
 सिद्धसेन गुरु वचनें करी ॥ लह्यो धर्म समकित आद
 री ॥ महाकाल तिरथ उद्धरी ॥ पर दुःखटालण दानेश्वरी
 ॥ १८ ॥ सुखे समाधें पाखेराज ॥ लहि समकित नर
 सारे काज ॥ निरयावली उपांगे कह्यो ॥ एका वतारी
 शनि सर लह्यो ॥ १९ ॥ एह कथा ठे शनीखर
 तणी ॥ पीना नकरे चोपई जणी ॥ सुख संपति ते
 सघर्ष लहे ॥ पंकित ललित सागर इम कहे ॥ २० ॥

॥ एकादश गणधरनां नाम, प्रह उठीनें करुं प्र
णाम ॥ इन्द्रचूति पहेलो ते जाण, अग्निचूति बीजो
गुणखाण ॥ १ ॥ वायुचूति त्रिजो जग सार, गण धर
चोथो व्यक्त उदार ॥ शासनपति सुधर्मा सार, मं
न्ति नामें ठठो धार ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र ते सातमो
जेह, अकंपित अष्टम गुणगेह ॥ मुनिवरमांहे जे पर
धान, अचल त्रात नवमो ए नाम ॥ ३ ॥ नामथ
की होय कौंडी कढ्याण, दशमो मेलारज अविरल
वाण ॥ एकादशमो प्रजास कहेवाय, सुखसंपत्ति
जस नामें थाय ॥ ४ ॥ गाया वीर तणा गणधार,
गुणमणि रयण तणा जंडार ॥ उत्तमविजय गुरुनो
शिष्य, रत्नविजय वंदे निशदिस ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ गौतमप्रजातिस्तवनं ॥

॥ राग प्रजाती ॥ मात पृथ्वीसुत प्रात ऊठी
नमो गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रहसमे प्रेमशुं
जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ मा०
॥ १ ॥ वसुचूपति नंदन विश्वजन वंदन, दुरित
निकंदन नाम जेहनुं ॥ अजेद बुद्ध करी जविजन
जे जजे, पूर्ण पोहोचे सहि जाग्य तेहनुं ॥ मा०॥१॥
सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण काम
धेनु ॥ तेह गौतमनुं ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी
अधिक नहीं माहात्म्य केनुं ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव
आदें धरी माया बीजें करी, स्वमुखें गौतमनाम

ध्याये ॥ कोनि मनकामना सफल वेगें फले, विघ
न वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ४ ॥ ज्ञान बल
तेजने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पा
मे ॥ अखंरु प्रचंरु प्रताप होय अवनिमां, सुर नर
जेहनें शीश नामे ॥ मा० ॥ ५ ॥ छुष्ट दूरें टले स्वज
न मेलो मले, आधिउपाधिनें व्याधि नासे ॥ जूत
नां प्रेतनां जोर जांजे वली, गौनमनाम जपतां उद्धा
सें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लवधें जइ,
पन्नरसें त्रणने दीखदीधी ॥ अठमनें पारणे तापस
कारणें, क्षीरलवधें करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥
॥ ७ ॥ वरस पच्चास लगे गृहवासें वस्या, वरस वली
त्रीश करी वीरसेवा ॥ बार वरसां लगे केवल जोग
व्युं, जक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥
महियल गोतम गोत्रमहिमा निधि, गुणनिधि रुद्धि
ने सेद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला
लहे, सुजस सौजाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ इति ॥

॥ अथ दोधक बावनी लिख्यते ॥ ऊँह अक्षर
सारहें॥ऐसा अवरन कोय॥सिद्ध सरूप जगवान शिव
सिरसा बंदू सोय ॥ १ ॥ नमीयें देव जगतगुरु, नमी
यें सद गुरुपाय॥दयायुक्त नमीयें धरम, शिव सुखलेय
उपाय ॥ २ ॥ मनकी ममता दूरकर, समता धर घट
मांहिं, रमतां रामपिठानकें, शिव सुख ले क्युं नांहि
॥३॥ शिवमंदिरकी चाह धर, अथिर अंध तजिदूर ॥

लपट रह्यो क्या कीचमें, अशुचि जिहां जरपूर ॥ ४ ॥
 धंधाहीमें पचरह्यो ॥ आरंजकीए अपार ॥ उठ चलेगो
 एकलो, शिरपर रहेंगो जार ॥ ५ ॥ अन्यायी जन
 देतधन, बहुत, रहित फल सोय ॥ दान स्वल्प फल
 पिण बहुत न्याय उपार्जित होय ॥ ६ ॥ आतम
 परहित आपकुं, क्या परकुं उपदेश, निज आतम
 समज्यो नही, किनो बहुत कलेस ॥ ७ ॥ इतनाही
 में समज्जें, क्या बहुत पढ़ेंसो ग्रंथ ॥ उपशम विवेक
 संवर लहें, याको शिव पुर पंथ ॥ ८ ॥ इति जिति
 याथें गई, प्रगट जई सबरीत ॥ गीत मार्ग पेदाकीउं
 गाउं तिनके गीत ॥ ९ ॥ उदय जहरविके जसा, जावे
 सब अंधार ॥ त्योंसद गुरुके वचनथें, मिटें मिथ्यात
 अपार ॥ १० ॥ उगत बीज सुखेतमें, जसा सुजल
 संयोग ॥ त्योंसद गुरुके वचनथें, उपजत बोध प्रयोग
 ॥ ११ ॥ एक टेकधरीए जसा, निर्गुण निर्मम देह ॥
 दोषरोग जामें नही, करीयें ताकीसेव ॥ १२ ॥ ए
 विषम गति कर्मकी, लिखी नकाहुं जात ॥ रंकनथें
 राजाकरें, राजारंक दिखात ॥ १३ ॥ उस बिंदु कुशअ
 ग्रथें, परत नलग्गें वार, आयु अथिरतेसैं जसा, कर
 कबु धर्म विचार ॥ १४ ॥ ऊषध न मिटें मीत
 ज्युं जाथें मरें न कोय ॥ करउषध एक धर्मको, जसा
 अमर तुं होय ॥ १५ ॥ अंध पंगु ज्यों एक हे, जरे
 न पावक मांहि ॥ ग्यान सहित क्रिया करे, जस

अमर पुर जांहि ॥ १६ ॥ अमर जगतमें कोनही ॥
 मरें अमर सुर राज ॥ गढ मढ मंदिर ढह परै, अमर सुज
 स जस राज ॥ १७ ॥ कंचनसें पीतर ग्रहै, मूरख मुढ
 गिमार ॥ तजै धर्म मिथ्यामती, जजै अधर्म असार
 ॥ १८ ॥ खल संगति तजियें जसा, विद्या सोजित
 तोय ॥ पन्नग मणि संयुक्तसो ॥ क्योंन जय कर होय
 ॥ १९ ॥ गाज सरदकी कारिमी, करतहें बहुत अ
 वाज ॥ तनक न वरसे दान त्यों, कृपण न दें जसराज
 ॥ २० ॥ घरटी के दो पुरु विचे, कण चूरण ज्यों
 होय ॥ त्यों दो नारी विच पोड्यो, नर उगरें न कोय ॥ २१ ॥
 नही ग्यान जामें जसा ॥ नही विवेक विचार ॥ ताको
 संगन कीजीइं, पर हरीइं निरधार ॥ २२ ॥ चपला
 कमला जानकें, कटु खरचो कटु खाउ ॥ इकदिन जोइ
 सुवो जसा ॥ लांवा करकें पाउ ॥ २३ ॥ ठलकर बलकर
 बुधिकर, करकें जसा उपाय ॥ आतम वसकर आपनो
 दूर जन दूर तजाय ॥ २४ ॥ जुवती सब युगवस
 कीउं किसीन राखीमांम ॥ तासों जो न्यारारहै, ताको
 जसा प्रणाम ॥ २५ ॥ जाकी बात न कीजीइं, थोडा
 हीमें आनि ॥ जसा बराबर लेखवो, आप प्रानपर प्रान
 ॥ २६ ॥ नग दुहिता पति आचरण ॥ ताको अरि
 जसराज ॥ तसपति नारी बिनु पुरुष ॥ नवधैं सोजा
 लाज ॥ २७ ॥ टांणा टुंणा ठोरदें, याथें न सरें काज ॥
 चोखे चित जिन धर्मकर, ज्यूं काजसरें जसराज

॥ १७ ॥ ठगसो जो पर मनछगें, पर उपजावें रीऊ ॥
जासकरें बस जगतकों ॥ साचा ठग सोईज ॥ १८ ॥
रुं कहा जस राज कहें, जो अपने मन साच ॥ द्विण
में परगट होयगा, ज्यों प्रगटायो काच ॥ १९ ॥ दहै
कोट अग्यांनका, गोलाग्यांन लगाया ॥ मोहरायकों मार
लैं, जसा लगे सब पाय ॥ २० ॥ नदी नखीनारी
तणो ॥ नागन कुल जसराज ॥ नरखी नरपति निर्गुणिन,
आठे करें अकाज ॥ २१ ॥ तारे ज्यों नरकों जसा
जर सायरमें पोत ॥ त्यों गुरु तारें जब जलधि ॥
करें ग्यांन उद्योत ॥ २२ ॥ थोज लोजनहि जीउकों,
जो लाख कोटिधन होत ॥ समता जो आवें जसा, सुखी
सदा मन पोत ॥ २३ ॥ दक्षिण उत्तर च्यारदिस,
जसाजमें धन काज ॥ प्रापति विना नपाईयें, कोमि करो
सुउपाय ॥ २४ ॥ धन पाया खाया नही, दीयाजि
कबु नाहि, सो वागुरी होयें धनमें जसा, दुंदुतहै धन
मांहि ॥ २५ ॥ निर्गुन पतित नारी निलज, कूपक
खारो नीरा ॥ नीच मीत जसराज कहें, पांचों दहें शरीर
॥ २६ ॥ पर उपगारी जगतमें ॥ अलप पुरुष जसराज,
सीतल वचन दया मया, जाके मुख परलाज ॥ २७ ॥
फोज दिसो दिस मिल गई, जसा धुरें निसाण ॥ जुंजें
सन मुख जायनें, सूरगणे नहि प्राण ॥ २८ ॥ बुंभ
परें सब दोर है, लैलै आयुध हाथ ॥ बदन मलिन
कर हैं जसा, जब जाचें कोय अनाथ ॥ २९ ॥

जगति जल्वी जगवंतकी, संगति जल्वी सुसाध ॥ उर
 नकी संगति जसा, आठों पोहोर उपाध ॥ ४६ ॥ मूर
 ख मरण नदेखकें, करत बहुत आरंज ॥ सात विसन
 सेवें जसा, करें धर्म विच दंज ॥ ४७ ॥ याग करें प्राणी
 हणें, ज्ञापें धर्म उलंठ ॥ देखोग्यान बिचारकें, क्यों पावें
 वैकुंठ ॥ ४८ ॥ रीस त्याग वैरागधर, होय जोगी
 अबधूत ॥ शिव नगरी पावें जसा, कर एसी कर तूत
 ॥ ४९ ॥ लहैणा देणा कबु नही, मुहकि मिठी बात ॥
 हृदय कपट धर है जसा, ताके शिरपर छात ॥ ५० ॥
 वरसें वारधि अहोनिसें, खाखरतीनुंपान ॥ जाग्य विना
 पावें नही, याचक दाता दान ॥ ५१ ॥ शंखसरीखां
 ऊजला, नर फूटरा फरक ॥ जसा न सोजें दान बिण,
 लुटी कान धरक ॥ ५२ ॥ परोपंथ हैं सूरको, रणबि
 च मुंड विहंड ॥ पाठा पाठ धरें नही, जो होई शतखंड
 ॥ ५३ ॥ सायर मोती नीपजै, हीरा हीरा खाण ॥ ग्यांन
 ध्यांन त्यां नीपजै, जसा सुगुरुकी वाण ॥ ५४ ॥ हस्त
 को मंडण दांनहें, घर मंरुण वर नार ॥ कुल मंडण अंग
 ज जसा, धन मंडण संसार ॥ ५५ ॥ लंठन निसपति
 श्यामरुचि, सूरज लंठन ताप ॥ दाता लंठन धनवि
 ना, सबहुं देत सराप ॥ ५६ ॥ दांत दांत समतार
 ती, हणें नही षट काय ॥ जसा ग्यांन किरिया गमन,
 सो साधु कहें वाय ॥ ५७ ॥ सतरसें तीसें समें, नव
 मी शुक्ल आषाढ ॥ दोधक बावनी जसमुनी, पुरन
 करी आगध ॥ इति षष्ठम परिच्छेद समाप्त ॥

॥ सप्तमपरिच्छेद प्रारंभः ॥

साधुसाध्वीयोग्य आवश्यक क्रियाके सूत्रे.

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवक्षायाणं । नमो लोए सब साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो सब पाव पणा सणो । मंगळाणं च सबेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

॥ १ ॥ श्री करेमिजंते ॥

॥ करेमि जंते सामाइयं । सबं सावज्जं जोगं पच्च खामि । जावज्जीवाए । तिविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुज्जाणामि । तस्स जंते पक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ २ ॥ श्री इष्ठामि ठामि ॥

॥ इष्ठामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे देवसिउं अइयारो कउं । काइउं वाइउं माणसिउं । उस्सुत्तो । उम्मग्गो । अकप्पो । अकरणिज्जो । डुजाउं । डुवि चिंतिउं । अणायारो । अणिब्बियवो । असमण पाउग्गो । नाणे दंसणे चरित्ते । सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं । चउण्हं कसायाणं । पंचण्हं मह वयाणं । ठण्हं जीव निकायाणं । सत्तण्हं पिंडेसणाणं । अठण्हं पवयण माउणं । नवण्हं बंजचेरगुत्तीणं । दस विहे समण धम्मे । समणाणं जोगाणं । जं खंमियं जं विराहियं । तस्स मिष्ठामिडुक्कमं ॥

इच्छाकारेण संदिसह जगत्तु देवसियंआलोउं । जो
मे देवसिउ अइ यारो कउं ॥ शेषं उपर प्रमा णे ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं । जो मे देवसिउं अइयारो
कउं ॥ शेषं उपर प्रमाणे.

॥ ३ ॥ देवसिक अतिचार ॥

॥ ठाणे कमणे चंकमणे । आऊत्ते अणाऊत्ते ।
हरियकाय संघट्टे । बीयकाय संघट्टे । त्रसकाय संघट्टे ।
थावरकाय संघट्टे । ठप्पइसंघट्टे । ठाणाउं ठाणं
संकामीया । देहरे गोचरी मार्गे जाता आवतां
स्त्री तीर्यचतणा संघट्ट परिताप उपडव हुआ,
दिवस मांहि चार वार सजाय सात वार चैत्यवंदन
कीधां नहिं, प्रतिलेखण आधी पढी जणावी, अस्तो
व्यस्त कीधी, आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्यायां, धर्मध्यान
शुक्लध्यान ध्यायां नहिं, गौचरीतणा दोष उपजता
जोया नहिं, पांच दोष मंरुलितणा टाढ्या नहिं,
मात्रुं अणपुंजे लीधुं, अणपुंजी चूमिकार्ये परठव्युं,
देहरा उपाश्रयमांहिपेसतां निसरतां निसिही आव
स्सही कहेवी विसारी, जिनजुवने चोराशी आशा
तना, गुरु प्रते तेत्रिश आशातना, अनेरुं जे कांइ
दिवस संबंधीजं पापदोष लाग्युं होय ते सवीहुं मने
वचने कायाए करीने तस्स मिहामि डुक्कं ॥

॥ ४ ॥ रात्रिक अतिचार ॥

। संथाराऊट्टणकी । परियट्टणकी । आऊंटणकी ।

पसारणकी । ठप्पिय संघट्टणकी । संथारो ऊत्तरपट्टो
 टाली अधिकुं उपगरण घाट्युं, अणपडि लेखुं हला
 व्युं, मात्तुं अणपडिलेखुं लीधुं, अणपुंजी जूमिए पर
 ठव्युं, परठवतां अणुजाणह जस्सगो कीधो नहीं,
 परठव्या पुंठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे कीधुं नहीं,
 संथार पोरसी जणवी विसारी, पोरसी जणाव्या
 विना सुता, कुस्वम लाधुं सुपनांतरमांहि शिलनी वि
 राधना दुइ, आइइ दोइइ चित्तव्युं, संकटप विकटप
 कीधो, रात्रीसंबंधीउ जे कोइ अतिचार लाग्यो होय,
 तेसवी मने वचने कायाए करी तस्स मिठामि डुक्कमं॥

॥ ५ ॥ श्री श्रमणसूत्र ॥

॥ नमो अरिहंताणं० ॥ करेमि जंतो सामाइ
 अं० ॥ चत्तारि मंगलं० ॥ अरिहंता मंगलं । सिद्धा
 मंगलं । साहु मंगलं । केवली पन्नतो धम्मं मंगलं ॥
 चत्तारी सरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि
 सिद्धे सरणं पवज्जामि साहु सरणं पवज्जामि । केवली
 पन्नतो धम्मो सरणं पवज्जामि ॥ चत्तारी लोयुत्तमा अरि
 हंता लोयुत्तमा ॥ सिद्धा लोयुत्तमा । साहु लोयुत्तमा केव
 ली पन्नतो । धम्मो लोयुत्तमो ॥ इठामि पक्कमिउं जो मे
 देवसिउं० । इठामि पक्कमिउं । इरिआवहिआए० ।
 इठामि पक्कमिउं ॥ पगामसिज्जाए ॥ निगामसि
 ज्जाए ॥ संथारा उवट्टणाए ॥ परिअट्टणाए ॥ आउ
 टण पसारणाए । ठप्पइया संघट्टणाए ॥ कुइए ।

ककराइए ढीए । जंजाइए ॥ आमोसे ॥ ससरखा
 मोसे ॥ आउलमाउलाए ॥ सोअणवत्तिआए ॥ इढी
 विप्परिआसिआए । दिढीविप्परिआसिआए । मण
 विप्परिआसिआए । पाणजोअणविप्परिआसिआए ।
 जो मे देवसिउं अइआरो कउं । तस्स मिढामि डुक्कं ॥
 पक्किमामि गोअचरिआए ॥ जिस्कायरिआए ॥ उग्घा
 रुकवारु उग्घारु णाए । साणावढादारा संघट्टणाए ॥
 मंनिपाहुमिआए ॥ बलिपाहुडिआए ॥ ठवणापाहु
 मिआए संकिए ॥ सहसागारिए । अणेसणाए पाणे
 सणाए ॥ पाणजोअणाए ॥ बीअजोअणाए ॥ हरि
 अजोअणाए ॥ पढेकम्मिआए ॥ पुरेकम्मिआए ॥
 अदिठह्माए ॥ दगसंसठह्माए रयसंसठह्माए ॥
 पारिसारुणिआए ॥ पारिठावणिआए ॥ उहासण
 जिस्काए ॥ जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए ॥ अपरि
 सुळं पडिगाहिअं ॥ परिजुत्तं वा ॥ जं न परिठविअं
 तस्स मिढामि डुक्कं ॥ पक्किमामि चाउक्कालं
 सझा यस्स अकरणयाए ॥ उज्जउकालं जंकोव
 गरणस्स अप्पमिल्लेहणाए ॥ डुप्पमिल्लेहणाए ॥ अ
 प्पमज्जाणाए ॥ डुप्पमज्जाणाए ॥ अइक्कमे ॥ वइक्क
 मे । अइआरे ॥ अणायारे ॥ जो मे देविसिउं अइ
 यारो कउं ॥ तस्स मिढामि डुक्कं ॥ पडिक्कमामि
 एगविहे असंजमे ॥ १ ॥ पक्किमामि दोहिं बंधणे
 हिं । राग बंधणेणं ॥ दोस बंधणेणं ॥ २ ॥ पडिक्क

मामि तिहिं दंडेहिं ॥ मणदंडेणं । वयदंडेणं । कायदं
 डेणं ॥ पन्निक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं ॥ मनगुत्तीए ॥
 वयगुत्तीए ॥ कायगुत्तीए ॥ पन्निक्कमामि तिहिं सद्धे
 हिं ॥ माया सद्धेणं ॥ निआण सद्धेणं ॥ मिह्ठादंस
 ण सद्धेणं ॥ पन्नि० ॥ तिहिं गारवेहिं ॥ इट्ठी गार
 वेणं । रसगारवेणं ॥ साया गारवेणं ॥ पन्नि० ॥
 तिहिं विराहणाहिं ॥ नाण विराहणाए दंसण विरा
 हणाए । चरित्त विराहणाए ॥३॥ पन्नि० ॥ चउहिं कसा
 एहिं ॥ कोह कसाएणं ॥ माण कसाएणं ॥ माया
 कसाएणं ॥ छोज कसाएणं ॥ पन्नि० ॥ चउहिं सन्ना
 हिं ॥ आहार सन्नाए ॥ जय सन्नाए ॥ मेहुण सन्ना
 ए ॥ परिग्गह सन्नाए ॥ पन्नि० ॥ चउहिं विकहा
 हिं ॥ इल्लिकहाए ॥ जत्तकहाए ॥ देसकहाए ॥ राय
 कहाए ॥ पन्नि० ॥ चउहिं जाणेहिं ॥ अट्टेणं जाणेणं ॥
 रुहेणं जाणेणं ॥ धम्मेणं माणेणं ॥ सुक्केणं जाणेणं ॥४॥
 ॥ प० ॥ पंचहिं किरिआहिं ॥ काइआए ॥ अहिग
 रणियाए ॥ पाउसिआए ॥ पारितावणिआए ॥ पाणा
 इवाय किरिआए ॥ प० ॥ पंचहिं कामगुणेहिं ॥
 ॥ सद्धेणं ॥ रूवेणं रसेणं ॥ गंधेणं ॥ फासेणं ॥
 ॥ प० ॥ पंचहिं महवएहिं पाणाइवायाउं वेरमणं ॥
 मुसावायाउं वेरमणं ॥ अदिन्नादाणाउं वेरमणं ॥ मेहु
 णाउं वेरमणं ॥ परिग्गहाउं वेरमणं ॥ प० ॥ पंचहिं
 समिइहिं ॥ इरिआसमिइए ॥ ज्ञासासमिइए ॥

एसणासमिइए ॥ आयाणचंरुमतनिस्केवणा समि
 इए ॥ उच्चारपासवणखेलजह्वसिंघाण पारिछावणि
 आ समिइए ॥५॥ ५० ॥ ठहिं जीवनिकाएहिं॥पुढवि
 काएणं ॥ आउकाएणं ॥ तेउकाएणं ॥ वाउकाएणं ॥
 वणस्सइकाएणं तसकाएणं ॥ ५० ॥ ठहिं वेसाहिं ॥
 किएह्वेसाए ॥नील वेसाए॥काउ वेसाए॥तेउवेसाए
 पउमवेसाए ॥ सुक वेसाए ॥६॥५०॥ सत्तहिं जयछाणे
 हिं ॥ अछहिं मयछाणेहिं ॥ नवहिं बंजचेर गुत्तीहिं ॥
 दसविहे समणधम्मे ॥ इगारसहिं उवासग पन्निमा
 हिं ॥ बारसहिं जिखुपन्निमाहिं ॥ तेरसहिं किरिआ
 ठाणेहिं ॥ चउदसहिं ॥ जूअगामेहिं ॥ पन्नरसहिं ॥
 परमाहम्मिहिं ॥ सोलसहिं गाढासोलसएहिं ॥ सत्त
 रसविहे असंजमे ॥ अछारसविहे अबंजे ॥ एगुण
 वीसाए नायश्चयणेहिं ॥ वीसाए असमाहि छाणेहिं॥
 इक्कवीसाए सबलेहिं ॥ बावीसाए परीसहेहिं ॥ ते
 वीसाए सुअगरुप्रयणेहिं ॥ चउवीसाए देवेहिं ॥
 पणवीसाए जावणाहिं ॥ ठवीसाए दसाकप्पववहारा
 णं उद्देसणकावेहिं ॥ सत्तावीसाए अणगार गुणेहिं ॥
 अछावीसाए आचारपकप्पेहिं ॥ एगुणतीसाए पाव
 सुअपसंगेहिं ॥ तीसाए मोहणीअछाणेहिं ॥ इगती
 साए सिद्धाइ गुणेहिं ॥ बत्तीसाए जोग संगहेहिं ॥
 तितीसाए आसायणाएहिं ॥ अरिहंताणं आसाय
 णाए ॥ सिद्धाणं आसायणाए आयरिआणं आसा

यणाए ॥ उवञ्चायाणं आसायणाए ॥ सादूणं आसा
यणाए ॥ सादुणीणं आसायणाए ॥ सावयाणं आसा
यणाए ॥ सावियाणं आसायणाए ॥ देवाणं आसा
यणाए ॥ देवीणं आसायणाए ॥ इहलोगस्स आसा
यणाए ॥ परलोगस्स आसायणाए ॥ केवल्लि
पन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए ॥ सदेवमणु
आसुरस्सलोगस्स आसायणाए ॥ सबपाणञ्चूअ
जीवसत्ताणं आसायणाए ॥ कालस्स आसायणाए ॥
सुअस्स आसाणाए ॥ सुअदेवयाए आसायणाए ॥
वायणारिअस्स आसायणाए ॥ जं वाइऊं वच्चामेद्विअं
हीणस्करं । अच्चस्करं । पयहीणं विणयहीणं । घोस
हीणं । जोगहीणं । सुहुदिन्नं दुहुपनिष्ठिअं । अका
ले कउसञ्चारु । काले न कउ सञ्चारु । असञ्चाए
सञ्चाइअं । सञ्चाए न सञ्चाइअं । तस्स मिढामिडु
क्कमं ॥ नमो चउवीसाए तिष्ठयराणं । उसत्ताइ
महावीर पज्जवसाणाणं । इणमेव निग्गं थंपावयणं ।
सच्चं । अणुत्तरं । केवल्लिअं । पणिपुत्तं । नेआउअं ।
संसुऊं । सद्धगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्ति मग्गं निज्जा
ण मग्गं । निवाण मग्गं । अवितहमविसंधिं । सब
डुस्कप्पहीण मग्गं । इहं विआ जीवा । सिजंति ।
बुजंति । मुच्चंति । परिनिवायंति । सबडुस्काणमंतं
करंति । तं धम्मं सद्वहामि । पत्तिआमि । रोएमि ।
फासेमि । पाळेमि अणुपाळेमि । तं धम्मं सद्वहंतो । पत्ति

श्रंतो । रोश्रंतो । फासंतो । पादंतो । श्रणुपादंतो ।
 तस्सधम्मस्स श्रपुठिउमि श्राहणाए । विरउमि
 विराहणाए । असंजमं परिश्राणामि । संजमं उव
 संपज्जामि । अबंजं परिश्राणामि । बंजं उवसंपज्जा
 मि । अकप्पं परिश्राणामि । कप्पं उवसंपज्जामि
 अनानं परि श्राणामि । नानं उवसंपज्जामि । अकि
 रिश्रं परिश्राणामि । किरिश्रं उवसंपज्जामि । मिष्ठ
 तंपरिश्राणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । अबोहिं
 परिश्राणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । श्रमग्गं परिश्रा
 णामि । मग्गं उवसंपज्जामि । । जं संजरामि । जं च
 न संजरामि । जं पडिक्कमामि । जं च न पडिक्कमा
 मि तस्स सबस्स देवसिअस्स अईश्रारस्स पडिक्क
 मामासमणोहं संजय । विरय पडिहय पच्चस्काय पाव
 कम्मे । अनिश्राणो । दिठिसंपन्नो । मायामोस विव
 ज्जिउं । श्रद्धाश्लोसु दीवसमुदेसु । पन्नरससु कम्म
 जूमीसु । जावंत केइ साहू । रयहरण गुठपडिग्गह
 धारा । पंचमहव्वय धारा । श्रठारससहस्स सीलंग
 धारा । अरुअयार चरित्ता । ते सबे सिरसा मणसा
 मण्णव्व वंदामि । खामेमि सब जीवे, सबेजीवा खमंतु
 मे ॥ मित्ती मे सबजूएसु । वेरं मश्रं न केणइ ॥ १ ॥
 एवमहं श्रालोइ श्र । निंदिश्र गरहिअडुगंठिश्रं
 सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो । वंदामि जिणे चउवी
 सं ॥ २ ॥ इतिश्री यतिप्रतिक्रमणसूत्रं ॥

॥ ६ ॥ पाक्षिक अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ । चरणंमि तवम्मि तह्य
विरयंमि । आयरणं आयारो । इय एसो पंचहा जणि
उ । १ । ज्ञानाचार । दर्शनाचार । चारित्राचार । त
पाचार । वीर्याचार । ए पंचविध आचार मांहे जे
कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहिं सूक्ष्म बादर जा
णतां हुज होय ते सविहुं मन वचन कायाइं करी
मिष्ठामि दुक्कमं । १ ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार । काले विणये बहु
माणे । उवहाणे तह्य निन्हवणे ॥ वंजण अष्ठ त
हुजए । अष्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल
वेला मांहिं पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहीं । अकाले
पढ्यो । विनयहीन बहुमानहीन योग उपधानहीनअ
नेराकन्हे पढ्यो अनेरो गुरु कह्यो । देववंदण वांढ
णे । पक्किमणे सचाय करतां । पढतां गुणतां कून्तो
अक्षर कानें मात्रांआगलो उठो जण्यो गुण्यो । सूत्रा
र्थ तहुजय कूमां कहां । काजो अणउधर्यां । मांडा
अण पक्खेहां वस्ति अणसोध्यां अणपवेयां । अस
द्याइ । अणोद्या कालवेला मांहिं श्री दशवैकालिक
प्रमुख सिद्धांत पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो । अविधे योगो
पधान कीधा कराव्या । ज्ञानोपगरण । पाटी पोथी
ठवणी ॥ कवली । नोकारवाली । सांपनां । सांपनी ।
दखी वही । कागलिआ उल्लिआप्रतें । पग लाग्यो

शूकलाग्यो । शूकें अहरे जाज्यो । ज्ञानवंतप्रते छे
 ष महर वह्यो । अंतराय अवज्ञा आशातना कीधी ।
 कुणहिप्रतें तोतलो बोंबमो देषी हस्यो वितक्यो ।
 मतिज्ञान । श्रुतज्ञान । अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान ।
 केवलज्ञान । ए पांच ज्ञानतणी आशातना कीधी ।
 ज्ञानाचार विषइउ । अनेरो जे कोइ अतिचार ० । २ ।

दर्शनाचारे आठ अतिचार । निस्संकिअ निक्कं
 खिअ । निवृत्तिगिह्याअमूढदिठ्ठीअ ॥ उववूयथिरी
 करणे । वव्व पचावणे अठ ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म
 तणे विषे निस्संकपणुं न कीधुं । तथा एकांत निश्च
 य धखुं नही । धर्म संबंधिआ फलतणे विषे निस्सं
 देह बुद्धि धरी नही । साधु साध्वीतणी निंया जुगु
 प्सा कीधी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रचावना देखी ।
 संघमांहिं गुणवंततणी अनुपवृहणाकीधी । अस्थिरीकर
 ण अवात्सदय अज्जक्ति निपजावी । तथा देवद्रव्यगुरु
 द्रव्य । जदित उपेक्षित । प्रज्ञापराधे विणास्यो ।
 विणसंतो उवेख्यो । ठतीशक्तिं सारसंजाख न कीधी ।
 ठवणायरिउ हाथथकी पाड्यो । पम्लेहवो विस
 स्यो । जिनजुवनतणी चोरासी आशातना कीधी ।
 दर्शनाचार विषइउ । अनेरो जे कोइ अतिचार ० । ३ ।

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाणजोग
 जुत्तो । पंचहिंसमिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्ता
 यारो । अठविहो होइ नायवो ॥४॥ ईर्यासमिति, जा

वासमिति, एषणासमिति, आदानजडमत्त निक्षेपणा
समिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगु
प्ति, कायगुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता रूडी परे पाली
नही, साधुतणे धर्मे सदैव, आवकतणे धर्मेसामायिक
पोसह लीधे, जे कांइ खंरुन विराधना कीधी होय,
चारित्राचार विषइउं अनेरो जेकोइ अतिचार ॥ ४ ॥

॥ विशेषतश्चारित्राचारे तपोधनतणे धर्मे ॥ वयठ
कं कायठकं, अकप्पो गिहि जायणं ॥ पलिअंक नि
सिज्जाए, सिणाणं सोजवज्जाणं ॥ ५ ॥

॥ व्रत षट्के, पहिले महाव्रतें प्राणातिपात,
सूक्ष्म वादर, त्रस थावर जीवतणी विराधना हूई,
बीजें महाव्रतें क्रोध लोभ हास्य जय लगे जूतुं बोद्ध्या,
तीजें अदत्तादानविरमण महाव्रते ॥ सामिजीवादत्तं,
तिष्ठयरत्तं तद्देवय गुरुहि ॥ एवमदत्तंचउहा । पण
त्तंवीयराएहिं ॥ १ ॥ स्वामी अदत्त, जीव अदत्त,
तीर्थकर अदत्त, गुरु अदत्त, ए चतुर्विध अदत्तादान
मांहि जेकांइ अदत्त परिजोगव्युं ॥ चोथे महाव्रते ॥
वसहीकह निसिज्जिदिय, कुम्भित्तरपुवकी लिए पणिए ॥
अइमायाहारविजूसणाइं, नवबंजचेरगुत्तिउं ॥ १ ॥
ए नववाडी सूधी पाली नही, सुहणे स्वप्नांतरें दृष्टि
विपर्यास हूउं ॥ पंचमे महाव्रते, धर्मोपगरणे विषे
इठा मूर्खा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिका उपगरण
वावस्वार्या, पर्व तिथि पम्हिलेहवो विसाख्यो ॥ ठठे

रात्री जोजन विस्मण व्रतें, असूरां पाणी कीधां,
ठारोद्गार आव्यो, पात्रे पात्राबंधे तक्रादिकनो ठांटो
लाग्यो, खरक्यो रह्यो, लेप तेल उपधादिकतणो
संनिधि रह्यो, अतिमात्रायें आहार लीधा, ए ठठा
व्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अण ॥ ६ ॥

॥ कायषट्के ॥ गामतणे पइसारे नीसारे पग
पम्लेहवा विसाख्या, माटी मीतुं खमी धावनी
अरणेटो, पाषाणतणी चातली उपर पग आव्यो,
अप्पकाय वाघारी फूसणा हुवा, विहरवा गया, ऊल
खो हाड्यो, लोटो ढोड्यो, काचा पाणीतणा ठांटा
लाग्या, तेउकाय बीज दीवातणी उंजेही हुइ, वाउ
काय, उघाकें मुखें बोड्या, महावाय वाजतां कपमा
कांबली तणा ठेमा साचव्या नहीं, फूक दीधी ॥
वनस्पतिकाय, नीलफूल सेवाल थरुमूल फल फूलवृक्ष
शाखा प्रशाखातणा संघट्ट परंपर निरंतर हूवा ॥
असकाय, बेरिंडी तेरिंडी चउरिंडी पंचेंड्री काग
बग उमाव्या, ढोर त्रासव्यां बालक बीहाव्यां षट्
काय विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचारण ॥ ७ ॥

अकट्पनीय सय्या वस्त्र पात्र पिंरु परिजोगव्यो,
सिज्जातरतणो पिंरु परिजोगव्यो, उपयोग कीधा
पाखे विहस्या, धात्री दोष, त्रस बीजसंसक्त पूर्वक
र्म पश्चात्कर्म उद्गम उत्पादना दोष चिंतव्या नहीं,
गृहस्थतणो जाजन जांज्यो, फोक्यो, बली पाठो

आप्यो नहीं, सूतां संधारिया उत्तरपट्टा टलतो अधिको उपगरण वावर्यो, देशतः स्नान मुखें जीनो हाथ लगारयो, सर्वतः स्नानतणी बांठा कीधी, शरी रतणो मल फेरयो, केश रोम नख समाख्या, अने री जे कांइ गाडाविजूषा कीधी, अकट्ठपनीय पिंमादि विषइउं अनेरो जे कोण ॥ ७ ॥

आवस्सयसद्याए, पम्भिलेहणवाण जिस्क अज त्ठे ॥ आगमणे नीगमणे । ठाणे निसिअणे तु अट्टे ॥ १ ॥ आवश्यक उज्जयकाल व्याक्षिप्त चित्तपणे पम्भिकमणुं कीधुं, पम्भिकमणा मांहि उंघ आवी, वेठां पम्भिकमणुं कीधुं, दिवस प्रतें चार वार सद्याए, सात वार चैत्यवंदन न कीधां, पम्भिलेहणा आधी पाठी जणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायां नहीं, गोचरी गयां बेंतालीश दोष उपजता चिंतव्या नहि, ठती शक्तिए पर्व तिथे उपवासादिक कीधो नहि, उपा सरा देहरामांहि पेसतां निसिही निसरतां आवस्स ही कहेवी विसारी, इच्छामिच्छादिक दशविध चक्रवाल समाचारी सांचवी नहि, गुरुतणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यो नहि, अपराध आव्यां मिहामि डुकरु दी धा नहि, स्थानके रहेतां हरियकाय वियकाय कीमी नगरां सोध्यां नहीं, उंघो मुहपत्ति चोलपट्टो संघट्या, स्त्री तीर्यचतणा संघट्ट अनंतर परंपर हूवा,

वक्ता प्रतें पसारु करी, लहुडां प्रतें इठाकार इत्या
दिक विनय साचव्यो नहि, साधु सामाचारी वि०
अ० पक्षि० सु० बा० जाणतां अजाणतां हुजं होय,
ते सविहु मन वचन कायायें करी मिठामी डुक्कमं.
॥ ९ ॥ इति साधु अतिचार संपूर्णः ॥

७ ॥ पाक्षिक सूत्र. ॥

तिष्ठंकरे अतिठे, अतिष्ठसिद्धेअ तिष्ठसिद्धेअ ॥
सिद्धेजिणे अ रिसी, महरिसी नाणं च वंदा
मि ॥ १ ॥ जे इमं गुण रयण सायर, मविराहिऊण
तिष्ठसंसार ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविश्वा-
राहणाजिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगल मरिहंता । सिद्धा
साहु सुअं च धम्मोअ ॥ खंती गुत्ती मुत्ती । अज्जा
वया महवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करिति ।
परमरिसि देसियमुआरं ॥ अहमवि उवठित्तं ।
महवय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ से किं तं महवय उ
च्चारणा । महवय उच्चारणा पंच विहा पणत्ता ॥ राइ-
जोअणवेरमण ठठा । तंजहा ॥ सवाउं पाणाश्वाया
उं वेरमणं ॥ १ ॥ सवाउं मुसावायाउं वेरमणं ॥ २ ॥
सवाउं अदिन्नादाणाउं वेरमणं ॥ ३ ॥ सवाउं मेहुणा
उं वेरमणं ॥ ४ ॥ सवाउं परिग्गहाउं वेरमणं ॥ ५ ॥
सवाउं राइजोअणाउं वेरमणं ॥ ६ ॥

तठखलु पढमे जंते महवय. पाणाश्वायाउं वेर
मणं सवं जंते पाणाश्वायं पच्चस्कामि से सुहुमं वा ।

वायरं वा । तसं वा । थावरं वा । नेवसयं पाणे अइ
वाइज्जा । नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा । पाणेअ
इवायंते वि । अन्ने न समणुज्जाणामि । जावज्जीवाए
तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि
न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुज्जाणामि । तस्स
जंते पक्कमामि निंदामि गरिहामि आप्पाणं वोसि
रामि ॥ से पाणइवाए चउविहे पन्नत्ते । तंजहा ।
दवउं खित्तउं कालउं जावउं । दवउणं पाणाइवाए
ठसु जीवनिकाएसु । खित्तउणं पाणाइवाए सबलोए ।
कालउणं पाणाइवाए दिआवा राउंवा । जावउणं पा
णाइवाए रागेणवा दोसेणवा । जं मए इमस्स धम्मस्स
केवलपिप्पसस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिंछिअस्स
विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसोवणियस्स
उवसमप्पज्जवस्स नवबंजचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स
जिस्कावित्तिअस्स कुस्कीसंबलस्स निरगिसरणस्स
संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निवि
त्तिलक्खणस्स पंचमहवयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स
अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निवाणगम
णपज्जवसाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए असवयाए अ
बोहिआए अणज्जिगमेणं अज्जिगमेणवा पमाएणं राग
दोसपक्खिअए बालयाए मोहयाए मंदयाए किडु
याए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउंवगएणं पंचिंदिउंव
सट्टेणं पक्खिपुत्तज्जारिआए सायासुक्कमणुपालयंतेणं

उदंवात्तवे अन्नं सु वा जवग्गहणे सु पाणाइवाउं कउं
 वा । प्पराविउवा कीरंतोवा परेहिंसमणुन्नाउं तं निं
 दामि गरिदामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
 काणणं अइअं निंदामि परुप्पन्नं संवरेमि अणागयं
 पच्चस्कामि मव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सि
 ज्जेदं नेवज्जेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंते
 वि अन्ने न समणुजाणिज्जा तं जहा अरिहंतसखि
 अं निरुम्मखिअं साहुसखिअं देवसखिअं एवंत्ता
 वइ त्तिस्सणीवा संजयत्तिरयपमिहय पच्चस्काय पाज्ज
 कम्मं दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सु
 नेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्स वेर
 मणं हिण सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पार
 गाभिए सवेसिं पाणाणं सवेसिं चूआणं सवेसिं जी
 वाणं सवेसिं सत्ताणं असोअणयाए अजूरणयाए अ
 निप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद
 वणयाए महवे महाणुजावे महापुरिसाणुचित्रे परम
 मिमिदेमिए पमत्ते तंडुस्सककयाए कम्मस्सकयाए
 सुक्कयाए वोहिद्धाजाए संसारुत्तारणाए तिकट्ट उव
 संपज्जित्ताणं विहरामि पढमेज्जंतेमहव्वए उवठ्ठिउमि
 मवाउं पाणाइवायाउं वेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दोच्चे जंते महव्वए मुसावाउं वेरमणं ।
 सव्वं जंते मुसा वायं पच्चस्कामि से कोहा वा १ लोहा
 वा २ जया वा ३ हासा वा ४ नेवसयं मुसंवइज्जा ने

वन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवयंतेवि अन्ने न समणु
 ज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वा
 याए काएणं न करेमि न कारवेमि ॥ तस्स जंते प
 ण्णिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥
 से मुसाए चउव्विहे पन्नत्ते । तं जहा । दवउ १ खित्तउ २
 कलउ ३ जावउ ४ । दवउणं मुसावाए सवेदवेसु ।
 खित्तउणं मुसावाए लोएवा अलोएवा । काल
 उणं मुसावाए दिआवा राउवा । जावउणं मुसा
 वाए रागेणवा दोसेणवा । जं मए इमस्स धमस्स
 केवल्लि पसुत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठ्ठिअ
 स्स विणय मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसो
 वस्सियस्स उवसमप्पज्जवस्स नवबंजचेरगुत्तस्स अ
 पय माणस्स जिक्कावित्तिअस्स कुक्कि संबलस्स
 निरग्सिरणस्स संपक्कालिअस्स चत्तदोसस्स गुण
 ग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिक्खणस्स पंच
 महवयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइअस्स
 संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमण पज्जावसा णफल
 स्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अण
 जिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए मोहयाए
 मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएणं
 पंचिंदिउवसट्ठेणं पण्णिपुसं जारयाए सायासुक्कमणु
 पालयंतेणं इहं वा जवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु
 मुसावाउ जासिउ वा जासाविउ वा जासिजंतोवा परेहिं

समणुन्नाउं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं अईअंनिंदामि पकुपन्नंसंवरे
मि अणागयंपच्चस्कामि सव्वंमुसावायं जावज्जीवाए
अणिस्सिउहं नेवसयं मुसं वाइज्जा नेवन्नेहिंमुसं
वायाविज्जा मुसं वायंतेवि अत्ते न समणुज्जाणिज्जा ।
तं जहा अरिहंतसस्किअं सिद्धसस्किअं साहुसस्कि
अं देवसस्किअं अप्पसस्किअं एवंहवइ जिस्कुवा जि
स्कुणीवा संजय विरय पफिहय पच्चस्खाय पावकम्मे
दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जाग
रमाणेवा एसखलु मुसावायस्सवेरमणे हिए सुहे ।
खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वे
सिंजूआणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुस्क
णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए
अपीरुणयाए अपरिआवणयाए आणुइवणयाए मह
त्ते महागुणे महाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरि
सिदेसिए पसत्ते तं डुस्ककयाए कम्मकयाए मुस्क
याए बोहिल्लाजाए संसारुत्तारणयाए तिकहु उवसं
पज्जिताणं विहरामि दोच्चे जंते महवए उवठिउमि
सवाउं मुसावायाउं वेरमणं ॥ ५ ॥

॥ अहावरेतच्चे जंते महवए अदिन्नादाणाउं वेर
मणं । सव्वं जंते अदिन्नादाणं पच्चस्कामि । से गामे
वा नगरेवा रस्सेवा अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थुलंवा
चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा । नेवसयं अदिन्नं गिहिह

ज्जा नेवन्नेहिं अदिष्णं गिण्हाविज्जा अदिणं गिण्हंतेवि
 अन्नेन समणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतं पि
 अन्नं न समणुज्जाणामि तस्स जंतं पक्कमामि
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ से अदि
 न्नादाणे चउव्विहे पन्नते । तं जहा । दव्वउं खित्तउं
 कालउं ज्ञावउं । दव्वउणं अदिन्नादाणे गहणधारणि
 वेसु दव्वेसु; खित्तउणं अदिन्नादाणे गामेवानगरेवा
 रणेवा, कालउणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा,
 जं मए इमस्स धम्मस्म केवलपन्नत्तस्स अहिंसाद्वक्क
 णस्स उवसमप्पजवस्स नववज्जचेरगुत्तस्स अपयमा
 णस्स जिस्कावित्तियस्स कुस्सिंबलस्स निरगिसरण
 स्स संपक्कालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स
 निवियारस्स निव्वित्तिलक्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स
 असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामि
 अस्स निव्वाणगमणपच्चवसाणफलस्स पुव्विअन्नाण
 याए असवणयाए अबोहियाए अणज्जिगमेणं अज्जि
 गमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धआए बालआए
 मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउ
 क्कसाउवगएणं पंचिदिअवसट्ठेणं पक्किपुणं जारियाए
 सायासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवा जवे अन्नेसुवा जव
 गहणेसु अदिन्नादाणं गहिअंवा गाहाविअंवा घिप्पं
 तंवा परेहिं समणुज्जाउं तंनिंदामि गरिहामि तिविहं

तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईअं निंदामि
 पडुप्पसंसंवरमि अणागयं पच्चस्कामि सव्वं अदिन्ना
 दाणं जावज्जीवाए अणस्सिउहं नेवसंयं अदिन्नं
 गिण्हज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नंगिण्हविद्या अदिन्नं
 गिण्हंतेवि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा । तं जहा ।
 अरिहंतसस्किअं सिद्धसस्किअं साहुसस्किअं देवस
 ख्विअं अप्पसस्किअं एवं हवइ जिस्कुणीवा संजय
 विरयपडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दिआवा राउवा
 एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस
 खलु अदिन्ना दाणस्स वेरमणे हिण सुहे खमे
 निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं
 जीवाणं सव्वेसिं जूआणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुस्क
 णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अ
 पीरुणयाए अपरिआवणयाए अणुद्वणयाए मह्वे म
 हागुणे महाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि दे
 सिण पसव्वे तंडुस्ककयाए कम्मकयाए मुक्कयाए
 बोहिदाज्जाए संसारुत्तारणयाए तिकहु उवसंपधि
 ताणं विहरामि तच्चे जंते महव्वए उवठिउमि स
 व्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउव्वे जंते महव्वए मेहुणाउ वेरमणं ।
 सव्वं जंते मेहुणं पच्चस्कामि । से दिव्वंवा भाणुस्संवा
 तिरिक्कजोणिअंवा । नेवसअं मेहुणं सेविद्या नेवन्नेहिं
 मेहुणं सेवाविद्या मेहुणं सेवंतेवि अन्ने नसमणुज्जाणा

मि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
 काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंमि अन्नंन समणुज्ज
 णामि तस्स जंतं पक्कमामि निंदामि गरिहामि अ
 प्पाणं वोसिरामि ॥ से मेहुणे चउव्विहे पन्नते । तंज
 हा दव्वउं खित्तउं कालउं जावउं । दव्वउणं मेहुणे रूवे
 सुवा रूवसहगएसुवा । खित्तउणंमेहुणे उट्ठलोएवा अ
 हो लोएवा तिरियलोएवा कालउणं कालउणं दिआवा
 राउंवा । जावउणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा । जंम
 ए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खण
 स्स सच्चाहिठ्ठिअस्स विणयमूलस्स । खंतिप्पहाण
 स्स अहिरन्नसोअस्स उवसमप्पज्जवस्स नवबंजचेर
 गुत्तस्स अपयमाणस्स जिक्कावित्तिअस्स कुक्सिंब
 लस्स निरगिसरणस्स संपक्काळिअस्स चत्तदोसस्स
 गुणग्गहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स
 पंच महव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अवि
 संवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणप
 चवसाणफलस्स पुर्व्वि अन्नाण्याए असवण्याए
 अबोहियाए अणजिगमेणं अजिगमेणवा पमाएणं
 रागदोसपक्खिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए
 किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचिं
 दिउवसट्ठेणं पक्खिपुत्तं जारियाए सायासुक्कमणुपाल
 यंतंणं इहंवाजवे अन्नेसुवा जवग्गहणेसु मेहुणं सेवि
 अंवा सेवाविअंवा सेविज्जंतंवा परेहिं समणुज्जाउं

तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वाया
 ए काएणं अइयं निंदामि पक्खिपुन्नं संवरेमि अणा
 गयं पच्चस्कामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सि
 उहं नेवसयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवा
 विद्या मेहुणं सेवंतेवि अन्ने नसमणुज्जाणिद्या । तं
 जहा अरिहंत सक्किअं सिद्धसक्किअं साहुसक्किअं
 देवसक्किअं अप्पसक्किअं एवं हवइ त्तिस्कूवा त्ति
 स्कूणीवा संजयविरय पडिइय पच्चस्काय पावकम्मे
 दिआवा राउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा
 एसखल्लुमेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए
 आणुगामिए सब्बेसिंषाणाणं सब्बेसिं चूआणं सब्बे
 सिं जीवाणं सब्बेसिं सत्ताणं अट्ठुक्कयाए असोयण
 याए अजूरणआए अतिप्पणपाए अपीडणयाए अ
 परियावणयाए अणुद्वणयाए महत्ते महागुणे म
 हाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए
 पसब्बे तंठुक्कयाए कम्मक्कयाए मुक्कयाए बोहि
 लाजाए संसारुत्तारणयाए उवसंपच्चित्ताणं विहरामि
 चउब्बेजंतेमहवए उवछिउमिसवाउ मेहुणाउवेरमणं ४

अहावरे पंचमे जंते महवए परिग्गहाउवेरमणं ।
 सबं जंते परिग्गहं पच्चस्कामि । अप्पंवा बहुंवा अणुं
 वा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयंपरिग्ग
 हं परिगिण्हिद्या नेवन्नेहिं परिग्गिहं परिगिण्हाविद्या
 परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्नेन समणुज्जाणामि जाव

जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए काएणं नकरे
मि नकारवेमि करंतंपि अन्नं नसमणुज्जाणामि तस्स
जंतं पक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि
रामि ॥ सेपरिग्गहे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दवउ
खित्तउ कालउ जावउ । दवउणं परिग्गहे सचि
त्ताचित्तमीसेसु दवेसु, खित्तउणं परिग्गहे सबलोए
कालउणं परिग्गहे दिआ वा राउ वा जावउणं प
रिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा
जं मए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा
लक्खणस्स सच्चाहिठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहा
णस्स अहिरन्नसोवन्निअस्स उवसमप्पजवस्स नव
बंजचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स जिक्कावित्तिअस्स कु
रिसंबलस्स निरगिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्त
दोसस्स गुणग्गाहिअस्स निविआरस्स निवित्ति ल
क्खणस्स पंचमहवय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स
अविसंवाअस्स संसारपारगामिअस्स निवाणगमणप
द्यवसाणफलस्स पुविंअन्नाणयाए असवणयाए अ
बोहिआएअणजिगमेणं अजिगमेणं वा पमाएणं रा
गदोसपनि बद्धआए बालयाए मोहयाए मंदयाए
किडुयाए तिगारवगुरुयाए चउक्कसारुवगएणं पंचिं
दिउवसट्टेणं पडिपुन्नंजारियाए साया सुक्कमणुपालयं
तेणं इहं वा जवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु परिग्गहो
गहिउवा गाहाविउ वा घिप्पंतो वा परोहिं समणु

न्नाउ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं
 वायाएकाएणं अईअं निंदामि पमुप्पन्नं संबरेमि अ
 णागयं पच्चस्कामि सवं परिग्गहं जावज्जीवाए अणि
 स्सिउहं नेवसयं परिग्गहं पगिरिण्हिज्जा नेवन्नेहिं प
 रिग्गहं परिगिण्हाविद्या परिग्गहं परिगिण्हतेवि अन्ने
 न समणुज्जाणिज्जा तंजहा अरिहंतसस्किअं सिद्ध
 सस्किअं साहु सस्किअं देव सस्किअं अप्प सस्किअं
 एवं हवइ जिस्कू वा जिस्कूणी वा संजय विरय पडिहय
 पच्चस्काय पावकम्मे दिआवा राउं वा एगउं वा परि
 सागउं वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु परिग्ग
 हस्स वेरमणे हि ए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामि
 ए सवेसिं पाणाणं सवेसिं जूआणं सवेसिं जीवाणं
 सवेसिं सत्ताणं अटुस्कण्याए असोण्याए अजूरण
 आए अतिप्पण्याए अपीडण्याए अपरिआवण्याए
 अणुद्वण्याए महत्ते महागुणे महाणुजावे महापुरि
 साणुचिन्ने परमरिसि देसिए पसत्ते तंडुस्ककयाए
 कम्मस्कयाए बोहिवाजाए संसारुत्तारणायाए तिक
 हु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पंचमे जंतंते महव्वए उ
 वठ्ठिउमि मवाउं परिग्गहाउं वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे ठठे जंतंते महव्वए राईअ ज्ञोअण्णउं वेर
 मणे सवं जंतंते राईज्ञोअणं पच्चस्कामि ॥ से असणं वा
 पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेवसयं राइ ज्ञोअणं
 जुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइज्ञोअणं जुंजाविद्या राइज्ञोअ

एणं जुजंते वि अन्ने न समणुज्जाणामि जावज्जीवाए
 तिविहं तिविणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नका
 रवेमि करंतं पि अन्नं न समणुज्जाणामि तस्सजंते प
 णिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥
 से राइजोअणे चउव्विहे पन्नत्ते दव्वउं खित्तउं कालउं
 जावउं ॥ दव्वउणं राइजोअणं असणे वा पाणे वा खाइमे
 साइमे वा खित्तउणं राइजोअणे समयखित्ते कालउं
 णं राइजोअणे, दिआ वा राउं वा, जावउणं राइजोय
 णे, तित्ते वा करुए वा कसायले वा अंबिले वा महु
 रे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा जंमए इमस्स
 धम्मस्स केवल्लि पन्नत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाहि
 णिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसो
 वल्लिअस्स उवसमप्पजवस्स नवबंजचेर गुत्तस्स अप
 यमाणस्स जिस्कावित्तिअस्स कुक्किसंबलस्स निरग्गि
 सरणस्स संपक्कालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअ
 स्स निव्विआरस्स निव्वितिलखणस्स पंचमहवयजुत्तस्स
 असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामि
 अस्स निवाणगमणपदवसाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए
 असवणयाए अबोहिआए अणजिगमेणं अजिगमेणं
 वा पमाएणं रागदोस पडिबऊयाए बालयाए मोहयाए
 मंदयाए किडयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवएणं
 पंचिंदिअवसट्ठेणं पणिपुणं नारिआए सायासुक्कमणुपा
 लयंतेणं इहं वा जवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु वा राइजो

यणं जुत्तं वा जुंजाविअं वा जुज्जंतं वा परेहिं समणु
 न्नाउ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणे
 णं वायाए काएणं अइअं निंदामि पमुप्पणं संवरेमि
 अणागयं पच्चस्कामि सबं राइजोअणं जावज्जीवाए
 अणिसिउहं नेवसअं राइजुंजिज्जा नेवनेहिं राइं
 जुंजाविद्या राइंजुंजंते वि अन्ने न समणुज्जाणिद्या तं
 जहा अरिहंतसस्किअं सिद्धसस्किअं साहुसस्किअं
 देवसस्किअं अप्पसस्किअं एवं हवइ जिस्कूवाजिस्कू
 णी वा संजय विरय पफिहय पच्चस्काय पावकम्मे
 दिआ वा राउं वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एसखलु
 राइंजोअणस्स विरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए
 आणुगामिए सबेसिं पाणाणं सबेसिं जूआणं सबेसिं
 जीवाणं सबेसिं सत्ताणं अडुक्कयाए असोअणआए
 अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीरुणयाए अपरिआए
 वणयाए अणुइवणयाए महत्ते महागुणे महागुणे महा
 णुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परम रिसि देसियपसत्ते
 तं डुक्कयाए कम्म रकयाए मुक्कयाए बोहि ला
 जाए संसारुत्तारणयाए तिकहु उवसंपच्चित्ताणं विह
 रामि ॥ ठठे जंते मह वए अजु छिउमि सवाउं
 राइंजोयणाउं वेरमाणं ॥ इच्चेइ आइं पंचमहवयाइं
 राइंजोअणवेरमाण ठठाइं अत्तहिअठाइं उवसंप
 ज्जित्ताणं विहरामि ॥

अप्पसत्ताय जे जोगा । परिणामाय दारुणा ॥

पाणाश्वायस्स वेरमणे ॥ एस वुत्ते अश्कमे ॥ १ ॥
तिव्व रागाय जा चासा । तिव्वदोसा तद्देव य ॥ मुसा
वायस्स वेरमणे ॥ एस वुत्ते अश्कमे ॥ २ ॥ उग्गहं
सि अ जाइत्ता ॥ अविदिन्ने अ उग्गहे ॥ अदिन्नादा
णस्स वेरमणे ॥ एस वुत्ते अश्कमे ॥ ३ ॥ सद्दह्वा
रसा गंधा ॥ फासाणं पविआरणे ॥ मेहुणस्स वेरम
णे ॥ एस वुत्ते अश्कमे ॥ ४ ॥ इच्छा मुच्छा य गेही
अ ॥ कंखा लोप्पेअ दारुणे ॥ परिग्गहस्स वेरमणे ॥
एस वुत्ते अश्कमे ॥ ५ ॥ अश्मत्ते अ आहारे ॥ सूरे
खित्तंमि संकिए ॥ राईज्जोयणस्स वेरमणे ॥ एस वु
त्ते अश्कमे ॥ ६ ॥ दंसणनाण चरित्ते ॥ अविराहिता
ठिउं समण धम्मे ॥ पढमंवयमणुरस्के ॥ विरयामो
पाणाश्वायाउं ॥ ७ ॥ दंसणनाण चरित्ते ॥ अविरा
हिताठिउं समण धम्मे ॥ बीयंवयमणुरस्के ॥
विरयामो मुसावायाउं ॥ ८ ॥ दंसणनाण चरित्ते ॥
अविराहिता ठिउं समण धम्मे ॥ तइअं वयमणुर
स्के ॥ विरयामो अदिन्नादाणाउं ॥ ९ ॥ दंसण नाण
चरित्ते ॥ अविराहिता ठिउं समण धम्मे ॥ चउहं
वयमणुरस्के ॥ विरयामो मेहुणाउं ॥ १० ॥ दंसण नाण
चरित्ते ॥ अविराहिता ठिउं समणधम्मे ॥ पंचमं
वयमणुरस्के ॥ विरयामो परिग्गहाउं ॥ ११ ॥ दंसण
नाण चरित्ते ॥ अविराहिता ठिउं समणधम्मे ठं व
यमणुरस्के ॥ राइज्जोयणा आलयवि ॥ १२ ॥

विहार समिउ ॥ जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥ पढ
 मंवयमणुरस्के । विरयामो पाणाइ वायाउं ॥ १३ ॥
 आलय विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥
 बीयं वय मणुरस्के ॥ विरयामो मुसावायाउं ॥ १४ ॥ आ
 लयवियारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे । तीयं
 वयमणुरस्के । विरयामोअदिष्ठा दाणाउं ॥ १५ ॥ आलय
 विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे । चउव्वय
 मणुरस्के । विरयामो परिग्गहाउं ॥ १६ ॥ आलय विया
 रसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ पंचम
 वयमणुरस्के । विरयामो परिग्गहाउं ॥ १७ ॥ आलय
 विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ ठंठव
 यमणुरस्के ॥ विरयामो राईजोयणउं ॥ १८ ॥ आलय
 विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥
 तिविहेण अप्पमत्तो । रक्कामि महव्वए पंच ॥ १९ ॥
 सावज्जजोगमेगं ॥ मिहत्तं एगमेव अन्नाणं ॥ परिव
 चंतो गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २० ॥ अणवच्च
 जोगमेगं ॥ सम्मत्तं एगमेवनाणं तु ॥ उवसंपन्नो जु
 त्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २१ ॥ दो चेव रागदो
 से ॥ दुस्सिअ जाणाइअट्ठरुदाइं ॥ परिवचंतो गुत्तो ।
 रक्कामि महव्वए पंच ॥ २२ ॥ दुविहं चरित्त धम्मं ।
 दुन्निअ जाणाइं धम्मसुक्काइं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥
 रक्कामि महव्वए पंच ॥ २३ ॥ किएहा नीला काउ ॥
 तिन्निअ वेसाउं अप्पसन्नाउं ॥ परिवचंतो गुत्तो र

रक्कामि महव्वए पंच ॥ १४ ॥ तेउ पट्ठा सुक्का ॥ ति
 निश्च वेसाउं सुप्पसत्ताउं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ र
 रक्कामि महव्वए पंच ॥ १५ ॥ मणसा मणसच्चविउ ॥
 वायासच्चेण करण सच्चेण ॥ तिविहेण सच्चविउ
 ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ १६ ॥ चत्तारि अ डुह
 सिज्जा ॥ चउरो सन्ना तहाकसायाय ॥ परिव्रजंतो
 गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ १७ ॥ चत्तारि अ
 सुह सिज्जा ॥ चउविहं संवरं समाहिष्ठाणं ॥ उवसं
 पन्नो जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ १८ ॥ पंचेवय
 काम गुणे ॥ पंचेवय अएहवे महादोसे ॥ परिव्रजंतो
 गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ १९ ॥ पंचिंदिय सं
 वरणं ॥ तहेव पंच विहमेव सद्यायं ॥ उवसंपन्नो
 जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २० ॥ ठज्जीवनिकाय
 वहं ॥ ठप्पिअ चासाउं अप्पसत्थाउं ॥ परिव्रजंतो
 गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २१ ॥ ठविहमप्रित
 रयं ॥ बप्पंपिअ ठविहं तवो कम्मं ॥ उवसंपन्नो
 जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २२ ॥ सत्त य जय
 गाणाइं ॥ सत्तविहं चेव नाणविजंगं ॥ परिव्रजंतो
 गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २३ ॥ पिडेसण पाणेसण
 उग्गह सत्ति कया महप्रयणा ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥
 रक्कामि महव्वए पंच ॥ २४ ॥ अठय मयगाणाइं अ
 ठय कम्मइं तेसिं बंधंच ॥ परिव्रजंतो गुत्तो ॥ रक्कामि
 महव्वए पंच ॥ २५ ॥ अठय पवयण माया ॥ दिठा अठ

विह निष्ठिअणेहिं॥उवसंपन्नो जुत्तो । रक्कामि महव्व
ए पंच ॥३६॥ नव पाव निश्चाणाइं ॥ संसारढाय न
वविहा जीवा ॥ परिवव्वंतो गुत्तो । रक्कामि महव्वए
पंच ॥ ३७ ॥ नव बंजचेर गुत्तो ॥ दुनवविहं बंजचे
र परिसुळ्ळं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ।
रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३८ ॥ उवघायं च दसविहं॥
असंवरं तहय संकिळेसं च ॥ परिवव्वंतागुत्तो रक्कामि
महव्वए पंच ॥३९॥ सच्च समाहिछाणे ॥ दसचेव दसउ
समण धम्मंच ॥ उव संपन्नो जुत्तो ॥ रक्कामि म
हव्वए पंच ॥ ४० ॥ आसायणं च सबं ॥ तिगुण
इक्कारसं विवव्वंतो ॥ परिवव्वंतो गुत्तो ॥ रक्कामि
महव्वए पंच ॥ ४१ ॥ एवंपिदंरु विरउ ॥ तिगरण
सुळ्ळो तिसल्ल निस्सल्लो ॥ तिविहेण पक्किंतो ॥
रक्कामि महव्वए पंच ॥ ४२ ॥

इच्चेइअं महव्वय उच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं । धिइ
बलं ववसाउ । साहण्णो पाव निवारणं । निकाय
णा जाव विसोही पडागाहरणं । निब्बूहणाराहणा
गुणाणं । संवरजोगो पसह्वयाणो । वउत्तया जुत्तयाय
नाणे परमठो उत्तमठोय । एसखल्लु तिठंकरेहिं ।
रइ राग दोस महणेहिं । देसिउ पवयणस्ससारो ।
उज्जीवनीकाय संजमं । उवएसिअं । तेल्लुक्क सक्कअं
ठाणं । अपुवगया नमोहु ते । सिळ्ळु बुळ्ळु मुत्त निरय ।
निसंग माणमूरण । गुण रयण । सायर । मणंत

मप्पमेथ । नमोबुते महइ महावीर वरुमाण सामि
स्स । नमोबुते अरहउ । नमोबुते जगवउ । तिकहु ।
एसाखलु । महवय उच्चारणाकया ॥

इष्ठामो सुत्त कित्ताणं काउं । नमोतेसिं खमासम
णाणं । जेहिं इमं वाइअं । ठविह मावस्सयं । जग
वंतं तंजहा । सामाइअ ॥ १ ॥ चउवीसउउ ॥ २ ॥
वंदणयं ॥ ३ ॥ पक्किमाणं ॥ ४ ॥ काउसग्गो ॥ ५ ॥
पच्चरकाणं ॥ ६ ॥ सवेहिंपि एअंमि । ठविहे आव
स्सए । जगवंते ससुत्ते । सअहे सगंथे सनिज्जुत्ती
ए । ससंगहणिए जेगुणावाजावावा । अरिहंतंतेहिंजग
वंतेहिं । पस्सत्तावा । परूविअवा । तेजावेसइहामो ।
पत्तियामो । रोएमो फासेमो । पाळेमो । अणुपाळे
मो । तेजावेसइहंतंतेहिं पत्तिअंतंतेहिं । रोअंतंतेहिं । फासं
तेहिं । पाळंतंतेहिं । अणुपाळंतंतेहिं । अंतोपस्कस्स जंवा
इअं । पढिअं परिअट्ठिअं । पुब्बिअं अणुपाळिअं ।
तंडुरककयाए कम्मकयाए । मुक्कयाए । बोहिला
जाए । संसारुत्तारणयाए । तिकहु । उवसंपज्जित्ताणं
विहरामि । अंतोपस्कस्स । जंनवाइअं नपढिअं नप
ढिअं नपरिअट्ठिअं । नपुब्बिअं । नाणुपेहिअं । नाणु
पाळिअं संतेबळे संतेवीरिए । संतेपुरिसकारपरिकमे ।
तस्सआलोएमो । पक्किमामो । निंदामो गरिहामो ।
विउट्टेमो । अकरणयाएअपुट्टेमो । अहा रिहंतवो
कम्मं । पायष्ठित्तंपडिवज्जामो । तस्समिन्ना मिडुकडं ।

नमोतेसिंखमासमणाय । जेहिंश्मंवाइअं । अंग
 बाहिरं उकालिअंजगवंतं । तंजहा । दसवेआलिअं ।
 कप्पिआकप्पिअं । चुल्लकप्पसुअं । महाकप्पसुअं ।
 उवाइअं रायप्पसेणिअं । जीवाज्जिगमो । पस्सवणा ।
 महापन्नवणा । नंदी अणुजगदाराइं देविंदथ्यउ । तंडुल
 विश्वालिअं चंदाविस्त्रियं पमायप्पमायं । पोरिसिमंरुलं ।
 मंडलप्पवेसो गणिविद्या । विद्याचारणविणीहउ । जाण
 विजत्ती । भरणविजत्ती । आयविसोही । संखेहणा
 सुअं । वीयरायसुअं । विहारकप्पो । चरणविहि ।
 आउरपच्चरकाणं । महापच्चरकाणं ॥ १० ॥ सवेहिंपि
 एअंमि । अंगबाहिरे उकालिए । जगवंते ससुत्ते ।
 सअन्ने । सगंथे । सनिक्कुत्तिए । ससंगहणिए जेगु
 णावा जावावा । अरिहंतेहिं । जगवंतेहिं । पन्नत्ता
 वा । परूविआवा । तेजावे सइहामो पत्तिआमो ।
 रोएमो फासेमो । पाळेमो अणुपाळेमो । तेजावे सइ
 हंतेहिं । पत्तिअंतेहिं । रोअंतेहिं । फासंतेहिं पाळंते
 हिं । अणुपाळंतेहिं । अंतोपरकस्स । जंवाइअं पढि
 अं । परीअट्ठिअं । पुठिअं । अणुपेहिअं । अणुपालि
 अं । तंडुरकरकयाए । कम्मरूखयाए । मुरुखयाए ।
 बोहिलाजाए संसारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसंप
 चित्ताणंविहरामि । अंतोपरूखस्स । जंनवाइअं नप
 ढिअं नपरिअट्ठिअं । नपुठिअं । नाणुपेहिअं । नाणु
 पालिअं । संतेबले संतेविरिए । संतेपुरिसकारपरिक

मे । तस्स आलोमो । पक्कमामो । नीदामो । गरिहामो ।
विजेट्ठेमो । विसोहेमो । अकरणयाएअप्पुठेमो । अहारिहं
तवोकम्मं । पायवित्तं पक्खिदामो । तस्स मिठामिदुक्कडं ।

नमो ते सिंखमासमणाय । जेहिंश्मंवाश्चं अंगवा
हिरंकालिअंजगवंतं । तंजहा । उत्तरऊयणां । द
साकप्पो । ववहारो । इसिजासिआं । निसीहं ।
महानिसीहं । जंबुद्वीवपणत्ती । सूरपणत्ती । चंदपन्न
त्ती । दीवसागरपन्नत्ती । खुड्डयाविमाणपविजत्ती ।
महद्धिआविमाण पविजत्ती । अंगचूलिआए । वंग
चूलिआए । विवाहचूलिआए अरुणोववाए । वरुणो
ववाए गरुडोववाए । धरणोववाए । वेलंधरोववाए ।
* वेसमणोववाए । देविंदोववाए । उछाणसुए । समुछा
णसुए । नागपरिआवलिआणं । निरयावलिआणं ।
कप्पिआणं । कप्पवरिसिआणं । पुप्फिआणं । पुप्फ
चूलिआणं । वण्हीयाणं । वण्हीदसाणं आसीविस
जावणाणं । दिट्ठि विसजावणाणं । चारणसुमिण जा
वणाणं । महासुमिणजावणाणं । तेअग्गिनिसग्गाणं
॥३६॥ सवेहिं पिएअंमि । अंगवाहिरे कालिए जग
वंते । ससुत्ते । सअहे संगंथे । सणिज्जुत्तिए । ससं
गहणिए जेगुणावां जावावा । अरिहंतेहिं । जगवंते
हिं । पणत्तावा परूवीआवा तेजावेसइहामो । पत्ति
आमो रोएमो । फासेमो पाळेमो । अणुपाळेमो । ते
जावेसइहंतेहिं । पत्तिअंतेहिं । रोयंतेहिं फासंतेहिं ।

पादंतेहिं । अणु पादंतेहिं । अंतोपखस्स जंवाइअं
 पढिअं परिअट्ठिअं पुढिअं अणुपेहिअं अणुपादिअं
 तंदुखखयाए । कम्मखयाए ॥ मुखयाए । बोहि
 लाजाए । संसारुत्तारणयाए । त्तिकट्ट । उवसंपवित्ताणं
 विहरामि । अंतोपखस्स । जंनवाइअं नपढीअं नप
 रियट्ठिअं नपुढिअं । नाणुपेहिअं नाणुपादिअं । सं
 तेबले । संतेवीरिए । संतेपुरिसक्कारपरिकमे । तस्सआ
 लोएमो । पण्णिक्कामो । निंदामो गरिहामो । विउट्ठेमो
 विसोहेमो । अकरणयाए । अपुठ्ठमो । अहारिहंतवो
 कम्मं । पायवित्तंपणिवद्यामो । तस्समिहामिडुक्कमं ॥

नमोतेसिंखमासमणाणं । जेहिंश्मंवाइअं । डुवा
 लसंगंगणिपिरुगं । जगवंतं । तंजहा । आयारो सुअ
 गको ठाणं । सगवाउं । विवाहपन्नत्ती । नायाधम्मक
 हाउं । उवासगदसाउं अंतगरुदसाउं । अणुत्तरोववा
 इअदसाउं । पएहावागरणं । विवागसुअं दिठ्ठिवाउं ॥
 सबेहिंपि एअंमि । डुवालसंगे गणिपिरुगे । जगवंते ।
 सअठे । ससुत्ते । संगंथे । सण्णित्तिए । ससंग ह
 णिए । जे गुणा वा । जावा वा । अरिहंतंतेहिं । जग
 वंतेहिं । पन्नत्ता वा । परूविआ वा । ते जावे सह
 आणो । पन्निआमो । रोएमो । फासेमो । पाळेमो ।
 अणुपाळेमो । ते जावे सहहंताह । पात्तअताह ।
 रोयंतेहिं । फासंतेहिं । पादंतेहिं । अणुपादंतेहिं ।
 अंतोपखस्स । जंवाइअं । पढिअं । परिअट्ठिअं । पु

ष्ठिञ्च । अणुपेहिञ्च । अणुपाक्षिञ्च । तंदुरकस्कयाए ।
कम्मस्कयाए । मुस्कयाए । बोहिताजाए । संसारुत्ता
रयाए । तिकट्ट । उवसंपच्चित्ताणं विहरामि । अंतो
पस्कस्स जं न वाइञ्च । न पढिञ्च । न परिअट्ठिञ्च ।
न पुष्ठिञ्च । नाणुपेहिञ्च । नाणुपाक्षिञ्च । संते बद्धे ।
संते वीरिए । संते पुरिसक्कारपरिक्रमे । तस्स आलो
एमो पम्भिकमामो । निंदामो गरिहामो । विउट्ठेमो
विसोहेमो । अकरणयाए । अप्पुठेमो । अहारिहं
तवोकम्मं । पायञ्चित्तं पम्भिवच्चामो । तस्स मिठामि
डुक्कमं ॥ ७ ॥ नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं
वाइञ्च डुवा लसंगं गणिपिक्कं । जगवंतं । तं जहा
सम्मं काएणं । फासंति । पाळंति । पूरंति । तीरंति ।
किट्ठंति । सम्मं आणाए । आराहंति । अहं च
नाराहेमि । तस्स मिठामिडुक्कमं ॥ ८ ॥

सुअदेवआ जगवई । नाणावरणीअकम्मसंघायं ।
तेसिं खवेउ सययं । जेसिं सुअ सायरे जत्ति ॥ ७ ॥

इति पाक्षिक सूत्र समाप्तं ॥

पाक्षिकद्वामणा ॥

इठामि खमासमणो पिञ्च च मे जंजे । हठाणं तु
ठाणं अप्पायंकाणं । अजग्गजोगाणं । सुसीलाणं । सु
वयाणं । सायरिउवप्पायाणं । नाणेणं । दंसणेणं ।
चरित्तेणं । तवसा । अप्पाणं । ज्ञावेमाणानं । बहुसु
जेण जे दिवसो पोसहो । पक्को वइक्कंतो । अन्नो जे

कद्वाणेणं । पद्युवच्छिण् । सिरसा मणसा । मन्त्रएण
वंदामि ॥ १ ॥ तुप्पेहिं समं ॥

इत्थमि खमासमणो । पुब्बि चेइआइं वंदित्ता । न
मंसित्ता । तुप्पण्हं पायमूढे । विहरमाणेणं । जे केइ
बहुदेवसिआ । साहुणो । दिट्ठासमाणा वा वसमाणा
वा गामाणुगामं । दुइच्चमाणा वा । राइणिआ संपु
हंति । उमराइणिआ वंदंति । अज्झया वंदंति अ
ज्झियाउं वंदंति । सावया वंदंति । सावियाउं वंदंति
इयं पि निम्माहो । निक्कमाजं । निक्क । सिक्का । माण
अणं वा । हेउ वा । पसिणं वा । वागरणं वा । तुप्पे
इत्थाम खमासमणा । अप्पुच्छउह । तुप्पण्ह । स
तिअ । अहाकप्पं वा । वणं वा । पडिग्गहं वा । कं
बलं वा । पायपुच्छणं वा । रयहरणं वा । अस्करं वा ।
पयं वा । गाहं वा । सिद्धोगं वा । सिद्धोगं वा ।
अणं वा । हेउ वा । पसिणं वा । वागरणं वा । तुप्पे
हिं । चिअत्तेण दिन्नं । मए । अविणएण । पदिष्ठिअं ।
तस्समिद्धामिडुक्कं ॥ ३ ॥ आयरियसंतिअं ॥

इत्थमि खमासमणो । अहमपुद्वाइं । कयाइं च मे ।
किइक्कमाइं । आयारमंतरे । विणयमंतरे । सेहि
उ । सेहाविउं । संगहिउं । उवग्गहिउं । सारिउं ।
वारिउं चोइउं । पडिचोइउं । चिअत्ता मे । पडिचो
यणा । अप्पुच्छिउहं । तुप्पण्हं तवतेयसिरीए । इमाउं
चाउरंत संसारकंताराउं । साइहु । निठारिस्सामि

तिकट्टु । सिरसा मणसा । मन्त्रेण वंदामि ॥ ४ ॥

निष्ठारगपारगाहोह ॥ इति पादिक कामणा ॥

साधुर्जकों दैवसिक और रात्रिक प्रतिक्रमणमें

अतिचारकी आठ गाथाके स्थानपर

गुणनेकी एक गाथा.

सयणासन्न पाणे, चेइ जइ सिद्ध काय उच्चारै ।

समिइ जावणा गुत्ती, वितहायरणे य आइयारो ॥ १ ॥

यह गाथा गुण तेतिस्में कहिहुइ बातें संबंधी
जो कुछ अतिचार लगां होसो सांधुने याद करना.

सामान्य साधुसैं गुरुको अदप व्यापार होनेसैं गुरुने
दोवार यह गाथा अर्थ सह विचारनी.

(प्रातः पन्डितेहणकी विधि),

इरियावही पन्डिकमी, खमासमण देके, इष्ठाका
रेण संदिसह जगवन् पन्डितेहण करुं? 'इष्ठं' कही
मुहपत्ति ५० बोलसैं, उंघो १० बोलसैं, कटासण १५
बोलसैं, कंदोरा १० और चोलपट्टा १५ बोलसैं पन्डि
लेहना. पिठे इरियावही पन्डिकमके, खमासमण
देके, इष्ठकारी जगवन् पसाय करी पन्डिते हणा प
न्डितेहवोजी, एसा कहकें स्थापनाचार्यकी पडितेह
णा करनीसो नीचे प्रमाण.

प्रथम कामली पन्डितेही संकेलके तिस उपर
स्थापनाचार्य रखणी. पिठें आपनाजी. ठोनीके प्रथम
उपरकी एक मुहपत्ति पन्डितेहे पिठें "शुरूस्वरूपके

धारक गुरु ज्ञानमयी, दर्शनमयी चारित्र्यमयी, शुद्ध श्रद्धामय, शुद्ध प्ररूपणामय, शुद्ध स्पर्शनामय, पंचाचार पाले पलावे, अनुमोदे, मनगुप्ति वचनगुप्ति, कायगुप्तिसं गुप्ता” यह तेरह बोल बोलके पांचोंस्थापनाजीकी पृथक् पृथक् पन्डितेहणा करे. पिठें स्थापनाजी संबंधी दुसरी मुह पत्तिये पन्डितेहे. (सांज की पन्डितेहण वखत पहेली स्थापनाजीकी सब मुहपत्तियें पन्डितेहना. पिठें स्थापनाजी बांधके ठवणी उपर रखके खमा समण देके इब्बा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इब्बं कही मुहपत्ति पन्डितेही, खमा० इब्बा० उपधि संदिसाहुं ? इब्बं, खमा० इब्बा० उपधि पन्डितेहु ? इब्बं. कही दूसरे सबवखें पडिलेहने अंतमें मंरक पडिलेहना पिठें उंमासण लेके पन्डितेही, इरियावही पन्डिकमी, काजा लेना पिठें इरियावही पन्डिकमी काजा परठवना. पिठें इरियावही पन्डिकमी, खमासण देके इब्बा० सजाय करुं ? इब्बं कही एक नवकार गणी ‘धम्मो मंगल मुक्किंठं, ए सजाय कहेना. इतिप्रातः पन्डितेहणविधि

(संध्या पन्डितेहणविधि)

खमासमण देके इब्बा० बहु पन्डिपुन्ना पोरिसि ? खमासमण देके इरियावही पन्डिकमी खमासमण देके इब्बा० पन्डितेहण करुं ? इब्बं खमा० इब्बा० वस्ती प्रमार्जु ? इब्बं कहके उपवास कीया होय तो मुहप

ति, उघो, कटासणं पम्ब्लेहना नहीं तो पूर्ववत् पांच चीजें पम्ब्लेहना. पिठें इरियावही पम्ब्लेहनी खमासमण देके, इच्छाकारी जगवन् पसाय करी पम्ब्लेहणा पम्ब्लेहावोजी. यों कहके पूर्वोक्त रीत स्थापनाजीनी पम्ब्लेहण करनी. पिठें खमा० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पम्ब्लेहं? इच्छं कही मुहपत्ति पम्ब्लेहि खमा० इच्छा० सजाय करूं? इच्छं कही एक नवकार गुणके “ धम्मो मंगल मुक्किंठ ” एसजाय कहे. पिठें आहार कीया होयतो वांदणा देके योग्य पच्चस्काण करना. उपवास किया होयतो खमासमण देके इच्छाकारी जगवन् पसाय करी पच्चस्काण आदेशदिजीयें योंकहके पच्चस्काण करे. पिठें खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहुं? इच्छं. खमा० इच्छा० उपधि पम्ब्लेहं? इच्छं कही सर्व वस्त्र पम्ब्लेहने. पिठें पूर्वोक्त रीत इरियावही पम्ब्लेहनी, काजा लेके, इरियावही पम्ब्लेहनी, काजा परठवना. ॥ इति ॥

(पोरसिविधि)

ठ घटी दिवस चडे पिठें खमासमण देके इच्छा० बहु पम्ब्लेहनी पोरसि? इच्छं कही खमासमण देके इरियावही पम्ब्लेहनी. पिठें खमासमण देके इच्छा० पम्ब्लेहण करूं? इच्छं कही मुहपत्ति पम्ब्लेहनी. इति.

पच्चस्काण पानेकी विधि.

खमासमण देके इरियावही पम्ब्लेहनी, खमासम

ए देके इच्छा० चैत्यवंदन करुं? इहं कही जगचिंता मणीका चैत्यवंदन जयवियराय संपुर्ण पर्यंत करना. (स्तवन स्थान उव सगगहरं कहेना.) पिठें खमास मण देके इच्छा० सजाय करुं? इहं कही एक नव कार गणी धम्मो मंगलमुक्किठं सजाय कहेना खमा समण देके इच्छा० मुहपति पखिलेहुं? इहं कही मुहपत्ति पहिलेहणी. पिठें खमा० इच्छा० पच्चस्काण पारुं 'तहत्ति' कही जमणा हाथ उंधा उपर स्थापन करके एक नवकार गुणके आंबिल पर्यंतके पच्चस्काण नीचे प्रमाणे कह करपारणा.

“उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं पोरिसिं साढपो रसिं सूरेउग्गए पुरिमह्मु मुठि सहिअं पच्चस्काण कीया चउविहार ॥ आंबील, नीवी, एकासणं पच्च स्काण किया तिविहार ॥ पच्चस्काण फासिअं, पालि अं सोहिअं, तीरिअं किट्ठिअं, आराहिअं जं च न आराहिअं तस्स मिठामि डुक्करुं. ॥

इस्में जो पच्चस्काण कीया होय उहांतक बोलनां आगेकेपाठ न बोलवां. तिविहार उपवासवालो ने नीचे प्रमाणे कहेना.

“सूरे उग्गए पच्चस्काण किया तिविहार; पाण हार पोरिसि साढपोरिसि पुरिमह्मु मुठि सहिअं पच्चस्काण किया पाणहार; पच्चस्काण फासिअं० पूर्ववत् ए प्रमाणे पच्चस्काण पार्या पिठे नीचे प्रमाणे ॥ १७ ॥

गाथा कहेनी.

धम्मो मंगल मुक्किठं । अहीसा संज्जामो तवो
 देवावि तं नमंसंति । जस्स धम्मो सया मणो ॥ १ ॥
 जहा दुमस्स पुप्फेसु । जमरो आवियइ रसं । नय
 पुप्फं किलामेइ । सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए
 समणा मूत्ता । जे लोए संति सोहुणो । विहंगमाव
 पुप्फेसु । दाण जत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वयं च वित्तिं ल
 प्रामो । न य कोइ उवहम्मई । अहा गडेसुरीयंते ।
 पुप्फेसु जमरी जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा । जे
 जवंति अणिस्सिया । नाणापिंरया दंता ॥ तेणवुच्चं
 ति साहुणो तिवेमि ॥ ५ ॥ दुम्म पुप्फिआ अऊयणम्
 ॥ १ ॥ कहन्नु कुचा सामण । जो कामे न निवारण ।
 पए पए विसीयतो । संकप्पस्स वसंगठं । ६ । वढ
 गंधमलंकारं । इत्थिउ सयणाणि य । अठंदा जे न जुंजं
 ति । न से चाइत्तिवुच्चई । ७ । जे अ कंते पिए जोए ।
 लळेवि पिठि कुवई । साहीणे चवइ जोए । सेहु
 चाइत्ति वुच्चई ॥ ८ ॥ समाइपेहाइ परिवयंतो । सिआ
 मणो निस्सरई बहिद्धा ॥ न सामहं नो वि अहंपि
 तीसे । इच्चेव ताउ विणइच्च रागं ॥ ९ ॥ आयावया
 हीचयसोगमह्वं । कामेकमाहीकमि यं खु दुखं । ठिं
 दाहिदोसं विणइज्ज रागं । एवंसुही होहिसि संपरा
 ए ॥ १० ॥ पखंदे जलियं जोई । धूमकेउं दुरासयं ।
 निव्वंति वंतयं जोत्तं । कुळे जाया अगंधणे ॥ ११ ॥

धिगबु ते जसो कामी । जोतं जोवियकारणा । वंतं इ
 षसिआवेउं । से अंते मरणं जवे ॥ १२ ॥ अहं च
 जोग रायस्स । तं चसि अंधगवन्धिणो । माकुखे गंध
 णाहो मो । संजमं निहुउंचर ॥ १३ ॥ जइ तं काहि
 सि जावं । जा जा दिव्वसि नारीउं । वायाविजुवह
 को । अठि अप्पा जविस्ससि ॥ १४ ॥ तीसे सो व
 यणं मुच्चा । संजयाइसु चासियं । अंकुसेण जहा ना
 गो । धम्मे संपडिवाइउं ॥ १५ ॥ एवं करंति संबुद्धा ।
 पंक्थिआ पवियस्कणा । विणिअटंति जोगेसु । जहा
 से पुरिसुत्तमो । तिवेमि ॥ १६ ॥ संजमे सुठियप्पा
 णं । विप्पमुक्काण ताइणं । तेसिमेय मणाइन्नं । निग्गं
 थाण महेसिणं ॥ १७ ॥ इतिसामन्नपुवियद्ययणम् ॥

गोचरी आलोचन विधि.

निसिद्दी कहके उपाश्रयमें प्रवेश करके गुरु स
 न्मुख आके नमो खमासमणाणं मण्णण वंदामी'
 कहके पिठें पग जूमि प्रमार्जी शुद्ध करके गुरु स
 न्मुख खडे रहके माये पग उपर मांगा रखके
 दक्षिण हाथमे मुहपत्ति रखके खडेखडे खमासमण
 देय. पिठें आदेश मांगके इरिआवही पम्किमे. एक
 लोगस्सका काउसग्ग करे. काउसग्गमें जो क्रमसें
 गोचरीकी जो जो वस्तुयें लीनी होय सो यादकरे
 तिस्में जहां जहां जो जो दोष लागे होय सो याद
 करे पिठें नमो अरि हंताणं कह पारके क्रम प्रमाण

गुरुकों कह बतावे. पिठें गुरुकों आहार दिखावे. पिठें गोचरी आलोवे सो ए प्रमाणे—

पम्पिकमामि गोश्रचरिआएसैं मिठामिडुकमं प
र्यंत (श्रमण सूत्र पगाम सजाय) मे आवे सो आलावा
कहे. पिठे तस्स ऊत्तरी० अन्नठ० कहके काउसग्ग
करे. सो काउसग्गमे नीचेकी गाथा तिन वार विचारे.
अहो जिणेहीं असावज्जा, वित्ती साहुण देसिया ।
मुक्कसाहण हेउस्स, साहु देहस्स धारणा ॥ १ ॥

पिठें काउस्सग्ग पारके लोग्गस्स कहे. ॥ इति ॥

स्थंडिल शुद्धिका विधि.

सायंकाले दैवसिक प्रतिक्रमणके प्रारंभमे इरिआ
वही पम्पिकमी पच्चखाण करे पिठें खमा० इष्ठ० स्थं
निल पम्पिवेहुं? इष्ठं कही मंडला करे सो ए प्रमाणे—

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.

२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.

३ आघाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अणहियासे.

४ आघाडे मज्जे पासवणे अणहियासे.

५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.

६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

दूसरे ठ मांडलेमे अणहियासेके बदल अहिया
से' कहेना. तत्पश्चात् दूसरी बारमे आघाडेके बदल
आणाघाडे कहेना शेष उपर प्रमाणे कहेना. एकंदर
२४ मंडले करना.

पिठें इरिआवही पम्किमी, चैत्यवंदन करके प
म्किमणां शरु करे. ॥ इति. ॥

संधारा पोरिसीकी विधि.

पहोर रात्री पर्यंत सजाय ध्यानकिये पिठे संधा
रा करनेके अवसर खमा० इन्ना० बहु पडिपुन्ना पोरि
सि कही खमासमेण देके इरिआवही पम्किमे पिठें
खमा० इन्ना० 'बहु पम्पुन्ना पोरिसि राश्य संधारण
ठाउं ?' यों कहके चउक्कसायका चैत्यवंदन जय विय
लगाव' (प्रतिक्रमणको बुकम ठपगियाहै.)

तिस्मे चौदमी गाथा तीनवार कहना पिठे तीन
नवकार गुणना पिठे ठेछी तीन गाथा कहेनी तत्प
श्चात् निद्रा न आवे तहांतक सजाय ध्यानकरना.

पाक्षिक प्रतिक्रमणमें कोइको ठीक आवे तो
करनेकी विधि.

जो पाक्षिक अतिचारके पहिले ठीक आवेतो सब
नवकार गुणना पठ ठेछी तानि गाथा कहेना तत्प
श्चात् निद्रा न आवे तहांतक सजाय ध्यानकरना.

पाक्षिक प्रतिक्रमणमें कोइको ठीक आवे तो
करनेकी विधि.

जो पाक्षिक अतिचारके पहिले ठीक आवेतो सब
पुनः करना. तत्पश्चात् वृद्धशांति तकमे ठीक आवे
तो दुखरुखके काउसगके पहिले इरिआवही
पम्किमी लोगस्स कही खमासण देके इन्ना० कुड्रो

पञ्च उडावणार्थं काउस्सगं करुं? इहं कही अन्नत्थं कही चार लोगस्सका काउस्सगं सागरवरगंजिरा तक करना नीचेकी गाथा कहके पारना.

सर्वे यद्वांबिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने ॥

हुद्रोपञ्च संघातं, ते द्रुतं द्रावयंतु नः ॥ १ ॥

पिठे प्रगट लोगस्स कहेना.

ठमासि काउस्सग करनेकाविधि

चैत्र सुदि ११-१२-१३ तथा आसो सुदि ११-१२-१३ ए तीनतीन दिवसोमे हररोज दैवसिक प्रतिक्रमणमे सजाय कह्ये पिठें ए काउस्सग करना प्रथम खमासमाण देके इहा० सचित अचित्तरज उडावणत्थं काउस्सग करुं? इहं करेमी काउस्सगं अन्नत्थं कही चार लोगस्सका सागरवर गंजिरा तक काउस्सग करना. पारके लोगस्स कहेना:

लोच करनेके समय काउस्सग करनेका विधि.

लोच करना होय तिस दिन लोचकिये अगाउ इरिआवही पम्किमी खमा० इहा० सचित्ताचित्तरज उडावणत्थं काउस्सग करुं? इहा करेमी काउस्सगं अन्नत्थं कही चार लोगस्सका काउस्सग सागरवरगंजिरा तक करना. पारके प्रगट लोगस्सकहेना.

कोइ साधु काल करे तब साधुकों करनेका विधि.

जो साधुनें काल किया होय तिनके पास आके एक साधु नीचेप्रमाण कहे—‘कोटिक गण, वज्रीशा

खा, चंद्रकुल, अमुक आचार्य, उपाध्याय, स्थवीर, अमुक पंक्तिके शिष्य (अमुक मुनि) महा पारिठावणीया करेमि काउस्सगं' अन्नत्थ० कही एक नवकार कहे. पिठे तीन वार 'बोसिरे' कहे. पिठे श्रावक संस्कार करनेको ले जाय. तत्पश्चात् जीर्ण काचली प्रमुख चांगना. जीर्ण वस्त्र परठवना. पवित्र अचित्त पाणीसे झूमिशुद्धि हस्तपाद वस्त्र शुद्धि करना पिठे श्रावक पास गोमूत्रादि ठंढायके अवले देव वंदानें. तिसकी विधि नीचे प्रमाणे—

अंतिम देव वंदन विधि.

काल करने वाले साधुके एक शिष्य अथवा लघु पर्यायवाला कोइ शिष्य प्रथम उलटा काजा (द्वारसँ आसन तरफ) लेवे. वस्त्रादि पहरे उलटा. पिठे काजा संबंधी इरिआवही पडिक्रमके उलटा देव वंदन करे सो इस प्रमाणे.

प्रथम कल्लाणकंदकी एक थोइ. पिठे एक नवकारका काउस्सग, पिठे अन्नत्थ० अरिहंत चे० जयवि० उवसग० नमोर्हत्त० जावंति के० खमासमण० जावंतीचे० नमुत्थुण० चैत्यवंदन० लोगस्स० एक लोगस्सका० काउस्सग० अन्नह० तस्सउ० इरिआ वही० खमासमण देके. अविधि आशातना मिळामि डुक्कं कहे. पिठे सीधा काजा लेके इरियावही पडिक्रमे.

पिठे सजा समझ सर्व साधु साध्वीने आठ

थोइसैं सीधे देववंदन करना. तिसमें स्तवनके स्थान अजीसंता कहना. और देव पूरा होनेसैं खमा० इन्हा० कुओपद्रव उमावण्ठं काउस्सगं करुं? इहं करेमि काउस्सगं अन्नन्ठं० कही चार लोगस्सका काउस्सगं सागरवर गंजीरा तक करना. स्तुतिके स्थान वृद्ध शांति कहना. पिठें प्रगट लोगस्स कहना.

दूसरे गामसैं स्वसमाचारीवाले साधुके काल धर्म का समाचार मिलनेसैंजी उपर प्रमाणे आठ थोइसे, सीधे देव वांदने तथा अजीसंता वृद्धशांति कहना. साध्वीने समाचार आनेसे साध्वीओंने देव वंदन करना. कोइ साधु कालधर्म पामे तब श्रावककों करनेका विधि.

प्रथम स्नान करना केश होय तो प्रथम उत्तरा ना. जरा पगकी अंगुलीको ठेदकरना. हाथ पगकी आंगुलीयोंकों बंध करना. शरीरपर चंदन केशर बरासकाविलेपनकरना. मृत्यु स्थानके तथा स्नान क रायके बैठानेके स्थानक लोखंडकी खीली ठोकनी. नये वस्त्र पहनाना. दक्षिण तर्फ रजोहरण (चरवली) मुहपत्ति रखना. मांही तर्फ जोली, उस्मे जग्न पात्र एक लड्डु सहित रखना. रोहिणी, विशाखा. पुनर्वसु तिन उत्तरा ए व नक्षत्र में दो पुतले दर्ज के करके रखना. ज्येष्ठा, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा, चरणी अश्लेषा ए व नक्षत्रे पुतलें न करणा. दूसरे १५ नक्षत्रेमें एक पुतला करणा. वो पुतलेके जमणे

हाथमे उघा (चरवला) मुहपत्ति देना उर वाम हाथमे जग्न पात्र तथा एक लक्षु सहीत जोली देनी. दो पुतले होय तो दोनोको देना. पिठें शोकयुक्त चित्तसें महोत्सव सहित योग्य स्थानके ले जाके चंदनादि काष्ठोंसें अग्नि संस्कार करना. प्रांतमें सर्व अग्नि शांत कर रक्षा योग्य स्थानकमें परठवणी पिठे गुरु पास आयके लघुशांति वा वृद्धशांति सुनके अनित्यताका उपदेश श्रवण कर स्वस्थानक जाना.

५ आहार कररहै पिठे जगोचरतोमणीका.

६ दैवसिक प्रतिक्रमके प्रारंभमे.

७ संथारा पोरिसी जणावणमें चउकसायका

२४ साधु दररोज चारवार सजाय करे सोइस प्रमाणे,

१ सवेरकी पडिलेहणके अंतमें धम्मो मंगल० की.

२ सांजकी पडिलेहण मध्यमे धम्मो मंगल० की.

३ दैवसिक प्रतिक्रमणके अंतमें कहतैं हैं सो.

७ संथारा पोरिसी जणावणमें चउकसायका

२४ साधु दररोज चारवार सजाय करे सोइस प्रमाणे,

१ सवेरकी पडिलेहणके अंतमें धम्मो मंगल० की.

२ सांजकी पडिलेहण मध्यमे धम्मो मंगल० की.

३ दैवसिक प्रतिक्रमणके अंतमें कहतैं हैं सो.

४ राइ पडिक्रमणके प्रारंभमे जरहेसर की.

सप्तम परिच्छेदः समाप्तः

॥ अथ अष्टम परिच्छेदः प्रारंभः ॥

॥ अथ षौडश संस्कार प्रारंभः ॥

तत्त्व ज्ञान मयो लोके, य आचारं प्रणीतवान् ॥

केनापि हेतुना तस्मै, नम आद्याययोगिने ॥

गर्जाधानं पुंसवनं जन्मचन्द्रार्कदर्शनम् ॥

क्षीराशनं चैव षष्ठी तथा च शुचि कर्म च ॥

तथा च नामकरणमन्नप्राशनमेव च ॥

कर्णवेधो मुण्डनं च तथोपनयनं परम् ॥

पाठारम्भो विवाहश्च व्रतारोपोन्तकर्म च ॥

अमी षोडशसंस्कारा गृहिणां परिकीर्त्तिताः ॥

जाषार्थः—गर्जाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, चंद्र
सूर्यदर्शन ४, क्षीराशन ५, षष्ठी ६, शुचिकर्म ७, ना
मकरण ८, अन्नप्राशन ९, कर्णवेध १०, मुंडन ११,
उपनयन १२, विद्यारंभ १३, विवाह १४, व्रतारोप
१५, अंतकर्म १६ येह सोलां संस्कार गृहस्थीको
करने चाहिये व्रतारोपसंस्कारको वर्जके, शेष १५ पंदरां
संस्कार, साधुजने नहीं करणे.

संस्कार कराने वाले गुरु विषे

अर्हन्मंत्रोपनीतश्च ब्राह्मणः परमार्हतः ॥

दुद्धको वाऽऽसगुर्वाङ्गो गृहिसंस्कारमाचरेत् ॥ १॥

अर्थः—अर्हन्मंत्रोपनीत परमश्रावक, ब्राह्मण, औ
र प्राप्त करी है गुरुकी आज्ञा जिसने ऐसा दुद्धक

(श्रावक विशेष) जिसका स्वरूप आगे लिखेंगे. इन दोनोंमेंसे कोई एक गृहस्थोंको संस्कार करावे.

प्रथम गर्जाधान संस्कारका विधि.

जब गर्जधारण को पांच मास होवे, तब गर्जाधानविधि, गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणों ने कराना. गर्जाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, नाम ४ और अंत ५, इन पांच संस्कारोंमें अवश्य कर्मके वास्ते मास दिन दिकोंकी शुद्धि न देखनी. । श्रवण, हस्त, पुनर्वसु, मूल, पुष्य, मृगशीर्ष, येह नक्षत्र और रवि, मंगल, बृहस्पति, येह वार पुंसवनादिकर्मोंमें कहे हैं. । इसवास्ते पांचमे मासमें शुभ तिथि, वार, नक्षत्रके दिनमें पतिको बलवान् चंद्रादि देखकर, देश विरतिगुरु जिसने स्नान करा है, चोटी बांधी है, उपवीत और उत्तरासंग धारण करा है, श्वेतवस्त्र पहिना है, पंचकदा धारण करा है, मस्तकमें चंदनका तिलक करा है, सुवर्णमुद्रासहित दक्षिणकर सावित्रीक प्रकोष्ठबद्ध पंचपरमेष्ठि मंत्रोद्दिष्ट पांच ग्रंथियुक्त दर्जसहित कौसुंज सूत्रका कंकण है जिसके, तथा जिसने रात्रिमें ब्रह्मश्चर्य पाला है, जिसने उपवास, आचाम्ल, निर्विकृति, एकाशनादि प्रत्याख्यान करा है, संप्राप्तकरी है आजन्मसे यतिगुरुकी आज्ञा जिसने, ऐसे पूर्वोक्त विशेषणयुक्त, जैनब्राह्म

ण, अथवा कुल्लुक, गृहस्थोंके संस्कारकर्म करणके योग्य होता है. ॥

उक्तं च ॥

शांतो जितेंद्रियो मौनी दृढसम्यक्त्ववासनः ॥

अर्हत्साधुकृतानुज्ञः कुप्रतिग्रहवर्जितः ॥

जाषार्थः—शांत, जितेंद्रिय, मौनी, दृढसम्यक्त्ववान्, अर्हन् और साधुकी आज्ञा करनेवाला, बुरा दान न लेवे, क्रोध मान माया लोभका जीपक, कुलीन, सर्व शास्त्रोंका जानकार, अविरোধी, दयावान्, राजा और रंकको समदृष्टिसे देखनेवाला, प्राणोंके नाश होते ही अपने आचारको न त्यागे सुंदर चेष्टावाला होवे, अंगहीन न होवे, सरल होवे, सदा सशुक्रकी सेवा करने वाला होवे, विनीत, बुद्धिमान्, क्षांतिमान्, कृतज्ञ, दोषकारसे अव्यजावसें शुचि होवे; गृहस्थोंके संस्कार करनेमें ऐसा गुरु चाहिये.

सो पूर्वोक्त विशेषणविशिष्ट गुरु, गर्जाधान कर्ममें प्रथम गर्जवंतीके पतिकी आज्ञा लेवे. । और सो गर्जवंतीका पति, नखसें लेके शिखा (चोटी) पर्यंत स्नान करके, शुचि वस्त्र पहिनके निज वर्णानुसार उपवीत उत्तरीय वस्त्र उत्तरासंग करके, प्रथम शास्त्रोक्त बृहत्स्नात्रविधिसे अर्हत्प्रतिमाका स्नात्र करे. और तिस स्नात्रके पाणीको शुचि जाजनमें स्थापन करे. । तिसपीठे शास्त्रोक्त विधिसे गंध, पुष्प, धूप,

दीप, नैवेद्य, गीत, वादित्रोंकरके जिनप्रतिमाकी पूजा करे । पूजाके अंतमें गुरु, गर्जवतीको, अविध वायोंके हाथोंकरी स्नात्रोदककरके सिंचनरूप अग्नि षेक करवावे । पीछे सर्व जलाशयोंके जलोंके जलों को एकत्र मिलाके, सहस्रमूलचूर्ण तिसमें प्रक्षेप करके, तिस जलको शांतिदेवीके मंत्रकरके, अथवा शांतिदेवीके मंत्रगर्जित स्तोत्रकरके मंत्रें ॥

शांतिदेवीमंत्रो यथा ॥

“ॐ नमो निश्चितवचसे । जगवते । पूजामर्हते । जयवते । यशस्विने । यतिस्वामिने । सकलमहासंपत्तिसमन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय । सर्वासुरामरस्वामिपूजिताय । अजिताय । ज्ञवनजनपालनोद्यताय । सर्वदुरितौघनाशनकराय । सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाचशकिनीप्रमथनाय । यस्येतिनाममंत्रस्मरणतुष्टा । जगवती । तत्पदज्ञक्ता । विजयादेवी ॐ ह्रीं नमस्ते । जगवति । विजये । जय १ । परे । परापरे । जये । अजिते । । अपराजिते । जया वहे । सर्वसंधस्य जड्रकल्याणमंगलप्रदे । साधूनां शिवतुष्टिपुष्टिप्रदे । जय २ जग्यानां कृतसिद्धे । सत्त्वानां निर्वृतिनिर्वाणजननि । अजयप्रदे । स्वस्तिप्रदे जक्तानां जंतूनां शुभप्रदानाय नित्योद्यते । सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदे । जिनशासनरतानां शांतिप्रणतानां जनानां श्रीसंपत्कीर्तियशोव

र्क्षिनि । सखिलात् रक्ष २ । अनिलात् रक्ष २ । वि
षात् रक्ष २ । विषधरेज्यो रक्ष २ । दुष्टग्रहेज्यो रक्ष
२ । राज जयेज्यो रक्ष २ । रोग जयेज्यो रक्ष २ । रण
जयेज्यो रक्ष २ । राक्षसेज्यो रक्ष २ । रिपुगणेज्यो रक्ष
२ । मारिज्यो रक्ष २ । चोरेज्यो रक्ष २ । ईतिज्यो
रक्ष २ । श्वापदेज्यो रक्ष २ । शिवं कुरु २ । शांतिं
कुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । स्वस्तिं कुरु २ ।
जगवति । गुणवति । जनानां शिवशांतितुष्टिपुष्टि
स्वस्तिं कुरु २ । ॐ नमो ॐ ॐ यः दाः ॐ फुट् २
स्वाहा ” ॥ इति ॥

शांतिदेवी स्तोत्र ॥

“ॐ नमो जगवतेऽर्हते । शांतिस्वामिने । सकला
तिशेषकमहासंपत्समन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय ।
नमः शांतिदेवाय । सर्वामरसमूहस्वामिसंपूजिताय ।
जुवनपालनोद्यताय । सर्वदुरितविनाशनाय । सर्वा
शिवप्रशमनाय । सर्वदुष्टग्रहचूतपिशाचमारिमाकिनी
प्रमथनाय । नमो जगवति । विजये । अजिते । अ
पराजिने । जयंति । जयावहे । सर्वसंघस्य । जद्रक
द्व्याणमंगलप्रदे । साधूनां शिवशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्ति
दे । ज्ञानानां सिद्धिवृद्धिनिवृत्तिनिर्वाणजननि । सत्वा
नां अन्नयप्रदाननिरते । जक्तानां शुचावहे । सम्यग्
दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते । जिनशासन
निरतानां श्रीसंपत्त्यशोवर्द्धिनि । रोगजलज्वलनविष

विषधरदुष्टज्वरव्यंतरज्वरराक्षसरिपुमारि चौरैतिश्वा
पदोपसर्गादिजयेज्यो रक्ष २ । शिवं कुरु २ । शांतिं
कुरु २। तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । स्वस्तिं कुरु २ । ज
गवतिश्रीशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्तिं करु २ । ॐ नमो नमो
ॐ ॐ यः दाः ॐ फट् २ स्वाहा” ॥ इति ॥

इस स्तोत्र करके अथवा पूर्वोक्त मंत्र करके सहस्र
मूल चूर्ण सर्व जलशयोंके जलको सातवार मंत्रके,
पुत्रवाली सधवा स्त्रीयोंके हाथेंकरी मंगलगीतोंके
गातेहुए गर्जवंतीको स्नानकरावे, सुगंधका अनुक्षेपन
करी सदश वस्त्र (विवाह समय पहिरनेका वस्त्र) प
हिराके, संपत्तिअनुसार आभरण धारण करवाके,
पतिके साथ वस्त्रांचलका ग्रंथिवंधन करके, पतिके
वामेपासे शुभ आसनके ऊपर स्वस्तिक मंगलकरके,
गर्जवंतीको बिठलावे ग्रंथियोजनमंत्रो यथा ॥

ॐ अर्ह । स्वस्ति संसारसंबंधवद्भ्योः पतिचार्ययोः ॥
युवयोरवियोगोस्तु जववासांतमाशिषा ॥ १ ॥

विवाहको वर्जके, सर्वत्र इसीमंत्रकरके दंपतीका
(स्त्रीजर्त्ताका) ग्रंथिवंधन करना. । तदपीठे गुरु,
तिस गर्जवंतीके आगे शुभ पट्टे ऊपर पद्मासन
लगाके बैठके, मणिस्वर्णरूप्यताम्रपत्रके पात्रोंमें
जिनस्त्रात्रके जलसंयुक्त तीर्थोदकको स्थापन करके,
आर्यवेदमंत्र पढ़के, कुशाग्र बिंदुयोंकरके, गर्जवं
तीको सींचन करे.

आर्यवेदमंत्रो यथा ॥

“ॐ अहं । जीवोसि । जीवतत्त्वमसि । प्राण्यसि । प्राणोसि । जन्मासि । जन्मवानसि । संसार्यसि । संसरन्नसि । कर्मवानसि । कर्मबद्धोसि । जवज्रांतोसि । जवविज्रमिषुरसि । पूर्णाङ्गोसि । पूर्णपिण्मोसि । जातोपाङ्गोसि । जायमानोपाङ्गोसि । स्थिरो जव नन्दिमान् जव । वृद्धिमान् जव । पुष्टिमान् जव । ध्यातजिनो जव । ध्यातसम्यक्त्वो जव । तत्कुर्या येन न पुनर्जन्मजरामरणसंकुलं संसारवासं गर्जवासं प्राप्नोषि । अहं ॐ ॥”

इस मंत्रकरके दक्षिणहाथमें धारण करे कुशाग्र तीर्थोदक बिंदुयोंकरके गर्जवंतीके शिर और शरीर ऊपर सातवार सींचन करे । तदपीठे पंच परमेष्ठिमंत्र पठनपूर्वक दंपतीको आसनसें उठायकरके, जिनप्रतिमाके पास लेजाके शक्रस्तव पाठ करके जिनवंदन करवावे । यथाशक्ति फलमुद्रा वस्त्र स्वर्णादि जिनप्रतिमाके आगे ढोबे । तदपीठे गर्जवंती स्वसंपत्तिके अनुसार वस्त्राजरण ड्रव्य सुवर्णादिदान गुरुको देवे । तदपीठे गुरु, पतिसहित गर्जवंतीको आशीर्वाद देवे । यथा ॥

ज्ञानत्रयं गर्जगतोपि विंदन् संसारपारैकनिबद्धचित्तः ॥ गर्जस्य पुष्टिं युवयोश्च तुष्टिं युगादिदेवः प्रकरोतु नित्यम् ॥ १ ॥

तदपीठे आसनसं उठायके ग्रंथिवियोजन करे.
ग्रंथिवियोजनमंत्रो यथा ॥

ॐ अहं । ग्रंथौ वियोज्यमानेऽस्मिन् स्नेहग्रंथिः स्थिरो
स्तु वां ॥ शिथिलोस्तु ज्वग्रंथिः कर्मग्रंथिदृढीकृतः ॥१॥

इस मंत्रकरके ग्रंथि खोलके धर्मागारमें दंपतीको
लेजाके गुरु को वंदना करवावे, और साधुयोंको नि
दोष जोजन वस्त्र पात्रादि दिलवावे. ॥

तदपीठे स्वकुलाचारयुक्तिकरके कुलदेवता, गृह
देता, पुरदेवतादि पूजन जानना.

॥ जैन वेद मंत्रोत्पत्ति ॥

यहां जो कहाहै कि, जैनवेदमंत्र; सो कथन करतेहैं.
यथा आदिदेव (रुषजदेव) का पुत्र, अवधिज्ञानवान्,
आदिचक्री, जगत राजा, श्रीमदादिजिनरहस्योपदेशसें
प्राप्त किया है सम्यक् श्रुतज्ञान जिसने—सो जगत
राजा—सांसारिक व्यवहारसंस्कारकी स्थितिकेवास्ते,
अहंनकी आज्ञा पाकरके, धारे हैं ज्ञानदर्शनचारि
त्रय, करणा करावणा अनुमतिसें त्रिगुणरूप
तीनसूत्र—मुद्राकरके चिन्हितवद्धः स्थलवासे ब्राह्म
णोंको (माहनोंको) पूज्यतरीके मानता हुआ, और
तिस अवसरमें अपनी वैक्रियलब्धिसें चार मुखवा
ला होके, चार वेदोंको उच्चारण करता जया. तिन
के नाम—संस्कारदर्शन १, संस्थापनपरामर्शन २, त
त्वावबोध ३, विद्याप्रबोध ४, । सर्व नयवस्तु कथन

करनेवाले इन चारों वेदोंको, माहनोंको पठन कराता हुआ. । तदपीछे वह माहन, सात तीर्थ करोंके तीर्थतक अर्थात् चंद्रप्रज्ञतीर्थकरके तीर्थतक सम्यक्त्वधारी रहें, और आर्हतश्रावकोंको व्यवहार दिखाते रहें, तथा धर्मोपदेशादि करते रहें । तदपीछे नवमे तीर्थकर श्रीसुविधिनाथपुष्पदंतके तीर्थके व्यवच्छेद हुए, तिस बीचमें तिन माहनोंने परिग्रहके लोभी होके, स्वच्छंदसें तिन आर्यवेदों कि जगे कुठकसुनी सुनाइ बातों लेके नवीन श्रुतियां रचीं, तिनमें हिंसक यज्ञादि और अनेक देवतायोंकी स्तुति (प्रार्थना) रचीं (क्रमसें ऋगू, यजुः साम, अथर्व,) नाम कटपना करके, मिथ्यादृष्टिपणको प्राप्तकरे तब व्यवहारपाठसें पराङ्मुख अर्थात् परमार्थरहित मनःकटिपत हिंसक यज्ञप्रतिपादकशास्त्रोंसें पराङ्मुख, ऐसे श्रीशीतलनाथादिके साधुयोंने तिन हिंसक वेदोंको ठोकरे, जिनप्रणीत आगमकोही प्रमाणभूत माने । तिन ब्राह्मणोंमेंसें जी, जिन माहनोंने (ब्राह्मणोंने) सम्यक्त्वं न त्यागन करा, अर्थात् जे माहन पुनः तीर्थकरोके उपदेशसें सम्यक्त्व पाके दृढ रहे, तिनोके संप्रदायमें आजगी जरत प्रणीत वेदका लेश कर्मांतरव्यवहार गत सुनते हैं; सोही यहां कहते हैं.

यत उक्तमागमे ॥

सिरिजरहचक्रवट्टी आरियवेयाण विस्सुजं कत्ता ॥
 माहणपढणमिणं कहिअं सुहजाणववहारं ॥ १ ॥
 जिणतिष्ठे बुद्धिन्ने मिच्चत्ते माहणेहिं ते ठविया ॥
 असंजयाण पूया अप्पाणं कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्या;—श्रीजरतचक्रवर्ती आर्यवेदोंका कर्त्ता प्रसिद्ध है. जरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके पढनेके वास्ते, शुद्ध ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहार केवास्ते. । जिन तीर्थंकरके तीर्थके व्यवच्छेद हुए वह आर्यवेद तिन माहनोंने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे, और असंयतिहोके तिनोने अपनी पूजा जगत्में करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्त्वाददर्शग्रंथसे जानना ॥

इस गर्जाधानसंस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥
 पंचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३,
 दर्ज ४, कौसुंजसुत्र ५, डव्य ६, फल ७, नैवेद्य ८,
 सदशवस्त्र दो (चुनकी) ९, शुद्धआसन १०, शुद्धपट्ट
 ११, स्वर्णताम्रादिजाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली
 स्त्रीयां १४ और गर्जवन्तीका पति १५,

इति गर्जाधान संस्कार विधि.

॥ अथ पुंसवन संस्कार वर्णन ॥

गर्जसें आठ मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपांग गर्जके उत्पन्न हुए, तिसके शरीरमें पूर्णीजाव प्रमोदरूप स्तनोंमें दूधकी उत्पत्तिका सूचक, पुंसवन संस्कार करना । मूल, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र; और मंगल, गुरु आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्ममें संमत हैं । रिक्ता दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अयम् (टूटी तिथी) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथियां वर्जके; गंभांत और अशुभ नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चंद्रमाके बल हुए, पुंसवनका आरंभ करे; सो ऐसे हैं । पूर्वोक्त वेष, और स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा नहुए, गर्जाधान कर्मके अनंतर, जो वस्त्रवेष और केशवेष धारण करे हैं, तिसही वस्त्रवेष और केशवेषवाली गर्जवंतीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे तब मंगलगीतगानपूर्वक आचरणसहित अविधवा स्त्रीयोंकरके, अज्यंग उद्धर्त्तन जलाभिषेकोंकरके स्नान करावे । तदपीछे प्रजात हुए नवीन वस्त्र गंधमा द्यभूषित गर्जवंतीको साक्षिणी करके, घरदेहरामें अर्द्धप्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पंचामृतकरके बृहत्स्नात्रविधिसे स्नात्र करावे । तदपीछे सहस्रमूलीस्नात्र प्रतिमाको करे । पीछे तीर्थोदक स्नात्रकरे पीछे सर्वस्नात्रोदकोंको सुवर्णरूप्यताम्रादि जाजनमें

स्थापन करके, शुचासन ऊपर बैठी हुई साक्षीजू त करे हैं पतिदेवरादि कुलज जिसने, ऐसी गर्जवंतीको, दक्षिणहस्तमें कुशा धारण करके, कुशाग्रविं डुयोंकरके स्नात्रोदकसे गर्जवंतीके शिरस्तनउदरको सिंचन करता हुआ, इस वेदमंत्रको पढ़े. ॥

“॥ ॐ अहं । नमस्तीर्थकरनामकर्मप्रतिबंधसंप्राप्तसुरासुरेंद्रपूजायार्हते । आत्मन् त्वमात्मायुः कर्मबंधप्राप्यं मनुष्यजन्मगर्जावासमवाप्नोषि तद्भव जन्मजरामरणगर्जवासविहित्तये प्राप्तार्हद्धर्मः अर्हद्भक्तः सम्यक्त्वनिश्चलः कुलजूषणः सुखेन तव जन्मास्तु । भवतु तव त्वन्मातापित्रोः कुलस्यान्युदयः । ततः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिर्वृद्धिर्ऋद्धिः कान्तिः सनातनी अहं ॐ ॥

इस वेदमंत्रको आठवार पढ़ता हुआ, गर्जवंती को अजिषेचन करे. । तदपीठे गर्जवंती आसनसे ऊठके सर्वजातिके आठ २ फल, स्वर्णरूप्यमयी मुद्रा आठ, प्रणाम (नमस्कार) पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे ढोवे. । तदपीठे गुरुके चरणोंको नमस्कार करके, दो वस्त्र, सोनेरूपेकी आठ मुद्रा, और तंबो लसहित आठ सुपारी गुरुको देवे. । तदपीठे धर्मागार (पोषधशाला) में जाकर साधुओंको वंदना नमस्कार करे, और साधुओंको यथाशक्तिसे शुरु अन्न वस्त्र पात्र देवे. । कुलवृद्धोंको नमस्कार करे. ॥ तदपीठे स्वकुलाचारकरके कुलदेवताविपूजन जानन.

पंचामृत १, स्नात्रवस्तु २, स्त्रीके नवीन वस्त्र ३, नवीन वस्त्रयुगल ४, स्वर्णकी आठ मुद्रा ५. रूपेकी आठ मुद्रा ६, सोनेकी ७, और रूपेकी ७ एवं षोडश (१६) मुद्रा और ७, फलकी जाति ७; मूलसहितदर्जण, तांबूल १०, सुगंध पदार्थ ११, पुष्प १२, नैवेद्य १३, सधवा स्त्रीयां १४, गीत मंगल १५, इतनी वस्तु पुंसवनसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति द्वितीय पुंसवन संस्कार विधि

अथ तृतीयं जन्मनामा संस्कार वर्णनं ॥

जन्मसमय हुए, ज्योतिषि सहितगुरु, सूतिकागृह के निकट गृहमें एकांतस्थानमें जहां रौला न सुनाइ देवे, स्त्री, बाल, पशु, जहां न आवे, तहां घटियंत्र (घरी-कलाक) सहित उपयोगसहित चित्तवाला होकर, परमेष्टिजापमें तत्पर हुआ थाका रहे. । यहां पहिलां तिथि बार नक्षत्रादि देखना न चाहिये क्यों कि, यह जीव कर्म और कालके अधीन है. ॥

बालकके जन्म हुए समीप रहा हुआ गुरु, ज्योतिषिको जन्मक्षण जाननेके वास्ते आज्ञा करे. तिसने जी सम्यक् जन्मकाल, करगोचर करके धारण करना तदपीठे बालकके पिता, पितृव्य (चाचा-काका) पितामहोंनें, नाल विना ठेघां गुरुका, और ज्योतिषिका बहुत वस्त्र आचूषणवित्तादिसें पूजन करना. क्योंकि, नाल ठेघांपीठे सूतक हो जाता है. । गुरु

बालके पिता, पितामह (दादा) आदिकों आशीर्वाद देवे. ॥

यथा ॥

‘ॐ अर्हं कुलं वो वर्द्धतां । संतु शतशः पुत्रप्रपौत्राः । अक्षोणमस्त्वायुर्द्धनं यशः च अर्हं ॐ ॥’ इति वेदाशीः ॥

यो मेरुशृंगे त्रिदशाधिनाथैर्देव्याधिनाथैस्सपरिष्ठदैश्च ॥ कुंजामृतैः संक्षपितस्सदेव आद्यो विदध्यात्कुलवर्द्धनंच ॥ १ ॥

ज्योतिषिकाशीर्वादो यथा शार्दूलविक्रीकितवृत्तम् ॥

आदित्यो रजनीपतिः क्षितिसुतः सौम्यस्तथा वाकूपतिः शुक्रः सूर्यसतो विधुंतुदशिखिश्रेष्ठा ग्रहाः पांतुवः ॥ अश्विन्यादिजमण्मूलं तदपरो मेषादिराशिक्रमः

कल्याणं पृथुकस्य वृद्धिमधिकां संतानसप्यस्य च ॥१॥

तदपीठे लग्न धारण करके, ज्योतिषिके स्वघर गये हुए, गुरु सूतिकर्मकेवास्ते कुलवृद्धा स्त्रीयोको, और दाईयोको निर्देश करे । अन्य घरमें रहाही बालकको स्नान करानेवास्ते जलको मंत्रके देवे ॥

जलान्निमंत्रणमंत्रो यथा ॥

॥ॐ अर्हं । नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुज्यः॥ क्षीरोदनीरैः किल जन्मकाले, यैर्मेरुशृङ्गे स्वपितो जिनेन्द्रः॥ स्नानोदकं तस्य जवत्विदं च, शिशोर्महामङ्गल लपुण्यवृद्धैः ॥ १ ॥

इस मंत्रकरके सात बार जलको मंत्रें, तिस जल करके कुलवृद्धा स्त्रीयों बालकको स्नान करावे. । और अपनेशकुलाचारके अनुसार नालछेद करे. तदपीठे गुरु स्वस्थानमें बैठाही चंदन, रक्तचंदन, विट्ठिका आदि दग्ध करके तिनकी जस्म श्वेतसर्पप और लवण मिश्रित करके पोट्टलिका बांधे.

रक्षाजिमंत्रणमंत्रो यथा ॥

“ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जगदंबे शुभे शुभंकरे अमुं बालं जूतेज्यो रक्ष १ । ग्रहेज्यो रक्ष १ । पिशाचेज्यो रक्ष १ । वेतालेज्यो १ । शाकिनीज्यो रक्ष १ । गगनदेवीज्यो रक्ष १ । दुष्टेज्यो रक्ष १ । शत्रुज्यो रक्ष १ । कर्मणेज्यो रक्ष १ । दृष्टिदोषेज्यो रक्ष । १ जयं कुरु विजयं कुरु । तुष्टिं कुरु । पुष्टिं कुरु । कुलवृद्धिं कुरु । श्रीं ह्रीं ॐ जगवति श्रीं श्रीं बिके नमः ॥

इस मंत्रकरके सातवार मंत्रित रक्षापोट्टलीको काखे सूत्रसें बांधके, लोहेका टुकड़ा, वरुणमूलका टुकड़ा, रक्तचंदनका टुकड़ा और कौडी, इनोसहित रक्षापोट्टलिको कुलवृद्धा स्त्रीयोंके पास बालकके हाथ ऊपर बंधावे. ॥

सांवत्सर(पंचांग)घटीपात्र, चंदन, रक्तचंदन, समीपमें एकांत गृह, सरसव, लवण कौशेय कृष्णसूत्र, कौकी गीतमंगल, लोहा, रक्षा, वस्त्र, दक्षिणावास्ते धन, सूतिका, कुलवृद्धा, सर्व जलाशयका जल, जन्मसंस्कारमें

इतनी वस्तु चाहिये. ॥ इतिजन्म सं० विधिः ॥ अथ कदाचित् अश्लेषामें, ज्येष्ठामें, मूलमें, गंमांतमें जडामें बालकका जन्म होवे तो बालकको, बालकके मातापिताको, बालकके कुलको, दुःख, दारिद्र्य, शोक, मरणदि कष्ट होवे, इसवास्ते बालकका पिता और कुलज्येष्ठ (कुलका बन्ना) शान्तिकविधिमें कहे विधानके करेविना बालकका मुख न देखे. ॥

इति जन्मसंस्कार विधिः

अथ चतुर्थं सूर्यचंद्रदर्शन संस्कार वर्णन

तीसरे दिन गुरु समीपके घरमें अर्हत् पूजन पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्वर्णताम्रमयी वा रक्तचंदनमयी सूर्यकी प्रतिमा स्थापन करे. तदपीठे स्नान करके अलंकृत बालककी माताको जिसने दोनों हाथोंमें बालकको धारण किया है ऐसी माताको प्रत्यक्ष सूर्यके सन्मुख होजाके, वेदमंत्रको उच्चारण करता हुआ, गुरु पुत्रको सूर्यका दर्शन करावे. ॥

सूर्यवेदमंत्रो यथा ॥

“॥ ॐ अर्हं । सूर्योऽसि । दिनकरोऽसि । सहस्रकिरणोऽसि । विज्ञावसुरसि । तमोपहोऽसि । प्रियं करोऽसि । शिवं करोऽसि । जगच्चक्षुरसि । सुरवेष्टितोऽसि । विततविमानोऽसि । तेजोमयोऽसि । अरुणसारथिरसि । मार्त्तमोऽसि । द्वादशात्माऽसि । वक्रबांध

वोऽसि । नमस्ते जगवन् प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं
पुष्टिं प्रमोदं कुरु १ सन्निहितो जव अहं ॥”

ऐसैं गुरुके पठन करे हुए, सूर्यको देखके, माता
पुत्रसहित, गुरुको नमस्कार करे. गुरु पुत्रसहित मा
ताको आशीर्वाद देवे. ।

यथा । आर्या ॥

सर्वसुरासुरवंशः कारयिता सर्वधर्मकार्याणाम् ॥

भूयात्रिजगच्चक्षुर्मंगलदस्ते सपुत्रायाः ॥ १ ॥

सूतकमें दक्षिणा नहीं है. । तदपीठे गुरु स्वस्था
नमें आयकर जिन प्रतिमाको और स्थापित सूर्यको
विसर्जन करे. माता और पुत्रको सूतकके ज
यसैं तहां जिनप्रतिमाके पास न लावे. तिस दिनमें
ही संध्याकालमें गुरु जिनपूजापूर्वक जिनप्रतिमाके
आगे स्फटिकरूप्यचंदनमयी चंद्रमाकी मूर्ति स्थापन
करे, तिस चंद्रमाकी मूर्तिका शान्तिकादिक प्रक-
मोक्त विधिकरके पूजन करे. तदपीठे तैसैंही सूर्य-
दर्शनरीतिसैं चंद्रमाके उदय हुए प्रत्यक्ष चंद्रसन्मुख
माता और पुत्रको ले जाके, वेदमंत्र उच्चार करता
हुआ, मातापुत्र दोनोंको चंद्रका दर्शन करावे. ॥

चंद्रस्य वेदमंत्रो यथा ॥

“॥ ॐ अहं । चंद्रोऽसि । निशाकरोऽसि । सुधा
करोऽसि । चंद्रमा असि । ग्रहपतिरसि । नक्षत्रपति
रसि । कौमुदीपतिरसि । निशापतिरसि । मदनमि

त्रमसि । जगज्जीवनमसि । जैवातुकोऽसि । क्षीरसा
गरोद्भवोऽसि । श्वेतवाहनोऽसि । राजाऽसि । राजरा-
जोऽसि । औषधीगर्जोऽसि । वंद्योऽसि । पूज्योऽसि ।
नमस्ते जगवन् अस्य कुलस्य ऋद्धिं कुरु । वृद्धिं
कुरु । तुष्टिं कुरु । पुष्टिं कुरु जयं विजयं कुरु । जडं कुरु ।
प्रमोदं कुरु । श्रीशशांकाय नमः । अहं ॥”

ऐसें पढता हुआ, माता पुत्रको चंद्र दिखलाके
खड़ा रहे. । माता पुत्र सहित गुरुको नमस्कार करे. ।
गुरु आशीर्वाद देवे. ॥

यथा । वृत्तम् ॥

सर्वौषधीमिश्रमरीचिजालः सर्वापदांसंहरणप्रवीणः॥
करोतु वृद्धिं सकलेषु वंशेषु युष्माकमिन्द्रुःसततं प्रसन्नः

तदपीठे गुरु जिनप्रतिमा, और चंद्रप्रतिमा दो-
नोंको विसर्जन करे. । इसमें इतना विशेष है. । कदा
चित् तिस रात्रिके विषे चतुर्दशी अमावास्याके
वशसें वा वादलसहित आकाशके होनेसें चंद्रमा न
दिखलाइ देवे तो ज़ी पूजन तो तिस रात्रिकीही
संध्यामें करना; और दर्शन तो और रात्रिमें ज़ी
चंद्रमाके उदय हुए हो सकता है. ॥ सूर्य और चंद्र
माकी मूर्ति, तिसकी पूजाकी वस्तु, सूर्यचंद्रदर्श
नसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति चंद्रसूर्यदर्शनसंस्कारविधिः ॥

॥ अथक्षीराशननामा पांचमा संस्कारं ॥

तिसही जन्मसें तीसरेदिन, चंद्रसूर्यके दर्शनके दिन मेंही, बालकको क्षीराशनसंस्कार करना । तद्यथा । पूर्वोक्त वेषधारी गुरु, अमृतमंत्रकरके एकसौ आठ वार मंत्रित तीर्थोदकसें बालकको, और बालककी माताके स्तनोंको अग्निषेक करके, माताकी गोदी (अंक) में स्थित बालकको दूध पावे. पूर्णांगना शिकासंबंधि स्तन्य पहिलां चुंघावे, स्तन्य (दूध) पीते हुए बालकको गुरु आशीर्वाद देवे ॥

यथा वेदमंत्र ॥

“ ॥ ॐ अहं जीवोऽसि । आत्माऽसि । पुरुषोऽसि । शब्दज्ञोऽसि । रूपज्ञोऽसि । रसज्ञोऽसि । गंधज्ञोऽसि । स्पर्शज्ञोऽसि । सदाहारोऽसि । कृताहारोऽसि । अन्य स्ताहारोऽसि । कावलिकाहारोऽसि । लोमाहारोऽसि । औदारिकशरीरोऽसि । अनेनाहारेण तवांगं वर्द्धतां । बलं वर्द्धतां । तेजोवर्द्धतां । पाटवं वर्द्धतां । सौष्ठवं वर्द्धतां पूर्णायुर्जव । अहं ॐ ॥ ”

इस मंत्रकरके तीन वार आशीर्वाद देवे ॥

अमृतमंत्रो यथा ॥

“ ॐ ॥ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं . श्रावय २ स्वाहा ॥ ”

इति क्षीराशनसंस्कार विधिः ॥

अथ षष्ठमं षष्ठीसंस्कारस्वरूपं ॥

ठठे दिनमें संध्याके समयमें गुरु प्रसूतिघरमें आकरके षष्ठीपूजन विधिका आरंज करे, षष्ठीपूजनमें सूतक नहीं गिणना. यत उक्तम् ।

स्वकुले तीर्थमध्ये च तथावश्ये बलादपि ॥

षष्ठीपूजनकाले च गणयेन्नैव सूतकम् ॥ १ ॥

इसवचनसें ॥ सूतिकागृहकी जीत और जूमि दोनोंको सधवायोंके हाथसें गोबरसें लेपन करावे, । तदपीठे दृश्य शुक्रवृहस्पतिके वर्त्तनेवाली दिशाके जीतजागको खड़ी आदिसें धवल (श्वेत) करावे, और जूमिजागको चौंकमंडित करावे. । तदपीठे श्वेत जीतजागके ऊपर सधवाके हाथेंकरी कुंकुम हिंगुलादिवर्णोंसें आठमाताओंको उर्झा, (खमीयां) आठ बैठी, और आठ सुती, लिखवावे. कुलकर्मांतरमें गुरुकर्मांतरमें षट् (६) षट् (६) लिखनीया. । तदपीठे सधवा स्त्रीयोंके गीतमंगल गाते हुए चौंकमें शुजासनके ऊपर बैठा हुआ गुरु, अनंतरोक्त पूजा क्रम करके मातायोंको पूजे. यथा ॥

“॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने श्वेतवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ स्वाहा ॥”

तीनवार पढ़के पुष्पकरके आह्वान करे॥तदपीठे॥

“॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तक

कपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । मम सन्नि-
हिता जव २ स्वाहा ॥ ”

तीनवार पढके सन्निहित करे ॥ पीठे ॥

“ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणा
पुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । इह
तिष्ठ २ स्वाहा ॥ ”

इति । तीनवार पढके स्थापन करे ॥ पीठे ॥

“ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणा
पुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । गंधं
गृह्ण २ स्वाहा ॥ ”

चंदनादि गंध चढावे ॥

“ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्त-
कपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । पुष्पं
गृह्ण २ स्वाहा ॥ ”

इसीतरे मंत्रपूर्वक ।

“ धूपं गृह्ण २ । दीपं गृह्ण २ । ’ ‘ अक्षतान् गृह्ण
२ । ’ ‘ नैवेद्यं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ”

ऐसें एकएकवार मंत्रपाठपूर्वक इन पूर्वोक्त गंधा
दिवस्तुयोंकरके जगवतीको पूजे. ॥ ऐसेंही अन्य
सात मातायोंकी पूजा करणी. ।

विशेष मंत्रोंमें हैं, सो लिखते हैं. ॥

“ ॐ ह्रीं नमो जगवति । माहेश्वरि । शूलपि-
नाककपालखट्वांगकरे । चंद्रार्किललाटे । गजचर्मावृते ।

शेषाहिवरूकांचीकलापे । त्रिनयने । वृषजवाहने ।
श्वेतवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ ॥” शेषंपूर्ववत् २

“॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । कौमारि । षण्मु
खि । शूलशक्तिधरे । वरदाजयकरे । मयूरवाहने
गौरवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ ॥” शेषंपूर्ववत् ३

“ॐ ह्रीं नमो जगवति । वैष्णवि । शंखचक्रगदा ।
सारंगखड्गकरे । गरुडवाहने । कृष्णवर्णे । इह षष्ठी
पूजने आगच्छ ॥” शेषं पूर्ववत् ॥ ४ ॥

“॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । वाराहि । वराह
मुहि । चक्रखड्गहस्ते । शेषवाहने श्यामवर्णे । इह
षष्ठीपूजने आगच्छ ॥” शेषं पूर्ववत् ॥ ५ ॥

“॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । इंद्राणि । सहस्र
नयने । वज्रहस्ते । सर्वाजरणचूषिते । गजवाहने ।
सुरांगनाकोटिवेष्टिते । कांचनवर्णे । इह षष्ठीपूजने
आगच्छ ॥” शेषं पूर्ववत् ॥ ६ ॥

“॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । चामुंडे । शिराजा
लकरालशरीरे । प्रकटितदशने । ज्वालाकुंतले । रक्त
त्रिनेत्रे । शूलकपालखड्गप्रेतकेशकरे । प्रेतवाहने ।
धूसरवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ ॥” शेषं
पूर्ववत् ॥ ७ ॥

“॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । त्रिपुरे । पद्मपुस्तक
वरदाजयकरे । सिंहवाहने । श्वेतवर्णे । इह षष्ठी
पूजने आगच्छ ॥” शेषं पूर्ववत् ॥ ८ ॥

एवं जैसें ऊर्ध्व (खरी) मातृका पूजन करे, तैसेंही बैठी और सुप्त मातृयांका जी पूर्वोक्त मंत्रों सेही तीनवार पूजन करे; । कितनेक चामुंदा, त्रिपुरा, दोनोंको वर्जके षट्मातृकाही पूजन करते हैं ॥

मातृका पूजन करके ऐसें पढे ॥

ब्राह्म्याद्यामातरोप्यष्टौ स्वस्वास्त्रबलवाहनाः ॥

षष्ठीसंपूजनात्पूर्वं कढ्याणं ददता शिशोः ॥ १ ॥

तदपीठे मातृस्थापनाकी अग्रजूमिमें चंदनलेप स्थापना करके, अंबारूप षष्ठीको स्थापन करे. । और तिस स्थापनाको दधि, चंदन, अक्षत, दूर्वा दिकरके पूजे. ।

तदपीठे गुरु हस्तमें पुष्प लेके ॥

“॥ ॐ ऐं ह्रीं षष्टि । आम्नवनासीने । कदंबवन विहारे । पुत्रद्वययुते । नरवाहने । श्यामाङ्गि । इह आगच्छ २ स्वाहा ॥”

मातृवत् इसकी जी पूजा करणी. । तदपीठे बाल कमातासहित अविधवा कुलवृद्धा स्त्रीयां मंगलगी. तगानमें तत्पर वाजंत्रोंके वाजते हुए षष्ठीरात्रिको जागरणा करे. । तदपीठे प्रातःकालमें ॥

“॥ ॐ जगवति माहेश्वरि पुनरागमनाय स्वाहा ॥”

ऐसें प्रत्येक नामपूर्वक गुरु, मातृको और षष्ठीको विसर्जन करे । तदपीठे गुरु, बालकको पंचपरमेष्टि

मंत्रपवित्रित जलकरके अग्निषेक करता हुआ, वेद मंत्रकरके आशीर्वाद देवे. ॥ यथा ॥

“॥ ॐ अर्हं जीवोऽसि । अनादिरसि । अनादि कर्मजागसि । यत्त्वया पूर्वं प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैराश्रववृत्त्या कर्मबद्धं तद्वन्धोदयोदीरणासत्ताजिः प्रति जुद्धव । माशुजकर्मोदयफलजुक्तेरुत्थेकं दध्याः । नचाशुजकर्मफलजुक्त्या विषादमाचरेः । तवास्तु संवरवृत्त्या कर्मनिर्जरा अर्हं ॐ ॥”

सूतकमें दक्षिणा नहीं है. ॥ चंदन, दधि, दूर्वा, अक्षत, कुंकुम, लेखिनी, हिंगुलादिवर्ण, पूजाके उपकरण, नैवेद्य, सधवा स्त्रीयां, दर्जन, जूमिक्षेपन, इतनी वस्तु षष्ठीजागरणसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति षष्ठी संस्कारविधिः समाप्तः ॥

॥ अथ शुचिकर्मसंस्कार ॥

यहां शुचिकर्म स्वस्ववर्णानुसार करके दिनोंके व्यतीत हुए करणा, तद्यथा ॥

शुद्ध्येद्विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन बाहुजः ॥

वैश्यस्तु षोडशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति ॥१॥

कारूणां सूतकं नास्ति तेषां शुद्धिर्न चापिहि ॥

ततो गुरुकुलाचारस्तेषु प्रामाण्यमिच्छति ॥ २ ॥

तिस कारणसें स्वस्ववर्णकुलानुसार करके दिनोंके व्यतीत हुए, गुरु सर्वही, सोळां पुरुषयुगसें जरे,

तिस कुलवर्गकों बुलवावे. क्योंकि, सूतक सोलां पुरुषयुगसें जरे ग्रहण करिये हैं. ॥ यदुक्तं ॥

नृषोडशकपर्यन्त गणयेत् सूतकं सुधीः ॥

विवाहं नानुजानीयाजोत्रे लक्षनृणां युगे ॥ १ ॥

ज्ञावार्थः—सोलां पुरुषपर्यंत (बुद्धीवंत) पुरुष सूतक गिणे, । परंतु एकगोत्रमें लक्ष पुरुषयुग व्यतीत हुए जी, विवाह नहीं करे; । तिसवास्ते अपने गोत्रजको बुलवायके तिन सर्वको सांगोपांग स्नान और वस्त्रहालन करनेको कहे. । स्नान करके शुचि वस्त्र पहिनके गुरुको साक्षी करके, वे सर्व गोत्रज विविध प्रकारकी पूजासें जिन प्रतिमाका पूजन करे. । तदपीछे बालकके माता पिता पंचगव्यकरके अंतस्नान करे. । पुत्रसहित नखछेदनकरके गांठ जोनी दंपती जिनप्रतिमाको नमस्कार करे, सधवा स्त्रीयांके मंगलगीत गाते वाजंत्रोंके वाजते हुए. । और सर्व चैत्योंमें पूजा नैवेद्य ढौकन करे. । साधु योंको यथाशक्ति चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र देवे, । और संस्कार करनेवाले गुरुको वस्त्र तांबूल जूषण द्रव्यादिदान देवे. तथा । जन्म, चंद्रसूर्यदर्शन, क्षीराशन, षष्ठी, इनसंबंधिनी दक्षिणा तिस दिनमें संस्कारगुरुकेतांष्ट्र देणी. । और सर्व गोत्रज स्वजन मित्र वर्गोंको यथाशक्ति जोजन तांबूल देनां. । तथा गुरु तिस कुलके आचारानुसारकरके पंचगव्य, जिनस्ना

त्रोदक, सर्वौषधिजल और तीर्थजल, इनोकरके स्नान कराये हुए बालकको वस्त्राजरणादि पहिनावे. ॥ तथा स्त्रीयोंको सूतकदिनोंके पूर्ण हुएत्री, आर्द्र नक्षत्रोंमें, और सिंह गजयोनि नक्षत्रोंमें सूतकस्नान नही करावणा. । आर्द्र नक्षत्र दश है. । कृत्तिका १, जरणी २, मूल ३, आर्द्रा ४, पुष्य ५, पुनर्वसु ६, मघा ७, चित्रा ८, विशाखा ९, श्रवण १०, ये दश आर्द्र नक्षत्र हैं; इनमें स्त्रीको सूतकस्नान न करावे. यदि स्नान करे तो, फिर प्रसूति न होवे. ॥ धनिष्ठा १, पूर्वाजाडपदा २, ये दो सिंहयोनि नक्षत्र जाणने; और जरणी १, रेवती २, ये दो नक्षत्र गजयोनि जाणने. ॥ कदाचित् सूतक पूर्ण हुए दिनमें इन पूर्वोक्त नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र आवे, तब एक एक दिनके अंतरे शुचिकर्म करणा. ॥ पूजावस्तु, पंच गव्य, स्वगोत्रज जन, तीर्थोदक, शुचिकर्मसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति सप्तमशुचिकर्मसंस्कार विधि

अथ नामकरणसंस्कार विधि ॥

मृडु, ध्रुव, क्षिप्र और चर, इन नक्षत्रोंमें पुत्रका जातकर्म करना. अथवा गुरु वा शुक्र, चतुर्थ स्थित होवे, तब नाम करना, सज्जन पुरुषोंको सम्मत है. ॥ शुचिकर्मदिनमें अथवा तिसके दूसरे वा तीसरे

शुभ दिनमें बालकको चंद्रमाके बल हुए, ज्योतिषिकसहित गुरु तिसके घरमें शुभस्थानमें शुभासनके ऊपर बैठा हुआ, पंचपरमेष्ठिमंत्रको स्मरण करता हुआ रहे. । तिस अवसरमें बालकके पिता, पितामहादि, पुष्प फलकरके हाथ परिपूर्ण करके ज्योतिषिकसहित गुरुको साष्टांग नमस्कार करके ऐसैं कहे. हे जगवन् ! पुत्रका नामकरण करो. । तब गुरु तिन पिता, पितामहादिको, तिसके कुलके पुरुषोंको, और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको, आगे बैठाके, ज्योतिषिको जन्मलग्न कहनेकेवास्ते आदेश करे. । तब ज्योतिषिक शुभपट्टेऊपर खटिका (खनी) करके तिस बालकके जन्मलग्नको लिखे, स्थान २ में ग्रहोंको स्थापन करे. तब बालकके पितापितामहादि जन्मलग्नकी पूजा करे. । तिसमें स्वर्णमुद्रा १२, रूप्यमुद्रा १२, ताम्रमुद्रा १२, क्रमुक (सुपारी) १२, अन्य फल जाति १२, नाखिकेर १२, नागवल्लीदल (पान) १२. इनोंकरके द्वादश लग्नका पूजन करे । इनही नव नव वस्तुयोंकरी नव ग्रहोंका पूजन करे. ऐसैं लग्नके पूजे हुए, तिनोंके आगे ज्योतिषिक लग्न विचार कहे. वेत्ती उपयोगसहित सुणे. । तदपीठे व्यावर्णनसहित लग्नको ज्योतिषिक कुंकुमाक्षरोंकरके पत्रे में लिखके, कुलज्येष्ठको सौंप देवे. । बालकके पिता दिकोंने ज्योतिषिका अपनी संपदानुसार वस्त्र

स्वर्णदान करके सम्मान करणा. और ज्योतिषिक जी तिनोंके आगे जन्मनक्षत्रानुसारे, नामाक्षरको प्रकाश करके, स्वधरको जावे. तदपीठे गुरु, सर्व कुलपुरुषोंको और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको आगे स्थापन करके (बिठलाके) तिनोंकी सम्मतिसें हाथमें दूर्वा लेके परमेष्ठिमंत्रपठनपूर्वक (कुलवृद्धाके) कानमें जातिगुणोचित नाम सुणावे. । तिसपीठे कुलवृद्धा नारीयां गुरुकेसाथ पुत्र गोदीमें लीया तिसकी माता शिबिकादि नरवाहनमें बैठी हुई, वा पादचारिणी अविधवायोंके गीत गाते हुए, जिनमंदिरमें जावे. । तहां मातापुत्र दोनों जिनको नमस्कार करे, माता चौबीस २ सुवर्णमुद्रा, रूप्यमुद्रा, फलनालिकेरादि करके जिनप्रतिमाके आगे ढौकनिका करे. । तदपीठे देवके आगे कुलवृद्धा स्त्रीयां बालकका नाम प्रकाश करें. चैत्य न होवे तो, घरदेरासरकी प्रतिमाके आगे यह विधि करना. तदपीठे तिसही रीतिसें पौषध शाखामें आवे, तहां प्रवेश करके चोजनमंडली स्थानमें मंरुलीपट्ट स्थापन करके तिसकी पूजा करे. मंरुलीपूजाका विधि यह है. पुत्रकी माता “श्रीगौ तमाय नमः” ऐसा उच्चार करती हुई, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य करके मंडलीपट्टकी पूजा करे. मंरुलीपट्टोपरि स्वर्णमुद्रा १०, रूप्यमुद्रा १०, क्रमुक १०७, नालिकेर १९, वस्त्रहस्त १९, स्थापन

करे. । तदपीठे पुत्रसहित माता तीन प्रदक्षीणा करके यतिगुरुको नमस्कार करे. । नव सोनेरूपेकी मुद्रा करके गुरुके नवांगकी पूजा करे. । निरुंठना और आरात्रिका (आरती) करके क्षमाश्रमणपूर्वक हाथ जोडके, “ वासस्केवंकरेह ” ऐसा पुत्रकी माता कहे. तब यतिगुरु वासक्षेपको, ॐ कार ह्रीं कार श्रींकार सन्निवेशकरके कामधेनुमुद्राकरके, वर्द्धमान विद्याकरके जपके, मातापुत्र दोनोंके शिरपर क्षेप करे. तहां जी तिनके शिरमें ॐ ह्रीं श्रीं अक्षरोंका सन्निवेश करे. । तदपीठे बालककों अक्षतसहित चंदनकरके तिलक करके, कुलवृद्धाके अनुवाद करके, नाम स्थापन करे. । तदपीठे तिसही युक्ति करके सर्व अपने घरको आवे. । यतिगुरुओंको शुरु आहार वस्त्र पात्रका दान देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र अलंकार स्वर्णदान देवे. ॥ नांदी, मंगलगीत, ज्योतिषिकसहित गुरु, प्रचूत फल, और मुद्रा, विविधप्रकारके वस्त्र, वास, चंदन, दूर्वा, नालिकेर, धन, इतनी वस्तु नामसंस्कार कार्यमें चाहिये. ॥

इति अष्टम नामकरणसंस्कार विधिः

॥ अथ नवमं अन्नप्राशनविधि ॥

रेवती, श्रवण, हस्त, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी, चित्रा, रोहिणी, उत्तराश्रय, धनिष्ठा, पुष्य, इन निर्दोष नक्षत्रोंमें और रवि, चंद्र, बुध, शुक्र, गुरु

बारोंमें पुरुषोंको नवीन अन्नप्राशन (खाना) श्रेष्ठ हैं. और बालकोंको अन्नजोजनरिक्तादि कुतिथीयां और कुयोगोंको वर्जके श्रेष्ठ है. । पुत्रको ठेठे मासमें, और कन्याको पांचमे मासमें अन्नप्राशन, सत्पुरुषों ने कहा है. । जे नक्षत्र कहे तिनमें और पूर्वोक्त वारमें सङ्गृहोंके विद्यमान हुए अमावासी और रिक्ता, तिथीको वर्जके शुभ तिथीमें करणा. क्यों कि, लग्नमें रवि होवे तो, कुष्टी होवे; मंगल होवे तो, पित्तरोगी होवे; शनि होवे तो, वातव्याधि होवे; क्षीणचंद्र होवे तो, जीख मांगनेमें रत होवे; बुध होवे तो, झानी होवे; शुक्र होवे तो, जोगी होवे; बृहस्पति होवे तो, चिरायु होवे; और पूर्ण चंद्रमा होवे तो, पूजा करनेवाला और दान देनेवाला होवे. कंटक ४।७।१०। अंत्य १२। निधन ८। त्रिकोण ५। ९। इन घरोंमें पूर्वोक्त ग्रह होवे तो, शरीरमें शुभफल देते हैं. । ठेठे और आठमे घरमें चंद्रमा अशुभ होता है, । केंद्र १।४।७। १०। त्रिकोण ५। ९। इन घरोंमें सूर्य होवे तो, अन्ननाश होवे. ॥ तिसवास्ते ठेठे मासमें बालकको, और पांचमे मासमें कन्याको पूर्वोक्त तिथी वार नक्षत्र योगोंमें बालकको चंद्रबलके हुए अन्नप्राशनका आरंभ करे. । तद्यथा । पूर्वोक्त वेषधारी गुरु, तिसके घरमें जाके सर्वदेशोत्पन्न अन्नोंको एकत्र

करे; देशोत्पन्न और अन्य नगरोंमेंसे जे प्राप्त होवे, तिन सर्व फलोंको, और षट् विकृतियोंको गृहण करे. । तदपीठे सर्व अन्नोंको, सर्व शाकोंको, सर्व विकृती योंको, घृत, तैल, इक्षुरस, गोरस, जल, इत्यादिकों से पकाये हुए बहुतप्रकारके पदार्थोंको पृथक् न्यारे १ करे. । तदपीठे अर्हत्प्रतिमाका बृहत्स्नात्रविधि से (प्रतिष्ठा विधिमे लिखेंगे) पंचामृतस्नात्र करके पृथक् पात्रोंमें तिन अन्न शाक विकृति पाकादिकोंको जिनप्रतिमाके आगे अर्हत्कल्पोक्त विंशोपचारी नैवेद्यमंत्रकरके ढोवे. सर्वजातके फलजी ढोवे. । तदपीठे बालकको अर्हत्स्नात्रोदक पिखावे. । फिर जिनप्रतिमाके नैवेद्यसे उद्धरित बची (हुइ) तिन सर्ववस्तुयोंको सूरिमंत्रके मध्यगत अमृता श्रवमंत्रकरके श्रीगौतमप्रतिमाके आगे ढोवे, । तिससे उद्धरित वस्तुयोंको कुलदेवताके मंत्रकरके गोत्रदेवीकी प्रतिमाके आगे चढावे, । तदपीठे कुल देवीके नैवेद्यमेंसे योग्य आहार मंगलगीत गाते हुए माता पुत्रके मुकमें देवे. । और गुरु यह वेद मंत्र पढे. ॥ यथा ॥

“॥ ॐ अर्हं जगवानर्हन् त्रिलोकनाथस्त्रिलोक पूजितः सुधाधारधारितशरीरोपि कावलिकाहारमाहारितवान् । तपस्यन्नपि पारणाविधाविक्षुरसपरमान्न जोजनात् परमानंदादापकेवलं तद्देहिन्नौदारिकशरी

रमातस्त्वमप्याहारय आहारं तत्ते दीर्घमायुरारो
ग्यमस्तु अहं ॐ ॥ ”

यह मंत्र तीनवार पढे. । तदपीठे साधुयोंको षट्
विकृतियांकरके षट्संयुक्त आहार देवे, यतिगु
रुके मंरुलीपट्टोपरि परमान्नपूरित सुवर्णपात्र चढावे,
गृहस्थगुरुको ओण ओण प्रमाण सर्वजातका अन्न
दान करे, । तुल्ला २ प्रमाण सर्व घृत, तैल, गुड
लवणादि दान करे, । सर्वजातके एक सौ आठ २
फल देवे, । तांबेकाचरु, कांसेका थाल, और वस्त्रयु
गल देवे. । सर्वजातिके अन्न, सर्वजातिके फल, सर्व
विकृतियां, स्वर्ण, रूप्य, ताम्र, कांश्य, इनोंके पात्र
(जाजन) इतनी वस्तुयां इस संस्कारमें चाहिये. ॥

इति नवमान्नप्राशनसंस्कार विधिः

अथ दशमं कर्णवेधसंस्कारविधि ॥

उत्तरात्रय, हस्त, रोहिणी, रेवती, श्रवण, पुनर्वसू
मृगशीर्ष, पुष्य, इन नक्षत्रोंमें । रेवती श्रवण, हस्त,
अश्विनी, चित्रा, पुष्य, धनिष्ठा, पुनर्वसू, अनुराधा,
चंद्रसहित इन नक्षत्रोंमें कर्णवेध करना, । लाज ११,
तृतीय ३, घरमें शुभ ग्रहोंकरके संयुक्त होवे, शुभ
राशि लग्नमें क्रूर ग्रहोंकरकेरहित बृहस्पतिके लग्न
धिप, वा लग्नमें हुए कर्णवेध करणा. जिसमें चंद्र
नक्षत्र, पुष्य, चित्रा, श्रवण, रेवती, जानने. । मंग

शुक्र, सूर्य, बृहस्पति, इन वारमें शुभ तिथीमें शुभ योगमें कर्णवेध करणा. ॥ इन निर्दोष तिथि वार नक्षत्रमें बालकको चंद्रबलके हुए कर्णवेध आरंभ करे. । उक्तं च । “गर्जाधान, पुंसवन, जन्म, सूर्यदर्शन, क्षीराशन, षष्ठी, शुचि, नामकरण, अन्नप्राशन, मृत्यु, इन संस्कारोंमें अवश्य कार्य होनेसे पंक्ति पुरुषोंने वर्षमासादिकी शुद्धि न देखणी. । कर्णवेधादिक अन्य संस्कारोंमें विवाहकीतरे वर्ष मास दिन नक्षत्रादिकोंकी शुद्धि अवश्यमेव विलोकन करणी. । यथा । तीसरे पांचमे सातमे निर्दोष वर्षमें बालकको और बालककी माताको अमृतामंत्र अजिमंत्रित जलकरके मंगलगानपूर्वक अविधवायोंके हांथेकरी स्नान करावे. । और तयां कुलाचारसंपदा अतिशय विशेषकरके तैलनिषेकसहित तीन पांच सात नव द्वादश दिनांतक स्नानका विधि जानना, । तिसके घरमें पौष्टिकको करणा, षष्ठीको वर्जके मात्रष्टकपूजन पूर्ववत् करणा, । तदपीठे स्व २ कुलानुसार अन्य ग्राममें कुलदेवताके स्थानमें पर्वतउपर नदीतीरे वा घरमें कर्णवेधका आरंभ करे. । तहां मोदक नैवेद्य करण गीतगान मंगलाचारादि स्व २ कुलागत रीति करके करणा. तदपीठे बालकको पूर्वाभिमुख आस नऊपर बिठलाके तिसके कर्णवेध करे तहां गुरु यह वेदमंत्र पठे. । यथा ॥

“॥ ॐ अर्हं श्रुतेनाङ्गोपाङ्गैः कालिकैरुत्कालिकैः
पूर्वगतैश्चूलिकाजिः परिकर्मजिः सूत्रैः पूर्वानुयोगैः
वन्दोजिह्वदणैर्निरुक्तैर्धर्मशास्त्रैर्विद्वद्वक्त्रैर्ज्ञायात् अर्हं
ॐ ॥”

शुद्धादिकोंको ॥ “॥ ॐ अर्हं तव श्रुतिद्वयं हृदयं
यम? विद्वन्स्तु ॥” ऐसे कहना. ॥

तदपीठे बालकको यानमें बैठाके, वा नर नारी
उत्संगमें लेके धर्मागारमें लेइ जावे; तहां पूर्वोक्त
विधिसें मंडलीपूजा करके बालकको गुरुके चरणों
आगे लोटावे. तब यतिगुरु विधिसें वासदेव करे. ।
तदपीठे बालकको घरमें ल्याके गृहस्थगुरु कर्णाक्षरण
पहिनावे. । यतिगुरुओंको शुद्ध चार प्रकारका आ
हार वस्त्र पात्र देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्णदान
देवे. ।

इति दशमंकर्णवेधसंस्कारवर्णनं

अथ दौरे करणसंस्कारविधि

हस्त, चित्रा, स्वाति, मृगशीर्ष, ज्येष्ठा, रेवती,
पुनर्वसू, श्रवण, धनिष्ठा, इन नक्षत्रोंमें । १। १। ३। ५। ७।
९। ११। १३। इन तिथियोंमें । शुक्र, सोम, बुध, इन
बारोंमें चंद्र वा तारेके बल हुए, दौरेकर्म करणा. ।
दौरनक्षत्रोंमें स्वकुलविधिकरके चूमाकरण करना
मुनींद्र कहते हैं; परं गुरु, शुक्र और बुध यह तीन

ग्रह केंद्रमें १।४।७ । १० होने चाहिये । यदि केंद्रमें सूर्य होवे तो ज्वर होवे. मंगल होवे तो शस्त्रसें नाश होवे. । षष्ठी (६), अष्टमी (७), चतुर्थी (४), सिनीवाली (चतुर्दशीयुक्तअमावास्या) चतुर्दशी (१४), नवमी (९), इन तिथियोंमें और रवि, शनि, मंगल, इन वारोंमें द्यौरकर्म न करावणा. । धन २, व्यय १२, त्रिकोण ५ । ९, इन ग्रहोंमें असङ्ग्रह होवे तो, मृत्यु हुए जी क्षुरक्रिया सुंदर नहीं होवे; और इनही घरोंमें शुभ ग्रह होवे तो क्षुरक्रिया पुष्टिकी करणहार जाणनी. । तिसवा स्ते बालकको सूर्यबलयुक्त मासके हुए, चंद्रताराबलयुक्त दिनमें, पूर्वोक्त तिथिवार नक्षत्रमें कुलाचारा नुसार कुलदेवताकी प्रतिमाके पास अन्य ग्राममें, वनमें, पर्वतके ऊपर, वा घरमें शास्त्रोक्त रीतिसें प्रथम पौष्टिक करे. । तदपीठे षष्ठीपूजावर्जित मात्र ष्ठपूजा पूर्ववत्. । तदपीठे कुलाचारानुसार नैवेद्य देवपकान्नादि करणा. । तदपीठे सुस्नात ग्रहस्थगुरु बालकको आसनऊपर बैठाके बृहत्स्नात्रविधिकृत जिनस्नात्रोदकसें शांतिदेवीके मंत्रकरके सिंचन करे. तदपीठे कुलक्रमागत नापित (नाइ) के हाथसें मुंरुन करावे. । तीन वर्णके शिरके मध्यजागमें शिखा स्थापन करे और शुद्धको सर्वमुंरुन. । चूड़ा करण करते हुए यह वेदमंत्र पठे. ॥ यथा ॥

“॥ ॐ अहं ध्रुवमायु, ध्रुवमारोग्यं, ध्रुवाः श्रीयो,
ध्रुवं कुलं, ध्रुवं यशो, ध्रुवं तेजो ध्रुवं कर्म, ध्रुवा च
गुण संतति रस्तु. अहं ॐ ॥”

यह सातवार पढता हुआ बालकको तीर्थोदककर
रके सींचे. । गीत वाजंत्र सर्वत्र जाणने. तदपीठे पंच
परमेष्ठिपाठपूर्वक बालकको आसनसे उठायकर स्ना-
न करावे. । चंदनादिकरके लेपन करे. । श्वेतवस्त्र
पहिनावे. । जूषणोंकरके जूषित करे. । तदनंतर
धर्मागारमें लेजावे. तदपीठे पूर्वरीतिसें मंडलीपूजा
गुरुवंदना वासद्धेपादि. । तदपीठे साधुओंको शुद्ध
वस्त्र, अन्न, पात्र और पररस विकृति दान देवे. ।
गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्ण दान देवे. । नापितको वस्त्र
कंकण दान देवे. ॥

॥ इति दशमंचूनाकरणसंस्कारवर्णनं ॥

अथ उपनयनसंस्कारविधि लिख्यते

तिहां उपनयन नाम मनुष्योंको वर्णक्रममें प्रवेश
करणेवास्ते संस्कारही वेषमुद्राके उद्ग्रहणसे स्व १
गुरुओंके उपदेशे धर्ममार्गमें प्रवेश करना. यदुक्तं ।

धम्मायारे चरिए वेसो सवह कारणं पढमं ॥

संजमल्लज्जाहेज साहाणं तहय साहूणं ॥ १ ॥

अर्थः—धर्माचारके आचरण करते हुए वेष जो

है, सो सर्वत्र प्रथम कारण है. श्रावक तथा साधु
योंको संजमलज्जाका हेतु है. ॥

तथा च श्रीधर्मदासगणिपादैरुपदेशमालायामप्यु
क्तम् ॥ यथा

धम्मं रक्कइ वेसो संकइ वेसेण दिस्सिउमि अहं
उम्मग्गेण परंतं रक्कइ राया जणवज्जव ॥ १ ॥

अर्थः—वेष धर्मकी रक्षा करता है. क्योंकि, वेष
होनेसें अकार्य करता हुआ मनमें शंका करता है
कि, मैं दीक्षितवेषवाला हूं, मुझको देखके लोक निंदा
करेगे, इसवास्ते उन्मार्गमें परते हुएकी जी वेष
रक्षा करता है, जैसें राजा देशकी रक्षा करता है. ॥
तथा इक्ष्वाकुवंशी, नारदवंशी, वैश्य, प्राच्य, उदी
च्य, इन वंशोंके जैन ब्राह्मणको उपनयन और जि
नोपवीत धारण करणा. । तथा क्षत्रीयवंशमें उत्पन्न
हुए जिन, चक्रि, बलदेव, वासुदेवोंको, श्रेयांसकुमार
दशार्णजद्रादि राजायोंको, हरिवंश, इक्ष्वाकुवंश,
विद्याधरवंश, इन वंशोंमें उत्पन्न हुएको जी, उपन
यन जिनोपवीतधारणविधि है. । जिसवास्ते कहा
है. । आगममें,

“देवाणुप्पिआ, न एअं जूअं, न एअं जवं, न
एअं जविस्सं, जन्नं, अरहंता वा, बलदेवा वा, वासु
देवा वा, अंतकुलेसु वा, तुहकुलेसु वा, दरिदकुलेसु
वा, जिरकागकुलेसु वा, माहणकुलेसु वा, आयाइंसु

वा आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, एवं खलु, अरहंता वा, चक्रबलवासुदेवा वा उग्रकुलेसु वा, जोगकुलेसु वा, राइनकुलेसु वा, खत्तियकुलेसु वा, इरकागकुलेसु वा, हरिवंशकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तहप्पगारेसु विसुद्ध जाइकुलवंसेसु आयाइंसु वा, आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, अहि पुण एसेवि जावे, लोग्गेय चूए, अणंताहिं उसप्पिणि उसप्पिणीहिं वइकंताहिं समुपवइ, नागगुत्तस्स, वा, कम्मस्स, अरकीणस्स, अवेइयस्स, अणिविणस्स, उदणं, जन्नं, अरहंता वा, चक्रबलवासुदेवा वा, अंतकुलेसु वा, पंतकिविण तुब्बदरिइ निरकागमाहणकुलेसु वा, आयाइंसु वा, आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, नो चेवणं, जोणी जम्मणनिस्कमिंसु वा, निस्कमंति वा, निस्कमिस्संति वा, तं जीअमेअं, तीअपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं, देविंदाणं, देवराइणं, अरहंते जगवंते, तहप्पगारे हिंतो, अंतकुलेहिंतो, पंतकुलेहिंतो, तुब्बदरिइकिविण निरकागमाहणकुलहिंतो; तहप्पगारेसु उग्रजोगराय न्नखत्तियइरकागहरिवंसकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तहप्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवंसेसु साहरावित्तए. ॥”*

तिसवास्ते कार्तिकशेठ कामदेवादिवैश्योंको जी उप

* इस पाठका जावार्थ यह है कि पुर्वोक्त अंतादिकुलमें अरिहंतादि नहीं उत्पन्न होते हैं, किंतु उग्रादि उपनयनादिसंयुक्त कुलमें उत्पन्न होते हैं, शुद्ध होनेसे. ॥

नयन जिनोपवीत धारण करणा. । आनंदादि शुद्धो को ज्ञी उत्तरीय धारण करणा. । शेष वणिगादिकों को उत्तरासंगकी अनुज्ञा है. जिनोपवीत जो है सो जगवान् जिनकी गृहस्थपणेकी मुद्रा है. । सर्व बाह्य अज्यंतर कर्मविमुक्त निर्ग्रथ यतियोंको तो, नव ब्रह्मगुप्तिगुप्ताज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रयी, हृदयमेंही है क्योंकि, ॥ मुनिजन सर्वदा तज्जावनाजावितही होते हैं. इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तिमुक्तरत्नत्रयी सूत्ररूप बाह्य मुद्राको नहीं धारण करते हैं, तन्मय होनेसें. नहीं समुद्र, जलपात्रको हस्तमे करता है. । नहीं सूर्य दीपकको धारण करता है. यदुक्तं ॥

अग्नौ देवोस्ति-विप्राणां हृदि देवोस्ति योगिनाम् ॥
प्रतिमास्वद्विबुद्धीनां सर्वत्र विदितात्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थः—अग्निहोत्रि ब्राह्मणोंका तो अग्निही देव है, अर्थात् अग्निविषेही देवबुद्धि है; और योगिजनोंके हृदयमेंही देव है; क्योंकि, योगाज्यासी मुनि जन तो, अपने पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत, ध्यानके बलसें अपने हृदयमेंही देवका स्वरूप ध्याय सकते हैं; और जो अद्विबुद्धि अर्थात् गृहस्थधर्मी श्रावकादि हैं, तिनोंको जगवान्की प्रतिमाही देव है; और तिसकेहो पूजन, ध्यान, प्रजावना, उत्सव, रथयात्रा, करनेसें कल्याण है. और जिनोंने आत्म स्वरूप जाना है, ऐसें यति, ऋषि, मुनियोंको तो

सर्वजगें देव माद्युम होता है, अर्थात् ध्याता, ध्येय, ध्यान, ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान रूपकरके सर्व देवस्वरूपही है. ॥ इसवास्ते शिखासूत्रविवर्जित ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रय करण कारण अनुमतिमें सदैव आदरवाले यतिजन हैं. । और गृहस्थी, ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयलेशश्रवणस्मरण मात्रसें ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयकोसूत्रमुद्राकरके हृदयमें धारण करते हैं. । 'प्रतिम।स्वल्पबुद्धीनां इसवचनसें' ॥

तदात्मकत्वके न हुए मुद्राका धारण है. । जैसे ठगस्थको बाह्य अन्यंतर तपःका करण है. । तथा नवतंतुगर्जितसूत्रमय एक अग्र ऐसें तीन अग्र ब्राह्मणको, दो अग्र क्षत्रियको, एक अग्र वैश्यको, शूद्रको उत्तरीमक, और अपरको उत्तरासंगकी अनुज्ञा है. । ऐसा विशेष क्यों है ? सोही कहते हैं. ब्राह्मणोंने नवब्रह्मगुप्तिगुप्त ज्ञान दर्शनचारित्ररूप रत्नत्रय आप पालन करणे, अन्योसें करावणे, अन्य करतांको अनुमति देणी. ॥ ब्रह्मगुप्तिगुप्ताइति । ब्राह्मण आप रत्नत्रयीको ध्ययन सम्यकदर्शन चारित्र क्रियायोकरके आचरते हैं, अन्योसें अध्यापन सम्यक्त्वोपदेश आचार प्ररूपणा करके रत्नत्रयीका आचरण करवाते हैं, और ज्ञानोपाशन सम्यगदर्शन धर्मोपाशनादिकों करके श्रद्धा करने वाले ओर अनुज्ञा मांगनेवासे अन्योको अनुज्ञा देते हैं, इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तिगर्जित रत्नत्रय करण कारण

अनुमतिवाले ब्राह्मणोंको जिनोपवीतमें तीन अग्र. । और द्वात्रियोंको आप रत्नत्रयका आचरण करणा. और निजशक्तिसं न्याप्रवृत्तिकरके अन्योसें आचरण करावणा योग्य है. परंतु तिन द्वात्रियोंको अन्य जनोंको अनुज्ञा देनी योग्य नहीं है. क्योंकि. वे ठकुराश्वाले प्रभुहोंनेसें अन्योविषे नियमादिकी अनुज्ञा नहीं देतेहैं इसवास्ते द्वात्रियोंको जिनोपवीतमें दो अग्र. । वैश्योंने ज्ञानशक्तिकरके सम्यक्त्व धृतिकरके उपासकाचारशक्तिकरके स्वयमेव रत्नत्रय आचरणा । तिन वैश्योंको असामर्थ्य होनेसें अनुपदेशक होनेसें रत्नत्रयका करावणा और अनुमति का देणा योग्य नहीं है; इसवास्ते वैश्योंको जिनोपवीतमें एक अग्र. । श्रूद्रोंको तो ज्ञानदर्शनचारित्र रूप रत्नत्रयके करणेमें आपही अशक्त है तो करावणा और अनुमतिका देणा तो दूरही रहा. तिनोंको अधमजाति होनेसें, निःसत्व होनेसें, अज्ञान होनेसे, तिनोंको जिनाज्ञानरूप उत्तरीयका धारण है । तिनसें अपर वणिगादिकोंको देवगुरुधर्मकी उपासनाके अवसरमें मात्र जिनाज्ञानरूप उत्तरासंग मुद्राहै. ॥ जिनोपवीतका स्वरूप यह है. ॥ स्तनांतर मात्रको चौराशी गुणा करिये तब एकसूत्र होवे तिसको त्रिगुणा करणा, तिसको जी त्रिगुणा करके वर्त्तन करणां (बटना) ऐसें एक तंतु हुआ

इसी रीतिसें दो तंतु और योजन करिये, तबतीनो तंतु मिलाके एक अग्र होवे है. । तहां ब्राह्मणको तीन अग्र, क्षत्रियोको दो और वैश्योंको एक. । परम तमें तो ऐसा कथन है ॥

॥ कृते स्वर्णमयं सूत्रं त्रेतायां रौप्यमेव च ॥

छापरे ताम्रसूत्रं च कलौ कर्पासमिष्यति ॥ १ ॥

कृतयुगमें स्वर्णमयसूत्र, त्रेतायुगमें रूपेका, छाप रयुगमें तांबेका और कलियुगमें कर्पासका यज्ञोपवीत करना ॥ ” परंतु जिनमतमें तो, सर्वदा ब्राह्मणोंको सौवर्णसूत्र, और क्षत्रियवैश्योंको सर्वदा कार्पाससूत्र ही है. ॥ इतिजिनोपवीतयुक्तिः ॥

अथ उपयनविधि कहते हैं:—उपनीयते वर्णक मारोहयुक्तिकरके प्राणीको पुष्टिको प्राप्त करिये; इत्युपनयनं. । श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, मृगशिर, अश्विनी, रेवती, स्वाति, चित्रा, पुनर्वसू. । तथा च । मृगशिर, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, स्वाति, चित्रा, पुष्य, अश्विनी, इन नक्षत्रोंमें मेखलाबंध, और मोक्ष करणा, आचार्यवर्य कहतें हैं. । गर्जाधानसें वा जन्मसें आठमे वर्षमें ब्राह्मणोंको मौंजीबंध उपनयनका प्रारंभ कथन करते हैं, क्षत्रियोंको इग्यारह (११) वर्षमें, और वैश्योंको बारमे वर्षमें. । वर्ण धिपके बलवान हुए उपनीतिक्रिया हितकारिणी होती है, अथवा सर्व वर्णोंको गुरु चंद्र सूर्य वद

वान् हुष, हित है. । बृहस्पतिवार होवे, बृहस्पति बलमान् होवे, वा केंद्रगत होवे, तो, द्विजोंको उ पनयन श्रेष्ठ है. और बृहस्पति तथा शुक्र नीच घरमें होवे, शत्रुके घरमें होवे, वा पराजित होवे तो श्रवणविधीमें स्मृतिकर्म हीन होवे । लग्नमें बृहस्पति होवे, त्रिकोणमें शुक्र होवे, और शुक्रांशमें चंद्रमा होवे तो जैनवेदवित् होवे; शुक्रसहित सूर्य लग्नमें शनिके अंशमें स्थित होवे, तदा सीखा हुआ विद्या भूल जावे ऐसा कृतघ्न हांवे. । केंद्रमें बृहस्पति होवे तो, स्वअनुष्ठानमें रक्त होवे, प्रवरमति युत होवे. शुक्र होवे तो, विद्या सौख्य अर्थ युक्त होवे, बुध होवे तो, अध्यापक होवे, सूर्य होवे तो, राजाका सेवक होवे, मंगल होवे, तो, शूरवीर होवे. चंद्रमा होवे तो, व्यापारी होवे. शनि होवे तो, नीच जातीका सेवक होवे. । शनिके अंशमें मूर्खता उदय होवें, सूर्यके जागमें क्रूरपणा होवे, मंगलके अंशमें पाप बुद्धि होवे, चंद्रांशमें अतिजरुषणा होवे, बुधांशमें अति पटुपणा होवे, गुरु शुक्रके जागमें सुझपणा होवे, सूर्य सहित बृहस्पति होवे तो निर्गुण होवे, अर्थ हीन होवे, मंगल सहित सूर्य होवे, तो क्रूर होवे, बुध सहित होवे तो पटु होवे, शनि सहित होवे तो आलसु और निर्गुण होवे, चंद्र सहित शुक्र होवे तो अर्थहीन जाणना, पूर्वोक्त निर्दोष नक्षत्रों

में मंगलविना अन्य वारोमे दिनशुद्धीमे, शुक्लग्रह युक्त लग्नमे, विवाह वत् त्याज नक्षत्रदिन मासा दिकको वर्जके, ग्रह निर्मुक्त पांचमें व्रत आचरे.

प्रथम यथा संपत्ति करके उपनेय (जिनोपवीत लेनेवाले) पुरुषकों सात, नव, पांच, वा तीन दिनतक सतैल निषेक स्नान (पीछी मर्दन) करावे. तदपीठे लग्नदिनमें गृहस्थ गुरु तिसके घरमें ब्राह्म्य मूहुर्तमें पौष्टिक करे. तद नंतर उपनेयके शिरपर शिखा वर्जके मुं मन करावे, पीठे वेदी स्थापन करे. तिसके मध्यमे चोकी (बाजोट) स्थापन करे, वेदी प्रतिष्ठा विवाहाधिकारसें जाणनां. बाजोटके उपर समव सरणकी रीति मुज ब चोमुख (चारजिन बिंब) स्थापन करना, तिन की पूजा करके गृहस्थ गुरु, जिसने श्वेतवस्त्र पहि नाहे, वस्त्रका उत्तरासंग करा हे, अक्षत श्रीफल सुपारी हाथमे लिएहें, ऐसे उपनेयकों समवसरण कों तीन प्रदक्षणा करावे, तदपीठे गुरु उपनेयकों वामे पासे स्थापके पश्चिमदिशाके सन्मुख जिसका मुखहे तिस जिन बिंबके सन्मुख बैठके प्रथम ऋष ज देवके स्तोत्र सहित शक्रस्तव (नमुश्रुणं) पढे फेर तीन प्रदक्षिणा करके उत्तराजिमुख जिनबिंबके सन्मुख तेसेंहिं शक्रस्तव पढे. एसेंहि त्रिप्रदक्षिणां तरित पूर्वजिमुख, दक्षिणा जिमुख जिन बिंबोके आगेजी शक्रस्तव पढे. मंगल गीत वाजित्रादिकों

का तिसवखत विस्तार रखणा. उन वखत आचार्य उपाध्याय साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप श्री सकल संघकों एकत्र करना । पीठे प्रदक्षिणा शक्र स्तव पाठके अनंतर गृहस्थ गुरु उपनयनके प्रारंभ वास्ते जैन वेद मंत्रका उच्चार करे. उपनेय (जिनोप वीतलेनेवाला) अपने हाथमें दुर्वा फलादीकसे पूर्ण हस्त अंजलिकरके खरुाखरुासुने.

उपनयारंभ जैनवेद मंत्रोयथा.

ॐ अर्हं अर्हज्योनमः, सिद्धेज्योनमः, आचार्ये ज्योनमः, उपाध्यायेज्योनमः, साधुज्योनमः, ज्ञानायनमः, दर्शनायनमः, चारित्रायनमः, संयमायनमः, सत्यायनमः, शौचायनमः, ब्रह्मचर्यायनमः, आर्किचन्यायनमः, तपसेनमः, शमायनमः, मार्दवायनमः, आर्जवायनमः, मुक्तयेनमः, धर्मायनमः, संघायनमः, सैध्धांतिकेज्योनमः, धर्मोपदेशकेज्योनमः, वादिलब्धियोनमः, षष्ठांग निमित्तेज्योनमः, तपस्वीज्योनमः, विद्याधरेज्योनमः, इहलोकसिद्धेज्योनमः, कविज्योनमः, लब्धियोनमः, ब्रह्मचारीज्योनमः, निष्परिग्रहेज्यो नमः । दयालुज्यो नमः, । सत्यवादिज्यो नमः । निःस्पृहेज्यो नमः । एतेज्यो । नमस्कृत्यायं प्राणी प्राप्तमनुष्यजन्मा प्रविशति वर्णक्रमं अर्हं ॐ ॥,

ऐसे वेदमंत्रका उच्चार करके फिर चारों दिशामें युगादिदेव

स्तवसंयुक्त शक्रस्तव पाठ करे । तिस दिनमें, जल जवान्न चोजन करके आचाम्लका प्रत्याख्यान उपनेयको करावे । तदपीठे उपनेयको वामे पासे स्थापके सर्वतीर्थोदकोंकरके अमृताजलमंत्रकरके कुशाग्रोंसे सिंचन करे. ।

तदनंतर परमेष्ठिमंत्र पढके.

“ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुज्यः ”

ऐसा कहके, जिन प्रतिमाके आगे उपनेयको पूर्वाभिमुख बैठावे; तदपीठे गृहीगुरु, चंदनमंत्रकरके अजिमंत्रण करे. ॥ चंदनमंत्रो यथा ॥

“ ॥ ॐ नमो जगवते, चंद्रप्रजजिनेन्द्राय, शशांक हारगोदीरधवलाय, अनंतगुणाय, निर्मलगुणाय, जव्यजनप्रबोधनाय, अष्टकर्ममूलप्रकृतिसंशोधनाय, केवलालोकावलोकितसकललोकाय, जन्मजरामरण विनाशनाय सुमंगलाय, कृतमंगलाय, प्रसीद जग वन् इह चंदनेनामृताश्रवणं कुरु २ स्वाहा ॥ ”

इस मंत्रकरके चंदनको मंत्रके हृदयमें जिनो पर्वीतरूप, कटिमें मैखलारूप और ललाटमें तिल करूप, रेखाकरे, तदपीठे उपनेय “ नमोस्तु २ ऐसैं कहता हुआ, गुरुके चरणोंमें परुके खम्हा होके हाथ जोडके ऐसैं कहै. ।

“ ॥ जगवन् वर्णरहितोऽस्मि । आचाररहितोऽस्मि । मंत्ररहितोऽस्मि । गुणरहितोऽस्मि । धर्मरहितोऽस्मि ।

शौचरहितोऽस्मि । ब्रह्मरहितोऽस्मि । देवर्षिपितृति
थिकर्मसु नियोजय मां ॥”

ऐ से कहकर फिर “नमोस्तु २ ” ऐसे कहता
हुआ, गुरुके चरणोंमें पड़े; गुरु जी. इस मंत्रको पढ़के
उपनेयको चोटीसे पकड़के खड़ा करे । मंत्रो यथा ॥

“ॐ अहं देहिन् निमग्नोऽसि जवाणवे तत्कर्षति
त्वां जगवतोऽर्हतः प्रवचनैकदेशरज्जुना गुरुस्तदुत्तिष्ठ
प्रवचनादानाय श्रद्धाधाहि अहं ॐ ॥ ”

ऐसे पढ़के उपनेयको खड़ा करके अर्हतप्रतिमाके
आगे पूर्वाग्निमुख खड़ा करे. तदपीठे गृहीगुरु, त्रितं
तुवर्त्तित—तीन तंतुकी बुणी, एकाशीति (८१) हाथ
प्रमाण, मुंजकी मेखलाको अपने दोनों हाथोंमें
लेके, इस वेदमंत्रको पढ़े.

“ ॥ ॐ अहं आत्मन् देहिन् ज्ञानावरणेन बद्धो
ऽसि । दर्शनावरणेन बद्धोऽसि । वेदनीयेन बद्धोऽसि ।
मोहनीयेन बद्धोऽसि । आयुषा बद्धोऽसि । नाम्ना
बद्धोऽसि । गोत्रेण बद्धोऽसि । अंतरायेण बद्धोऽसि
कर्माष्टकेन प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैश्च बद्धोऽसि ।
तन्मोचयति त्वां जगवतोर्हतः प्रवचनचेतना तद्गु-
ह्यस्व मामुहःमुच्यतां तव कर्मबंधनमनेन मेखलाबं-
धेन अहं ॐ ॥ ”

ऐसा पढ़के उपनेयकी कटिमें नवगुणी मेखला
को बांधे । तदपीठे उपनेय ‘नमोस्तु २’ कहता

हुआ, गृहीगुरुके पगोंमें पड़े । मेखलाको एकाशी (८१) हाथपणा विप्रको एकाशीतंतुगर्ज जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, क्षत्रियको चौपन (५४) हाथ तावत्प्रमाणतंतुगर्ज जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, और वैश्यको सत्ताइस (१७) हाथ तर्जसूत्रसूचनके वास्ते हैं । ब्राह्मणको नवगुणी क्षत्रियको ठगुणी और वैश्यको त्रिगुणी, मेखला बांधनी । तथा मौंजी, कौपीन, जिनोपवीत, इनोंका पूजन, गीतादिमंगल, निशाजागरण, तिसके पूर्वदिनकी रात्रिमें करणा । मेखलाबंधनके पीठे फेर गृहस्थगुरु, उपनेयके विलस्त (वेंत) प्रमाण पृथुल (चौका) और तीन विलस्त प्रमाण दीर्घ (लंबा) कौपिन दोनों हाथोंमें लेके ॥

“ ॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् मतिज्ञानावरणेन श्रुतज्ञानावरणेन अवधिज्ञानावरणेन मनःपर्यायावरणेन केवलज्ञानावरणेन - इंद्रियावरणेन चित्तावरणेन आवृतोऽसि तन्मुच्यतां तवावरणमनेनावरणेन अर्हं ॐ ॥ ”

इस वेदमंत्रको पढ़ता हुआ, उपनेयके अंतःकक्षकों कौपीन पहरावे । तदपीठे उपनेय ‘ नमोस्तु १ ’ कहता हुआ, फिर जी गुरुके पगोंमें पड़े । फिर तीन १ प्रदक्षिणा करके चारों दिशामें शक्रस्तव पाठ करे ॥

तदनंतर लग्नवेलाके हुए गुरु, पूर्वोक्त जिनोपवीतको अपने हाथमें लेवे पीठे उपनेय फेर खमा होकर हाथ जोरके ऐसैं कहे ॥

“॥ जगवन् वर्णोऽक्षितोऽस्मि । ज्ञानोऽक्षितोऽस्मि । क्रियोऽक्षितो । तज्जिनोपवीतदानेन मां वर्णज्ञानक्रियासु समारोपय ॥”

ऐसैं कहके ‘नमोस्तु १, कहता हुआ गुरुके पगों में पड़े गुरु फिर पूर्वोक्त उठापनमंत्रकरके तिसको उठाके खमा करे । तदपीठे गुरु दक्षिण हाथमें जिनोपवीत रखके ॥

“॥ ॐ अहं नवब्रह्मगुप्तीः स्वकरणकारणानुमती ऊरियेः तदक्षयमस्तु ते व्रतं स्वपरतरणतारणसमर्थो जव अहं ॐ ॥” क्षत्रियको

“॥ करणकारणाज्यां धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो जव ॥” वैश्यको

“॥ करणेन धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो जव ॥” शेषं पूर्ववत् ॥

इस वेदमंत्रकरके पंच परमेष्ठिमंत्र पढ़ता हुआ उपनेयके कंठमें जिनोपवीत स्थापन करे । पीठे उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके ‘नमोस्तु १’ कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे. गुरु जी “निस्तारगपारगो जव” ऐसा आशीर्वाद कहे । तदपीठे गुरु पूर्वाभिमुख होके, जिनप्रतिमाके आगे शिष्यको

वामेपासे बैठाके, सर्व जगत्में सार, महा आगम रूप हीरोदधिका माखण, सर्ववांछितदायक, कल्प दुम कामधेनु चिंतामणिके तिरस्कारका हेतु, निमेषमात्र स्मरण करनेसे मोक्षका दाता, ऐसे पंचपरमेष्ठिमंत्रको गंधपुष्पपूजित शिष्यके दक्षिणकानमें तीनवार सुणावे पीठे तीनवार तिसके मुखसे उच्चारण करावे ॥ यथा ॥

“ ॥ नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवक्षायाणं । नमो लोए सब साहूणं ॥ ” पीठे उपनेयको मंत्रका प्रज्ञाव सुणावे ॥ तद्यथा ॥

सोलससु अस्करेसु, इक्किक्कं अस्करं जगुज्जोअं ॥
जवसयसहस्स महणो, जम्मि छिउ पंच नवकारो ॥ १ ॥
अंजेइ जलं जलणं चितियमत्तो इ पंच नवकारो ॥
अरिमारिचोरराउलघोरुवसगं पणासेइ ॥ २ ॥

एकत्र पंचगुरुमंत्रपदाक्षराणि । विश्वत्रयं पुनरनंतगुणं परत्र ॥ यो धारयेत्किल तुलानुगतं ततोऽपि । वंदे महागुरुतरं परमेष्ठिमंत्रम् ॥ ३ ॥ ये केचनापि सुखमाद्यरका अनंता । सत्सर्पिणीप्रनृतयः प्रययुर्विवर्त्ताः ॥ तेष्वप्ययं परतरः प्रथितः पुराऽपि । लब्ध्वैनमेव हि गताः शिवमत्र लोकाः ॥ ४ ॥ जग्मुर्जिनास्तदपवर्गपदं यदैव । विश्वं वराकमिदमत्र कथं विनास्मान् ॥ एतद्विलोक्य जुवनोऽरुणाय धीरैः ।

मंत्रात्मकं निजवपुर्निहितं तदाऽत्र ॥ ५ ॥ इन्द्रिवा
करतया रविरिन्द्ररूपः । पातालमंबरमिलासुरलोक
एव ॥ किञ्जद्विपतेन बहुना जुवनत्रयेऽपि तन्नास्ति
यन्न विषमं च समं च तस्मात् ॥ ६ ॥ सिद्धांतोदधि
निर्मथान्नवनीतमिवोद्धतम् ॥ परमेष्ठिमहामंत्रं धार
येत् हृदि सर्वदा ॥ ७ ॥ सर्वपातकहर्त्तारं सर्ववांछि
तदायकम् ॥ मोक्षारोहणसोपाने मंत्रे प्राप्नोति पुण्य
वान् ॥ ८ ॥ धार्योयं जवता यत्नात् न देयो यस्य
कस्यचित् ॥ अज्ञानेषु श्रावितोयं शपत्येव न संशयः
॥ ९ ॥ ❀ न स्मर्त्तव्योऽपवित्रेण न जने नाऽन्यसं
श्रये ॥ नाऽविनीतेन नो दीर्घशब्देनाऽपि कदाचन
॥ १० ॥ न बालानां नाऽशुचीनां नाऽधर्म्माणां न दुर्द
शाम् ❀ न प्युतानां न दुष्टानां दुर्ज्ञातीनां न कुत्र
चित् ॥ ११ ॥ अनेन मंत्रराजेन नूयास्त्वं विश्वपू
जितः ॥ प्राणांतेऽपि परित्यागमस्य कुर्यान्न कुत्रचित्
॥ १२ ॥ गुरुत्यागे जवेदःखं मंत्रत्यागे दरिद्रता ॥ गुरु
मंत्रपरित्यागे सिद्धोऽपि नरकं व्रजेत् ॥ १३ ॥ इति

* न स्मर्त्तव्योपचित्तेन न शठेनान्यसंश्रये इति पुस्तकांतरे ॥
तथा अन्येषु श्राद्धदिनकृतश्राद्धविधिकौमुदीपञ्चाशकादिषु शास्त्रे
ष्वेवमुक्तं यथा सा काप्यवस्था नास्ति यस्यां नमस्कारो न
स्मर्त्तव्य इति ॥

* नाऽपूतानां न दुष्टानां दुर्ज्ञानानां न कुत्रचित् । इति
पुस्तकांतरे ॥

ज्ञात्वा सुगृहीतं कुर्या मंत्रममुं सदा ॥ सेत्स्यंति
सर्वकार्याणि तवास्मान्मंत्रतो ध्रुवम् ॥ १४ ॥

गुरुने ऐसे शिक्षा दिया हुआ उपनेय तीन प्रद
क्षिणा करके “नमोस्तु २” ऐसे कहता हुआ,
गुरुको नमस्कार करे. पीछे गुरुको स्वर्णका जिनोप
वीत, सुवर्णमौजी, श्वेत वस्त्र रेशमी स्वसंपदानुसारें
देवे. और सर्वसंघको जी तांबूल वस्त्रादि देवे. ॥
इत्युप नयने व्रतबंधविधिः ॥

अथ व्रतादेशविधि लिख्यते हैं. ॥ तिसही अव
सरमें, तिसही संघके संगममें, तिसही गीतवाजं
त्रादि उत्सवमें, तिसही वेदचतुष्किकामें प्रतिमास्था
पन संयोगमें, व्रतादेशका आरंभ करे. तिसका यह
क्रम है. । गृहस्थगुरु, उपनीत पुरुषके कार्पास रेशमी
अंतरीय (उत्तरीय) वस्त्र दूर करके मौंजी, जिनोपवीत
कौपीन, येह वस्तुयों तिसकी देहमें तैसेही स्थापके,
तिसके ऊपर कृष्णसाराजिन (कालामृगचर्म) वा,
वृद्धके वटकलका वस्त्र पहिरावे. । हाथमें पलाशका
दंदा देवे. और इस मंत्रको पढे.

“ ॥ ॐ अहं ब्रह्मचार्यसि । ब्रह्मचारिवेषोऽसि
अवधिब्रह्मचर्योऽसि । धृतब्रह्मचर्योऽसि । धृताजिनदं
नोऽसि । बुद्धोऽसि । प्रबुद्धोऽसि । धृतसम्यक्त्वोऽसि
दृढसम्यक्त्वोऽसि । पुमानसि । सर्वपूज्योऽसि । तद
वधिब्रह्मव्रतं आगुरुनिदेशं धारयेः अहं ॐ ॥ ”

ऐसें पढके व्याघ्रचर्ममय आसनके ऊपर, वा कद्वित काष्टमय आसनके ऊपर उपनीतकों बिठखावे. तिसके दक्षिण हाथकी प्रदेशिनी अंगुलीमें दर्जसहित कांच नमयी षोरुश १६ मासे प्रमाण (पांच गुंजाका एक मासा जाणना) पवित्रिका मुद्रा पहरावे. । पवित्रिका परिधापनमंत्रो यथा ॥

“पवित्रं दुर्लभं लोके सुरासुरनृवह्वजम् ॥

सुवर्णं हंति पापानि, मालिन्यं च न संशयः॥ १ ॥

तदपीठे उपनीत, मुखसें पंचपरमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, गंध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यकरके चारों दिशामें जिनप्रतिमाको पूजे । तदपीठे जिनप्रतिमाको प्रदक्षिणाकरके और गुरुको प्रदक्षणा करके ‘नमोस्तु १’ कहता हुआ, हाथ जोरुके ऐसें कहे ॥ “जगवन् उपनीतोहं” गुरु कहे “सुष्ठूपनीतो जव ।” फेर उपनीत ‘नमोस्तु’, कहता हुआ नमस्कार करके कहे । “कृतो मे व्रतबंधः ।” गुरु कहे । “सुकृतोऽस्तु ।” फेर ‘नमोस्तु’ कहके नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् जातो मे व्रतबंधः ।” गुरु कहे । “सुजातोऽस्तु ।” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जातोऽहं ब्राह्मणः । क्षत्रियो वा । वैश्यो वा ।” गुरु कहे । “दृढव्रतो जव । दृढसम्यक्त्वो जव ।” फेर शिष्य नमस्कार करके कहे । “जगवन् यदि त्वया कृतो ब्राह्मणोऽहं तदादिश

कृत्यं । ” गुरु कहे अर्हजिरा दिशामि । ” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुतिगर्ज रत्नत्रयंममादिष्टं । ” गुरु कहे । “आदिष्टं । फेर नमस्कार करके शिष्य । “जगवन् नवब्रह्मगुतिगर्ज रत्नत्रयं मम समादिश । ” गुरु कहे । “समादिशामि । ” फेर नमस्कार करके शिष्य जगवन् नवब्रह्मगुतिगर्ज रत्नत्रयं मम समादिष्टं । ” गुरु कहे । “समादिष्टं । ” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुतिगर्ज रत्नत्रयं ममानुजानीहि । ” गुरु कहे । “अनुजानामि ” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुतिगर्ज रत्नत्रयं ममानुज्ञातं । ” गुरु कहे । “अनुज्ञातं । ” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुतिगर्ज रत्नत्रयं मया स्वयं करणीयं । ” गुरु कहे । “ करणीयं । ” फेर नामस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुतिगर्ज रत्नत्रयं मया अन्यैः कारयितव्यं । ” गुरुकहे “कारयितव्यं” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुतिगर्ज रत्नत्रयं कुर्वतोऽन्ये मया अनुज्ञातव्याः ” गुरु कहे । “ अनुज्ञातव्याः ” क्वत्रियकों यह विशेष है ‘ जगवन् अहं क्वत्रियो जातः ’ आदेश समादेश दोनों कहने, अनुज्ञा न कहनी. करणकारणमें ‘ कर्त्तव्यं ’ ‘ कारयितव्यं ’ ऐसे कहना, ‘ अनुज्ञातव्यं ’ ऐसे न कहना. । और वैश्यको

आदेश ही कहना, समादेश अनुज्ञा यह दोनों न कहने. । 'कर्त्तव्यं' कहना, 'कारायितव्यं' अनुज्ञा तव्यं 'यह न कहने. । तदपीठे उपनीत हाथ जोरु के कहे. । 'हे जगवन् ! आदिश्यतां व्रतादेशः ।' तब गुरु आदेश करे अर्थात् व्रतादेश कथन करे. । तहां प्रथम ब्राह्मणप्रति व्रतादेश कहते हैं. यथा ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्ठिमहामंत्रो विधेयो हृदये सदा ॥
निर्ग्रथानां मुनीन्द्राणां कार्यं नित्यमुपासनम् ॥ १ ॥
त्रिकालमर्हत्पूजा च सामायिकमपि त्रिधा ॥
शक्रस्तवैस्सप्तवेलं वंदनीया जिनोत्तमाः ॥ २ ॥
त्रिकालमेककालं वा स्नानं पूतजलैरपि ॥
मद्यं मांसं तथा क्षौद्रं तथोदुंबरपंचकम् ॥ ३ ॥
आमगोरससंपृक्तं द्विदलं पुष्पितौदनम् ॥
संधानमपि संसक्तं तथा वै निशि जोजनम् ॥ ४ ॥
शूद्रान्नं चैव नैवेद्यं नाश्रीयान्मरणेऽपि हि ॥
प्रजार्थे गृह्वासेऽपि संजोगो न तु कामतः ॥ ५ ॥
आर्यवेदचतुष्कं च पठनीयं यथाविधि ॥
कर्षणं पाशुपादयं च सेवावृत्तिं विवर्जयेः ॥ ६ ॥
सत्यं वचः प्राणिरक्षामन्यस्त्रीधनवर्जनम् ॥
कषायविषयत्यागं विदध्याः शौचज्ञागपि ॥ ७ ॥
प्रायः क्षत्रियवैश्यानां न ज्ञोक्तव्यं गृहे त्वया ॥
ब्राह्मणानामार्हतानां ज्ञोजनं युज्यते गृहे ॥ ८ ॥

स्वज्ञातेरपि मिथ्यात्ववासितस्य पलाशिनः ॥
 न प्रोक्तव्यं गृहे प्रायः स्वयंपाकेन प्रोजनम् ॥ ९ ॥
 आमामन्नमपि नीचानां न ग्राह्यं दानमंजसा ॥
 व्रमता नगरे प्रायः कार्यः स्पर्शो न केनचित् ॥ १० ॥
 उपवीतं स्वर्णमुद्रां नांतरीयमपि त्यजेः ॥
 कारणांतरमुत्सृज्य नोष्णीषं शिरसि व्यधाः ॥ ११ ॥
 धर्मोपदेशः प्रायेण दातव्यः सर्वदेहिनाम् ॥
 व्रतारोपं परित्यज्य संस्कारान् गृहमेधिनाम् ॥ १२ ॥
 निर्ग्रन्थगुर्वनुज्ञातः कुर्याः पंचदशापि हि ॥
 शांतिकं पौष्टिकं चैव प्रतिष्ठामर्हदादिषु ॥ १३ ॥
 निर्ग्रन्थानुज्ञया कुर्याः प्रत्याख्यानं च कारयेः ॥
 धार्यं च दृढसम्यक्त्वं मिथ्याशास्त्रं विवर्जयेः ॥ १४ ॥
 नानार्थदेशे गंतव्यं त्रिशुद्ध्याशौचमाचरेः ॥
 पालनीयस्त्वया वत्स व्रतादेशो नवावधिः ॥ १५ ॥

॥ इतिब्राह्मणव्रतादेशः ॥

(जाषार्थः) परमेष्ठिमहामंत्र सदा हृदयमें धारण
 करना, निर्ग्रन्थ मुनीन्द्रोकी नित्य उपासना करनी।
 तीन कालमें अरिहंतकी पूजा करनी, तीनवार
 सामायिक करनी, शक्रस्तवमें सातवार चैत्यवंदना
 करनी. ठाने हुए शुद्ध जलसें त्रिकालमें वा, एकका
 लमें स्नान करना, मदिरा, मांस, मधु, माखण
 पांच जातिके उडुंबरफल, आमगोरससंयुक्त अर्थात्

कच्चे विना गरम करे गोरस दूध दही ठाठके साथ
 छिदल अन्न, जिसपर नीली फूली आजावे सो अन्न,
 जीवोत्पत्तिसंयुक्त संधान अर्थात् तीन दिन उपरां
 तका आचार, रात्रिजोजन, शूद्रका अन्न, देवके
 आगे चढा नैवेद्य इन पूर्वोक्त वस्तुयोंको मरणांतमें
 जी न खाना । संतानोत्पत्तिकेवास्ते गृहवासमें स्त्रीसैं
 संजोग करना न तु कामासक्त होके । चारों आर्य
 जैन वेद विधिसैं पढने खेती, पशुपालपणा और सेवा
 वृत्ति (नौकरी) येह नही करने । शुचिमान् होके
 सत्य वचन बोलना, प्राणिकी रक्षा करनी, अन्य
 स्त्री और अन्य धन येह वर्जने, कषाय विषयको
 त्यागने, प्रायः कृत्रिय और वैश्योंके घरमें तेरे जो
 जन न करना, आर्हत् ब्राह्मणोंके घरमें जोजन कर
 ना तुजको योग्य है । अपनी झातिका जो मिथ्या
 त्ववासित होवे, और मांसाहारी होवे तिसके घरमें
 जी जोजन नही करणा । प्रायः आपही पकाके
 जोजन करना । कच्चे अन्नका जी दान नीचोंके हाथ
 का न ग्रहण करणा, नगरमें त्रमण करतां किसीका
 जी प्रायः स्पर्श न करना । उपवीत, स्वर्णमुद्रा और
 अंतरीय, इनको त्याग न करने. कारणांतरको वर्जके
 शिरके ऊपर उष्णीष (पगमी) धारण न करना ।
 प्रायः सर्व मनुष्योंको धर्मोपदेश देना, व्रतारोपको
 वर्जके निर्ग्रथ गुरुकी आज्ञासैं पंचदश १५ संस्कार

गृहस्थांको करने तथा शांतिक, पौष्टिक, जिनप्रति
माकी प्रतिष्ठादि करावने । निर्ग्रन्थकी आज्ञासैं प्रत्या
ख्यान करना, और अन्यको करावना; सम्यक्त्वको
दृढ धारण करना, मिथ्याशास्त्रकी श्रद्धा वर्जनी ।
अनार्य देशमें जाना नहीं, तीनों शुद्धियां गरके
शौच आचरण करना; हे वत्स ! तैनें पूर्वोक्त व्रता
देश जबतक संसारमें रहे तबतक पालना ॥ १५ ॥
इतिब्राह्मणव्रतादेशः ॥ अथक्षत्रियव्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्ठिमहामंत्रः स्मरणीयो निरंतरम् ॥
शक्रस्तवैस्त्रिकाक्षं च वंदनीया जिनेश्वराः ॥ १ ॥
मद्यं मांसं मधु तथा संधानोडुंबरादि च ॥
निशि जोजनमेतानि वर्जयेदतियत्नतः ॥ २ ॥
दुष्टनिग्रहयुक्तादिवर्जयित्वा वधोगिनाम् ॥
न विधेयः स्थूलमृषावादस्त्यक्तव्य एव च ॥ ३ ॥
परनारीं परधनं त्यजेदन्यविकत्थनम् ॥
युक्त्यासाधूपासनं च द्वादशव्रतपालनम् ॥ ४ ॥
विक्रमस्थाविरोधेन विधेयं जिनपूजनम् ॥
धारणं चित्तयत्नेन स्वोपवीतांतरीययोः ॥ ५ ॥
लिङ्गिनामन्यविप्राणामन्यदेवालयेष्वपि ॥
प्रणामदानपूजादि विधेयं व्यवहारतः ॥ ६ ॥
सांसारिकं सर्वकर्म धर्मकर्मोपि कारयेत् ॥
जैनविप्रैश्च निर्ग्रन्थैर्दृढसम्यक्त्ववासितः ॥ ७ ॥

रणे शत्रुसमाकीर्णे धार्यो वीररसो हृदि ॥
 युद्धे मृत्युञ्जयं नैव विधेयं सर्वथापि हि ॥ ८ ॥
 गोब्राह्मणार्थे देवार्थे गुरुमित्रार्थ एव च ॥
 स्वदेशजंगे युद्धेऽत्र सोढव्यो मृत्युरप्यलम् ॥ ९ ॥
 ब्राह्मणक्षत्रियोर्नैव क्रियाज्ञेदोस्ति कश्चन ॥
 विहायान्यव्रतानुज्ञाविद्यावृत्तिप्रतिग्रहान् ॥ १० ॥
 दुष्टनिग्रहणं युक्तं लोभं क्रूमिप्रतापयोः ॥
 ब्राह्मणव्यतिरिक्तं च क्षत्रियोदानमाचरेत् ॥ ११ ॥
 ॥ इति क्षत्रियव्रतादेशः ॥

अथ क्षत्रियव्रतादेश कहते हैं. ॥ परमेष्ठिमहा
 मंत्र निरंतर स्मरण करना. शक्रस्तवोँकरके त्रिकाल
 जिनेश्वरको वंदन करना. । मद्य, मांस, मधु, संधा
 न, पांच उडुबरादि, (आदिशब्दसें अमगोरससंयु
 क्त छिदल, पुष्पितौदन,) और रात्रिजोजन, इनको
 यत्नसें वर्जें । दुष्टका निग्रह करना, और युद्धादि
 वर्जके प्राणियोका बध न करना, स्थूलमृषावाद न
 बोलना, परस्त्रीका और परधनका त्याग करना; पर
 की निंदाका त्याग करे, युक्तिसें साधुयोंकी उपास
 ना करे, और बारां व्रत पालन करे । अपनी शक्ति
 अनुसार जिनपूजन करना. चित्तयत्नसें अर्थात् उप
 योगसें स्वउपवीत, और अंतरीयको धारण करना ।
 लिंगियोंको, अन्य ब्राह्मणोंको, और अन्यदेवालयों
 में जी, प्रणाम दान पूजादि काम पड़े तो, लोक

व्यवहारसें करने । संसारिक सर्व कर्म जैनब्राह्मणों और धर्म कर्म निर्ग्रंथों करके करावे. दृढसम्यक्त्वकी वासनावाला होवे । शत्रुयोंकरके समाकीर्णरणमें हृदयके विषे वीररस धारण करना, युद्धमें मृत्युका जय सर्वथा नहीं करना । गौ ब्राह्मणके अर्थें, देवके अर्थें, गुरु और मित्रके अर्थें, स्वदेशके जंग होते, और युद्धमें, मृत्यु जी सहन करना योग्य है । ब्राह्मण और क्षत्रियकी क्रियामें कुछ जी जेद नहीं है, परं अन्यको व्रतअनुज्ञा देनी विद्यावृत्ति, दान लेनेमें जेद है. दुष्टोंका निग्रह करना योग्य है, चूमि और प्रतापका लोचन करना, ब्राह्मणसें व्यतिरिक्त क्षत्रिय दान आचरण (गृहण) करे ॥११॥ इति क्षत्रियव्रतादेशः ॥ अथ वैश्यव्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

त्रिकालमर्हत्पूजा च सप्तबेलं जिनस्तवः ॥
 परमेष्ठिस्मृतिश्चैव निर्ग्रंथगुरुसेवनम् ॥ १ ॥
 आवश्यकं द्विकालं च द्वादशव्रतपालनम् ॥
 तपोविधिर्गृहस्थाहो धर्मश्रवणमुत्तमम् ॥ २ ॥
 परनिंदावर्जनं च सर्वत्राप्युचितक्रमः ॥
 वाणिज्यपाशुपाट्याज्यां कर्षणेनोपजीवनम् ॥ ३ ॥
 सम्यक्त्वस्थापरित्यागः प्राणनाशेऽपि सर्वथा ॥
 दानं मुनिज्य आहारपात्राढादनसन्ननाम् ॥ ४ ॥

कर्मादानविनिर्मुक्तं वाणिज्यं सर्वमुत्तमम् ॥

उपनीतेन वैश्येन कर्त्तव्यमिति यत्नतः ॥ ५ ॥

॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥

अथ वैश्यव्रतादेश कहते हैं ॥ त्रिकाल अर्हत् पूजा करनी, सातवार जिनस्तव चैत्यवंदन करना, पंचपरमेष्ठिमंत्रका स्मरण करना, निर्ग्रथ गुरुकी सेवा करनी. । दो कालमें (प्रातः कालमें और सायं कालमें) आवश्यक (प्रतिक्रमणादि) करना. बारां व्रत पालने, गृहस्थोचित तपोविधि करना, उत्तम धर्म श्रवण करना, परकी निंदा वर्जनी, सर्वत्र उचित काम करना, वाणिज्य, पशुपालन और खेती करके आजीविका करनी. । सर्वथाप्रकारे प्राणोंका नाश होवे तो जी, सम्यक्त्व नहीं त्यागना; मुनियोंको अहार, पात्र, वस्त्र, मकान (उपाश्रय) का दान करना. । कर्मादानसें रहित सर्व उत्तम वाणिज्य (व्यापार) करना, उपनीत वैश्यको ये पूर्वोक्त यत्नसें करणे योग्य है. ॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥ अथ चातुर्वर्ण्यस्य समानो व्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

निजपूज्यगुरुप्रोक्तं देवधर्मादिपालनम् ॥

देवार्चनं साधुपूजा प्रणामोविप्रलिङ्गिषु ॥ १ ॥

धनार्जनं च न्यायेन परनिंदाविवर्जनम् ॥

अवर्णवादो न क्वापि राजादिषु विशेषतः ॥ २ ॥

स्वसत्त्वस्यापरित्यागो दानं वित्तानुसारतः ॥
 आयोचितो व्ययश्चैव काले काले च ज्ञोचनम् ॥ ३ ॥
 न वासोऽल्पजले देशे नदीगुरुविवर्जिते ॥
 न विश्वासो नरेन्द्राणां नागरीयनियोगिनाम् ॥ ४ ॥
 नारीणां च नदीनां च लो जिनां पूर्ववैरिणाम् ॥
 कार्यं विना स्थावराणामहिंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥
 नासत्याहितंवाक् चैव विवादो गुरुजिर्न च ॥
 मातापित्रोर्गुरोश्चैव माननं परतत्त्ववत् ॥ ६ ॥
 शुभ्रशास्त्राकर्णनं च तथा नाऽज्जद्व्यज्जहणम् ॥
 अत्याज्यानां न च त्यागोप्यऽघात्यानामघातनम् ॥ ७ ॥
 अतिथौ च तथा पात्रे दीने दानं यथाविधि ॥
 दरिद्राणां तथांधानामापन्नारञ्जतामपि ॥ ८ ॥
 हीनाङ्गानां विकलानां नोपहासः कदाचन ॥
 समुत्पन्नक्षुत्पिपासाघृणाक्रोधादिगोपनम् ॥ ९ ॥
 अरिषड्वर्गविजयः पक्षपातो गुणेषु च ॥
 देशाचाराऽऽचरणं च जयं पापापवादयोः ॥ १० ॥
 उद्धाहः सदृशाचारैः समजात्यन्यगोत्रजैः ॥
 त्रिवर्गसाधनं नित्यमन्योन्याप्रतिबंधतः ॥ ११ ॥
 परिज्ञानं स्वपरयोर्देशकालादिचिंतनम् ॥
 सौजन्यं दीर्घदर्शित्वं कृतज्ञत्वं सलज्जता ॥ १२ ॥
 परोपकारकरणं परपीरुनवर्जनम् ॥
 पराक्रमः परिजवे सर्वत्र क्षांतिरन्यदा ॥ १३ ॥
 जलाशयश्मशानानां तथा दैवतसन्ननाम् ॥

निद्राहाररतादीनां संध्यासु परिवर्जनम् ॥ १४ ॥
 प्रवेशोल्लङ्घनं चैव तटे शयनमेव च ॥
 कूपस्य वर्जनं नद्याल्लङ्घनं तरणीं विना ॥ १५ ॥
 गुर्वासनादिशय्यासु तालवृक्षे कुञ्जूमिषु ॥
 डुर्गोष्ठिषु कुकार्येषु सदैवासनवर्जनम् ॥ १६ ॥
 न लङ्घनं च गर्त्तादिर्नडुष्टस्वामिसेवनम् ॥
 न चतुर्थीदुनग्रस्त्रीशक्रचापविलोकनम् ॥ १७ ॥
 हस्त्यश्वनखिनां चापवादिनां दूरवर्जनम् ॥
 दिवासंजोगकरणं वृक्षस्योपासनं निशि ॥ १८ ॥
 कलहं तत्समीपं च वर्जनीयं निरंतरम् ॥
 देशकालविरुद्धं च जोज्यं कृत्यं गमागमौ ॥ १९ ॥
 जाषितं व्यय आयश्च कर्त्तव्यानि न कर्हिचित् ॥
 चातुर्वर्ण्यस्य सर्वस्य व्रतादेशोयमुत्तमः ॥ २० ॥

॥ इतिचातुर्वर्ण्यस्यसमानोव्रतादेशः ॥

अथ चारों वर्णोंका समान व्रतादेश कहते हैं. ॥
 अपने पूज्य गुरुके कहे देवधर्मादिकापालना, देव
 पूजा करनी, साधुकी यथायोग्य पूजा करनी, ब्राह्म
 ण और लिंगधारीको प्रणाम करना. । न्यायसें धन
 उपार्जन करना. परकी निंदा वर्जनी, किसीका जी
 अर्वाणवाद न बोलना, राजादिविषयक तो विशेषसें
 अर्वाणवाद न बोलना. । अपने सत्वको डोरना नही,
 धनके अनुसार दान देना, लाजानुसार खर्च कर
 ना, जोचनके कालमें जोजन करना. । थोडे जल

वाले देशमें वसना नहीं, नदी और धर्मगुरुवर्जित देशमें भी नहीं वसना. । राजा, राज्याधिकारी, स्त्री, नदी, लोत्री, पूर्ववैरी, इनोंका विश्वास नहीं करना. । कार्यविना स्थावर जीवोंकी भी हिंसा नहीं करनी. । असत्य अहितकारि वचन नहीं बोलना, गुरुओं (ब्रह्मों) के साथ विवाद नहीं करना. माता पिता और गुरु, इनका उत्कृष्ट तत्त्वकीतरें मान सत्कार करना. । शुभ अष्टादश दूषणरहित सर्वज्ञोक्त शास्त्रका श्रवण करना; अजह्य (नहीं खाने योग्य) का जहण नहीं करना; जे त्यागने योग्य नहीं है, उनका त्याग नहीं करना; जे मारणे योग्य नहीं है, तिनको मारना नहीं. अतिथि, सुपात्र, और दीन, इनको यथाविधि यथा योग्य दान देना; दरिद्र, अंधे, दुःखी, इनको भी यथाशक्ति दान देना. । हीन अंगवालोंको, और विकलोंको कदापि हसना नहीं. । जूख, तृष्णा, (तृषा,) घृणा, क्रोधादि उत्पन्न हुए भी, गोपन करने. । षट् (६) अरिवर्गका विजय करना, गुणोंमें पक्षपात करना, देशाचार आचरण करना, पाप और अपवादका जय करना. । सदृश आचारवाले, समजाति, और अन्य गोत्रजोंके साथ विवाह करना; धर्म अर्थ कामको निरंतर परस्पर अप्रतिबंधसे साधन करना. । अपने और परायेका ज्ञान करना, देशका

लादिका चिंतन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जालु होना. परोपकार करना, परको पीसा न करनी, अपना परिजव (तिरस्कार) होवे तब पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र ह्रांति करनी. । जलाशय, श्मशान, देवद्व, इनमें और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना. । कूपमें प्रवेश, कूपका उल्लंघन, कूपकांठेपर शयन, इन सर्व को वर्जना; तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना. । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, ताम्रवृक्षके हेटें, बुरी जूमिमें, दुर्गोष्ठिमें, कुकार्यमें, बैठना सदा ही वर्जना । खाम कूदनी नहीं, लोत्री स्वामीकी सेवा, नहीं करनी; चौथका चंद्र, नग्न स्त्री, इंद्रधनुः, इनको देखना नहीं. । हाथी, घोडा, नखोंवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसे वर्जना. । दिन में संज्ञोग (मैथुन) न करना, रात्रिको वृक्षका सेवन न करना. । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना. । देशकाल विरुद्ध, जोजन, कार्य, गमन, आगमन, जाषण, व्यय (खरच) और आय (लाज) ये कदापि न करने. यह पूर्वोक्त उत्तम व्रतादेश चारों वर्णोंका है. ॥ १० ॥ इति चातुर्वर्ण्यस्य समानोव्रतादेशः ॥

ग्रहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसे शिष्यको व्रतादेश करके, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन प्रदक्षिणा

करावे. फिर पूर्वाभिमुख होके शक्रस्तव पढे. । उस पीठे गृहस्थगुरु, आसन ऊपर बैठ जावे, और शिष्य 'नमोस्तु' कहता हुआ गुरुके पगोंमें पड़के ऐसे कहे, "जगवन् जवद्भिर्मम व्रतादेशो दत्तः" तब गुरु कहे, "दत्तःसुगृहीतोस्तु सुरक्षितोस्तु स्वयं तर परं तारय संसारसागरात्" ऐसे कहके नमस्कार पढता हुआ ऊठके दोनों (गुरु शिष्य) चैत्यवंदन करें. उसपीठे ब्राह्मणने, विप्र क्षत्रिय वैश्यके घरमें जिज्ञाटन करना; क्षत्रियने शस्त्र ग्रहण करना; और वैश्यने अन्नदान करना. ॥

इत्युपनयने व्रतादेशः ॥

अथ व्रतविसर्गःकथ्यतेः—अथ व्रतविसर्ग कहते हैं. ॥ ब्राह्मणने आठ वर्षसें लेके सोळां वर्षपर्यंत, दंरु और अजिन धारण करके, जिज्ञावृत्ति करके जोजन करना, यह उत्तम पद्द है. क्षत्रियने दंरु अजिन धारण करके दश वर्षसें लेके सोळां वर्ष पर्यंत आपहिं पाक करके, देवगुरुकी सेवामें तत्पर होके, जोजन करना; और वैश्यने दंरु अजिन धारण करके स्वकृत जोजन करके बारां वर्षसें लेके सोळां वर्ष पर्यंत जोजन करना; यह उत्तम पद्द है. । यदि कार्यव्यग्रतासें तितने दिन न रह सके तो, ठ (६) मास पर्यंत रहना. तदज्ञावे एक मास पर्यंत, तदज्ञावे पद्द पर्यंत, तदज्ञावे तीन दिन रहना. यदि तीन दिन भी न

रह सके तो, तिसही उपनयनव्रतादेशके दिनमेंही विसर्ग करिये, सोही कहने हैं । उपनीत, तीन श प्रदक्षिणा करके चारों दिशाओंमें जिनप्रतिमाके आगे पूर्ववत् युगादिजिनस्तोत्र सहित शक्रस्तव पढ़े. तदपीठे आसनपर बैठे गुरुके आगे नमस्कार करके हाथ जोरुके ऐसैं कहे ॥ “जगवन् देशका लाद्यपेक्षया व्रतविसर्गमादिश ” ॥ गुरु कहे ॥ “आदिशामि ॥ ” फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ “जगवन्ममव्रतविसर्ग आदिष्टः ॥ गुरु कहे ॥ “आदिष्टः ॥ ” फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ “जगवन् व्रतबंधो विसृष्ट ॥ ” गुरु कहे ॥ “जिनो पवीतधारणेन अविस्मृतोस्तु स्वजन्मतः षोडशाब्दीं ब्रह्मचारी पाठधर्मनिरतस्तिष्ठेः ॥ उसपीठे पंचपरमेष्ठिमंत्र पढ़ता हुआ शिष्य, मौंजी, कौपीन, वदकछ, दंड, इनको दूर करके, गुरुके आगे स्थापन करे; और आप जिनोपवीतधारी श्वेतवस्त्र उत्तरीय होके गुरुके आगे नमस्कार करके बैठे, तब गुरु तिस बारां तिलकधारी उपनीतके आगे उपनयनका व्याख्यान करे. ।

तद्यथा ॥ आठ वर्षके ब्राह्मणको दश वर्षके क्षत्रियको, और बारां वर्षके वैश्यको, उपनयन करना तिसमें गर्जमास त्री बीचमेंही गणने । तथाच ॥ “जिनोपवीतमिति जिनस्य उपवीतं मुद्रासूत्रमित्यर्थः”

जिनका उपवीत अर्थात् मुद्रासूत्र सो कहावे जिनोपवीत. । नवब्रह्मगुप्ति गर्जरत्नत्रय, येद्द पुरा, श्रीयुगादिदेवने गृहस्थीवर्णत्रयको अपनी मुद्राका धारण करना यावत् जीवतांद् कहा था. । तदपीठे तीर्थके व्यवहेद हुए, मिथ्यात्वको प्राप्त ब्राह्मणोंने हिंसा प्ररूपणसे चारों वेदको मिथ्या पथमें प्राप्त करे हुए, पर्वत और वसुराजासे प्रायः हिंसक यज्ञके प्रवृत्त हुए, 'यज्ञोपवीत' ऐसा नाम धारण करा. मिथ्या दृष्टि यथेच्छासे प्रलाप करो ! परंतु जिनमतमें तो, जिनोपवीतही नाम है, नतु यज्ञोपवीत. तिसवास्ते तैने इस जिनोपवीतको अष्टीतरें धारण करना मासमासपीठे नवीन धारण कराना, प्रमादसे जिनो, पवीत जाता रहे, वा टुट जावे तो, तीन उपवास करके नवीन धारण करना. प्रेतक्रियामें दक्षिण स्कंधके ऊपर, और वाम कक्षाके हेठें, ऐसे विपरीत धारण करना. क्योंकि, सो विपरीत कर्म है. । मुनि जी, मृत मुनिके त्यागनेमें तथाविध विपरीतही बस्त्र पहनेते हैं, जिसवास्ते, तूं जन्मकरके शूद्र आजतक था सांप्रत संस्कारविशेषकरके ब्रह्मगुप्तिके धारणसे ब्राह्मण, वा क्षतात्वाणेन-रक्षणकरनेसे क्षत्रिय, वा न्यायधर्ममें प्रवेश करनेसे वैश्य हुआ है; तिसवास्ते, क्रियासहित इस जिनोपवीतको अष्टीतरें ग्रहण करना अष्टीतरें रखना. तेरेको सद्धर्मवासना उपन

यनविधि क्षयरहित हो. ऐसे व्याख्यान करके पर
मेष्ठिमंत्र पढ़कर दोनों गुरु शिष्य खड़े होवे. पीठे
चैत्यवंदन, और साधुवंदन करे. ॥ इत्युपनयने व्रत
विसर्गविधिः ॥ अथ गोदानविधिर्यथा ॥

अथ गोदानविधि लिखते हैं. ॥ तदा व्रतविसर्गके
अनंतर शिष्यसहित गुरु, जिनको तीन २ प्रदक्षिणा
करके पूर्ववत् चारों दिशामें शक्रस्तवका पाठ करे.
पीठे गृहस्थगुरु, आसनपर बैठे तब शिष्य गुरुको
तीन प्रदक्षिणा करके नमस्कार करके हाथ जोड़के
खड़ा होके, गुरुको विज्ञापना करे. यथा ॥

“॥ जगवन् तारितोहं, निस्तारितोहं, उत्तमः
कृतोहं, सत्तमःकृतोहं, पूतः कृतोहं, पूज्यकृतोहं,
तद्भगवन्नादिश, प्रमाद बहुल गृहस्थधर्मे, मम किंच
नापि रहस्यज्ञातं सुकृतं ॥”

हे जगवान् ! तारा मुझको, निस्तारा मुझको,
उत्तम करा मुझको, अतिशयसाधु (श्रेष्ठ) करा
मुझको, पवित्रकरा मुझको, पूज्य करा मुझको,
तिसवास्ते, हे जगवन् ! प्रमादबहुल गृहस्थधर्ममें
मेरेको कुछभी रहस्यज्ञात सुकृत कथन करो. ॥ तब
गुरु कहे ॥

“॥ वत्स ! सुध्वनुष्ठितं सुधु पृष्टं ततः श्रूयताम् ॥”

हे वत्स ! अच्छा करा, जला पूठा, तिसवास्ते
तू श्रवण कर. ॥

दानं हि परमो धर्मो दानं हि परमा क्रिया ॥

दानं हि परमो मार्गस्तस्मादाने मनः कुरु ॥ १ ॥

दया स्यादज्ञयं दानमुपकारस्तथाविधः ॥

सर्वो हि धर्मसंघातो दानेन्तर्जावमर्हति ॥ २ ॥

ब्रह्मचारी च पाठेन जिकृश्चैव समाधिना ॥

वानप्रस्थस्तु कष्टेन एही दानेन शुद्ध्यति ॥ ३ ॥

ज्ञानिनः परमार्थज्ञा अर्हन्तो जगदीश्वराः ॥

व्रतकाले प्रयच्छन्ति दानं सांवत्सरं च ते ॥ ४ ॥

गृह्णतां प्रीणनं सम्यक् ददतां पुण्यमक्षयम् ॥

दानतुल्यस्ततो लोके मोक्षोपायोऽस्ति नाऽपरः ॥ ५ ॥

अर्थः—दानही परम उत्कृष्ट धर्म है, दानही परमा क्रिया है, दानही परम मार्ग है, तिसवास्ते दान देनेमें मन कर. । अज्ञयदानसें दया होवे है, दानसेंही तथाविध उपकार होवे है, सर्वही धर्म समूह दानमें अंतर्जाव हो सकता है । ब्रह्मचारी पाठ करके, साधु समाधि करके, वानप्रस्थ कष्ट करके, और गृहस्थी दान करके शुद्ध होता है. । तीन ज्ञानके धर्ता परमार्थके जाणकार, ऐसे अर्हत जगवंत जगदीश्वर जी व्रतसमयमें सांवत्सर दान देते हैं. । दान ग्रहण करनेवालेको तो, दान तृप्त करता है; और देनेवालेको अक्षय पुण्य प्राप्त कराता है; तिसवास्ते दानके समान दूसरा कोई मोक्ष का उपाय लोकमें नहीं है. ॥ ५ ॥ जिसवास्ते हे

वत्स ! तैनें ब्राह्मणपणा, वा क्षत्रियपणा, वा वैश्य
पणा प्राप्त करा है, अंगीकार करा है; तिसवास्ते
हे वत्स ! तूं गृहस्थधर्ममें मोक्षके सोपानरूप दान
देनेका प्रारंभ कर. । तब नस्कार करके शिष्य कहे,
हे जगवन् ! मुझको दानका विधी कहो. । गुरु
कहे ' आदिशामि ' कहता हूं । यथा ॥

गावो जूमिः सुवर्णं च रत्नान्यन्नं च नक्तकाः ॥

गजाश्वा इति दानं तदष्टधा परिकीर्त्तयेत् ॥ १ ॥

एतच्चाष्टविधं दानं विप्राणां गृहमेधिनाम् ॥

देयं न चापि यतयो गृह्णन्त्येतच्च निःस्पृहाः ॥ २ ॥

यतिभ्यो जोजनं वस्त्रं पात्रमौषधपुस्तके ॥

दातव्यं द्रव्यदानेन तौ द्वौ नरकगामिनौ ॥ ३ ॥

अर्थः—गौ १, जूमि २, सुवर्ण ३, रत्न ४, अन्न ५,
नक्तक वस्त्रविशेष ६, हाथी ७, और घोड़ा ८, येह
आठ प्रकारका दान कहाहे । यह पूर्वोक्त आठ
प्रकारका दान, गृहस्थी ब्राह्मणगुरुओंको देना. और
निःस्पृह यति साधु मुनिराज, इस दानको नहीं
लेते हैं । साधवोंको तो, जोजन, वस्त्र, पात्र, औषध
पुस्तक, इनका दान देना. साधुकों द्रव्य (धन) का
दान देनेसें, देनेलेनेवाले दोनोंही नरकगामी होते
हैं. ॥ ३ ॥ तिसवास्ते प्रथम गोदान ग्रहण करना.
उपनीत, वठडेसहित कपिला, वा पाटला, वा श्वेत
रंगकी, स्नापित, चर्चित, जूषित, धेनुको, आगे दया

यके पूंठसे पकड़के, रूप्यमय खुरा है जिसके, स्वर्ण मय शृंग है जिसके, ताम्रमय पृष्ठ है जिसकी, कांस्य मय दोहपात्र है जिसका, ऐसी धेनु, गृहस्थगुरुके तांड़ देवे । गुरु तिस गौकी पूंठको हाथमें धारण करके, यह वेदमंत्र पढ़े । यथा ॥

“ ॥ ॐ अहं गौरियं धेनुरियं प्रशस्यपशुरियं सर्वोत्तमक्षीरदधि घृतेयं पवित्रगोमयमूत्रेयं सुधास्त्रा विणीयं रसोप्लाविनीयं पूज्येयं हृद्येयं अज्जिवाद्येयं तदक्षेयं त्वया धेनुः कृतपुण्यो जव प्राप्त पुण्यो जव अक्षयं दानमस्तु अहं ॐ ॥ ”

यह कहकर गृहीगुरु धेनुको ग्रहण करे. शिष्य तिस गौकेसाथ द्रोणप्रमाण सात धान्य, तुलामात्र षट् (६) रस और पुरुषतृप्तिमात्र षट् (६) विकृती (विगय) देवे ॥ इतिगोदानम् ॥ अन्य सर्व जूमिर रत्नादिदानोंविषे यह मंत्र पढ़ना. । यथा ॥

“ ॥ ॐ अहं एकमस्ति दशमकमस्ति शतमस्ति सहस्रमस्ति अयुतमस्ति खड्गमस्ति प्रयुतमस्ति कोट्यस्ति कोटिदशकमस्ति कोटिशतकमस्ति कोटिसहस्रमस्ति कोट्ययुतमस्ति कोटिखड्गमस्ति कोटिप्रयुतमस्ति कोटाकोटिरस्ति संख्येयमस्ति असंख्येयमस्ति अनंतानंतमस्ति दान फलमस्ति तदक्षयं दानमस्तु ते अहं ॐ ॥ ” इति परेषां दानानां मंत्रपाठः ॥

यहां उपनयनमें गोदानकाही निश्चय है, शेष दान क्रमकरके अन्यदा जी देना. गोदानादि दान गृहस्थगुरु ब्राह्मणोंकोही देना. निःस्पृह यतियोंको न देना. तथा तिन यतियोंको, अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, जेषज, वसति, पुस्तकादि दानमें 'धर्मलाजः' यही मंत्र जाणना. । अथ गृहस्थगुरु, उपनीतसें गोदान लेके, पर्णानुज्ञा देके, चैत्यवंदन, और साधु वंदन करायके, तैसेंही संघके मिले हुए, मंगलगीत वाजंत्रोंके वाजते हुए, शिष्यको साधुयोंकी वसतिमें (उपाश्रयमें) ले जावे. तहां मंडलीपूजा, वासक्षेप, साधुवंदनादि सर्व पूर्ववत् करना. । पीठे चतुर्विध संघकी पूजा, और मुनियोंको वस्त्र, अन्न, पात्रादि दान करे. ॥ इति गोदानविधिः ॥

संपूर्णोयं चतुर्विधउपनयनविधिः ॥

अथ शूद्रको उत्तरीयक देनेकी विधि लिख हैं. ॥ सात दिन तैलनिषेकस्नान पूर्ववत् जाणना. । तदनंतर यथाविधि पौष्टिक, सर्व शिरका मुंरुन, वेदिकरण, चतुष्टिकाकरण, जिनप्रतिमास्थापन, पूर्ववत्. । पीठे गृहस्थगुरु, जिनेश्वरकी अष्टप्रकारी पूजा करे. चारोंदिशायोंमें शक्रस्तव पाठ करे. पीठे गुरु आसनऊपर बैठ जावे. तब शिष्य श्वेत वस्त्र पहिरके, उत्तरासंगकरके समवसरण और गुरुको, प्रदक्षिणा करके, ' नमोस्तु १ ' कहता हुआ, गुरुको

नमस्कार करके हाथ जोरुके, खमा होयके कहे.
 “ ॥ जगवन् प्राप्तमनुष्यजन्मार्थदेशार्थकुलस्य मम
 बोधिरूपां जिनाज्ञां देहि ॥ ” गुरु कहे “ ॥ ददा
 मि ॥ ” शिष्य फिर नमस्कार करके कहे “ ॥ न
 योग्योहमुपनयनस्य तज्जिनाज्ञां देहि ॥ ” गुरु कहे
 ददामि ॥ ” पीठे द्वादश (१२) गर्जतंतुरूप, जि
 नोपवीतप्रमाण दीर्घ (खंबा) कार्प्पासका, वा रेश
 मका, उत्तरीयक, परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, जिनो
 पवीतवत् पहिरावे. पीठे गुरु, पूर्वाजिमुख शिष्यको
 चैत्यवंदन करावे. । पीठे शिष्य ‘नमोस्तु २’
 कहता हुआ, सुखसे बैठे गुरुके पगोंमें परुके, फिर
 खड़ा होके, हाथ जोरुके, ऐसे कहे. “ ॥ जगवन्
 उत्तरीयकन्यासेन जिनाज्ञामारोपितोहं ॥ ” गुरु कहे
 “सम्यगारोपितोसि तर जवसागरम् ॥” पीठे गुरु
 सन्मुख बैठे शूद्रके आगे व्रतानुज्ञा देवे. ॥ यथा ॥
 सम्यक्त्वेनाधिष्ठितानि व्रतानि द्वादशैव हि ॥
 धार्याणि जवता नैव कार्यः कुलमदस्त्वया ॥ १ ॥
 जैनर्षीणां तथा जैनब्राह्मणानामुपासनम् ॥
 विधेयं चैव गीतार्थाचीर्णं कार्यं तपस्त्वया ॥ २ ॥
 न निन्द्यः कोपि पापात्मा न कार्यं स्वप्रशंसनम् ॥
 ब्राह्मणेभ्यस्त्वया मानं दातव्यं हितमिच्छता ॥ ३ ॥
 शेषं चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकव्याख्यानमाचरेत् ॥
 उत्तरीयपरित्रंशे जंगे वाप्युपवीतवत् ॥ ४ ॥

कार्यं व्रतं प्रेतकर्मकरणं वृषल त्वया ॥
 युक्तिरेषोत्तरासंगानुज्ञायां च विधीयते ॥ ५ ॥
 क्षात्राणामथ वैश्यानां देशकालादियोगतः ॥
 त्यक्तोपवीतानां कार्यमुत्तरासंगयोजनम् ॥ ६ ॥
 धर्मकार्ये गुरोर्दृष्टौ देवगुर्वालयेऽपि च ॥
 धार्यस्तथोत्तरासंगः सूत्रवत् प्रेतकर्मणि ॥ ७ ॥
 अन्येषामपि कारूणां गुर्वानुज्ञां विनापि हि ॥
 गुरुधर्मादिकार्येषु उत्तरासंग इष्यते ॥ ८ ॥

अर्थः—सम्यक्त्वके संयुक्त द्वादश व्रत तैने धार
 ण करने, और कुलका मद न करना. । जैन ब्राह्म
 णोंकी उपासना करनी; तथा गीतार्थाचीर्ण तप
 करना. । किसी पापात्माको निंदना नहीं, अपनी
 प्रशंसा नकरनी, हित इच्छके ब्राह्मणको मान
 देना. । शेष चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकमें कहे आचारको
 आचरण करना; (उत्तरीयके परित्रंशमें, वा जंगजे
 उपवीतवत् जाणना. । व्रत करना, प्रेतकर्म करना,)
 हे वृषलशूद्र ! उत्तरासंगकी अनुज्ञामें तैने यह
 युक्ति करनी. । देशकालादियोगसे त्याग किया है
 उपवीत जिनोंने, वैसे क्षत्रिय और वैश्योंको, उत्त
 रासंग योजन करना. । धर्मकार्यमें, गुरुकी दृष्टिमें,
 देव और गुरुके मकानमें, तथा प्रेतकर्ममें, सूत्रकी
 तरे उत्तरासंग धारण करना. । और जी कारुओंको
 गुरुकी आज्ञाके विना जी गुरुधर्मादिकार्योंमें उत्त

रासंग इच्छते हैं. । ऐसा व्याख्यान करके गुरु शिष्य को चैत्यवंदन करावे. । परमेष्ठिमंत्रका उच्चार और मंत्रव्याख्यान पूर्ववत्. । इतना विशेष है. शूद्रादि कौको 'नमो' के स्थानमें 'णमो' उच्चारण कराना. इतिगुरुसंप्रदायः । पीठे शिष्यसहित गुरु, उत्सव करते हुए धर्मागारमें जावे. तहां मंरुलीपूजा, गुरु नमस्कार, वासक्षेपादि पूर्ववत्. । पीठे मुनियोंको अन्न, वस्त्र, पात्र दान देवे. और चतुर्विध संघकी पूजा करे. ॥ इति उपनयने शूद्रादीनां उत्तरीयक न्यासोत्तरासंगानुज्ञोविधिः ॥

अथ बटूकरणविधिः—अथ बटूकरणविधि लिखते हैं. ॥ जिसवास्ते सम्यक् उपनीत, वेदविद्यासंयुक्त, दुष्प्रतिग्रहवर्जित, अशूद्रान्नजोजन करनेवाले, माहनोंके आचारमें रक्त, सर्व गृहस्थोकेसंस्कारप्रतिष्ठादिक मौंके करानेवाले, ऐसे ब्राह्मण, पूज्य होते हैं. । परंक्षत्रियादि राजायोंको, सेवा, अन्नपाक, तिसकी आज्ञा करनी, अच्युत्थान, चाटुः—मनोहर वचन, प्रशंसा, विना नमस्कारके आशीर्वाद देना, विज्ञानकर्म, कृषि वाणिज्यकरण, तुरंगवृषजादि शिक्षाकरण, इत्यादि कर्म करनेवाले ब्राह्मणयोग्य नहींहै. इसवास्ते ऐसे ब्राह्मणो वा हरकोइ को शूद्र ब्राह्मण बनानेके लिए “बटू करण” विधि करनाचहिये. सो बतातेंहै. उक्तं च यतः ॥

व्युत्तन्नतानां ब्राह्मणानां तथा नैवेद्यजो जिनाम् ॥
 कुकर्मणामवेदानामजपानां च शस्त्रिणाम् ॥ १ ॥
 ग्राम्याणां कुलहीनानां विप्राणां नीचकर्मणाम् ॥
 प्रेतान्नजो जिनां चैव मागधानां च बन्दिनाम् ॥ २ ॥
 घांटिकानां सेवकानां गंधतांबूलजीविनाम् ॥
 नटानां विप्रवेषाणां पशुरामान्वयायिनाम् ॥ ३ ॥
 अन्यजात्युद्भवानां च बन्दिवेषोपजीविनाम् ॥
 इत्यादिविप्ररूपाणां बटूकरणमिष्यते ॥ ४ ॥

अर्थः—व्रतसें ब्रष्ट हुए, संस्कारहीन, नैवेद्यका
 जो जन करनेवाले, कुकर्मके करनेवाले, जैन वेदको नहीं
 जाननेवाले, वेद मंत्रोंका जप न करनेवाले, शस्त्रको
 धारण करनेवाले, कुग्रामके वसनेवाले, कुलहीन, नीच
 कर्मके करनेवाले, प्रेतके अन्नका जो जन करनेवाले,
 मागध—स्तुतिपाठ पठनेवाले बन्दीराजादिकी स्तुति
 पढ़नेवाले, घंटिका बजानेवाले, सेवा करनेवाले,
 गंधतांबूलकरके आजीविका करनेवाले, विप्रवेष
 धारण करनेवाले नट, पशुरामके संतानीय, अन्य
 जातिसें उत्पन्न हुए, बन्दिवेषसें आजीविका करनेवा
 ले, इत्यादि विप्ररूपको बटूकरण इच्छते हैं । तिस
 का यह विधि है. प्रथम तिसके घरमें गृहस्थगुरु,
 यथोक्त विधिसें पौष्टिक करे. पीछे तिसको शिखा
 वर्जके मुंडन करावे, पीछे तिसको तीर्थोदक

मंत्रोंकरके मंत्रित जलकरके स्नान करावे. । तिर्थों दकाजिमंत्रणमंत्रोयथा ॥

“ ॥ ॐ वं वरुणोसि वारुणमसि गांगमसि यामु नमसि गौदावरमसि नाम्मदमसि पौष्करमसि सारस्व तमसि शातद्रवमसि वैपाशमसि सैधवमसि चांद्रजाग मसिवैतस्तमसि ऐरावतमसि कावेरमसि कारतोयमसि गौमतमसि शैतमसि शैतोदमसि रोहितमसि रोहि तांशमसि सारेयवमसि हारिकांतमसि हारिसलिल मसि नारिकांतमसि नारकांतमसि रौप्यकूलमसि सौवर्णकूलमसि सालिलमसि रक्तवतमसि नैमग्नस लिलमसि उन्मग्नसलिलमसि पाद्ममसि महापाद्म मसि तैगिष्ठमसि कैशरमसि जीवनमसि पवित्रमसि पावनमसि तदमुं पवित्रय कुलाचाररहितमपि देहिनं॥

इस मंत्रसें कुशाग्रकरी सात बार अग्निसिंचन करे. पीछे नदीकांठे वा तीर्थऊपर, वा मंदिरमें, वा पवित्र गृहस्थानमें तिस बटूकरण योग्यको, प्रथम तीनगुणी कुशमेखला, तीन प्रकारसें बांधे. । मेखला बंधमंत्रो यथा ॥

“ ॥ ॐ पवित्रोसि प्राचीनोसि नवीनोसि सुग मोसि अजोसि शुद्धजन्मासि तदमुं देहिनं धृतव्रत मव्रतं वा पावय पुनीहि अब्राह्मणमपि ब्राह्मणं कुरु ॥ ”

इस मंत्रका तीन बार पाठ करे. ॥ पीछे कौपीन पहिरावे. । कौपीनमंत्रों यथा ॥

ॐ अब्रह्मचर्यगुप्तोपि ब्रह्मचर्यधरोपि वा ॥

व्रतः कौपीनबंधेन ब्रह्मचारी निगद्यते ॥ १ ॥

ऐसें तीन वार पढके कौपीन पहिरावणा. ।
पीठे पूर्वोक्त ब्राह्मणसमान उपवीत, मंत्रपूर्वक पहि
रावे. । मंत्रो यथा ॥

“ ॥ ॐ सधर्मोसि अधर्मोसि कुलीनोसि अकु
नोसि सब्रह्मचर्योसि सुमनाअसि दुर्मनाअसि
श्रद्धाबुरसि अश्रद्धाबुरसि आस्तिकोसि नास्तिकोसि
आर्हतोसि सौगतोसि नैयायिकोसि वैशेषिकोसि
सांख्योसि चार्वाकोसि सलिंगोसि अलिंगोसि तत्त्व
ज्ञोसि अतत्त्वज्ञोसि तद्भव ब्राह्मणोऽमुनोपवीतेन
ज्वंतु ते सर्वार्थसिद्धयः ॥ ”

इस मंत्रको नव वार पढके उपवीत स्थापन करे. ।
पीठे तिसके हाथमें पलाशका दंरु देवे, और मृग
चर्म तिसको पहिरावे, और जिह्वा मांगनी करावे.
जिह्वामार्गणकेपीठे उपवीतको वर्जके, मेखला, कौपी
न, चर्मदंरुादि दूर करे. । दूरकरनेकामंत्र यथा ॥

“ ॥ ॐ ध्रुवोसि स्थिरोसि तदेकमुपवीतं धारय ॥ ”

ऐसें तीन वार पढे. । पीठे गुरु, धारण किया है
श्वेतवस्त्रका उत्तरासंग जिसने, ऐसे ब्राह्मणको, आगे
बिठलाके, शिद्धा देवे. । यथा ॥

परनिंदां परद्रोहं परस्त्रीधनवांठनम् ॥

मांसाशनं म्लेच्छकंदजक्षणं चैव वर्जयेत् ॥ १ ॥

वाणिज्ये स्वामिसेवायां कपटं मा कृथाः क्वचित् ॥

ब्रह्मस्त्रीचूणगोरक्षां दैवर्षिगुरुसेवनम् ॥ २ ॥

अतिथीनां पूजनं च कुर्यादानं यथा धनम् ॥

अथात्मघातं मा कुर्या मा वृथा परतापनम् ॥ ३ ॥

उपवीतमिदं स्थाप्यमाजन्मविधिवत्त्वया ॥

शेषः शिक्षाक्रमः कथ्यश्चातुर्वर्ण्यस्य पूर्ववत् ॥ ४ ॥

अर्थः—परनिंदा, परद्रोह, परधनकी वांछा, मांस
जक्षण, स्वेच्छकंद"लशुनादिजक्षण, इनको वर्जना।
वाणिज्यमें स्वामीकी सेवामें, कदापि कपट न करना;
ब्राह्मण, स्त्री, गर्ज और गौ, इन चारोंकी रक्षा करनी
देव ऋषि और गुरुकी सेवा करनी। अतिथीयोंका
पूजन करना, धनके अनुसार दान देना, आत्मघात
नहीं करना, परको पीडा न करनी। जन्मपर्यंत
यावज्जीवे तबतक विधिपूर्वक उपवीत धारण करना,
शेष शिक्षाक्रम पूर्ववत् चारों वर्णोंका कथन कर
ना ॥ पीठे सो बटुकृत, गुरुको स्वर्ण, वस्त्र, धेनु,
अन्न, दान करे। यहां बटुकरणमें वेदी, चतष्कि
का, समवसरण, चैत्यवंदन, व्रतानुज्ञा, व्रतविसर्ग,
गोदान, वासदेवादि नहीं है ॥ इति बटुकरणविधिः॥
इति द्वादशमोपनयनादिसंस्कारवर्ण समाप्तम् ॥



॥ अथ अध्ययनारंज संस्कार लिख्यते ॥

अश्विनी, मूल, पूर्वा ३, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, हस्त, शतजिषा, स्वाति, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, येह नक्षत्र और बुध, गुरु, शुक्र, येह वार विद्यारंजमें शुभ है. अर्थात् इनमें प्रारंज करी विद्या प्राप्त होती है. रवि और चंद्र, मध्यम हैं. मंगल और शनिवार, त्यागने योग्य है. । अमा वास्या, अष्टमी, प्रतिपत् (एकम,) चतुर्दशी, रिक्ता, षष्ठी, नवमी, येह तिथियें विद्यारंजमें सदाही वर्जनी. ।

अथ उपनयनसदृश दिन और लग्नमें विद्यारंज संस्कारका आरंज करिये, तिसका यह विधि है. । गृहस्थगुरु प्रथम विधिसें उपनीत पुरुषके घरमें पौष्टिक करे; पीठे गुरु, मंदिरमें, वा उपाश्रयमें, वा कदंबवृक्षकेतले, कुशाके आसनउपर आप बैठके, शिष्यको वामेपासे कुशासनोपरि बिठलाके तिसके दक्षिण कानको पूजके तीनवार सारस्वत मंत्र पढे. पीठे गुरु, अपने घरमें, वा पाठ शालामें वा पौषधागारमें, शिष्यको पालखी, वा घोडेपर चढायके मंगलगीतोंके गाते हुए, दान देते हुए, वाजंत्र वाजते हुए, यति गुरु केपास लेजाके मंरुलीपूजापूर्वक वास दोप करवाके, पाठशालामें लेजावे. पीठे गुरु शिष्यको आगे येह शिद्धाश्लोक पढे. । यथा ॥

अज्ञानतिमिरांधानां, ज्ञानांजनशलाकया ॥

नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

यासां प्रसादादधिगम्य सम्यक्, शास्त्राणि विदन्ति
परं पदं ज्ञाः ॥ मनीषितार्थप्रतिपादकाज्यो नमोस्तु
ताज्यो गुरुपा दुकाज्यः ॥ २ ॥

सत्येतस्मिन्नरतिरतिदं गृह्यते वस्तु दूरा, दप्यासन्नेप्य
सति तु मनस्याप्यते नैव किञ्चित् ॥ पुंसामित्यप्यवग
तवतामुन्मनीजावहेता, विच्छा बाढं नवति न कथं
सज्जुरूपासनायाम् ॥ ३ ॥

इति मत्वा त्वया वत्स ! त्रिशुद्धोपासनं गुरोः ॥

विधेयं येन जायंते गोधीकीर्तिधृतिश्रियः ॥ ४ ॥

ऐसें शिष्यको शिक्षा देके, और तिससें स्वर्ण
वस्त्र दक्षिणा लेके, गुरु अपने घरको जावे. पीठे
उपाध्याय, सर्वको पहिले मातृका पढावे; पीठे
विप्रको प्रथम आर्यवेद पढावे, पीठे षरंगी, पीठे
न्यायव्याकरण धर्मशास्त्र पढावे; कृत्रियको ज्ञी ऐसेंही
चतुर्दश विद्या पढावे. पीठे आयुर्वेद, धनुर्वेद, दंरु
नीति और आजीविकाशास्त्र पढावे. वैश्यको धर्म
शास्त्र, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र और अर्थशास्त्र पढावे.
शूद्रको नीतिशास्त्र और आजीविकाशास्त्र पढा वे,
कारुयोंको तिनके उचित विज्ञानशास्त्र पढावे. पीठे सा
धुयोंको चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र पुस्तक दान देवे.।

इति त्रयोदशमविद्यारंजसंस्कारवर्णनं समाप्तं ॥

अथ विवाह संस्कार विधिलिख्यते ॥

विवाह जो है सो समानकुलशीलवालोंकाही होता है. यतउक्तं ॥

ययोरेव समं शीलं, ययोरेव समं कुलम् ॥

तयोर्मैत्री विवाहश्च, न तु पुष्टविपुष्टयोः ॥ १ ॥

तिसवास्ते समकुलशील, समजाति, जाने है देशकृत्य जिनोंके, तिनका विवाहसंबंध जोडना योग्य है; तिसवास्ते जो अविकृत है, तिसनें विकृतकुलकी कन्या ग्रहण नहीं करनी । विकृतकुलं यथा । जिनकेकुलमें शरीरऊपर रोम बहुत होवे, अर्शरोग होवे, दाद होवे, चित्रकुष्ठि होवे, नेत्ररोग होवे, उदररोग होवे, ऐसे वंशोंकी कन्या न ग्रहण करनी. विकृत कुल होनेसें. । कन्या विकृता यथा । वरसें लंबी होवे, हीन अंगवाली होवे, कपिला होवे, ऊंची दृष्टिवाली होवे, जिसका ज्ञाषण और नाम जयानक होवे, ऐसी कन्या विचक्षणोंको त्याग ने योग्य है. तथा देवता, ऋषि, ग्रह, तारा, अग्नी. नदी, वृक्षादिकके नामसें जो कन्या होवे, तथा जिसके शरीरऊपर बहुत रोम होवे, पिंगाही और घरघरास्वरवाली, ऐसी कन्या नी पाणिग्रहणमें वर्ज नी. ॥ कन्यादाने वरस्य विकृतं कुलं यथा ॥ हीन होवे, क्रूर होवे, वधूसहित होवे, दरिद्री होवे,

व्यसन (कष्ट) संयुक्त होवे, कन्यादानमें ऐसे कुल और पुरुषको वर्जना. मूर्ख, निर्धन, दूर देशमें रहनेवाला, शूर, योद्धा, मोक्षाजिलाषी, कन्यासें तीन गुणासे अधिक उमरवाला, इनको जी कन्या न देनी. तिसवास्ते दोनों अविकृत कुलोंका, और दोनों विकृत कुलवालोंका विवाहसंबंध योग्य है. तथा पांच शुद्धियें देखके वधूवरका संयोग करना, सोही दिखावे हैं. राशि १, योनि २, गण ३, नानी ४, और वर्ग ५, येह पांच शुद्धियें दोनोंकी देखके वरवधूका संयोग करना. । कुल १, शील २, स्वामि पणा ३, विद्या ४, धन ५, शरीर ६, और वय ७, येह सातों गुण वरमें देखने, अर्थात् येह सात गुण वरमेंदेखके कन्या देनी. आगे जो होवे, सो कन्या का जाग्य है. गर्जसें आठ वर्षसें लेके इग्यारह वर्ष तांइ कन्याका विवाह करना * तिसके ऊपरांत रज स्वला होती है. तिसको राका जी कहते हैं. तिस का विवाह शीघ्र होना चाहिये. वरको पाकरके

* यह कथन प्रायः लौकिकव्यवहारानुसार है. क्योंकि, जैना गममें तो “ जोवणगमणमणुपत्ता ” इतिवचनात्, जब वरकन्या योवनको प्राप्त होवे, तब विवाह करना. और ‘ प्रवचनसारोद्धार ’ में लिखा है कि, सोळां वर्षकी स्त्री, और पच्चीस वर्षका पुरुष, तिनके संयोगसें जो संतान उत्पन्न होवे, सो बलिष्ठ होवे है. इत्यादि मूलागमसें तो बाललग्नका और वृद्धके विवाहका निषेध सिद्ध होता है. ॥

चंद्रबलके हुए, तुच्छ महोत्सवके जी हुए, विवाह करना उचित है. यतउक्तम् ॥

वर्षमासदिनादिनां शुद्धिं राकाकरग्रहे ॥

नालोकयेच्चंद्रबलं वरं प्राप्य विधापयेत् ॥ १ ॥

पुरुषका आठ वर्षसें लेके ८० वर्षके बीच २ विवाह होना चाहिये. क्योंकि, अस्सीवर्ष उपरांत प्रायः पुरुष शुक्ररहित होता है. ।

विवाह दो प्रकारके होते हैं, आर्यविवाह १, और पापविवाह २. । आर्य विवाहके चार जेद हैं. ब्राह्मविवाह १, प्राजापत्यविवाह २, आर्षविवाह ३, और दैवतविवाह ४. ये चारों विवाह मातापिताकी अज्ञासें होनेसें लौकिक व्यवहारमें धार्मिक विवाह गिने जाते हैं. पापविवाहके जी चार जेद हैं. गांधर्वविवाह १, आसुरविवाह २, राक्षसविवाह ३, और पैशाचविवाह ४. ये चारों स्वेच्छानुसार करनेसें पापविवाह गिने जाते हैं. ।

प्रथम ब्राह्मविवाहविधि लिखते हैं. । शुभ दिन में, शुभ लग्नमें, पूर्वोक्त गुणसंयुक्त वरको बुलवाके स्नान अलंकार करके संयुक्त हुए तिस वरकों अलंकृत कन्या देवे. ॥ मंत्रो यथा ॥

“ ॐ अहं सर्वगुणाय सर्वविद्याय सर्वसुखाय सर्वपूजिताय सर्वशोभनाय तुज्यं वस्त्रगंधमाद्यालं

कारालंकृतां कन्यां ददामि प्रतिगृह्णाष्व जडं चवतु
ते अहं ॐ ॥ ”

इस मंत्रकरके बद्धांचलदंपती-स्त्रीजता, अपने घरमें जावे. ॥ इति धाम्यो ब्राह्म्यविवाहः ॥ १ ॥

प्राजापत्य विवाह जगत्में प्रसिद्ध है, इसवास्ते विस्तारसें कहेंगे. ॥

आर्षे विवाहमें वनमें रहनेवाले मुनि, ऋषि, गृहस्थ अपनी पुत्रीको, अन्यऋषिके पुत्रकों, गौ बैलके साथ देते हैं. तहां अन्य कोई उत्सवादि नहीं होते हैं, इस विवाहका मंत्र जैनवेदोंमें नहीं है जैनी मंत्र जैन वेदकरके वर्णादि आश्रित हुए जैनोंके आचार कथन करनेवाले हे और ऐसे विवाह अकृत्य होनेसें जैनोको कथन करनेकी जरूर नहीं हे. दैवत । विवाहमें जी ऐसेही जाणना. । इन दोनों विवाहोके मंत्र पर समयसें जाणने. ॥ इति धाम्य आर्षेविवाहः ॥ ३ ॥

दैवत विवाहमें तो, पिता, अपने पुरोहितको इष्ट पूर्त कर्मके अंतमें अपनी कन्याको दक्षिणाकी तरें देवे. यह कार्य जी जैनोंको सम्मत नहीं होनेसें इसके मंत्रजी कथन करतें नहीं हैं ॥ इति दैवत धाम्य विवाहः ॥ ४ ॥ ये चार धाम्यविवाह हैं. ॥

पितादिकोंकी सम्मतीविना, अन्योन्यप्रीतिकरके जो विवाह होता है, सो गांधर्वविवाह. ॥१॥

पणवध, सो आसूरविवाह. ॥ २ ॥ हठसे कन्या ग्रहण करे सो राक्षस विवाह ॥ ३ ॥

सुप्त, और प्रमत्तकन्याको ग्रहण करनेसे, पैशाच विवाह कहा जाता है. ॥ ४ ॥ माता, पिता, गुरु, आदिकी आज्ञा न होनेसे इन चारों विवाहोंको विवाहज्ञ पुरुष पापविवाह कहते हैं. ॥ तथा ब्रह्माय १ आर्ष २, और दैवत ३, येह तीन विवाह दुःखमका लक्षियुगमें प्रवर्त्तते नहीं हैं. । चारों पापविवाहोका वेदोक्तविधि जी नहीं है. अधर्म होनेसे. ॥

संप्रति वर्त्तमान प्राजापत्य विवाहका विधि कहते हैं ॥ मूल, अनुराधा, रोहिणी, मघा, मृगशिर, हस्त, रेवती, उत्तरा ३, स्वाति, इन नक्षत्रोंमें लग्न करना. । वेध, एकार्गल, लत्ता, पात, उपग्रहसंयुक्त नक्षत्रोंमें विवाह नहीं करना. । तथा युति, क्रांति, साम्य, दोषमें जी नहीं करना. । तीन दिनको स्पर्श नेवाली तिथिमें, (अवम् क्षय तिथिमें,) क्रूर तिथि में, दग्ध तिथिमें,) रिक्ता तिथिमें, अमावास्या, अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी इनमें विवाह नहीं करना. । जडामें, गंगांतमें, दुष्टनक्षत्र तिथि बार योगों, व्यतिपातमें, वैधृतिमें और निन्द्यसमयमें विवाह नहीं करना सूर्यके क्षेत्रमे बृहस्पति होवे और बृहस्पतिके क्षेत्रमें सूर्य होवे तो, दीक्षा, प्रतिष्ठा, विवाह प्रमुख वर्जने. । चौमासेमें, अधिकमा

समें, गुरु शुक्रके अस्त हुए, मलमासमें, और जन्म मासमें, विवाहादि न करना. । मासांतमें, संक्रांति में, संक्रांतिके दूसरे दिनमें, ग्रहणादि सात दिनोंमें जी, पूर्वोक्त कार्य नहीं करना. । जन्मके तिथि वार, नक्षत्र, लग्नमें; राशि और जन्मके ईश्वरके अस्त हुए, और क्रूर ग्रहोकरके हत हुए जी, विवाह नहीं करना. । जन्मराशिमें, जन्मराशि और जन्मलग्नसे बारमें और आठमेमें, और लग्नके अंशके अधिपके ठे, और आठमे घरमें गए हुए, लग्न नहीं करना. । स्थिर लग्नमें, वा द्विस्वजावलग्नमें, वा सजुण करी संयुक्त चर लग्नमें, उदयास्तके विशुद्ध हुए, विवाह करना. परंतु उत्पातादिकरके विदूषितमें नहीं करना. । लग्न और सप्तम घर, ग्रहकरके वर्जित होवे; तीसरे, ठे, और इग्यारमे घरमें, रवि, मंगल और शनि होवे. । ठे और तीसरे घरमें, तथा पापग्रहवर्जित पांचमें घरमें राहु होवे; लग्नमें तथा पांचमें, चौथे, दशमे, और नवमे घरमें बृहस्पति होवे. । ऐसेही शुक्र, बुध, होवे; लग्न, ठे, आठमे, बारमे घरसें, अन्यत्र चंद्रमा होवे, सो जी पूर्ण होवे. । क्रूरकरके दृष्ट, और क्रूरसंयुक्त चंद्र वर्जना; क्रूर, और अंतस्थ लग्न और चंद्र वर्जने. । इत्यादि गुणसंयुक्त, दोष विवर्जित लग्नमें, शुभ अंशमें शुभ ग्रहोंकर दृष्ट हुए, पाणिग्रहण शुभ है. ॥ इत्यादि

श्रीजडबाहु, वराह, गर्ग, लङ्घ, पृथुयशः, श्रीपति, विरचितविवाहशास्त्रके अवलोकनसे शुचि लग्न देख के विवाहका आरंभ करना. ॥

श्लोकः ॥

ततश्च कुलदेशादि गुरुवाक्यविशेषतः ॥

अनुज्ञातं विवाहादि गर्गादिमुनिभिः पुरा ॥१॥

वृत्तम् ॥

सूर्यः षट् त्रिदशस्थितस्त्रिदशषट्सप्ताद्यगश्चंद्रमा
जीवः सप्तनवद्विपंचमगतो वक्रार्कजौ षट्त्रिगौ ॥
सौम्यः षट्द्विचतुर्दशाष्टमगतः सर्वेण्युपांते शुचाः
शुक्रः सप्तमषट्दशाष्टरहितः शार्दूलवज्रासकृत् ॥ १ ॥

स्त्रीयोंको बृहस्पति बलवान् होवे, पुरुषोंको सूर्य बलवान् होवे, और दंपतीको चंद्र बलवान् होवे तो, लग्न शोधना. ॥

प्रथम कन्यादानविधि कहते हैं:-पूर्वोक्त समान कुलशीलवाले, अन्य गोत्रीसें कन्या मांगनी. । पूर्वोक्त गुणविशिष्ट वरकेतांड़ कन्या देनी. । कन्याके कुलज्येष्ठने वरके कुलज्येष्ठको, नाखियर, क्रमुक (सुपारी) जिनोपवीत, ब्रीही, दूर्वा, हरिद्रा अपने २ देशकुलोचित वस्तु दानपूर्वक कन्यादान करना. तदा गृहस्थगुरु वेदमंत्र पढे । स यथा ॥

“ ॥ ॐ अहं परमसौभाग्याय, परमसुखाय, परमजोगाय, परमधर्माय, परमयशसे, परमसन्तानाय,

जोगोपजोगांतरायव्यवच्छेदाय, इमां अमुकनाम्नीं
कन्यां अमुकगोत्रां अमुकनाम्ने वराय अमुकगोत्राय
ददाति गृहाण अहं उँ ॥ ”

पीठे सर्व लोकोंकेतांश कन्याके पक्षी तांबूल
देवे. । तथा दूर रहे विवाहकालमें वरके जीते हुए,
सो कन्या अन्यको न देवे.

उक्तंच ॥

“ सकृज्जादपन्ति राजानस्सकृज्जादपन्ति परिमृताः ॥
सकृत् प्रदीयते कन्या त्रीण्येतानि सकृत् सकृत् ॥१॥ ”

राजाओं एकवार बोलते हैं, पंक्ति जन एक
वार बोलते हैं, कन्या एकवार दिशजाती हैं. पूर्वोक्त
तीन कार्य एकएकहीवार होते हैं. ॥ तथा वर जी,
तिस कन्याको वस्त्र, आभरण, गंधादिउत्सवसहित,
तिसके पिताके घरमें देवे. । कन्याका पिता जी,
परिजनसंयुक्त वरको, महोत्सवसहित वस्त्र मुद्रि
कादिक देवे. ॥

लग्नदिनसें पहिले मासमें. वा पक्षमें, अवकासानु
सारें दोनों पक्षोंके स्वजनोंको एकठे करके, सांवत्सर-
ज्योतिषिकको उत्तम आसनऊपर बिठलाके,
तिसके हाथसें विवाहलग्न चूमिके ऊपर लिखवावे;
और रूप्य, स्वर्णमुद्रा, फल, पुष्प, दूर्वा करके जन्म
लग्नवत् विवाहलग्नको पूजे. । पीठे ज्योतिषिको

दोनों पक्षोंके वृद्धनें वस्त्रालंकार तांबूलदान देना इति विवाहारंजः ॥

पीठे कोरे शरावलोंमें यव बोवने । पीठे कन्या के घरमें मातृस्थापना, और षष्ठीस्थापना, षष्ठी पूजनविधिके प्रकारसें करना. । वरके घरमें मातृ स्थापन, और कुलकरस्थापन करना. । परमतमें गण पति, कंदर्प स्थापन करते हैं. सो सुगम, और लोक प्रसिद्ध है. ॥

अथ कुलकर स्थापनविधि कहते हैं. ॥ गृहस्थ गुरु जूमिपर नही पड़े गोमय (गोबर) करके लीपी हुई जूमिमें, स्वर्णमय, रूप्यमय, ताम्रमय, वा श्रीप र्णीकाष्ठमय, पट्टा, स्थापन करे. । पट्टकस्थापन मंत्रः

“ ॥ ॐ आधाराय नमः आधारशक्तये नमः ।

इस मंत्रकरके एकवार मंत्रके पट्टेको स्थापन करके, तिस पट्टेको अमृतामंत्रकरके तीर्थजलोंसें अजिषिंचन करके. । पीठे चंदन, अक्षत, दूर्वाकरके पट्टेको पूजे. । पीठे आदिमें.

“ ॥ ॐ नमः प्रथमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्या मवर्ण चंद्रयशः प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रोच्चारख्यापितन्याय्यपथाय, विमलवाहनाभिधानाय, इह विवाहमहोत्सवादौ आगच्छ १, इह स्थाने तिष्ठ १, सन्निहितो जव १, हेमदो जव १, उत्सवदो जव १, आनंददो जव १, जोगदो जव १, कीर्तिदो जव १,

अपत्यसंतानदो जव २, स्नेहदो जव २, राज्यदो जव २,
इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं चर्चां आचमनीयं गृहाण २,
सर्वोपचारान् गृहाण ॥ ” २, पीठे ॥

“ ॥ ॐ गंधं नमः । ॐ पुष्पं नमः । ॐ धूपं
नमः । ॐ दीपं नमः । ॐ उपवीतं नमः । ॐ जूषणं
नमः । ॐ नैवेद्यं नमः । ॐ तांबूलं नमः ॥ ”

पूर्वोक्त मंत्रकरी आळ्हान संस्थापन करके, इस
मंत्रसे अर्घ्य, पाद्य, बलि, चर्चा, आचमनीय, दान
देवे. यह ठोटे मंत्रोंसें गंधके दो तिलक, दो पुष्प,
दो धूप, दो दीप, एक उपवीत, दो स्वर्णमुद्रा, दो
नैवेद्य, दो तांबूल, चढावे. ॥१॥ पीठे दूसरे स्थानमें ॥

“ ॥ ॐ नमो द्वितीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्या
मवर्णचंद्रकांता प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रख्या
पितन्याय्यपथाय, चक्षुष्मदजिधानाय, ॥ ” शेषं
पूर्ववत् ॥ २ ॥

“ ॥ ॐ नमस्तृतीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्याम
वर्णसुरूपाप्रियतमासहिताय, माकारमात्रख्यापितन्या
य्यपथाय, यशस्वअजिधानाय ॥ ” ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

“ ॥ ॐ नमश्चतुर्थकुलकराय, श्वेतवर्णाय, श्याम
वर्णप्रतिरूपाप्रियतमासहिताय, माकारमात्रख्यापित
न्याय्यपथाय, अजिचंद्राजिधानाय ॥ ” शेषं पूर्ववत् ॥

“ ॥ ॐ नमः पंचमकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्या
मवर्णचक्षुःकांताप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्या

पितन्याय्यपथाय प्रसेनजिदन्निधानाय ॥ ” शेषं पूर्ववत् ॥ ५ ॥

“ ॥ ॐ नम षष्ठकुलकराय, स्वर्णवर्णाय, श्यामवर्णश्रीकांताप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय मरुदेवाजिधानाय, ॥ ” शेषं पूर्ववत् ॥ ६ ॥

“ ॥ ॐ नमः सप्तमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्यामवर्णमरुदेवाप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, नाज्जीअजिधानाय ॥ ” शेषं पूर्ववत् ॥ ॥ ७ ॥ इतिकुलकरस्थापन पूजनविधिः ॥

यह कुलकरस्थापना और परसमयमें गणेशमदन स्थापना, विवाहके पीछे ज़ी सात अहोरात्रपर्यंत रखनी चाहिये. । पीछे वरके घरमें शांतिक, पौष्टिक करे. और कन्याके घरमें मातृपूजा पूर्ववत् । पीछे विवाहकालसें पूर्व सात, नव, इग्यारह, वा तेरह, दिनोंमें वधूवरको अपने २ घरमें, मंगलगीतवाजंत्र पूर्वक, तैलाजिषेक और स्नान, नित्य विवाहपर्यंत कराना. । प्रथमतैलाजिषेकदिनमें, वरके घरसें कन्या के घरमें, तैल, शिरःप्रसाधनगंधद्रव्य, द्राक्षादि खाद्य, शुष्कफल, जेजने. । नगरकी औरतें वरके घरमें और कन्याके घरमें, तैल, धान्य, ढौकन करें । वधूवरके घरकी वृद्ध नारीयों तिन तैल धान्यढौकने वाली नारीयोंको, पूडे आदि पक्कान्न देवें । तहां धारणादि देशाचार, कुलाचारोंसें करना. । तैलाजि

षेक, कुलकर गणेशादि स्थापन, कंकणबंध, अन्य विवाहके उपचारदिक सर्व, वधूवरको चंद्रबलके हुए, विवाहवाले नक्षत्रमें करना । तथा धूलिजक्त, कौर जक्त, सौजाग्यजलदयावन प्रमुख, कर्म, मंगलगीत वाजंत्रादिसहित देशाचार कुलार विशेषसें करना । पीठे जेकर, वर, अन्य ग्रामांतर, नगरांतर, वा देशांतरमें होवे तो, तिसकी गमनयात्रा (जान जनेत बरात) कन्याके निवासस्थानप्रति करनी; तिसका विधि यह है. ॥

प्रथम एक दिनमें मातृपूर्वक सर्व लोकोंको जोजन देना; पीठे दूसरे दिन सुस्नात होके, चंदन का लेपन करके, वस्त्रगंधमाल्यादिकरके अलंकृत होके, मुकुट शूषित शिरको करके, घोड़ेपर, वा हाथी पर, वा पालखीमें आरूढ होके, वर चले. । तिसके समीप, अच्छे वस्त्रोंवाले, प्रमोदसहित, पानबीड़े चावे हुए, संबंधी ज्ञातिजन, अपनी १ संपदानुसार घोड़ेआदि ऊपर चढ़े हुवे, वा पगोंसें चलते हुए, वरकेसाथ चलें. । दोनों पासे, मंगलगानमें तत्पर ऐसी ज्ञातिकी नारीयां चढ़ें और आगे जैन ब्राह्मणलोक, गृहशांतिमंत्र पढ़ते हुए चलें. ॥

“ॐ अहं आदिमोर्हन्, आदिमो नृपः, आदिमो यन्ता, आदिमो नियन्ता, आदिमो गुरुः, आदिमः स्वष्टा, आदिमः कर्त्ता, आदिमो जर्त्ता, आदिमो

जयी, आदिमो नयी, आदिमः शिखी, आदिमो
विद्वान्, आदिमो जल्पकः, आदिमः शास्ता, आदि
मो रौद्रः, आदिमः सौम्य, आदिमः काम्यः, आदि
मः, शरण्यः, आदिमो दाता, आदिमो वन्द्यः, आदि
मः स्तुत्यः, आदिमो ज्ञेयः, आदिमो ध्येयः, आदि
मो जोक्ता, आदिमः सोढा, आदिम एकः, आदि
मोऽनेकः, आदिमः स्थूलः, आदिमः कर्मवान्
आदिमोऽकर्मन्, आदिमो धर्मवित्, आदिमोऽनुष्ठे
यः, आदिमोऽनुष्ठाता, आदिमः सहजः, आदिमो
दशावान् आदिमः सकलत्रः, आदिमो निःकलत्रः,
आदिमो विवोढा, आदिमः ख्यापकः, आदिमो
ज्ञापकः, आदिमो विदुरः, आदिमः कुशलः, आदि
मो वैज्ञानिकः, आदिमः सेव्यः, आदिमोगम्यः,
आदिमो विमृश्यः, आदिमो विम्रष्टा, सुरासुरनरोरग
प्रणतः, प्राप्तविमलकेवलो यो गीयते, सकलप्राणि
गणहितो, दयालुरपरापेक्षापरात्मा, परंज्योतिः, परं
ब्रह्मा, परमैश्वर्यज्ञाक्, परंपरः, परापरो, जगदुत्तमः,
सर्वगः, सर्ववित्, सर्वजित्, सर्ववीर्यः, सर्वप्रकाश्यः
सर्ववन्द्यः, सर्वपूज्यः, सर्वात्माऽसंसारोऽव्ययोऽवार्यवी
र्यः, श्रीसंश्रयः, श्रेयः, संश्रयः, विश्वावश्यायहृत्,
संशयहृत्, विश्वसारो, निरंजनो, निर्ममो, निःकलं
को, निःपाप्मा, निःपुण्यः, निर्मना, निर्वाचा, निर्देहो,
निःसंशयो, निराधारो, निरवधिः प्रमाणं, प्रमेयं, प्रमाता,

जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्जराबंधमोक्षप्रकाशकः, स एव जगवान्, शान्तिं करोतु, तुष्टिं करोतु, पुष्टिं करोतु, रुद्धिं करोतु, वृद्धिं करोतु, सुखं करोतु, सौख्यं करोतु, श्रियं करोतु, लक्ष्मीं करोतु अहं जै ॥

ऐसें आर्यवेदके पाठी ब्राह्मण, आगे चलें । पीठे इसी विधिसें महोत्सवकरके, चैत्यपरिपाटी, गुरुवंदन, मंरुलीपूजन, नगरदेवतादिपूजन, करके, नगरके समीप रहे; पीठे पंथमें चलें । तथा इसी रीतिसें कन्याधिष्ठित नगरमें प्रवेश करना । तिसही नगरमें विवाहकेवास्ते चले हुए वरका जी, यही विधि जाणना । तथा नित्यस्नानके अनंतर कौसुंज सूत्रकरके वधूवरके शरीरका माप करना । पीठे विवाहदिनके आये हुए, विवाहलग्नसें पहिले, तिस ही नगरका वासी, वा अन्यदेशसें आया वर, तिस ही पूर्वोक्त विधिसें, पाणिग्रहणकेवास्ते चले । तिस की बहिन विशेषकरके लूंणआदि उत्तारण करे । पीठे वर, आरुंवर और गृहस्थगुरुसहित कन्याके घरके द्वारमें आवे । तहां खडे हुए वरको, तिसके सासुजन, कर्पूरदीपकादिकरके आरात्रिक (आरति) करे । पीठे अन्य स्त्री, जलते हुए अंगारे, और लवणकरके संयुक्त, त्ररु त्ररु ऐसे शब्द करते हुए, सरावसंपुटको, वरको निरुंठन करके, प्रवेशमार्गके वामे पासे स्थापन करे । पीठे अन्य स्त्री कौसुं

जसूत्रसें अलंकृत, मंथानको लाके, तिससें, तीन वार वरके ललाटको स्पर्श करे. । पीठे वर, वाहन सें नीचे उतरके, वामे पगसे तिस अग्निलवण संयुतसंपुटको खंभित करे (तोड़े.) पीठे वरकी सासु, वा कन्याकी मामी, वा कन्याका मामा, कौसुं जवस्त्रको वरके कंठमें ढालके, खेंचता हुआ वरको मातृघरमें ले जावे. तहां विजूषाकरके, कौतुकमंगलकरके, प्रथम आसनऊपर बैठी हुई कन्याके वामे पासे, मातृदेवीके सन्मुख, वरको बिठलावे. । पीठे गृहस्थगुरु लग्नवेळामें शुजांशके हुए, पीसी हुई समी (खेजनी) की ठाल, और पीपलिकी ठाल, चंदनद्रव्यमिश्रितकरके, तिससें लीपे हुए, वधूवरके दोनों दक्षिण हाथ जोड़े. । उपर कौसुंजसूत्रसें बांधे. ॥ हस्तबंधनमंत्रः ॥

“ ॥ ॐ अहं आत्मासि, जीवोसि, समकालोसि, समचित्तोसि, समकर्मोसि, समाश्रयोसि, समदेहोसि, समक्रियोसि, समस्नेहोसि, समचेष्टितोसि, समाजिह्वाषोसि, समेच्छोसि, समप्रमोदोसि, समविषादोसि, समावस्थोसि, समनिमित्तोसि, समवचाअसि, समकृतृणोसि, समगमोसि, समागमोसि, समविहारोसि, समविषयोसि, समशब्दोसि, समरूपोसि, समगंधोसि, समस्पर्शोसि, समेंद्रियोसि, समाश्रवोसि, समबंधोसि, समसंवरोसि, समनिर्जरोसि, सम

मोक्षोसि, तत् एहि एकत्वमिदानीं अहं उँ ॥”
इति हस्तबंधनमंत्रः ॥

यहां समयांतरमें (वैदिक मतमें) मधुपर्क जक्षण, देशांतरमें वरको दो गौयां देनी, और कुलांतरमें कन्याको आजरण पहिरावणे, इत्यादि करते हैं । पीठे वधुवरको मातृघरमें बैठे हुए, कन्याके पक्षी, वेदिकी रचना करें; तिसका विधि यह है. ॥ कितनेक काष्ठस्तंज काष्ठाच्छादनोंकरके चौकूणी वेदी करते हैं; और कितनेक चारों कूणोंमें स्वर्ण, रूप्य, ताम्र, वा माटीके सात सात कलशोंको ऊपर लघु, लघु, अर्थात् प्रथम ब्रह्मा उसके ऊपर ठोटा, उसके ऊपर फिर ठोटा, एवं स्थापन करके चारों पासे चार चार आर्द्र वांसोंसे बांधके वेदि करते हैं. चारों वारणोंमें वस्त्रमय, वा काष्ठमय तोरण, और चंदन मालिका बांधते हैं; और अंदर त्रिकोण अग्निका कुंरु करते हैं. । वेदी बनाया पीठे गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त वेष धारण करके वेदिकी प्रतिष्ठा करे. । तिसका विधि यह है. ॥

वास पुष्प अक्षतों से हाथ जरके ॥

“॥ उँ नमः क्षेत्रदेवतायै शिवायै द्वाँ द्वाँ हूँ द्वाँ”
द्वः इह विवाहमंडपे आगच्छ १ इह बलिपरिजोग्यं
गृह्ण १ जोगं देहि, सुखं देहि, संततिं देहि यशोदेहि,

रुद्रिं, देहि, बृद्धिं देहि, बुद्धिं देहि, सर्वसमीहितं देहि, १ स्वाहा ॥ ”

ऐसें पढके चारों कोणोंमें न्यारेन्यारे वास, माध्य, अक्षत, क्षेप करना; तोरणकी प्रतिष्ठाजी ऐसेंही करनी. तन्मंत्रो यथा ॥

“ ॐ ह्रीं श्रीं नमो द्वारश्रिये, सर्वपूजिते, सर्वमानिते, सर्वप्रधाने, इह तोरणस्थासर्वसमीहितं देहि १ स्वाहा ॥ ” ॥ इतितोरणप्रतिष्ठा ॥

पीठे वेदिके मध्यमें अग्निकोणमें अग्निकुंभमें मंत्रपूर्वक अग्निको स्थापन करे. । अग्निस्थापन मंत्रो यथा ॥

“ ॥ ॐ रं रां रीं रूं रौं रः नमोऽग्नये, नमो बृहज्जानवे, नमोनंततेजसे, नमोनंतवीर्याय, नमोनंतगुणाय, नमो हिरण्यरेतसे, नमन्नागवाहनाय, नमो हव्यासनाय, अत्र कुंडे आगच्छ १ अवतर १ तिष्ठ १ स्वाहा ॥ ”

समयांतरमें, देशांतरमें वा कुलांतरमें, वेद्यंतरमेंही, हस्तक्षेपन करते हैं. देश कुलाचारादिमें मधुपर्क प्राशनके अनंतर, वेदि; और हस्तक्षेपसें पहिले परस्पर कंबायुऊ, बधूवरास्फालन, वेदानयन, मणिग्रथन, स्नान, जाष्टकर्म, पर्याणकर्म, वस्त्रकौसुंजसूत्रांतःकर्षणप्रमुख, कर्म करते हैं. वे देशविशेषलोकोंसें जाण लेने. व्यवहार शास्त्रोंमें नहीं कहे

हैं परंतु स्त्रीयोंको सौभाग्यप्राप्तिवास्ते, शौक आदि न होवे तिसके वास्ते, वरको वशीभूत करनेके वास्ते करते हैं. ॥

पीठे युक्त हाथवाले, नारी और नरकी कटी उपर चढे हुए वधूवर दोनोंको, गीतवाजंत्रादि बहुत आभूषणसे दक्षिण द्वारसे प्रवेश कराके वेदिके मध्यमें लावे. । पीठे देशकुलाचारसे काष्ठासनोके ऊपर, वा वेत्रासनोके ऊपर, वा सिंहासनके ऊपर, वा अधोमुखी शरमय खारीके ऊपर, वधूवरको पूर्व सन्मुख बिठलावे. । तथा हस्तलेपमें, और वेदिक र्ममें कुलाचारके अनुसार दसियां सहित कौरवस्त्र, वा कौसुंजवस्त्र, वा स्वजाववस्त्र वधूवरको पहिरावे पीठे गृहस्थगुरु, उत्तरसन्मुख मृगचर्म ऊपर बेठाहुआ, शमी, पिप्पल, कपित्थ (कवठ-एतवे ल) कुटज (कुडची-जिस वृक्षका फल इंद्रियव होता है,) बिट्ठ, आमलकके इंधनकरके अग्निको जगाके, इस मंत्रकरके घृत मधु तिल यव नाना फलोंका हवन करे ॥ मंत्रो यथा ॥

“ ॥ ॐ अहं अग्ने प्रसन्नः, सावधानो जव, तवाय मवसरः, तदाहारयेंद्र यमं नैरुतं वरुणं वायुं कुबेरमी शानं नागान् ब्रह्माणं लोकपालान् ग्रहांश्च सूर्यशशि कुजसौम्यबृहस्पतिकविशनिराहुकेतून् सुरांश्च असुरना गसुपर्णविद्युदग्निह्रीपोदधिदिवकुमारान् भुवनपतीन्

पिशाचभूतयक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषमहोरगगंधर्वान्
व्यंतरान् चंद्रार्कग्रहनक्षत्रतारकान् ज्योतिष्कान् सौध
मंशान् सनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलांतकशुक्रसहस्रारान्
तप्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरजवान् वैमानिकान्
इंद्रसामानिकपार्षद्यत्रायस्त्रिंशद्भोकपालानीकप्रकीर्णक
लौकांतिकाजियोगिकज्ञेदजिन्नांश्चतुर्णिकायानपि स
नार्यान् सायुधबलवाहनान् स्वस्वोपलक्षितचिह्नान्
अप्सरसश्च परिगृहितापरिगृहितज्ञेदजिन्नाः सप्त
खिकाः सदासिकाः साजरणा रुचकवासिनीर्दिवकुम
रिकाश्च सर्वाः समुद्रनदीगिर्याकरवनदेवतास्तदेतान्
सर्वान् सर्वाश्च इदमर्घ्यं पाद्यमाचमनीयं बलिं चरुं
हुतं न्यस्तं ग्राहय २ स्वयं गृहाण २ स्वाहा अहं ॐ ॥ ”

पीठे अग्नीतरें हुत करके प्रदीप्त अग्निके हुए,
गृहस्थगुरु, तहांसें उठके दक्षिणपासे स्थित हुई
वधूके सन्मुख बैठके, ऐसा कहे. ॥

“ ॥ ॐ अहं इदमासनमध्यासीनौ, स्वध्यासी
नौ, स्थितौ, सुस्थितौ, तदस्तु वां, सनातन संगमः,
अहं ॐ ॥ ”

ऐसें कहके कुशाग्रतीर्थोदककरके दोनोंको सींचन
करे. । पीठे वधूका पितामह, वा पिता, वा चाचा,
वा ज्ञाइ वा मातामह, वा कुलज्येष्ठ, धर्मानुष्ठान
करके उचित वेषवाला, वधूवरके आगे बैठे. । शांति
क पौष्टिकसें आरंभके विवाहसें मासपर्यंत मंगल

गान, वादित्रवादन, जोजन तांबूल वस्त्र सामग्री
सदैव करनेचहिये ॥ पीठे गुरु ॥

“॥ ॐ नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥”

ऐसे कहके, प्रथम अद्भुतपूर्ण हाथवाला होके
वधूवरके आगे ऐसा कहे. ॥

“विदितं वां गोत्रं संबंधकरणेनैव ततः प्रका-
श्यतां जनाग्रतः ”

जाना है तुमारा गोत्र, संबंध करनेसेही; तिस
वास्ते प्रकाश करो, लोकोंके आगे. । तब प्रथम वरके
पक्षीय, अपने गोत्र, अपनी प्रवर, ज्ञाति और अपने
अन्वय-वंशको प्रकाश करे, । पीठे वरकी माताके
पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, और वंशको प्रकाश
करे. । पीठे कन्याके पक्षीय, अपने गोत्र, प्रवर
ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे. । फिर कन्याकी मा-
ताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, वंशको प्रकाश
करे. । पीठे गुरु. ॥

“॥ ॐ अहं अमुकगोत्रीयः, श्यत्प्रवरः, अमुक
ज्ञातिः, अमुकान्वयः, अमुकप्रपौत्रः, अमुकपौत्रः अमु-
कपुत्रः, अमुकगोत्रीयः, श्यत्प्रवर अमुकज्ञातीयः, अ-
मुकान्वयः, अमुकप्रदौहित्रः, अमुकदौहित्रः, अमुकः
सर्ववरगुणान्वितो, वरयिता, अमुकगोत्रीया, श्यत्प्रव-
रा, अमुकज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रपौत्री, अमुक
पौत्री, अमुकपुत्री, अमुकगोत्रीया, श्यत्प्रवरा, अमुक

ज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रदौहित्री, अमुकदौहित्री अमुकावर्या तदेतयोर्वर्यावरयोर्वरवर्ययोर्नि बि
को विवाहसंबंधोस्तु शांतिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु,
धृतिरस्तु, बुद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, अहं ॐ ॥”
ऐसें कहे ॥

पीठे गुरु, वरवधूके पाससें गंध, पुष्प, धूप,
नैवेद्य करके अग्निकी पूजा करावे. । पीठे वधू
लाजांजलिको अग्निके निक्षेप करे. । पीठे फिर
तैसेंही दक्षिण पासे वधू, और वामे पासे वर बैठे. ।
पीठे गुरु वेदमंत्र पढे.

“ ॥ ॐ अहं अनादिविश्वमनादिरात्मा, अनादि
कालः, अनादिकर्म, अनादिसंबंधो, देहिनां, देहानु
मतानुगतानां, क्रोधोद्वेगद्वेषलोभैः, संज्वलनप्रत्या
ख्यानावरणाप्रत्याख्यानानंतानुबंधिभिः शब्दरूपरस
गंधस्पर्शैरिष्टानिष्ठापरिसंकलितैः संबंधो अनुबंधः
प्रतिबंधः संयोगः सुगमः सुकृतः खनुष्टितः सुनिवृत्तः
सुप्राप्तः सुलब्धो द्रव्यजावविशेषेण अहं ॐ ॥ ” यह
मंत्र पढके फेर ऐसा कहे.

“ ॥ तदस्तु वां सिद्धप्रत्यक्षं केवलिप्रत्यक्षं चतु
र्णिकायदेवप्रत्यक्षं विवाहप्रधानाग्निप्रत्यक्षं नागप्रत्यक्षं
नरनारीप्रत्यक्षं नृप्रत्यक्षं जनप्रत्यक्षं मातृप्रत्यक्षं
पितृप्रत्यक्षं मातृपक्षप्रत्यक्षं पितृपक्षप्रत्यक्षं ज्ञाति

स्वजनबंधुप्रत्यक्षं संबंधः सुकृतः सदनुष्ठितः सुप्राप्तः
सुसंगतः तत्प्रदक्षिणीक्रियतां तेजोराशिर्विज्ञावसुः॥”

ऐसे कहके तैसेही ग्रथित अंचल वरवधू, अग्निकी प्रदक्षिणा करें. तैसे प्रदक्षिणाकरके तैसेही पूर्वरी तिसें बैठे. लाजांजलीकी तीनों प्रदक्षिणामें आगे वधू और पीठे वर हो. दक्षिण पासे वधूका आसन, औरवामे पासे वरका आसन. ॥ इति प्रथमलाजाकर्म॥

पीठे वरवधूके आसन ऊपर बैठे हुए, वेद मंत्र पढे.

“ ॥ ॐ अहं कर्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थित्यस्ति निबिरुमस्ति दुःखेद्यमस्ति अष्टाविंशतिप्रकृत्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति लोभोस्ति संज्वलनोस्ति प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानोस्ति अनंतानुबंध्यस्ति चतुश्चतुर्विधोस्ति हास्यमस्ति रतिरस्ति अरतिरस्ति जयमस्ति जुगुप्सरस्ति शोकोस्ति पुंवेदोस्ति स्त्रीवेदोस्ति नपुंसकवेदोस्ति मिथ्यात्वमस्ति मिश्रमस्ति सम्यक्त्वमस्ति सप्तति कोटाकोटिसागरस्थित्यस्ति अहं ॐ ॥ ” यह वेदमंत्र पढके ऐसा कहे.

“ ॥ तदस्तु वां निकाचितनिबिरुबद्धमोहनीयकर्मोदयकृतः स्नेहः सुकृतोस्तु सुनिष्ठितोस्तु सुसंबंधोस्तु आजवमक्षयोस्तु तत् प्रदक्षिणीक्रियतां विज्ञावसुः ॥”

फेर जी तैसेही अग्निकी प्रदक्षिणा करे ॥ इति द्वितीयलाजाकर्म ॥

चारोंही लाजामें प्रदक्षिणाके प्रारंभमें वधू, अग्निमें लाजामुष्टि प्रक्षेप करे. पीछे तिन दोनोंके तैसेंही बैठे हुए, गुरु, ऐसा वेदमंत्र पढ़े.

“॥ ॐ अहँ कर्मास्ति, वेदनीयमस्ति, सातमस्ति, असातमस्ति, सुवेद्यं सातं, दुर्वेद्यमसातं, सुवर्गणाश्र वणं सातं, दुर्वर्गणाश्रवणमसातं, शुचपुङ्गवदर्शनं सातं, दुःपुङ्गवदर्शनमसातं, शुचषट्परसास्वादनं सातं, अशुचषट्परसास्वादनमसातं, शुचगंधाघ्राणं सातं, अशुचगंधाघ्राणमसातं, शुचपुद्गलस्पर्शः सातं, अशु चपुद्गलस्पर्शोऽसातं, सर्वं सुखकृत् सातं, दुःखकृद सातं, अहँ ॐ इस वेदमंत्रको पढ़के ऐसें कहे.

“ ॥ तदस्तु वां सातवेदनीयं माचूदसातवेदनीयं तत् प्रदक्षिणीक्रियतां विजावसुः ॥ ”

इति पुनः अग्निको प्रदक्षिणा करके वधूवर दोनों तैसेंही बैठ जावे. ॥ इति तृतीयलाजाकर्म ॥

पीछे गुरु ऐसा वेदमंत्र पढ़े.

“ ॥ ॐ अहँ सहजोस्ति, स्वजावोस्ति, संबंधोस्ति, प्रतिबद्धोस्ति, मोहनीयमस्ति, वेदनीयमस्ति, नामास्ति, गोत्रमस्ति, आयुरस्ति, हेतुरस्ति, आश्रवबद्धमस्ति, क्रि याबद्धमस्ति, कायबद्धमस्ति, सांसारिकसंबंधः अहँ ॐ ॥

ऐसा वेदमंत्र पढ़के, कन्याके पिताके, चाचेके, जाइके वा कुलज्येष्ठके, हाथको तिलयवकुशदूर्वासं युक्त जलसें पूरके, ऐसें कहे.

“॥ अथ अमुकसंवत्सरे, अमुकायने, अमुकरुतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवारे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुकमुहूर्ते, पूर्व कर्मसंबंधानुबद्धवस्त्रगंधमाद्यालंकृतां सुवर्णरूप्यमणि जूषण जूषितां ददात्ययं प्रतिगृहीष्व ॥ ”

ऐसे कहके वधूवरके योजित हाथमें जलक्षेप करे. तब वर कहे. “प्रतिगृह्णामि ” तदनंतर गुरु कहे.

“ सुप्रतिगृहीतास्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, रुद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, ॥ ”

पीठे प्रथम तीन लाजामें कन्याके हाथ ऊपर थे अब कन्याके हाथको नीचे करे, और वरके हाथको ऊपर करे, पीठे वरवधूको आसनसें उठाकर वरको आगे करे, और वधूको पीठे करे. । पीठे लाजाकी मुष्टि अग्निमें प्रक्षेप करकेगुरु ऐसे कहे. “ प्रदक्षिणीक्रियतां विज्ञावसुः ” वर वधूको प्रदक्षिणा करते हुए, कन्याका पिता, यावत् कन्याका कुलज्येष्ठ, वरवधूके देनेयोग्य वस्त्र, आभरण, स्वर्ण, रूप्य, रत्न, ताम्र, कांश्य, जूमि, निष्क्रय, हाथी, घोडा, दासी, गौ, बैल, पट्यंक, तूलिका, उत्सीर्षिक, दीप, शस्त्र, पाकके जांड़े, आदि सर्व वस्तुको वेदिमें द्यावे. । और जी तिसके जाइ, संबंधी, मित्रादि, स्वसंपदाके अनुसारसें देने योग्य वस्तुयें वेदिमें द्यावे. । पीठे प्रदक्षिणाके अंतमें वरवधू, तैसेंही आसन

ऊपर बैठें. नवरं इतना विशेष है कि, चतुर्थ लाजा के अनंतर वरका आसन दक्षिण पासे, और वधू, का आसन वामे पासे करणा. । पीठे गुरु, कुश दूर्वा अक्षत वास करके हस्त पूर्ण हुआ था, ऐसे कहे.

“ ॥ शक्रादिदेवकोटिपरिवृतो जोग्यफलकर्मजोगा य संसारिजीवव्यवहारमार्गसंदर्शनाय, सुनंदासुमं गले पर्यणेषीत्, ज्ञातमज्ञातं वा तदनुष्ठानमनुष्ठितमस्तु ”

ऐसे कहके वास, दूर्वा, अक्षत, कुशको वरवधूके मस्तक ऊपर क्षेप करे. । पीठे गुरुके कहनेसे वधूका पिता, जल, यव, तिलका तेल हाथमें लेके, ऐसे कहे. सुदायंददामि, प्रतिग्रहाण तव वर कहे “ प्रतिग्रहामि प्रतिग्रहीतं परिग्रहीतं ” गुरु कहे “ सुग्रहीतमस्तु सुपरिग्रहीतमस्तु ” पुनः तैसेह । वस्त्र, जूषण, हस्ति, अश्वदि दाय, देनेमें वधूके पिताका, और वरका यही वाक्य, और यही विधि है. । पीठे सर्व वस्तुके दीए हुए गुरु ऐसे कहे.

“ ॥ वधूवरौवां, पूर्वकर्मनिबन्धेन, निबिडेन, निका चितबद्धेन, अनुपवर्त्तनीयेन, अपातनीयेन, अनुपायेन, अश्लथेन, अवश्यजोग्येन, विवाहः प्रतिबद्धो बधूव, तदस्त्वखंभितोऽक्षयोऽव्ययो, निरपायो, निर्व्याबाधः, सुखदोस्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, रुद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धनसंतान वृद्धिरस्तु ॥ ”

ऐसा कहके तीर्थोदकोंकरके कुशाग्रसें सिंचन

करे. । फेर गुरु तैसेंही वधूवरको जठके मातृघरमें ले जावे, तहां ले जाके वधूवरको ऐसें कहे.

“ ॥ अनुष्ठितो वां, विवाहो, वत्सौ, सखेहौ सजो गौ, सायुषौ, सधर्मौ, समष्टुःखसुखौ, समशत्रुमित्रौ, समगुणदोषौ, समवाङ्मनःकायौ, समाचारौ, समगुणौ, जवतां ॥ ”

पीठे कन्याका पिता, करमोचनकेवास्ते गुरुप्रतें कहे. । तब गुरु ऐसा वेदमंत्र पढे.

“ ॥ ॐ अर्हं जीवत्वं कर्मणा बद्धः, ज्ञानावरणेन बद्धः, दर्शनावरणेन बद्धः, वेदनीयेन बद्धः, मोहनीयेन बद्धः, आयुषा बद्धः, नाम्ना बद्धः, गोत्रेण बद्धः, अंतरायेण बद्धः, प्रकृत्या बद्धः, स्थित्या बद्धः, रसेन बद्धः, प्रदेशेन बद्धः, तदस्तु ते मोक्षो गुणस्थानारो हक्रमेण अर्हं ॐ ॥ ”

इस वेदमंत्रको पढके फेर ऐसें कहे.

मुक्तयोः करयोरस्तु वां स्नेहसंबंधोऽखंडितः ॥ ”

ऐसें कहके करमोचन करे. । कन्याका पिता करमोचनपर्वमें जामातृ (जमाइ) के मांगेप्रमाण, स्वसंपत्तिके अनुसार बहुत वस्तु देवे. । दानविधि, पूर्वमंत्रसेंही जानना. । पीठे मातृघरसें जठके, फेर वेदिघरमें आवें. पीठे गुरु, आसनऊपर बैठे दोनोंको ऐसें कहे.

“ ॥ वृत्तम् । पूर्वं युगादिजगवान् विधिनैव येन,

विश्वस्य कार्यकृतये किल पर्यणैषीत् ॥ जार्याद्वयं
तद मुना विधिनास्तु युग्म,मेतत्सुकामपरिजोगफला
नुबन्धि ॥ १ ॥ ”

ऐसे कहके पूर्वोक्त विधिसँ अंचलमोचन करके
“वत्सौलब्धविषयौ जवतां ” ऐसे गुरुअनुज्ञात दोनो
दंपती—स्त्रीजर्ता, विविध विलासिनीयोंके गणसँ
वेष्टित, शृंगारगृहमें प्रवेश करें. । तहां पूर्वस्थापित
मदनकी कुलवृद्धानुसार पूजा करे. । पीठे तहां
वधूवरको समहीकालमें क्षीरान्नजोजन कराना.
पीठे यथायुक्तिकरके शयन गृहमें जावे. । *

पीठे तिसही आगमनरीतिकरके उत्सवसहि
त अपने घरको जावे. । पीठे वरके मातापिता, वर
को निरुंठनमंगलविधी स्वदेशकुलाचारकरके करे. ।
कंकणबंधन, कंकणमोचन, द्यूतक्रीडा, वेणीग्रंथनादि,
सर्व कर्म ज्ञी, तिस २ देशकुलाचारकरके करणे
चाहिये. । विवाहसँ पहिले वधूवर दोनोंके पक्षमें
जोजन देना. । तदनंतर धूखिजक्त, जन्यजक्त, आदि
देशकुलाचारसँ करणे. । पीठे सात दिनके अनं
तर वरवधू विसर्जन करना, तिसका विधि यह है. ।
सात दिनतक विविध जक्तिसँ पूजित जमाइको,

* इस कथनसँ यो यही सिद्ध होता है कि यौवनप्राप्तोंकाही
विवाह होना चाहिये. क्योंकि उसहि समय कामक्रीडा करनेका
विधि इस ग्रंथमें लिखा है.

पूर्वोक्त रीतिसें अंचलग्रंथन करके अनेक वस्तुदान पूर्वक तिसही आमंवरसें खगृहको पहुँचावे. । पीठे सात रात्रिपर्यंत, वा मासपर्यंत, वा ठ मासपर्यंत, वा वर्षपर्यंत स्वकुलसंपत्तिदेशाचारानुसार महोत्सव करना. सात रात्रिके अनंतर, वा मासअनंतर, कुला चारानुसारकरके कन्याके पक्षमें पूर्वोक्त रीतिकरके मातृविसर्जन करना.—गणपतिमदनादिविसर्जन विधि लोकमें प्रसिद्ध है.—और वरपक्षमें कुलकर विसर्जनविधि लिखते हैं. । कुलकरस्थापनानंतर, नित्य कुल करकी पूजा करनी. । विसर्जनकालमे कुलकरोँका पूजन करके, गुरु पूर्ववत् “ ॐ अमुककुलकराय ” इत्यादि संपूर्णमंत्र पढ़के “ पुनरागमनाय स्वाहा ” ऐसें सर्वकुलकरोँको विसर्जन करे. ॥ पीठे यह पढ़े.

“ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मंत्रहीनं च यत्कृतं ॥

तत्सर्वं कृपया देव क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥ ”

इतिकुलकरविसर्जनविधिः ॥

पीठे मंडलीपूजा, गुरुपूजा, वासदेवादि पूर्ववत्. । साधूओंको वस्त्र पात्र देना. । ज्ञानपूजा करणी. । जैन ब्राह्मणोंको याचकोंको अपर मागनेवालोंको यथासंपत्तिसें दान करणा. ।

तथा देशकुलसमयांतरमें विवाहलग्नके प्रातः हुए, वरको श्वशुरके घरको प्रातः हुए, षट् (६) आचार करते हैं. प्रथम अंगणमें आसन देना. । श्वशुर कहे

“विष्टरं प्रतिगृहाण ” तब वर कहे “ ॐ प्रतिगृह्णामि ” ऐसें कहके आसन ऊपर बैठे ॥ १ ॥ पीठे श्वशुर वरके पग प्रक्षालन करे ॥ २ ॥ पीठे दहि चंदन अक्षत दूर्वा कुश पुष्प श्वेतसरसों और जल करके श्वशुर जमाइको अर्घ्य देवे ॥ ३ ॥ पीठे आचमन देवे ॥ ४ ॥ पीठे गंधअक्षतसें तिलक करे ॥ ५ ॥ पीठे वरको मधुपर्क प्राशन करावे ॥ ६ ॥ पीठे गृहके अंदर वधूवरका परस्पर दृष्टिसंयोग और परस्पर दोनोंका नामग्रहण, शेषं पूर्ववत्. ॥

इति चतुर्दशमः विवाह संस्कारः समाप्तः ॥

अथ पंचदशम व्रतारोप संस्कारः प्रारभते ।

इहां जैनमतमें गर्जा धानसें लेके विवाहपर्यंत चतुर्दश १४ संस्कारोंकरके संस्कृत जी पुरुष, व्रतारोपसंस्कारविना इस जन्ममें प्रशंसा पात्र नहीं होता है. और परलोकमें आर्यदेशादिजावपवित्रित मनुष्य जन्म स्वर्गमोक्षादिका जाजन नहीं होता है. इस वास्ते व्रतारोपही, मनुष्योंको परमसंस्कार है. यत उक्तमागमे ।

“ बंजणो खत्तिउ वावि, वेसो सुद्धो तद्देवय ॥

पयई वादि धम्मेण, जुत्तो मुक्खस्स जायणं ॥ १ ॥ ”

अर्थः—ब्राह्मण, वा क्षत्रिय, वा वैश्य, वा शूद्र, धर्मसें युक्तहुआ, मोक्षका जाजन होता है. ॥ १ ॥

बहत्तर कलाकुशल जी, विवेकसहित जी होवे, तो जी वो नर कुशल नहीं हैं; जो, सर्वकला योंमें प्रधान जो धर्मकला तिसको नहीं जानताहो. ॥ १ ॥ परमतमें जी कहा है । 'उपनीतोपि पूज्योपि कलावानपि चार्गव । न परत्रेह सौख्यानि प्राप्नोति च कदाचन ॥ १ ॥' इसवास्ते सर्वसंस्कार मे प्रधान व्रतसंस्कार कहते हैं. । तिसका विधि यह है.

पीठले विवाहपर्यंत संस्कार गृहस्थगुरु जैन ब्राह्म णने वा छुल्लकने कराने. परंतु व्रतारोपसंस्कार तो, नि ग्रंथ यतिनेही करावणा. प्रथम गुरुकी गवेषणा करणी.

गुरु कैसे होना !

पांच महाव्रतयुक्त, ५, पांच प्रकारके आचार पाल नेमें समर्थ, ५, पांच समिति, ५, और तीन गुप्ति सहित, ३, एवं ठत्तीस गुणोंवाला गुरु होता है. । प्रतिरूप, तेजस्वी, युग प्रधान, आगमका जानकार, मधुर वाक्यवाला, गंजीर, बुद्धिमान्, उपदेश देनेमें तत्पर, ऐसा आचार्य होता है. । किसीका आखो चित दूषण अन्यआगे प्रकाशे नहीं, सोमप्रकृति वाला होवे, शिष्यादिका संग्रह करनेवाला होवे, ड्रव्यादि अजिग्रहमें जिसकी मति होवे, किसीके दूषण न बोले; चपल न होवे, प्रशांतहृदयवाला होवे, ऐसे गुणोंयुक्त गुरु होता है. । कितनेही जिन बरेंड अजरामर पदका पंथ दिखाके मोक्षको प्राप्त

हुए हैं; परं संप्रति कालमें तो, जिनप्रवचन, आचार्य नेही धारण करा है. ॥

अब प्रकारांतरकरके गुरुके ठत्तीस गुण कहते हैं. ।
आचारविनय, श्रुत विनय, विद्वेषनाविनय, दोषका परिघात, एवं चार प्रकारके विनयकी प्रतिपत्ति कर नेवाले गुरु होवे. । अथवा सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र्य, इनप्रत्येकके आठ १ जेद हैं; एवं १४, और तपके द्वादश १२ जेद हैं, ऐसे आचार्यके ठत्तीस गुण होते हैं. ।

अथवा आचारादि आठ ८, और दश प्रकारका स्थितकव्य १० द्वादश १२ तप और षडावश्यक ६ ये ठत्तीस गुण आचार्यके हैं. ।

अथवा संविज्ञ १, मध्यस्थ २, शांत ३, मृदु-को-मलस्वभाववाला ४, सरल ५, पंडित ६, सुसंतुष्ट ७, गीतार्थ ८, कृतयोगी ९, श्रोताके भावको जानने वाला १०, व्याख्यानादिलब्धिसंपन्न ११, उपदेशदे नेमें निपुण १२, आदेयवचन १३, मतिमान् १४, विज्ञानी १५, निरुपपाति १६, नैमित्तिक १७, शरीरका बलिष्ठ १८, उपकारी १९, धारणाशक्तिवाला २०, बहुत कुठ जिसने देखा २१, नैगमादि नयमतमें निपुण २२, प्रियवचनवाला २३, अच्छे मधुर गंजीर स्वरवाला २४, तप करणमें रक्त २५, सुंदर शरीर वाला २६, शुच जली प्रतिभावाला २७, वादियोंको

जीतनेवाला २७, परिषदादिको आनंदकारक २९, शुचि-पवित्र ३०, गंजीर ३१, अनुवर्त्ती ३२, अंगीकार करेका पालनेवाला ३३, स्थिरचित्तवाला ३४, धीर ३५, उचितका जाननेवाला ३६, ये पूर्वोक्त ३६, गुण आचार्यके सूत्रमें कहे हैं. ॥

ऐसें पितापरंपरायसें माने गुरुके प्राप्त हुए, वा, तिसके अज्ञावमें पूर्वोक्त गुणयुक्त अन्यगच्छीय गुरुके प्राप्त हुए, गृहस्थको व्रतारोपणविधि योग्य है, सो विधि यह है. ॥ चतुर्दश संस्कारोंकरके संस्कृत ऐसा गृहस्थी गृहस्थधर्मको अंगीकार करने योग्य होता है. ।

कहा हे की.

अक्रुद्ध १, रूपवान् २, प्रकृतिसौम्य ३, लोकप्रिय ४, अक्रूरचित्त ५, जीरु ६, अशठ ७, सुदाक्षिण्य ८, लज्जालु ९, दयालु १० मध्यस्थ सोमदृष्टि ११, गुणरागी १२, सत्कर्त्ता १३, सुपक्षयुक्त १४, सुदीर्घ दर्शी १५, विशेषज्ञ १६, वृद्धानुग १७, विनीत १८, कृतज्ञ १९, परहितार्थकारी २०, और लब्धलक्ष २१ इकीस गुणोंवाला श्रावक धर्मरत्नके योग्य होता है; अर्थात् इकीस गुण जिस जीवमें होवे, अथवा प्रायः नवीन उपार्जन करे, तिस जीवमें उत्कृष्ट योग्यता माननी. और थोड़ेसे थोड़े इकीस गुणोंमेंसे चाहे कोइ दश गुण जीवमें होवे, तिसको जघन्य योग्य

तावाला जानना, ११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२० शेष गुणवालेको मध्यमयोग्यतावाला जानना. इन इकीस गुणोंका विस्तारसहित वर्णन अज्ञानतिमिरजास्करके द्वितीय खंभके ४६ पृष्ठसे लेके ८३ पृष्ठपर्यंतहे उहांसें देख लेना.

योगशास्त्रमे श्रीहेचंडाचार्यनेंजी एसाहि कहाहै की.

न्यायसें धन उपार्जन करनेवाला; शिष्टाचारकी प्रशंसा करनेवाला, जिनका कुलशील अपने समान होवे, ऐसे अन्य गोत्रवांलेके साथ विवाह किया है जिसने; पापसें करनेवाला, प्रसिद्ध देशाचारको करनेवाला, अर्थात् देशाचारका उल्लंघन नहीं करनेवाला, किसी जगे जी अवर्णवाद नहीं बोलनेवाला, राजा दिकोंमें विशेषसें अवर्णवाद वर्जनेवाला; । अतिप्रकट, वा अति गुप्त स्थानमें नहीं रहनेवाला, अछा पामोसी होवे तिस घरमें रहनेवाला, जिस मकानके अनेक आनेजानेके रस्ते होवें तिस घरको वर्जनेवाला; । सदाचारोंसें संग करनेवाला, मातापिताकी पूजा नक्ति करनेवाला, उपद्रवसंयुक्त स्थानको त्यागनेवाला, जगत्में जो कर्म निंदनीक होवे तिसमें प्रवृत्त नहीं होनेवाला; । अपनी आमदनीअनुसार खर्च करनेवाला, अपने धनके अनुसार वेष रखनेवाला; बुद्धिके आठ गुणोंसें संयुक्त निरंतर धर्मों पदेश श्रवण करनेवाला; अजीर्णमें जोजनका त्यागी

वखतसर साम्यतासैं जोजन करनेवाला, एक दूसरेकी हानी न होवे इस रीतिसैं धर्म अर्थ कामको सेवने वाला; । यथायोग्य अतिथि साधु और दीनकी प्रति पत्ति करनेवाला, सदा आग्रहरहित, गुणोंका पक्ष पाती; । देशकालविरुद्धचर्या त्यागनेवाला, । कोइ जी कार्य करनेमें अपना बलाबल जाननेवाला, जे पांच महाव्रतमें स्थित होवे और ज्ञानवृद्ध होवे तिनकी पूजा नक्ति करनेवाला, पोषणेयोग्यका पोषण करने वाला, । दीर्घदर्शी, विशेषज्ञ, कृतज्ञ, लोकवद्वज्ज, लज्जालु, दयालु, सौम्य, परोपकार करणेंमें समर्थ, काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, हर्ष, इन षट् ६ अंत रंग बैरियोंके त्याग करनेमें तत्पर, पांच इंद्रियोंके समूहको वश करनेवाला, ऐसा पुरुष गृहस्थधर्मके वास्ते कदपता है ॥ १० ॥

ऐसे पुरुषको व्रतारोप करना चाहिये । प्रायःकरके व्रतारोपमें गुरु शिष्यके वचन प्राकृत जाषामें होते हैं, क्यों कि गर्जाधानादि विवाहपर्यंत संस्कारोंमें प्रायः करके गुरुकेही वचन हैं, शिष्यके नहीं और गुरु प्रायः शास्त्रविद् होते हैं, इसवास्ते संस्कृतही बोलते हैं. । इहां व्रतारोपमें बाल, स्त्री, मूर्ख शिष्यों का क्षमाश्रमणदानपूर्वक वचनाधिकार है, तिस वास्ते तिनको संस्कृत उच्चार असामर्थ्य होनेसैं प्राकृत वाक्य है. तिसकी साहचर्यतासैं तिसके

प्रबोधवास्ते, गुरुके वचन जी, प्राकृतही है. ॥ यत उक्तमागमे ॥

“ ॥ मुत्तूण दिठ्ठिवायं कालियउक्काळियंगसिद्धंतं ॥

थीबालवायणठ्ठं पाइयमुइयं जिणवरोहिं ॥ १ ॥ ”

अर्थ:—दृष्टिवादको वर्जके कालिक उत्कादिक अंगसिद्धांतको स्त्रीबालकोंके वाचनार्थ जिनवरोंने प्राकृत कथन करे है. ॥ यथाच ॥

बालस्त्रीवृद्धमूर्खाणां नृणां चारित्रकांक्षिणाम् ॥

अनुग्रहाय तत्त्वज्ञैः सिद्धांतः प्राकृतः कृतः ॥ १ ॥

और दृष्टिवाद बारमा अंग, परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वानुयोग ३, पूर्वगत ४, चूलिकारूप ५ पंचविध संस्कृतमेंही होता है, सो बालस्त्रीमूर्खको पठनीय नहीं है. संसारपारगामी तत्त्वउपन्यासके वेत्ता गीता थोंकोंही पठनीय है. शेष एकादशांग कालिक उत्कादिकादिशास्त्र योगवाहि साधु साध्वी और संयमी बालकोंके पढने योग्य हैं. इसवास्तेही अरिहंत जगवंतोंने एकादशांगादि शास्त्र प्राकृतमें करे हैं. तिसवास्ते ब्रतारोपमें जी, यहस्थ बाल स्त्री मूर्ख जनोके उपकारार्थ और, तैसें यतियोंकेजी, वचन, प्राकृतमें कहे है. ॥

अथ मृडु, ध्रुव, चर, क्षिप्र नक्षत्रोंमें प्रथम जिह्वा, तप, नंदी, आलोचनादि कार्य करणे शुभ है. और मंगल, शनि, विना सर्व वारोंमें. । वर्ष,

मास, दिन, नक्षत्र, लग्न शुद्धिके हुए, विवाहदीक्षा प्रतिष्ठावत्, शुभ लग्नमें गुरु तिसके घरमें शांतिक पौष्टिक करके, फेर देवघरमें, शुभ आश्रममें, अन्यत्र, वा, यथाकल्पित समवसरणको स्थापन करे. । पीठे स्नान करके स्वघरमें महोत्सवसहित आये हुए श्रावकको पूर्वाभिमुख गुरु, अपने वामे पासें स्थापके ऐसें कहे—कैसे श्रावकको—सकद् श्वेत वस्त्र और श्वेत उत्तरासंग धारण किया है जिसने, तथा मुखवस्त्रिका हाथमें धारण करी है जिसने, तथा जिसकी चोटी बांधी हुई है, चंदनका मस्तकमें तिलक करा है जिसने, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत वा उत्तरीय, वा उत्तरासंग धारण किया है जिसने ऐसे श्रावकको—क्या कहे सो कहते हैं ।

“सम्मत्तंमि उलळे, यइयाइं नरयतिरियदाराइं ॥
 दिवाणि माणुसाणि अ, मुक्कसुहाइं सहीणाइं ॥ १ ॥”
 अर्थः—सम्यक्त्वके लान्न हुए, नरकतिर्यचगतिके द्वार ढांके हैं, और देवता मनुष्य मोक्षके सुख स्वाधीन हैं. । पीठे गुरुकी आज्ञासें श्राद्धजन, नाति केर अद्भुत सुपारीसें पूर्ण हस्त करके परमेष्ठिमंत्र पढ़ता हुआ समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे. । पीठे गुरुके पास आयकर, गुरु श्राद्ध दोनोही श्या पथिकीपम्बिकमे. । पीठे आसन उपर बैठे गुरुके आगे, श्राद्धजन ऐसें कहे ॥

“ इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए
निसीहिआए मण्णए वंदामि ॥ जगवन् इच्छाका
रेण तुप्पे अहं सम्मत्ताइतिगारोवणिअंनंदिककूव
णियं वासक्केवं करेह ॥ ”

पीठे गुरु, वासांको, सूरिमंत्रसें, वा, गणिविद्या
अर्थात् वर्द्धमान विद्यासें, अजिमंत्रके, परमेश्वि और
कामधेनु दोनों मुद्राकरके, पूर्वाजिमुख खमा होके,
वामे पासे रहे श्रावकके शिरमें निक्षेप करे. । तिस
के मस्तकके उपर हाथ रखके, गणधर विद्यासें रक्षा
करे. गुरु आसनउपर बैठ जावे, और श्राद्ध पूर्व
वत् समवसरणको प्रदक्षिणा करके, गुरु आगे कृपा
श्रमण देके कहे.

“ ॥ इच्छाकारेण तुप्पे अहं सम्मत्ताइतिगारोव
णिअं चेइआइं वंदावहे ॥ ”

पीठे गुरु और श्रावक दोनो, चार वर्द्धमानस्तु
तियों करके चैत्यवंदन करें. । जो ठंदसें वर्द्धमान होवे,
और चरम जिनकी प्रथम स्तुतिवाली होवे,
तिनको वर्द्धमानस्तुति कहते हे. । पीठे चारस्तुतिके
अंतमें “ श्रीशान्तिदेवाराधनार्थं करेमि कासगं वंद
णवत्तियाण पूअणवत्तियाण सक्कारवण सण जावअ
प्पाणं वोसिरामि ” सत्ताइस उद्वासप्रमाण अर्थात्
‘ सागरवरगंजीरा ’ तक चतुर्विंशतिस्तव चिंतवन
करे. । पीठे ‘ नमो अरिहंताणं ’ कहके पारे. । पार

केहे ' नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुज्यः ' यह कहके स्तुति पढे । सोलिखतेहें ।

“ श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाज्यर्चितांग्रये ॥१॥ ” अथवा “ शांतिः शांतिकरः, श्रीमान् शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥१॥ ” पीठे

“ ॥ श्रुतदेवताराधनार्थं करेमि काउसगंगं अन्नं उससिएणंयावत्अप्पाणं वोसिरामि ॥ ”

कायोत्सर्गमें एक नवकार चिंतन करे. पीठे ' नमो अरिहंताणं ' कहके पारे, पारके ' नमोर्हत् कहके स्तुति ॥ यथा ॥

‘ ॥ सुअदेवया जगवई, नाणावरणीयकम्मसंधायं ॥, तेसिं खवउ सययं, जेसिं सुयसारेजत्ती ॥ १ ॥ ” अथवा

“ श्वसितसुरजिगंधालब्धजृंगी कुरंगं, मुखशशि नमजखं विज्रति या विजर्ति ॥ विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचिल्यप्रजावा, सकलसुखविधात्री प्राणजाजां श्रुतांगी ॥ १ ॥ ”

“ क्षेत्रदेवताराधनार्थं करेमि काउसगंगं अन्नं उससिएणंयावत्अप्पाणं वोसिरामि ॥ ”

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीठे ' नमो अरिहंताणं ' कहके पारे, पारके ' नमोर्ह कहके पढे ॥

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ॥
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

“ ॥ जुवनदेवताराधनार्थं करेमि काउसगं अन्न
ह उससिएणं—यावत्—अप्पाणं वोसिरामि ॥ ”

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीठे
‘नमोअरिहताणं’ कहके पारे, पारके ‘ नमोर्हत् कह
के स्तुति पढे. ॥

“ज्ञानादिगुणयुक्तानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥
विदधातु जुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥”

“ शासनदेवताराधनार्थं करेमि काउसगं अन्न
ह ॥ ” कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीठे
‘नमोअरिहंताणं ’ कहके पारे, पारके ‘ नमोर्हत्सि
झा ॥ ’ कहके स्तुति पढे.

“ या पाति शासने जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी ॥
साजिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, ज्ञूयाच्छासनदेवता ॥ १ ॥ ”

“ समस्तवैयावृत्यकराराधनार्थं करेमि काउसगं
अन्नह ॥ ” कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे,
पीठे ‘ नमो अरिहंताणं ’ कहके पारे, पारके ‘ नमो
र्हत्सिझा ’ कहके स्तुति पढे.

“ ये ये जिनवचनरता वैयावृत्योद्यताश्च ये नित्यम् ॥
ते सर्वे शान्तिकरा चवंतु सर्वाण्युदकाद्याः ॥ १ ॥ ”

‘ नमो अरिहनाणं ’ कहके बैठके “ नमुश्रुणं ॥

जावंतिचेइयाइं० ” और “अर्हणादिस्तोत्र ” पढे.
सो लिखते हे.

अरिहाण नमो पूअं, अरहंताणं रहस्स रहिआणं ॥

पयओ परमिठ्ठीणं, अरुहंताणं धुअरयाणं ॥ १ ॥

निइदु अठकम्मिधणाण, वरणाणदंसणधराणं ॥

मुत्ताण नमो सिद्धाणं, परमपरमिठ्ठिज्जयाणं ॥ २ ॥

आयारधराण नमो, पंचविहायारसुठ्ठियाणं च ॥

नाणीणायरियाणं, आयारुवएसयाण सया ॥ ३ ॥

वारसविहं अपूव्वं, दिंताण सुअं नमो सुअहराणं ॥

सययमुवज्जायाणं, सज्जायज्जाणजुत्ताणं ॥ ४ ॥

सव्वेसिं साहूणं, नमो तिगुत्ताण सव्वलोएवि ॥

तवनियमनाणदंसण, जुत्ताणं बंजयारीणं ॥ ५ ॥

एसो परमिठ्ठीणं पंचन्हवि जावओ नमुक्कारो ॥

सव्वस्स कीरमाणो, पावस्स पणासणो होइ ॥ ६ ॥

जुवणेवि मंगलाणं, मणुयासुरअमरखयरमहियाणं ॥

सव्वेसिमिमो पढमो, होइ महामंगलं पढमं ॥ ७ ॥

चत्तारि मंगलं मे, हुंतु अरहा तहेव सिद्धा य ॥

साहू य सव्वकालं, धम्मो य तिक्षोयमंगल्लो ॥ ८ ॥

चत्तारि चैव ससुरा, सुरस्स लोगस्स उत्तमा हुंति ॥

अरिहंत सिद्ध साहू, धम्मो जिणदेसियमुयारो ॥ ९ ॥

चत्तारिवि अरिहंते, सिद्धे साहू तहेव धम्मं च ॥

संसारघोररक्कस, जएण सरणं पवज्जामि ॥ १० ॥

अहअरहओ जगवओ, महइ महा वद्धमाणसामिस्स

पण्यसुरेसरसेहर, वियलिकुसुमुच्चयकमस्त ॥ ११ ॥
 जस्त वरधम्मचक्रं, दिणयरविंबव्व जासुरच्छायं ॥
 तेण पज्जलंतं, गच्छइ पुरयो जिणंदस्त ॥ १२ ॥
 आयासं पायालं, सयलं महिमंरुलं पयासंतं ॥
 मिच्छत्तमोहतिमिरं, हरेइ तिण्हंपि लोयाणं ॥ १३ ॥
 सयलंमिवि जियलोए, चिंतियमित्तो करेइ सत्ताणं ॥
 रक्कं रक्कसमाइणि, पिसायगहन्नूअजरकाणं ॥ १४ ॥
 लहइ विवाए वाए, ववहारे जावयो सरंतो अ ॥
 जूए रणे अ रायं, गणे अ विजयं विसुळ्पपा ॥ १५ ॥
 पच्चूसपयोसेसुं, सययं नव्वो जणो सुहज्जाणो ॥
 एअं जाएमाणो, मुक्कं पइ साहगो होइ ॥ १६ ॥
 वेअलरुद्धाएव, नरिंदकोहंमिरेवईणं च ॥
 सव्वेसिं सत्ताणं, पुरिसो अपराजियो होइ ॥ १७ ॥
 विज्जुव पज्जलंती, सव्वेसुवि अक्करेसु मत्ताओ ॥
 पंचनमुक्कारपए, इक्किक्के उवरिमा जाव ॥ १८ ॥
 ससिधवलसलिलनिम्मल,आयरसहं च वन्नियं विंडुं ॥
 जोयणसहप्पमाणं, जात्तासयसहस्सदिप्पंतं ॥ १९ ॥
 सोलससु अक्करेसु, इक्किक्कं अक्करं जगज्जोअं ॥
 नवसयसहस्समहणो, जंमि छियो पंच नवकारो ॥ २० ॥
 जो गुणइ हु इक्कमाणो, नविओ जावेण पंच नवकारं ॥
 सो गहइ सिवलोयं, उज्जोअंतो दसदिसाओ ॥ २१ ॥
 तवनियमसंजमरहो, पंचनमोक्कारसारहिनिउत्तो ॥
 नाणतुरंगमजुत्तो, नेइ फुडं परमनिवाणं ॥ २२ ॥

सुकृष्णा सुकृमणा, पंचसु समिहसु संजय तिगुत्तो ॥
 जे तम्मि रहे लग्गा, सिग्घं गहंति सिवलोश्चं ॥२३॥
 थंजेइ जळं जलणं, चिंतियमित्तोवि पंच नवकारो ॥
 अरिमारिचोरराजल, घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २४ ॥
 अठेवय अठसयं, अठसहस्सं च अठकोमीओ ॥
 रक्कंतु मेसरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ २५ ॥
 नमो अरहंताणं, तिलोयपुज्जो अ संथुओ जयवं ॥
 अमरनररायमहिओ, अणाइ निहणो सिवं दिसउ ॥२६॥
 निष्ठा विअ अठ कम्मो, सिवसुइ जूओ निरंजणो सिद्धो
 अमर नरराय महिओ, अणाइ निहणो सिवं दिसउ ॥२७॥
 सवे पथोसमठर, आहिअहिअया पणासमुवयंति ॥
 डुगुणीकयधणुसऊं, सोउपि महाधणुसहस्सं ॥ २८ ॥
 इय तिहुअणप्पमाणं, सोलसपत्तं जळंतदित्तसरं ॥
 अठारअऊवलयं, पंचनमुक्कारचक्रमिणं ॥ २९ ॥
 सयलुज्जोइअजुवणं, निद्वाविअसेससत्तुसंघायं ॥
 नासिअमिष्ठत्ततमं, विअलियमोहं गयतमोहं ॥ ३० ॥
 एयस्स य मज्जहो, सम्मदिष्ठीवि सुऊचारिन्ती ॥
 नाणी पवयणजत्तो, गुरुजणसुस्सूसणापरमो ॥ ३१ ॥
 जो पंच नमुक्कारं, परमो पुरिसो पराइ जत्तीए ॥
 परियत्तेइ पइदिणं, पयओ सुऊप्पओगप्पा ॥ ३२ ॥
 अठेवय अठसया, अठसहस्सं च अठलरकं च ॥
 अठेवय कोडीओ, सो तइयजवे लहइ सिद्धिं ॥३३॥
 एसो परमो मंतो, परमरहस्सं परंपरं तत्तं ॥

नाणं परमं णेअं, सुद्धं ज्जाणं परं ज्ञेयं ॥ ३४ ॥
 एवं कवयमज्ञेयं, खाइयमच्छं पराशुवणरक्खा ॥
 जोईसुन्नं बिंदु, नाथो तारालवो मत्ता ॥ ३५ ॥
 सोलसपरमक्खरबीअबिंदुगवो जगुत्तमो जोओ ॥
 सुअबारसंगसायर, मह्छपुव्वपरमओ ॥ ३६ ॥
 नासेइ चोरसावय, विसहरजलजलणबंधणसयाइ ॥
 चिंतिज्जंतो रक्खस, रणरायजयाइ जावेण ॥ ३७ ॥

॥ इति अरिहणादिस्तोत्रम् ॥

इस अरिहणादि स्तोत्रको पढके “जय वीथराय जगगुरु०” इत्यादि गाथा पढे. पीठे आचार्य उपाध्याय गुरु साधुओंको वंदना करे. । यह शक्रस्तव विधि, गुरु और श्रावक दोनोंही करे. । चैत्यवंदनके अनंतर. श्राद्ध, दामाश्रमणदानपूर्वक कहे.

“ ॥ जगवन् सम्यक्त्वसामायिकश्रुतसामायिकदे शविरतिसामायिकआरोवणिअं नंदिकहावणिअं काउ सगं करेमि ॥ ”

गुरु “कहे करेह” तब श्रावक “सम्मत्ताइतिगारोव णिअं करेमि काउसगं अनह्व०” इत्यादि कहके सत्ताइस उह्वास प्रमाण अर्थात् ‘सागरवरगंजीरा खग कायोत्सर्ग करे । पीठे नमो अरिहंताणं कहके पारके चतुर्विंशतिस्तव अर्थात् लोगस्स संपूर्ण पढे । पीठे मुखवस्त्रिका प्रतिवेखनपूर्वक श्रावक द्वादशा वर्त्त वंदन करे, फिर दामाश्रमण देके कहे “जग

वन् सम्मत्ताइतिगं आरोवेह ” गुरु कहे “आरो वेमि ” पीठे श्रावक गुरुके आगे खडा होके, अंजलि करके, मुखवस्त्रिकासें मुखाब्जादन करके, तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढे । पीठे सम्यक्त्वदंरुक पढे. सयथा ॥

“ ॥ अहणं जंते तुह्माणं समीवे मिहत्ताओ पडी कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि । तंजहा दवओ खित्तओ कालओ जावओ । दवओणं मिहत्तकारणाइं पच्चक्खामि सम्मत्तकारणाइं उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अद्यप्पजिई अन्नउत्तिण्ण वा अन्नउत्तिअदेवयाणि वा अन्नउत्तियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइ आणि वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुविं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा । खित्तओणं इहेव वा अन्नह वा । कालओणं जावज्जीवाए । जावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि जाव ठलेणं न ठलिज्जामि जाव सन्निवाएणं नाज्जिजविस्सामि जाव अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परिणामो मे न परिवडइ ताव मे एअं सम्मदंसणं अन्नह रायाज्जिओगेणं बलाज्जिओगेणं गणाज्जिओगेणं देवयाज्जिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारएणं वोसिरामि ॥ ”

ऐसैं तीनवार दंडक पाठ कहना ॥ अन्ये तु दंड कमिहमुच्चारयंति यथा ॥

“ ॥ अहणं जंते तुह्याणं समीवे मिहत्ताओ पन्नि
कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अज्जा
प्पज्जिइ अन्नउच्चिए वा अन्नउच्चियदेवयाणि वा अन्न
उच्चियपरिग्ग हियाणि चेइआणि वंदित्तए वा नमं
सित्तए वा पुविं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संल
वित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा
साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा अन्नह रायान्नि
ओगेणं गणान्निओगेणं बलान्निओगेणं देवयान्नि
ओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तं चउव्विहं ।
तंजहा । दवओखित्तओ कालओ जावओ । दवओ
णं दंसणदवाइं अंगीकयाइं । खित्तओणं उट्ठलोए
वा अहोलोए वा तिरिअलोए वा । कालओणं जाव
ज्जीवाए । जावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि
जाव ठलेणं न ठलिज्जामि जाव सन्निवाएणं नान्नि
जविस्सामि अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परि
णामो मे न परिवरुइ ताव मे एसा दंसणपन्निवत्ती ॥

इति गुरुविशेषेण द्वितीयो दंरुकः ॥ प्रथम दंरु
क दोनोमेंसें कोइ एक दंरुक तीन वार उच्चारण
करे. पीठे गाथा ॥

“ इअ मिहत्ताओ विरमिअ सम्मं उवगम्म जण
इ गुरुपुरओ ॥ अरिहंतो निस्संगों, मम देवो दक्ख
णा साहू ॥ १ ॥ ”

गुरु तीन वार यह गाथा पढके श्राद्धके मस्तको

परि वासक्षेप करे. । पीठे गुरु, आसन ऊपर बैठके गंध अक्षत वासांको सूरिमंत्रसें, वा गणिविद्यासें मंत्रे. । पीठे गंधाक्षत वासांको हाथमें लेके जिन चरणोंको स्पर्श करावे. । पीठे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओंको देवे. ते साधुआदि, मुष्ठीमें लेके वे. । पीठे श्राद्ध गुरुके आगे क्षमाश्रमण देके कहे ॥ “ जयवं तुप्रे अहं सम्मत्ताश्यतीअंशारोवेह । ” गुरुकहे “ आरोवेमि ” फिर श्रावक क्षमाक्षमण देके श्रावक “ कहे ” इतिमी अणुसाधु गुरु कहे: “ व्रंदित्वा क्षमाश्रमण देके कहे “ तुह्माणं पवेश्यं संदिसह साहूणं पएवेमि ” गुरु कहे “ पवेयह ” पीठे श्रावक परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, समयसरणको प्रदक्षिणा करे. । और संघ पूर्वे दिये हुए वासांको, तिसके मस्तकोपरि क्षेपण करे. । गुरु आसनऊपर बैठे, वहांसें लेके वासक्षेपपर्यंत क्रिया, तीन बार इसहि साहूणं पएवेमि उए पए १५५९ — १५६० — १५६१ — १५६२ परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, समयसरणको प्रदक्षिणा करे. । और संघ पूर्वे दिये हुए वासांको, तिसके मस्तकोपरि क्षेपण करे. । गुरु आसनऊपर बैठे, वहांसें लेके वासक्षेपपर्यंत क्रिया, तीन बार इसहि रीतिसें करना. । फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे “ तुह्माणं पवेश्यं ” फिर क्षमाश्रमण देके कहे “ साहू णं पवेश्यं संदिसह काउसगं करेमि ” गुरु कहे

“ करेह ” पीठे श्रावक-सम्मत्तादितिगस्सथिरीकर
णहं करेमि काउसग्गं अन्नहं-सागरवरगंजीरातक
कायोत्सर्ग करे. पारके संपूर्ण लोगस्स कहे. । पीठे
चारथुश्वर्जित शक्रस्तवसें चैत्यवंदन करे. । पीठे
श्रावक, गुरुको तीन प्रदक्षिणा देवे. पीठे आसन
ऊपर बैठा हुआ गुरु, श्रावकको आगे बिठाके निय
म देवे. ॥ नियमयुक्तिर्यथा ॥

गुलर, पल्लवण, काकोडुंबरि, वट और पिप्पल,
ये पांच जातिके फल ५. मांस, मदिरा, माखण
और मधु, ये चार विकृति ४-एवं ९-अज्ञात फल
१०, अज्ञात पुष्प ११, हिम (बरफ) १२, विष १३,
करहे (ओखे-गडे) १४, सर्वसच्चित्तमही १५,
रात्रिजोजन १६, घोलवना-काचे दूध दहि ठाठमें
गेरा हुआ विदल १७, बड़ंगण १८, पंपोटा-खसख
सका दोमा १९, सिंघाडे २०, वायंगण २१, और
कायंबाणि २२, येह बाबीस द्रव्य श्रावकोंको जह
ण करने योग्य नहीं है. अन्य प्रकारसे २२ अजदय
यह हे की पांच जातिके उंबरादि फल ५ चार महा
विगण, हिम १०, विष ११, करह १२, सर्व मृत्तिका
१३, रात्रि जोजन १४, बहुबीज वाले फल १५, अनं
त काय १६, अचार १७, घोलवना १८, वेड़ंगण १९,
अज्ञात फल फूल २०, तुल २१, चन्नितरस २२ ऐसे
नियम देके यह गाथा उच्चारण करावे ॥

“अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥
जिणपणत्तं तत्तं, इत्थं समत्तं मए गहिअं ॥ १ ॥”

तदनंतर अरिहंतको वर्जके अन्यदेवको नमस्कार करनेका, जैनयति महाव्रतधारी शुद्ध प्रह्वकको वर्जके अन्य लिंग विप्रादिकोंको जावसें अर्थात् मोक्षलाभ जानके वंदना करनेका, और जिनोक्त सप्त तत्त्वको वर्जके तत्त्वांतरकी श्रद्धा करनेका, नियम करना.

अन्य देव और अन्य लिंग विप्रादिकोंको नमस्कार और दान, लौकिकव्यवहारकेवास्ते करना. और अन्यमतके शास्त्रका श्रवण पठन भी, ऐसेही जानना. । पीछे गुरु सम्यक्त्वकी देशना करे. ॥ सोब ताते हे. ॥

मानुष्यमार्यदेशश्च जातिः सर्वाक्षपाटवम् ॥

आयुश्च प्राप्यते तत्र कथंचित्कर्मलाघवात् ॥ १ ॥

प्राप्तेषु पुण्यतः श्रद्धा, कथकः श्रवणेष्वपि ॥

तत्त्वनिश्चयरूपं तद्बोधिरत्नं सुदुर्लभम् ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

कुसुमयसुईण महणं सम्मत्तं जस्स सुद्धिअं हियए ॥
तस्स जगुज्जोयकरं नाणं चरणं च जवमहणं ॥ १ ॥

अर्थः—मनुष्यजन्म १, आर्यदेश २, उत्तमजाति ३, सर्वइंद्रि संपूर्ण ४, आयुः ५, ये कथंचित् कर्म की लाघवतासें प्राप्त होते हैं. । पुण्योदयसें पूर्वोक्त

प्राप्ति हुये जी श्रद्धा १, शुद्ध प्ररूपकका योग २, और सुणनेसें तथानिश्चयरूप बोधिरत्न सम्यक्त्व ३, ये अतिही दुर्लभ हैं. ॥ कुत्सितसमयएकांतवादि योंके शास्त्र और तिनकी श्रुतियोंको मथन करनेवाला सम्यक्त्व, जिसके हृदयमें अङ्गीतरें स्थित हैं, तिस पुरुषको जगत्के उद्योत करनेवाले, और जव—संसारको मथनेवाले, ज्ञान और चारित्र प्राप्त होते हैं. ॥

॥ श्लोकाः ॥

या देवे देवताबुद्धिर्गुरौ च गुरुतामतिः ॥
 धर्मे च धर्मधीः शुद्धा सम्यक्त्वमिदमुच्यते ॥ १ ॥
 अदेवे देवबुद्धिर्या गुरुधीरगुरौ च या ॥
 अधर्मे धर्मबुद्धिश्च मिथ्यात्वं तद्विपर्ययात् ॥ २ ॥
 सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः ॥
 यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः ॥ ३ ॥
 ध्यातव्योयमुपास्योयमयं शरणमिष्यताम् ॥
 अस्यैव प्रतिपत्तव्यं शासनं चेतनाऽस्ति चेत् ॥ ४ ॥
 ये स्त्रीशस्त्रादसूत्रादिरागाद्यंककलंकिताः ॥
 निग्रहानुग्रहपरास्ते देवा स्युर्न मुक्तये ॥ ५ ॥
 नाढ्यादृहाससंगीताद्युपलवविसंस्थुलाः ॥
 लंजयेयुः पदं शांतं प्रपन्नान् प्राणिनः कथं ॥ ६ ॥
 महाव्रतधरा धीरा नैद्व्यमात्रोपजीविनः ॥
 सामायिकस्था धर्मोपदेशका गुरवो मताः ॥ ७ ॥
 सर्वाजिज्ञाषिणः सर्वज्ञोजिनः सपरिग्रहाः ॥

अन्नह्यचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥ ८ ॥
 परिग्रहारंजमग्नास्तारयेयुः कथं परान् ॥
 स्वयं दरिद्रो न परमीश्वरी कर्तुमीश्वरः ॥ ९ ॥
 दुर्गतिप्रपतत्प्राणिधारणारूढं उच्यते ॥
 संयमादिर्दशविधः सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ १० ॥
 अपौरुषेयं वचनमसंज्ञवि जवेद्यदि ॥
 न प्रमाणं जवेद्वाचां ह्यासाधीना प्रमाणात् ॥ ११ ॥
 मिथ्यादृष्टिजिरारव्यातो हिंसाद्यैः कलुषीकृतः ॥
 स धर्म इति चित्तोपि जवत्रमणकारणम् ॥ १२ ॥
 सरागोपि हि देवश्चेकुरुरब्रह्मचार्यपि ॥
 कृपाहीनोपि धर्मः स्यात् कष्टं नष्टं हहा जगत् ॥ १३ ॥
 शमसंवेगनिर्वेदानुकंपास्तिक्यलक्षणैः ॥
 लक्षणैः पंचज्ञिः सम्यक् सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥ १४ ॥
 स्थैर्यं प्रज्ञावनाज्ञक्तिः कौशलं जिनशासने ॥
 तीर्थसेवा च पंचास्य जूषणानि प्रचक्ष्यते ॥ १५ ॥
 शंका कांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रशंसनम् ॥
 तत्संस्तवश्च पंचापि सम्यक्त्वं दूषयंत्यमी ॥ १६ ॥

अर्थः—साचे देवमें जो देवपणेकी बुद्धि, साचे गुरुके विषे गुरुपणेकी बुद्धि और साचे धर्मके विषे धर्मकी बुद्धि, कैसी बुद्धि ? शुद्धा सूधी निश्चल संदेहरहित, इसको सम्यक्त्व कहतें हैं. । ऐसी सम्यक्त्वकी बुद्धि थोड़े वखत जी जिसको आजा वेगी, सो प्राणि अर्द्धपुनलपरावर्तकालमेंही संसार

सैं निकलके मोक्षको प्राप्त होगा, यह निश्चय जाणना. यत उक्तम् ॥

अंतोमुहुत्तमित्तं पि फासियं जेहिं हुज्ज सम्मत्तं ॥

तेसिं अवट्ट पुग्गलपरिअट्टो चेव संसारो ॥ १ ॥

भावार्थः—अंतर्मुहूर्तमात्र ची जिनोंने सम्यक्त्व स्पर्श किया है, तिनोंका अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तही उत्कृष्ट संसार जाणना, तदनंतर अवश्यमेव मोक्षको प्राप्त होवे. इति सम्यक्त्वस्वरूपम् ॥ १ ॥

अथ मिथ्यात्वस्वरूपमाह ॥ जिसमें देवके गुण नहीं हैं, ऐसे अदेवमें देवकी बुद्धि—जैसें तममें उद्योतकी बुद्धि । जिसमें गुरुके गुण नहीं हैं, ऐसे अगुरुमें गुरुकी बुद्धि—जैसें नीबमें आम्र की बुद्धि । अधर्म यागादि, जीवहिंसादिक के विषे धर्म की बुद्धि—जैसें सर्पके विषे पुष्पमालाकी बुद्धि, सो मिथ्यात्व है. सम्यक्त्वसें विपर्यय होनेसें, अर्थात् साचे देवके ऊपर अदेवपणेकी बुद्धि, जैसें कौशिक (ब्रूअरु) की सूर्यके तेजऊपर अंधकारकी बुद्धि, साचे गुरुऊपर अगुरुपणेकी बुद्धि, जैसें श्वेतशंखके ऊपर काचकामलरोगवालेकी नीलशंखकी बुद्धि । तिसको मिथ्यात्व कहतेहैं. । सो मिथ्यात्व पांच प्रकारका है. १ आजिग्रहिक, २ अनाजिग्रहिक, ३ आजि निवेशिक, ४ सांशयिक, ५ अनाजोगिक. ॥

(१) प्रथम आजिग्रहिकमिथ्यात्व, सो, जिस्को

मिथ्या कुशास्त्रोंके पढ़नेसे कुदेव कुगुरु कुधर्मके ऊपर आस्था दृढ है, जिससे ऐसा जानता है कि, जो कुछ मैंने समझा है सोही सत्य है, औरोंकी समझ ठीक नहीं है, जिसको सत्यासत्यकी परीक्षा करने का अब मन भी नहीं है, और जो सत्यासत्यका विचार भी नहीं करता है. यह मिथ्यात्व, दीक्षित शाक्यादि अन्यमतममत्वधारीयोंको होता है. वे अपने मनमें ऐसे जानते हैं कि, जो मत हमने अंगिकार किया है, वोही सत्य है; और सर्व मत फूटे हैं. ऐसे जिसके परिणाम होवे, सो आज्ञिग्रहिक मिथ्यात्व है.

(१) दूसरा अनाज्ञिग्रहिकमिथ्यात्व, सो सर्व मतोंको आच्छा जाणे, सर्व मतोंसे मोक्ष है, इस वास्ते किसीको बुरा न कहना सर्व देवोंको नमस्कार करना, ऐसी जो बुद्धि, तिसको अनाज्ञिग्रहिक मिथ्यात्व कहते हैं. यह मिथ्यात्व जिनोंने कोइ दर्शन ग्रहण नहीं करा ऐसे जो गोपाल बालकादि तिनको है. क्योंकि, यह अमृत और विषको एकसरिखे जाननेवाले हैं.

(३) तीसरा अज्ञिनिवेशिक मिथ्यात्व, सो जो पुरुष जानकरके फूठ बोले, प्रथम तो अज्ञानसे किसी शास्त्रार्थको झूठ गया, पीछे जब कोइ विद्वान् कहे कि, तुम इस विषयमें झूलते हो, तब अप

ने मनमें सत्य विषयको जाणता हुआ जी, ऊठे पढ़का कदाग्रह, ग्रहण करे, जाल्यादि अजिमानसें कहना, न माने, उलटी स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियों बनाकरके अपने मनमाने मतको सिद्ध करे, वादमें हार जावे तो जी न माने, ऐसा जीव, अतिपापी, और बहुल संसारी होता है. ऐसा मिथ्यात्व, प्रायः जो जैनी, जैन मतको विपरीतकथन करता है, उस में होता है, गोष्ठमाहिलादिवत् ॥

(४) चौथा सांशयिकमिथ्यात्व, सो देव गुरु धर्म जीव काल पुद्गलादिक पदार्थोंमें यह सत्य है कि, यह सत्य है ? ऐसी बुद्धि, तिसको सांशयिक मिथ्यत्व कहते हैं. तथा क्या यह जीव असंख्य प्रदेशी है ? वा नहीं है ? इसतरें जिनोक्त सर्व पदार्थमें शंका करनी । “ सांशयिकं मिथ्यात्वं तदशेषया शंका संदेहो जिनोक्ततत्त्वेष्वितिवचनात् ॥ ”

(५) पांचमा अनाजोगिकमिथ्यात्व, सो जिन जीवोंको उपयोग नहीं कि, धर्म अधर्म क्या वस्तु है ? ऐसैं जे एकेंद्रियादि विशेषत्रैतन्यरहित जीव, तिनको अनाजोगमिथ्यात्व होता है. ॥ १ ॥

अथदेवलक्षणमाह ॥ देव सो कहिये, जो सर्वज्ञ होवे, परंतु जैसें लौकिक मतमें विनायकका मस्तक ईश्वरने ठेदन कर दिया, पीठे पार्वतीके आग्रहसें सर्वत्र देखने लगा, परं किसी जगे जी

मस्तक न देखा, तब हाथीके मस्तकको लायके विनायकके मस्तकके स्थानपर चैप दिया, जिसवा स्ते विनायकका (गणेशका) नाम “ गजानन ” प्रसिद्ध हुआ. इत्यादि—यदि ईश्वर (महादेव) सर्वज्ञ होता तो, पार्वतीका पुत्र जाणके विनायकका मस्तक कजी न ठेदन करता. यदि ठेदा, तो जगत्में विद्यमान तिस मस्तकको क्यों न देखा ? इसवास्ते ऐसे अधूरेज्ञानवालेको देव न कहिये. । तथा ‘ जित रागादिदोषः ’ जे संसारके मूलकारण राग द्वेष काम क्रोध लोभ मोहादिक दोष, तिन सर्वको जिसने जीते हैं, निर्मूल किये हैं, तिसको देव कहिये. जिस में रागादि दोष होवे, तिसको अस्मदादिवत् संसारी जीवही कहिये, तिसमें देवपणा न होवे. । तथा ‘ त्रैलोक्यपूजितः ’ स्वर्गमर्त्यपातालके स्वामी इंद्रादि क परम शक्तिकरके जिसको वांदि, पूजे, नमस्कार करे, सेवे, सो देव कहिये. परंतु कितनेक इसलोकके अर्थीयोंके वांदनेसे, वा पूजनादिकसे देवपणा नहीं होता है. । तथा ‘ यथा स्थित सत्यपदार्थका वक्ता, सो देव कहिये, परंतु जिसका कथन पूर्वापरविरोधि होवे, और विचारते हुए सत्य श मिले नहीं, सो देव न कहिये. ॥ देवो हंत परमेश्वरः ये पूर्वोक्त चार गुण पूर्ण जिसमें

होवे, सो अरिहंत, वीतराग, परमेश्वर, देव, कहिये, इससें अन्य कोइ देव नहीं है. ॥ ३ ॥

ऐसा पूर्वोक्त साचा देव, पिठानके आराधना, सोही कहतें हैं । ध्यातव्योयमित्यादि—पूर्व जो देवके लक्षण कहे, तिन लक्षणों संयुक्त जो देव, तिसको एकाग्र मनसें ध्यावना, जैसें श्रेणिक महाराजने श्रीमहावीरजीका ध्यान किया. । तिस ध्यानके प्रज्ञा वसें आगमी चउवीसीमें श्रेणिक, वर्ण, प्रमाण, संस्थान, अतिशयादिकगुणोंकरके श्रीमहावीरस्वामिसरिखा 'पद्मनाभ,' नाम प्रथम तीर्थकर होगा. इसीतरें औरोनें जी तल्लीनपणे देवका ध्यान करना, तथा 'उपास्योयम्' ऐसे पूर्वोक्त देवकी सेवा करनी श्रेणि कादिवत्. । तथा इसी देवका, संसारके जयको टाल नहार जाएके, शरण बांढना. । इसी देवका शासन, मत, आज्ञा, धर्म, अंगीकार करना. । 'चेतनास्ति चेत्' जो कोइ चेतना चैतन्यपणा है तो, सचेतन सजाण जीवको उपदेश दिया सार्थक होवे, परंतु अचेतन अजाणको दिया उपदेश क्या काम आवे ? इसवास्ते 'चेतनास्ति चेत्' ऐसें कहा. ॥ ४ ॥

अथादेवत्वमाह ॥ अथ अदेवके लक्षण कहतें हैं. ॥ ये स्त्री ॥ जिनके पास स्त्री (कलत्र) होवे तथा खड्ग धनुष्य चक्र त्रिशूलादिक शस्त्र (हथियार) होवे, तथा अक्षसूत्र जपमाला आदि शब्द

सैं कमंरुलुप्रमुख होवे, ये कैसें है ? रा० रागादि कके अंक—चिन्ह है, सोही दिखावे हैं. स्त्री रागका चिन्ह है, । जो पासे स्त्री होवे तो जाणना कि, इसमें राग है. । शस्त्र छेपका चिन्ह है, जो पासे हाथियार देखीए तो, ऐसा जाणिये कि तिसने किसी बैरीको मारना चूरना है, अथवा किसीका जय हैं, जिस वास्ते शस्त्रधारण किये हैं. । अक्ष सूत्र असर्वज्ञपणाकाचिह्न है. यदि होवे तो, मणके विना गिणतीकी संख्या जाणलेवे. अथवा तिससैं अधिक बडा अन्य कोइ है, जिसका वो जाप करता है ? । कमंरुलु अशुचिपणेका चिन्ह है, यदि हाथ में कमंरुलु पाणीका जाजन देखीए तो, ऐसा जाणि ये की, यह अशुचि है. शौच करणेके वास्ते यह कमंरुलु धारण करता है. यतउक्तं ॥

स्त्रीसंगः काममाचष्टे छेपं चायुधसंग्रहः ॥

व्यामोहं चाक्षसूत्रादिरशौचं च कमंरुलुः ॥ १ ॥

इन पूर्वोक्त दोषोंकरके जे दूषित है, तथा निग्रहा० जिसके उपर रुष्टमान होवे, तिसको निग्रह (बंधनमरणादिक) करें, और, जिसके उपर तुष्टमान होवे, तिसको अनुग्रह (राज्यादिकके वर) देवें; तेदेवा० वे देव, मुक्तिके हेतु नहीं होते हैं॥५॥

ऐसे पूर्वोक्त देव अपने सेवकोंको मोक्ष नहीं दे सकते हैं, सोही बात फिर कहते हैं. । नाव्यादृ० जे

देव नाटकके रसमें मग्न हैं, अट्टाट्टहास करते हैं, इत्यादि संसारकी चेष्टा जो अस्थिर हैं; लंजयेयुः—जे आपही ऐसे हैं, वे देव, अपने आश्रित सेवकोंको शांतपद, (संसार चेष्टारहित मुक्ति, केवलज्ञानादि कपद,) कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? जैसे एरंरुवृद्ध कटप वृद्ध कीतरें झुग नहीं पूर सकता है, यदि किसी मूढ़ पुरुषने एरंरुको कटपवृद्ध मान लिया तो, क्या वो कटपवृद्धकीतरें मनोवांछित दे सकता है ? ऐसेही कीसी मिथ्या दृष्टीनें पूर्वोक्त दूषणोंवाले कुदेवोंको देव मान लिये तो, क्या वे देव परमेश्वर मोक्ष दाता हो सकते हैं ? कदापि नहीं हो सकते हैं॥६॥

अथगुरुलक्षणमाह ॥ अथ गुरुके लक्षण कहते हैं ॥ महाव्र० अहिंसादि पांच महाव्रतके धारने पालनेवाले और आपदामें जी धीर साहसिक होके अपने व्रतोंको विराधे नहीं बेंतालीश (४२) दूषण रहित जिज्ञावृत्ति (माधुकरी वृत्ति) करके अपने चारित्रधर्मके तथा शरीरके निर्वाहवास्ते जोजन करे, जोजन जी जनोदरतासंयुक्त करे, जोजनकेवास्ते अन्न पाणी रात्रिको न राखे, धर्मसाधनके उपकरण विना और कुछ जी संग्रह न करे, तथा धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, मणि, मोती, प्रवालादि परिग्रह, न राखे. । सामा० रागद्वेषके परिणामरहित मध्यस्थ वृत्ति होकर सदा सामायिकमें वृत्ते. । धर्मोप० जो

धर्मी जीवोंके उद्धारवास्ते सम्यग् ज्ञानदर्शनचारि
त्ररूप जगवंतके स्याद्वाद अनेकांतस्वरूप निरूपण
किया है, तिस धर्मका उपदेश करे, परंतु ज्योति
षशास्त्र, अष्टप्रकारका निमित्त शास्त्र, वैद्यकशास्त्र, धन
उत्पन्न करनेका शास्त्र, राजसेवादि अनेकशास्त्र,
जिनसे धर्मको बाधा पहुंचे तिनका उपदेश न करे;
ऐसे गुरु कहियें. । काष्ठमय बेनीसमान आप जी
तरे, और औरोंको जी तारे. ॥ ७ ॥

अथ अगुरुलक्षणमाह॥ अथ अगुरुके लक्षण कहते
हैं ॥ सर्वा० स्त्री, धन, धान्य, हिरण्य, रूपादि सर्व
धातु, क्षेत्र, हाट, हवेली, चतुःपदादिक अनेक प्रका
रके पशु, इन सर्वकी अजिलाषा है जिनको, सर्व
जोजिनः । मधु, मांस, मांखण, मदिरा, अनंतकाय,
अजह्यादिक सर्व वस्तुके जोजन करनेवाले, सपरि
ग्रहाः । जे पुत्र, कछत्र, धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा,
क्षेत्रादि सहित हैं, । अब्रह्म० तथा अब्रह्मचारी हैं ।
मिथ्यो० मिथ्या धर्मका उपदेश करें, ज्योतिष, निमि
त्त, वेदक, मंत्र तंत्रादिकका उपदेश देवें, वे गुरु
नहीं. लोहमय बेनी (नावा) समान, आप जी
रुबें, औरोंको जी रुबावे ॥ ८ ॥

पूर्वोक्त बातही कहते हैं ॥ परिग्रहा० स्त्री, घर,
लक्ष्मी आदि परिग्रह, और क्षेत्र, कृषी, व्यवसा
यादि आरंज इनमें जे मग्न है, आपही जवसमु

उमें रुबे हुए, हैं, ता० वे, किसतरेंसे दूसरे जीवोंको संसारसागरसे तार सकते हैं ? इसवातमें दृष्टांत कहते हैं. । जो पुरुष आपही दरिद्री है, सो परको ईश्वर लक्ष्मीवंत करनेको समर्थ नहीं है; तैसेंही वे कुगुरु, आपही संसारमें रुबे हुए, पर अपने सेवकोंको कैसे तार सके ? ॥ ९ ॥

धर्मलक्षणमाह ॥ सत्य धर्मका स्वरूप कहते हैं.॥
दुर्गति० नरक, तिर्यच, कुमनुष्य, कुदेवत्वादि दुर्गति में गिरते हुए प्राणिकी रक्षा करे, गिरने न देवे, इस वास्ते धारण करनेसे धर्म कहिये, सो, संयमादि दशप्रकार सर्वज्ञ कथित धर्म, पालनेवालेको मोक्षके वास्ते होता है. । संयमादि दश प्रकार ये हैं. संयम जीवदया १, सत्यवचन २, अदत्तादानत्याग ३, ब्रह्मचर्य ४, परिग्रहत्याग ५, तप ६, क्षमा ७, निरहंकारता ८, सरलता ९, निर्लोभता १०, ॥ इससें उलटा हिंसादिमय असर्वज्ञोक्त धर्म, दुर्गतिकाही कारण है. ॥ १० ॥

अधर्मत्वमाह ॥ अपौरुषेयं० अपौरुषेय वचन, असंज्ञवि—संज्ञवरहित है. क्योंकि, जो वचन है सो किसी पुरुषके बोलनेसेही है, बिना बोले नहीं. वचू परिज्ञाषणे इति वचनात्. और अक्षरोत्पत्तिके आठ स्थान नियत है, सो ज्ञी पुरुषकोही होते हैं. इस वास्ते वचन पुरुषके बिना संज्ञवे नहीं. । जवेद्य

दि—न प्रमाण । यहि होवे तो, वेदको प्रमाणता नहीं. क्योंकि, । जवेछाचां ह्यासाधीना प्रमाणता । वचनोंकी प्रमाणता, आस पुरुषोंके आधीन है. ॥ ११ ॥

असर्वज्ञोक्त धर्म प्रमाण नहीं यही कहते हैं. ॥ मिथ्यादृष्टि असर्वज्ञोंने अपनी बुद्धिसे कहा हुआ, पशुमेध, अश्वमेध, नरमेधादि यज्ञोंके कथनसें, और अपुत्रस्य गतिर्नास्ति इत्यादि कथनसें, जीववधादि कोंकरके जो धर्मही है, ऐसा अजाण लोकोंमें विशेष प्रसिद्ध है. तो जी, जवत्रमण (संसारत्रमण) का कारण है. यथार्थ धर्मके अज्ञावसें ॥ १२ ॥

कुदेवकुगुरुकुधर्मनिंदामाह ॥ सरागोपि० यदि जगत्में सरागः रागद्वेषादि सहित जी देव होवे, अब्रह्मचारी मैथुनाजिलाषी जी गुरु होवे, और दया हीन जी धर्म होवे, तो, हाहा ! इति खेदे बन्ना जारी कष्ट है, संसारलक्षण जगत् नष्ट हुआ, दुर्गतिमें परनेसें. क्योंकि, पूर्वोक्त देव गुरु धर्मकरके मुबनाही होवे. यतः उक्तं ॥

रागी देवो दोसी देवो तामिसूमंपि देवो रत्ता मत्ता कंता सत्ता जे गुरु तेवि पुज्जा । मज्जे धम्मो मंसे धम्मो जीव हिंसाइ धम्मो हाहा कष्टं नठो लोओ अट्टमट्टं कुणंतो ॥ १ ॥ १३ ॥

ऐसें पूर्वोक्त अदेव, अगुरु, अधर्मका परित्याग करके, सत्य देव, गुरु, धर्मकी, आस्था करनी, तिसका नाम

सम्यक्त्व है. सो सम्यक्त्व हृदयमें है, ऐसा पांच लक्षणोंकरके मायुम होता है, वे पांच लक्षण कहते हैं. ॥

शमसं०—जिस जीवमें अनंतानुबंधि क्रोध मान माया लोभका उपचय देखिये, अर्थात् अपराध कर नेवालेके ऊपर जिसको तीव्र कषाय उत्पन्न होवेही नहीं, यदि उत्पन्न होवे तो, तिस क्रोधादिको निष्फल करदेवे, इस शमरूप लक्षणसे जाणिये कि, इस जीवमें सम्यक्त्व है । १ । संवेग—जिसके हृदयमें संवेग संसारसे वैराग्यपणा होवे, तिस जीवमें संवेगरूप लक्षणसे सम्यक्त्व जाणना । २ । संसारके सुखों ऊपर द्वेषी, वैराग्यवान्, परवशपणेसे कुटुंबादिकके दुःखसे गृहस्थपणेमें रहा हुआ मोक्षाजि लाषी, जो जीव है, तिसमें निर्वेदरूप लक्षणसे सम्यक्त्व है. । ३ । जिसके हृदयमें दुःखिजीवोंको देखके अनुकंपा (दया) उत्पन्न होवे, दुःखिजीवोंके दुःखोंको दूर करनेका जिसका मन होवे, जो दुःखि जीवको देखके अपने मनमें दुःखी होवे, शक्तिअनुसार दुःखिजीवके दुःखोंको दूर करे, तिसमें अनुकंपारूप लक्षणसे सम्यक्त्व उपलब्ध होता है. । ४ । जिनोक्त तत्त्वोंमें अस्तिज्ञाव का होना, सो आस्तिक्य । ५ । एतावता शम १, संवेग २, निर्वेद ३, अनुकंपा ४, और आस्तिक्य ५,—इन पांचों लक्षणोंसे हृदयगत सम्यक्त्व जाणना, ॥ १४ ॥

॥ अथ सम्यक्त्वके पांच नूषण कहते हैं. ॥
 स्थैर्य०—स्थैर्य जिनधर्मकेविषे स्थिरता । १ । जिन
 धर्मकी प्रज्ञावना । २ । जिनधर्ममें जक्ति । ३ । जिन
 शासनमें कुशलता । ४ । और तीर्थसेवा । ५ । ये
 पांच सम्यक्त्व के नूषण हैं. ॥ १५ ॥

अथ सम्यक्त्वके पांच दूषण कहते हैं. ॥ शं
 का० शंका धर्म. है, वा नहीं ? इत्यादि संदेह । १ ।
 आकांक्षाअन्य २ धर्मकी अजिलाषा । २ । विचि
 कित्साधर्मके फलका संदेह । ३ । मिथ्यादृष्टिकी
 प्रशंसा । ४ । और मिथ्यादृष्टियोंका परिचय । ५ ।
 ये पांच सम्यक्त्वको दुषित करते हैं. ॥ १६ ॥
 ऐसे पूर्वोक्त उपदेशकरके श्रेणिक, संप्रति, दशार्ण
 जडादि सम्यक्त्वमें दृढ राजायोंके व्याख्यान करे. ।
 उस दिनमें श्रावक एकजक्त आचाम्बादि तप करे. ।
 साधुओंको अन्न, वस्त्र, पुस्तक, वसति, यथायोग्य
 देवे. । मंरुलीपूजा करनी. । चतुर्विधसंघवात्सल्य
 करना. । और संघपूजा करनी. ॥

इतिव्रतारोपसंस्कारे सम्यक्त्वसामायिकारोपणविधिः ।

देशविरतिसामायिकारोपणविधिः

सम्यक्त्व सामायिकारोपणानंतर तत्कालही, तिस
 की वासनानुसारें, वा मास वर्षादिके अतिक्रम हुए,

देशविरतिसामायिक आरोपण करना हैं । तहां नंदि, चैत्यवंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमणआदि, सर्व विधि पूर्ववत् जाणनी.

परंतु सर्वत्र सम्यक्त्वसामायिकके स्थानमें देशविरतिसामायिककानाम ग्रहण करना. । सर्वत्र तैसें करके फिर दूसरी नंदि दंरुकोच्चारकालमें नमस्कार तीन पाठानंतर, हाथमें ग्रहण करे परिग्रह परिमाण टिप्पनक(फहरिस्त-नोंध) ऐसे श्रावकको गुरु, देशविरतिसा मायिकदंरुक उच्चरावे. ॥ सयथा ॥

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, शुल्लगं, पाणा इवायं, संकप्पओ, बीइदिआइजीवनिकायनिग्गहनि यट्ठिरूवं, निरावराहं, पच्चक्खामि जावज्जीवाए, डु विहं ति विहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कार वेमि, तस्स जंते पक्कमामि, निंदामि, गरि हामि, अप्पाणं, वोसिरामि, ॥ ”

यह पाठ तीनवार कहना ॥ १ ॥ इसीतरें सर्व व्रतोंमें तीन २ वार पाठ पढ़ना. ॥

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं, समीवे, शुल्लगं, मुसा वायं, जीहात्थेयाइनिग्गहहेऊअं, कन्ना, गोअूमि, निक्खेवावहार, कूरु सक्काइ, पंचविहं, दक्खिन्नाइ अविसए, अहागहिअ जंगएणं, पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, डुविहं ति विहेणं, मणेणं वायाए, काएणं ॥ २ ॥ ”

“ ॥ अहणं, जंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगं, अदि
न्नादाणं, खत्तखण्णाश्चोरकारकरं, रायनिग्गहकरं, स
च्चित्ताचित्त वत्थुविसयं, पच्चक्कामि, जावज्जीवाए,
डुविहं तिविहेणं ॥ ३ ॥ ”

“ ॥ अहणं, जंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगमेहुणं,
उरालिय, वेउवियजेअं, अहागहिअ जंगएणं, तह
डुविहं तिविहेणं दिवं, एगविहं तिविहेणं तेरिहं,
एगविहमेगविहेणं माणुस्सं, पच्चक्कामि, जावज्जी
वाए, डुविहं तिविहेणं ॥ ४ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते तुह्माणं, समीवे, अपरिमिअं,
परिग्गहं, धणधन्नाइनवविहवत्थुविसयं, पच्चक्कामि,
इष्ठापरिमाणं, अहागहिअ जंगएणं, उवसंपज्जामि,
जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं ॥ ५ ॥ ”

“अहणं जंते, तुह्माणं, समीवे, पढमं गुणवयं,
दिसिपरिमाणरूवं, पन्निवज्जामि, जावज्जीवाए, डुवि
हं, तिविहेणं ॥ ६ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं, समीवे, उवजोगपरि
जोगवयं, जोगणउं, अणंतकाय, बहुबीय राईजोग
णाइंबावीसवत्थुंरूवं, कम्मणा, पन्नरस, कम्मादाण,
इंगालकम्माइबहुसावज्जं, खरकम्माइ, रायनिउंगं
च, परिहरामि, परिमिअं, जोगउवजोगं, उवसंप
ज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं ॥ ७ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, अणत्थदंरुगु

एवयं, अद्वैतदृष्ट्याण, पावोवएस, हिंसोवयारदाण, फ्मा
यकरणरूवं, चउविहं, जहासत्तीए, पन्निवज्जामि,
डुविहं तिविहेणं ॥ ८ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, सामाशयं,
जहासत्तीए, पन्निवज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं,
तिविहेणं ॥ ९ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, देसावगासिअं,
जहासत्तीए पन्निवज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं
तिविहेणं ॥ १० ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, पोसहोववासं,
जहासत्तीए, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं,
तिविहेणं ॥ ११ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, अतिहिसंवि
जागं, जहासत्तीए, पन्निवज्जामि’ जावज्जीवाए, डु
विहं’ तिविहेणं ॥ १२ ॥ ”

“ ॥ इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवश्यं, तिगुणवश्यं,
चउसिस्कावश्यं, डुवालसविहं, सावगधम्मं, उवसं
पज्जित्ताणं, विहरामि ॥ इति ॥

दंरुकोच्चारणानंतर कायोत्सर्ग, वंदनक, क्षमाश्र
मण, प्रदक्षिणा, वासद्देपादिक पूर्ववत् ॥

परिग्रहप्रमाणटिप्पनकयुक्तिर्यथा ॥

जाषार्थः—अमुक जिनेन्द्रको नमस्कार करके, अमु

क श्राविका, वा अमुकश्रावक अमुक गुरुके पास,
गृहस्थ धर्मको अंगीकार करता है. ॥ १ ॥

श्री अरिहंतको वर्जके अन्य देवको नमस्कार न
करूं, जिनमतके सुसाधुकों ठोरुके अन्य लिंगिकों
धर्मार्थे नमस्कार न करूं. । २ ॥ जिन वचन स्याद्वा
दयुक्त सप्त वा नव तत्त्व को सत्य कर जान
ता हूं, मिथ्याशास्त्रोंके श्रवण पठन लिखनेका मुक्त
को नियम हो. । ३। परतीर्थिको प्रणाम, गुणानुवाद,
स्तवन, जक्ति, राग, सत्कार, सन्मान, दान, विनय,
वर्जु—न करूं. । ४। धर्मकेवास्ते अन्य तीर्थमें तप,
स्नान, होमादिक नहीं करूं. तिनके उचित करने
योग्य कर्ममें जयणा मुक्तको हो. । ५। तीन, वा
पांच, वा सातवार यथाशक्तिसे चैत्यवंदन करूं; एक,
वा दो वा तीन वार, प्रतिदिन सुसाधुको नमस्कार
करूं, और तिसकी सेवा करूं. । ६। एक, वा दो,
वा तीनवार प्रतिदिन जिनपूजा करूं; और पर्व
दिनमें स्नात्रादि अधिक अधिकतर पूजा करूं. इति
सम्यक्त्वम् ।

कुलाचार विवाहादि कृत्यमें, जीवबध होते जयणा
करूं । ७। विना प्रयोजन एकेंद्रियका जी बध न
करूं, प्रयोजनके हुए जयणा करूं. । इतिप्रथमव्रतम् ।

कन्या आदि पांच प्रकारका मृषावाद, नियमक
रके वर्जता हूं. । इतिद्वितीयव्रतम् ।

जिससें चोर नाम पड़े, और राजदंरु होवे, ऐसा धन वर्जु, अर्थात् चोरी वर्जु. । इतितृतीयव्रतम् ।

दो करण तीन योगसें देवतासंबंधि, एकविध त्रिविधें करी तिर्यच संबंधि, मैथुनका नियम करता हुं. । ९ । अनुज्ञव करके स्तंजसमान ब्रह्मव्रतको अपने मनमें धारण करूं, और जावजीव मनुष्य संबंधि मैथुनकायाकरके वर्जु. । १० । परनारीको, और परपुरुषको (स्त्री व्रतग्राहिता आश्रित) वर्जु. इनके उपरांत अन्यक्रियाकी मुजकों जयणा. । इति चतुर्थव्रतम् ॥

नव प्रकारके परिग्रहमें परिग्रहकी संख्याका प्रमाण यह है. । ११ । इतने मात्र रूपय्ये, इतने मोहोर, इतने मात्र गिणतिमें. । १२ । इतने गिणतिमें रूपय्ये, यह गणिमवस्तुका ग्रहण है. इतनी वस्तु तोलमे और मापसें इतनी वस्तु. । १३ । हाथ अंगुलसें मेय वस्तुका इतने प्रमाण मात्रसें मुजको संग्रह करना कट्ये, तथा दृष्टिसें देखके जिनका मोल करा जावे ऐसे पदार्थ इतने रूपय्योंके मोलके रखने. । १४ । इतनी खांरी अन्नकी एक वर्षमें रखनी, इतनी मुजको परिग्रहमें जूमि रखनी कट्ये; इतने पुर, इतने गाम, इतने हाट, इतने घर, और इतने प्रमाण क्षेत्र, मुजको कट्ये. । १५ । इतने सेर, वा इतने तोले प्रमाण सोना, इतना मात्र रूपा,

इतना कांसा, इतना तांबा, इतना लोहा, इतना तरुया, इतना सीसा, अपने घरमें रखना. । १६ । इतने दास, इतनी दासी, इतने सेवक—नौकर और इतने दासचेटकोंकी संख्यां मुक्तको रखनी कदपे. । १७ । इतने हाथी, इतने घोड़े, इतने बलद, इतने जंट, इतने गाड़े, इतनी गौ, इतनी महिषी (जैस) । १८ । इतनी बकरी, इतनी जेमें, और इतने हल रखने मुक्तको कदपे. और अमुक अमुक कर्मका मुक्तको नियम हो. । १९ । इति पंचमव्रतम् ॥

दसोंही दिशायोंमें अपने वशसे इतने योजन प्रमाण जावजीव गमन करना, और तीर्थयात्रामें जानेकी जयणा. । २० । इतिषष्ठव्रतम् ।

कर्ममें जोगोपजोगमें, खरकर्ममें, पंदरा कर्मादा नमें, दुष्पोष आहार अज्ञात फूल फल इनको वर्जु. । २१ । पांच जंवर ५, चार महाविगड ४, हिम १८, विष ११, कारक १२, सर्व जातकी मट्टी १३, रात्रिजोजन १४, बहुबीजा १५, अनंतकाय १६, सं धान (बोल आचार) १७. । २२ । घोडवक्रां (विदल) १८, वृंताक १९, अज्ञात फल फूल २० तुड फल २१ और चलितरस २२, ये बावीस वस्तुओंको वर्जु. । २३ । वर्जके अन्य फल फूल पत्रमेसें अमुक अमुक प्राणांतमें जी, जक्षण न करूं. २४ । इतने मात्र प्रासुक अनंतकायकी मुक्तको जयणा हो, इतने

अपक फल और अखंजित जी जक्षण न करूं. । १५ ।
 आ जन्मतक इतनी सच्चित्त वस्तुओं मेरेको जक्षण
 करने योग्य है, इतने पुष्टिकारक द्रव्य और इतने
 व्यंजन शाकादि मुझको कढे; तथा घृत, दुग्ध
 दहि प्रमुख । १६ । इतनी विगड़ मुझको कढे.
 इतने पियादे, इतने गज, इतने तुरग और इतने
 प्रधान रथोंकी मुझको जयणा हो. । १७ । इतनी
 सुपारी, इतने लवंग, इतने एलाफल (इलायची)
 जायफल आदि मेरेको नित्य इतने प्रमाण कढे.
 सूतके, रेशमके, ऊनके, औरके, इन चार प्रकारको शण
 वस्त्रोंमें जी इतने वस्त्र पहिरने मुझको कढे; और
 इतनी जातिके फूल मेरे अंगके जोगवास्ते कढे. ।
 १८ । आसन, सिंहासन, पीठ, पट्टे, बाजोठ,
 पल्लंक, गदेला, रजाइ, और खाट आदि ये सर्व
 इतने प्रमाण मुझको कढे. । १९ । कर्पूर, अगार,
 कस्तूरी, चंदन केशरादि मात्र मेरे अंगके वास्ते
 इतने कढे; और पूजामें जयणा. । २० । इतनी
 नारी मेरे संजोगमें इतने कालमात्र, इतने घडे,
 ठाणे हुए जलके और प्रासुक जलके मेरेको स्नान
 वास्ते कढे. । २१ । इतनी बार दिनमें इतनी जातिके
 तेल मर्दन के वास्ते, इतने प्रकारके चात
 रोटी आदिक जोजन, और दिनमें इतनी बार जोन
 न करना. । २२ । यह सच्चित्तादिका जोग परिजोग

जावजीवतक है, इनका जी फेर प्रमाण दिनदिनमें करूं, ॐ । ३४ । इतने मात्र मणि, कनक, रूपा, मोती चूषण, अंगऊपर धारण करूं. इतने मात्र गीत, नृत्य, वाजंत्र, मुक्तको उपजोगवास्ते कटपे. । ३५ । इतिसप्तमव्रतम् ॥

वैरिका घात, वैर लेना, इत्यादिक आर्त्त, रौद्र, ध्यान, अदाक्षिण्यताविषे पापोपदेशका देना, इनको वर्जु. । ३६ । अदाक्षिण्यताविषे हिंसाकारी गृहोप करणादि देना तथा कामशास्त्रका पढना, जूआ खेलना, मद्य पीना, इनको परिहरूं. । ३७) हिंमोलेका विनोद, जक्त (जोजन), स्त्री, देश, और राजा, इनकी स्तुति, वा निंदा; पशु पक्षीका युरू, अकालमें नींद लेनी, संपूर्ण रात्रिमें सोना, । ३८ । इत्यादि प्रमाद स्थानक, अनर्थादंरुनामक गुण व्रत में वर्जु. । इति अष्टमव्रतम् ॥

एक वर्षमें इतने सामायिक करूं. । इति नवमव्रतम् ॥
इतने योजन मेरेको दिन, वा रात्रिमें दशोदिशाओंमें जाना आना कटपे. । इति दशमव्रतम् ।

एक वर्षमें इतने पौषध करूं. इत्येकादशव्रतम् ॥
साधुओंको संविज्ञाग जोजन वस्त्र आदिकसें करूं. ४० । प्रथम यतिको देके और नमस्कार करके पीठे

* दिन १ में जो प्रमाण करना है, सो दशम देसावकाशिकव्रतांतर्गत जाणना. ॥

आप पारणा करुं; जो सुविहित साधुओंका योग न होवे तो, दिशावलोकन करके जोजन करुं. । ४१ ।
इति द्वादशव्रतम् ॥

यह द्वादश व्रतरूप श्रावकधर्म, पूर्वोक्त विधिसें पाबुं, विना ठाण्या जलका पान और स्नान, मरणांतमें जी न करुं. । ४२ । कंदर्प, दर्प, थूकना, सोना, चार प्रकारका आहार करना, विकथा, कलह, इत्यादि जिनमंरुपमें वर्जुं. । ४३ ।

अमुक महागन्धमें, अमुक गुरु सूरिके संतानमें, अमुकके शिष्यके पास, अमुक सूरिके पादांतमें. ४४ । अमुक संवत्सरमें, अमुक मासमें, अमुक पक्षमें, अमुक तिथिमें, अमुक वारमें, अमुक नक्षत्रमें, अमुक नगरमें. । ४५ । अमुकका पुत्र, अमुक नामका श्रावक, यहां गृहस्थधर्म ग्रहण करता है. अमुककी पुत्री अमुककी चार्या, अमुक नामकी श्राविका, वा व्रत ग्रहण करती है. । ४६ ।

नवरं क्षत्रियकेवास्ते प्राणातिपात स्थानमें प्रथम व्रतमें ४७ । ४८ । यह दो गाथा, अधिक जाननी. । युद्धमें, कोइ गौको चुरा लेजाता होवे तिसके हटानेमें, चैत्य, गुरु, साधु, संघको उपसर्ग देनेवालेको हटानेमें, तथा दुष्टके निग्रहमें, जीवके वध हुए मुँहको दोष नहीं । ४९ । जनोंके, और देशके रक्षणवास्ते सिंह, व्याघ्र, शत्रुओंके हननेमें मुँहको

दोष नहीं; अर्थात् इन कामोंके लिए हिंसा करनेसे मेरा व्रत जंग न होवे। जल पीनेमें ठाणना, अन्यत्र स्नानादिमें यथाशक्ति। ४७। इनमें प्रमादके होनेसे, गुरुके वचनसे यह तप करुं; अल्प बहुत जांगेसे, तिससे मेरी विशुद्धि होवे। ४८॥ इति परिग्रह प्रमाणटिप्पनकविधिः ॥

इन बारह व्रतोंमेंसे कोइ कितनेही व्रत अंगीकार करे, तिसको तितनेही उच्चार करावने। जिसको ठ मासिक सामायिक व्रत आरोपते हैं, तिसका यह विधि है। ॥ चैत्यवन्दना, नंदि, क्षमाश्रमणादि सर्वपूर्ववत् सामायिकके अजिलाप करके; और विशेष यह हैं; कायोत्सर्गके अनंतर तिसके हस्तगत नूतन मुखवस्त्रिकाके ऊपर वासक्षेप करना। तिसही मुखवस्त्रिकाकरके षट् (६) मासपर्यंत उज्जयकाल सामायिक ग्रहण करे। पीछे तीनवार नमस्कारका पाठ करके दंरुक पढावे सयथा ॥

“ ॥ करेमि जंते सामाश्रयं, सावज्जं जोगं पच्च खामि, जावनियमं पल्लुवासामि, डुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं, वोसिरामि, । से सामाश्रयं चउविहे तंजहा दवउं खित्तउं कालउं जावउं दवउणं सामाश्रयं पडुच्च, खित्तउणं इहेव वा अन्नउ वा, कालउणं जाव उम्मासं, जाव

उणं जाव गहेणं न गहिज्जामि, जाव ठळेणं न ठळिज्जामि, जाव सन्निवाएणं नाज्जिज्जविज्जामि, ताव मे एसासामाश्य पन्निवत्ती ॥ ”

ऐसें तीनवार पढावना. । मस्तकोपरि वासक्षेप करना, अक्षतवासाको अजिमंत्रणा, और संघके हाथ में वासक्षेप देना, यहां नहीं है परंतु प्रदक्षिणा तीन, करावनी. । इतिषाणमासिक सम्यक्त्वारोपणविधिः ॥

इसीतरें सम्यक्त्वका, और छादश व्रतोंका ज्ञा। इसही दंमकसें तिस २ अजिलापसें मास, षट् (६) मास वा वर्ष पर्यंत, सम्यक्त्व व्रतोंका उच्चारण करना. । नवरं सम्यक्त्वका सम्यक्त्वदंडसें उच्चार करना. नवरं इतना विशेष है कि, सम्यक्त्वकी अवधिमें ‘जावज्जीवाए’ यह पाठ न कहना. किंतु, ‘मासं ठम्मासं वरिसं’ इत्यादि कहना. शेष व्रतोंमें जी जावज्जीवाएके स्थानमें ‘मासं ठम्मासं वरिसं’ इत्यादि कहना. ॥

अथ प्रतिमोच्छहनविधिः ॥ यावज्जीवतक नियम स्थिरीकरण प्रतिज्ञा जो है, तिसको प्रतिमा कहते हैं. तिनमें काळादिमें नियमव्यवच्छेद नहीं है. । ते प्रतिमा एकादश (११) गृहस्थोंकी हैं. । तद्यथा ॥

“ ॥ दंसण १, वय २, सामाश्य ३, पोसह ४, पन्निमाय ५, बंज ६, अचित्ते ७, ॥ आरंज ८, पेस ९, उदिठ, वज्जाए १०, समणजूए य ११, ॥ १ ॥ ”

अर्थः—तहां जिस प्रतिमामें मासतक श्रावक निःशंकितादि सम्यग् दर्शनवाला होवे, सा प्रथम दर्शनप्रतिमा १. व्रतधारी द्वितीया २. कृतसामायिक तृतीया ३. अष्टमी चतुर्दश्यादिमें चतुर्विध पौषध करना, चतुर्थी ४. पौषधकालमें, रात्रिकी आदि प्रतिमा, अंगीकार करनी, अल्लान, प्रासुकजोजी, दिनमें ब्रह्मचारी, रात्रिमें परिमाण करे और कृत पौषध तो, रात्रिमें जी ब्रह्मचारी, इति पंचमी ५. सदा ब्रह्मचारी षष्ठी ६. सच्चित्ताहारवर्जक सप्तमी ७. आप आरंज नहीं करना, अष्टमी ८. नौकरोंसे आरंज नहीं करावना, नवमी ९. उद्दिष्टकृताहारवर्जक, कुरमुंफित, शिखासहित, वा निराधारीकृतधनका, पुत्रादिकोंको बतलानेवाला, इति दशमी १०. कुरमुंफित, बुंचितकेश, वा रजोहरणपात्रधारी, साधु समान, निर्ममत्व, अपनी जातिमें आहारादिकेवास्ते विचरे, इति एकादशी. ॥ ११ ॥

यहां पहिली एक मास, दूसरी दो मास, तीसरी तीन मास, एवं यावत् इग्यारहमी इग्यारह मास पर्यंत. तथा जो अनुष्ठान, पूर्व प्रतिमामें कहा है, सोही अनुष्ठान, आगेकी सर्व प्रतिमायोंमें जानना. इनमें वितथ प्ररूपणा श्रद्धानादि करना, सो अति चार है. । तिनमें पहिली 'दर्शन प्रतिमा' तिसमें नंदि, चैत्यवंदन, क्षमाश्रमण, वासक्षेप, इनोंका विधि

दर्शनप्रतिमाके अजिह्वापसैं सोही पूर्वोक्त रीतीसैं जानना. और दंडक एसैं हैं ।

“॥अहणं जंते तुह्माणं समीवे, मिञ्चत्तं, दव्वजा वज्जिन्नं, पच्चरुक्कामि, दंसणपडिमं, उवसंपज्जामि, नो मे कप्पइ, ज्जाप्पजिई अन्नउत्थिए वा, अन्नउत्थिअदेवयाणि वा, अन्नउत्थिअपरिग्गहिआणि वा, अरिहंतचेइ आणि वा, वंदित्तए वा, नमंसित्तए वा, पुर्व्विअणाखत्तेणं आलवित्तए वा, संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा दाउं वा, अणुप्पयाउं वा, तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तहा अईअं निंदामि, परुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चइखामि, अरिहंतसक्किअं, सिद्धसक्किअं, साहुसक्किअं, अप्ससक्किअं, वोसिरामि, तहा दव्वआखित्तओ कालओ जावओ, दव्वओणं एसा दंसणपडिमा, खित्तओणं इहेव वा अन्नत्थ वा, कालओणं जाव मास, जावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि, जाव ठळेणं न ठळिज्जामि, जाव सन्निवाएणं नाज्जिजविजामि, ताव मे एसा दंसणपडिमा ॥”

शेषं पूर्ववत् । प्रदक्षिणात्रयादिक, दर्शनप्रतिमा स्थिरीकरणार्थं कायोत्सर्गादि. यहां अजिग्रह मासातिक यथाशक्ति आचाम्लादि प्रत्याख्यान करना, तीनों संध्यामें विधिसैं देवपूजन करणा. पार्श्व

स्थादिवंदनका परिहार करना. शंकादि पांच अतिचारोंका त्याग करना. राजाजियोगादि ठ (६) कारणोंसें जी यह दर्शन प्रतिमा नहीं त्यागनी. ॥ इतिदर्शनप्रतिमा. ॥ १ ॥

अथ दूसरी व्रतप्रतिमा, सा, मास दो तक यावत् निरतिचार पांच अणुव्रत पावनविषया, गुणव्रत ३, शिक्षाव्रत ४, इनका पावना जी साथही जानना. अर्थात् दो मासपर्यंत निरतिचार द्वादश (१२) व्रतोंका पावना. यहां नंदिहमाश्रमणादि तिसतिस प्रतिमाके अजिलापसें पूर्ववत् । प्रत्याख्यान नियम चर्यादि सर्व तेसेंही जानने. दंभक जी तिसके अजिलापसें सोही जानना. ॥ इतिव्रतप्रतिमा ॥ २ ॥

अथ तीसरी सामायिक प्रतिमा, सा, तीन मास तक उज्जयसंध्यामें सामायिक करनेसें होती है. शेष नंदिनियम व्रतादिविधि सोइ अर्थात् पूर्वोक्तही जानना. और दंडक सामायिकके अजिलापसें कहना. ॥ इतिसामायिकप्रतिमा ॥ ३ ॥

अथ चौथी पौषधप्रतिमा, सा, चार मास यावत् अष्टमी चौदशको चार प्रकारके आहारके त्यागमें रक्तको चार प्रकारके पौषधके करनेसें होती है. द्रव्यादिजेंदसें दो आदि मासपर्यंत इस कथनसें यथाशक्ति सूचन किइ गइ. यहां नंदिव्रत नियमा

दिविधि सोही और दंरुक तिसके (पौषधप्रतिमाके) अजिलापसैं कहना. ॥ इतिपौषधप्रतिमा ॥ ४ ॥

ऐसैं पांचमासादिकालवाली शेषप्रतिमायोमें जी यही पूर्वोक्त विधि है. नंदिकमाश्रमण दंरुकादि तिसतिस प्रतिमाके अजिलापसैं. व्रतचर्या सोही है, परं संप्रतिकालमें, पर्यायसैं, वा संहननकी शिथिलतासैं, पांचमी प्रतिमासैं लेके इग्यारहमीतक प्रतिमाके अनुष्ठानका विधि शास्त्रोंमें नहि दिखताहें प्रतिमाका आरंज शुज सुदुर्तमें करना. ॥ इति देशविरतिसामायिकारोपणविधिः ॥

उपधान विधि ॥

श्रुतसामायिकारोपणविधि कहते हैं. ॥ तहां यति योकों श्रुतसामायिकारोपण, योगोद्भनविधिसैं होता है. उनका श्रुतारोपण, आगम पाठसैं होता है. और योगोद्भन आगमपाठ रहित एसे गृहस्थोंको, श्रुतसामायिकारोपण, उपधानोद्भनसैं होता है. सो श्रुतारोपण, परमेष्ठिमंत्र, ईर्यापथिकी, शक्रस्तव, चैत्यस्तव, चतुर्विंशतिस्तव श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि पाठकरके होता है. ॥

उपधीयते ज्ञानादि परीक्ष्यते अनेनेत्युपधानं—जिससैं ज्ञानादिकी परीक्षा करिये, तिसको उपधान कहते हैं. अथवा चार प्रकारके संवर समाधिरूप सुखशय्यामें उत्तम होनेसैं उत्सीर्षक स्थानमें उप

धीयते स्थापन करिये, तिसको उपधान कहिये. तिस उपधानमें ठ (६) श्रुतस्कंधोंका उपधान होता है, सोही दिखाते हैं. परमेष्ठिमंत्रका १, ईर्यापथि कीका २, शक्रस्तवका ३, अर्हत् चैत्यस्तवका ४, चतुर्विंशतिस्तवका ५. श्रुतस्तवका ६.

सिद्धस्तवकी वाचना उपधानविना होती है.

प्रथम परमेष्ठिमंत्र महाश्रुतस्कंधके पांच अध्ययन है, और एक चूलिका है. दो दो पदके आलावे पांच है, सात २ अक्षरके अर्हत् आचार्य उपाध्याय नमस्कार रूप तीन पद है. सिद्धनमस्कृति. रूप दूसरा पद पांच अक्षरोंका है, साधुओंको नमस्काररूप पांचमा पद नव अक्षरोंका है, एवं पांच पद. तिसके पीछे चूलिका, तिसमें दो पदरूप प्रथम आलापक सोळां (१६) अक्षरोंका है, तृतीय पदरूप दूसरा आलापक आठ (८) अक्षरोंका है, और चौथे पदरूप तीसरा आलापक नव (९) अक्षरोंका है. तहां पंचपरमेष्ठिमंत्रमें पांचो पदोंमें तीन उद्देशे हैं, और चूलिकामें भी उद्देशे तीन है एवं उद्देशे ६. ॥ प्रथमके पांचो पदोंमें पैंतीस (३५) अक्षर है, और चूलिकामें तेतीस (३३) अक्षर है. पांच अध्ययन ऐसे हैं ॥

नमो अरिहंताणं १ । नमो सिद्धाणं २ । नमो

आयरिश्चाणं ३ । नमो उवञ्चायाणं ४ । नमो लोए
सवसाहूणं ॥ ५ ॥ एका चूलिका यथा ॥

एसो पंच नमुक्कारो; सवपावप्पणासणो, मंगलाणं
च सवेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥ दो दो पदके
आलापक यह है ॥

नमो अरिहंताणं । नमोसिद्धाणं ॥ १ ॥ „

नमो आयरिश्चाणं । नमो उवञ्चायाणं ॥ २ ॥ „

नमो लोए सवसाहूणं ॥ ३ ॥ „

एसो पंच नमुक्कारो । सवपावप्पणासणो ॥ ४ ॥ „

मंगलाणं च सवेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥ ५ ॥ „

सात २ अक्षरके तीन पद यह है ॥

नमो अरिहंताणं । ७ । नमोआयरिश्चाणं । ७ ।

नमो उवञ्चायाणं । ७ । ॥ १ ॥ „

पांच अक्षरोंका तीसरा पद “नमो सिद्धाणं । „ २

पांचमां पद नव अक्षरप्रमाण “नमो लोएसवसाहूणं ३ „

चूलिकामें (१६) अक्षरप्रमाण प्रथम आलापक ॥

एसो पंच नमुक्कारो, सवपावप्पणा सणो ॥ १ ॥

चूलिकामें आठ अक्षर प्रमाण दूसरा आलापक „

मंगलाणं च सवेसिं ॥ २ ॥ „

चूलिकामे नव अक्षर प्रकार तीसरा आलापक

“पढमं हवइ मंगलं ॥ ३ ॥ „

सर्व अक्षर अडसठ (६७) तिसका उपधान
ऐसें है ॥

नंदि, देववंदन, कायोत्सर्ग, कृमाश्रमण, वंदनक, प्रमुख नमस्कारश्रुतस्कंधके अजिलापसें पूर्व वत् जाणना. और अजिमंत्रित वासक्षेप ज्ञी पूर्व वत् जाणना. । तहां पूर्वसेवामें एकजक्तके अंतरे उपवास पांच, एवं दिन ११, तहां प्रथम नंदिदिन में एकजक्त, वा निविगइ, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकजक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकजक्त, ठेठे दिन उपवास, सातमे दिन एक जक्त, आठमे दिन उपवास, नवमे दिन एकजक्त, दशमे दिन उपवास, एकादशमे दिन एकजक्त. ऐसैं द्वादशम तप पूर्व सेवामें करना. । तहां पंचपरमेष्ठि पदोंकी वाचना नंदिविना ज्ञी देनी. शक्रस्तवका पढना, वासक्षेपपूर्वक तीन नमस्कारोंका पढना, सर्व वाचनाओंमें जाणना. । तहां श्रेणिबद्ध आठ आचा म्ल करने, ऐसैं एकोनविंशति (१९) दिन. पीठे बीसमे दिन एकजक्त, इक्कीसमे दिन उपवास, बावीसमे दिन एकजक्त, तेइवीसमे दिन उपवास, चौबीसमे दिन एकजक्त, पच्चीसमे दिन उपवास. । ऐसैं अष्टम तप उत्तर सेवामें. । पीठे चूलिकाकी वाचना एसो पंच यहांसें लेके ह्वइ मंगलं ॥

इति नमस्कारस्योपधानं ॥ पीठे तिसकी वाचना, तिसका विधि यह है. ॥ पहिछां सामाचारीका पुस्तक पूजना, पीठे मुखवस्त्रिकासें मुख ढांकके

ऐर्यापथिकी (इरियावहियं) पन्तिकमके दामाश्रमण पूर्वक कहैं. ॥

“॥ जगवन् नमुक्कारवायणासंदिसावणियं वाय णाखेवावणियं वासरकेवं करेह । चेइयाइं च वंदावेह ॥”

ऐसैं नंदि करके ठवीसमें दिन एकजक्त करें, वाचना देनी. चूलिकाके चारों पदोंके सर्व उपधानोंमें प्रति दिन अठ्यापार पौषध करना, सवेरे १ पौषध पारके पुनः १ नित्य पौषध ग्रहण करना, और नमस्कार सहस्र गुणना. ॥ इतिप्रथममुपधानम् ॥ १ ॥

ऐर्यापथिकीका जी उपधान ऐसैंही है. आदिकी, और अंतकी, दोनोंही नंदि तिसके—ऐर्यापथिकीके अजिलापसैं करनी. । तहां वाचनामें आठ अध्ययन, और वाचना दो,—एक पांच पदोंकी और दूसरी तीन पदोंकी; पांच पदोंकी एक चूलिका ॥

“॥ इष्टामि पडिक्कमिउं इरियावहिआए विरा हणाए । १ । गमणागमणे । २ । पाणक्कमणे, वीयक्कमणे हरीयक्कमणे । ३ । ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कनासं ताणासंकमणे । ४ । जे मे जीवा विराहिया । ५ । यह एक वाचना, छादशम तपके पीठे देते हैं. ॥ १ ॥

“॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया । ६ । अजिहया, वत्तिया, वेसिया, संघाइ या, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उदविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया,

तस्स मिहामि दुक्कनं । ७ । तस्सउत्तरीकरणेणं,
पायञ्चित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसह्वीकरणेणं,
पावाणं कम्माणं निघायणघाए, ठामि काउस्सगं । ८ ।
यह दूसरी वाचना, आठ आचाम्ब्लके अंतमें देनी.
॥ २ ॥ इसके पीठे ॥

“ ॥ अन्नथ्य उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं,
ढीएणं, जंजाइएणं उरूएणं, वायनिसग्गेणं, जमलि
ए, पित्तमुष्ठाए, ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचाळेहिं,
सुहुमेहिं खेळसंचाळेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचाळेहिं । १ ।
एवमाइएहिं, आगारेहिं, अजगो अविराहिओ,
हुज्ज मे काउस्सगो । ३ । जाव अरिहंताणं, जगवं
ताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि । ४ । ताव कायं, ठाणे
णं, मोणेणं, जाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि । ५ । ”
यह चूखिकाकी वाचना, अंत दिनमें देनी. ॥
इतिऐर्यापथिक्याउपधानम् ॥ २ ॥

अथ शक्रस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ तहां
नंदिआदि सर्व शक्रस्तवके अजिलापसें पूर्ववत्. ।
तथा प्रथम दिनमें एकजक्त, दूसरे दिन उपवास,
तीसरे दिन एकजक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे
दिन एकजक्त, ठैठे दिन उपवास, सातमे दिन एक
जक्त; । तहां तीन संपदार्थोंकी प्रथम वाचना देते
हैं. ॥ यथा ॥

“ ॥ नमुश्रुणं अरिहंताणं जगवंताणं । १ । आइ
गराणं तिथ्यराणं सयंसंबुद्धाणं । २ । पुरिसुत्तमाणं
पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंररीआणं पुरिसवरगंधह
थीणं । ३ । इत्येका वाचना ।

यह एक वाचना । नमुश्रुणं । यह पद जिन्न
है । तीनोंही संपदा अनुक्रमे दो, तीन, चार पद
वाली है । पीठे एकश्रेणिकरके निरंतर सोळां (१६)
आचाम्ल करने । तिसमें पांच २ पदोंवाली तीन
संपदाकी वाचना देते हैं ॥ यथा ॥

॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगप
ईवाणं लोगपज्जोअगराणं । ४ । अज्जयदाणं चस्कुद
याणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं । ५ । धम्म
दयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं
धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठीणं । ६ । यह दूसरी वाचना ॥

पीठे फिर जी तिसही श्रेणिकरके सोळां आचा
म्ल करने । तिसमें दो तीन पदोंवाली तीन संप
दाकी वाचना देनी ॥ यथा ॥

॥ अप्पनिहयवरणाणंदंसेणधराणं विश्रट्ठउमा
णं । ७ । जिणाणं, जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धा
णं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं । ८ । सबन्नूणं सब
दरिसिणं सिवमयलमरुअमणंतमस्कयमवावाहमपुण
राविति, सिद्धिगइनामधेयं, ञ्णं संपत्ताणं, नमो जिणा
णं जिअज्जयाणं । ९ । ” यह तीसरी वाचना ॥ ३ ॥

“ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ जविस्संतिणा गए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सवे तिविहेण वंदा मि ॥ ” इस अंतिमगाथाकी वाचना जी, तीसरी वाचनाके साथही देनी. ॥ इतिशक्रस्तवोपधानम् ॥ ३ ॥

अथ चैत्यस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ नंदिआ दिपूर्ववत्. । प्रथम दिने एक जक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एक जक्त; पीठे श्रेणिकरके तीन आचाम्ब करणे. अंतमें तीनोंही अध्ययनोंकी सम कालें एक वाचना देनी. ॥ यथा ॥

“ ॥ अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सगं, वंदण वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, बोहिल्लजवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । १ । सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वट्टमाणीए, ठामिकाउस्सगं । २ । अन्नथ्यउससिए णं—यावत्—वोसिरामि ॥ ३ ॥ ” यह एकही वाचना है. ॥ इति चैत्यस्तवोपधानम् ॥ ४ ॥

अथ चतुर्विंशतिस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ नंदि, दो पूर्ववत्. । प्रथम दिने एकजक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकजक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकजक्त, ठठे दिन उपवास, सातमे दिन एकजक्त. । एसें अष्टम तप. अंतमें प्रथम गाथाकी एक वाचना. यथा ॥

“ ॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली । १ । ” यह एक वाचना. ॥ १ ॥

पीठे श्रेणिकरकेही बारां (१२) आचाम्ल कर ने. तिसके अंतमें तीन गाथाकी वाचना. ॥ यथा ॥

॥ उसजमजियं च वंदे, संजवमज्जिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे । १ । सुवि हिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जांस वासु पुज्जां च ॥ विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि । २ । कुंथुं अरं च मद्धिं, वंदे मुणि सुवयं नमिजिणं च ॥ वंदामिरिठ्ठनेमिं, पासं तह वरू माणं च । ३ । यह दूसरी वाचना. ॥ ११ ॥

पीठे तिस श्रेणिकरकेही तेरा (१३) आचाम्ल करने. तिसके अंतमें तीसरी वाचना ॥ यथा ॥

॥ एवं मए अज्जिथुआ, विहुयरयमला पहीणजर मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तिथ्यरा मे पसीयंतु । ५ । कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिल्लाजं समाहिवरमुत्तमं दिंतु । ६ । चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास यरा । सागरवरगंजीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ ” यह तीसरी वाचना. ॥ ३ ॥ इति चतुर्विंशतिस्तवोपधानम् ॥ ५ ॥

अथ श्रुतस्तवका उपधान कहते हैं. । नंदि, दो पूर्ववत्. । प्रथमदिने एकजक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकजक्त, पीठे श्रेणिकरके पांच आचाम्ल

करने. तिसके अंतमें दो गाथाओंकी और दोनों वृत्तों की समकालही वाचना.। तिसमें पांच अध्ययन है.। तिसमें प्रथमकी दो गाथाओंके दो अध्ययन ॥ यथा ॥

“ ॥ पुस्करवरदीवद्दे, धायइसंडे अ जंबुदीवेश्व ।
जरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंतामि । १ । तम
तिमिरपफुलविडंसणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स ।
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअमोहजालस्स । २ । तीस
रा अध्यायन वसंततिलका वृत्तसें ॥ यथा ॥

॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कद्धाणपुक्ख
लविसालसुहावहस्स । को देवदाणव नरिंदगण
च्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवल्लघ्न करे पमायं । ३ ।
चौथा अध्ययन शार्दूलविक्रीकितवृत्तके पूर्वार्द्धसें । यथा

॥ लोगो जह पइछिउं जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं,
धम्मो वहुउं सासउं विजयउं धम्मुत्तरं वहुउं । ४।
॥५॥” इति श्रुतस्तवोपधानम् । ६। इति षडुपधानानि ।

तथा सिद्धस्तवमें प्रथम तीन गाथाकी वाचवा यथा
“ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सबसिद्धाणं । १ ।
जो देवाणविदेवो, जं देवा पंजल्ली नमंसंति । तं
देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं । २ । इक्कोवि
नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वरूमाणस्स । संसार
सागराउं, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ ” शेष
दो गाथा ॥ यथा ॥

॥ उज्जितसेखसिहरे, दिस्का नाणं च निसीहि
आ जस्स । तं धम्मचक्रवट्ठिं, अरिठ्ठनेमिं नमंsamि
। ४ । चत्तारि अठ दस दो अ, वंदिआ जिणवरा
चउवीसं । परमठनिठ्ठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसं
तु ॥ ५ ॥ ” इत्युपधानवाचना स्थितिः ॥ अथ
विस्तार, निशीथसिद्धांतसें उद्धृत उपधानप्रकरणसें
जानना. ॥

ज्ञावार्थः—पांच नमस्कारमें पांच उपवासका उप
धान होता है, आठ आचाम्बल तथा अंतमें एक
अष्टमतप, और बत्तीस आचाम्बल. चैत्यस्तवमें एक
उपवास, और तीन आचाम्बल करणे. । चतुर्विंशति
स्तवमें एक षष्ठतप, एक उपवास, और पंचवीस
(१५) आचाम्बल करणे. । श्रुतस्तवमें एक उपवास,
और पांच आचाम्बल. । तीर्थंकर गणधरोंने चैत्यवं
दनादि सूत्रमें यह उपधान कथन करा है. ॥ ५ ॥
व्यापाररहित, विकथाविवर्जित, रौद्र ध्यान रहित,
विश्राम रहित उपयोगसहित, उपधान करे, ॥ ६ ॥
यह उत्सर्ग कहा. अब अपवाद कहते हैं. अथ
कदापि उपधानवाही बालक होवे, वा वृद्ध होवे,
वा शक्तिरहित तरुण होवे तो, अपनी शक्तिप्रमाण
उपधान प्रमाण पूर्ण करे. । रात्रिजोजनकी विरति,
चतुर्विधाहार, वा त्रिविधाहार, वा द्विविधाहार प्रत्या
ख्यानरूप करे; नवकारसहिआदि पञ्चस्काण कर

के. । एक शुरु आंबिलकरे, अथवा इतर दो आंबिल करनेसें, एक उपवास होता है. पणतादीस (४५) नवकारसहि करनेसें एक उपवास होता है. चौवीस (२४) पोरसि करनेसें, और दश (१०) साढपोरसी करनेसें, एक उपवास होता है. तीन निवि करनेसें, और चार एकलठाणे करनेसें, एक उपवास होता है. आचरणसें सोळां (१६) पुरिमढ करनेसें उपवास होता है. चार एकासनेसें, और आठ बियासणे करनेसें जी, उपवास होता है. अर्थात् उपवासका जो फल है, सोही प्रायः पूर्वोक्त तपका फल है. इसवास्ते जिसकी पूर्वोक्त उपधानकी शक्ति न होवे सो, इन तपोंमेंसें किसी जी तपके करनेसें उपधान प्रमाण पूर्ण करे. ॥ ११ ॥

गौतमस्वामी कहते हैं. हे जगवान् ! ऐसे करते हुए प्राणीको बहोत काल होवे तो, कदापि नवकार वर्जित जि, तिसका मरण हो जावे, तो नवकार वर्जित सो प्राणी, अनुत्तर, निर्वाण, कैसें प्राप्त करें ? तिसवास्ते नवकार प्रथमही ग्रहण करो, उपधान होवे, वा न होवे. ॥ १३ ॥

महावीर स्वामी कहते हैं. हे गौतम ! जो प्राणी जिस समयमें व्रतोपचार (उपधानारंज) करे, तिसही समयमें, तूं जिनाज्ञाकरके ग्रहण करा है व्रतार्थ जिसनें, ऐसा तिसको जाण. ॥ १४ ॥ ऐसें जिसने

उपधान करा है, सो प्राणी जवांतरमें सुलजबोधि होतेहैं. और उपधानके अध्यवसायवाले जी, हे गौतम ! आराधक होते हैं. परंतु हे गौतम ! जक्ति वाला जी प्राणी, जो उपधानविना श्रुतको ग्रहण करे, तिसको नहीं ग्रहण करनेवालेके सदृश जाण ना. तथा सो जीव, तीर्थकरकी, तीर्थकरके वच नोंकी, संघकी, और गुरुजनकी, आशातना करता है. सो आशातना बहुल प्राणी, हे गौतम संसारमें त्रमण करता है. उपधानवीना नवकार जिसने पढ लिया है, तिसको जी उपधान पीछेसेजी करनेसे बोधि, (जिनधर्मप्राप्ति) सुलज कही है. यह उपधानकरके प्रधान, निपुण, संपूर्ण जी वंदन विधान, जिनपूजा, पूर्वकही श्रुतोक्त नीतिकरके पढना. तिस पंच मंगलको स्वर, व्यंजन, मात्रा, बिंदु, पदछेद, स्थानोंकरके शुरु पढके, चैत्यवंदन सूत्रको, और अर्थको विशेषकरके जाणना. तिसमें जहां सूत्रविषे, वा अर्थविषे, संदेह होवे तो, तिस को बहुशः विचारके संपूर्ण संदेहरहित करना॥११॥

अथ शुचतीथि, करण, मुहूर्त्त, नक्षत्र, जोग, लग्नमें, चंद्रबलके अनुकूल हुए, कल्याणकारी प्रशस्त समयमें, अपने विज्ञवानुसार जगवान्का पूजन कर, परम जक्तिसे विधिपूर्वक साधुवर्गको प्रतिलाज के, अतिसमूह सहित, हर्षवशसे खडे हुवें हैं,

पुलक (रोम) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निविरागद्वैषमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उद्धसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिज्वनगुरु जिन जगवानकी प्रतिमामे स्थापन किये हैं, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसे मैं धन्य हूं ऐसे मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जंतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको जावते (विचारते) हुए, ऐसे पूर्वोक्त विशेषणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गंजीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुजचारि त्रसंयुक्त, अप्रमादादि बहुविध गुण संयुक्त, ऐसे गुरुके साथ, चतुर्विध संघसंयुक्त, विशेषसें निजबंधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनबिंबको वंदना करनी. ॥ ३९ ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम जक्तिसें वंदना करे. तथा साधर्मिओंको यथायोग्य प्रणामादि करे. पीठे बहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक जक्ति करके उपधानवाहिने, श्रीसंघका जारी सन्मान करना. ॥ ३१ ॥

इस अवसरमें अढीतरें जान्या है गंजीर सिद्धांतका सार जिसने, ऐसे गुरुने, आक्षेपिणी, विक्षेपिणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, यद चार प्रकारकी

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण जारी प्रबंध करके करनी. ॥ ३३ ॥

पीठे तिस जठ्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

जो जो देवानुप्रिय ! निज जन्म साफख्यताको प्राप्त करके तैने आजसे लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी. क्योंकि, क्षणजंगुर मनुष्यपणेमें यही सार है, तहां तैने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोंको वंदना करकेही जोजन करना कदपे, और अपराहमें जी फिर वंदना कर केही सोना कदपे, अन्यथा नहीं. ॥ ३७ ॥

ऐसे अजिग्रहबंधन करके पीठे वर्तमान विद्यासे अजिमंत्रके गुरु सात मुष्टीप्रमाण गंध (वासक्षेप) ग्रहण करे. पीठे तिस उपधानवाहीके मस्तकऊपर “ निश्चारगपारगो हविज्ञा तुमं ” ऐसे उच्चारण करता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे (माले) इस विद्याके प्रज्ञावके जोगसे निश्चय यह जठ्य प्रारंजित कार्योंका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे. ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघजी, तूं, निस्तारक पारग हो,

तू धन्य है. सलक्षण है, इत्यादि बोलता हुआ, तिसके मस्तकऊपर वासक्षेप करे. ॥ ४३ ॥

पीठे जिनप्रतिमाके पूजादेशसें सुरजिगंधसंयुक्त अम्लान श्वेतमाला ग्रहण करके, गुरु अपने हाथों से तिस उपधानवाहीके दोनों खंधोंऊपर आरोपण करता हुआ, शुद्ध चित्तकरकेनिसंदेह ऐसा वचन कहे. ॥ ४४ ॥

अष्टीतरे प्राप्त किया निज जन्म जिसने, तथा संचय करा है अतिजारी पुण्यका समूह जिसने, ऐसे जो जो जव्य ! तेरी नरकगति, और तिर्यगु गति, अवश्यमेव बंद होगई. हे सुंदर ! आजसें लेके, तू, अपयस, नीच गोत्रोंका बंधक नहीं है. तथा जन्मांतरमें जी, यह पंचनमस्कार तुजको दुर्लभ नहीं है. पांच नमस्कारके प्रज्ञावसें जन्मांतरमें जी तुजको प्रधान जाति, कुल, आरोग्य संपदाएं प्राप्त होवेगी. और इसके प्रज्ञावसें मनुष्य कदापि संसारमें दास, प्रेष्य, दुर्जग, नीच. और विकलेंद्रिय नहीं होते हैं. किं बहुना. जोइस विधिसें इस श्रुतज्ञानको पढके श्रुतोक्त विधिसें शुद्ध आचारमें—क्रिया करे, वे, यदि तिसही जन्ममें उत्तम निर्वाणको प्राप्त न होवे तो, अनुत्तर प्रैवेयकादि देवलोकोंमें चिरकाल क्रीडा करके उत्तम कुलमें उत्कृष्ट प्रधान सर्वांगसुंदर प्रकट सर्वकला प्राप्त करी

हैं जिनोंने, ऐसेलोकोंके मनको आनंद देनेवाले होके, देवेंद्रसमान रुद्धिवाले, दयामें तत्पर, दानविनयसं युक्त, कामजोगोंसे विरक्त, संपूर्ण धर्मके अनुष्ठानसे, शुद्ध ध्यानरूप अग्निसें चार घातिकर्मरूप इंधन को दग्ध किये हैं—जिनोंने, ऐसे महासत्त्व, निर्मल केवल ज्ञान, सर्व मलकर्मसे रहित, होकर शीघ्र सिद्ध होते हैं. ॥ ५३ ॥ यह निर्मल फल जाणके बहोत मान देने योग्य जो देव, सोही जये सूरि, ऐसे जो जिन तिनके वचनसे यह उपधान महानि शीघ्र सूत्रसे सिद्ध करो.—इस अंतिम गाथामें प्रकरणकर्त्ता श्रीमान देवसूरिने जगवान्के 'महमाणदेवसूरिस्स' इस विशेषणद्वारा अपना जी नाम, सूचन करा है. ॥ ५४ ॥ इत्युपधानप्रकरणज्ञावार्थः॥

॥ इत्युपधानविधिः ॥

अथ मालारोपण विधि कहते हैं. ॥ तहां पिठ लाही नंदि क्रम जाणना. । और इतना विशेष हे कि, मालारोपनतपके पूर्ण हुए तत्कालही, वा दिनां तरमें होता है तहां यह विधि है. ॥ मालारोपणसे पहिले दिनमें साधुओंको अन्न पान वस्त्र पात्र वसति पुस्तक दान देवे, संघको जोजन देवे, वस्त्रादिकसे संघकी पूजा करे, शुद्ध तिथि वार नक्षत्र लग्नमें, दीक्षाके उचित दिनमें, परम युक्तिसें बृहत्स्नात्र विधिसें जिनपूजा करे, माता पिता परिजन साधर्मि

कादिकोंको एकठे करे, पीठे मालाग्राही कृतउचित वेष, कृतधम्मिल, उत्तरासंगवाला, निजवर्णानुसारसें जिनोपवीत उत्तरीयादिधारी, सज करके प्रचुरगंधादि उपकरण अर्द्धत नालिकेर हाथमें लेके पूर्ववत् सम वसरणको तीन प्रदक्षिणा करे. । पीठे गुरुके समीपे क्षमाश्रमणपूर्वक कहे ॥ “ इष्ठाकारेण तुप्पे अम्हं पंचमंगलमहासुअस्कंध इरिआवहिआ सुअस्कंध, स कथ्यसुअस्कंध, चेइअथ्यसुअस्कंध, चउवीसथ्यसुअस्कंध, सुयथ्यसुअस्कंध, अणुजाणावणिअं, वासके वं करेह ” ॥ पीठे गुरु जी अज्जिमंत्रित वासक्षेप करे. । फिर श्राद्ध क्षमाश्रमणपूर्वक कहे “ चेइआइं च वंदावेह ” पीठे वर्द्धमानस्तुतियोंसें चैत्यवंदन कराना, शांतिदेवादि स्तुति पूर्ववत्. फिर शक्रस्तव अर्हणादि स्तोत्र कहना. पूर्ववत्. । पीठे ऊठके “पंच मंगलमहासुअस्कंध पक्कमणसुअस्कंध जावारिहं तथ्य ठवणारिहंतथ्य चउवीसथ्य नाणथ्य सिद्धथ्य अणुजाणावणिअं करेमि काउस्सग्गं अन्न थ्य उससिएणं—यावत्—अप्पाणं वोसिरामि ” कह के चतुर्विंशतिस्तव चिंतन करे, पारके प्रकट चतुर्विंशतिस्तव पढे. । गुरु तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढके आसन ऊपर बैठ जावे, संघ और परिजनसहित श्राद्धको जो जो देवाणुपिया, संपाविअ निययजम्मसाफलं ॥ तुमए अज्जाप्पजिई, तिक्कालं जावजीवाए ॥ १ ॥

वंदे अवां चेश्वां, एगगसुथिरचित्तेण ॥
 खणजंगुराओ मणुअ, तणाउं इणमेव सारंति ॥ २ ॥
 तथ्य तुमे पुवएहे, पाणंपि न चेव ताव पायवं ॥
 नो जाव चेश्वां, साहूविअ वंदिआ विहिणा ॥ ३ ॥
 मश्एहे पूणरवि, वंदिऊण निअमेण कप्पए जुत्तुं ॥
 अवरएहे पुणरवि, वंदिऊण निअमण सुअणंति ॥ ४ ॥

इत्यादि महानिशीथमध्यगत वीस गाथामें कही हुई देशना देके, तीन संध्यामें त्रैलोक्यवंदन साधुवंदन करनेके अजिग्रह विशेषोंको देवे. पीठे वासमंत्रके सात गंधकी मुष्ठी “ निश्चारगपारगो होहि ” ऐसैं कहता हुआ गुरु, तिसके शिरमें प्रक्षेप करे. पीठे अक्षतसहित वासक्षेपको मंत्रे । तिस समयमें सुर जिगंध अम्लान श्वेत पुष्पोंके समूहसें ग्रंथन करी हुई मालाको जिनप्रतिमाके पगोंऊपर स्थापन करे । सूरि खरा होके अजिमंत्रित वासको जिनचरणोंके ऊपर क्षेप करे, पास रहे साधु साध्वी श्रावक श्रावि का सबको गंधाक्षत देवे. श्राद्ध नमस्कारअनुज्ञा केवास्ते तीन प्रदक्षिणा देवे. तब गुरु “ निष्ठारग पारगो होहि गुरुगुणेहिं बुद्धाहि ” ऐसैं कहे. और जन (संघ) “ पूर्णमनोरथवाला तूं हुआ है, तूं धन्य है, तूं पुण्यवान् है ” ऐसैं कहते हुए उनके उपर गुरुसंघादि वासक्षेप करे । पीठे फिर श्राद्ध समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे । पीठे गुरु और

सम वसरणको तीन प्रदक्षणा देवे, पीठे गुरुसंघसहित
समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे, पीठे नमस्कारा
दिश्रुतस्कंधअनुज्ञापनार्थ कायोत्सर्ग करे, एकलोग
सकाकाउसग करें, पारके प्रगट लोगस्स कहे.

पीठे माला धारण करनेवाला तिसके स्वजनौकेसाथ
प्रतिमाके आगे जाके शक्रस्तव पढके “आणुजा
णउ मे जयवं अरिहा” ऐसे कहके जिनपदऊपरि
पूर्व स्थापित मालाको लेके निजबंधुके हाथमें स्थाप
न करके नंदिके समिप आय कर, श्राद्ध, मालाको
गुरुसैं मंत्रित करावे, । पीठे गुरु खमा होकर उपधा
नविधिका व्याख्यान करे. सो श्राद्ध जी, खमा होके
श्रवण करे. “परमपयपुरिपठि” इत्यादि मालाकी
गाथा महिमां दर्शकसैं गुरु देशना करे. ।

तत्तो जिणपडिमाए, पूआदेसाओ सुरजिगंवहं ॥
अमिद्वान सिअदामं, गिएहअ गुरुणा सहव्वेणं॥१॥
तस्सोजयखंधेसु, आरोवंतेण सुद्धचित्तेण ॥

निसंदेहं गुरुणा,वत्तवं एरिसं वयणं ॥ २ ॥

जो जो सुलद्धनिअजम्म, निचिअअइगरुअपुत्तपज्जार॥
नारयतिरिअगईओ, तुझावस्सं निरुद्धाओ ॥ ३ ॥

नो बंधगोसि सुंदर, तुममित्तो अकयनीअगुत्ताणं ॥
नो डुल्लहो तुह जम्मं, तरेवि एसो नमुक्कारो ॥ ४ ॥

पंचनमुक्कारजावओ अ जम्मंतरेवि किर तुल्ल ॥
जाईकुलरूवग्ग, संपयाओ पहाणाओ ॥ ५ ॥

अन्नं च इमाश्चोच्चिअ, न हुंति मणुआ कया विजीअसोए
 दासा पेसा दुजगा, नीआ विगळिंदिआ चेव ॥ ६ ॥
 किं बहुणा जे इमिणा, विहिणा एअं सुअं अहिजित्ता ॥
 सुअजणिअ विहाणेणं, सुळे सीळे अजिरमिज्जा ॥ ७ ॥
 नो ते जइ तेणंचिअ, जवेण निवाणमुत्तमं पत्ता ॥
 तोणुत्तर गेविज्जाइएसु सुइरं अन्निरमेउं ॥ ८ ॥
 उत्तमकुलस्मि उक्किठ, लठसवंगसुंदरापयका ॥
 सवकलापतठा, जणमणआणंदणा होउं ॥ ९ ॥
 देविंदोवमरिद्धी, दयावरा दाणविणयसंपन्ना ॥
 निविणकामजोगा, धम्मं सयलं अणुठेउं ॥ १० ॥
 सुहृश्चाणानलनिदह, घाइकम्मिधणा महासत्ता ॥
 उप्पन्नविमलनाणा, विहुयमत्ता ऊत्ति सिञ्चंति ॥ ११ ॥

यह गाथा तीनवार गुरु कहे । इन गाथार्योंका
 ज्ञावार्थ उपधानप्रकरणज्ञावार्थमें लिख दिया है. ॥

पीठे तिसके स्कंधमें मालाप्रक्षेप करनी. ॥ पीठे
 श्राद्धवर्ग आरात्रिक (आरती) गीननृत्यादि बहु
 त करे. । उपधानवाही श्रावकने तिस दिनमें आचा
 म्लादि तप करना; यदि पौषधशालामें मालारोपण
 होवे, तदा संघसहित जिनमंदिरमें जावे, चैत्यवं
 दना करके फिर पौषधागामें आयकर मंरुद्धीपूजा
 दि करे. ॥ इस उपधानविधिको निशीथ, महानि
 शीथ, सिद्धांतके पढनेवालोंने श्रुतसामायिकसमान
 माना है. और निशीथ महानिशथके तिरस्कार

करनेवालोंने नही अंगीकार करा है. तिनोंने तो प्रतिमोहहनविधिकोही श्रुतसामायिक कथन करा है. ॥ माला जी कितनेक कौशेय पट्टसुत्रमयी (रे शमी) स्वर्ण, पुष्प, मोति, माणिक्य गर्जित, आरोपते हैं. और कितनेक श्वेत पुष्पमयी आरोपते हैं. तिसमें तो, अपनी संपत्तिही प्रमाण है.

॥ इति श्रुतसामायिक विधिः ॥

॥ अथ श्रावक दिन चर्या ॥

दो मुहुर्त्त शेष रात्रि रहे श्रावक सूता ऊठे, मल मूत्रकी शंका दूर करे, और शुचि होकर पवित्र आसनऊपर स्थित हुआ यथाविधिसे परमेष्ठि महा मंत्रका जाप करे. पीठे कुल, धर्म, व्रत, श्रद्धाका, विचार करके, और स्तोत्रपाठसंयुक्त चैत्यवंदन कर के, अपने घरमें, वा पौषधशालादि में स्थित होकर, प्रतिक्रमणादि करे. । पीठे प्रत्युष कालमें अपने घरमें स्नान करके, शुचि होके, शुचि वस्त्र पहिरके, संसारिक सुख, और मोह देनेवाले, अरिहंतकी पूजा करे. । तिसवास्ते जिनार्चनविधि, अर्हत्कल्पके कथनानुसारें कहते हैं ॥

॥ अर्हत् कल्पोक्त जिनपूजा विधि ॥

श्राद्ध प्राप्तगुरुउपदेश, जिनघरमें, वा बडे मंदि रमें, शिखा बांधी, शुचि वस्त्र पहिरि, उत्तरासंग

करी, स्वर्णानुसार जिनोपवीत उत्तरीय उत्तरासंग धारी, मुखकोश बांधी, एकाग्रचित्त, एकांतमें जिन पूजन, करे. । प्रथम जल, पत्र, पुष्प, अद्भुत, फल, धूप, अग्नि, दीपक, गंधादिकोंको निःपापता करे. ॥

॥ जलादिकोकी शुद्धीके मंत्र ॥

“ ॥ ॐ आपोऽपूकाया एकेंद्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥ ” इति जलाजिमंत्रणम् ॥

“ ॥ ॐ वनस्पतयो, वनस्पतिकाया जीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां, निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥ ” इति पत्रपुष्पफलधूपचंदनाद्यजिमंत्रणम् ॥

“ ॥ ॐ अग्नयोऽग्निकायाजीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु, निरपाया संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसा पापमर्हदर्चने ॥ ” इति वह्निदीपाद्यजिमंत्रणम् ॥ सर्वका अजिमंत्रण वासुदेवसें तीनवार करना. ॥ पीठे । पुष्पगंधादि हाथमें लेके ॥

“ ॥ ॐ त्रसरूपोहं, संसारिजीवः, सुवासनः, सुमेध एकचित्तो, निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथो ज्ञूयासं, निःपापो ज्ञूयासं, निरुपद्रवो ज्ञूयासं, मत्सं श्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथा ज्ञूयासुः, निःपापाज्ञूयासुः ॥ ”

ऐसें कहके अपने आपको तिलक करना, पुष्पा दिकरके अपना शिर अर्चन करना. ॥ फिर पुष्प अक्षतादि हाथमें लेके ॥

“ ॐ पृथिव्यसेजोवायुवनस्पतित्रसकाया एकद्वि त्रिचतुः पंचेंद्रियास्तिर्यङ्मनुष्यनारकदेवगतिगताश्च तुर्दशरज्वात्मकलोकाकाशनिवासिनः इह जिनेनार्चने, कृतानुमोदनाः संतु, निःपापाः संतु, निरपायाः संतु, सुखिनः संतु प्राप्तकामाः संतु, मुक्ताः संतु, बोधमाप्नुवंतुः ॥ ”

ऐसें पढ़के दशोंदिशाओंमें गंध, जल, अक्षतादि द्वेष करना. पीठे ।

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता जवंतु जूतगणाः॥

दोषा प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीजवंतु लोकाः ॥ १ ॥

सर्वेपि संतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः ॥

सर्वे जज्राणि पश्यंतु, मा कश्चिदुःखजाग् जवेत् ॥२॥

यह आर्या और अनुष्ठुप् ठंद पढ़ने. ॥ पीठे ॥

“ ॐ जूतधात्री पवित्रास्तु अधिवासितास्तु सुप्रोषितास्तु ॥ ” ऐसें पढ़के प्रथम क्षीपी हुई जूमिमें जलसें सेचन करे. ॥ पीठें ॥

“ ॐ स्थिराय शाश्वताय निश्चलाय पीठाय नमः॥ ”

ऐसें पढ़के धोयके चंदनसें लेपन करके स्वस्ति कसें अंकित ऐसा पूजापट्ट (स्थालादि) स्थापन करे, और चैत्यमें तो स्थिरबिंब होनेसें इन दोनों

मंत्रोंसें चूमिजलपट्टादि अधिवासन करने. पीठे. ॥

“ ॥ ॐ अत्र क्षेत्रे, अत्र काले, नामार्हतो, रूपार्हतो, द्रव्यार्हतो, जावार्हतः समागताः, सुस्थिताः, सुनिष्ठिताः, सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥ ”

ऐसें पढके अर्हत् प्रतिमाको स्थापन करे निश्चलबिंबके हुए, चरण अधिवासन करे. ॥ पीठे अंजलि में पुष्प लेके ॥

“ ॥ ॐ नमोर्हद्भ्यः सिद्धेज्यस्तीर्णेज्यस्तारकेज्यो बुद्धेज्यो बोधकेज्यः सर्वजंतुहितेज्यः इह कल्पनबिंबे जगवंतोर्हतः सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥ ”

ऐसें मौन करके कहके जगवत्के चरणोपरि पुष्प स्थापन करे. । फिर जी जलार्द्र फूलोंसें पूजापूर्वक कहे. ॥ यथा ॥

“ ॥ स्वागतमस्तु सुस्थितमस्तु सुप्रतिष्ठास्तु ॥ ” पीठे फिर पुष्पाञ्जिषेक करके ॥

“ ॥ अर्घ्यमस्तु, पाद्यमस्तु. आचमनीय मस्तु, सर्वोपचारै पूजास्तु ॥ ” इन वचनोंकरके बारंबार जिनप्रतिमाके ऊपर जलार्द्र पुष्पारोपण करे ॥ पीठे जल लेके ।

ॐ अर्हं वं । जीवनं तर्पणं हृद्यं, प्राणदं मलनाशनं ॥ जलं जिनार्चनेत्रैव, जायतं सुखहेतवे ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जलसें प्रतिमाको अञ्जिषेक करे.

पीठे चंदन कुंकुम कर्पूर कस्तूरी आदि सुगंध हाथमें लेके ॥

ॐ अहं लं । इदं गंधं महामोदं, बृहणं प्रीणनं सदा ॥
जिनार्चने च सत्कर्म, संसिद्ध्यै जायतां मम ॥ १ ॥

यह मंत्र पढ़के विविध गंध जिनप्रतिमाको विक्षेपन करे. ॥ पीठे पुष्पपत्रादि हाथमें लेके ॥

ॐ अहं कं । नानावर्णं महामोदं, सर्वत्रिदशवह्नं
जिनार्चनेत्र संसिद्ध्यै, पुष्पं जवतु मे सदा ॥ १ ॥

यह मंत्र पढ़के जिनप्रतिमाके ऊपर सुगंधमय विविध वर्णके पुष्प चढ़ावे. ॥

ॐ अहं तं । प्रीणनं निर्मलं बद्धयं, मांगद्वयं सर्वसिद्धिदं ॥
जीवनं कार्यसंसिद्ध्यै, ज्ञयान्मे जिनपूजने ॥ १ ॥

यह मंत्र पढ़के जिनप्रतिमाके ऊपर अक्षत आरोपण करे. ॥ सुपारी प्रमुख फल हाथमें लेके जायफलं स्वर्गफलं, पुण्यमोक्षफलं फलं ॥

दद्याज्जिनार्चनेत्रैव, जिनपादाग्रसंस्थितम् ॥ १ ॥

यह मंत्र पढ़के जिनपादाग्रे फल ढोवे. ॥ पीठे धूप लेके ॥

ॐ अहं रं । श्रीखंभागरुकस्तूरी, दुमनिर्याससंजवः ॥
प्रीणनः सर्व देवानां, धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥

यह पढ़के अग्निमें धूपक्षेप करे. ॥ पीठे फूल लेके ।

“ ॥ ॐ अहं जगवद्भयोर्हद्भयो जलगंधपुष्पाक्षत
फलधूपदीपैः संप्रदानमस्तु ॐ पुण्याहं प्रीयतां जग

वंतोर्हतस्त्रिलोकस्थिताः नामाकृतिद्रव्यजावयुताः स्वा
हा ॥ ” यह पढ़के फिर जिनपूजन करे ॥ पीठे
वासक्षेप लेके ॥

“ ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रनैश्वरराहुकेतु
मुखाग्रहाः इह जिनपादाग्रे समार्यांतु पूजां प्रतीञ्चं
तु ॥ ” ऐसे पढ़के जिनपादसें नीचे स्थापित ग्रहोंके
ऊपर, वा स्नानपट्टके ऊपर वासक्षेप करे ॥ पीठे ॥

“ ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षत
मस्तु फलमस्तु धूपोस्तु दीपोस्तु ॥ ” ऐसे पढ़के क्रमसें
जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें ग्रहोंका
पूजन करे ॥ पीठे अंजलिमें फूल लेके ।

“ ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रशनैश्वरराहुके
तुमुखाग्रहाः सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदा
संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगद्वयदाः संतु, महोत्सवदाः
संतु ॥ ” ऐसे कहके ग्रहोंके ऊपर पुष्पारोपण
करे ॥ फिर इसी रीतिकरके ।

“ ॥ ॐ इंद्राग्निमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशानना
गब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपालाः इह
जिनपादाग्रे समागच्छंतु पूजा प्रतिञ्चंतु ॥ ” ऐसे कहके
पूजापट्टो परि लोकपालोंको वासक्षेप करे ॥ पीठे ॥

“ ॥ आचामनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षत
मस्तु फलमस्तु धूपोस्तु दीपोस्तु ॥ ” ऐसे पढ़के

क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें
लोकपालोंका पूजन करे. ॥ पीठे अंजलिमें पुष्प लेके।

“ ॥ ॐ इंद्राग्निमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशाननाग
ब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपालाः सुपू
जिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः
संतु, मांगव्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥ ” यह
पढके लोकपालोपरि पुष्पारोहण करे ॥ पीठे पुष्पां
जक्षि लेके ॥

“ ॥ अस्मत्पूर्वजा गोत्रसंजवा देवगतिगताः सुपू
जिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः
संतु, मांगव्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥ ” ऐसे
कहके जिनपादाग्रे पुष्पांजलिक्षेप करे. ॥ पीठे फिर
भी पुष्पांजलि लेके ॥

“॥ ॐ अर्हं अर्हज्जकाष्टनवत्युत्तरशतदेवजातयः
सदेव्यः पूजां प्रतिष्ठंतु सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः
संतु तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगढ्यदाः संतु,
महोत्सवदाः संतु ॥” ऐसैं कहके जिनपादाये अंज
लिक्षेप करे. ॥

पीठे श्रृंजलिके अग्रजागमें पुष्प धारण करके
अर्हन्मंत्र स्मरण करके तिस फूलसें जिनप्रतिमाको
पूजे ॥ अर्हन्मंत्रो यथा ॥

“॥ ॐ अहं नमो अरहंताणं, ॐ अहं नमो सयं
संबुद्धाणं, ॐ अहं नमो पारगयाणं ॥”

यह त्रिपद मंत्र श्रीमत् अर्हन् जगवंतोंके आगे नित्य स्मरण करे. कैसा है मंत्र ? देवल्लोकादि सुख और मोक्षका, देनेवाला, सर्व पापोंका नाश करने वाला है. । विशेष इतना है कि, यह मंत्र अपवित्र पुरुषोंने, उपयोगरहित पुरुषोंने, नहीं स्मरण करना. तथा उच्चशब्दसें नहीं स्मरण करना, नास्तिकोंको और मिथ्यादृष्टियोंको नहीं सुनाना. । यह पूर्वोक्त अर्हन्मंत्र एकसौआठ (१०८) बार, वा तदर्द्ध ५४ बार जपना ॥ पीठे दो पात्रोंमें नैवेद्य धरे. पीठे एक पात्रमें जल लेके ।

‘ ॐ अर्हं । नानाषड्रससंपूर्णं, नैवेद्यं सर्वमुत्तमं ।
जिनाग्रे ढौकितं सर्वं, संपदे मम जायतां ॥ १ ॥

यह पढके जलढोकना ॥ फिर दूसरा जल लेके।

“ ॥ ॐ सर्वेगणेशक्षेत्रपालाद्याः सर्वेग्रहाः सर्वे दिक्पालाः सर्वेऽस्मत्पूर्वजोद्भवादेवाः सर्वे अष्टनवत्युत्तरशतं देवजातयः सदेव्योऽर्हद्भक्ताः अनेन नैवेद्येन संतर्पिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगव्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥ ”
ऐसे कहके दूसरे नैवेद्यके पास जल ढोकन करे. ॥
यो जन्मकाले पुरुषोत्तमस्य, सुमेरुशृंगे कृतमज्जनैश्च ॥
देवैः प्रदत्तः कुसुमांजलिस्स, ददातु सर्वाणिसमीहितानि
राज्याजिषेकसमये त्रिदशाधिपेन ।

उत्रध्वजांक तलयोः पदयोर्जिनस्य ॥

क्षितोतिज्जक्तिजरतः कुसुमांजलिर्यः ।

स प्रीणयत्वनुदिनं सुधियां मनांसि ॥ २ ॥

देवेंद्रैः कृतकेवले जिनपतौ सानंदजक्त्यागतैः ।

संदेहव्यपरोपणक्षमशुभ्रव्याख्यानबुद्ध्याशयैः ॥

आमोदान्वितपारिजातकुसुमैर्यः स्वामिपादाग्रतो ।

मुक्तस्स प्रतनोतु चिन्मयहृदां जद्राणि पुष्पांजलिः ॥ ३ ॥

इन तीनों वृत्तोंकरके तीन वार पुष्पांजलिक्षेप करे ॥

लावण्यपुण्यांगजृतोर्हतोय, स्तद्वृष्टिजावं सहसैव धत्ते ।

सविश्वजर्तुर्ध्ववणावतारो, गर्जावतारं सुधियां विहंतुः ॥

लावण्यैकनिधेर्विश्व, जर्तुस्तद्वृष्टिहेतुकृत् ॥

लवणोत्तारणं कुर्या, झ्रवसागरतारणम् ॥ २ ॥

इन दो वृत्तोंकरके दो वार लवण उत्तारना ॥

साक्षारतां सदासक्तां, निहंतुमिव सोद्यमः ॥

लवणाब्धिर्ध्ववणांबु, मिषात्ते सेवते पदौ ॥ १ ॥

यह पदके लवणमिश्र जल उत्तारना ॥

जुवनजनपवित्रिताप्रमोदप्रणयनजीवनकारणं गरी

यः ॥ जलमविकलमस्तु तीर्थनाथक्रमसंस्पर्शिसुखावहं

जनानाम् ॥ १ ॥

यह पदके केवल जलक्षेप करे ॥

सप्तजीतिर्विधातार्हं सप्तव्यसननाशकृत् ॥

यत् सप्तनरकद्वारसत्ताररितुलां गतम् ॥ १ ॥

सप्तांगराज्यफलदानकृतप्रमोदं ।

सत्सप्ततत्त्वविदनंतकृतप्रबोधम् ॥

तच्छक्रहस्तधृतसंगतसप्तदीप, ।

मारात्रिकं जवतु सप्तमसङ्गुणाय ॥ २ ॥

यह पढके आरात्रिकावतारण करे. ॥

विश्वत्रयजवैर्जीवैः, सदेवासुरमानवैः ॥

चिन्मंगलं श्रीजिनेन्द्रात्, प्रार्थनीयं दिने दिने ॥ १ ॥

यन्मंगलं जगवतः प्रथमार्हतः श्री,

संयोजनैः प्रतिबन्धूव विवाहकाले ॥

सर्वासुरासुरवधूमुखगीयमानं ।

सर्वर्षिजिश्च सुमनोजिरुदीर्यमाणम् ॥ २ ॥

दास्यंगतेषु सकलेषु सुरासुरेषु ।

राज्येर्हतः प्रथमसृष्टिकृतो यदासीत् ॥

सन्मंगलं मिथुनपाणिगतीर्थवारि ।

पादाजिषेक विधिनात्युपचीयमानम् ॥ ३ ॥

यद्विश्वाधिपतेः समस्ततनुजृत्संसारनिस्तारणे ।

तीर्थे पुष्टिमुपेयुषि प्रतिदिनं वृद्धिं गतं मंगलम् ॥

तत् संप्रत्युपनीतपूजनविधौ विश्वात्मनामर्हतां ।

ज्यूयान्मंगलमक्षयं च जगते स्वस्त्यस्तु संघाय च ॥४॥

इन चारों वृत्तोंकरके मंगल प्रदीप करे. । पीठे

शक्रस्तव पठे ॥ इति कल्पोक्त जिनपूजन विधि.

॥ अथ स्नात्र विधि ॥

अथ अतिशय अर्हद्भक्तिवाला श्रावक, नित्य,
वा पर्वदिनमें, वा कीसी कार्यांतरमें, जिनस्नात्र कर
नेकी इच्छा करे, तिसका विधि यह है ।

प्रथम स्नात्रपीठके ऊपर, दिक्पालग्रह अन्य दैवतपूजन वर्जके, पूर्वोक्त प्रकारकरके जिनप्रतिमा को पूजके, मंगलदीप वर्जित आरात्रिक करके, पूर्वोपचारयुक्त श्रावक, गुरुसमक्ष संघके मिले हुए, चार प्रकारके गीतवाद्यादि उत्सवके हुए पुष्पांजा लि हाथमें लेके ।

“ ॥ नमो अरहंताणं नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुज्यः ॥ ” यह पढ़के दो ठंड पढे ।

कल्याणं कुलवृद्धिकारि कुशलं श्लाघार्हमत्यद्भुतं ।

सर्वाघप्रतिघातनं गुणगणाढंकारविभ्राजितम् ॥

कांतिश्रीपरिरंजनं प्रतिनिधिप्रख्यं जयत्यर्हतां ।

ध्यानं दानवमानवैर्विरचितं सर्वार्थसंसिद्धये ॥ १ ॥

जुवनजविकपापध्वांतदीपायमानं ।

परमतपरिघातप्रत्यनीकायमानम्

धृतिकुवलयनेत्रावश्यमंत्रायमानं ।

जयति जिनपतीनां धाममत्युत्तमानाम् ॥ २ ॥

यह पढ़के पुष्पांजलिक्षेपण करे. ॥ इतिपुष्पांजलिक्षेपः ॥

कर्पूरसिद्धाधिककाकतुंरु, कस्तुरिकाचंदनवंदनीयः॥

धूपो जिनाधीश्वरपूजनेऽत्र, सर्वाणि पापानि दहत्व

जलम् ॥ १ ॥

यह पढ़के सर्वपुष्पांजलियोंके बीचमें धूपोत्

क्षेप करे. ॥ और शक्रस्तव पढ़े. ॥ पीछे जलपूर्ण कलश लेके, दो श्लोक पढ़े. ॥

केवली जगवानेकः, स्वाद्यादी मङ्गनैर्विना ॥

विनापि परिवारेण, वंदितः प्रचुतोर्जितः ॥ १ ॥

तस्येशितुः प्रतिनिधिः सहजश्रियाढ्यः ।

पुष्पैर्विनापि हि विना वसनप्रतानैः ॥

गंधैर्विना मणिमयाक्षरणैर्विनापि ।

लोकोत्तरं किमपि दृष्टिसुखं ददाति ॥ २ ॥

यह पढ़के प्रतिमाको कलशाक्षिषेक करे. ॥ इति प्रतिमायाः कलशाक्षिषेकः ॥ पुष्प अलङ्कारादि उत्तारके, कलशाक्षिषेक करके, पीछे फिर पुष्पांजलि लेके, दो काव्य पढ़े. ।

विश्वानन्दकरी जवांबुधितरी सर्वापदां कर्तरी ।

मोक्षाध्वैकविलम्बनाय विमला विद्या परा खेचरी ॥

दृष्ट्या जावितकदम्बापनयने बद्धाप्रतिज्ञा दृढा ।

रम्यार्हतप्रतिमा तनोतु जविनां सर्वं मनोवाञ्छितम् ॥ १ ॥

परमतररमासमागमोत्थप्रसूतमरहर्षविज्ञासिसन्निकर्षा

जयति जगति जिनेशस्य दीप्तिः प्रतिमा कामितदा

यिनी जनानाम् ॥ २ ॥

यह पढ़के फिर पुष्पांजलिक्षेप करे. पीछे पूर्वोक्त 'कर्पूरसिद्धा' वृत्तकरके धूपोत्क्षेप करे, और शक्रस्तव पढ़े. । पीछे फिर पुष्पांजलि हाथमें लेके, दो काव्य पढ़े. ॥ यथा ॥

न दुःखमतिमात्रकं न विपदां परिस्फूर्जितं ।
 न चापि यशसां क्षितिर्न विषमा नृणां दुस्थता ॥
 न चापि गुणहीनता न परमप्रमोद दायो ।
 जिनार्चनकृतां जवे जवति चैव निःसंशयम् ॥ १ ॥
 एतत्कृत्यं परममसमानंदसंपन्निदानं ।
 पाताललोकः सुरनरहितं साधुजिः प्रार्थनीयम् ॥
 सर्वारंजापचयकरणं श्रेयकां सं निधानं ।
 साध्यं सर्वैर्विमलमनसा पूजनं विश्वजर्तुः ॥ २ ॥

यह पढके फिर पुष्पांजलिदेप करे. । पीठे धूप हाथमें लेके पढे. ।

कर्पर्परागरुसिद्धहृचंदनबलामांसीशशैलेयक ।
 श्रीवासडुमधूपरालघुसृणैरत्यंतमामोदितः ॥
 व्योमस्थप्रसरहृशांककिरणज्योतिःप्रतिष्ठादको ।
 धूपोत् क्षेपकृतो जगत्रयगुरोस्सौजाग्यमुत्तंसतु ॥ १ ॥
 सिद्धाचार्यप्रभृतीन्, पंच गुरून् सर्वदेवगणमधिकम् ॥
 क्षेत्रे काले धूपः प्रीणयतु जिनार्चने रचितः ॥ २ ॥

यह पढके धूपोत्क्षेप करे. । शक्रस्तव पढे. ॥
 पीठे फिर पुष्पांजलि लेके ॥

जन्मन्यनंतसुखदे जुवनेश्वरस्य ।
 सुत्रामजिः कनकशैलशिरःशिलायाम् ॥
 स्नात्रं व्यधायि विविधांबुधिकूपवापी ।
 कासारपद्मलसरित्सलिलैः सुगंधैः ॥ १ ॥

तां बुद्धिमाधाय हृदीहकाले, स्नात्रं जिनैन्द्रप्रतिमाग
णस्य ॥ कुर्वति लोकाः शुभजावजाजो, महाजनो
येन गतः स पन्थाः ॥ १ ॥ यह पढके पुष्पांजलि
क्षेप करे ॥ १ ॥

परिमलगुणसारसज्जुणाढ्या, बहुसंसक्तपरिस्फुरद्द्विरे
फा ॥ बहुविधबहुवर्णपुष्पमाला, वपुषि जिनस्य च व
त्वमोघयोगा ॥ १ ॥

यहवृत्त पढके पगोंसें लेके मस्तकपर्यंत जिनप्रति
माको पुष्पारोपण करे । पीठे 'कर्पूरसिद्धाधि०'
इसकरके धूपोत्क्षेप करे. । पीठे शक्रस्तव पढे. ।
पीठे फिर पुष्पांजलि हाथमें लेके ।

साम्राज्यस्य पदोन्मुखे जगवति स्वर्गाधिपैर्गुफितो ।
मंत्रित्वं बलनाथतामधिकृतिं स्वर्णस्य कोशस्य च ॥
बिभ्रद्भिः कुसुमांजलिर्विनिहितो जत्तया प्रजोः पाद
योर्दुःखौघस्य जलांजलिं सतनुतादालोकनादेव हि । १।
चेतः समाधातुमनिन्द्रियार्थं, पुण्यं विधातुं गणनाह्व
तीतम् ॥ निक्षिप्यतेर्हत्प्रतिमापदाग्रे, पुष्पांजलिः प्रोज्ज
तज्जक्तिजावैः ॥ १ ॥

यह पढके पुष्पांजलिक्षेप करे. । सर्व पुष्पांजलि
योंके अंतमें धूपोत्क्षेप, और शक्रस्तवपाठ अवश्य
करना. ॥ तदनंतर पुष्पादिकरके प्रतिमा पूजे. ।
पीठे मणि, स्वर्ण, ताम्र, मिश्रधातु, माटीमय, कलश
स्नात्रकी चौकीऊपरि स्थापन करना. तिनमें गंगो

दकमिश्रित सर्व जलाशयोंके पानी स्थापन करे. चंदन केसर कर्पूरादि सुगंधी द्रव्य करके वासित करे. चंदनादि और पुष्पमालासैं, कलशोंको पूजे. जल पुष्पादिश्चजिमंत्रणकेमंत्र पूर्वे कहे हैं सो जानने. । पीठे एक श्रावक, अथवा बहुत श्रावक, पूर्वोक्त वेष शौचवाले गंधसैं हस्तको लेपन करके, मालाजूषित कंठवाले तिन कलशोंको हाथऊपरि रखे पीठे स्वस्वबुद्धिअनुसारसैं जिनजन्माजिषेकचिन्हित स्तोत्रों को जिनस्तुतिगर्जित षट्पदादि (षण्पयश्चादि) को पढे । पीठे शार्दूलवृत्त पढे ।

जाते जन्मनि सर्वविष्टपपतेरिंद्रादयो निर्जरा ।

नीत्वा तं करसंपुटेन बहुजिः सार्द्धं विशिष्टोत्सवैः ॥

शृंगे मेरुमहीधरस्य मिलिते सानंददेवीगणे ।

स्नानारंजमुपानयंति बहुधा कुंजांबुगंधादिकम् ॥ १ ॥

योजनमुखान् रजतनिष्कमयान् मिश्रधातुमृद्रचितान्

दधते कलशान् संख्या तेषां युगषट्खदंतिमिता ॥ २ ॥

वापीकूपद्वदांबुधितडागपट्टवलनदनिजरादिज्यः ॥

आनीतैर्विमलजलैः स्नानाधिकं पूरयंति च ते ॥ ३ ॥

कस्तूरीघनसारकुंकुममुराश्रीखंरुकंक्रोद्धकै ।

झीबेरादिसुगंधवस्तुजिरत्नकुर्वति तत्संवरम् ॥

देवेंद्रा वरपारिजातबकुलश्रीपुष्पजातीजपा ।

मालाजिः कलशाननानि दधते संप्राप्तहारस्त्रजः ॥ ४ ॥

ईशानाधिपतेर्निजांककुहरे संस्थापितं स्वामिनं ।

सौधर्माधिपतिर्मिताद्भूतचतुःप्रांशुं कशृंगोक्तैः ॥

धारावारिजैः शशांकविमलैः सिंचत्यनन्याशयः ।

शेषाश्चैव सुराप्सरस्समुदयाः कुर्वन्ति कौतूहलम् ॥ ५ ॥

वीणां मृदंगतिमिषाऽर्कटाऽनूर ।

ढक्कहुमुक्कपणवस्फुटकाह्लाजिः ॥

सद्येणुजर्जरकडुं दुजिषुषुणीजि-

वाद्यैः सृजन्ति सकक्षाप्सरसो विनोदनू ॥ ६ ॥

शेषाः सुरेश्वरास्तत्र, गृहीत्वा करसंपुटे ॥

कलशांस्त्रिजगन्नाथं, स्नपयन्ति महामुदः ॥ ७ ॥

तस्मिंस्तादृशउत्सवे वयमपि स्वर्लोकसंवासिनो ।

त्रांता जन्मविवर्त्तनेन विहितश्रीतीर्थसेवाधियः ॥

जातास्तेन विशुद्धबोधमधुना संप्राप्य तत्पूजनं ।

स्मृत्यैतत्करवाम विष्टपविजोः स्नात्रं मुदामास्पदम् ॥ ८ ॥

बालत्तणम्मि सामिअ, सुमेरुसिहरम्मि कणयकल
सेहिं ॥ तियसासुरेहिं एहविओ, ते धन्ना जेहिं
दिओसि ॥ ९ ॥

यह पढ़के कलशोंकरके जिनप्रतिमाको अजि
षेक करे. । पीठे बडे ठोटेके क्रमकरके सर्व पुरुष
स्त्रि जी गंधोदकोंसे स्नात्र करे. । पीठे अजिषेकके
अंतमें गंधोदकपूर्ण कलश दोके वसंततिलकावृत्त पढ़े. ।
संघे चतुर्विध इह प्रतिज्ञासमाने, श्रीतीर्थपूजनकृत
प्रतिज्ञासमाने ॥ गंधोदकैः पुनस्मि प्रजवत्वजलं,
स्नात्रं जगत्रयगुरोरतिपूतधारैः ॥ १ ॥

यह पढके जिनपादोपरि कलशाजिषेक करके
स्नात्रनिवृत्ति करे पीठे पुष्पांजलि लेके पढे ।

इंद्राग्ने यम निर्ऋते जलेश वायो
वित्तेश्वर जुजगा विरंचिनाथ ॥

संघट्टाधिकतमजक्तिजारजाजः

स्नात्रोस्मिन् जुवनविजोः श्रीयं कुरुध्वम् ॥ १ ॥

यह पढके स्नात्रपीठके पास रहे कटिपत दिक्
पालपीठऊपरि, पुष्पांजलिक्षेप करे. । पीठे प्रत्येक
दिशामें यथाक्रमकरके दिकपालोंको स्थापन करे. ।

पीठे एकैक दिक्पालका पूजन करे ।

सुराधीश श्रीमन् सुदृढतरसम्यक्तववसते ।

शचीकांतोपातस्थितविबुधकोट्यानतपद ॥

ज्वलद्गजाघातक्षपितदनुजाधीशकटक ।

प्रजोः स्नात्रे विघ्नं हर हर हरे पुण्यजयिनाम् ॥ १ ॥

“ ॐ शक्र इह जिनस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ १ ।
इदं जलं गृहाण १ । गंधं गृहाण १ । पुष्पं गृहाण १ ।
धूपं गृहाण १ । दिपं गृहाण १ । नैवेद्यं गृहाण १ ।
विघ्नं हर १ । दुरितं हर १ । शान्तिं कुरु १ । तुष्टिं
कुरु १ । पुष्टिं कुरु १ । रुद्धिं कुरु १ । वृद्धिं कुरु १ ।
स्वाहा ॥ ” इति पुष्पगंधादिजिरिंङ्गपूजनम् ॥ १ ॥

बहिरंतरनंततेजसा विदधत्कारणकार्यसंगतिः ॥

जिनपूजनआशुशुद्धणे, करु विघ्नप्रतिघातमंजसा ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ अग्ने इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इत्यग्निपूजनम् ॥ २ ॥

दीप्तांजनप्रज्ञतनो तनुसंनिकर्ष ।

वाहारिवाहनसमुद्गुरदंरुपाणे ॥

सर्वत्र तुल्यकरणीयकरस्थधर्म ॥

कीनाश नाशय विपद्दिसरं क्षणेत्र ॥ १ ॥

“ ॐ यम इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति यमपूजनम् ॥ ३ ॥

राक्षसगणपरिवेष्टितचेष्टितमात्रप्रकाशहृतशत्रो ॥

स्त्रात्रोत्सवेत्र निर्ऋते, नाशय सर्वाणि दुःखानि ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ निर्ऋते इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति निर्ऋतपूजनम् ॥ ४ ॥

कल्लोलानीतलोलोद्धाधिककिरणगणस्फीतरत्नप्रपञ्च ।

प्रोद्भूतौर्वाग्निशोभं वरमकरमहापृष्ठदेशोक्तमानम् ॥

चंचच्चीरिद्विशृंगिप्रभृतिजषगणैरंचितं वारुणं नो ।

वर्ष्महिंयादपायं त्रिजगदधिपतेः स्त्रात्रसत्रे पवित्रे ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ वरुण इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति वरुणपूजनम् ॥ ५ ॥

ध्वजपटकृतकीर्त्तिस्फूर्तिदीप्यद्भिमान ।

प्रसृमरबहुवेगत्यक्तसर्वोपमान ॥

इह जिनपतिपूजासंनिधौ मातरिश्व-

न्नपनयसमुदायं मध्यवाह्यातपानाम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ वायो इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति वायु
पूजनम् ॥ ६ ॥

कैलासवास विलसत्कमलाविलास ।

संशुद्धासकृतदौस्थ्यकथानिरास ॥

श्रीमत्कुबेरजगत्क्षपनेत्र सर्व ।

विघ्नं विनाशय शुभाशय शीघ्रमेव ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ कुबेर इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति कुबेर
पूजनम् ॥ ७ ॥

गंगातरंगपरिखेलनकीर्णवारि, प्रोद्यत्कपर्दपरिमंक्ति
पार्श्वदेशम् ॥ नित्यं जिनस्तपनहृष्टहृदः स्मरारे, विघ्नं
निहंतु सकलस्यजगत्रयस्य ॥ १ ॥

“ ॐ ईशान इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इतीशान
पूजनम् ॥ ८ ॥

फणमणिमहसा विज्ञासमानाः । कृतयमुनाजलसं
श्रयोपमानाः ॥ फणिन इह जिनाजिषेककाले । बद्धि
जवनादमृतंसमानयंतु ॥ १ ॥

“ ॐ नागा इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति नाग
पूजनम् ॥ ९ ॥

विशदपुस्तकशस्तकरद्वयः । प्रथितवेदतया प्रमदप्रदः ॥
जगवतः स्तपनावसरे चिरं । हरतु विघ्नजरं जुहि
णो विजुः ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ ब्रह्मन् इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति ब्रह्म
णः पूजनम् ॥ १० ॥

ऐसे क्रमसे दिक्पालपूजन करे । पीठे फिर जी हाथमें पुष्पांजलि लेकर आर्या पठे ॥

दिनकरहिमकरजूसुत, शशिसुतबृहतीशकाव्यरवित
नयाः ॥ राहो केतो क्षेत्रप, जिनार्चने जवत सन्नि
हिताः ॥ १ ॥

यह पढके ग्रहपीठोपरि पुष्पांजलिकेप करे ।
पीठे पूर्वादिक्रमसे सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि,
चंद्र, बुध, बृहस्पति, इनको स्थापन करे. हेठ केतु
को, और उपर क्षेत्रपालको स्थापन करे. पीठे
प्रत्येक ग्रहकका पूजन करे. ।

विश्वप्रकाशकृतजव्यशुजावकाश ।

ध्वांतप्रतानपरिपातनसद्विकाश ॥

आदित्य नित्यमिह तीर्थकरानिषेके ।

कल्याणपल्लवनमाकलय प्रयत्नात् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ सूर्य इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति सूर्य
पूजनम् ॥ १ ॥

स्फटिकधवलशुरूध्यानविध्वस्तपाप ।

प्रमुदितदितिपुत्रोपास्यपादारविंद ॥

त्रिशुवनजनशश्वज्जंतुजीवानुविद्य ।

प्रथय जगवतोर्द्धा शुक्र हे वीतविघ्नम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ शुक्र इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति शुक्र
पूजनम् ॥ २ ॥

प्रबलबलमिलितबहुकुशल, दालनाललितकलित

विघ्नहृते । जौमजिनस्त्रपनेऽस्मिन् विघटय विघ्नागमं
सर्वम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ मंगल इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति मंग
लपूजनम् ॥ ३ ॥

अस्तांहः सिंहसंयुक्त, रथ विक्रममंदिर ॥

सिंहिकासुत पूजाया, मत्र संनिहितो जव ॥ १ ॥

“ ॐ राहो इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति राहु
पूजनम् ॥ ४ ॥

फक्षिनीदल लीलायांतः, स्थगितसमस्तवरिष्ठविघ्न
जात । रवितनय प्रबोधमेतात् जिनपूजाकरणैकसा
वधानान् ॥ १ ॥

“ ॐ शने इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति शनि
पूजनम् ॥ ५ ॥

अमृतवृष्टिविनाशितसर्वदो, पचितविघ्नविषः शश
लांठनः ॥ वितनुतात्तनुतामिह देहिनां, प्रसृततापज
रस्य जिनार्चने ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ चंद्र इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” चंद्रपूज
नम् ॥ ६ ॥

बुधविबुधगणार्चितांघ्रियुग्म, प्रमथितदैत्य विनी
तदुष्टशास्त्र ॥ जिनचरणसमीपगोधुनात्वं, रचय मतिं
जवधातनप्रकृष्टाम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ बुध इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति बुधपू
जनम् ॥ ७ ॥

सुरपतिहृदयावतीर्णमंत्रप्रचुर, कलाविकलप्रकाश
जाखन् ॥ जिनपतिचरणान्निषेककाले, कुरु बृहती
वर विघ्नविप्रणाशम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ गुरो इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति गुरु
पूजनम् ॥ ८ ॥

निजनिजोदययोगजगन्नयी, कुशलविस्तरकारण
तां गतः ॥ जवतुकेतुरनश्वरसंपदां, सततहेतुरवारि
तविक्रमः ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ केतो इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति केतु
पूजनम् ॥ ९ ॥

कृष्णसितकपिलवर्ण, प्रकीर्णकोपासितांघ्रियुग्मस
दा ॥ श्रीक्षेत्रपाल पालय, जविकजनं विघ्नहरणेन ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ क्षेत्रपाल इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति
क्षेत्रपालपूजनम् ॥ १० ॥

पीठे गंध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपसें पूर्व कहे
मंत्रोंसेंही जिनप्रतिमाकी पूजा करे. पीठे हाथमें
वस्त्र लेके वसंततिलकावृत्तपाठ पढे. ।

त्यक्त्वाखिलार्थवनितादिकञ्चूरिराज्यं

निःसंगतामुपगतो जगतामधीशः ॥

जिह्नुर्जवन्नपि स वर्ष्मणि देवदूष्य-

मेकं दधाति वचनेन सुरेश्वराणाम् ॥ १ ॥

यह पढके वस्त्र चढावे. इति वस्त्रपूजा ॥

पीठे नानाविध खाद्य, पेय, जक्ष्य, लेह्यसंयुक्त

नैवेद्य. दो स्थानमें करके तिनमेंसे एक पात्र जिनके आगे स्थापके, श्लोक पढे. ।

सर्वप्रधानसद्भूतं, देहिदेहिसुपुष्टिदम् ॥

अन्नं जिनाग्रे रचितं, दुःखं हरतु नः सदा ॥ १ ॥

यह पढके जलचुलुककरके जिनप्रतिमाको नैवेद्य देवे. पीठे दूसरे पात्रमें चुलुककरकेही, ग्रहदिक्पाला दिकोंको श्लोक पढके नैवेद्य देवे. ।

जोजो सर्वे ग्रहालोक, पालाः सम्यग्दशः सुराः ॥

नैवेद्यमेतद्गृह्णन्तु, जवंतो जयहारिणः ॥ १ ॥

स्नात्र करायाविना जी पूजामें जिनप्रतिमाको इसही मंत्रकरके नैवेद्य देना. ॥ पीठे आरात्रिक मंगलदीपक पूर्ववत् । और शक्रस्तव जी पढना. ॥ जिस प्रतिमाका स्थानस्थितहीका स्नपन कराया जावे, तिसके वास्ते सर्वकुठ तहांही करना. ॥

श्रीखंडकर्पूरकूरंगनाजि, प्रियंगुमांसीनखकाकतुं
डैः ॥ जगन्नयस्याधिपतेः सपर्या, विधौ विदध्यात्कुश
लानि धूपः ॥ १ ॥

इस वृत्तकरके सर्वपूष्पांजलियोंके बिचाले धूपोत्
क्षेप करना, और शक्रस्तवपाठ पढना. ॥

प्रतिमा विसर्जनं यथा ॥

“ ॥ ॐ अहं नमो जगवतेर्हते समये पुनःपूजां
प्रतीढ स्वाहा ॥ ” इति पुष्पन्यासेन प्रतिमाविसर्जनं ॥

“ ॥ ॐ ह्रः इंद्रादयो लोकपालाः सूर्यादयो ग्रहा

सक्षेत्रपादाः सर्वदेवाः सर्वदेव्यः पुनरागमनाय स्वा
हा ॥ ” इति पूष्पादिजिर्दिकपाल ग्रहविसर्जनम् ॥

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम् ॥

त्सर्वं कृपया देवाः, क्षमंतु परमेश्वराः ॥ १ ॥

आव्हाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ॥

पूजां चैव न जानामि त्वमेव शरणंमम ॥ २ ॥

कीर्त्तिः श्रियो राज्यपदं सुरत्वं, न प्रार्थये किञ्चन देव
देव ॥ मत्प्रार्थनीयं जगत्प्रदेयं स्वदासतां मां नय
सर्वदापि ॥ ३ ॥

इति सर्वकरणीयांते जिनप्रतिमादेवादिविसर्जनविधि
अर्हत् अर्चनविधिमें जी ऐसेंही विसर्जन
जानना. ॥ इति लघुस्नानविधिः ॥

पीठे (गृहचैत्यपूजानंतर) बडे देवमंदिरमें जाक
र, शक्रस्तवादित्तोत्रोंकरके जिनराजकी स्तवना कर
के, और जिनराजका पूजन करके, प्रत्याख्यान चिंत
वन करे. । पीठे चैत्यको प्रदक्षिणा करके, पौषधशा
ला (उपाश्रय) में जाकर, देवकीतरें बडे आनंदसें
साधुओंको वंदन करे. सुंदरबुद्धिवाला होकर, पूजा
सत्कार करे. । पीठे एकाग्रचित्त होकर साधुके मुख
सें धर्मदेशना श्रवण करे. पीठे मनमें धारा हुआ
प्रत्याख्यान करे. पीठे गुरुको नमस्कार करके कर्मा
दानको अर्पितरें त्यागके, धन उपार्जन करे. यथा
योग्य स्थानमें व्यापार समाचरे. कुत्सित बुरा कर्म

प्राणोंके नाश हुए जी न करे. । पीठे अपने घरदेह
 रामें अर्हत्की मध्यान्हपूजा करके, अन्नपानी समा
 चरे. जक्तिसें साधुओंको दान देके, अतिथीयोंकी
 पूजा आदरसत्कार करके, और दीन अनाथ मार्ग
 णगणको संतोषके, अपने व्रतऔर कुलके उचित
 जोज्य वस्तुका जोजन करे. ॥ साधुको आमंत्रण
 ऐसें करे. ॥ क्कमाश्रमण पूर्वक गृहस्थ कहें ।

“ ॥ हे जगवन् फासुएणं एसणिज्जेणं असण
 पाणखाइमसाइमेणं वथ्थकंबलपायपुठ्ठणपग्निगहेणं
 ओसहजेसज्जेणं पानिहेररूवेणं सिज्जासंथारएणं
 जयवं मम गेहे अणुग्गहो कायवो ॥ ”

जोजनानंतर गुरुके पास शास्त्रका विचार करे,
 पढे, सुने. । पीठे धन उपर्जन करके घरको जाकर
 संन्यापूजा करके सूर्यके अस्त होनेसें दो घन्टी पहि
 ले, निजवांछित जोजन करे. सायंकालमें धर्मांगार
 में सामायिककरके परमावश्यक प्रतिक्रमण करे.
 पीठे अपने घरमें आके शांतबुद्धिवाला हुआ, जब
 एक पहर रात्रि जावे तब अर्हत्स्तवादिक पढके
 प्रायः ब्रह्मचर्यव्रतधारी होके सुखसें निद्रा लेवे. जब
 निद्राका अंत आवे तब परमेष्ठिमंत्रस्मरणपूर्वक जिन,
 चक्री, आदिके चरित्रोंको चिंतन करे. और व्रता
 दिकोंके मनोरथ अपनी इच्छासें करे, ऐसें अहोरा
 त्रिकी चर्या अप्रमत्त होके समाचरता हुआ, और

यथावत् कहे व्रतमें रहा हुआ, यहस्थ जी कल्याण जागी होता है. । इति व्रतारोपसंस्कारे गृहिणां दिनरात्रिचर्या ॥

वासनागुरुसामग्री, विजवो देहपाटवम् ॥

संघश्चतुर्विधो हर्षो, व्रतारोपे गवेष्यते ॥ १ ॥

वरकुसुमगंधअस्कय, फलजलनेवजाधूवदीवेहिं ॥

अठविहकम्ममहणी, जिणपूआ अठाहा होई ॥२॥

इति व्रतारोप संस्कार

॥ अथ अंत्य संस्कार विधिः ॥

आवक यथावत् व्रतोंकरके निज जवको पालके कालधर्मके प्राप्त हुए, उत्कृष्ट आराधना करे, तिस का विधि यह है. । जिन अरिहंतोंके कल्याणक स्थानोंमें, निर्जीव शुचि पवित्र स्थंभिल—जगामें, वा अरण्यमें, वा अपने घरमें, विधिसैं अनशन करना. । तहां शुजस्थानमें ग्लानको पर्यंत आराधना कराव नी. । तथा अवश्यमेव अमुकवेला निकट मरण होवे गा ऐसैं ज्ञानके हुए, तिथिवारनक्षत्रचंद्रबलादि न देखना । तहां संघका मीलना करना । गुरु, ग्लान को जैसें सम्यक्शारोपणमें तैसेंही नंदि करे. । नवरं इतना विशेष है. सर्व नंदि देववंदन कायोत्सर्गादि पूर्वोक्त विधि ‘संलेहणा आराहणा’ इस नाम करके करावणा. और वैयावृत्य कर कायोत्सर्गानंतर ।

“ ॥ आराधना देवता आराधनार्थं करेमि काउ

स्सगं अन्नत्थजससिएणं० जाव-अप्पाणं वोसि
रामि ॥” कहके कायोत्सर्ग करमा. कायोत्सर्गमें चार
लोगस्स चिंतवन करना, पारके आराधना स्तुति
कहनी. ॥ सा यथा ॥

यस्याः सान्निध्यतो ज्ञव्या, वांढितार्थप्रसाधकाः
श्रीमदाराधना देवी, विघ्नव्रातापहास्तु वः ॥ १ ॥
शेषं पूर्ववत् ॥

पीठे तिसही पूर्वोक्तविधिसैं सम्यक्त्वदंरुका
उच्चारण, द्वादशव्रतोंका उच्चारण करावणा. । वास
क्षेपकायोत्सर्गादि जी, ‘संलेखना आराधना’ के
आलापककरके तैसेंही जाणना. । प्रदक्षिणा करनी,
ग्लानकी शक्तिके अनुसार होवे जी, और नहीं जी
होंवे. । दंरुकादिमें ‘जावनियमंपङ्कुवासामि’ के
स्थानमें ‘जावज्जीवाए’ ऐसें कहना. । पीठे सर्व जीवों
केसाथ अपराधकी क्षामणा करनी. । पीठे श्रावक
परमेष्ठिमंत्रोच्चारपूर्वक गुरुके सन्मुख हाथ जोडके कहें
खामेमि सबजीवे सबे जीवा खमंतु मे ॥

मिच्ची मे सबजूएसु वेरं मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ गुरु कहें

“ ॥ खामेह जो खमइ तस्स अढी आराहणा
जो न खमइ तस्स नढि आराहणा ॥ ” पीठे श्राव
क क्षमाश्रमणपूर्वक कहें । “ जयवं अणुजाणह । ”
गुरु कहें “ । अणुजाणामि । ” श्रावक परमेष्ठिमंत्र
पाठपूर्वक कहें ।

“ ॥ जे मए अणंतेणं जवप्रमणेणं पुढविकाइआ
आउकाइआ तेउकाइआ वाउकाइआ वणस्सइका
इआ एगिंदिआ सुहमा वा, बायरा वा, पज्जत्ता वा,
अपज्जत्ता वा, कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा,
लोहेण पंचिंदिअट्टेण वा, रागेण वा, दोसेण वा,
घाइआ वा, पीडिआ वा, मणेणं वायाए काएणं,
तस्स मिळामि डुक्कमं ॥ जो मेरे जीवने अनंत जव
जमते थके पृथिवी अप तेउ वायु वणस्पतीके एक्के
द्रिय जीव, सुद्धहो बादरहो पर्यासेहो अपर्यासेहो
क्रोधसें, मानसे, मायासें, लोअसें, पंचेंद्रियपणे, राग
सें, द्वेषसें, घातित किएहों, पीडित किएहों, तिसका
मन वचन काया करके मिळामि डुक्कम हो ॥ ” फिर
परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जे मए अणंतेणं जवप्रमणेणं वेइंदिआ वा
सुहमा वा बायरा वा० शेषं पूर्ववत् ॥ ” जो मेरे
जीवने अनंत जव जमते थके बेरिंद्रिय जीव, सुद्ध
मवादर क्रोधादिकसें घातित पीडित कीए होय
तिनका त्रिकोटी मि० ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जे मए अणंतेणं जवप्रमणेणं तेइंदिया सुह
मा वा, बायरा वा,० शेषं पूर्ववत् ॥ ” जो मेनें अनं
त जव जमते थके तेरिंद्रि जीव सुद्ध वा बादर
क्रोधादिकसें घातित वा पीडित किए होय सो
त्रिकोटी मि० ॥ फिर परमेष्ठिमंत्र पाठपूर्वक कहें

जे मए अणंत जवजमणेण चउरिंदिया जीवा,
सुहमा वा बायरावा, शेषं पूर्ववत् । जो मेनें अनंत
जव जमते थके चउरिंदिय जीव, क्रोधादिकसें,
घातित पीकित किए होय तिनका त्रिकोटी मिह्या
मि डुक्कत हो. “ ॥ जे मए अणंतेणंजवप्रमणेणं
पंचिंदिया देवावा मणुआ वा, नेरइआ वा, तिर
रुजोणिआ वा, जलयर वा, थवलयर वा, खयर
वा, सन्निआ वा, असन्निआ वा, सुहमा वा, बायरा
वा०शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें अनंत जव जमते थके
पंचेन्द्रिय जीव, देव, मनुष्य, नारकी, तिर्यच, जलच
र थलचर, खेचर, संझी,असंझी, सुक्ख बादर, क्रोधा,
दिकसें घातित पीकित किए होय सो त्रिकोटी
मिथ्या डुष्कृत हो. ॥ फिर परमेष्ठिमंत्र पाठपूर्वक
श्रावक कहें ।

“ ॥ जं मए अणंतेणं जवप्रमणेणं अलिअं जणि
अं कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण वा,
पंचिंदियहेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मणेणं
वायाए काएणं तस्स मिह्यामि डुक्कडं ॥ जो मेनें अनंत
जव जमते थके असत्य जाण कियाहो, क्रोधा
दिक करके सो त्रिकोटी मिथ्याडुष्कृतहो. ॥” फिर
परमेष्ठिमंत्र पढके कहे ।

“ ॥ जं मए अणंतेणं जवप्रमणेणं अदिन्नं गहि
अं कोहेण वा, माणेण वा० शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें

अनंत जव जमते थके अदत्त ग्रहण कियाहो क्रोधा दि करके सो त्रिकोटीसैं मिथ्याडुष्कृतहो ॥ ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मए अणंतेणं जवप्पमणेणं दिवं माणुस्सं तिरिञ्चं मेहुणं सेविञ्चं कोहेण वा माणेण वा० शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेने अनंत जव जमते थके देव संबंधी, मनुष्य संबंधी, तिर्यच संबंधी, क्रोधादि कसैं मैशुन सेवन किया हो सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृतहो. ॥ ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मए अणंतेणं जवप्पमणेणं अछारस्स पावछाणाइं कयाइं कोहेण वा, माणेण वा,० शेषं पूर्ववत् जो मेने अनंत जव जमते थके अछारह पापस्थानक सेवन किए हो. सो त्रिकोटी मिथ्याडुष्कृत हो ॥ ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे पुढविकायगयस्स सिद्धावेहुसक्करास न्हावालुआगेरिअसुवन्नाइमहाधाउरूवं सरीरं पाणि वहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीरुणे पाववट्टणे मिठत्तपो सणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि॥” जो मेराजीव पृथ्वी कायगत होके शिला पत्थर कांक रे रेती वालुका मट्टी सुवर्णादि सप्त धातु रूप शरीर वान् होके, प्राणिवध, प्राणि संघात, प्राणि पीरुन, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थानमे लगा होय

तिनकों निंदताहुं गद्दी करताहुं और तिन पापोंकों त्याग करताहुं ”

“ ॥ जं मे पुढविकायगयस्स सिलालेहुसक्करासन्हा वालुआगेरिअसुवन्नाईमहाधाउरूवंसरीरं अरिहंत चे ष्णसु अरिहंतबिंबेसु धम्मछाणेसु जंतुरक्खणछाणेसु धम्मो वगर णेसु संलग्गं तं अणुमोआमि कद्धाणेणं अजिनंदेमि ॥ जो में पृथ्वीकायगत शिद्धा पठर कांकरे वालुकारेती माटी सुवर्णादि सप्तधातु रूप शरीर हो के अरिहंत चैत्यमें अरिहंत बिंबमें, धर्म स्थानमें, जीव रक्षण स्थानमें, धर्मोपकरणमें, लगा होउं तो तिनकों अनुमोद ताहुं कद्धाण कारक जाणके आनंदित होता हुं ॥ ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआओस्साहिमहरतणुरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीरुणे पाववट्ठणे मिह्वत्तपोसणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ ”

जो में अपकायगत पानी करा हिम छार औस हेम हर तनुरूप शरीर होके प्राणि वध, प्राणि संघात, प्राणि पीरुक, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थान में, लगा होउं तो तिनपापकों निंदा गद्दी करके त्यागताहुं ।

“ ॥ जं मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआओस्साहिमहरतणुरूवं सरीरं अरिहंतचेष्णसु अरिहं

तर्विबेसु धम्मछाणेषु जंतुरस्कण्ठाणेषु धम्मोवगर
णेषु जिणन्हाणेषु तन्हदाहावहरणेषु संलग्गं तं अणु
मोअमि कद्धाणेषु अजिनंदेमि ॥ जो में उपरोक्त
अप्रकाय होके अर्हत् चैत्यमें, अर्हत् बिबमें, धर्म
स्थानमें, जीव रक्षाकाममें, धर्मोप करण कार्यमें,
लात्राजिषे कमें, तृषादाह शमनमें, लगा होउं तो
तिनकों अनुमोदताहुं ॥ ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे तेउकायगयस्स अगणिइंगालमम्मुर
जालाअलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि
संघट्टणे पाणिपीडणे पाववट्टणे मिठत्तपोसणे ठाणे
संसग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ ” “ जो
में अग्नी कायगत अग्नि इंगाला मुर्मुर् ज्वाला धूम्र
सहित विद्युत् उडका रूप शरीर होके प्राणिवधमें,
प्राणि संघातनमे, प्राणि पीरुनमे, पाप वर्द्धनमे,
मिथ्यात्व पोषकके स्थानमें, लगा होउं तिनकों,
निंदा गर्हासैं त्यागताहुं ”

“ ॥ जं मे तेउकायगयस्स अगणिइंगालमम्मुर
जाला अलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीरं सीआवहारे
जिणपूआधुवकरणे नेवेज्जापाए बुहाहरणाहारपाए
संलग्गं तं अणुमोएमि कद्धाणेषु अजिनंदेमि ॥ ”
“ जो में अग्नीकाय गत अग्नि इंगाला मुर्मुर् ज्वाला
धूम्रसहित विद्युत् उडका रूप शरीर होके, ठंकी दूर
करनेमें, जिनराजके आगे धूप करनेमें, पूजाके उप

योगमें, नैवेद्य काममें, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमें, लगा होउं तिनकां अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होताहुं ” फिर परमेष्ठि मंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउजंजासासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाववट्टणे मिष्ठत्तपो सणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि

“ जो में वायु कायगत शुद्धवायु जंजावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, पापवर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्यागताहुं ॥ ”

“ ॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउजंजासासरूवं सरीरं पाणिरक्खणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे संलग्गं तं अणुमोएमि कट्ठाणेणं अजि नंदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु जंजावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमें, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैयावच्चके काममें, गर्मीकी शांतिके कारणमें, लगाहोउं तिन कों अनु मोदताहुं, कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हुं ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकठ्ठद्विपत्त पुप्फफलबीअरसनिज्जासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि संघट्टणे पाणिपीरुणे पाववट्टणे मिष्ठत्तपोसणे ठाणे

संलग्नं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल ठाल काष्ठ पत्र पुष्प फल बीज रस थरु रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीरुनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्याग करता हुं ”

“ ॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकटुवह्विपत्त पुप्फफलबीअरसनिज्जासरूवंसरीरं बुहाहरणेसु अरि हंतवेइअपूयणेसु धम्मछाणेसु नेवज्जकरणेसु जंतुर स्कण्णछाणेसु संलग्नं तं अणुमोएमि कट्वाणेणं अजि नंदेमि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ठ ठाल पत्र पुष्प फल बीज रस थरु रूप शरीर होके दुधादूर करनेमें, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैव द्य करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होउं तिन कों अनु मोदताहुं कट्याण कारक जाणके आनं दित होता हुं ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठिमज्जा सुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघ दृणे पाणिपीडणे पाववहुणे मिठत्तपोसणे ठाणे संलग्नं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नस्क नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, प्राणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व

पोषणमे लगा होउं तिनकों निंदापूर्वक त्यागताहुं ”

“ जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठि मज्झासुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं अरिहंतचेइ एसु अरिहंतविंबेसु धम्मछाणेसु जंतुरक्खणछाणेसु धम्मो वगरणेसु संलग्गं तं अणुमोएमि कट्ठाणेणं अज्जि नंदेमि ॥ जो में त्रस काय गत रस रुधीर मांस हारु चरवी शुक्र चर्म रोम नखरूप शरीर होके अर्हच्चैत्यमें, अर्हत् विंबमें, धर्म स्थानमे, जंतु रक्षा मे, धर्मो पकणमें लगा होउं तिनकों अनु मोदके आनंदित होता हुं ॥ ” फिरपरमेष्ठिमंत्र पढ़के ।

“ ॥ जं मए इह जवे, मणेणं वायाए काएणं डुछं चित्तिअं, डुछं जासिअं, डुछं कयं, तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मेने इह जवमें अनंत जव त्रमणमें मन वचन काया करके डुष्ट विचार कियाहो डुर्वचन बोलेहो, डुष्ट प्रवृत्ति करीहो तिन कों निंदा पूर्वक त्याग करताहुं ”

“ ॥ जं मए इह जवे, मणेणं वायाए काएणं सुहु चित्तिअं, सुहु जासिअं, सुहु कयं, तं अणुमोणुमो एमि कट्ठाणेणं अज्जिनंदेमि ॥ जो मेने इह जवमें, अनंत जव त्रमणमें, मन वचन काया करके श्रेष्ठ विचार कियाहो, श्रेष्ठ जाषा बोली हो, श्रेष्ठ प्रवृत्ति करीहो तिनकी अनु मोदना करताहुं, कल्याण कार क जानके आनंदित होताहुं ॥ ”

यहां पहिलां समारोपितसम्यक्त्व व्रतको जी फिर सम्यक्त्व व्रतारोप करना. और जिसको पहिलें सम्यक्त्व व्रतारोप न करा होवे, तिसको जी अंतकालमें सम्यक्त्व व्रतारोप करना योग्य है. । जिसको पहिलां व्रतारोप करा होवे, तिसको इस अंत समयमें एकशेचौबीस अतिचारोंकी आलोचना करानी. । वे अतिचार आवश्यकदि सूत्रोंसें जान लेने. ' पीठेआलोचनाविधि करना, सो प्रायश्चित्तविधिसें जानना. । पीठे गुरु सर्व संघसहित वासअकृतादि ग्लानके शिरमें निक्षेप करे. ॥

॥ इति अंत्य संस्कारे आराधना विधिः ॥

पीठे ग्लान (रोगी-बीमार) क्षमाश्रमण परमेष्टिमंत्र पाठपूर्वक कहें ॥

आयरियउवक्षाए, सीसे साहिम्मिए कुलगणे अ ॥

जे मे कया कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥

सवस्स समणसंघस्स, जगवओअंजलिं करियसीसे ॥

सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥

सवस्स जीवरासिस्स, जावउ धम्म निहियनियचित्तो ॥

सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्सअहयंपि ॥ ३ ॥

“ ॥ जयवं जं मए चउगइगएणं देवा तिरिआ मणुस्सा नेरइआ चउकसाओवगएणं पंचिंदिअवस हेणं इहम्मि जवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु मणेणं वायाए काएणं दूमिआ संताविआ अजिताइया तस्स

मिष्ठामि दुक्कमं जेहिं अहं अजिदूमिश्चां संताविश्चो
अजिह्थो तमहंपि खमामि ॥ ”

पीठे गुरु दंरुकसहित इन तीनों गाथाका विस्तारसे व्याख्यान करे। पीठे ग्लान, गुरु साधु साध्वी श्रावक श्राविकाओंको प्रत्येकक्षामणां करे। यहां गुरुओंको वस्त्रादि दान, और संघको पूजासत्कार जानना ॥ इत्यंतसंस्कारे क्षामणाविधिः ॥

अथ मृत्युकालके निकट हुए, ग्लान, पुत्रादि कोंसें जिनचैत्योंमें महापूजा स्नात्रमहोत्सव ध्वजारोपादि करावे, चैत्यधर्मस्थानादिमें धन लगावे। पीठे परमेष्ठिमंत्रोच्चारपूर्वक पठे।

जे मे जाणंतु जिणा, अवराहा जेसु १ ठाणेषु ॥

तेहं आलोएमि, उवठिश्चो सब्बकालंपि ॥ १ ॥

उउमब्बो मूढमणो, किच्चियमित्तंपि संजरइ जीवो ॥

जं च न सुमरामि अहं, मिष्ठामि दुक्कमं तस्स ॥ २ ॥

जं जं मणेण बद्धं, जं जं वायाइ जासिअं किंचि ॥

जं जं काएण कयं, मिष्ठामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥

खामेमि सब्बजीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥

मिच्ची मे सब्बचूएसु वेरं मच्च न केणइ ॥ ४ ॥

पीठे तीन नमस्कार पाठपूर्वक कहें।

“ ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साधू मंगलं, केवलपन्नत्तो धम्मो, मंगलं। चत्तारि लोयुत्तमा, अरिहंता लोयुत्तमा, सिद्धा लोयु

त्तमा, साह लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगु
त्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पव
ज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पव
ज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं, सरणं, पवज्जामि ॥”

यह पाठ तीन बार पढे । पीठे गुरुके वचनसें
अष्टादश (१७) पापस्थानकोंको वोसरावे यथा.

“ ॥ सवं पाणाइवायं पच्चस्कामि । सवं मुसावायं
पच्चस्कामि । सवं अदिन्नादाणं प० । सवं मेहुणं
प० । सवं परिग्गहं प० । सवं राईजोअणं प० । सवं
कोहं प० । सवं माणं प० । सवं मायं प० । सवं
लोहं प० । पिज्जं प० । सवं दोसं कलहं अप्रस्काणं
अरईरईपेसुन्नं परपरिवायं मिठ्ठादसंणसद्धं इच्चेइआइं
अठारस पावठाणाइं डुविहं तिविहेणं वोसिरामि
अपब्बिमम्मि ऊसासे तिविहं तिविहेणं वोसिरामि॥”

पीठे गीतार्थगुरु, श्रीयोगशास्त्रके पांचमे प्रकाशके
कथनसें, और कालप्रदीपादिशास्त्रके कथनसें, ग्ला
नके आयुका क्षय जानके (जक्तप्रत्याख्यानप्रकीर्णक
शास्त्रमें लिखा है कि, यदि कोइ तथ्यज्ञानी कहे,
अथवा कोइ सम्यग्दृष्टी देवता कहे कि, अमुकदि
न तेरा अवश्य मरण है, तबतो अपना संहननधृ
तिबल जानके यावत् जीवका अनशन करना. परंतु,
जो कोइ मरणदिनके निश्चयविना यावत् जीवका
अनशन करे, करावे, सो आत्मघाती साधुश्रावक

घाती पंचेंद्रियघाती है;) (कालज्ञानके विषयमे कितने क शास्त्रोमे एसे लक्षण लिखेहैं कि निरंतर पंदरे दिन सूर्यनामी प्रातःकाल बहे तो पनरे दिनका आयु. एक मास तक प्रातःकाल सूर्यनामी बहे तोषट् मासायु. पांचदिन अखंड सूर्य नामी बहे तो ष मासायु. वायु की नाभि पित्तके स्थानमे, पित्तकी नामी कफके स्थानमे, कफ कंठमे आवे तो रोगी बचेगा नहीं. मस्तक गरम हृदय, नाभि, नाशिका हाथ पग ठंडे रहे तो मरण. उश्वास गरम व नीश्वास ठंढा बहे तो मरण. अंग कंप, गतिजंग, शरीरका वर्णका बदलना, खाद वा गंधकों न समजे तो अवश्य करण जाणना, हाथ पावकी घुटी, कपोल, गलेके पासकी नाडी चलनी रुक जाय वा मंद परुजाय तो मरण कहना. जो अपनी जिह्वाग्र, नासाग्र, त्रुकुटी, न देखेतो मरण. अपनी तीन अंगुली मुखमें न जावे तो मरण. त्रुकुटी न दीखे तो सातदिन, कर्णश्वर न सूने तो पाच दिन कों मरण होना समजना. जिह्वा काली पडे वा, मुख लास हो जाय तो मरण. पिसावकी धारामे बिंदु होजाय वा वीर्यपात हो जाय तो सातमे दिन मरण. नाभीयोंका मंद परुना, इंद्रियोंके विषयका न समजना, गतीका जंग होना, कंठमें कफका रुकना, नाशिकाके पवनका ठंढा बहना, नाशिका टेढ़ी होना, जमणी जूजा मे उर्द्ध श्वासका बहना यह

तात्कालिक मरणके चिन्ह जाणने ॥ रोगी दर्पणमें अपना मस्तक न देखे तो अवश्य मरे. जरणी, मघा, अश्लेषा, मूल, कृत्तिका, जेष्ठा, आर्द्रा, शत जिषा, तीनपूर्वा, यह नक्षत्रमे मांदा पडेतो रोगी न बचे. जिसका बलगम चिकना होके गलेसें छुटे नहीं तो समजो कि अब आयुष्य बिलकुल कम हे. जिसकों ठीक आनेके साथ जामा पेसाब हो जावे तो, जिसकी जबानपर कांटे आ जावे, वा काली पम्जावे व अबाज न देशके तो, जानो तीन रोजका जीनाहे. जिसकी नेत्रोंकी एकवा दोनोहि पुतली फिरजाय वा नेत्रो सें दिखाइ न देवे तो जानो कि मरना नजीक हे. जिसके हाथ फेरके वीसेंनख काखे पम्जाय, हाथ पेरमें ठंकाइ होके शिरमे गरमी आजाय तो जानो मरना नजीक आया. जिसका उच्चार शुरू न हो, नेत्रोंमें रोशनी नहो, कानोंसे सुनना, नाकसें खुश बो लेना, बंध हो जाय, अनामीका उंची नउपड शके, तो जानोकी अवश्य अपना काल समय नजीक हे. यद्यपि यह लक्षणोंसे प्रायः मरणका निश्चय होजोता हि हे तथापि कोइ अतिशय ज्ञानी वा देवादिकोंके यथातथ्य वचन सिवाय अनागर अणशन उच्चराने कि आह्वानहीहे. इसलिये सागारी अनशन कराना उचितहे) संघ की, ग्लानके संबंधियोंकी, तथा नगरके राजादिकी अनुमति लेके, अनशनका उच्चार कराना.

ग्लान, शक्रस्तव पढके तीनवार परमेष्ठिमंत्रको पढके गुरुके मुखसें उच्चरे. । यथा.

“ ॥ जवचरिमं पच्चस्कामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नान्नणान्नोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥” इति सागारानशनम् ॥

अंतर्मुहूर्त्त शेष रहे हूए, निरागार अनशन कराना.॥ यथा ॥

“ ॥ जवचरिमं निरागारं पच्चस्कामि, सबं असणं, सबं पाणं, सबं खाइमं, सबं साइमं, अन्नान्नणान्नोगेणं, सहसागारेणं, अइयं निंदामि, पक्खिपुन्नं संवरेमि, अणा गयं पच्चस्कामि, अरिहंतसस्खियं, सिद्धसस्खियं, साहु सस्खियं देवसस्खियं, अप्पसस्खियं, वोसिरामि ॥”

जइ मे हुज्जा पमाउं, इमस्स देहस्स इमाइ वेलाए ॥ आहारमुवहिदेहं, तिविहं तिविहेण वोसिरिअं ॥१॥

तब गुरु “निवारणपारगो होहि” ऐसें कहता हुआ संघसहित वासअद्वतादि ग्लानके सन्मुख क्षेप करे. । शांतिके वास्ते ‘अघावयंमि उसहो’ इत्यादि स्तुति पढे. और, ‘चवणं जम्मणज्जुमी’ इत्यादि स्तव पढे. । गुरु निरंतर ग्लानके आगे तीनचुवनके चैत्योंका व्याख्यान करे, अनित्यतादि बारां जावनाका व्याख्यान करे, अनादिजवस्थितिका व्याख्यान करे, अनशनके फलका व्याख्यान करे. । और

संघ गीतनृत्यादि उत्सव करे. । ग्लान जीवितमरण की झुकाव को त्यागके समाधिसहित रहे. । पीठे अंतर्मुहूर्तके आयां, ग्लान “सर्वं आहारं, सर्वं देहं, सर्वं उर्वहं, वोसिरामि” ऐसे कहें । पीठे ग्लान पंचपरमेष्टिस्मरणश्रवणयुक्त शरीरको त्यागे ॥

॥ इति अनशनविधिः ॥

॥ अग्निसंस्कार विधि. ॥

मरणकालमें ग्लानको कुशकी शय्याऊपर स्थापन करना । “ । जन्ममरणे भूमावेव इति व्यवहारः । ”

अथ सर्वजावके जोक्ता कर्मके जोरनेवाले चेतनारूप जीवके गये हुए, अजीव पुद्गलरूप तिसके शरीरको सनायता ख्यापनार्थ, तिसके पुत्रादिकोंके वास्ते, तीर्थसंस्कारविधि कहते हैं. । सर्व ब्राह्मणको शिखा वर्जके शिर दाढी मूंठ मुंरुन कराना चाहिये, कितनेक क्षत्रियवैश्यको भी कहते हैं. । तथा शवका संस्कार सर्व स्ववर्ण ज्ञातियोंने करना, अन्यवर्ण ज्ञातिवालोंने तिसका स्पर्श नहीं करना. । पीठे गंध तैलादिसें और जले गंधोदकसें शवको स्नान करना, गंधकुंकुमादिसें विलेपन कराना, मालापहिराना स्वस्वकुलोचित वस्त्राभरणसें विभूषित करना शूद्र जातिकों सर्वथा मुंरुन नहीं. । पीठे नवीन काष्ठकी पगविनाकी कुश संथरी जले वस्त्रसें ढांकी

हुई शय्याके ऊपर, शय्याके उपकरणसहित, शवको स्थापन करना। यहां गृहस्थके मृत्युनक्षत्रके नक्षत्रपूत लेका विधान, कुशपुत्रादिविधि यतिकीतरें जानना. नवरं कुशपुत्रक गृहस्थवेषधारी करणे ❀ वर्णानुसार तिसके ऊपर नानाविध वस्त्र सुवर्ण मणि विचित्र वस्त्रका करा प्रासाद (मांरवी) स्थापन करना। पीठे स्वज्ञातीय चारजणे परिजनके साथ स्कंधऊपर उठाए शवको, स्मशानमें ले जावे. । तहां उत्तरज्जागमें शवका शिर रखके चितामें स्थापन करके, पुत्रादि अग्निसें संस्कार करे. । अन्न नहीं खानेवाले बालकोंको जूमिसंस्कार करना । तहां प्रेतप्रतिग्राहियोंको दान देना । पीठे सर्व स्नान करके, अन्यमार्ग होकर अपने घरको आवे. तीसरे दिनमें चिताजस्मका, पुत्रादि नदीमें प्रवाह करावे. । तिसके हारु तीर्थोंमें स्थापन करे. । तिसके अगले दिनमें स्नान करके शोक दूर करे. । जिनचैत्योंमें जाके, परिजनसहित जिनबिंबको विना स्पर्श, चैत्यवंदन करे. । पीठे उपाश्रयमें आके गुरुको नमस्कार करे. गुरु जी संसारकी अनित्यतारूप

* रोहिणी, विशाखा, पुनर्वसु, उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तरा ज्येष्ठपद, ए व नक्षत्रमेंसें कोइजी एक नक्षत्र मरण समय होय तो दर्जके दो पुतले बनाके नीनामीके साथ रखणा. जेष्ठा, आर्द्रा, स्वाती, शतजिषा, ज्येष्ठा, अश्लेषा ए व नक्षत्रमेंसें कोइजी होय तो पुतले न करना. और दुसरे १५ नक्षत्रमेंसें कोइ नक्षत्र होय तो एक पुतला करना.

धर्मदेशना करे. । पीठे स्वस्वकार्यमें सर्व तत्पर होवे. ।
 अंत्य आराधनासैं लेके, शोक, दूर करनेतक मुहूर्त्तादि न देखना, अवश्य कर्त्तव्य होनेसैं. । यमलयोगमें, त्रिपुष्करयोगमें, मृगशिर । चित्रा । धनिष्ठा । मंगल । गुरु । शनि । २ । १२ । ७ । इतित्रयाणां योगे यमलयोगः ॥ कृतिका । पूर्वाषाढगुनी । विशाखा । उत्तराषाढा । पूर्वाजाड्यपदा । पुनर्वसु । मंगल । गुरु । शनि २ । १२ । ७ । इति त्रिपुष्करयोगः ॥ कृतिका । विशाखा । जरणी । इति मिश्रनक्षत्राणि ॥ जरणी । मघा । पूर्वाषाढगुनी पूर्वाषाढा । पूर्वाजाड्यपदा इति क्रूरनक्षत्राणि ॥ रोहिणी । उत्तराषाढा । उत्तराषाढा । इति ध्रुवनक्षत्राणि ॥ आर्द्रा, मूल, अनुराधा, मिश्र, क्रूर और ध्रुव, इन नक्षत्रोंमें प्रेतक्रिया नहीं करनी । धनिष्ठासैं लेके पांच नक्षत्रोंमें तृणकाष्ठादि संग्रह नहीं करना । शय्या, दक्षिणदिशकी यात्रा, मृतक कार्य, गृहोद्यम, (घर बनाना) आदि नहीं करना. । रेवती, श्रवण, अश्लेषा, अश्विनी, पुष्य, हस्त, स्वाति मृगशिर, इन नक्षत्रोंमें, और सोम, गुरु, शनी, इन वारोंमें प्रेतकर्म करना बुद्धिमान् कहते हैं. । स्वस्व वर्णके अनुसार जन्ममरण का सूतक एकसदृश होता हैं ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्यकों पुरुषोंका दश और स्त्रीका एकादश दिन सूतक होता है. परदेशका जन्म मरण सूतक धार्मिक

कार्यमे बाधकारी न होता हे. और गर्जपातमें तीन दिनका सूतक होता है. अन्य वंशवालेके मृत्यु हुए, वा जन्म हुए विवाहित पुत्रिकों सूतकवालेके अन्न के खानेसें, इन सर्वमें तीनदिनका सूतक होता है. । अन्न नहीं खानेवाले बालकका सूतक तीन दिनका होता है । आठ वर्षसें कम ऐसे बालकका भी त्रिजा गोण सूतक होता है. स्वस्ववर्णानुसार सूतकके अंत में जिनस्तव महोत्सवादि और साधर्मिकवात्सल्या दि करना, जिससेंकल्याणप्राप्ति होवे. ॥

इति अंत्य संस्कार विधिः ॥

तत् समाप्ते समाप्तोयं अष्टम परिच्छेदः

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहित निरता ज्वंतु चूत गणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखिनो ज्वंतु लोकाः ॥ लेखकपाठकयोः शिवमस्त्विति ॥

॥ इति प्रथम विज्ञागः समाप्तः ॥